॥ णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

श्रेष्ठि-देवचन्दलालभाई-जैनपुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्कः १०१॥

आगमोद्धारक-आचार्यश्रीआनंदसागरसूरिसङ्कलितः—

अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषः ।

(प्रथमः स्वरपर्यन्तो विभागः)

सम्पादकौ—आगमोद्धारक—आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरीश्वरान्तेवासिनौ
कञ्चनविजय-क्षेमङ्करसागरौ ।

संग्राहकः—आगमोद्धारकान्तेवासी गुणसागर ।

प्रकाशक-सुरतवास्तव्य-श्रेष्ठि-देवचन्दलालभाई-जैनपुस्तकोद्धारकोशस्यावैतनिक-
कार्यवाहकः—चोकसी मोतीचंद मगनभाई ।



वीराब्दः २४८०। वैक्रमाब्दः २०१०। शाकाब्दः १८७६। खिस्ताब्दः १९५४

प्रथमं संस्करणम्] निष्क्रयः रूप्यपट्कम् । [प्रतयः ५००

इदं पुस्तकं सूर्यपुरे श्रेष्ठि-देवचन्दलालभाई जैनपुस्तकोद्धारसंस्थाया अवैतनिककार्यवाहक-मोतीचंद-मगनभाई चोकसी इत्यनेन सरस्वतीमुद्रणालये, गोपीपुरा, मुद्रणमन्दिरे बालुभाई-हीरालाल-लालनद्वारा मुद्रापितम्।

Printed By :-
Balubhai Hiralal Lalan at the 'Sarasvati Mudranlaya' Gopipura, Surat.

Published By Sheth.-Devchand Lalbhai Jain Pustakoddhar Fund, At Sheth Devchand Lalbhai Jain Boarding House for Shri Ratansagarji Jain Boarding, Badekhan Chakla, Gopipura, Surat. By the Hon: Managing Trustee, Motichand Maganbhai Choksi.

THE LATE
SHETH DEVCHAND LALBHAI JAVERI.

BORN 1853 A D SURAT | DIED 13TH JANUARY 1906 A D, BOMBAY



श्रेष्ठी देवचन्द लालभाई जहवेरी.

जन्म १९०९ वैक्रमाब्दे
कार्तिकशुक्लैकादश्यां (देवदीपावलीदिने)
सूर्यपुरे.

निर्वाणम् १९६२ वैक्रमाब्दे
पौषकृष्णतृतीयायाम् (मकरसंक्रान्तिदिने)
मोहमयीनगर्याम्

इदं पुस्तकं सूर्यपुरे श्रेष्ठि-देवचन्दलालभाई जै०
अवैतनिककार्यवाहक-मोतीचंद मगनभाई चोकसी नेनस०
गोपीपुरा, मुद्रणमन्दिरे बालुभाई-हीरालाल लालनद्वारा मु

Printed By -
Balubhai Hiralal Lalan at the 'Sarasvati Mudranlaya

Published By Sheth -Devchand Lalbhai Jai
Fund, At Sheth Devchand Lalbhai Jain Boa
Shri Ratansagarji Jain Boarding Balekhan C
Surat. By the Hon· Managing Trustee, Mot
Choksi

Sheth Devchand Lalbhai Pustakoddhar Fund Series No 101

Shree Alpaparichit Saidhantik Shabda - Kosh

FIRST PART

[A To AOU]

—: Author :—

Agmoddharak Acharya Shree Anandsagarsurishwarji

: Editor —

Agmoddharak Shree Anandsagarsurishwarji 's Sishyo

Muni Kanchanvijay and Muni Kshemankarsagar

Collected:-

SHREE GUNSAGARJI

SHREE ANANDSAGARSURISHWARJI'S ANTEWASI

- Publisher :

Motichand Maganbhai Choksi

Managing Trustee For :-

Sheth DEVCHAND LALBHAI JAIN PUSTAKODDHAR FUND

SURAT

First Edition
Copies 500

Price Rs. 10-0

Vikram Samvat 2010.
Christation Era 1954.



The Board of Trustees:

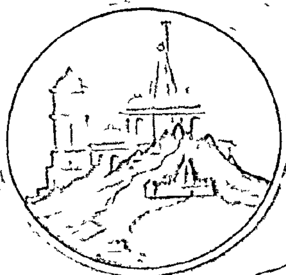


संस्थानुं ट्रस्टी मंडळ:—

अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषः

प्रथमो विभागः



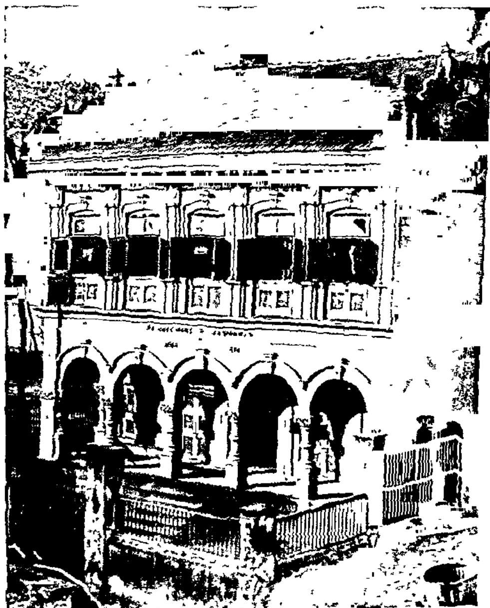


संकलयिता
आगमोद्धारक आचार्य
श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी

प्रकाशक —
शेठ देवचन्द लालभाई जैनपुस्तकोद्धार
फण्डाय
कार्यवाहक
चोकसी मोतीचन्द मगनभाई सूरत

चित्र परिचय —
हिन्दुस्तानना नकशामां आवेला तीर्थो
(१) श्री सिद्धाचलजी
(२) श्री तारंगाजीनुं जिनालय
(३) श्री गिरनारना जिनालय

शेठ-देवचंद-लालभाई-जैनविद्यार्थी भुवन



जेमां
शेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोध्धार फंड तरफथी
पुस्तकालय अने
प्रसिद्ध थतां पुस्तकोनो संग्रह अने वेचाण थाय छे.

●

गोपीपुरा. बडेखांनो चकलो. सुरत.

प्रकाशकीय

卐

आ अवसर्पिणी कालना दुःषम आरामां चरमशासनपति श्रमण भगवान महावीर स्वामीना शासनमां शासनना पुण्य प्रताप ते ते समये आचार्य भगवंतोए आगम वगेरे साहित्यनो उद्धार, पुनरुद्धार करीने आ कलिकालमां वीसमी सदीमां ज विद्यमान राख्युं छे ते आपणुं अहोभाग्य छे तेथी तेवा साहित्यने प्रकाशन करवा माटे अमारी आ संस्था सं. १९९४मां प. पू. आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीना उपदेशथी स्थपाई हती आ संस्था मारफत अमे आज सुधी १०० ग्रन्थो प्रकाशित करी चूक्या छीए अने अमे १०१मा ग्रन्थाङ्क तरीके श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषना भागे आ ग्रन्थने सहर्ष प्रगट करीए छीए

तारक आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीए आ कलिकालना विषम वातावरणमां आगमोनो बोध दुर्बोध न थई जाय ते हेतुए आगमोदयसमितिनी स्थापना करावी अने आगमवाचना आपवानुं कर्युं तेथी ते समितिए आगमो छपाववानुं कार्य शरू कर्युं तेमज आ संस्थाए पण अनुयोगद्वार वगेरे आगमो छपाव्या ते वखते अने पछीथी आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीए आगमोना जुदा जुदा विषयो तारवतां आगमकोषनो पण एक विषय तारव्यो हतो अने कोष छपाववो हतो आ विचारोत्पत्ति आजथी पचीस वर्ष पहेलां थई हती प. ता. गुरुदेवश्रीना सदुपदेशथी नीचेना सद्गृहस्थो तरफथी नीचेनी रकमो अमारी संस्थाने मळी हती ते आ प्रमाणे

१ अमदावादनिवासी शा. डाह्याभाई पीताम्बरदास रू. १००१

२ सुरतनिवासी झवेरी सोभागचंद सुरचंद रू. १००१

३ सुरतनिवासी झवेरी साकळचंद सुरचंद रू. १०१

आचार्यदेवनो विहार माळवा, बंगाळ तरफ लंबायो होवाथी ते कार्य घणी मुद्दत सुधी पडी रह्युं हतुं ते (छपाववानुं कार्य) अमे आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीनी संमतिथी शरू कर्युं आ निर्णय सं. २००४मां थयो

आथी प. ता. गुरुदेवश्रीनी आज्ञा अनुसार पू. मुनिमहाराज श्रीगुणसागरजी पासेथी श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषनुं प्रेस मेटर अमे मेळव्युं ते श्रीसरस्वतीमुद्रणालय, सुरतमां छपाववा माटे आप्युं अने तेनुं संपादन करवा माटे मुनिमहाराज श्रीचन्द्रविजयजी तथा श्रीक्षेमंकरसागरजीने विनंति करी तेओश्रीए आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीना अनन्य पट्टधर, विद्याव्यासंगी श्रुतस्थविर आचार्य महाराज श्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरजी महाराजनो सहयोग मळ्यो त्यां सुधि प्रूफ वंचावता पूर्वक अने ते पछीथी स्वतन्त्रपणे (बे मुनिवरोए) आ संपादन कार्य कर्युं तेथी अमो आ अद्वितीय आगमतत्त्वदर्शीमाता, आगमतत्त्व पारदृश्वा, आगमज्योतिर्धर शासनसंरक्षणबद्धकक्ष तत्त्वशिरोमणि आगमाब्धिविलोडक सिद्धान्तप्रवचनानेकागमसागर गंभीरानेकग्रन्थप्रणेता अन्यसमये पञ्चाब्धि अर्थगाम्भीर्यगुणे व्याख्यानस्वर्णेन

आगमोद्धारक आचार्यवर्य श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी[१] महाराजे 'संकलित' करेलो श्री-अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषनो 'संपूर्ण स्वर' सुधीनो पहेलो भाग सहर्ष प्रकाशित करीए छीए.

आ संस्थाना प्रथम पुस्तकना संपादक[२] तरीके पण आचार्यदेव श्रीआणंदसागरसूरिश्वरजी म हता अने बीजा सैकडानी शरुआतना प्रथम पुस्तक तरीके पण तेओश्रीनो संकलीत अमूल्य कोष प्रसिद्ध करीए छीए.

कोषनी विशिष्टता अंगे संपादकिय निवेदनमां घणु कह्युं छे, छतां अमारी संस्थाए आना प्रकाशनमां वधारे रस लीधो तेनु मुख्य कारण ए छे, के आज सुधी छपायेला प्राकृतकोषोमां अभिधानराजेन्द्रकोष, पाइयसद्दमहण्णवो आदि केटलाक कोषो छे पण तेमां न्यूनाधिकरुपे विचार करतां उपयोगितामां बाध आवे छे—जेमके अभिधान राजेन्द्र कोष प्रमाणमां एटलो बधो मोटो छे के तेमांथी कोइ शब्द शोधवा माटे वधारे परिश्रम पडे अने छपाईमां के सम्पादनमां त्रुटी रहेवाने लीधे सूत्रो अने ते ते प्रकरणो घणा परिश्रम पछी पण जडतां नथी पाईयसद्दमहण्णवोमां जैनसैद्धान्तिक शब्दो उपर वधारे भार मूक्यो होय तेम जणातुं नथी. पण प्रस्तुत ग्रन्थमां कोई पण जैन के जेनेतर विद्वान् प्रचलित जन पारिभाषिक शब्दोनो यथार्थ परिचय टूंकमां अने सहेलाइथी प्राप्त करी शके एवी तक छे, तथा मुनिराजो पण ग्रन्थ सम्पादनना कार्योमां सहायता लइ शके तेम पण छे.

अमे इच्छीए छीए के आना प्रकाशनने विद्वज्जनो योग्य आदर करशे ज.

आ कोषने अंगे सूचनाओनी समजणो तथा ते ते ग्रन्थोनां पानांओनी सूची पण संपादक पू. महाराजोए आपी छे. ते अंगे 'संपादकीय' वांचवा वांचक वर्गने अमारी विनंति छे

आ ग्रन्थना सकलनाकार प पू. आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीनुं स्तोत्र सुमनोहर गूथी ग्रंथने अलंकृत करनार सदा ज्ञानोद्यमीव्याकरण-साहित्य-न्यायविसारद × × × × नो उपकार मानीए छीए

अमारा प्रकाशन कार्यमां जे जे महाशयोए अमने मदद करी छे ते ते महाशयोना अमे ऋणी छीए.

वि. सं. २०१० आशो सुद १५ विजयादशमि ता ७-१०-१९५४	लि० भवदीय मोतीचंद मगनभाई चोकसी विगेरे ट्रस्टीओ

[१] तेओश्रीनो सुरत उपर तो अनहद उपकार छे. तेओश्रीने सवत १९७४ना वैशाख सुद १०ना सुरतमा ज 'आचार्य' पदवी अपाइ हती. श्रीजैनानंदपुस्तकालय, श्रीवर्धमानजैनताम्रपत्रागममंदिर वगेरे सुरतमा ज छे. अने स. २००६ना वैशाख वद ५मे 'स्वर्गवास' पण सुरतमा ज थयो छे. तेओश्रीनो अग्निसंस्कार पण सुरत शहेरनी मध्यवर्त्ती गोपीपुरामा आगममंदिरना सामे जूनीअदालतथी ओळखाती जमीनमा थयो हतो. वळी तेज जग्या उपर गुरुदेवश्रीना स्मरण तरीके संपूर्ण इतिहासने जणावनारु 'श्रीआगमोद्धारकगुरुमंदिर' बंधाववामा आव्यु छे.

२. तेओश्रीनु मूख्य कार्यक्षेत्र सुरत ज रह्यु हतु. तेनी प्रतिकृतीरुके अनेक ज्ञान विषयनी सस्थाओ स्थपाइ हति.

(१) शेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड.

(२) शेठ नगीनभाई मंछुभाई जैन साहित्योद्धार फंड.

(३) श्रीरत्नसागरजीजैनबोडींगस्कुल (विद्याशाला) कायमि फंड

(४) श्रीजैन तत्वबोध बोध पाठशाळा वगेरे अनेक सस्थाओ तेओना उपदेशनु ज परिणाम छे.

संपादकीय वक्तव्य

卐

"ॐ णमो चउवीसाए तित्थयराण उसभाईमहावीर पज्जवसाणाण। णमो गोयमाईमहामुणीणं। इक्कारस अंगाइं बारसुवंगा पइन्नगा दस य। छेया छ चऊ मूला, नंदी अणुओगा णमंसामि[1] ॥१॥"

साहित्यमां ऊंडा ऊतरेला रसिकोने विविध विषयोना बोधनी आवश्यकता रहे छे. जे विषयनो बोध जे मनुष्यने होवो जोइअे ते बोध सिवायनो मनुष्य ते विषयने ग्रहण करवा जाय तो अज्ञानी वांदरानी जेम "मने पकडयो मने पकडयो" जेवी अेनी दशा थाय तेथी ते विषयना बोध माटे ते विषयना शब्दना ज्ञाननी, अर्थना ज्ञाननी अने तेना भावार्थना ज्ञाननी, अर्थात् ते पदार्थना शब्दार्थ, भावार्थ अने ऐदंपर्यांनी जरूर छे जो ते समज्या सिवाय प्रवृत्ति कराय तो भोजन करवा बेठेलो 'सैंधव' मंगावे अने 'घोडो' लावे तेना जेवु थाय

शब्दना बोधने करनारूं जे साहित्य होय तेने 'शब्दकोष' आदि शब्दथी संबोधी शकाय. एवा 'शब्दकोषो'नी उत्पत्ति कां तो आगमोमां आवेला पर्यायो रूपे आवी होय कां तो निघण्टु जेवा 'शब्दकोषो' रूपे होय, अथवा बीजा घणाअे 'शब्दकोषो' रूपे होय. आथी दरेक भाषाचार अनेक शब्दकोषो' योजाया छे अने योजाय छे.

जैन दर्शन माटे तो ते शब्दोना अर्थ टीकाकारोअे प्रकरणना आधारे जे रीते मंजुर कर्या छे ते रीते ज लेवा योग्य छे शब्दो-यौगिक, रूढ अने मिश्र एम साहित्यकारोए मान्या छे, ते यथार्थ छे. आथी जैन दर्शनमां ऊंडा ऊतरवावाळाने पण ते बोधनी जरूर तो छे ज, तेथी तेवा प्रकारना 'शब्दकोष'नी जरूरियात मानवी'ज पडे. आ उद्देश लक्ष्यमां लइशुं तो जैन दर्शनमां आवता शब्दोना अर्थवाला अनेक कोषो होवा छतां पण आ नवा कोष माटे स्थान छे ज.

संकलनाकार—ग्रन्थकार स्वतंत्र लेखिनीथी जे ग्रन्थ करे तेमनी ज कृति कहेवाय छे परंतु बीजा ग्रन्थोमाथी अेकत्रित करेलु होय तो आ बधुं बीजा ज ग्रन्थोमांनु छे, एम जणाववा माटे पोते संकलना करी छे एम जणावे छे तेथी महत्त्वपूर्ण अनेक जैन ग्रन्थोना संपादक अने संशोधक, तेमज संस्कृत, प्राकृत अने गुजरातीमां विविध विषयोनी कृतिओ रचनारा,[2] आगमोद्धारक[3] आचार्य श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजे सैद्धान्तिक शब्दोनी आ कोषमां संकलना करी छे, आथी आ ग्रन्थना 'संकलनाकार' प. ता आगमोद्धारकगुरुदेवश्री छे

---

(१) मंगळाचरण तरीके आपेलु समग्र अर्धमागधी छन्द अेक इन्दने छोडीने 'शिलोत्कीर्ण आगमो'नी पीठिकामांनु छ जुओ—आगमरत्नमंजूषा शिला न १,१.

(२) जुओ अमारी संपादन करेली पुस्तिका—(१) प्रशमरति अने सबधकारिका, परि ३ थी ८ 'आगमोद्धारकनी साहित्यसेवा', (२) उपदेशरत्नाकर (भावार्थ) पृ १९-२७ 'आगमोद्धारकनी साहित्यसेवा', (३) आचारांगसूत्र पृ २५२-२१६ 'आगमोद्धारकनी साहित्यसेवा', (४) आनन्दसुधासिन्धु भा. २ परि ४ 'आगमोद्धारकना व्याख्यानोनी मूर्ती तथा 'आगमोद्धारककृत चैत्यवन्दनादि', (५) आराधनामार्ग भा. १ पृ २२-२३ 'आगमोद्धारककृत चैत्यवन्दनादि.

(३) आ संबधना जुओ—"आगमोद्धारकबिरुद" अे नामना प्रो. हीरालाल र कापडियानो लघु लेख अे लेख गुरुना 'प्रभाकरत्नना ता १४-०-५०ना अंकमा छपायो छ

आगमोनुं मुद्रण-वाचना—आ कलिकालमां विक्रमनी वीसमी सदीमां एवो पण एक समय आव्यो के ज्यां शास्त्रीय बोध ओछो थवा लाग्यो अने हस्तलिखित प्रतो वांचवानी तेमज वांचवा माटे प्रतो मेळववानी पण मुश्केलीओ ऊभी थई. आथी जो लखाण छापेलु मळी जाय अने तेनो जो बोध अपाय तो ते हितावह निवडे. आ हेतुथी आगमो[४] छपाववा अने तेनी वाचनाओ आपवी एम प. पू. आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीनी प्रेरणाथी नक्की थयु. अने संपादननुं कार्य अने वाचनानुं कार्य आगमज्योतिर्धर, अप्रमादी आगमोद्धारकश्रीने ज करवानुं थयु. आथी जेम जेम आगमो छपाता तेम तेम पाटण[५] आदि स्थलोए 'वाचनाओ' अपाई अने तेनो सेंकडो साधुसाध्वीओए लाभ लीधो.

आगमो रूपी सागर अने तेमां आवता विषयो पण ए सागरना उपसागरो जेवा छे. परंतु ते अज्ञात रूपे छूटा छूटा पडया होय तो उपसागर रूपे देखाय, तेथी ते बधा प्रवाहो एकत्र करी जुदा जुदा उपसागरो बनाववा. आ मुद्दाए जेम आगमो छपाता गया तेम तेम वर्तमान श्रुतना ज्ञाता आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीए आगमोमां जुदा जुदा विषयोने जणावनारा त्रेपन (५३) अंको पाड्या अने 'शब्दकोष' माटेना शब्दो अंगे पण 'फूल'नुं एक निशान कर्युं. ए निशानो एवां हतां के—अंकोमां बधा शब्दथी क्यां सुधीनो भाग लेवानो छे ते जणाववा माटे आदिमां अने अंतमां निशाननी साथे अंक मूकवामां आवतो हतो. ज्यारे आ कोषना शब्दोने अंगे फूलनुं निशान मूकवामां आवतुं हतुं तेमां पण खूबी करवामां आवती हती के—जो शब्द एक अक्षरनो होय तो एकनी नीचे, बेनो होय तो बेनी वच्चे, यावत् जेटला अक्षरनो होय तेना मध्य बिन्दुए निशान मूकवामां आवतुं हतुं आवी रीते शब्दोनी संकलना थई आ बधा विषयो अने शब्दो लहिया द्वारा उताराईने एकत्रित कराववामां हता.

नाम—आ कोषनुं नाम 'श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष' राखवामां आव्यु छे कारण ए छे के—आ कोषमां आगमोमां वपरायेला तमाम शब्दो नथी, परंतु जे शब्दनो परिचय अल्प

---

४ आगमो छपाववा माटे भोयणीतीर्थमां सं. १९७१ना महा सुद १० ने सोमवार २५-१-१९१५ना दिवसे श्रीआगमोदयसमितिनी स्थापना थई आना अंगेनु आगमोद्धारककृत 'आगमसमितिस्थापनाष्टक' अमारा संपादित आचारांगसूत्र (भाग १) (व्या. म.) मा छापायु छे

५न	स्थळ	वि. सं.	वाचना आपेल ग्रन्थोना नाम
१	पाटण	१९७१	श्रीदशवैकालिक, श्रीसूत्रकृतांगसूत्र, श्री पञ्चाशक।
२	कपडवंज	१९७०	श्रीललितविस्तरा, श्रीयोगदृष्टिसमुच्चय, श्रीअनुयोगद्वारसूत्र १/२, श्रीआवश्यकसूत्र १/४, श्रीउत्तराध्ययनसूत्र १/३।
३	अमदावाद	१९७३	श्रीविशेषावश्यकसूत्र ८/४, श्रीस्थानांगसूत्र १/२।
४	सुरत	१९७४	श्रीविशेषावश्यकसूत्र १/२, श्रीस्थानांगसूत्र १/२, श्रीऔपपातिकसूत्र श्रीउत्तराध्ययनसूत्र १/३, श्रीआचारांगसूत्र १/२।
५	सूरत	१९७५	श्रीआवश्यकसूत्र १/४, आचारांगसूत्र १/०, श्रीअनुयोगद्वारसूत्र १/२, श्रीनन्दीसूत्र।
६	पालीताणा	१९७६	श्रीओघनिर्युक्ति, श्रीपिंडनिर्युक्ति, श्रीभगवतीसूत्र ८/४१ श्रीप्रज्ञापनासूत्र ३३/३६।
७	रतलाम (मालवा)	१९७७	श्रीभगवतीसूत्र ३३ ४१, श्रीप्रज्ञापनासूत्र ३/३६, श्रीसमवायांगसूत्र

छे, तेवा आगमगत-सैद्धान्तिक शब्दोनो आमां संग्रह करवामां आवेलो छे. आ 'श्रीअल्पपरिचित सैद्धान्तिकशब्दकोष' माटे हवे पछी 'अ सै श' एवी संज्ञानो उपयोग करशो

शब्द अने तेना अर्थो—अ. सै श मां जे शब्दो अपाया छे ते शब्दो घणे भागे जो जेवा छे तेवा ज राखवामां आव्या छे. अर्थात् अकार अने थोडा आकार सिवायना बाकी घणा शब्दो जे मूलना छे ते अर्धमागधीमां छे अने टीकाकारोए टीकामां आपेला जे शब्दो जे भाषामां छे ते ज भाषामां मोटे भागे कायम राख्या छे एटले के अकार अने थोडा आकारमां आवेला संस्कृत शब्दो अर्धमागधीमां पण आव्या छे

शब्दोना बहुश्रुत टीकाकारोए भिन्न भिन्न टीकाओमां भिन्न भिन्न अर्थो कर्या छे, तेथी भिन्न भिन्न स्थळोमांथी ते ते अर्थो लईने ते ते टीकाकारोना अर्थोने कायम राख्या छे. आ कारणथी आ अ सै शमा छेदना घणा ज शब्दो लेवामा आव्या छे तेमज बृहत्कल्प जेवा कोशमां आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीना हाथना उतारेला शब्दो छे तेमां टीकाकारोना आधारे अर्थोनु टुंकावबापणुं पण छे

---

६ तारवेला ५२ अंकनां नामो— (चाथा पानानी पुरवणी)

१ विषयानुक्रम *	१४ छन्दोविचार	२७ भगवानाम	४० दैवकम्
२ अधिकारानुक्रम	१५ अलङ्कार	२८ पाठान्तराणि	४१ नया
३ विशेषोपयोगिना विषया	१६ न्याया	२९ प्रस्तावना	४२ मतानि
४ विशिष्टा	१७ साक्षिभूतग्रन्था	३० सूत्राद्यकारादिक्रम	४३ विधि
५ साक्षिपाठानामकारादिक्रम	१८ उपाद्घात प्रश्नमिन	३१ शङ्कासमाधानानि	४४ भद्रा भद्रन्दा
६ वादा	१९ आचार्यनामानि	३२ कानिन्दय	४५ अन्यकर्तृकम्
७ लक्षणदूषणाधिकार	२० प्राचीनमतानि	३३ सुभाषितानि	४६ अनुमन्यानि
८ विशेषनामानि	२१ मतानां समाधानानि	३४ स्त्रीणां समूह	४७ गद्यतत्त्व
९ इतिहास	२२ सूक्तावलि	३५ वायुवृष्टि	४८ प्रदक्षगुरुनामानि
१० भूगोल	२३ राजकीयविभाग	३६ समानशब्दानां पर्याय	४९ विसंवादा
११ ऐतिहासिक	२४ प्रमाणम्	३७ गच्छा सम्प्रदाय	५० प्रश्नोत्तरिका
१२ प्रक्षिप्तमतानि	२५ शाकाक्षिसमूह	३८ दृष्टान्ता	५१ स्वरूपनिर्देश
१३ व्याकरणविचार	२६ व्याख्यानान्तराणि	३९ सम्प्रदाया	५२ सामुद्रिकम्

५३ विशीयपदकारानुक्रम विहाय समायगाथादिन ए

* नन्दी आदि २७ना विषयानुक्रम अने सूत्रादि अकारादि वगेरे छपायां छे, तेमां नीचे प्रमाणेना ग्रन्थ सूत्रोने आप्या छे—

१ नन्दी, २ अनुयोगद्वार, ३ आवश्यक, ४ ओघनिर्युक्ति, ५ दशवैकालिक, ६ पिण्डनिर्युक्ति, ७ उत्तराध्ययन, ८ आचाराङ्ग, ९ सूत्रकृताङ्ग, १० स्थानाङ्ग, ११ समवायाङ्ग, १२ भगवती, १३ ज्ञाताधर्मकथा, १४ उपासक, १५ अन्तकृद्दशा, १६ अनुत्तरोपपातिकदशा, १७ विपाकश्रुत, १८ प्रश्नव्याकरण, १९ औपपातिक, २० राजप्रश्नीय, २१ जीवाजीवाभिगम, २२ प्रज्ञापना, २३–२४ सूर्यचन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र, २५ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति २६ निरयावलिका अने २७ प्रकीर्णकदशक।

(५२ मयालमना न. २२, २०, ३३ अने ५० आगमरत्नमञ्जूषानां नामे छपाया छे)

आ अ. सै. श. मां भिन्न भिन्न शब्दो व्याकरणना प्रयोगो रूपे, कोई तेवां नामो रूपे, कोई इतिहास तरीके, कोई भूगोळ तरीके तथा कोई पर्यायो तरीके पण आव्या छे.

काचो खरडो—शरूआतमां लहियो एकेक आगम लईने कापलीमां ते शब्दने ऊतारतो अने टीकाकारनो बतावेल अर्थ लक्ष्यमां आवे तो ते अर्थ लखतो. आवी रीते ऊतारेली छूटी कापलीओने प. पू. आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीना विनयगुणसंपन्न, तीक्ष्णबुद्धि, स्वर्गस्थ मुनिराज श्रीमहेन्द्रसागरजीए अकारादि क्रममां गोठवी कागलमां सळंग चोटाडीने तैयार करी ते उपरथी ए लखाण लहिया आदि द्वारा लखावीने तेमज तेओश्रीए (श्रीमहेन्द्रसागरजीए) पोते पण लखीने काचो खरडो तैयार कर्यो.

प्रकाशननी तैयारी—आ अ. सै. श ने छपाववानी प. ता आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीनी घणी इच्छा हती. तेथी लगभग त्रण दशका उपर सद्गृहस्थो पासेथी अ. सै. श. ना प्रकाशनने अंगे रूपिया शेठ देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धारकफंडने अपाव्या हता. ते पछी वि. सं. २००४ मां ते संस्थाए आ अ. सै श. छपाववा माटे ठराव कर्यो. आथी मुद्रणालयपुस्तिका करवानुं कार्य पू. स्व. मुनिश्री महेन्द्रसागरजीना शिष्य मुनिश्रीसौभाग्यसागरजीने (तेओश्रीना लघुबन्धुने) सोंपायुं. तेथी तेओ दरेक आगमना ते ते पत्रमां ते ते शब्दो मेळवता अने तेना अर्थोने पण मेळवता. तेमज ज्यां टीकाकारना शब्दो लेवाना हता त्यां प. ता. आगमोद्धारकगुरुदेवश्री पासेथी तेना मूळ शब्दो बनावी लेता अने जे शब्दोना अर्थ टीकाकारे न आप्या होय तेना अर्थो पण पूछी लेता. आवी रीते तेमणे लगभग चार फार्म सुधीनुं मेटर तैयार कर्युं.

उपर जणावेली संस्था (दे +ला)ना ट्रस्टीओए प ता. आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीनी जीवन पर्यंत सेवा करनार मुनिराज श्रीगुणसागरजी महाराज पासेथी आ कोपीनुं लखाण मेळव्युं अने छपाववा माटे प्रबंध कर्यो तेमज अमने संपादन माटे विज्ञप्ति करी. तेथी अमे आ संपादननुं कार्य शरू कर्युं. साथोसाथ मेटर पण तैयार करवा मांड्युं.

संपादन पद्धति—दरेके दरेक शब्द ते ते आगमनी साथे मेळववो अने तेमां जणावेल अर्थ मेळवी लेवो. ते रीते कार्य करतां केटलाक आगमोना अंगे शब्दोना प्रश्नो ऊभा थया. तेमां श्रीव्यवहारसूत्रना त्रीजा उद्देशाना शब्दो हता पण ते सिवायना बाकीना उद्देशाना शब्दो न हता. तेथी प. ता. आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीए व्यवहारनी आखी प्रतमां निशानो करी आप्यां आथी तेनी कापलीओ उतारी तेना शब्दोनो उमेरो कर्यो आगळ जतां बीजा पण आगमोना शब्दो नथी एम देखायुं, तेनी तपास करतां-नंदी, अतगड, अणुत्तरोववाइय, उपासकदसा, रायपसेणीय, अने निरयावलिना शब्दो न हता. तेथी तेना शब्दो पण उतार्या. अने ते शब्दो धीरे धीरे मेळववामां आव्या. आगळ चालतां नायाधम्मकहाना शब्दो बिलकुल नथी एम मालम पड्यु. नायाधम्मकहानी प्रत तो प. ता आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीनी निशानवाळी प्राप्त न थई, तेमज जे समये शब्दो नथी तेवी शंका थई ते समये तो अमारु पुण्य पण न हतु के पू गुरुदेवश्री 'विद्यमान' होय. आथी अमे अमारी मंदमति अनुसारे आ आगमनी सटीक प्रतमां निशानो कर्या, शब्दो तारव्या अने ते तारवेला शब्दोने कोशमां स्थान आप्युं

आ अ. सै. श. मां अग्यार अंग, बार उपांग, त्रण[७] (बृहत्कल्प, व्यवहार अने निशीथ) छेदसूत्र, चार मूळ, ओघनिर्युक्ति, विशेषावश्यक, नंदी, अनुयोगद्वार, अने दशवैकालिकचूर्णिना शब्दोनो संग्रह

---

७. विस्तारथी चूर्णि वगेरे जेना पर नथी तेवा जीतकल्प, पंचकल्प, दशाश्रुतस्कंध, अने महानिशीथना शब्दो लीधा नथी

करवामां आवेल छे. तेमज दशाश्रुतस्कन्ध, दशप्रकीर्णक, पउमचरिय, उपदेशमाला, अने तत्त्वार्थसूत्रना केटलाक शब्दो पण लेवामां आवेल छे.

संज्ञा पत्रक—अ. रा. श. मां जे शब्दोनो संग्रह करवामां आव्यो छे अने तेमां आगमो-शास्त्रो वगेरेनी जे संज्ञाओ आपवामां आवेली छे, ते संज्ञाओना स्पष्टीकरण माटे तेमज लीधेली प्रत-टीका वगेरे शेनी छे ते जणाववा अने तेना संपादक तथा प्रकाशक जणाववा एक संज्ञापत्रक नामथी प्रकरण राख्युं छे. तेमज बीजी बीजी प्रतोनी साथे पण शब्दो मेळववानुं शक्य बने ते उद्देशथी पत्राङ्कसूचा नामथी एक प्रकरण आप्युं छे.

वर्णक्रम—अ. रा. श. मां अनुस्वारने पहेलुं स्थान आपवामां आव्युं छे. कारण के शरूआतमा प. ता. आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीए आ रीते शरू करवानुं जणाव्युं हतुं. आथी ए पद्धति कायम राखी छे. पण आनो हेतु हमे जाणी शक्या नथी, तेथी अत्रे हेतु आप्यो नथी.

विद्वज्जनो प्रत्ये—सुज्ञ विद्वज्जनो ! अमो गूर्जर भाषाना संपादनना कार्यमां अनुभव मेळवतां संपादनमां आगळ वध्या छीए. ते रीते संस्कृत अने प्राकृतना संपादनमां प्रवेश करता थया एवा समयमां प. ता. गुरुदेवश्रीनी सेवाना प्रतापे अमने 'अ. रा. श.' संपादन कर्युं. आथी अमे ते कार्यमां रस लीधो ने संपादन कार्य शरु कर्युं. आथी पंडितोनी अपेक्षाए के विद्वानोनी अपेक्षाए अमारा आ संपादनना अंगे जे सूचनाओ करवी उचित छे ते अमे विद्वज्जनोनी समक्ष रजू करीए छीए.—

१ मूळ शब्दो विभक्तिवाला तेम विभक्ति वगरना एम बन्ने प्रकारना छे. तेथी ते जे लिंगनो जे शब्द होय ते शब्द तेवी तेवी विभक्तिथी ते ते लिंगमां समजी लेवो. जेमके-अंकुर (पृ. १, २), अंकुसयं (पृ. १, २) इत्यादि (कोईक शब्दकोशमां विभक्ति सहित शब्दो नथी तेवु पण प्राये अमारा जाणवामां छे

२. जो के शब्दो बधा एक जातना विभक्ति विगर अगर एक विभक्तिथी भेगा लेवा जोईए, परंतु आमां भिन्न भिन्न लेवाया छे. जेमके-अंकावइ (पृ. १, २), अंकावइओ (पृ. १, १) इत्यादि.

३. वैकल्पिक शब्दोना विकल्पने साचववा माटे अर्थात् तेवा प्रयोगोने साचवी राखवा माटे आमां भिन्न लेवाया छे जेमके-अंकवडेंसए (पृ. १, १), अंकावडिंसए (पृ १, १) इत्यादि.

४. टीकाकार महाराजे जे शब्दोना प्रयोगो टीकामां कर्या छे ने ते शब्दो मूळमां नथी तेवा शब्दोनुं प्राकृत जे कौंसमां अपाय छे ते प पू. आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीने पूछीने मुनिश्रीसौभाग्यसागरजीए आपेलुं छे. वळी तेवा शब्दो कोई वखत शरुआतमां अपाया छे. अने कोइ वखत संस्कृत-शब्दनी पछी पण अपाया छे. तेनी बन्ने बाजुए बनतांसुधी कौंस आप्यो छे. जेमके (अंकील्ल)नर्तकः (पृ. १, १), अंगारः (इंगाल), (पृ. २ २) इत्यादि.

५. शरूआतमां तो शब्दोना अर्थी अने शब्दोना संग्रहनी शैलि नियमित रही नथी, पण जेम जेम अनुभव थतो गयो अने तेना अभ्यासमां वधारो थतो गयो तेम तेम पद्धतिमां सुधारो थतो गयो छे. छतां एटलुं कहेवानी जरूर छे के पहेला भाग करतां बीजा भागमां पद्धति इत्यादिनो सुधारो मळेला अनुभव प्रमाणे करी शकीशुं एवी आशा छे.

६. (१) अध्ययन, (२) विशेषनाम, (३) वनस्पतिना नामना अंगे तेनी साथे अर्थना रूपमां संस्कृतमां अपायुं छे जेमके (१) अंडे-विपाकश्रुताध्ययन० (पृ. २, २), (२) अंगारवई-अंगारवती सवेगोदाहरणे० (पृ २, २), (३) अंकोल्ल वृक्षविशेषः (पृ २, १) इत्यादि.

७ टीकाकारोए शब्दोना जे जगो पर अर्थ नथी कर्या तेवा शब्दो पण अत्रे अर्थ वगर अपाया छे. जेमके ओल्ली (पृ. २२५, २), उवट्टगा (पृ. २०७, २) इत्यादि. वळी आ शब्दोना अर्थो जो कदाच मेळवी शकीशुं तो परिशिष्टमां आपवा विचार छे.

८. देशी शब्दोना अंगे 'देशीय' अगर 'देशी' एवुं कौंसमां लखायुं छे. अर्थात् टीकाकारे आपेलुं कायम राख्युं छे. जेमके-उत्तइज (देशी०)-गर्वे (पृ. १८७, १).

९. चूर्णिकार महाराज चूर्णिनी अंदर प्राकृत अने संस्कृत अेम बन्ने भाषाना प्रयोगो करे छे, तेथी चूर्णिना शब्दोना अर्थोमां प्राकृतना अने संस्कृतना बन्नेना प्रयोगो छे. परंतु बहुधा तो प्राकृत ज होय छे.

१०. आ 'अ. सै. श. मां घणा पण शब्दो छे के जे अभिधानराजेन्द्र के पाइयसद्दमहण्णवोमां न होय.

अ सं. श. नुं संपादन कार्य शरू थतां सुरतमां हता त्यां सुधी एक वखतनुं प्रुफ जोई आपवा प. ता. आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीना एकेव पट्टधर, श्रुतवारिधि, शास्त्रतत्त्वदर्शी, गच्छनायक, आचार्यश्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरजी महाराजे कृपा करी हती.

ए रीते संपादननुं कार्य चालतुं हतुं, तेमां प्रथम भागनुं पंदर आनी काम थई गया पछी सुरतथी दक्षिण तरफ विहार थवाना कारणे अने प्रेस आदिना प्रतिकूल संयोगोमां अमारी अनिच्छाए पण नहि जेवा कार्यमां वर्षोनां वर्षो वीती गया बाद आजे आ श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिक-शब्दकोषनो 'प्रथम भाग' विद्वानोना करकमळमां उपस्थित करी शक्या छीए.

आ प्रथम भागमां 'संपूर्ण स्वरो' आपवामां आवेला छे स्वरोमां तेमज बीजा रही गयेला 'शब्दो' तथा देशीनाममालाना शब्दो श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष पूर्ण थतां 'परिशिष्ट' तरीके आपवा विचार छे.

प. पू. आगमवाचनादाता, देवसूरतपागच्छसामाचारीसंरक्षणकटिबद्ध, अनेक ग्रन्थोना प्रणेता, वादीमानमर्दक. चरमशासनपति महावीर परमात्माना शासनमां आगममंदिरोना संस्थापक, जैनआनन्दपुस्तकालयादि संस्थाना संस्थापक, शैलानानरेशप्रतिबोधक, युगप्रधानसदृश, वर्तमान श्रुतना ज्ञाता, स्वआराधनार्थे आराधनामार्ग करनारा, मौनपणे रही अर्धपद्मासने स्वर्गे संचरनार, प. पू. आगमोद्धारक *आचार्यवर्यश्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजनो पुनित सेवाना प्रतापे जे कंई बोध-शक्ति मेळवेल छे, ते आधारे अमे अमारी बुद्धि केळवीने काळजीपूर्वक आ श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषनुं संपादन कर्युं छे

मुनिराज श्रीअभयसागजी महाराजे संजोग मळतां आमां मार्ग बताव्यो छे. तेओश्रीने तेमज प्रो. हिरालाल र. कापडीयाने पण हमे अत्रे भूलता नथी.

आमां जे अशुध्धिओ जणायी छे तेनुं शुद्धिकरण पण आप्युं छे, छतां विद्वज्जनो प्रति अमारी प्रार्थना छे के क्षति देखाय तो जणाववा उदारता दाखवे.

वीरसं. २४८०, वि. सं. २०१०
ज्येष्ठ पूर्णिमा
हींगनघाट
(मध्यप्रदेश)

आगमोद्धारकउपसंपदाप्राप्त शिष्याणु
कंचनविजय
तथा
आगमोद्धारक शिष्यलव
क्षेमंकरसागर

* जेमना स्मरणार्थे सुरतमां 'आगमोद्धारक गुरुमंदिर' शरुथई गयु छे

संज्ञापत्रकम्।

क्रमाङ्क	संज्ञा	सूत्रनाम	सम्पादकः	प्रकाशकः
१	अनु.	मलधारगच्छीयश्रीहेमचन्द्राचार्यविरचितवृत्तियुतं श्रीअनुयोगद्वारसूत्रम्।	आगमोद्धारकः	दे.[1] ला. जै
२	अनुत्त.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीअनुत्तरोपपातिकदशाङ्गम्।	,,	आ.[2] स
३	अन्त.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीअन्तकृद्दशाङ्गम्।	,,	आ. स.
४	आउ.	श्रीआतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकम् (गाथा)।	,,	आ. स.
५	आचा.	निर्युक्तिकलितशीलाङ्काचार्यविहितवृत्तियुतं श्रीआचाराङ्गसूत्रम्।	,,	आ. स.
६	आव.	निर्युक्तियुतभाष्यकलितश्रीभवविरहहरिभद्रसूरिविहितवृत्तियुतं श्रीआवश्यकसूत्रम्।	,,	आ स.
७	उत्त,	निर्युक्तियुतानि वादिवेतालश्रीशान्तिसूरिसूत्रितवृत्तियुतानि श्रीउत्तराध्ययनानि।	,,	दे. ला. जै.
८	उप मा गा.	श्रीधर्मदासगणिदृब्धा श्रीउपदेशमाला (गाथा)।	,,	
९	उपा.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीउपासकदशाङ्गम्।	,,	आ. स.
१०	ओघ.	भाष्ययुता श्रीद्रोणाचार्यसूत्रितवृत्तिविभूषिता श्रीओघनिर्युक्ति	,,	आ. स.
११	औप	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीऔपपातिकोपाङ्गम्।	,,	आ. स.
१२	ग	श्रीगच्छाचारप्रकीर्णकम् (गाथा)।	,,	आ. स.
१३	गणि	श्रीगणिविद्याप्रकीर्णकम् (गाथा)।	,,	आ. स
१४	चउ.	श्रीचतुःशरणप्रकीर्णकम् (गाथा)।	,,	आ स.
१५	जं प्र.	उपाध्यायश्रीशान्तिचन्द्रविहितवृत्तियुतं श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्युपाङ्गम्।	,,	दे ला. जै.
१६	जीवा	श्रीमलयगिर्याचार्यसूत्रितविवरणयुतं श्रीजीवाजीवाभिगमोपाङ्गम्।	,,	दे ला. जै.
१७	ज्ञाता.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम्।	,,	आ स.
१८	ठाणा.	श्रीचान्द्रकुलीनाभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीस्थानाङ्गसूत्रम्।	,,	आ स.
१९	तं.	श्रीतन्दुलवैचारिकप्रकीर्णकम् (गाथा)।	,,	आ स.

१ दे. ला. जै.=शेठदेवचन्दलालभाईजैनपुस्तकोद्धारफंड।

२ आ. स.=श्रीआगमोदयसमिति।

२०	तत्त्वा.	भाष्योपेतं श्रीतत्त्वार्थसूत्रम् (अध्यायः, सूत्रम्)।	आगमोद्धारकः	ऋ.[३] के.
२१	दश.	निर्युक्तिभाष्योपेतं श्रीमद्विरहहरिभद्रसूरिविरचित-विवरणयुतं श्रीदशवैकालिकसूत्रम्।	"	दे. ल. जै.
२२	दशचू.	श्रीदशवैकालिकचूर्णिः	हस्तपोथी	जै.[४] पु. नं. १६७३
२३	दशाश्रु.	श्रीदशाश्रुतस्कन्धः	"	
२४	देव.	श्रीदेवेन्द्रस्तवप्रकीर्णकम्।	आगमोद्धारकः	आ. स.
२५	नंदी.	श्रीमलयगिर्याचार्यविहितवृत्तियुतं श्रीनन्दीसूत्रम्।	"	आ. स.
२६	निरय.	श्रीचन्द्रसूरिविरचितवृत्तियुतं श्रीनिरयावलिकापंचकम्।	श्रीदानविजयगणी	वीर.[५]
२७	नि. चू. प्र.	भाष्यचूर्ण्युपेतस्य श्रीनिशीथसूत्रस्य प्रथमो विभागः	हस्तपोथी	जै पु. नं ४८३
२८	नि. चू. द्वि.	" " द्वितीयो "	"	जै. पु नं ४८४
२९	नि. चू. तृ.	" " तृतीयो "	"	जै पु. नं. ४८५
३०	पउ.	श्रीविमलाचार्यविरचितं 'पउमचरियं' (उद्देशः)	प्रो. हर्मन जेकोबी	[६] जै. ध.
३१	पिंड पिण्ड	भाष्यश्रीमलयगिर्याचार्यविहितवृत्तियुता पिण्डनिर्युक्तिः	आगमोद्धारकः	दे. ला. जै.
३२	प्रज्ञा.	श्रीमलयगिरिसूरिविहितविवरणयुतं श्रीप्रज्ञापनोपाङ्गम्।	"	आ. स.
३३	प्रश्न.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीप्रश्नव्याकरणाङ्गम्।	"	आ. स.
३४	बृ. प्र.	निर्युक्तिभाष्यटीकोपेतस्य श्रीबृहत्कल्पसूत्रस्य प्रथमो विभागः	हस्तपोथी	जै. पु. नं ३०३
३५	बृ. द्वि.	" " द्वितीयो "	"	जै पु नं, ३०४
३६	बृ. तृ.	" " तृतीयो "	"	जै. पु नं. ३०५
३७	भक्त.	श्रीभक्तपरिज्ञाप्रकीर्णकम् (गाथा)।	आगमोद्धारकः	आ. स.
३८	भग.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीभगवतीसूत्रम् (श्रीव्याख्याप्रज्ञप्तिः)।	"	आ. स.
३९	मर. मरण.	श्रीमरणसमाधिप्रकीर्णकम् (गाथा)।	"	आ. स.
४०	महा. महाप्र	श्रीमहाप्रत्याख्यानप्रकीर्णकम् (गाथा)।	"	आ. स.

३ ऋ. के.=श्रीऋषभदेवजीकेशरीमलजी, रतलाम

४ जै. पु. नं=श्रीजैनआनंदपुस्तकालय, सुरत, हस्तपोथी नंबर

५ वीर.=श्रीवीरसमाज, अमदावाद.

* सूत्र, निर्युक्ति अने भाष्यगाथानो मात्र प्रतीक छे.

६ जै. ध=श्रीजैनधर्मप्रसारक सभा, भावनगर.

४१	राज.	श्रीमलयगिर्याचार्यसूत्रितविवरणयुतं श्रीराजप्रश्नीयोपाङ्गम	आगमोद्धारकः	आ. स.
४२	विपा.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीविपाकश्रुताङ्गम।	,,	आ. स.
४३	विशे.	मल्लधारिश्रीहेमचन्द्रसूरिविरचितबृहद्वृत्तियुतं श्रीविशेषावश्यकभाष्यम्।	पं हरगोवनदास:	[1]य जं.
४४	व्य. प्र.	* निर्युक्तिभाष्यटीकोपेतस्य श्रीव्यवहारसूत्रस्य प्रथमो विभागः	हस्तपोथी	जै. पु. नं. ४८७
४५	व्य. द्वि.	,, ,, ,, द्वितीयो ,,	,,	जै. पु. नं. २६६
४६	सं.	श्रीसंस्तारकप्रकीर्णकम् (गाथा)।	आगमोद्धारकः	आ. स.
४७	सम.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरि सूत्रितविवरणयुतं श्रीसमवायाङ्गम।	,,	आ. स
४८	सूत्र.	निर्युक्तिभाष्यशीलाङ्काचार्यविरचितविवरण यु श्रीसूत्रकृताङ्गम।	,,	आ. स.
४९	सूर्य	श्रीमलयगिरिसूरिविहितविवरणयुतं श्रीसूर्यप्रज्ञप्त्युपाङ्गम।	,,	आ. स.

१ य. जै.=श्रीयशोविजयजीजैनग्रन्थमाला.

* सूत्रादिनां मात्र प्रतिक ज छे.

पत्राङ्क सूचा

श्रीआचाराङ्गम् प्रथम श्रुतस्कध अध्ययनानि आपत्र		अध्ययनानि आपत्र		अध्ययनानिआपत्र		शतकानि आपत्र		श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम् प्रथम श्रुतस्कध अध्ययनानि आपत्र	
१	८१	४	१२१	७	४१५	१६	७१९	१	७७
२	१४८	५	१४१	८	४४३	१७	७३१	२	९०
३	१७४	६	१५३	९	४०९	१८	७६०	३	९६
४	१९५	७	१६५	१०	५२८	१९	७७३	४	९९
५	२३१	८	१७१	**श्रीसमवायाङ्गम्**		२०	८००	५	११३
६	२५८	९	१८१	आदिपद आपत्र		२१	८०२	६	११४
८	२९६	१०	१९५	सागरोपम-कोटाकोटी	१०५	२२	८०४	७	१२०
९	३१७	११	२०७	गणिपिटक	१३३	२३	८०५	८	१५५
द्वितीय श्रुतस्कध		१२	२२९	अवसर्पिणि	१५२	२४	८५१	९	१६९
चूला-१		१३	२४०	निगमनम्	१६०	२५	९२८	१०	१७०
१	३५८	१४	२५२	**श्रीभगवतीजी**		२६	९२७	११	१७३
२	३७४	१५	२६०	शतकानि आपत्रं		२७	९३८	१२	१७७
३	३८४	१६	२६६	१	१०८	२८	९३९	१३	१८२
४	३९१	द्वितीय श्रुतस्कन्ध		२	१७२	२९	९४१	१४	१९२
५	३९८	१	३०३	३	२०२	३०	९४८	१५	१९५
६	४०१	२	३४२	४	२०६	३१	९५०	१६	२२६
७	४०६	३	३६०	५	२४९	३२	९०३	१७	२३४
चूला-२	४२७	४	३७०	६	२८६	३३	९६४	१८	२४२
,, ३	४२९	५	३८५	७	३२७	३४	९७०	१९	२४५
,, ४	४३२	६	४०५	८	४२४	३५	९७१	द्वितीय श्रुतस्कध	
श्रीसूत्रकृताङ्गम्		७	४२७	९	४९२	३६	९७१	१-१०	२५४
प्रथम श्रुतस्कंध		**श्रीस्थानाङ्गम्**		१०	५०८	३७	९७१	**श्रीउपासकदशाङ्गम्**	
अध्ययनानि आपत्र		१	३८	११	५०२	३८	९७१	१-१०	५४
१	५२	२	१०१	१२	५९२	३९	९७१	**श्रीअन्तकृद्दशाङ्गम**	
२	७७	३	१७९	१३	६२९	४०	९७०	वर्ग	आपत्र
३	१०१	४	२८९	१४	६०८	४१	९८१	१-८	३२
		५	३०२	१५	६२६				
		६	३८०						

अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गम्

वर्गा	आपत्र
१-३	८

श्रीप्रश्नव्याकरणाङ्गम्

अध्ययनानि	आपत्र
१	२५
२	४१
३	६४
४	९०
५	९८
६	११३
७	१२१
८	१२९
९	१४१
१०	१६१

श्रीविपाकश्रुताङ्गम्

प्रथम श्रुतस्कंध	
१	३३त, ४४
२-१०	८८
द्वितीय श्रुतस्कंध	
१-१०	९६

श्रीऔपपातिकसूत्रम्

आविषय	आपत्र
राजधान्यादि	२४
साधुगुणा	४८
पत्तन्निर्गम	७७
सिद्धवर्णन	११९

श्रीराजप्रश्नीयं

आविषय	आपत्र
सूर्याभ	१७
यानविमानादि	४४
कूटाकारदृष्टान्त	५९
स्नानपूजादि	११३
मोक्षगमन	१४०

श्रीजीवाजीवाभिगमं

प्रतिपत्तय	आपत्र
१	५१
२	८८
३	४०७
४	४०९
५	४२६
६	४२८
७	४३१
८	४३२
९	४६७

श्रीप्रज्ञापनोपाङ्गम्

पदानि	आपत्र
१	७०
२	११२
३	१६७
४	१७८
५	२०३
६	२१८
७	२२०
८	२२३
९	२२७
१०	२४५
११	२६८
१२	२८३
१३	२८८
१४	२९२
१५	३१६
१६	३२९
१७	३७३
१८	३९४
१९	३९५
२०	४०७
२१	४३४
२२	४५२
२३	४९१
२४	४९३
२५	४९४
२६	४९६
२७	४९७
२८	५२४
२९	५२७
३०	५३१
३१	५३४
३२	५३५
३३	५४२
३४	५५२
३५	५५८
३६	६११

श्रीसूर्यप्रज्ञप्ति

प्राभृतानि	आपत्र
१	४४
२	६२
३	६६
४	७१
५	७८
६	८२
७	८३
८	९१
९	९९
१०	१९६
११	२०१
१२	२३३
१३	२४३
१४	२४४
१५	२५५
१६	२५६
१७	२५७
१८	२६७
१९	२८४
२०	२९७

श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति

वक्षस्कारा	आपत्र
१	८८
२	१७८
३	३८०
४	३८२
५	४२४
६	४३२
७	५४६

श्रीनिरयावलिका

वर्गा	आपत्र
१	१८
२	२०
३	२६
४	३८
५	४२

श्रीनिशीथसूत्रम्				
हस्तपोथी			लीथोप्रिन्ट	
भागः	उद्देशकः	आपत्रं	भागः	आपत्रं
१	१	१२९	१	२०२
	२	१८२	२	३०८
	३	१९४		३३४
	४	२२२		३०४
	५	२४७		४४५
	६	२५२	३	४६३
	७	२५७		४७८
	८	२७०		५०५
	९	२७७		५३३
	१०	३६१		६६५
२	११	५८	४	७७३
	१२	८२		८३२
	१३	१०३		८७५
	१४	१२३		९१६
	१५	२७३	५	१००८
३	१६	५६		११४१
	१७	६२		११६०
	१८	६५	६	११६७
	१९	८८		१२१२
	२०	१७२		१३३८
				+२
				+३५

श्रीबृहत्कल्पसूत्रम्			
हस्तपोथी			
भागः	उद्देशकः	आपत्रं	आगाथा
१	१	७७	५००
		१६६	१०००
		२३५	१५००
		२१७	२१३०
२		१११	३०००
		१५५	३२९२
	२	२०३	४६४
	३	२९३	७२८
३		६४	११९२
	४	१६८	८०५
	५	२१२	३७५
	६	२६७	४३०
—: मुद्रितः :—			
१	१	२५४	८०५
२		६१०	२१२४
३		९२१	३२८९
४	२	१०२२	३६७२
	३	१३०६	४८७६
५	४	१५०२	५६८१
	५	१५९९	६०५९
६	६	१७१२	६४३०

श्रीव्यवहारसूत्रम्				
हस्तपोथी			मुद्रितः	
भागः	उद्देशकः	आपत्रं	उद्देशकः	आपत्रं
१	१	१७४	१	१–६१
		०		१–९९
		०		१–३७०
	२	२१९	२	१–८७
	३	२५८	३	१–७३
२	४	११०	४	१–१०४
	५	१३५	५	१–३९
	६	१९९	६	१–७१
	७	२८३	७	१–९५
	८	३३६	८	१–६०
	९	३५५	९	१–२३
	१०	४५८	१०	१–११४

श्रीआवश्यकसूत्रम्

आदिपत्र	आदिपत्रं
पीठिका	५०
प्रथमवर्गिका	१३६
द्वितीयवर्गिका	१८८
गणधरवाद	२०६
निह्नववाद	३२०
नमस्कारनिर्युक्ति	४७२
१ सामायिकनिर्युक्ति	४९२
२ अध्ययनम्	५१०
३ ,,	५५०
४ ,,	७६३
५ ,,	८०१
६ ,,	८६६

श्रीदशवैकालिकम्

टीका मुद्रित अध्ययनानि	आदिपत्र	चूर्णि हस्तलिखित आदिपत्र	मुद्रित आदिपत्रं
१	८१	३२	३०
२	९९	४१	४२
३	११९	५२	११२
४	१६०	७२	१०८
५	१९०	८९	२०६
६	२०६	१०१	२३४
७	२२३	११५	२६०
८	२३८	१२८	२७४
९	२४८	१४३	३२०
१०	२६८	१५२	३४८
चू. १	२७७	१६०	३६६
चू. २	२८६	१६६	३८०

श्रीउत्तराध्ययनानि

अध्ययनानि	आदिपत्रं	अध्ययनानि	आदिपत्रं
१	२	१९	४६०
२	१४०	२०	४८१
३	१८९	२१	४८७
४	२२८	२२	४९६
५	२५४	२३	५१२
६	२७२	२४	५१९
७	२८०	२५	५३१
८	२९२	२६	५४४
९	३१९	२७	५५३
१०	३४१	२८	५६९
११	३६३	२९	५८२
१२	३७३	३०	६०९
१३	३९२	३१	६१८
१४	४११	३२	६३०
१५	४१९	३३	६४८
१६	४३०	३४	६६३
१७	४३६	३५	६६८
१८	४४४	३६	७१४

श्रीविशेषावश्यकम्

पृष्ठे आदिपत्र	आदिपत्रं
आभिनिबोधिकज्ञान	२४४
केवलज्ञान	३४४
उपोद्घातनिर्युक्तिव्याख्या	६६२
गणधरवाद	८३६
निह्नववाद	१०४४
अनुज्ञानमस्कार	११८०
सिद्धनमस्कार	१२२७
प्रशस्ति	१३६०

श्रीपिण्डनिर्युक्ति

आदिपत्र	आदिपत्र
शिष्यनिदर्शनम्	२८
उद्गमादिदशा	११९
उत्पादनादोषा	१४६
प्रवेशना	१७८

श्रीओघनिर्युक्ति

आदिपत्र	आदिपत्र
प्रतिलेखनादि	१२७
पिण्डद्वारम्	२०७
पिण्डविशुद्धिद्वारम्	२३७

श्रीनंदीसूत्रम्

आदिपत्र	आदिपत्र
पर्षद्	६४
अवधिज्ञानम्	७८
मनःपर्यवज्ञानम्	१२१
केवलज्ञानम्	१२०
मतिज्ञानम्	१८४
श्रुतज्ञानम्	२६७

श्रीअनुयोगद्वाराणि

आदिपत्र	आदिपत्र
आवश्यकानुयोगः–	
निक्षेपा	६३
आनुपूर्वी	१०४
द्रव्यप्रमाणद्वार	१४०
प्रमाणद्वार	२४१
निक्षेपद्वार	२४३
अनुगमद्वार	२५२
नयद्वार	२५३

शुद्धिपत्रकम्

पृष्ठ	विभाग	पंक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
५	१	९	विपतृ०	विषयतृ०
५	१	३४	दशाश्य०	दशाश्रय०
७	१	७	अन्त०	आन्त०
१५	२	३५	शब्दो-प०	शब्दोप०
१८	१	३		
१८	१	१८	०स	०तुण
२०	२	७	०नक्षत्र०	०नक्षत्रगात्र०
२१	१	१६	०प्युदिष्ट०	०प्युपदिष्ट०
२१	१	३३	०सा	०सा वा
२४	१	९	क्षिप्यते	क्षिप्यन्त
२५	२	१७	०त्	०द् अजीवप्राद्वेषिकी
२७	१	९	आनतम्	कर्मी –रागद्वेषवक्- त्ववर्तितस्य सामा यिकवत कस भावो वा आर्जव मार्दव इत्यथ तस्य स्था नानि–भेदा आन वस्थानानि
३६	२	२५	प्रशा	प्रना
३९	१	१७	मर०	मूर०
४१	१	१९	अनिरयन	अनि ध्यवसाय
४३	२	५	०त०	०नु०
५३	१	३३	०माणो	०माही
५६	१–	३५,१	आयन गम्पन इति	आयन-गम्पन इति भाव
५८	१	६	आण०	आहा०
७१	१	१९	द्वारे	द्वारे
६०	१	१०	आमि	आ न
६४	–	५	०धाम	०म्
६५	–	३	०नि-नि०	०निनि
७२	१	०७	०र्दिशा	०र्दिशा
७४	१	–	०माधे	०माधे प्रभृति
				इत्यर्थ
८७	२	२९	द्वार	द्वाय
८९	१	१	अर्हि०	अप्रा० प्रसानां द्वा वराणां वा आत्मन परस्य बोधकाराय हिंसाऽर्थदण्ड,
९६	१	२८	०दिगात०	०दिगाग०
११५	१	७	आचाय	आचार्य
११९	२	२	०पुग्गमा०	०पुर्मा०
१२१	२	१३	समा०	सम०
१२८	१	१२	नियुक्त्या०	सूत्रव्याख्यान नियु क्त्या० इति – श्रद्धानम्
१३६	१	२६	०हेत्र	०हेता
१३९	१	२	०इति	०इति आदान
१३९	१	९	०नति	०नति आदान
१४०	१	३१	०देवाता०	०देवता०
१५२	९	८	०मशा	०मा
१६३	१	१	०तीथ०	०तीर्थ०
१७१	२	०४	उक्त०	उरह०
१७२	२	७	उति०	उति०
१८९	१	१५	पनाका	पनर
२०४	२	२२	०शाख	०शस्त्र०
२०९	१	२६	०णिपय०	०णिपी०
२११	१	२५	नादपा०	नारपा०
२०७	१	०९	आनद्र	ओन्द्र
०२७	१	११	०वयनि	०रयति
२०८	२	१५	०न्ह०	मागु०
२२०	१	२२	आशाश०	आशश०
२३१	२	२८	०भरा	०परा
२३२	२	१०	अ नदिना	अन इना
२३३	२	२७	भेन्न विपण०	भेनाविण०



चित्रहारबन्ध :

[छन्द – शार्दूलविक्रीडित]

शश्वच्छान्तिप्रयान महामलिमत कल्यङ्कुरान कर्मठान,
भव्यापत्तिभरापहान जलजरजन्तुभ्य आनन्ददान ।
दान्तान नौमितमा विभावितविधान व्याख्यानमव्यामनान् ,
प्रांडान् सत्यमग्रान सदा ननिधिया ऽऽनन्दाभिमर्शभरान् ॥ १७८ ॥

समर्पण



आगमोद्धार आचार्य

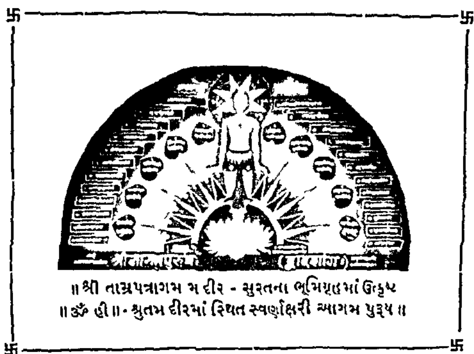
श्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजना

चरणकमलमा समर्पण



जेओए अमारा
शहेर सूर्यपुर अने संस्थाना
सर्वोदय माटे अहोनीश अमोघउपदेशोद्धारा
कृपा वरसावी उत्कर्ष सधाव्यो छे. अमारी संस्थाना
बीजा सैंकडानु प्रथम पुष्प प्रतिक पण तेओने ज
समर्पण करवामां अमो अमारी कर्तव्यता
अनुभवीशुं. आ ग्रन्थ तेओश्रीना आगमोद्धारना
दोहन रूपे जीवनकार्य
गणाशे

— प्रकाशको



॥શ્રી તામ્રપત્રાગમ મંદીર - સુરતના ભૂમિગૃહમાં ઉત્કૃષ્ટ
॥ૐ હ્રીં॥ - શ્રુતમંદીરમાં સ્થિત સ્વર્ણાક્ષરી આગમ પુરૂષ ॥

संकलनाकार



आगमोद्धारक श्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी

॥ गीतार्थसूरये नमः ॥

卐 श्रीआगमोद्धारक–स्तवः 卐

[अनुष्टुप्छन्दः]

श्रीमत्पार्श्वं १ सदापार्श्वं, नत्वा ध्यात्वा च सद्गुरून् ।
प्रकुर्वे भक्तिप्रह्वोऽहमागमोद्धारकस्तवम् ॥ १ ॥

[उपजातिछन्दः]

सद्भिः प्रशस्येन सुधर्मभाजा, जैनागमज्योतिसमर्थनं सत् ।
कृतं २ सदाराद्धश्रुतेन येन, जीयात्स 'आनन्दसूरीश्वरेन्दु' ॥ २ ॥

[वसन्ततिलकाछन्दः]

शैलाणराजमनसि शुलधर्मतुष्ट्या,
३ हिंसानिषेधविधिना कृतधर्मपुष्टिम् ।
गीतार्थहेमनिकषं ४ श्रुतसारमुष्टि-
'मानन्दसागरगुरुं' नुत मुक्तरुष्टिम् ५ ॥ ३ ॥

[मन्दाक्रान्ताछन्दः]

सस्तिद्धाराद्विबुधमहिताध्यात्मतत्त्वात्प्रकृष्टे,
६ धर्मार्थश्रीन्द्रियसुखभरे 'भारते' भारतेऽस्ति ।
७ जैनेन्द्राज्ञाऽप्रहतविधया राजमानो वदान्यः,
श्रीधीप्राज्य प्रथितमहिमा 'गुर्जरत्रा'ख्यदेशः ॥ ४ ॥

तस्यापाऽचेऽधरितधनदश्रेष्ठिधर्मिप्रकीर्णे,
शोभाभासे सुगुणबहुले मण्डले खेटकाख्ये ।
८ धर्मज्ञप्तौ सुविशदमतेर्लब्धतत्त्वप्रतिष्ठं,
सर्वोत्कृष्टं 'कपडवणजं' राजते पूर्गरिष्ठम् ॥ ५ ॥

यत्रोत्तुङ्गं नवजिनगृहं 'पार्श्वनाथादि'मुख्यं,
यत्रास्तव्याः बहुभवभयाः दीक्षिताः नैकभव्याः
पट्टावल्या ९ 'अभयमुनिप'–स्वर्गभूमिः सुगीता,
'वाणिज्या'ख्यं 'कपड'सहितं तन्नु वर्ण्यत केन ? ॥ ६ ॥

---

१ मध्यमपदलोपिसमासोऽत्रज्ञेयः । २ सत्=सम्यक् आराद्धं श्रुतं येनेति विग्रहः । ३ असारिपदहार्थपरकोऽत्र शब्दः । ४ सारसञ्चयार्थकोऽत्र शब्दः । ५ क्रोधवाची शब्दोऽयम् । ६ धर्मस्यार्थं श्री, इन्द्रियाणि सुखभरश्च यस्य (देशस्य) इति विग्रहोऽत्र बोध्यः । ७ जैने द्राज्ञाया अप्रहतत्वप्रकारेणेत्यर्थः । ८ धर्मविबोधे । ९ नवाङ्गीवृत्तिकारश्रीअभयदेवसूरीश्वरस्येत्यर्थः ।

तस्योत्तंसे कलिमलहरे वर्य'दालालपाटे,'
'मीठाभ्रातु' भवभयमथोपाश्रयस्योपकण्ठम् ।
ख्यातं रम्यं जनितविहरं 'वासुपूज्य'स्य चैत्यं,
तत्सान्निध्ये विहितकुशल 'भाइचन्द्रो'ह्यवात्सीत् ॥ ७ ॥

तस्यासीद्वै सुकृतरुचिरा सुश्र'मन्छा'ख्यपत्नी,
शीलोदात्ता सुगुणसदना धर्मतत्त्वे प्रवीणा ।
धर्माबाधं समनुभवतो १ पुण्यसारं तयोर्वै,
'ताराचन्द्रा'नुज'मगनलाला'ख्यपुत्रो बभूव ॥ ८ ॥

२ य पूर्वाराधितसुचरणज्ञानवैराग्यसारात्,
३ सारूप्याप्तेर्वर'धनगिरेः' कालवैपम्यवारी ।
शास्त्राभ्यासाद् तनुभवरतिस्साधुभास्स्पृहालु-
'र्वज्रस्वामे'र्जनक इव यो जातरागातिभार ॥ ९ ॥

यद्वद् भोगान् किल'धनगिरि'र्मन्यमानो ६ विज्ञातान्,
७ वाग्दानार्थं सुबहु यतत शुद्धबुद्धिः समाख्यत् ।
दीक्षां लास्ये सपदि सुतरां कार्यमालोच्य धार्य-
मेतच्छ्रुत्वा चकितमनसः श्रेष्ठिनो मौनमापुः ॥ १० ॥

तद्वद्गाढ शमितमनसा 'मगनलाले'न कन्या-
८ दानात्स्वेष्टप्रभवनलग्न श्रेष्ठिनोऽकारि मोघा ।
किन्त्वम्बादेस्समधिकमुदः मानसं तोषयन् वै,
औदार्येणातिगनि'यमुना'ख्यां १० कणेहत्य कन्याम् ॥ ११ ॥

मोहाढ्येऽते जगति सुतरामुन्मनीभूय सम्यग्,
संसारीयां धृतिमुशलतां त्यज्य विभ्राज्य सर्वाम् ।
कालच्छिद्राधिगतिमुदित संविज्ञानोऽप्रदीप्त..
सार्धीं दीक्षां सुमुनिसविधे भावशुद्धिप्रकर्षात् ॥ १२ ॥

किन्त्वज्ञानाहितमतिभराः 'मग्नलाल'स्य स्वीयाः,
दीक्षाच्यायां प्रचुरविधयाऽकार्षुरूर्जस्विचेष्टाम्।
झञ्झावातैरचलप्रतिमं नैकविघ्नैश्च मत्वा,
राजद्वारेऽसदभियुजनात् कार्यसिद्धिं प्रचक्रुः ॥ १३ ॥

एवं दैवाद् विषमभयके चारके २ वद्धरूपात्,
भोगात् भव्यात् प्रबलविधिना भुञ्जमानादकामम्।
लेभे पत्युः सुभग'यमुना'देस्तथा पुत्ररत्नं,
शुक्तिर्मुक्तां लभति हि यथा स्वातिजाद् वारिवर्षात् ॥ १४ ॥

१ ३ ९ १
ऊर्वीब्रह्मग्रहशशधराब्दे सदाषाढमासे,
४ दर्शाख्याहे ५ विदितमहसः धुर्यस्वप्नात्सुतस्य ।
६ सच्चन्द्रार्कज्ञभृगुसहिते कर्कलग्ने सुराये,
जातास्वाधु मुदितपितरौ 'हेमचन्द्रे'ति सधाम ॥ १५ ॥

यो च बाल्ये धृतिमतियुत ७ मार्गदीपस्य भङ्गे
नाभिव्येजे पुलिससविधे छद्मतां सत्यनिष्ठ ।
धर्माभ्यासं व्यवहृतिकलां द्राग् समभ्यस्य चित्रं,
वाचां पत्युः सुमतिलघुता स्वीयबुद्ध्या हि व्येजे ॥ १६ ॥

जैनाचारे स्वपितुरनिशं प्रेरणाहृन्धनिष्ठ-
स्तत्त्वज्ञानाद् विमलमनसा भोगवैगुण्यमानी ।
आत्मोन्नत्यै प्रगुणमतिक मोहभूपं जिगीषु
सच्चारित्रग्रहणपरतां व्येज उद्वाहकाले ॥ १७ ॥

---

१ व्यवहारे ह्यनल्पदभावाय 'धमाल-तोफान'शब्देन व्यज्यते। २ लग्नविधान-(कायदो)स्यासदालम्बनेनासदारोपहेतुकाधिकरण(दावो-केस)प्रयोगेनेत्यर्थः । ३ बद्धसदृशादिति भाव । ४ अमावास्यायामित्यर्थः । ५ स्वप्नभरस्वप्नादिति भाव । ७ 'म्युनिसिपलिटीफानस' इत्यर्थस्त्रयोऽयशब्द ।

६ पूज्यवर्याणां जन्मकुण्डलिनेयम्।

५
च
६ व
शु ४ बु सू
३
२
७ गु.
१
८ म
१० श
१२ शु
९
११

आगमोद्धारकर्याणां जन्मकुण्डली

किन्तु प्रेम्णा परवशधियां १ बन्धूनां विघ्नरूपा
२ सन्निर्बन्धाचरणमलताच्छन्दतस्स्निग्धमातुः ।
मन्वानो वै परिणयविधिं ३ चारकापत्तिरूपां,
'माणेका'ख्यां कुलजसुकनीं ४ पर्यणैषीद्विचेताः ॥ १८ ॥

मोहान्ध्याढ्ये जगति विषमं ५ ग्रस्तरूपोऽपि तु स्वा-
न्युक्तापायैः ६ प्रकृतिमजहन् हिमवच्चन्द्रशुद्धः ।
ज्येष्ठभ्रातुः सुमुनिभवनाच्चेरणाद् भूरि ७ वप्तुः,
छित्त्वा मोहं समयमियतः प्राव्रजद्धेमचन्द्रः ॥ १९ ॥

८ किन्त्वमुष्यच्छ्वशुरजननिस्वीयकैर्ध्यान्ध्यवृत्तै-
र्न्यायागारे १० परिणयविधेः ९ वजतो ११ वादितं वै ।
न्यायाध्यक्षं चकितममसं धैर्यसारैस्सदुक्तैः,
१२ धृत्वाऽऽप्याप्तत् द्विगुणचरणात्कर्मणा च्यावितोऽसौ ॥ २० ॥

१३ तन्वाद्र्वादिप्रकृतिजहनात्कर्मणोऽपूर्वशक्ते-
र्मोहात्क्रान्तोऽपि १४ जनकसुचोद्यात् स्त्रियो भूषणार्थम् ।
१५आह्लमदे पुरि शुभविधेर्जग्मुषो जग्मुरासान्,
दीक्षोत्कोऽगाज्जनकमहगो 'निम्बपुर्या' 'सुराष्ट्रे' ॥ २१ ॥

'झवेराख्यो'न् कुमततिमिरोज्जासकात् दिव्यधाम्नः,
निश्राये तिथितिनिधिविधौ माघशुक्ले पुष्पेत्र ।
प्राव्रज्या'नन्दयुतजलधि'हेमचन्द्रो' बभूव,
तुष्टो वप्ता निजसुतहितश्रेष्ठीनिम्नमेधात् ॥ २२ ॥

---

१ [illegible] । २ [illegible] । ३ [illegible]
मित्यर्थः । ४ [illegible] । ५ [illegible] भावः । ६ [illegible]
[illegible] । ७ [illegible] । ८ [illegible] । ९ [illegible] 'भाषित' इति [illegible]
[illegible] । १० [illegible] (कायदो) [illegible] । ११ [illegible] 'वगियाद करी' इति [illegible] । १२ [illegible] –
[illegible] (... [illegible] ...)
[illegible] । १३ ([illegible]) [illegible] ([illegible]) [illegible] ([illegible]-
[illegible]) [illegible] । १४ [illegible] । १५ [illegible]
[illegible] ।

वर्षान्ते 'चाणस्म'जनतां बोधयित्वार्यतस्य,
'छाणीग्रामे'[1]ऽवसदपिमितं वृष्टिकालं सुधीरः ।
मूर्त्तिद्वेषाज्जिनमतरिपून्[2] ढुण्ढकान् जोषमाऽऽस्य,
'कल्लोलाख्ये'पुरि विहरता येन दीप्तं सुधाम्नः ॥ २९ ॥

शास्त्राख्याचकितसुबुध'स्तम्भने' यो ह्यकार्षी-
च्चातुर्मासं वसुमितमथो[3] कृतधर्मप्रचारः ।
प्रद्योतकाज्जिनमतहितात् पार्श्वचन्द्रान्यतीर्थ्यान्,
कृत्वा वादे प्रतिहतधियो भासिता जैनदृष्टिः ॥ ३० ॥

वर्षान्ते[4] पड्डरियुतभविक सङ्घमादाय भव्यं,
यात्रां कृत्वा विमलगिरिसत्तीर्थराजस्य सम्यक् ।
भव्योद्बोधं सुविधिविवरन् वर्षं सार्णे 'पुर्यां',
चातुर्मासं नवममवसच्छास्त्रतत्त्वप्रकाशी ॥ ३१ ॥

चातुर्मासत्रय'महमदावाद'माश्रित्य लब्धा,
शब्दे[5] न्याये रुचिरपटुता येन विद्वत्सुमान्या ।
कृत्वा रम्यां सुविधि[6] तमसां नोदिकां तीर्थयात्रां,
दुष्कालात्तो सहकृतिनिधि[7] कारिता 'पट्टणे'[8] ये ॥ ३२ ॥

नागाक्षाङ्केन्दुमितशरदो[9] माघराकाहिरम्ये,
प्रायच्छद्धर्मजमरणछोडाय दीक्षां सुशिक्षाम् ।
आद्यं शिष्यं 'विजयसहितं सागरा'न्त विधाय,
वर्षा[9] ग्रहेषुनिधिकुभवा 'भावपुर्या'[10] मवात्सीत् ॥ ३३ ॥

१ मममम् । २ मूर्त्तिपूजाप्रहारिणि । ३ अष्टमम् । ४ एत हि शब्द भाषाया 'छरीपालको सघ' इत्युच्यते । ५ व्याकरणे इत्यर्थ । ६ पापानामित्यर्थः । ७ 'सहायकारी फड' इति भाव । ८ गूर्जरदेशीयाणहिल्लपुरस्य पत्तने इति भाव । ९ (पेटलादपत्तन) प मवरामिते रणछोडदासाख्यश्रेष्ठीदारकाभिधाय भव्यादेव्यः । १० भावनगरे इत्यथ ।

शास्त्रोपज्ञं हितमुपदिशन् भूरिभव्यप्रबोधं,
वर्षाकालं[1] मनुमितमथो 'राजपुर्यां'[2] मुवास ।
तत्रा श्री'नेमिमुनिपति'नोद्वह्य सिद्धान्तयोगान्,
'पन्न्यासाख्यं' पदमलभत ज्येष्ठशुक्ले दशम्याम् ॥ ३४ ॥

वर्षां नीत्वा 'कपडवणजे' धर्मकृत्यैस्सुरम्यै-
र्यात'स्सौराष्ट्र'मथ विचरन् देशनादानदक्षः ।
कृत्वैतस्ता[3]रणवरगिरेस्स्पर्शनां धर्मवाचा,
प्रीतैः 'पेथापुर'परिषदो[4] योजकेस्सत्कृतोऽभूत् ॥ ३५ ॥

मज्जद्भव्यान् भवजलनिधौ रक्षिता जैनवाग्भि-
र्वर्षे[5] नीत्वाऽऽगमविधियुते 'भावराजाख्यपुर्यां'[6] ।
'सूर्यमद्रङ्गे' विविधसुमहैस्सत्कृतस्सूरतीयै-
श्चातुर्मासीं 'सुरतनगरे' यापयास रम्याम् ॥ ३६ ॥

चैत्यान् सर्वान् सविधि 'सुरते'श्राद्धसङ्घेन नत्वा,
गत्वा 'मुम्बापुरि' भविजनैः प्रार्थितः 'लालबागे' ।
गौराङ्गाणां 'समितशिखरे' हर्म्यसन्निर्मिमीषां,
धैर्यात् सत्ताभियमगणयन् ध्वस्तवान् यः क्षणेन ॥ ३७ ॥

'देवला. भ्रातु'र्निधिमपि वरं स्थापयित्वोपदेशा-
दारेभे सद्विषयवचिलग्रन्थरत्नप्रकाशम् ।
सङ्घं[7] नीत्वा'ऽभयविधु'मुखं 'चान्तरीक्षार्हतीर्थ,'
यात्रां चक्रे स्मरिनिरतैः[8] श्राद्धवर्यैस्समेतः ॥ ३८ ॥

धाष्टर्यं[9] नग्नैस्सुबहु विहितं तत्र पूजाप्रसङ्गे,
मिथ्याभ्याख्यानमपि च ततो न्यायगेहे प्रयुक्तम् ।
जित्वाऽकार्षु झगिति गुरवस्सत्यतत्त्वप्रयोगा-
दाङ्ग्लन्यायाधिपतिहृदये जैनधर्मप्रकाशम् ॥ ३९ ॥

---

१ चतुर्दशममित्यर्थः । २ राजनगरे–अहमदावादपुरे । ३ तारंगातीर्थस्येत्यर्थ. । ४ पेथापुरीयप्रान्तिकपरिषदि गुरुवरस्य जानमल्लतेस्सूचकोऽयपादः । ५ चातुर्मासद्वयमित्यर्थः । ६ भावनगरे–राजनगरे । ७ अभयचंद्रसंघरिणस्संघप्रतिपदेन निर्गोमितमित्यर्थः । ८ 'छरी पालतो संघ' इतिभाव. । ९ दिगम्बरैरित्यर्थ. ।

५ ६ ९ १ १
बाणर्त्वङ्केन्दुमितसमसि प्रावृषं 'येवलायां,'
स्थित्वोद्वाह्य प्रथममुपधानव्रतं श्रावकाणाम् ।
'सूर्यद्रङ्गे' जलदसमयौ यापितौ धर्मकृत्यै-
र्दीक्षित्वैतर्हितनगणपं[२] 'माणिकं' चान्यभव्यान् ॥ ४० ॥

धर्मक्रान्तिच्छलमुपदधन् लालनाख्यो हि विद्वन्-
मन्य'स्सिद्धाचल'भुवि तदाऽपूजयत्स्वं शिवाद्यैः[३] ।
पाखण्डं तत् भृशमपगतं कर्तुकामैर्गणीन्द्रै-
र्मन्दश्रीः कान्ति[४]विजयगुरैस्सङ्घबाह्यः कृतस्सः ॥ ४१ ॥

स्थित्वा[५] वर्षे[६] विषयजिनमौ 'स्तम्भतीर्थे' च 'छाण्यां,'
ज्येष्ठभ्रात्रे 'विजयमणये' वर्यपन्न्यासभूषाम् ।
दत्त्वा तीर्थानि सविधि नमन् 'पत्तनं चाणहिल्लं,'
भव्यश्रोतॄन् जिनमतसुधां पाययन्नाप रम्यम् ॥ ४२ ॥

तत्रावाप्य श्रुत[७]वरमुदाप्यायिनीं भव्यवर्गा,
सङ्घस्थित्यां[८] तपसि[९] धवले दिक्तिथौ[१०] मल्लितीर्थे[११] ।
अज्ञानान्धंतमसमथनायागमोद्धारकर्त्रीं[१२]
श्रोऽयां संस्थाप्य समितिमथो हर्षयामास भव्यान् ॥ ४३ ॥

प्राज्यं य'स्स्वगुरु'जयवीरा'भिधैरागमाना-
मुद्धारार्थं चरमसमये' पालितुं तद् यथेष्टम् ।
बह्वायासेन च गणिवरस्साधुमह्योपकृत्यै,
प्रारेभे मुद्रणमथ महन् स्वाश्रयेणागमानाम् ॥ ४४ ॥

---

१ वर्षे । २ वर्तमानकालीनगच्छाधिपतिमिति भावः । ३ शिवजीदेवशीप्रभृतिभिः । ४ प्रवर्तककान्तिविजयमहाराजमुख्यैः सूरिभिरित्यध्याहार्यम् । ५ चातुर्मासद्वयम् । ६ त्रयोविंशति–चतुर्विंशतितमाब्द्यर्थं । ७ श्रुतज्ञानस्य वरमुद्–हर्षम्प्याप्यायिनी–पोषिका । ८ चतुर्विधसङ्घस्योपस्थितिसूचकमिदं पदम् । ९ वैशाखमासे । १० दशम्याम् । ११ भोयणीतीर्थे । १२ आगमोदयमितिसूचकोऽयं शब्दः ।

वर्षायां 'पाटण'मुपगतैर्वाचनाऽद्या ह्यकारि,
निर्ग्रन्थानां वरमतिमतामागमाभ्यासवृद्ध्यै ।
तस्यां श्री'सूयगडदशवैकालपट्त्रिंशिकादी'न,
व्याख्यायाऽगुः 'कपडवणजे' वाचनायै गणीशाः ॥ ४५ ॥

तत्र व्याख्याय पटु[1] 'ललितावश्यकादी'न सुयत्नं
जग्मुर्वर्षार्थं[2] 'महमदपुर्यां' स्वधर्माभिवृद्ध्यै ।
तत्र[3] 'स्थानाङ्ग'मथ सविशेषाकरं वाचयित्वा,
वर्षामस्थात् 'सुरतनगरे' भासयन् जैनधर्मम् ॥ ४६ ॥

तत्राकार्षु[4]र्युगशरमिते वाचने[5] 'चानुयोग-
श्रीनन्द्याचारमुखमहदावश्यकाद्या'गमानाम् ।
एवंकारात्[6] सुयतिसमजे कालदोषात्प्रहीणं,
सच्छास्त्राणां विततपठनं संततं वृद्धिमाप ॥ ४७ ॥

'आनन्दाब्धेः' प्रवरगणिनस्तत्त्वनिष्ठागरिष्ठौ,
भक्तयुत्साहौ श्रुतजिनमतस्फीतिकार्येषु दृष्ट्वा[7] ।
(४)(७)(९)(१)
वर्षेऽद्याब्धिग्रहतनुमते राधशुक्ले दशम्या-
माच र्यत्वं 'कमलविजया'स्सूरयः 'सूरते'ऽदुः ॥ ४८ ॥

स्वर्णे माणिक्यमिव खचितं योग्यसाम्यं च सूरे-
र्वीक्ष्य प्रीतस्सुमहमकरोत्'सूर्यपुर्या'स्ससङ्घ ।
न्यायागारे[8]:ललनविषयानिष्टवादं विजित्य,
धर्मभ्राजी मुनिपतिरथो 'मोहमय्यां' समेतः ॥ ४९ ॥

---

१ ललितविस्तरा-आवश्यकसूत्र १/४-अनुयोगद्वारसूत्र-योगदृष्टिसमुच्चय-उत्तराध्ययनसूत्र १/३ ग्रन्थानित्यर्थः । २ अमदावादनगरे ।
३ विशेषावश्यकभाष्य १/६ सहितमित्यर्थः । ४ चतुर्थो-पञ्चमो चेति भावः । ५ ललितविस्तरा-योगदृष्टि० अनुयोग० १/२-आवश्यक० १/४-उत्तराध्ययन० १/३-विशेषावश्यक० १/६-स्थानांग० १/२-सूत्राणामित्यर्थः । ६ साधुसङ्घे इति भावः । ७ वैशाखशुक्ले । ८ लालन-शिवजीप्रकरणे न्यायागारेऽपि विजित्येत्यर्थः ।

(२८) १
लब्ध्वङ्कप्रावृषि वृषमहिम्नोऽङ्को नैककार्यै-
दुर्भिक्षार्त्तीयनिधिकरणेऽप्रेरयद् दानशौण्डान्।
'कीकाभ्रातु'र्भवनमुषितस्सूरिराड् 'भायखले,'
स्वागःक्षान्त्यै विहितविनयः प्रार्थितो लालनेन ॥५०॥

(५) (७) (९) (१)
चातुर्मासे शरमुनिनवेन्दौ श्रुतप्रोकरीत्या,
२
देवस्वोत्सर्पणविषदने वादमल्लान् विजेतुः।
सूरेस्सङ्घार्पितनिखिलसद्ग्रन्थरत्नानि सङ्घो
३
'जैनानन्दश्रुतवरगृहे'ऽस्थापय'त्सूरतीयः' ॥५१॥

'सिद्धाद्रेर्जीवणनवलचन्द्रो'हि यत्प्रेरणातो,
यात्रासङ्घं विविधसुमहैः पादचारं निनाय।
कृत्वा यात्रां सह सुभविकैस्सूरिवर्यश्चकार,
४
'पालीताणे' गुरुमुखमितां वाचनां साधुसङ्घे ॥५२॥

'पिण्ड-प्रज्ञापन-भगवतीनोघनिर्युक्तिका'श्च,
व्याख्यायो ह्य शुभमुपधानव्रतं भाविकानाम्।
विज्ञप्ति'मालववसिमतां' मानयित्वा च सूरि-
५
र्शिष्यै साकं किल 'रतिललामाख्यपुर्यां' समेत ॥५३॥

धर्मोन्नत्या 'ऋषभसहितां केशरीमल्लनाम्नीं,
६
संस्थां' तत्राखिलजिनमतोद्भासिकां स्थापयित्वा।
७
'व्याख्याप्रज्ञप्तिसमवयसूत्रादिप्रज्ञापना'नां,
८
चक्रे व्याख्यां कुलगिरिमितां वाचनां कल्पकामः ॥५४॥

'शैलाणाख्यं' पुरमथ यतीन्द्रो हि सङ्घाग्रहेण,
चातुर्मासार्थमुपगमितो धर्ममुद्धर्तुं प्रबोद्धुम्।
मत्वा धन्यं नृपतिरपि गुरुच्छात्रवाचो निशम्या-
मार्युद्घो दयितहृदयस्स्वीयराज्ये चकार ॥५५॥

---

१ धर्मप्रभावनाया इत्यर्थः। २ उत्सर्पण(बोली)स्याशास्त्रीयताया देवद्रव्यस्य च चर्चासूचकमेतत्पदम्। ३ श्रीजैनानन्द-पुस्तकालये इत्यर्थः। ४ षष्टीमित्यर्थः। ५ रतलामनगरे इत्यर्थः। ६ मिलशब्दो हि विभ्रापर्यायोऽतोऽत्र निर्विघ्नतया जिनमतस्योद्भासकारिणीमित्यर्थो ज्ञेयः। ७ छन्दोभङ्गभिया विहितः श्रीसमवायाङ्गसूत्रार्थे एतादृशप्रयोगः मर्षणीयः धीधनैः विद्वद्भिः। ८ सप्तमीम्।

पूर्णे[१] शैलाणनृपविषये[1] ह्यष्टमीरुद्रदर्शा-

ऽऽख्यातार्ह-पर्युषणदिवसे मारीचारं न्यषेधीत्।

प्राच्यं वृत्तं ह्यकबरविबोधेषु स्मृतिं 'हीरसूरे'-

रानीयायाद्विविधनिगमान् पाठयन् 'रत्नपुर्याम्'[2] ॥ ५६ ॥

प्रेमज्ञप्त्या श्रुतवरतपस्सम्यगुद्वाह्य चान्यैः-

पुण्यैः कृत्यैर्जलदसमये भ्राजयित्वा सुधर्मम्।

'माण्डूतीर्थे'[3]प्रचलितविधौ बाधकं 'धारभूपं,'[4]

ह्युत्क्षेपोच्चैरसविधयेऽबोधयत्तत्र गत्वा[5] ॥ ५७ ॥

'माण्डू-भोपावर'लसितसच्चैत्ययोस्स्वोपदेशा-

ज्जीर्णोद्धारं प्रवरभविकैः कारयित्वा यतीन्द्रः।

बोधं पञ्चेडपुरपतये 'सेमलीठक्कुराय,'

प्रादात्ताभ्यां निजभुवि ततो मारयो[6] वारिता वै ॥ ५८ ॥

वर्षाकाले जिनमतविभां वर्द्धयन् 'रत्नपुर्यां,'

शास्त्रैर्वादे यतिपविजयं[7] त्रिस्तुतीयं व्यजैषीत्।

सङ्घस्याभ्यर्थनमथ निशम्योपधानं सुवाह्य,

'सम्मेताद्रिं' व्रजितुमभिवङ्गं प्रतस्थे मुनीन्द्रः ॥ ५९ ॥

मध्ये मार्गं निजप्रतिभया धर्मभासं वितन्वन्,

लोकं नानाविधमुपदिशन् 'कालिकाता'मयासीत्।

चातुर्मासे युग(४)गुण(३)मिते तत्र चैत्यादिधर्म्य-

स्थानस्थित्यै बहुतरनिधिः कारितो देशनातः ॥ ६० ॥

---

१ अष्टम्यामेकादश्याममावास्यायां पर्युषणासु चेत्यर्थः। २ रतलामनगरे। ३ माण्डवगढार्थपरकमिदं पदम्। ४ धारसंस्थानाधीशमिति भावः। ५ उत्क्षेपेण निरसनार्थमित्यर्थः। ६ हिंसाः। ७ श्रीयतीन्द्रविजयाह्वमिति भावः।

(०) (२)

तीर्थेशानां खयमलमितानां सुनिर्वाणभूमे-

'स्सम्मेताद्रे': प्रथितयशसः पुण्ययात्रामकार्षीत्।

राज्ञो 'दुद्धेडियविजअसिंह'स्य भक्त्या विहृत्य,

वर्षाहितोस्सुमुनिपनयोऽजीमगञ्जे' न्यवात्सुः ॥ ६१ ॥

चात्रूलोकं विषयजसुखास्वादलीनं विबोध्य,

संवेगापूरितसुवचनैर्धर्ममार्गे न्ययुङ्क्त।

दीक्षाब्रह्मव्रतविधियुतानुत्सवान् कारयित्वा,

पावं पावं विविधनिगमान् 'सादडी'ग्राममापुः ॥ ६२ ॥

पावं पावं जिनमतसुधीर्भव्यलोकं यतीन्द्रः,

प्राग्वाटानां मरुजसहजं वैमनस्यं चिरत्नम्।

कृत्वा दूरे श्रुततपविधिं सोत्सवं कारयित्वा,

बोद्धुं धर्म शिथिलकृतिकान् 'मेदपाटं' विजह्रे ॥ ६३ ॥

[१] (७) (३)

नीत्वा वर्षा'मुदयनगरे' सम्मितां धातुस्यै-

र्जग्मुस्संघेन सह गुरवः 'केशरीया'ख्यतीर्थम्।

[२]

तत्रौद्दण्डयं क्षपणककृतं स्वीयबुद्ध्या व्यपास्या-

ध्यारोप्योच्चैस्सितपटयशोऽवर्धयन सद्ध्वजं वै ॥ ६४ ॥

नग्नाटीयैः प्रतिहतमथो धर्मतेजो विवर्ध्य,'

न्यायागारेऽधिगतविजया आययुर्गूर्जरत्रान्'।

चातुर्मासं सुमुनिसहिता ह्यम्मदावादपुर्या,'

तस्थुर्भव्यान् विविधममलं जैनतत्त्वं दिशन्तः ॥ ६५ ॥

'माकुभ्रातु'र्विनतिवशगा 'आश्विनी सिद्धचक्री-

मोली' दिव्यां नवपदमहो बोधिकां कारयन्त।

[३] संस्थां संस्थाप्य च नवपदाराधिकां स्वोपदेशा-

[४] त्संगूमेन्मोमायटिविनयतंश्चप्युरास्तिश्यतत्त्वम् ॥ ६६ ॥

---

१ उदयपुरे। २ दिगम्बरविहितम्। ३ श्रीनवपदआराधकसमाजस्थापनाया. सूचक शेष पादः। ४ विद्याशाला(डोशीवाडानी पोळ) मध्ये आसिक–आसिक वर्षा स्कोटस्तत्र गिद्ध्यान्यानतां सूचकोऽयं पादः।

तद्व्याख्यानात्[1] क्षुभितमनिकान् शिक्षितान् शास्त्रपाठे

स्सन्तोष्यार्यं[2] धनवितरणौचित्यमत्रैव विशेष्य ।

याता 'श्रीदेशविरतिसमाज' ततस्स्थापयित्वा,

'श्रीमोयण्या'[3] मतिशुभमतैरायतन्मेत्स्थाय ॥ ६७ ॥

वर्षाराम[(१)] निधि[(२)]गुणमितं यावितु[४] 'जामपुर्या'

यान्तो[५] माग ऽहमदनगरे' 'तीर्थसिद्धाचलस्य' ।

रक्षाहेतोस्सपदि निधये प्रेरयित्वा सुभव्यान,

रक्षाधिक्यं द्रविणचयन कारयामासुराशु ॥ ६८ ॥

स्थाने स्थाने जिनमतमह वर्द्धयन्तो गणीन्द्रा-

स्स्थित्वा[६] वर्षा 'नवलनगर' चातुर्मासिस्स्वकीये ।

सत्र[७]चामाम्लगृहमथ चास्थापयन् छात्रगेह

दान्ता[८] पूज्ये धृतिमतिबलात् शास्त्रदीक्षाविरुद्धा ॥ ६९ ॥

पश्चादेना स्सुरतनगरे जैनसाहित्यवृद्धि[१०]

सत्कोशार्थं धनिक'नगिन मगुपुत्र'[११]व्यबोधन ।

'मुर्शीदाबादपविजयसिंह'स्समेतोऽत्र सूरे-

र्भक्तिप्यन्तीश्वरणपङ्को भावनो दर्शनाय ॥ ७० ॥

आसीच्छ्री'देशविरतिसमाजस्य'[१२] पर्षत्सुरम्या,

दत्ता तस्या भविकहितदा देशना सारगर्भा ।

रत्नाम्भोधे[१३] 'पठनसदनस्थायि कोश विवर्द्ध्य,

दृब्धा 'तत्त्वप्रसारणकरी बोधमालाख्यमस्या ॥ ७१ ॥

---

१ अन्तःशिक्षाप्रभावैतान् नवयुवकानित्यर्थ । २ धनस्य व्यय दान वा यत्र यात्र वैवर्द्धमित्यर्थे, यद्धि तस्मिन् समय मन प्रब नक्नी भौतिकवादसमर्थकस्ल पीआदर्श तेन हाइस्कूल-बालिकादीनां हिताहितकारत्व मनसा सूचक पदमस्ति । ३ श्रादशविरतिसमाजस्य प्रथमाधिवेशनायत्यर्थ । ४ जामनगरे । ५ पन्यासप्रणि श्यकाना वार्षिक दत्त्वा तीर्थमाणिद्धनिग्य स्य तुद्ध्याय आनिद्राबलस्यागपडपयनप्रवृत्तिरेतत्श्लोक प्रदर्शितास्ति । ६ जामनगरस्थित्य । ७ सत्र=भोजनशाला, आचाम्लगृह=आयंबिलशाला । ८ पठितुं दर्शनाथ विद्याविदुषकानिति भाव । ९ निष्कल्मष तनत कृत्वा इत्यर्थ । १० जैनसाहित्योद्धारक-फण्डमित्यर्थ । ११ नगीनभाई मगुभाई श्रेष्ठिनमित्यर्थ । १२ अधिवेशनमित्यर्थ । १३ श्रा रत्नसागरजैनशालामस्थायिरङ मिति भाव ।

प्रव्राज्यानेकभविकजनान् पावयन्त स्सुराष्ट्रान्',

प्रावृट्कालं शुभकृतिभरै'स्स्तम्भतीर्थे' व्यतीयुः ।

संस्था प्याहम्मदपुर'मितास्तत्रसंस्थाय वर्षा',

श्रुत्वोयच्छन् 'वटपुरनृपाज्ञां[१] सुदीक्षाविरुद्धाम् ॥ ७२ ॥

सूरेश्शास्त्राभ्यसनमुदिता जङ्गमज्ञानशाले-

त्येवं चाशंसदतिविदुषो'जार्मनी क्राउझाख्या' ।

नेत्राम्भोधिप्रमितजलमुक्काल[२]लाभस्पृहावन्-

मुम्बापुर्यां गतभविजनप्रार्थनातो विजह्रे ॥ ७३ ॥

शास्त्रव्याख्याप्रथितयशसो 'लालबागे' हि सूरे

र्दीक्षापुष्टि प्रवचनविधेः क्षुब्धयूनां प्रचारैः ।

व्यामूढाया ऋजुजनततेर्मोहहत्यै समित्या[३]

पत्रं संस्थाप्रथनजनितं चालितं 'सिद्धचक्रम्' ॥ ७४ ॥

'माणेकाम्भोनिधि'सदुपदेशात्प्रकृतोपधाने,

मालारोपोत्सवमुपगता 'घट्टकाह्वे पुरे'[४] वै ।

व्याख्यानैस्स्वैस्समयसहितैस्संयमायोग्यसूचि-[५]

नाट्यं रुद्ध्वा युवजनमतं भासितं शीसनं हि ॥ ७५ ॥

पश्चाद्याता'स्सुरतनगरं' शिष्यवृन्दैस्समेता-

स्संवत्सर्यास्तिथिगतविसंवादमुन्मुच्य शास्त्रैः ।

भाव्युत्सूत्राध्वगविषमता याऽसता व्यञ्जिता सा,

किन्नोऽद्यापि प्रकटविदिता वर्त्तते पर्वतिथ्याः? ॥ ७६ ॥

---

१ वडोदराराज्यदीक्षाप्रतिबन्धककायदार्थपरकमेतत्पदम् । २ चातुर्मासवाची अयं शब्दः । ३ श्रीसिद्धचक्रसाहित्यप्रचारकसमितेः स्थापनं सिद्धचक्राख्यपाक्षिकप्रारंभश्चेत्यर्थः । ४ घाटकोपरे इत्यर्थः । ५ दीक्षाया अयोग्यताप्रदर्शकं युवकसंघप्रेरितं नाटकमित्यर्थः ।

नानाप्रश्नोत्थितमतिगतभ्रान्तिशान्त्यै सुपर्यत्[१],
सङ्घायासात् सितपटमतालम्बिनां सद्यतीनाम्।
'आकाशाङ्काङ्कशशिसहिते वत्सरे राजपुर्यां'[२],
जाता यस्यां यतिपतिवरास्सम्यगामन्त्रिता ये ॥ ७७ ॥

शङ्कापङ्कं भविकमनसो क्षालितुं दत्तचित्ताः,
गत्वा तत्र स्वकमतिभराच्छास्त्रपाठैश्च सर्वान्'।
सन्तोष्यैता भविकविनयाग्रोरदेस्साक्रमेवा-
सेर्कुः सांसारिकजनगणं सूरयो 'मेहसाणाम्' ॥ ७८ ॥

मध्ये[३] वर्षं सुयदु विदितदशासनोन्नायिकार्ये[४]-
रत्नःक्षेत्रे[५] सुभविकनृणां धर्मपीयूषसेकः।
यूरोपीयः श्रुतिपटपुटं'ग्रोउन' सूरिशंसां,
पीत्वाऽचेतो ह्यमृतवचनैर्धौततङ्कः शशंस ॥ ७९ ॥

काले काले पुनरपि पुनः सूरयः पालितेभ्य,
शिक्षा-दीक्षा-वितरणमपि प्रायशो योग्यमेव।
तस्मात् पादार्पणकरुणया पावयन्त्वेपमोऽस्मा-[६]
नेवंसङ्घादरभरभृतः संययुः' पालिताणाम् ॥ ८० ॥

चातुर्मास्ये गतवति यथा भ्राजते शारदी श्री,
पद्मव्याजैस्सरसि सरसा सन्ततं तद्वदेव।
सज्ज्ञानश्रीरपि गुरुवराणां च सन्तन्यमाना,
नानारूपैर्नवनवमहैर्धर्मकृत्यैश्च रेजे ॥ ८१ ॥

१ संमेलनमित्यर्थः। २ राजनगरे–अहमदावादे। ३ चातुर्मास्यमध्ये इत्यर्थः। ४ शासनप्रभावककार्यैरिति भावः। ५ अन्तःकरणरूपक्षेत्रे इति भावः। ६ आता नहि।

'श्रीमाणिक्य'[1] 'कुमुदविजय'श्चेत्युपाध्यायवर्यौ,
पन्न्यासौ द्वौ बहुगुणयुतौ 'भक्ति'-'पद्मा'भिधौ च।
अत्युत्साहैस्सह शुभकृपासिन्धुवद्भ्यो भवद्भ्यो
लब्ध्वाऽऽचार्याह्वयमुपदवीं धर्मभ्राजो विरेजुः ॥ ८२ ॥

'आनन्दस्याम्बुनिधि'रिति यद् वर्त्तते नाम सत्यं,
प्रत्यक्षन्तत् भुवि विदधती किं न जैनी प्रजाऽभूत्।
तस्मात् सूरीन् झगिति 'नगरे जामपूर्वे'[2]ऽपि सङ्घ',
प्रार्थं प्रार्थं कथमपि चतुर्मासवासाय निन्ये ॥ ८३ ॥

अत्र कैश्चित् श्रुतकथितसिद्धान्तवाचा विरुद्धं,
प्रोक्तं वृद्धिक्षयविषयकं पर्वतिथ्याः मतं यत्।
अत्र तत्खण्डनमथ कृतं शास्त्रदृष्ट्यापि लोकं
बोधितवाऽरं नवमतवतो लज्जितास्तान् प्रचक्रुः ॥ ८४ ॥

तत्रैवाग्र जलदसमये स्थापितो 'देववाग-
लक्ष्म्या'नाम्नाऽऽश्रमवर उपादिश्य लोकं सुखेन।
पश्चाद् भक्तो 'नगरधनपः पोपटाह्व'स्सुभक्त्या,
सौराष्ट्रीयाखिलजिनपसत्तीर्थसंस्पर्शनाय ॥ ८५ ॥

सङ्घं नीत्वाचरणचलनं षड्रिसम्पालनोत्क,
सानन्दो[3]ऽगात्, सकलमपि तद्वर्णनं चाग्रतस्था।
'तीर्थाः सौराष्ट्रविषयभवा सङ्घयात्रा च'[4] नाम्ना-
ख्याते ग्रन्थे लसति तदिताऽऽयोत्तु मार्गेतयन्तून् ॥ ८६ ॥
(मन्दाक्रान्ता)

---

१ श्रीमाणिक्यसागरोपाध्याय श्रीकुमुदविजयोपाध्याय-श्रीभक्तिविजयपंन्यास-श्रीपद्मविजयपंन्यासेभ्य आचार्यपदप्रदानं सूरत [illegible] पुरे। २ जामनगर। ३ आनन्दसागरसूरीश्वर [illegible]। ४ 'सौराष्ट्रना तीर्थो अने यात्रा' [illegible]।

(८) (४)
एवं वसन्धिमितमथ ये वृष्टिवासं जनानां,
पुण्याढ्यानामतिविनयतः'सिद्धक्षेत्रे हि कृत्वा ।
१
'खातारम्मं चरमजिनपस्याह्वया ह्यागमानां,
रक्षागेहस्य च' सुभविकैः कारयामासुरत्र ॥ ८७ ॥

२
अन्यत्तत्र श्रमणनिकरग्रन्थसंग्राहि सद्मं,
संस्थाप्यारं शुभ'महमदावादपुर्या ' यतीन्द्राः ।
३
भक्त'श्रीमोहन' इति महच्छ्रेष्ठिना सद्व्रतानां,
रम्ये ह्युद्यापनविधिमखेऽभ्यर्थ्यमानाः प्रजग्मुः ॥ ८८ ॥

सिद्धं शास्त्रैरुपकृतिकरं लक्षशो रूप्यकैस्तं,
सम्पाद्योद्यापनविधिमलं 'झाम्पडापोल' मध्ये ।
(५)(५) ९)(१) ४
तत्रावात्सुः शरनवनवैकाङ्किते ऽब्देऽब्दकाले,
५
चान्यां वीथ्यां सुगुरुचरणा 'नागजिद् भूधराणाम्' ॥ ८९ ॥

६ ७
पश्चादेता क्षरणसमयं यापयित्वाऽऽगमाना-
मागारस्य प्रचलितविधिं वीक्षितुं 'पालीताणाम्' ।
साङ्गोपाङ्गं त्रुटिविरहितं सत्यमारब्धकृत्य,
त्यक्त्वा सर्वस्वमपि सततं साधयन्त्येव सन्तः ॥ ९० ॥

कृत्वा लोकोत्तरसुचरितं ये तरन्तीह लोकं,
धन्यास्ते वै सफलजनना भूभरा सन्ति चान्ये ।
सत्यामेतां भणितीमथ ते कर्तुकामा यतीन्द्रा-
८
स्तत्रातिष्ठन् घरसलिलदाऽऽसेककालत्रयीं ते ॥ ९१ ॥

---

१ श्रीवर्धमानजैनागममन्दिरस्य खातमुहूर्तमिति भावः । २ श्रमणसङ्घपुस्तकालयाख्यज्ञानालयस्थापनामित्यर्थः । ३ श्रेष्ठिवर्य-श्रीमोहनलाल छोटालाल इति भावः । ४ वृष्टिकाले । ५ पोलवाची अयं शब्दो ज्ञेयः । ६ चातुर्मासमिति भावः । ७ शिलोत्कीर्णागममन्दिरस्येत्यर्थः । ८ चातुर्मासत्रयमित्यर्थः ।

दीर्घायासैर्गणधरवरप्रोक्तजैनागमानां,

पाठं शुद्धं दृषदुदरगं शिल्पविद्याप्रवीणैः ।

कारं कारं किमु न कलितं सूरिभिः कर्म चित्रं,

यस्माज्जातो ह्युपलनिकरोऽप्यागमज्ञ (भ्राट्) परे के ? ॥ ९२ ॥

रम्योपाध्यायकपदमदुः 'श्रीक्षमासागरेभ्यः,

श्रीमच्चन्द्रेभ्य उचितपदं चारु पन्न्यासकाह्वम् ।

वर्षे चाग्रे[1] गणधरगृहं सिद्धचक्राह्वपूर्वं,'

[2]संस्थाप्यैव जिनमतविभाभासकं सत्समाजम् ॥ ९३ ॥

(९)(९)(९) १)
अङ्काङ्काङ्काब्जमितशरदि ह्यागमानां गृहस्य,

सत्यां पूर्त्तावभिनवप्रतिष्ठाविधिं माघमासे ।

पञ्चम्यामञ्जनशुभशलाकोत्सवेनापि सत्रां,

सन्मूर्त्तीनां श्रुतविधियुतं कारयामासुरत्र ॥ ९४ ॥

सम्पाद्यैवं 'कपडवणजश्रेष्ठिचीमनलाल-

डाह्याभाईत्यभिधपरमश्रावकप्रार्थनातः ।

निश्रायां सूरिवरसुगुरोश्चाय संयोजितायाः

एताश्चैत्र्या नवपदसमाराधनायाः सुसिद्धयै' ॥ ९५ ॥

चातुर्मासं भविकहितकृच्चापि तत्रैव कृत्वा,

श्रीसङ्घस्यानुनयसहितप्रार्थना'न्मोहमय्याः' ।

धर्मोद्भासं विहृतिममलां कुर्वतां भक्तवृन्द-

स्स्थाने स्थाने मुदितमनसा स्वागतं सुष्ठु चक्रे ॥ ९६ ॥

---

१ श्रीसिद्धचक्रगणधरमन्दिरमित्यर्थः । २ श्रीजैनधर्मप्रभावकसमाजाभिधसभायाः स्थापनसूचकोऽयं पदसमूहः ।

शर्मं शर्मं चिरसमयजां सद्दिदृक्षा पिपासां,
व्याख्यानैः स्वैरपि च जनता अभ्यपिक्षन् प्रकामम् ।
सम्प्राप्ता 'श्रीसुरतनगरं' यत्र चाभूतपूर्वं,
भव्यं भव्यैः कृतमतितमां स्वागतं भासमानम् ॥ ९७ ॥

अर्धक्रोशादपि[1] चलसमारोह आसीद् दवीयान्,
यस्मिन् [2]केतुप्रवरलसितप्रामहस्ताश्च केचित् ।
[3] (५७)
सुश्रेष्ठास्संवरगुणमिता बैण्डवाद्यीयसङ्घा (!)
वादं वादं शुभततघनानद्धवाद्यान् विरेजुः ॥ ९८ ॥

लक्षाधिक्या नगरजनता राजमार्गेऽभिसूरिं,
शीर्षाण्युच्चैर्गुणरतिभरान्नप्रयन्ती बभूव ।
मार्गे मार्गे वसन-कुसुम-स्वर्ण रूप्यादिपात्रैः,
श्वालं द्वाराण्यति विरचितान्यार्थं सद्भक्तिभावे ॥ ९९ ॥

गिन्नीमुक्ताप्रभृतिसमुदयैश्च रत्नैर्गहुंली,
बद्धचजातश्शुचिगुणलसद् रागदाढर्याद् यतीशे ।
स्वर्णैः रौप्यैर्वर[4]कुसुमभरैस्सत्य[5]मुक्तासुलाजैः
प्रोद्यद्वर्द्धं विविधसुमहैस्सत्कृते'स्सूरतीये' ॥ १०० ॥

(७) (५)
साम्बेलानांभयशरमितानां मुदाणादिदीप्ति,
स्सूरेर्नानासुगुणमहिमाख्यायकास्साधुवादाः[6] ।
रीत्या चैव प्रचुरनिरावर्णितुश्चाप्यशक्या,
ग्रन्थाज्ज्ञेया प्रविशनकथा 'सागरस्वागता'-ख्यात् ॥ १०१ ॥

यश्चखारीयाकुलजसुजनैः क्षत्रियैः मीलपैद्यैः[7],
पक्षाद्दि विंशतिमियसहस्राधिकं रार्ययित्वा ।
सूरे पादार्पणमुदितया कारयित्वा सुभक्त्या,
पायं पायं जिनमतसुधां सूरियस्त्राज्जहर्षुः ॥ १०२ ॥

१ स्वागतयात्रा (सामैयु) २ झंडा-निशानधारिणः । ३ उत्तमाः । ४ श्रेष्ठकुसुमसमूहैः । ५ सत्यमुक्ताफलानां वर्धापनैरितिभावः ।
६ व्यवहारे हि एतच्छब्दार्थे "साइन बॉर्डो" इतिपदेन कथ्यते । ७ अन्यालयरतिरिति ।

सत्रा सङ्घेन च विधियुता [1]चैत्ययात्रा सुरम्या-
ऽकार्यास्ते यद् समविवरणं मुद्रितं [2]पुस्तके वै।
सोत्साहं विंशतिमणमितान् मोदकान् संवितीर्य,
धन्या जाता 'सुरत'-जनता देशनादर्शनाभ्याम् ॥ १०३ ॥

चातुर्मासं तदनु विहितं '[3]मोहमय्यां' प्रशस्तं,
यस्मिन् धर्मोन्नतिततिकृती[4] कारयित्वा सुबह्व्यः।
भूयोऽप्येतास्सुरतनगरं श्रावकाभ्यर्थनात
स्तत्राभूवन् स्थिरचरमाः वृष्टिवासाश्च पञ्च ॥ १०४ ॥

२ ० ० २
द्वया-काशाभ्रद्विमितशरदो [5]माधवे मासि शुक्ले,
ह्येकादश्या शुभशनिदिने [6]श्रावकेभ्यः सुशस्ता।
संस्थाऽस्थापि प्रयतमनसा ताम्रपत्रागमानां,
भव्यादर्शस्थितिकरमहन्मन्दिरस्थापनाये ॥ १०५ ॥

वर्षे[7] चाग्रेऽहमद[8]वरपू श्रेष्ठिनो माकु[9]नाम्न
हस्ताभ्यामागमवरगृहस्यादिमं खातकर्म।
सत्कार्यार्थं तदनु च शिलारोपणं वाडीलाले-[10]
त्याख्यश्रेष्ठिप्रवरकरतः कारितं मोदपूर्वम् ॥ १०६ ॥

२ ० ८ २
वर्षे रुद्रा क्ष ख ख-मिथुने ह्याश्विने शुक्लपक्षे,
आशातिथ्या[11] सुजिनप्रतिमा पालिताणात इद्धा।
सद्विंशत्युत्तरशतमिता[12] आगमागारहेतो-
रानाय्याकारि च सुविधिना तत्र भव्यप्रवेशः ॥ १०७ ॥

४ ० ० २
'तुर्योद्दि-द्वयभ्र नयन-मिते हायने माघशुक्ले,
शुक्रे श्रेष्ठे क्षण[13]तिथियुते सन्मुहूर्ते समासाम।
सन्मूर्तीनामपरिगणितोत्साहयुक्तैर्जनौघै
रम्ये तस्मिन् श्रुतवरगृहे कारिता सुप्रतिष्ठा ॥ १०८ ॥

---

१ चैत्यपरिपाटीत्यर्थः। २ 'सूर्यपुरनु स्वागत' इत्यादि इति शेषः। ३ मुंबाईनगरे। ४ धर्मस्योन्नतिविस्तारकारिकार्याणीत्यर्थः। ५ वैशाखे इत्यर्थः। ६ श्रावकद्वारेत्यर्थः। ७ २००३ वर्षे इत्यर्थः। ८ अमदावादनगरवासिन इत्यर्थ। ९ मोकुभाईत्यभिधया प्रसिद्धस्य माणेकलाल-मनसुखलालाख्यश्रेष्ठिन इत्यर्थः। १० सुराणुरीयख्यातव्यापारि श्रीवाडीलाल चत्रभुजाह्वश्रेष्ठिकरत इत्यर्थः। ११ दशमीदिने। १२ १२० संख्याका। १३ क्षणशब्दस्य, काव्याचित्यमत्र ह्येय, कालस्य च भूतवतमानभाविध्येण त्रैविध्यस्य विदितत्वात् तृतीयायामित्यर्थो बोध्य।

संवत्सर्यास्तिथिवरसमाराधनायाः प्रसङ्गे-
ऽस्मिन्नेवाब्दे समुदितविसंवादनिर्यासकार्ये।
नैकैर्वैर्यैः प्रचलितविधेर्यै श्रुतप्रोक्ततां यैः
संसाध्यान्यानपि जिनपथः पोषणोत्कान् प्रचक्रुः॥ १०९ ॥

काले गच्छत्यविरतमितो ह्यमिमे पौषमासे,
कृष्णे पक्षे [1]शरतिथिगतेऽचिन्तितो वायुरोगः।
वृद्धिं यातो बहुतरचिकित्साविधिज्ञैः सुयत्नात्,
सज्ञाः जातास्समुपचरिताः किन्तु शान्तो न जातः॥ ११० ॥

सैवाऽपूर्वा स्थितिरथ तदाऽऽसीन्नचाल्पाप्यशान्ति-
श्चेतोऽप्राक्षीज्जिनपतिपदेऽभूदपूर्वोऽनुरागः।
स्थित्यां तस्यामपि नवनवश्लोकनिर्माणकार्यं,
ज्ञानध्यानादिकमपि मनाङ् नावरुद्धं कदाचित्॥ १११ ॥

६ ० ० २ २
षड्-खा-काश द्वि-मितपरवार्णो पुनर्वायुवेगो
वारंवारं प्रबलरभसा पीडयामास देहम्।
मध्ये यस्य स्थितिपरवशाच्छ्रीनमस्कारमन्त्र-
स्यायातोऽभूदहह! सततं श्रावणस्य प्रसङ्गः॥ ११२ ॥

आदेः स्वभ्यस्तमथ च तथा देहास्थत्यादि सम्यग्
दाढ्यं येनेतरजनगणासह्यरोगेऽपि शान्त्या।
ये स्तम्भाद्याश्रयविरहिताश्चारु पद्मासनेन,
स्वेष्टस्मृत्यामथ निजमनो योजयामासुरारात्॥ ११३ ॥

दृष्ट्वाऽऽश्चर्यं भृशमुपगता डॉक्टरा अप्यवोचन्,
धन्या एते यदिह विषमस्थेऽपि रोगे सुशान्ताः।
अन्यः कश्चिद् यदि गदहतोऽस्यां स्थितौ स्यात्तदा तु,
स्वान्तर्भीतिः स खलु सहसान्यां दशामेव यायात्॥ ११४ ॥

---

१ पञ्चमीतिथौ। २ अयशब्द. सवत्सरापरपर्याय इति हैमलिंगानुशासने।

एवं रुग्णां स्थितिमथ निजां वीक्ष्य विज्ञाय चास्या-
ऽनित्यत्वं वै सपदि वपुषो माधवे[1] शुक्लषष्ठ्याम्।
सर्वानाहूय च निजशरीरं ततो व्युत्सृजन्तो-
ऽस्मार्षुर्भक्त्या जिनपतिवरान् ह्यर्धपद्मासनस्था ॥ ११५ ॥

एकादश्यां निशि कथिदिनेऽप्येकवारं त्वतीव-
वेगादाक्रान्तिरभवदहा! येन सर्वेऽप्यचेष्टा।
सन्त्यक्ताशाः जिनवरवचः श्रावयामासुराशु,
सत्पुण्यानामतिबलतया[2] किन्त्वितं दुर्दिनं तत्॥ ११६ ॥

[3]वैशाखस्यासितदलगते पञ्चमेऽह्न्यस्तकाले,
सूर्यस्याभूत् त्रिदशनिलये श्रीगुरूणां प्रयाणम्।
हन्ताकस्माद् सुरतजनताऽचिन्त्यदम्भोलिपाताद्,
भीता व्यग्रा प्रकृतिविधुरा कृत्यशून्या बभूव॥ ११७ ॥

सङ्घेनोच्चैस्तरशिखरिता चारु दोला ह्यकारि,
प्रासादस्यानुकरणकरी सत्कलाभिश्च युक्ता।
[4]विगुरपत्रैरधिगतसमाचारवन्तश्च भक्ता
ग्रामाद्ग्रामादरमुपगता[5] अन्त्ययात्रार्थमाशु॥ ११८ ॥

दोलोत्थानाय च कृतसहस्रादिमुद्रार्पणा वै,
भक्ताः स्वीयं मनुजजननं सार्थकीचक्रुरेव।
अन्ये प्रादुर्द्रविणनिचयं वह्निसंस्कारकार्ये,
भव्या यात्रा निखिलनगरे भ्रामिता भक्तिभावै ॥ ११९ ॥

पश्चाद्गोपीपुरपरिसरे [6]स्वागमौकःसमीप,
संस्थित्यां चापरिमितजनानां गुरूणां सुभव्यम्।
नानाकाष्ठैर्मलयगिरिजैर्दाहसंस्कारकृत्यं,
नाभूत् पूर्वं न च परमितो भावि तादृग् बभूव॥ १२० ॥

---

१ वैशाख मासे। २ किंतु इत=गतम् इति पदच्छेदोऽत्र बोध्य।३ गूर्जरदेशीयपद्धत्येद चैत्र, पूर्णिमान्तमास (शास्त्रीय) पद्धत्या तु ज्येष्ठस्येति बोध्यम्। ४ तार-देशिग्रामान्याधुनिकसीमन्देशावदपत्रैरित्यर्थः। ५ अरम=शीघ्रम्। ६ सुरतागममन्दिरार्थं।

शिष्याः [१२५] पादोत्तरशतमिताः [३८] अष्टत्रिंशत् सुसंस्थाः,
[१२] ज्ञानागारा मुनिमितमताः सन्ति यत्कीर्त्तिदीपाः।
यैश्चाकारि श्रुतहितकरीर्वाचनाः सप्त [७] यासु,
ग्रन्थाः [१] लक्षद्वयधिकगणितश्लोकमात्रा ह्यवाचि॥ १२१ ॥

[२] सप्तत्रिंशत्सुरपनयनाङ्काधिकानां नवीन-
श्लोकानां ते भुवि रचयितारः कथं स्युर्न नम्याः।
[१७९] ऊनाशीत्युत्तरगतशतग्रन्थसम्पादकास्ते,
धन्याः [५०] पञ्चाशदधिकशुभग्रन्थसङ्ग्राहकाश्च॥ १२२ ॥

व्याख्यानानामपि कतिपये ग्रन्थवर्याः प्रसिद्धा,
येषां सन्ति प्रथितविभवा [३] भूमिका प्राथमिक्यः।
[७८] द्व्यनाशीतिप्रमितरुचिरग्रन्थरत्नेषु येषां,
मार्गं लोकान् जनिहितकरं बोधयन्त्यो लसन्ति॥ १२३ ॥

[१२] आदित्याङ्का सुनतमुपधानव्रताः कारिता ये,
शोधं शोधं सकलसुजिनोक्तागमानां सुपाठान्।
सल्लोकानामुपकृतिहितं मङ्क्षु मुद्रापयित्वा,
नैकान् योग्यानभ्यसकृतिनोऽधीतयेऽयूयुजँश्च॥ १२४ ॥

एवं नानाव्रतजपतपोध्यानदीक्षाप्रतिष्ठा-
यात्रास्नात्रादिकबहुविधोद्यापनैश्चोपधानैः।
भव्यान् जीवान् जिनपगदिते रम्यमार्गे नियुज्य,
त्यक्त्वा देहं सुरपतिगृहं संययुः सूरिवर्याः॥ १२५ ॥

---

१. २३३३४२ श्लोकप्रमाणग्रन्था वाचनासु वाचिताः। २ सप्तत्रिंशत्सहस्रमितानामित्यर्थः। ३ प्रस्तावना इत्यर्थः।

येषां कीर्ति विमलविमलामस्मताम्रागमाना-
भागारस्था दिशि दिशि दिशन्त्य पताका नितान्तम्
यावच्चन्द्रारुणकिरणवन्तौ[1] दिवि द्योतमानौ,
गायं गायं तदवधि मुदा रञ्जयिष्यन्ति लोकम्॥ १२६ ॥

॥ अन्त्यमंगलम् ॥

(शिखरिणी)

कृतं येलोकानामुपकृतिहितं वाचनिकया,
श्रुतानामभ्यासस्त्रुटिविरहितः सम्प्रचलितः।
सुपूज्याँस्तान् 'श्रीसागर'इति शुभाख्याप्रथितकान्,
नमामः सूरीन्द्रान् श्रुतवरसमुद्धारनिरतान्॥ १२७ ॥

चित्र–हार–बन्ध*

(शार्दूलविक्रीडितम)

शश्वच्छान्तिभयान् महामतिमतः कल्यङ्कारान्[2] कर्मठान्[3],
भव्यापत्तिभरापहान् जलजवज्जन्तुभ्य आनन्ददान्।
दान्तान् नौमितमा विभावितविधीन् व्याख्यानसन्धासनान्[4]
प्रौढान् सत्यसरान् सदा नतधियाऽऽनन्दाब्धिसूरीश्वरान्॥ १२८ ॥

(स्रग्धराछन्द)

धन्या मान्या वदान्या गुणिगणगणनाख्यप्रगण्या महान्तो,
विद्वद्गोष्ठीगरिष्ठा जिनपतिचरणेन्दीवरेन्दिन्दिराश्च[5]।
वादीन्द्रा देशकेन्द्रा अविकलनिगमज्ञाततत्त्वा[6] मह्ष्ठा[7],
'आचार्यानन्दवर्या' प्रथितगुणगणा 'सागरान्ता' जयन्ति॥ १२९ ॥

॥ आगमपर्यालोचनप्राण आगमोपजीवी च श्रमण
श्रामण्यसारमवाप्नोति लभते च निर्वृतिम्॥

॥ जीयासुरागमोद्धारकाः सद्गुरवः ।

---

१ यावच्चन्द्रार्कावित्यर्थ । २ कल्यशब्दो हि कल्याणापरपर्यायभद्रवाचकस्तत भद्रङ्करानित्यर्थोऽत्र ज्ञेय । ३ क्रियाकुशलान्। ४ व्याख्यानग्रन्थप्रतिष्ठानित्यर्थ । ५ तीर्थङ्करचरणकमलभ्रमरा इत्यर्थ । ६ शास्त्रापरपर्यायोऽयम्। ७ पूज्या ।

* अयं हि श्लोक आधुनिकभूषणपरिभाषया नेकलेसेत्याख्य स्वर्णमयरत्नहाररूपेण सयोजितोऽस्ति–ऽत्र प्रतिकृतिरूपेऽस्मिन्नेव ग्रंथे मुद्रिताऽस्त्यन्यत्र ।

|| ॐ अर्हम् ||

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ।

शेठ देवचन्द्रलालभाइ-जैन-पुस्तकोद्धार-ग्रन्थाङ्के-१०१

आगमोद्धारक-आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरिसङ्कलितः-

अल्पपरिचितसैद्धांतिकशब्दकोषः

अकारः

अक-लाञ्छनम् । जीवा० पृष्ठ २७० । अङ्क, उत्सङ्ग । ओघ० १४३ । रत्नविशेष । ज० प्र० २३ ।

अककरेल्लुगं-शाकविशेष । आचा० ३४८ ।

अकण-अङ्कनं, तप्ताय शलाकादिना चिह्नकरणम् । प्रश्न० ७२ । लाञ्छनम् श्वशृगालचरणादिभिः । आव० ५८८ ।

अकधाती-अङ्कधात्री, धात्रीदोषे । नि० चू० द्वि० ९३आ ।

(अकपतिता)-दासी । उत्त० २६२ ।

अकमुहसंठिया-अङ्कमुखसंस्थिता, पद्मासनोपविष्टोत्सङ्गमुखवत् अर्धवलयाकार । सूर्य० ७१ ।

अकलिवी-लिपिविशेष । प्रज्ञा० ५६ ।

अकवडेंसए-ईशानकल्पपूर्वदिगावतंसक । भग० २०३ ।

अकविधा-(अङ्कविद्या) गणितम् । जै० प्र० १३६ ।

अकहरो-अङ्कधर चन्द्रमा । जीवा० २७० ।

अकावई-अङ्कावती, वक्षस्कारपर्वत । ज० प्र० ३५७ ।

अकावई-अङ्कावती रम्यविजये राजधानी नाम । जं० प्र० ३५२ । शीतोदादक्षिणकूले वक्षस्कार । ठाणा० ८० । दक्षिणवर्ती वक्षस्कार । ठाणा० ३२६ ।

अकावईओ-महाविदेहे विजयराजधानी । ठाणा० ८० ।

अंकावडिंसए-अङ्कावतंसक, ईशानस्य पूर्वस्यामवतंसक । जीवा० ३९१ ।

अकितो-अङ्कित, चिह्नित । आव० ८२२ ।

(अकिल्ल)-नगर । औप० ३ ।

(अकुडिओ)-अङ्कुटिक, नागदन्तक, । ज० प्र० ५० । जीवा० २०५ ।

अकुर-अङ्कुर, प्रवाल । जं० प्र० ३०१ ।

अंकुर-अङ्कुर, शाल्यादिबीजसूचि । भग० ३०६ । जं० प्र० १६८ ।

अकुल्ल-अङ्कोठ । वृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३१ ।

अकुसं-महाशुक्रे विमानविशेष । सम० ३२ । अङ्कुशं, येन रजोहरणमङ्कुशवत्करद्वयेन गृहीत्वा वन्दते तत् । कृतिकर्मणि पञ्चदोष । आव० ५४३ ।

अंकुस-अङ्कुश सृणि । प्रश्न० २३ ।

अकुसपलव-महाशुक्रे विमानविशेष । सम० ३२ ।

अकुसय-अङ्कुशकम्, तरुपल्लवग्रहणार्थमङ्कुशाकृति । भग० ११३ ।

अंकुसये-अङ्कुशका, देवार्चनार्थवृक्षपल्लवाकर्षणार्थम् । औप० ९५ ।

अंकुसो-अङ्कुश । अङ्कुशाकारो मुक्तादामावलम्बनाश्रयभूत । जीवा० २१० ।

अंके-अङ्कवाण्ड खरकाण्डे चतुर्दश काण्डम् । जीवा० ८९ । अङ्क, । प्रज्ञा० २७ । उत्सङ्गे । ज० प्र० ३८ । मणिभेद उत्त० ६८९ । श्वेतरत्नविशेष । प्रज्ञा० ३६१ । रत्नविशेष । जीवा० २३ ।

अंकेल्लण-अङ्केल्लण, तर्जनकविशेष । ज० प्र० २३५ ।

अंको-अङ्क, पृथिवीभेद । आचा० ७९ । रत्नविशेष । भग० ४७९ । एकोरमैथुनं । नि० चू० प्र० २५५आ । हृदिगम्य, शस्त्रानिविशेष । प्रश्न० ३५ । रत्नविशेष । जीवा० १८०, १९१ । पद्मासनोपविष्टस्योत्सङ्गरूप आसनबन्ध । सूर्य० ७१ । ज० प्र० ४५४ ।

अंकोल-गुच्छविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

अंकोल्ल-वृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।
अंकोल्लाणं-गुल्मविशेषः । भग० ८०३ ।
अंगं-अङ्गम्, अङ्गविषयम् । आव० ६६० । कारणमवयवः । ठाणा० ३ । कारणम् । प्रश्न० १०३ । शरीरावयवप्रमाण-स्पन्दितादिविकारफलोद्भावकं शास्त्रम् । सम० ४९ । समग्रं वपुः । जीवा० २७० । कारणम् । जं० प्र० ९९ । अज्यते व्यक्तीक्रियतेऽस्मिन्नित्यङ्गम् । आचा० ५ । भेदः कारणं वा । दश० ९० । शिरःप्रभृति । दश० २३७ । आंगं-अक्षिबाहुस्फुरणादिकम् । सूत्र० ३१८ । शिरःस्फुरणादि । ठाणा० ४२७ ।
अंग-अङ्गानि । शिक्षादीनि षडङ्गानि । भग० ११४ ।
अंगओ-अङ्गकः, भद्रप्रकृतिकः । आव० ७०४ ।
अंगचूलिया-अङ्गचूलिका, अंगानामुपासकदशाप्रभृतीनां पंचानां चूलिका-निरयावलिका । व्य० द्वि० ४५४आ ।
अंगणं-मंडवथाणं । नि० चू० प्र० १९२अ । अजिरम् । प्रश्न० १३८ । अङ्गन-गृहस्थंडिलभूमिस्थानम् । ओघ० २०० ।
अंगणेत्तिका-हस्तमालक आभरणविशेषः । औप० ५५ ।
अंगदं-बाहुशीर्षाभरणविशेषः । जीवा० १६२ । केयूरम् । जं० प्र० १०६ ।
अंगदे-केयूरे । ठाणा० ४२१ । अङ्गनिका । उत्त० ७८ ।
अंगनाम-शिरउरःपृष्ठबाहूदरपादनामानि । तत्त्वा० ८ ।
अंगपडिहारिणि-अन्तःपुरप्रतिहारिणी । आव० ७०० ।
अंगपविट्ठं-गणधरकृतं मातृकापदत्रयप्रभवं वा ध्रुवश्रुत वा । ठाणा० ४९ । अङ्गप्रविष्टम् । ठाणा० २०० ।
अंगप्रविष्टं-गणधरदृब्धमाचारादि । तत्त्वा० १-२४ ।
अंगबाहिरे-अङ्गबाह्यम्, स्थविरकृतं मातृकापदत्रयव्यतिरिक्त-व्याकरणनिबद्धमध्रुवश्रुतं वा उत्तराध्ययनादि । ठाणा० ५१ ।
अंगमंगं-अङ्गमङ्गम्, गात्रम् । औप० ११ ।
अंगमंगो-अङ्गमङ्गम्, अङ्गप्रत्यङ्गम् । जीवा० २७७ ।
अंगमंदिरंमि-चंपाचैत्याभिधानम् । भग० ६७५ ।
अंगमद्दियाओ-अंगस्यल्पमर्दनकारिकाः । भग० ५४८ ।
अंगयं-अङ्गदं, बाह्वाभरणविशेषः । जीवा० २५३ । प्रश्न० ७१ । बाहुशीर्षाभरणविशेषरूपम् । प्रज्ञा० ८८ ।
अंगय-अङ्गके, मृर्द्धादौ । जं० प्र० १८५ । अङ्गदम्, बाह्वाभरणविशेषः । भग० १३२ ।
अंगरिसी-अङ्गर्षिः, आर्जवोदाहरणे भद्रक कौशिकार्यज्येष्ठशिष्यः । आव० ७०४ । येनोपशमे सत्यपातं सामायिकम् । आव० ३४७ ।
अंगलोअं-अङ्गलोकं, म्लेच्छजातीयजनाश्रयस्थानम् । जं० प्र० २२० ।
अंगवंसो-अङ्गवंशः, अङ्गराजसन्तानस्य सम्बन्धिनः सप्त-सप्ततिराजानः प्रव्रजिताः । सम० ८५ ।
अंगविगारं-अङ्गविकारः, शिरःस्फुरणादिस्तच्छुभाशुभसूचकं शास्त्रमपि । उ० ४१७ ।
अंगविज्जं-अङ्गविद्याम्, शिरःप्रभृत्यंगस्फुरणतः शुभाशुभ-सूचिकां विद्याम् । उत्त० ३९५ ।
अंगविज्जा-अङ्गविद्या, अङ्ग-पाद विद्या-प्रासादपातनात्मिका (सत्कारपुरस्कारपरिषहे दृष्टांतपदम्) । उत्त० १२५ ।
अंगहारिका-नृत्यकलाद्वितीयभेदः । सम० ८४ ।
अंगा-अगा., जनपदविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।
अंगाइं-अगानि, शिरःप्रभृतीनि । प्रज्ञा० ४६९ । एकादशांगानि प्रज्ञा० ५६ । अवयवाः । ठाणा० १७० । शिरःप्रभृतीनि, । उत्त० ४२८ ।
अंगाणं-देशविशेषः । भग० ६८० ।
अंगादाणं-मेढ्रम् । नि० चू० प्र० ११६अ ।
अंगादानं-मेहनम् । नि० चू० द्वि० ३०आ ।
अंगारः-(इंगाल), विगतज्वालोऽग्निः, । भग० १२१ । विगतधूमज्वालो दह्यमानेन्धनात्मकः । उत्त० ६९४ । कृष्णवर्णवस्तु । आचा० २९ ।
अंगारओ-अंगारकः, महाग्रहः । जीवा० ३३६, ३३७ ।
अंगारकारिका-(इंगालकारिया), अग्निशकटिका । भग० ६९७ ।
अंगारदोषः-(इंगालदोस), आहाररागाद्गार्द्ध्याद्भुञ्जानस्य चारित्रांगारत्वापादनाद् । आचा० ३५१ ।
अंगारमर्दकः-(अंगारमद्दय) द्रव्यप्रव्रजितः । दश० ११५ । उत्त० ५६६ । विशे० १०६४ ।
अंगारय-अंगारकः, मंगलः । औप० ५२ ।
अंगारवई-अंगारवती, संवेगोदाहरणे शिशुमारपुरपति-धुन्धुमारदुहिता श्राविका । आव० ७०९ ।
अंगारवई प०-अंगारवती प्र० । आव० ६७ ।
अंगारशकटिका-(इंगालकारिया) । आचा० ३०९ ।
अंगारा-(इंगाल), लघुतराग्निकणाः । ठाणा० ४२० ।

अंगारियं-अंगारकित, विवर्णीभूतम् । आचा० ३४६ ।
अंगिरसा-गौतमगोत्रोत्तरभेदः । ठाणा० ३९० ।
अंगुट्ठं-अंगुष्ठम् । आव० ८४५ ।
अंगुट्ठपसिणा-विद्याविशेष । नि० चू० प्र० १७७अ ।
अंगुट्ठि-स्नानम् । नि० चू० प्र० १९१आ ।
अंगुट्ठी-अगुष्ठी, शिरोऽवगुण्ठनम् । आव० ९५ ।
अंगुलपुहुत्तिया-अंगुलपृथक्त्वम् । जीवा० ३९ ।
अंगुलभावो-अंगुलभाव, शुभाशुभपदार्थ । विशे० ८७६ ।
अंगुलि-अंगुलि, करशाखा । आचा० ३८ ।
अंगुलिको-चर्ममयोपकरणम् । नि० चू० प्र० १३७अ । नखभंगादिरक्षट्ठा । नि० चू० द्वि० १८अ । अंगुलिकोश, शृङ्गमयो दारुमयो वंशमयो वा येनाङ्गुलिसलमेन तन्त्री आहन्यते स । जीवा० १९५ । अंगुलिकोशक, शृङ्गदारुदन्तादिमय. । जं० प्र० ४० ।
अंगुलिज्जं-अंगुलीयकम्, अंगुल्याभरणविशेष । औप० ५५ ।
अंगुलिज्जग-अंगुलीयकम्, मुद्रिका । जं० प्र० १०६ ।
अंगुलिज्जयं-अंगुलीयकम् । आव० १७० ।
अंगुलिधणुहओ-अंगुलधनु । आव० ४८४ ।
अंगुलिभमुहा-कायोत्सर्गदोष । आव० ७९८ ।
अंगुलिसरथय-शस्त्रकोशविशेष । नि० चू० द्वि० १८अ ।
अंगुलीयगं-अंगुलीयकं, भूषणविधिविशेष । जीवा० २६९ ।
अंगुले-प्रमाणभेद । भग० २७५ । अंगुष्ठ-प्रश्नभेद । ठाणा० ३०१ । अंगुष्ठप्रश्न, शुभाशुभसूचक प्रश्न । उत्त० ४४६ ।
अंगोवंगाइं-अंगोपांगानि । प्रज्ञा० ४६९ ।
अंगोहलिं-अंगरक्षणम्, देशस्नानम् । आव० ४१७ । व्य० द्वि० ४०५अ ।
अंचइ-अञ्चति, उत्पाटयति । जं० प्र० ४२१ । जीवा० २५५ ।
अंचिअं-अंचित, नृत्यविशेष । जं० प्र० ४१२ ।
अंचिअंचियं-उत्पतनिपतां पार्श्वत करोति । ठाणा० ५२२ ।
अंचिओ-अंचित, व्याप्त । आव० १६७ । अंचितनामा पञ्चविंशतितमो नाट्यविधि । जीवा० २४७ ।
अंचितरिभितं-अंचितरिभितनामा सप्तविंशतितमो नाट्यविधि । जीवा० २४७ ।
अंचितांचि-गमागम । भग० ६८३ ।
अंछिते-सकृद्गतं । भग० ६८३ ।
अंछियं-दुर्भिक्ष । नि० चू० प्र० १४८आ । दासकर्मी । नि० चू० प्र० १८३आ । नाट्यभेद । नि० चू० तृ० १अ । अंचितं, नाट्यम् । जं० प्र० ४१७ । आव० ३११ ।
अंचेइ-आकुञ्चयति । औप० २५ ।
अंछंति-आकर्षन्ति । विशे० ३८३ । आव० ४८ ।
अंछणं-पण्हपसिरणं । नि० चू० प्र० ११९आ । अंगुल्या लितस्य रंगितस्य । ओघ० १४४ । आकर्षणं-समारणम् । ओघ० १४४ ।
अंछमाणाणं-आकर्षताम् । आव० ४८ ।
अंछवियंछियं-आकर्षविकर्षम् । आव० ८३० ।
अंछिऊण-आकृष्य । आव० ४२७ ।
अंछित्ता-अपहृियता माया । व्य० द्वि० ८४आ ।
अंछिय-आकृष्यते, प्रक्षाल्यते । वृ० प्र० ८१अ ।
अंछियनयना-आकृष्टनेत्रा । प्रश्न० २१ । (जिम्भिन्दियं-छिय) आञ्छितम्-आकृष्टम् (आकृष्टजिह्वेन्द्रिया) । प्रश्न० ६० ।
अंछिया-आकृष्ण । आव० २२७ ।
अंजणं-आणतकल्पे विमानविशेष । सम० ३५ । सौवीराञ्जनादि । बृ० द्वि० ९२अ । सौवीरस्य रसंजनं वा । नि० चू० प्र० २१८आ । अञ्जनम्, सौवीरादि । आव० ५३० ।
अंजण-अञ्जन, तस्माय शलाकया नेत्रयो म्रक्षणम् वा देहस्य क्षारतैलादिना । सम० १२६ । अञ्जनं, सौवीराञ्जनादि । प्रज्ञा० २७ । सौवीराञ्जनम् । जं० प्र० ६० । अञ्जना, अञ्जनरत्नमयत्वात् । जं० प्र० १६३ ।
अंजणई-वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।
अंजणए-अञ्जनक, वनस्पतिविशेष । औप० १० ।
अंजणकेसिया-अञ्जनकेशिका, वनस्पतिविशेष । जं० प्र० ३३ ।
अंजणकेसियाकुसुम-अञ्जनकेशिकाकुसुमम्, वनस्पतिविशेषपुष्पम् । प्रज्ञा० ३६१ ।
अंजणग-अञ्जनक, पर्वतविशेष । आव० ८२७ ।
अंजणगपव्वय-अञ्जनपर्वत । आव० ३८९ । सम० ९० ।
अंजणगा-अञ्जनका, नन्दीश्वरचक्रवालमध्यवर्तिन पर्वता । प्रज्ञा० ९६ । ठाणा० ४८० ।
अंजणगिरि-अञ्जनगिरि । जं० प्र० १९६ ।
अंजणपव्वय-अञ्जनपर्वत, नन्दीश्वरद्वीपे पर्वतविशेष । जीवा० ३५८ ।

अंजणपुलए-अञ्जनपुलककाण्डम्, एकादशं, अञ्जनपुलाकानां विशिष्टो भूभागः। जीवा० ८९।

अंजणप्पभा-अञ्जनप्रभा, पुष्करिणीनाम। जं० प्र० ३६०।

अंजणमओ-अञ्जनमयः, अञ्जनरत्नात्मकः। जीवा० ३५८।

अंजणसमुग्गयं-अंजनसमुद्गकम्। जीवा० २३४।

(अंजणसिज्झ)-अंजनसिद्धः। दश० १२८।

अंजणा-पर्वतविशेषः। ठाणा० ८०। अंजना, पुष्करिणीनाम। जं० प्र० ३३५। जं० प्र० ३६०।

अंजणागिरि-अंजनागिरिः, दिग्हस्तिकूटनाम। जं० प्र० ३६०।

अंजणि-अंजनिका, कज्जलाधारभूता नलिका। सूत्र० ११७।

अंजणे-प्रभंजनेंद्रलोकपालः। ठाणा० १९८। सीतादक्षिणवर्ती तृतीयवक्षस्कारः। ठाणा० ३२६। अंजनः, वेलम्बाभिधानवायुकुमारराजस्य लोकपालः, वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। भग० ३९८। राहुप्रलापीमते कृष्णपुद्गलविशेषाः। सूर्य० २८७। अंजनकाण्डं दशमं, अञ्जनानां विशिष्टो भूभागः। जीवा० ८९। कर्मजीवमालिन्ये हेतुत्वात्। जं० प्र० १४८। अञ्जनो वक्षस्कारः। जं० प्र० ३५२। सौवीराञ्जनं रत्नविशेषो वा। प्रज्ञा० ३६१। रत्नाञ्जनादि। दश० १७०।

अंजणेइ-अञ्जनं, सौवीराञ्जनं रत्नविशेषो वा। जं० प्र० ३२। अञ्जनं, कृष्णरत्नविशेषः। ठाणा० ३३२। अञ्जनं सौवीराञ्जनादि। जीवा० २३। कज्जलम्। उत्त० ६५२। समीरकम्। उत्त० ६८९। रजोमेद। आचा० ३४२।

अंजणगपव्वय-अंजनकपर्वतः। सम० ९०।

अंजलिं-अञ्जलिः, हस्तन्यासविशेषः। सूर्य० ६। भग० १४। अञ्जलिं, मुकुलितकमलाकारकरद्वयरूपम्। जं० प्र० १८७।

अंजली-अञ्जलि., हत्थुस्सेहो। द० चू० १२९। नि० चू० प्र० ७अ। अञ्जलिः, द्वयोर्हस्तयोरन्योऽन्यान्तरितांगुलिकयोः सम्पुटरूपतया यदेकत्रमीलनं सा। जीवा० २४३। संयुतहस्तमुद्राविशेषः। जं० प्र० १७। प्रसन्निद्वयम्। नि० चू० द्वि० १२०आ।

अंजु-ऋजुः, ऋजोः-संयमस्यानुष्ठानात्। आचा० ३०३। मायाप्रपञ्चरहितत्वादवक्रः। सूत्र० १७७।

अंजुया-शान्तिजिनप्रवर्तिनीनाम। सम० १५२। अंजुका, शक्रदेवेन्द्रस्याग्रमहिषी। जीवा० ३६५।

अंजुल-वनस्पतिविशेषः। भग० ८०२।

अंजू-प्रगुणोऽव्यभिचारी। सूत्र० ५१। अंजू, व्यक्तम्, प्रगुणेन न्यायेन स्वरसप्राप्त्या वा। सूत्र० २९६। अंजुः, व्यक्तः, निर्दोषत्वात्प्रकटः, (ऋजुर्वा) वक्रैकान्तपरित्यागादकुटिलः। सूत्र० ३९३। अंजः, सार्थवाहसुता। विपा० ३५। अञ्जुः, धनदेवसार्थवाहसुता। विपा० ८८। शक्रस्याग्रमहिषीनाम। जं० प्र० १५९। भग० ५०५।

अंजूय-शक्राग्रमहिषीराजधानी। ठाणा० २३१।

अंड-अण्डम्, काष्ठनिर्मितो जीवविशेषः। आचा० ५५।

अंडए-अण्डजः, हंसादिः ममायमित्युल्लेखेन वा प्रतिबन्धः, अण्टजं-पट्टसूत्रजम्। ठाणा० ४६५। हंसादि. मयूराण्डकादिः वा अण्डजः, पक्षी कोशिकारकीटाण्डकप्रभवं वस्त्रं वा। औप० ३६।

अंडओ-अण्डकः, जन्तुयोनिविशेषः। प्रश्न० ३३।

अंडग-अण्डकम्, आहारः। भग० २९२। मुखं। व्य० द्वि० ३३३आ। अण्डजाः, अण्डाज्जाताः। ठाणा० ११४।

अंडय-अण्डजः, हंसादिः। भग० ३०३। अण्डजाः, पक्षिगृहकोकिलादयः। दश० १४१।

अंडसुहुम-अण्डसूक्ष्मम्, मक्षिकाकीटिकागृहकोलिकाब्राह्मणीकृकलासाद्यण्डम्। दश० २३०। अण्डसूक्ष्मम्, मक्षिकाकीटिकागृहकोकिलाब्राह्मणीकृकलास्याद्यण्डकमिति। ठाणा० ४३०।

अंडु-अण्डु, अन्दुकं काष्ठमयं लोहमयं वा हस्तयोः पादयोर्वा। औप० ८७।

अंडे-विपाकश्रुताद्यश्रुतस्कंधतृतीयाध्ययनम्। ठाणा० ५०७। ज्ञातायां तृतीयाध्ययनम्। आव० ६५३। सम० ३६। अण्डम्, षष्ठांगे तृतीयं ज्ञातम्। उत्त० ६१४।

अन्तःकरणम्-मनः। आव० ५८५।

अन्तःशल्यः-(अंतोसल्ल), अन्तः-मध्ये मनसीत्यर्थः, शल्यमिव शल्यमपराधपदं यस्य सो अन्तःशल्यो-लज्जाभिमानादिभिरनालोचितातिचारः। सम० ३४।

अंतं-अन्तः शब्दो मध्यवचनः। विशे० ११७। परिजीर्णम्, बृ० द्वि० १७५आ। वस्त्रस्य दशान्तम्। बृ० द्वि० २३५अ। अन्त्यम्, अन्ते भवम्, जघन्यधान्यम्। औप० ४०। अन्त्रम्-पुरीतत्। प्रश्न० ८। कुल्माषादिकम्। बृ० प्र० २२०आ।

(अंतचरे)-आन्तम्-अन्ते भवं-आन्तम्-भुक्तावशेषं वल्लादि (तच्चरति)। ठाणा० २९८।

अन्तयो–अचलयो। भग० ४७७। भूभाग। भग०१२२। अवसानम्। पन्ना० ३९७। भूमिभाग। भग० २२२। ठाणा० ११९। समीपम्। जं० प्र० ४५५। वाञ्चणकादि। प्रश्न० १०६। समीप०। ठाणा० ११७। अधिकरणप्रधानमव्ययम्। उत्त० २६१। (अंतचरे)–आन्तम्, अन्ते भवं आन्तम्, भुक्तावशेषवल्लादि (तच्चरति)। ठाणा० २९८।

अतंतं–पर्युषितं वल्लचणकादि। ओघ० १८८।

अत–अन्त, निश्चय। भग० २९०। परिच्छेद। ठाणा० १७४।

अतओ–अन्तक, विपतृष्णाया पर्यन्तवर्ती। सूत्र० २५१। अन्तकम्, पर्यन्तम्। उत्त० ६२८।

अतकडे–अन्तकृत्। भग० १११। अन्तो भवस्य कृतो येन स अन्तकृत। ठाणा० ३६।

अतकम्मं–अन्तकर्म, अञ्चलकर्म वा स लक्षणम्। औप० ५५। अन्तकर्म्माणि, अञ्चलयोर्वा न लक्षणानि। जं० प्र० २७५। अन्तकर्म, अञ्चलयोर्वा न लक्षणम्। जीवा० २५३।

अतकम्मा–अन्तकर्मा, प्रान्त। औप० ११।

अंतकरे–अन्तकर, भवच्छेदकर। भग० २१९।

अंतकरो–अन्तकर, प्रशस्तभावकरविशेष, कर्मण समारम्य वा अतकर। आव० ४९९।

अंतकिरिआ–अन्तक्रिया, निर्वाणलक्षणा। आव० १३५।

अंतकिरिय–अन्त्य(न्त)क्रिया, अन्त्या च सा पर्यन्तवर्तिनी क्रिया चान्त्यक्रिया। अन्त्यस्य वा कर्मान्तस्य क्रिया अन्तक्रिया। कृत्स्नकर्मक्षयलक्षणा मोक्षप्राप्तिम्। भग० ४९।

अंतकिरिया–अन्तक्रिया, अन्त–कर्मणामवसानं तस्य क्रिया–करणम्, कर्म्मान्तकरण मोक्ष इति। प्रज्ञा० ३९६। निर्वाणम्। भग० ९१। प्रज्ञापनाया विंशतितमं पदम्। प्रज्ञा० ६। मोक्ष। सम० ११८। भवस्यान्तकरणम्। ठाणा० १८०।

अंतकुलाणि–अन्तकुलानि–वरुडछिम्पकादीनाम्। ठाणा० ४२०।

अंतक्खरिया–लिपिविशेष। प्रज्ञा० ५६।

अंतगडदसा–अन्तकृद्दशा, अन्तो–भवान्त कृतो विहितो यैस्तेऽन्तकृता, तद्वक्तव्यताप्रतिबद्धा दशा–दशाध्ययनरूपा ग्रन्थपद्धतय इति। अन्त० १।

अंतगडो–अन्तकृत्, ज्ञानावरणीयादिकर्म्मान्तकृत। आव० १६३। तेनैव भवेनेति। आव० ११७। अन्तकृता–तीर्थकरादय। सम० १२१।

अंतगतावधिः–(अंतगतावही)–आत्मान्तगत, शरीरान्तगत, अवधिक्षेत्रान्तगत (पुर पृष्ठपार्श्व)। प्रज्ञा० ५३०।

अंतगो–अन्तक, विनाशकारी, आत्मनि वा गच्छतीति, आन्तर आत्मगो वा। सूत्र० १७८। अन्तग, अन्तं गच्छतीति, दुष्परित्यज्य। सूत्र० १७८।

अंतचारी–अन्तचारी, पार्श्वचारीति। ठाणा० ३४२।

अतदीरगं–सव्वेहि अभिगयज्झाण असमसमगामी भोक्षा। दश० चू० १६३।

अंतदीपकम्–प्रागुक्तेष्वपि समन्वय। विशे० ३३०।

अंतद्धाणं–अन्तर्धा। नि० चू० प्र० ७६ अ।

अतद्धाणपिंडो–अप्पाणं अंतरहितं करेत्ता जो पिंडं गेण्हति सो अतद्धाणपिंडो भण्णति। नि० चू० द्वि० १०२ अ।

अंतरं–उववासो। नि० चू० प्र० १७८ आ। अन्तरं प्राप्ति। विशे० २४७। मज्झं। नि० चू० तृ० १४० अ। समुद्रमध्यम्। उत्त० ७८०। उत्तरम्। आव० ४४२। विशेष। उत्त० २१७। अवसर। आचा० १०७। अवकाश। प्रज्ञा० ६९। मध्य। जीवा० ४६। शैलान्तरम्–कन्दरान्तरम्, वनान्तरम् वा आश्रयरूप। प्रज्ञा० ६९। अन्तरालम्। आव० ३३। विशेषा रूपनिर्म्माणादिभि। ठाणा० २०३। पूर्वत्यागापरवस्त्रादानकाले–प्रतिमाविशेष। नि० चू० द्वि० १६३ आ। पार्श्वरूपम्। जं० प्र० ३८७। व्यवधानम्। जीवा० १२२। अन्तरायम्। औप० १७६। उपवास। आव० २०३। राजगमनस्यान्तरम्। विपा० ५३। अवसर। विपा० ७३। अपान्तरालम्। सूर्य० ४९। अवसर। प्रश्न० ४३। ग्रामादीनामर्धपथ। प्रश्न० ५२। पृष्ठोदरयोरन्तरालं पार्श्व इति। जीवा० २७३। विचाल। व्य० प्र० १२८ अ।

अंतरञ्जिया–अन्तरञ्जिका, नगरी यत्र त्रैराशिकदृष्टिरुत्पन्ना, बलश्रीराजधानी। उत्त० १६८। पुरी यत्र त्रैराशिकनिह्नवस्य दृष्टिरुत्पन्ना। आव० ३१८। नगरी। विशे० ९८१।

अंतरंत–अनरतो नाम असहा मूधा। व्य० द्वि० १० आ।

अंतरंतगो–गिलाणो। नि० चू० प्र० १९८ अ।

अंतर-वस्त्रैषणाभेदः। आचा० २७७। अन्तरशब्दो मध्यवाची। प्रज्ञा० ५०। अन्तरे, पृष्ठोदरयोरन्तराले, पार्श्वे। जं० प्र० ११७। अंतराणि-पार्श्वदेशः। प्रश्न० ८३।

अंतरकंदे-अन्तरकन्दः। जलजवनस्पतिविशेषकन्दः। प्रज्ञा० ३७।

अंतरकरणं-औपशमिककालः। प्रज्ञा० ३८७।

अंतरगए-अन्तरगतः, संस्पर्शी। सूर्य० ७९।

अंतरगामम्मि-अपान्तराल एव यो ग्रामस्तस्मिन्। औप० ७७।

अंतरगिरिपरिरओ-अन्तर्गिरिपरिरयः, गिरेरन्तः परिक्षेपः। जीवा० ३४३।

अंतरजातम्-भावभाषाजातः तृतीयो भेदः। अन्तरे भाषाद्रव्यमिश्रणं। आचा० ३८५।

अंतरतेणो-गामदेसंतरेसु हरंतो। नि० चू० द्वि० ३८ आ।

अंतरदीव-अन्तरद्वीपः। भग० ४२५।

अंतरदीवगा-अन्तरद्वीपगा, अन्तरे लवणसमुद्रस्य मध्ये द्वीपा अन्तरद्वीपाः, तद्गता अन्तरद्वीपगाः। प्रज्ञा० ५०।

अंतरदीवगो-अन्तरद्वीपः, लवणसमुद्रमध्ये अन्तरेऽन्तरे द्वीपः। जीवा० १४४।

अंतरदीविगा-आन्तरद्वीपजाः। ठाणा ११५।

अंतरद्धा-अन्तर्द्धानम्, भ्रंशः। आव० ८२७।

अंतरद्धाए-अन्तरकालेऽर्धसंलिखिते देहे। आचा० २९१।

अन्तरद्वीपजाः-अन्तरम्, इह समुद्रमध्यं तस्मिन् द्वीपास्तेषु। उत्त० ७००। अन्तरद्वीपजाः, सम० १३५। अन्तरद्वीपा, अन्तरम्। इह समुद्रमध्य तस्मिन् द्वीपाः। उत्त० ७००।

अंतरपल्लीं-अन्तरपल्लिकामूपभग्रामयोरन्तरालम्। वृ० प्र० ३०५।

अंतरपल्ली-बहि सन्निवेशः। नि० चू० प्र० ३३६अ। मूलग्रामादर्धतृतीयगव्यूतान्तर्गतो ग्रामः। वृ० तृ० १२१ आ। तस्माद्ग्रामात्परतो योऽन्य आसन्नग्रामः। ओघ० १०४।

अंतरभासिल्ल-अन्तरभाषिल, अन्तरभाषावान्, गुरुवचनापान्तराल एव स्वाभिमतभाषकः। उत्त० ५५१।

अंतरभासा-अन्तरभाषा, आचार्यस्य भाषमाणस्यान्ते यद्भाषते सा। आव० ७६१।

अंतरवीहिअं-अन्तरवीथी, अवान्तरमार्गः। जं० प्र० १८८।

अंतरा-अगृहीतवीप्सा। जीव० १६६।

अंतराइयदोसो-अन्तरायिकदोषः, अन्तर्भवो दोषः। आव० ८३८।

अंतराए-अन्तरायः, शक्यभावः। सूत्र० १८४। अन्तरायिकः (मध्यभव)। आचा० ३४०।

अंतराणि-उत्कर्षापकर्षात्मकविशेषरूपाणि निवासभूतानि वा गिरिकन्दरविवरादीनि। उत्त० ७०१।

अंतरापहे-अन्तरापन्थाः, अन्तरालमार्गः। भग० ११६।

अंतरायं-अन्तरायः, असज्झाइयाध्यायादिभिः। आव० ५८०।

अंतरालं-अन्तरालं, अन्तरम्। उत्त० ३८१। आव० ३३।

अंतरावणं-अन्तरापणं। उत्त० २२२। आवणान्तरम्। उत्त० २०९। राजमार्गमध्यभागवर्तिहट्टम्। विपा० ५८।

अंतरावासं-वृष्टेरवसरः, वर्षाकालश्च। भग० ६६।

अंतरिए-लब्धन्तररूपाः। जं० प्र० ४९।

अंतरिओ-अन्तरितः। आव० ४२९।

अंतरिका-अन्तरस्य-विच्छेदस्य करणमन्तरिका। जं० प्र० १५०।

अंतरिक्खं-अन्तरिक्षं, आकाशप्रभवग्रहयुद्धभेदादिभावफलनिवेदकशास्त्रम्। सम० ४९।

अंतरिक्खो-मेहो। दश० चू० ११४।

अंतरिच्छा-अन्तरेच्छा, अन्तरा-मध्ये इच्छा-अभिमतवस्त्वभिलाषः। उत्त० ४७४।

अंतरिज्जं-अतरिज्जं णाम पाउरणं अथवा जं सिज्जाए हेट्ठुल्लापात्तं। नि० चू० द्वि० १६३ आ।

अंतरिया-अन्तरिया। सूर्य० १४१। लब्धन्तररूपा। जीवा० २०४। विच्छेदकरणम्। भग० २३०।

अंतरीयं-परिधानं। वृ० प्र० ९८ अ।

अंतरुच्छुअं-इक्षुपर्वमध्यम्। आचा० ३५४।

अन्तरे-पथि। ओघ० ६६। मध्ये परस्परविभाग.। ठाणा० २१७। अन्तरे, अन्तराले। उत्त० ३८१। अन्तरे, अवसर.। भग० ३८१

अंतरो-अन्तरः, अवसरः। आव० ४२१।

अंतरोदगाणं-अन्तरोदकानाम्, जलान्तर्वर्तिसन्निवेशविशेषाणाम्। जं० प्र० २७७।

अंतर्मुहूर्त्तम्–मुहूर्तस्यान्तरं, मुहूर्तमपि न्यूनम्। उत्त० ६९७। भिन्नमुहूर्त्तम्। जीवा० १३०।

अंतर्हित–(अंतद्धिओ) अदृश्य। ठाणा० ५१३।

अंतलिक्खं–अन्तरिक्ष, ग्रहभेदादिविषयम्। आव० ६६०।

अंतलिक्ख–अन्तरिक्षम्, नभ। दश० २२३। अमोघादिकम्। सूत्र० ३१८।

अंतलिक्खं–अन्तरिक्षम्–गंधर्वनगरादि। ठाणा० ४२७।

अंतवाले–अन्तपाल, अन्तै–त्वदादेदयदेशसम्बन्धिनं पालयति–रक्षयति उपद्रवादिभ्य इति। जं० प्र० २०३।

अंतसो–अन्तश, निरवशेषत। सूत्र० १७१।

अंता:–अवयवा। उत्त० ४५९। उत्त० ५८५।

अता–अते ठिता, ण अता अणता। नि० चू० प्र० २५५ आ।

अंताक्षरिका–(अतक्खरिया) क्रीडाविशेष। उत्त० ४७।

अंतिए–अन्तिके, समीपे। भग० ९०। उत्त० २७७।

अतिमधनं–अतिमे–अस्थाने परिमाणं। व्य० प्र० ७६।

अंतिमराइयंसि–रात्रेरवसाने। ठाणा० ५०२। भग० ७११।

अतिमसरीर–अन्तिमशरीरम्, चरमशरीरम्। भग० २१९।

अतियं–समीपम्। भग० ६५९। अत्यन्तमरणं, मरणस्य तृतीयो भेद। उत्त० २३०। आन्तिकं, सामीप्यम्। आव० २६७।

अतिय–अन्तिकम्, आमन्नम्। भग० २१७। अत्यन्तमरणम्। उत्त० २३०।

अंतिया–आन्तिकी समीपाभ्युपगता। उपा० १५।

अते–अन्त, पर्यन्त, अनिदूर वा। सूत्र० २०४। अन्ते, अग्रे। उत्त० ६०१। परिसमाप्ति। बृ० द्वि० १९९ आ।

अतेउरे–(आत पुरिसी), आतुरस्य नाम गृहीत्वा आत्मनोऽग प्रमार्जयति–आतुरश्च प्रगुणो जायते। व्य० द्वि० १३३ आ।

अतेण–मागण। नि० चू० प्र० ६ आ।

अतेणं–आन्तेण। ठाणा० ५०२।

अंतेवासि–भर्तृज्जुका। नि० चू० प्र० २५० अ।

अतेवासी–शिष्य। जं० प्र० १५। भग० ११।

अतेहि–अरसतया सर्वधाम्यान्तवर्तिभिर्वल्लचणकादिभि। भग० ४८४। रागद्वेषौ। आचा० १५८। आचा० १६६।

अंतो–अन्तो, विभाग। भग० ३९३। विभाग। ठाणा० ३८०। अन्त, परिच्छेद। प्रज्ञा० ५३२। मार्ग। आव० ४०२। अन्त निवेशनस्य। आव० ७४५। अन्तो, रोग, मग्न, विनाश। विशे० १३०७। अन्त, मध्यभागे। जीवा० २०१। मार्ग। आव० ६८६। विभाग। जं० प्र० ४५९। भिन्नम्। आव० ५८४। मार्ग। आव० ४८५। आव० १८९। मध्ये। प्रज्ञा० ४७। इन्द्रियानुकूल आश्रय। प्रश्न० १३८। मध्यकरणम्। आव० ५८३। चतुर्दशमेऽन्तरमन्य। उत्त० २६१।

अंतोजलगयपव्वय–जलान्तर्गतपर्वत। उत्त० २६४।

अंतोधूमं–अभ्यन्तरधूमम्। आव० ६६२।

अंतोनायं–अन्तोनाद, हृदये मदु समारमन्। आव० ६६१।

अंतोनियंसणी–निर्ग्रन्थ्युपकरणविशेष। ओघ० २०९।

अंतोमुहुत्त–अन्तर्मुहूर्त्तम्, भिन्नमुहूर्तम्। भग० २९। उत्त० ६९७।

अंतोवणीते–आहरणतद्दोषविशेष। ठाणा० २५३।

अतोवाहिणी–अन्तर्वाहिनी नदी। जं० प्र० ३५७। ठाणा ८०।

अंतोवेइया–प्रतिलेखनादोष। नि० चू० प्र० १८२ अ।

अंतोसंबुक्कावट्टा–गोयरपिंडेसणाए कमेण ति, तत्थ गोयरातिमे अभिगहविसेसतो जाणियव्या। नि० चू० तृ० १२ अ।

अतोसल्ल–अन्त शल्यमरणम्। मरणस्य षष्ठो भेद। उत्त० २३०।

अंतोसल्लमरणे–अन्त शल्यमरणम्, अन्त शल्यस्य द्रव्यतोऽनुद्धृततोमरादे, भावत सातिचारस्य यन्मरणं तत्। भग० १२०। सम० ३३।

अंतोहितो–गृहादिमध्याद्बहिर्नयन्त। ठाणा० ३५३।

अंत्य:–आनुपूर्व्यन्त्यपक्षस्था। सूत्र० १०। विशेषम्। ठाणा० ३९१।

अंदुकम्–हस्तिबन्धनविशेष। उत्त० ४११।

अंदेरे–गुच्छाविशेष। प्रज्ञा० ३२।

अदोलगा–पश्यन्दोलकाश्च तत्र यत्रागत्य २ मनुष्या आत्मानमन्दोलयन्ति। जं० प्र० ४४।

अंदोलगो–आन्दोलक यत्रागत्य मनुष्या आत्मानमन्दोलयति स। जीवा० २००।

अंध–अन्ध, अज्ञान। भग० ३१२।

अंधकण्टकीयम्–अनर्कितसम्भवो न्यायविशेष। आचा० १८।

अंधकारे-अन्धकारम्, तमोरूपम्। भग० २७० ।
अंधकारेति-तमस्कायनाम। ठाणा० २१७।
अंधगवण्हिणो-अंह्रिपा-वृक्षास्तेषां वह्नयस्तदाश्रयत्वेनेत्यं-ह्रिपवह्नयो बादरतेजस्कायिकाः। भग० ७४६।
अंधगवण्ही-अन्धकवृष्णिः, द्वारवत्यां राजा यादवविशेषः। अन्त० २। दश० ९७।
अंधतमसं-अन्धतमसम्। आव० ३६६।
अंधपुरं-नगरविशेषः। बृ० तृ० १०८ आ०। नि० चू० द्वि० ४२आ।
अंधप्रदीप्तपलायनम्-(अंधपलितपलाणं)। दश० १५८।
अंधमूढि-अविमर्शकारिता। आचा० ६१।
अंधयं-अन्धकम्, नयनयोरादित एवानिष्पत्तेः, कुत्सिताङ्गम्। विपा० ३६।
अंधलीभूय-अन्धीभूतः। आव० ६८८।
अंधिय-चतुरिन्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२।
अंधिया-चतुरिन्द्रियजीवभेदः। उत्त० ६९६। चतुरिन्द्रिय-जन्तुविशेषः। जीवा० ३२।
अंधिल्लगो-अन्धिल्लकः, जात्यन्धः। प्रश्न० १६२।
अंधीयताम्-अन्धीभवतु। दश० १०६।
अंधो-अन्धः, चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः। प्रश्न० १४।
अंधोपलः-(अंधोवल), अन्धपाषाणः। दश० ४०।
अंधोपलादिः-छायारहितपाषाणः। विशे० ११८।
अंध्र-(अंध), अंध्रादिदेशोद्भवा म्लेच्छप्राया, आर्यभाषामजा-नाना। व्य० द्वि० २८अ।
अंध्री-(अंधी), अन्ध्रदेशीया स्त्री, उत्कटरूपा। आव० ५८१।
अंब-अम्लवचनयोगाद् परुषवचनव्यवहारः। व्य० प्र. २५६।
अंब-आम्र। प्रज्ञा० ३१।
अंब-आम्रम्। प्रज्ञा० ३२८। फलविशेषः। प्रज्ञा० ३६४। योगेन ऊर्ध्वं अंबं भण्णति। नि० चू० द्वि० १२४आ।
अंबए-आम्रफलविशेषः। बृ० प्र० १४३आ।
अंबकंजिय-गुर्वपिकाञ्जिकम्। औप० १६०।
अंबकुज्जं-पादतलमध्यम्। बृ० द्वि० २२१ आ।
अंबकूणए-आम्रास्थिकम्। भग० ६८१।
अंबकूणगहत्थगए-आम्रास्थिहस्तगतः। भग० ६८४।
अंबकरतलगं-अम्लगतम्। आव० ३५१।

अंबखुज्ज-आम्रकुब्जः, आम्रफलवत् कुब्जो वक्रः। भग० ६०। पादतलमध्यम्। बृ० द्वि० २२३ अ। तं०
अंबगपाणगं-पानकविशेषः। आचा० ३४७।
अंबगपिंडी-आम्रपिण्डी। आव० ६१७।
अंबचोयए-आम्रत्वक्। भग० ६८१।
अंबचोयगं- ,, आम्रछल्ली। आचा० ४०५।
अंबजुज्झं-पादतलमध्यम्। नि० चू० प्र० १३७ अ।
अंबट्ठ-अम्बष्ठः, ब्रह्मपुरुषेण वैश्यस्त्रियां जातो वर्णः। आचा० ८।
अंबट्ठो-अम्बष्ठः, ब्राह्मणेन वैश्यायां जातः। उत्त० १८२।
अंबडे-अम्बडः, माहणपरिव्राजकभेदः। औप० ९१। (अंमडः) परिव्राजकविद्याधरश्रमणोपासकः। ठाणा० ४५७। अम्बडः। सम० १५४।
अंबडो-अम्बडः, अमूढदृष्टिरवोदाहरणे लौकिकऋषिः। दश० १०२। सुलसाश्राविकापरीक्षकपरिव्राजकः। व्य० प्र० १८ आ। म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५। अम्बडपरि-व्राजकः। प्रज्ञा० ६१।
अंबपलंबं-फलविशेषः। आचा० ३४८।
अंबपेसी-आम्रफाली। आचा० ४०५।
अंबप्पहारो-प्रहारार्त्तः। उत्त० १५३।
अंबमित्तयं-आम्रार्द्रम्। आचा० ४०५।
अंबय-आम्रः। आव० ४१७।
अंबयरुक्खे-अष्टादशजिनचैत्यवृक्षः। सम० १५२।
अम्बरतलम्-(गगनयलं)। सूर्य० २६४।
अंबरवत्थं-अम्बरवस्त्रं, स्वच्छतयाऽऽकाशकल्पम्। जं० प्र० ४०६। स्वच्छतयाऽऽकाशवस्त्रपवनम्। भग० १७४।
अंबरसे-अम्बा-पूर्वाणियुक्त्या जलं तद्रूपो रसो यस्मात् सवि-रविलोऽम्बरसम्। भग० ७७६।
अंबरिस-अम्बरीषः, द्वितीयः परमाधार्मिकः। भग० १९८।
अंबरिसी-नारकान् कल्पनिकाभिः खण्डशः कल्पयित्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करोति। सम० २८। अम्बर्षिः, द्वितीयः परमाधार्मिकः। सूत्र० १२४। पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु द्वितीयः। उत्त० ६१४। नरके द्वितीयः परमाधार्मिकः। आव० ६५०। विनर्शिनर्थे उत्सदित्यो नागः भारतः। आव० ७०८।

अंबरिसे-अम्बरीष, कोष्ठक । जीवा० १२८ । अम्बरीषम्-भ्राष्ट्रम् । प्रश्न०, १७ । अम्बरीषा-भ्राष्ट्रा आकराणि । ठाणा० ४१९ ।

अंबले-अम्लानि । बृ० द्वि० २८३ अ ।

अंबसालवणं-आम्रशालवनं, आमलकल्पानगर्या वनविशेष । उत्त० १४९ । चैत्यविशेष । आव० ५०७ । आम्रशालवनम् । आव० ३१४ ।

अंबा-विद्याविशेष । आव० ४११ । जलम् । भग० ७७६ ।

अंबाडगं-अम्बाडकम्, फलविशेष । अनुत्त० ६ । अंबाडकं-फलविशेष, अर्धांगनिभा । प्रज्ञा० ३२८ ।

अंबाडग-बहुबीजको वृक्ष । भग० ८०३ । अंबाडक-बहुबीजविशेष । प्रज्ञा० ३२ । आम्रातक-बाधोतकेदयारी । प्रज्ञा० ३६४ ।

अंबाडगपलंबं-फलविशेष । आचा० ३४८ ।

अंबाडगपाणगं-पानकविशेष । आचा० ३४७ ।

अंबाडिओ-तिरस्कृत । बृ० प्र० ३०आ । तिरस्कृत । आव० ९१ । तर्जित । आव० १८७ । उपालब्ध । आव० ३९८ ।

अंबाडिय-निर्भर्त्सित । आव० ३०६ ।

अंबाडिया-निरस्कृता । आव० २२५ ।

अंबाडेइ-तिरस्कुरुते । उत्त० १४७ । उपालभते । आव० २२३ । नि० चू० प्र० २११ आ ।

अंबाण-गंधाम्रे, आम्रा । चू० प्र० १४३आ ।

अंबारेवई-अम्बारेवती, व्यन्तरीविशेष । आव० ६११ ।

अंबावल्ली-वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

अंबियपहारो-प्रहारार्त । आव० ६६६ ।

अंबिया-आम्रा गवेषितलब्धा वा । बृ० द्वि० ८२अ ।

अंबिलं-अम्लम् । आव० २०० । अम्लम्, तक्रादिना-लादि । दश० १८० । आचाम्लम्-अवश्यानम् । आचा० ३४६ ।

अंबिल-पर्युषितभक्तादि । भग० ८०२ । अम्लोऽम्लिका याधित । जं० प्र० १७४ । हरितविशेष । प्रज्ञा० ३३ । रस्वा । बृ० प्र० २९अ ।

अंबिलजवागू-अम्लयवागू । आव० ९१ ।

अंबिला-आम्लिका । ओघ० २१५ ।

अंबिलि-आम्लभाजनम्, चिंचिणिकादि । आव० ६२४ । रस्वा । बृ० प्र० २८आ ।

अंबिलिबीयं-अम्लिकाबीजम्, चिंचिणिकाबीजम् । आव० ६२४ ।

अंबिलोदए-आम्लोदकम्, अतिरस्वभावत एवाम्लरसोपेतम् । जीवा० २५ । आम्लोदकम्, स्वभावत एवाम्लरसोपेतम् । प्रज्ञा० २८ ।

अंबुरुक्खो-आम्रवृक्ष । आव० ६४८ ।

अंबे-आम्र । नि० चू० प्र० ३५६ आ । प्रथमपरमाधार्मिक । सम० २८ । अम्ब, नरके प्रथम परमाधार्मिक । आव० ६५० । पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु प्रथम । उत्त० ६१४ । अम्ब, प्रथम परमाधार्मिक । सूत्र० १२४ ।

अंबेल्ली- (रस्वा) । आव० ९१ ।

अंबो-आम्राणि, मातुरे स्थानं । ओघ० ११३ ।

अंभिया-आम्रा । नि० चू० द्वि० १० आ ।

अंभेउं-आप्तुम् । नि० चू० प्र० २०२ अ ।

अंयाडेति-तर्जयति । नि० चू० प्र० २११ आ ।

अंस-अंश, पर्यङ्कासनोपविष्टस्य जानुनोरन्तरं, आसनस्य ललाटोपरिभागस्य चान्तरं, दक्षिणस्कन्धस्य वामजानुनश्चान्तरं, वामस्कन्धस्य दक्षिणजानुनश्चान्तरम् । चतुर्दिग्विभागोपलक्षित शरीरावयवो वा । भग० ११ । अंसु-कोणेषु । जं० प्र० ११५ । अंश, पर्यायोऽत्र्य शब्द । उत्त० ५८९ ।

अंसलग-अंसगत । त० ।

अंसहरा-अंशभरा, अंशो-स्कन्धमार्गेऽवितव्यभागं धारयन्ति-मृत्युना नीयमानं रक्षन्ति । उत्त० ३८८ । अंश-द्रव्यभागस्तं हरन्ति अपनयन्ति ये ते । उत्त० ३८९ ।

अंसातो-स्कन्धात् । ठाणा० २३६ ।

अंसिया-भागस्कन्धोऽश । बृ० द्वि० १९९ अ । ग्रामतृतीयभागादि । नि० चू० द्वि० ७०आ । अंशिका-यत्र ग्रामस्यार्द्धं, आदिशब्दात् त्रिभागो वा चतुर्भागो वा गत्वा स्थित सा ग्रामस्यांश एव अंशिका । बृ० प्र० १८१ आ ।

अंसियालए-अंशमालये । दश० ३७ ।

अंसी-अश्रि, चतुर्दिग्विभागोपलक्षित शरीरावयव । जीवा० ४२ । प्रज्ञा० ४१२ । (अर्शांसि) रोगविशेष । नि० चू० प्र० १८९ अ ।

अंसुप–श्लक्ष्णपट्टः। बृ० द्वि० २०१ आ।

अंसुयं–वस्त्रम्। नि० चू० प्र० २५४ आ। दुकूलविशेषरूपम्। जीवा० २६९।

अंसुय–श्लक्ष्णपट्टः। ठाणा० ३३८।

अंसुयाणि–अंशुकानि, वस्त्राणि। आचा० ३९३।

अंसो–अंशः, भेदः। विशे० २५१। अस्रिः, चतुर्दिग्विभागोपलक्षितः। सूर्य० ४। अस्रिः, पर्यङ्कासनोपविष्टस्य जानुनोरन्तरं १, आसनस्य ललाटोपरिभागस्य चान्तरम् २, दक्षिणस्कन्धस्य वामजानुनश्चान्तरम् ३, वामस्कन्धस्य दक्षिणजानुनश्चान्तरं ४। सूर्य० ४। अंश.-भेदः। प्रज्ञा० ६०१। अंशः-भागः। उत्त० १८८। भागः। आचा० १७७।

अइं–असुना। बृ० द्वि० २१३ अ।

अइंताणं–अतियतां-आगच्छतां। व्य० द्वि० ३६६ आ।

अइंति–प्रविशन्ति। ओघ० ६७। आगच्छन्ति। प्रश्न० १२०।

अइंतु–प्रविशन्तु। ओघ० ७९।

अइंते–प्रविशति। बृ० द्वि० ६०अ।

अइंतो–आगच्छन्। आव० २६५।

अइ–अयि, आमन्त्रणे। उत्त० ३५४।

अइअच्च–अतिगत्य, अत्येत्यातिक्रम्य। आचा० २४१। अविगणय्य। आचा० ३०१।

अइआरो–अतिचारः, पापम्। आव० ७७८। अतिक्रमः। आव० ५७५। स्खलना। ओघ० ३८।

अइकाए–अतिकायः, दक्षिणनिकाये सप्तमो व्यन्तरेन्द्रः। भग० १५८।

अइकाय–अतिकायः, महोरगेन्द्रः। जीवा० १७४।

अइकुंढियं–अतियाधितम्। आव० ५७४।

अइकोहग्गहघत्थं–अतिक्रोधमहग्रस्तम्, अतीवोत्कटरोषमहाभिभूतम्। आव० ५८८।

अइक्कंतं–अतिक्रान्तम्, अतिक्रान्तकरणात्। आव० ८४०।

अइक्कंत–अतिक्रान्तम्, अतिक्रान्तकरणादतिक्रान्तम्। भग० २९९।

अइक्कंता–अतिक्रान्ता, जाता। उत्त० ३१५। अतीताः। आचा० १७८।

अइक्कंतो–अतिक्रान्त., पर्यन्तवर्ती। प्रज्ञा० ९१।

अइक्कमओ–अतिक्रमः, अनानुपूर्वी भवनम्। विशे० १७४।

अइक्कमे–अतिक्रमेत्, प्रविशेत्। उत्त० ६०।

अइक्कमो–अतिक्रमः, आधाकर्मनिमन्त्रणे प्रतिशृण्वति साधुक्रियोल्लङ्घनरूपः दोषविशेषः, यावदुपयोगकरणम्। आव० ५७६। अतिलङ्घनम्। आव० ८२३। पीडात्मको महाव्रतातिक्रमो वा मनोऽवष्टब्धतया परतिरस्कारो वा। सूत्र० १७३।

अइगच्छिहिति–अतिगमिष्यति। आव० ३६६।

अइगतो–पविट्ठो। नि० चू० तृ० १३ आ। अतिगतः। आव० ३४९।

अइगमणं–अतिगमनम्, अतिगमनकथा, राज्ञ आगमनसम्बन्धी विचारः, राजकथाया द्वितीयभेदः। आव० ५८१। उत्तरायणम्। भग० १४७।

अइगया–अतिगता। ओघ० १५८।

अइगुविलगव्हरा–अतिगुपिलगहरा। आव० ३८४।

अइचारो–अतिचारः, स्खलना। ओघ० ३८। मिथ्यात्वमोहनीयकर्मोदयादात्मनोऽशुभः परिणामविशेषः। आव० ८१३। अतिचरणानि–चारित्रविराधनाविशेषाः। विशे० ५५०।

अइचिराविओ–अतिचिरायितः। आव० ५१२।

अइच्छ–अतीच्छा, अदाने सत्यतिगच्छेति वचनम्। आव० ४७८।

अइच्छओ–अतिक्रामन्, भिन्दानः। बृ० प्र० १७ आ।

अइण्णं–आकीर्णम्, मच्चलोगो आयरइ। नि० चू० प्र० २७४ अ।

अइणा–गोरमिगादिणो। नि० चू० प्र० २५५ अ।

अइनिद्धं–अतिस्निग्धम्, हविः प्रचुरम्। आव० ५६८।

अइपंडुकंबलसिला–अतिपाण्डुकम्बलशिला। आव० १२४।

अइपडागा–अतिपताका, एकां पताकामतिक्रम्य या पताका सा। औप० ५। पताकोपरिवर्तिनी। भग० ४७६।

अइ(णु)परियट्टित्ता–अति(नु)परिवर्त्य, गमनागमनेन परिभ्राम्य। प्रज्ञा० ६००।

अइपहाए–अतिप्रभाते। आव० ६४१।

अइप्पयं–अतिप्रभाते। ओघ० ९८।

अइबले–आगामिन्यां पञ्चमो हरि.। सम० १५४। अतिबल – भरतराजाने पूर्वजः। ठाणा० ४३०।

अइभद्दा-अतिभद्रा, प्रभासमाता। आव० २५५।

अइभारे-अतिभार, प्रभूतपूगफलादेः स्कन्धपृष्ठादिष्वारोपणम्। आव० ८१८।

अइभूमि-अतिभूमि, गृहस्थैरनुज्ञाता यत्रान्ये भिक्षाचरा न यान्ति। दश० १६८।

अइमत्तं-अतिमात्र, अतिरिक्तम्, अतिक्रान्तमर्यादम्। उत्त० ४२९।

अइमत्ते-अतिमात्रे, बृहत्प्रमाणे। ओघ० १७०।

अइमुत्तग-पुष्पविशेष। नि० चू० प्र० ११८ आ।

अइमुत्तगचंदसंठाणसंठिते-अतिमुक्तकचन्द्रकसंस्थानसंस्थितम्, घ्राणेन्द्रियसंस्थानम्। प्रज्ञा० २९३।

अइमुत्तगणा-वल्लीविशेष। प्रज्ञा० ३२।

अइमुत्तय-लताविशेष। प्रज्ञा० ३८२।

अइमुत्ते-अतिमुक्त, महावीरस्वामिनः कुमारश्रमण शिष्य। भग० २१९। अन्तकृद्दशानां षष्ठवर्गस्य पञ्चदशाध्ययनम्। अन्त० १८।

अइयंचिय-अतिक्रम्य। ठाणा० ३००।

अइयारो-अतिचार, गृहीते आधाकर्मणि दोषविशेष, यावद्गति गत्वेर्यापथप्रतिक्रमणाद्युत्तरकालं लम्बनोत्क्षेप। आव० ५७६। अतिचर०-चारित्रस्खलनाविशेष। आव० ७८। अपराधम्। उत्त० २३३।

अइर-अचिरा, शान्तिमाता। आव० १६१।

अइरत्त-अतिरात्र, अधिकदिनं, दिनवृद्धि। ठाणा० ३५०।

अइरत्तकंबलसिलाओ-मेरुमस्तकशिला। ठाणा० ८०।

अइरा-अचिरा, शान्तिजिनमाता। आव० १६०। सम० १५२। सम० १५१।

अइरित्तसिज्जासणिए-अतिरिक्तशय्यासनिक, चतुर्थम समाधिस्थानम्। आव० ६५३।

अइरेगो-अतिरेक, अतिशायिता। जीवा० २७४। अतिशय। जीवा० २६७।

अइवत्तियं-पातकादतिपातितं, निर्दोषम्। आचा० ३०५।

अइवाइज्ज-अतिपातयेत्, व्यथेत्। आचा० १२८।

अइवायंमि-अतिपाते। ठाणा० ३२९।

अइवाय-द्वादशशतके प्राणातिपातादिविषय पञ्चमोद्देशक। भग० ५५२। अतिपात, हिंसाविशेष। ओघ० ३९। वध। भग० ७८९।

अइवालग-अजापालक, वानरविशेष। बृ० तृ० २०अ।

अइवेलं-अतिवेलं, स्वाध्यायादिवेलातिक्रमेण। उत्त० ११०। अतिवेला अन्यसमयातिशायिनी मर्यादा समाख्या। उत्त० ११०।

अइसंधणपरो-अतिसन्धानपर, परवञ्चनाप्रवृत्त। आव० ५८९।

अइसंपओगो-अतिसम्प्रयोग, गार्ध्यम्। सूत्र० ३१९।

अइसय-अतिशय, आमर्षौषध्यादि। सम० १२४। अर्थविशेष। बृ० प्र० १९३ आ।

अइसुहुमं-अतिसूक्ष्मम्। आव० ५३९।

अइसेस-अतिशय, अतिशयनं, अवध्यादिरूपाणि ज्ञानं। ओघ० १४। अतिशयी-अवध्यादिज्ञानयुक्त। दश० १०३। सूत्रार्थसामाचारीविद्यायोगमन्त्रातिशय। बृ० प्र० २०३ आ।

अइसेसी--अतिशायिनी, विशालमधुरत्वादि। बृ० प्र० २४६ आ।

अइसेसो-अतिशेष, अतिशायी। जीवा० २७७। शेषाणि-मत्यादिचतुर्ज्ञानादीनि अतिक्रान्त-सर्वावबोधातिशयसंपादि-शेषमतिशयवच्चेतरम्। ठाणा० २९३।

अईइ-अतीति, आगच्छति, प्रविशति। आव० ७३२।

अईतेआ-अतितेजा-चतुर्दशरात्रिनाम। जं० प्र० ४९१।

अईया-अतीता, अतिक्रान्ता। आचा० १५८।

अईह-अतियासी। आव० १७३।

अउअंगाति-अयुतांगानि, संख्याविशेष। ठाणा० ८६। सूर्य० ९१। भग० ८८८।

अउआति-अयुतानि संख्याविशेष। ठाणा० ८६। सूर्य० ९१। भग० ८८८। भग० ७९०। भग० २७५।

अउज्झ-अयोध्यम्, अनभिभवनीयम्। जं० प्र० २१२।

अउज्झा-अयोध्यानि, परैर्योद्धुमशक्यानि। प्रज्ञा० ८६।

अउज्झाओ-नगरविशेष। ठाणा० ८०।

अए-अज, बर्कर। प्रश्न० ७५२। उत्त० २७५।

अओज्झा-अयोध्या, राजधानी। जं० प्र० ३०७। अजितस्य प्रथमपारणकस्थानम्, आव० १४६।

अओमुहदीवे-अतरद्वीपविशेष । ठाणा० २२६ ।
अओमुहो-अयोमुख, अन्तरद्वीपविशेष । जीवा० १४४ ।
अकंटए-अकण्टक, कण्टकरहित । जीवा० १८८ ।
अकंठगमणाई-अकण्ठगमनादि,कण्ठेन भक्तकवलो नोप क्रामति । ओघ० ८० ।
अकडूयते-अकण्डूयक, न कण्डूयत इति । ठाणा० २९९ ।
अकंतं-सरोषभणितम् । नि० चू० प्र० ७७८ अ ।
अकंतत्ता-अकान्तता, अकमनीयता । भग० २३ । असुन्दरता । भग० २५३ । अकान्तता । प्रज्ञा० ५०४ ।
अकंतदुक्खी-अनभिप्रेताशातावेदनीया । आचा० ४३० ।
अकंता-अकान्ता, अकमनीया । भग० ७२ ।
अकंपिए-अकम्पित, अष्टमगणधर । आव० २४० ।
अककसं-अकर्कशम्, सुखम् । भग० ३०५ ।
अकज्जं-अकार्यम्-मैथुनासेवालक्षणम् । व्य० प्र० २०५ आ ।
अकडजोगी-यतनया योगमकृतवान् । व्य० प्र० २५१ ।
अकडसामायारी-सामायारिं जो न करेति सो अकड सामायारी । नि० चू० तृ० ८१अ ।
अकण्णा-अकर्णनामा अन्तरद्वीपा । प्रज्ञा० ५० ।
अकण्णो-अकर्ण, अन्तरद्वीपविशेष । जीवा० १४४ ।
अकति-असङ्ख्याता अनन्ता वा । ठाणा० १०५ ।
अकतिसञ्चिता-असङ्ख्याता, एकैकसमये उत्पन्ना सन्त स्तथैव सञ्चितास्ते । ठाणा० १०५ ।
अकतिसंचया-वर्गितचिता न ये । भग० ७९६ ।
अकण्णदीवे-अकर्णद्वीप, अन्तरद्वीपविशेष । ठाणा० २२६ ।
अकप्प-अकल्प, शिक्षकस्थापनाकल्पादि । दश० १९६ ।
अकप्पए-अकल्पिके सगीतार्थे । व्य० द्वि० १३ अ ।
अकप्पट्ठवणा अयोग्याहारादिवर्जनम् । नि० चू० प्र० २४२ अ ।
अकप्पणारमणा-अकल्पनारमणम । मरण० ।
अकप्प-सामादिशमयम, अभिनवकल्पयुर्यावासों वा । पृ० गृ० १२५ अ ।
अकप्पो-अकल्प, अव० ७१८ । अकृत्य । आव० ७६१ ।
अकम्मणुपवाए-अकर्मभूमि । प्रै० प्र० ८८ ।
अकम्मंसे-अकर्मांश । आव० ६१५ ।

अकम्मंसो-अकर्मांश, अंशाः-कर्मणोऽवयवास्तेऽपगता यस्य स । उत्त० २५७ ।
अकम्म-आक्रम्य, बलात्कारेण । आव० ६६२ ।
अकम्मग-अकर्मकं, अविद्यमानदुःस्थितं । सम० ५२ ।
अकम्मभूमगा-अकर्मभूमका, अकर्मा-यथोक्तकर्मविकला भूमिर्येषां ते अकर्मभूमा, ते एव अकर्मभूमका । प्रज्ञा० ५० । सम० १२५ ।
अकम्मभूमी-अकर्मभूमि, हैमवतादिकभोगभूमि । प्रश्न० ९६ । ठाणा० ११५ ।
अकम्मय-अकर्मकं, अप्रमादम् । सूत्र० १६९ । उत्त०७०० ।
अकम्मयारो-अकर्मकारी, स्वभूमिकानुचितकर्मकारी । प्रश्न० ३६ ।
अकम्मा-अकर्मा, न विद्यते कर्माऽस्यति, वीर्यान्तराय क्षयजनितं जीवस्य सहजं वीर्यम् । सूत्र० १६८ ।
अकम्हा-अकस्मात्, बाह्यनिमित्तानपेक्षम् । आव० ६४९ । अकस्मात् क्रिया, अकस्माद्धरणम्, क्रियायाश्चतुर्थो भेद । आव० ६४८ ।
अकम्हादंडे-अकस्माद्दण्ड । सम० २५ ।
अकम्हाभयं-अकस्माद्भयम्, बाह्यनिमित्तानपेक्ष गृहादिष्वेवा वस्थितस्य रात्र्यादौ यद्भयम् । आव० ६४६ । सम० १३ । ठाणा० ३८९ ।
अकयकरणो-अकृतकरण, अनभ्यस्तादि । आव० ७०३ । अकृतकरण । आव० ३४४ ।
अकयकिरिए-अकृतयोगोद्वहन । नि० चू० प्र० २०१ अ ।
अकयपरलोयसंबलो-अकृतपरलोकशम्बल । आव०३६७ ।
अकयन्नुया-अकृतज्ञता । आउ० ।
अकयपुण्णे-अकृतपुण्य । उत्त० ३१० ।
अकयपुण्णो-अकृतपुण्य अविहितशुभकर्मा [illegible] । प्रश्न० ४८ ।
अकयमुहो-अकृतागमपरिकर्मितमुख । बृ० गृ० १५ आ ।
अकयकप्पो-अकल्पिक । नि० चू० द्वि० ८७ अ ।
अकयागम-अकृतागमोदय । आव० ३४४ ।
अकरंडुअं अकरण्डुकम्, अनुपलक्ष्यमाणपृष्ठवंशास्थिकम् । [illegible] १० ।

अकरंडुयं–अविद्यमानपृष्ठिपार्श्वास्थिस्म् । प्रश्न० ८१ ।
अकरंडुय–अकरण्डुक, अनुपलक्ष्यपृष्ठास्थिक । प्रश्न० ८४ ।
अकरणं–मैथुनम् । व्य० प्र० २५१ अ ।
अकरण–अलेश्यस्य केवलिन कृत्स्नयोर्ज्ञेयदृश्ययोर्ययो केवले ज्ञाने दर्शने चोपयुञ्जानस्य योऽसावपरिस्पन्दोऽप्रतिघो वीर्यविशेष स । ठाणा० १०६ । भग० ५७ ।
अकरणतयेव–अक्रिययैव मयमानुष्ठानमन्तरेण । आचा० १४९ ।
अकरणयाइ–अकरणेन, अपूर्वानुपार्जनेन । उत्त० ५८७ ।
अकरणयाए–अद्यागारतया । आचा० ३०५ ।
अकरणिज्जं–अकृत्यम्, अधर्मं मन्दधर्माणि । आव० ५३६ ।
अकरणिज्जो–अकरणीय । आव० ७७८ ।
अकरिंतो–अकुर्वन् । आव० ५०९ ।
अकलिज्जंता–अज्ञायमाना । ओघ० १६० ।
अकलुसे–अकलुष, द्वेषवर्जितं । अन्त० २२ ।
अकलेवरसेणि–अकडेवरश्रेणि, कलेवरं-शरीरं अविद्यमानं कडवरमेषामकडेवरा सिद्धास्तेषां श्रेणिरिव श्रेणि क्षपकश्रेणिरिति । उत्त० ३४१ ।
अकल्पम् (अकप्पं)–असमर्थ । आचा० १०६ ।
अकविल–अकपिला, श्यामा । जं० प्र० ११५ ।
अकसिणपवत्तगो–अकृत्स्नप्रवर्त्तक । आव० ४९३ ।
अकसिणा–आचारप्रकल्पस्य अष्टाविंशतितमो भेद । सम० ४७ । अकृत्स्ना–यत्र किंचित् क्षोप्यते । व्य० प्र० १२४ आ ।
अकसिणो–अकृत्स्न । विशे० ४२४ ।
अकस्मात्–(आकस्मिक) निर्युक्ति । आचा० २६६ ।
अकस्मात्–कस्मादिति हेतुर्न कस्माद् अकस्मात् । आचा० २६७ ।
अकस्माद्दण्ड–अनभिसन्धिना दण्ड । प्रश्न० १४३ ।
अकस्माद्भयम्–बाह्यनिमित्तानपेक्षम् । प्रश्न० १४३ । बाह्यनिमित्तमन्तरेणाहेतुकं भयम् । आव० ४७२ ।
अकहा–अकथा मिथ्यात्वमोहनीयं कर्म वेदयन् विपाकेन यां काञ्चिदज्ञानी कथां कथयति सा । दश० ११५ ।
अकांडे–अकाले । बृ० प्र० १५५ अ ।
अकाऊण–अकृत्वा, अभणित्वा । ओघ० १५५ ।
अकाम–अकाम, मोक्ष । उत्त० ४१४ । अकाम, उपरोधशीलता । दश० १७७ । निरभिप्राय । भग० ३६ । निर्जरायनभिलाषी । भग० ३६ ।
अकामकामे–अकामकाम, कामान्–इच्छाकाममदनकामभेदान् कामयते-प्रार्थयते य स कामकामो न तथा अकामकाम, अकामो–मोक्षस्तम्र सकलाभिलाषनिवृत्तेर्न कामयते य स तथा । उत्त० ४१४ ।
अकामणिज्जराए–अकामनिर्जरया । आव० ६७ ।
अकामतण्हा–अकामतृष्णा । औप० ८६ ।
अकामनिकरणं–अकामनिकरणम्, अकामो वेदनानुभावेऽनिच्छाऽमनस्कत्वात् स एव निकरणं–कारणं यत्र तदकाम निकरणं–अज्ञानप्रत्ययं, अनिच्छाप्रत्ययम् । भग० ३१२ ।
अकामनिर्जरा – पराधीनतयाऽनुरोधाद्वाकुशलहत्तिराहारादिनिरोधश्च । तत्त्वा० ६-२० ।
अकाममरणम्–बालमरणादमरणम् । उत्त० २४१ । अकाममरणं–उत्तराध्ययनेषु पञ्चमाध्ययनम् । उत्त० ९ ।
अकाममरणिज्जं–उत्तराध्ययनेषु पञ्चमाध्ययनम् । सम० ६४ ।
अकारए–अकारक, अरोचक । विपा० ४० ।
अकारकम्–अपथ्यम् । ओघ० १३९ । ओघ० १८३ । शीतलम् । ओघ० १७६ ।
अकारिजणो–अकारिजन । आव० १७६ ।
अकारिणो–अकारिण आमोषादिविधायिन । उत्त० ३१३ ।
अकाल–अवर्षा । ठाणा० ३९९ ।
अकालपडियोधी–रातो चेव पडिबुज्झति । नि० चू० तृ० ४३ अ । एषां न कश्चिदपर्यटनकाल । आचा० ३७७ ।
अकालपरिभोगी–रातो मज्वादरेण भुजति । नि० चू० तृ० ४३ अ । एषां न कश्चिद्भोजनकाल । आचा० ३७७ ।
अकालपरिहीण–अविलम्बेन । भग० ७३८ । निर्विलम्बम् । जं० प्र० ३९७ ।
अकालसज्झायकारए–अकालस्वाध्यायकारकं । सम० ३७ ।
अकालसज्झायकारी–अकालस्वाध्यायकारी, य कालिक श्रुतमुद्घाटपौरुष्या पठति, चतुर्दशमसमाधिस्थानम् । आव० ६५४ । अकालस्वाध्यायकरणम्, पञ्चदशमसमाधिस्थानम् । प्रश्न० १४४ ।
अकालिचरिया–अकालचर्या, रात्रौ पथि गमनम् । व्य० प्र० १९ आ ।

अकालियं-आकालिकं, यथास्थितायुरुपरमादर्वागेव । उत्त० ६३० ।

अकाले-अकाल, मध्याह्नादि । विपा० ६९ ।

अकाहल-अमन्मनाक्षरम् । प्रश्न० १२० ।

अकिंचणे-अकिञ्चन, न विद्यते किमप्यस्येत्यकिंचन, निष्परिग्रह । आचा० ४०३ । अकिंचनं-निष्परिग्रहत्वम् । उत्त० ५९० ।

अकिच्चं-अकृत्यम्, अकरणीयम्, प्राणवधस्य पञ्चम पर्याय । प्रश्न० ५ । मैथुन । नि० चू० प्र० ७९ आ । अनिर्वर्त्तनीयम् । भग० १०४ ।

अकिट्ठे-अकृष्ट, अक्लिष्टो वा, अविलिखित, अबाधितो निर्वेदनमिति वा । भग० १८० ।

अकित्तिम-अकृत्रिम, कमादृत्नखातिसम्भूतासुप्तसम्भूते, स्वशोभित । जं० प्र० ७० ।

अकित्ती-अवर्णवादभाषणम् । बृ० तृ० ९९ आ ।

अकिरियं-अक्रिया, नास्तिवाद । आव० ७६२ ।

अकिरियावादी-अक्रियावादी, क्रिया-जीवादिपदार्थो नास्ती त्यादिका वदितुं शील यस्य स । सूत्र० २०८ ।

अकिरिया-अक्रिया । आव० ३६८ । योगनिरोध । भग० १४१ । अक्रिया । आव० ४१२ । अवर्ण । आव० ४२९ । आव० ४१२ ।

अकिरिया-दुष्क्रिया मिथ्यात्वाद्युपहतस्यामोक्षसाधकमनुष्ठानम् । ठाणा० १५३ । योगनिरोध । ठाणा० १५७ । योगनिरोधलक्षणा नास्तिकत्वं वा । सम० ५ । अवियग्गतक्रियं, व्युपरतक्रियाख्य शुक्लध्यानचतुर्थभेद । उत्त० ५८६ ।

अकिरियाओ-अकप्पपडिसेवण । नि० चू० तृ० २०अ ।

अकिरियावाइ-क्रियाभाववादिन, आत्माभाववादिन, चित्तशुद्धिवादिन । भग० ९४४ ।

अकिरियावाती-एकात्मकवाद्यादयोऽष्टौ । ठाणा० ४२५ । नास्तिका । ठाणा० २६८ ।

अकीयकड-अक्रीतकृत, न क्रीयते-न द्रव्येण साधवे कृत । प्रश्न० १०८ ।

अकित्ती-अकीर्ति, एकदिग्गामि यप्रसिद्धि । ठाणा० ४१८ । भग० ४९० ।

अकुऊहले-अकुतूहल, कुहकादिष्वकौतुकवान् । उत्त० ६५१ ।

अकुओभय-अकुतोभय, संयम, अप्कायलोको वा । आचा० ४४ ।

अकुक्कुय-अकुक्कुच, अशिष्टचेष्टारहित । उत्त० १०९ । अकुत्कुच, कुन्थ्वादिविराधनाभयात्कर्मबन्धहेतुत्वेन कुत्सित हस्तपादादिभिरस्पन्दमान । उत्त० १०९ । अकौत्कुच-मुखविकारादिरहित । आचा० ३१५ ।

अकुक्कुय-अकुक्कुचं, अस्पन्दमानम् । उत्त० ५८ ।

अकुक्कुय-कुत्सितं कूजति-पीडित सन्नाक्रन्दति कुकूजो न तथेत्यकुकूज । उत्त० ४८६ ।

अकुच्चो-निश्चल । नि० चू० प्र० १६७ अ ।

अकुट्ठिले-अहि । दश० चू० १५१ ।

अकुट्ठो (आक्रुष्ट) । जात्जातोतिवर्णेण । नि० । चू० प्र० २९६ अ ।

अकुसल-अकुशल, अनिपुण स्थूलमतिश्चरकादि । दश० ६४ ।

अकुसलो-अप्रधान बन्धाय संसाराय । नि० चू० प्र० २५ आ ।

अकुहए-कुहग-इन्द्रजालादी त न करेइत्ति वाइत्तादि वा । दश० चू० १४० ।

अकेल्ला-राजस्तोत्रपाठका । नि० चू प्र० २७७ अ ।

अकोवणिज्जो-अकप्पो अट्ठमणिजोत्ति वुत्त भवति । नि० चू० द्वि० १३९ अ ।

अकोसायंत-विकाशीभवत् । औप० २० ।

अकोहणे-अक्रोधन अपराधिन्यनपराधिनि वा न कथंचित् कुप्यति । उत्त० ३४५ ।

अकोहे-अक्रोध, स्वल्पक्रोधेन । जं० प्र० १४८ ।

अक्कडे-अकाले (आउ०)

अक्कंता-आक्रान्ता । आव० ५०४ । अवष्टब्धा । आचा० २५७ ।

अक्कंतितो-अड्डाए बला हरंतो । नि० चू० द्वि० ३८ आ ।

अक्कंतिया-न कुतोऽपि बिभ्यति ये स्तेना । बृ० द्वि० ११८ अ ।

अक्कंते–अचित्तस्य प्रथमो भेदः। ओघ० १३३। आकान्ते–पादादिना भूतलादौ यो भवति सः। ठाणा० ३३६।

अक्कंतो–आक्रान्तः। आव० २२७।

अक्कंदणं–आक्रन्दनम्, महता शब्देन विरवणम्। आव० ५८७।

अक्क–(अर्कतूलम्)। नि० चू० द्वि० ६१ अ।

अक्कबोंदी–वल्लीविशेषः। प्रज्ञा० ३३।

अक्कबोंदीणं–वल्लीविशेषः। भग० ८०३।

अक्कम–आक्रमः, तदुच्छेद इतियावत्। आव० ६०।

अक्कमणं–आक्रमणम्। विशे० ४८६। आक्रमणं–पादेन पीडनं। आव० ५७३।

अक्कमइ–आक्रामति, अवष्टभ्नाति। उत्त० १३४।

अक्कमित्ता–हत्वा। भग० ६३७। आक्रम्य–मिश्रीकृत्य। ओघ० १९५।

अक्किट्ठा–अक्लिष्टा, स्वशरीरोत्थक्लेशवर्जिता। जं० प्र० १२६।

अक्किट्ठो–अक्लिष्टः, स्वशरीरोत्थक्लेशरहितः। जीवा० २८४।

अक्कोडियाओ–प्रवेशिताः। बृ० प्र० ३० आ।

अक्कोस–आक्रोशः, अनिष्टवचनम्, द्वादशः परीषहः। आव० ६५६। यकारादिभिः। दश० २६७। दुर्वचनपरीषहः। सम० ४१।

अक्कोसेज्ज–आक्रोशेत्, तिरस्कुर्यात्। उत्त० १११।

अक्कोसो–आक्रोशः, असभ्यभाषणम्। उत्त० ६२। आक्रोशनं, असभ्यभाषात्मक.। उत्त० ८३। म्रियस्वेत्यादि वचनम्। प्रश्न० १६०।

अक्खं–अक्षम्, चन्दनकम्। आव० ७६७। अक्षारकम्। आव० ३४४। वराटकाः। आव० ८८। आत्मा। ठाणा० ४९। इन्द्रियम्। प्रज्ञा० ८८। अश्नीते नवनीतादिकमित्यक्षो–धूः। उत्त० २४७।

अक्ख–अक्ष., अक्षोपाङ्गदानवचेति साधोरुपमानम्। दश० १८। जीवः इन्द्रियं वा। भग० २२२। संखाणियप्पदेसो अण्णतरं इंदियजायं वा। नि० चू० प्र० २५५ अ। अक्ष–चक्रनाभिक्षेप्यकाष्ठम्। जं० प्र० १७१।

अक्खए–अक्षयम्, अविनाशी। भग० ११९। सदाभावेन, अवयविद्रव्यापेक्षया अक्षतो वा परिपूर्णत्वात्। ठाणा० ३३३।

अक्खओदए–अक्षयोदकः, अक्षयसम्यग्ज्ञानोदकः। अक्षतोदयः, अक्षत उदयः प्रादुर्भावो वा। उत्त० ३५३।

अक्खणिक–(अक्खणिए), व्यग्रः। ओघ० १७५।

अक्खणिओ–अक्षणिकः, निर्व्यापारः। दश० चू० ५८।

अक्खति–आख्याति (गणि०).

अक्खपडिय–अक्षपतितः, अक्षपातनिका। आव० ४५३।

अक्खपाडओ–अक्षपाटकः। जीवा० २५७। चतुरस्राकारः पाटकः। जीवा० २२८।

अक्खपाद–हेतुसत्थं। नि० चू० तृ० ३० आ।

अक्खमाते–अक्षमाय–अयुक्तत्वाय। ठाणा० १४९। अनुचितत्वाय असमर्थत्वाय वा। ठाणा० २९२। असहनत्वाय अक्षान्त्यै वा। ठाणा० ३५८।

अक्खयं–अक्षयम्, साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् ततो नाशरहितः, महावीरः। भग० ७। विनाशकारणाभावात्। जीवा० २५६। अक्षयाः, अवयविद्रव्यस्यापरिहाणेः। जं० प्र० २५७। अपुनरावृत्तिकं। सम० १२०।

अनाशं–साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात्, अक्षतं वा परिपूर्णत्वात्। सम० ५।

अक्खयणिहि–अक्षयनिधिः, देवभाण्डागारम्। विपा० ७७।

अक्खयणिही–अक्षयनिधिः। आव० ३६०।

अक्खया–अक्षया, अक्षयत्वात्। जीवा० ९९। न विद्यते क्षयो यथोक्तस्वरूपाकारपरिभ्रंशो यस्याः सा। जं० प्र० २७।

अक्खयायारचरित्तो–अक्षताचारचारित्री, अक्षताचार एव चारित्रं तद्वान्। आव० ७६३।

अक्खरं–अक्षरम्, निरुक्तिविधिनार्थकारलोपादक्षरम्, अथवा क्षीयत इति क्षरं न क्षरमक्षरम्, अन्यान्यवर्णसंयोगेऽनन्तानर्थान् प्रतिपादयति, न च स्वयं क्षीयते येन तेनाक्षरमिति भावः। विशे० २५५। अविशुद्धनयाभिप्रायेण सर्वमपि ज्ञानमक्षरम्, तथा सर्वेऽपि भावा अक्षरास्तथापि रूढिवशाद्वर्ण एवेहाक्षरं भण्यते। विशे० २५४। 'अक्खरं सो य चेयणाभावो' अक्षरं, क्षर–सञ्चलने, न क्षरति न चलति–अनुपयोगेऽपि न प्रच्यवत इत्यक्षरम्। विशे० २५३। अक्षरम्। आव० ७९३।

अक्खर–अक्षरम्, न क्षरति न विनश्यति। विशे० १११६। अक्षराणां 'स्व' शब्दो–पत्तापयोः अक्षराणां व्यञ्जनानां स्वरणेन सशब्दनेन स्वरा अकारादयः प्रोच्यन्ते,

अथवा अक्षरस्य चैतन्यस्य स्वरणात् संशब्दनात्स्वराः। विशे० २५५। न क्षरतीत्यक्षरं, तच्च ज्ञानं चेतनेत्यर्थः। आव० २४।

अक्खरडियत्ति-अखंडितम्। ठाणा० ३८६।

अक्खरपुट्टिया-लिपिविशेषः। प्रज्ञा० ५६।

अक्खरसंनिवाति-अक्षरसंनिपातः, अकारादिसंयोगाः। ठाणा० १७९।

अक्खरसमं-तत्र दीर्घे अक्षरे दीर्घः स्वरः क्रियते, ह्रस्वे ह्रस्वः, प्लुते प्लुतः, सानुनासिके सानुनासिकः तदक्षरसमम्। ठाणा० ३९६।

अक्खराणि-लिपिज्ञानम्। बृ० द्वि० १६३ अ।

अक्खवाउ-अक्षपादः। विशे० ६४९। विशे० ६४८।

अक्खसोय-अक्षश्रोतः, चक्रधुरः प्रवेशरन्ध्रम्। भग० ३०९।

अक्खा-अक्षाः, चंदनकाः। नि० चू० प्र० १०६ अ। अनुयोगे भङ्गचारणोपकरणम्। बृ० द्वि० २५३ आ। आख्या, शब्दप्रथा। प्रज्ञा० ६००।

अक्खाइं-अक्षाणि, इन्द्रियाणि। प्रज्ञा० ६००।

अक्खाइ-आख्याति प्रथमतो वाच्यमात्रकथनेन। जं० प्र० ५४०।

अक्खाइउवक्खाइया-आख्यायिकोपाख्यायिका। सम० ११९।

अक्खाइयं-आख्यातिकम्, नामिकादिपंचसु पदेषु चतुर्थं। आव० ३७९।

अक्खाइयाणिस्सिया-आख्यायिकानिःसृता, यत्कथास्वसंभाव्याभिधानम्। प्रज्ञा० २५६।

अक्खाइया-आख्यायिका। सम० ११९।

अक्खाओ-आख्यायिका, कथानका। सम० ११९।

अक्खाग-म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५।

अक्खाडग-अक्षाटकः, मल्लयुद्धस्थानम्। पिंड० १२१।

अक्खाडगा-आखाटकाः, प्रेक्षाकारिजनासनभूताः। ठाणा० २३०।

अक्खाडगो-आखाटकः, प्रेक्षास्थाने आसनविशेषलक्षणः। भग० २५१।

अक्खाडगो-चतुरस्रः। ठाणा० १४५।

अक्खाणं-आख्यानं, स्वामिमुख्येन वाऽऽदरेण वा। विशे० ११९८। समवसरणस्य। आव० २६८।

अक्खाणग-आख्यानकम्। नि० चू० द्वि० ७१ अ।

अक्खाणयं-आख्यानकं। नि० चू० प्र० ३४६ आ।

अक्खातित-आख्यायिकानिश्रितं तत्प्रतिबद्धोऽसत्प्रलापः। ठाणा० ४८९।

अक्खायं-आख्यातं, सकलजन्तुभाषाभिव्याप्त्या कथितम्। उत्त० ८०।

अक्खाय-आख्यातम्, केवलज्ञानेनोपलभ्याभिहितम्। दश० १३६।

अक्खायगो-आख्यायकः, यः शुभाशुभमाख्याति सः। जीवा० २८१।

अक्खायपयं-आख्यातपदम्, साध्यक्रियापदम्। प्रश्न० ११७।

अक्खासुयं-आख्याश्रुतम्, आख्यानकप्रतिबद्धश्रुतम्। प्रश्न० १०८।

अक्खिसंति-आख्यास्यन्ति। नि० चू० प्र० ३५० आ।

अक्खित्त-आक्षिप्तम्, आवर्जितम्। दश० ११४।

अक्खित्तनियंसणा-आक्षिप्तनिवसना, आकृष्टपरिधानवस्त्रा। प्रश्न० ५६।

अक्खित्ते-ठिता। नि० चू० प्र० १८६ अ।

अक्खित्तो-आक्षिप्तः। आव० १७५।

अक्खिवणं-आक्षेपणम्, चित्तव्यग्रतापादनम्। प्रश्न० ४३।

अक्खीण-अक्षीण, अक्षीणायुष्कमप्रासुकम्। भग० ३७२।

अक्खीणझंझप-अक्षीणझञ्झः, अक्षीणकलहः। आव० ६६१।

अक्खीणमहाणसितो-अक्षीणमहानसिकः। उत्त० ३३२।

अक्खीणमहाणसियं-अक्षीणमहानसिकम्। आव० २९१। ठाणा० ३३२।

अक्खीणमहाणसी-अक्षीणमहानसी, अत्रुटितभिक्षालब्धभोजनवान्। औप० २८।

अक्खुडिय-आस्फालितः, स्खलितः। आव० ५५५।

अक्खुंडइ-चक्षिराउ मुंचति। नि० चू० द्वि० १२४ अ।

अक्खुण्णइ-आक्षुण्णि, विक्षिपति। बृ० द्वि० ६६ अ।

अक्खुण्णा-अमर्दिताः। बृ० द्वि० ५८ अ।

अक्खे-अक्षः, शकटावयवविशेषः। भग० ३७७। सम० ९८। आक्षया-प्रभृति। जं० प्र० ६२।

अक्खेड़-पण्णवतिरङ्गुलानि एकोऽक्ष । जं० प्र० ९४ ।
अक्खेव-आक्षेप, प्रश्न । भग० ११४ । आव० ९७ । उत्त० ५२४ ।
अक्खेवणि-आक्षेपणी, धर्मकथाया प्रथमो भेद, आक्षिप्यन्ते मोहात्तत्त्वं प्रत्यनया भव्यप्राणिन इति । दश० ११० । धर्मकथाभेद । आचा० १४५ ।
अक्खेवणी-आक्षिप्यते-मोहात् तत्त्वं प्रत्याकृष्यते श्रोताऽनयेत्याक्षेपणी । ठाणा० २१० । आक्षिप्यते-मोहात्तत्त्वं प्रत्याकृष्यते श्रोता यकाभिरिति । औप० ४६ ।
अक्खेवी-आक्षेपी, आक्षिपति वशीकरणादिना य स ततो मुष्णाति स । प्रश्न० ४६ ।
अक्खेवो-आक्षेप, आक्षेपणम्, आशङ्का । आव० ३७७ । पूर्वपक्ष । बृ० तृ० १२५ अ । परद्रव्यस्य, अधर्मद्वारस्यैकोनविंशतितमं नाम । प्रश्न० ४३ ।
अक्खो-अक्ष, द्युतपाशक । आव० ५०२ । फलविशेष, अनुत्त० ६ ।
अक्खोडगा क्रियाविशेष । नि० चू० प्र० १८२ अ ।
अक्खोडभंगपरिहरणा-आस्फोटकभङ्गपरिहरणा, आस्फोटकानां यो भङ्गस्तस्य प्रतिलेखनादिविधिविराधनापरिहरणा । आव० ५५२ ।
अक्खोडयं-अक्षोटकम्, अक्षोडवृक्षफलम् । प्रज्ञा० ३६४ ।
अक्खोभे-अक्षोभ, अन्तकृद्दशाना प्रथमवर्गस्याष्टमाध्ययनम् । अन्त० १ । अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्य प्रथमाध्ययनम् । अन्त० ३ ।
अक्खोलं-फलविशेष । प्रज्ञा० ३२८ ।
अक्खोवगं-चक्रोंजनं । गणि० ।
अक्खोवंजण-अक्षोपाञ्जनम्, शकटधूर्म्रक्षणम् । भग० २९४ ।
अक्रियावादिन -क्रिया-अस्तीतिरूपा सकलपदार्थसार्थव्यापिनी सैवायथावस्तुविषयतया कुत्सिता, अक्रिया नञ कुत्सार्थत्वात्तामक्रियां वदन्तीत्येवंशीला अक्रियावादिन, यथावस्थिते हि वस्तुन्यनेकान्तात्मके तन्नास्त्येकान्तात्मकमेव चास्तीति प्रतिपत्तिमन्त इत्यर्थ । ठाणा० ४२५ ।
(अकिरियावाई)-नियतकृष्णपाक्षिका । दशाश्रु० १६ ।
अक्ष.-बिभीतक । प्रज्ञा० ३१ ।
अक्षर-घोलना स्वरविशेष । जीवा० १९५ ।
अक्षरकुटी-अक्षरच्छेदेन । विशे० ८३० ।
अक्षरकोविदपरिषद्-(विद्वत्परिषद्) । आचा० १४६ ।
अक्षरश्रुतम्-शनं इन्द्रियमनोनिमित्तं श्रुतग्रन्थानुसारि तदावरणक्षयोपशमो वा । आव० २४ ।
अक्षि-नेत्रम् । आचा० ३७ ।
अक्षीणमहानसीलब्धि-येनाऽऽनीत भैक्षं बहुभिरप्यन्यैर्भुक्तं न क्षीयते किन्तु स्वयमेव भुक्तं निष्ठां याति । विशे० ३८५ ।
अक्षोपाङ्गन्याय -(अक्खुवंजण)-चक्रोञ्जनं । दश० १८० ।
अखंड-अखण्ड, सम्पूर्णावयव । आव० २३९ । अखण्डम्-अस्फुटितम् । दश० १६५ ।
अखमे-अक्षमा, परकृतापराधस्यासहनं । भग० ५७२ ।
अखित्त-इन्द्रकीलादियुतं ग्रामादि । बृ० तृ० ३६ अ ।
अखुण्णा-अमर्दिता । नि० चू० प्र० १३५ अ ।
अखेत्तं-जं० छिण्णमडव । नि० चू० प्र० ३४१ आ । मनिसपृथ्व्यादिमदस्थण्डिलम् । बृ० द्वि० १४० आ ।
अगंधिमा-कयलआ मरहट्ठविसये फलाण कमलकपमाणाओ पेण्डीओ एक्कंमि डाले बहुक्काओ भवन्ति ताणि फलाणि गंडाखडीकयाणि । नि० चू० तृ० ३९ अ ।
अगंधण-अगन्धन, मानी सर्प । दश० ३७ ।
अगंधणा-अगन्धना, सर्पजातिविशेष । उत्त० ४९५ ।
अगंधि-दुर्गन्धि । बृ० तृ० ९९ अ ।
अगइचरमे-अगतिचरम, न गतिचरम । प्रज्ञा० २४५ ।
अगड-कूप । बृ० प्र० १०९ आ । अवट सूत्र । आव० ६९१ । आव० २०४ । कूप । भग० २३८ । जं० प्र० १२३ ।
अगडदत्तो-अगडदत्त, अमोघरथरथिकपुत्र । उत्त० २१३ । रक्षकविशेष । व्य० द्वि० १५० आ ।
अगडमहेसु-कूपमहेषु । आचा० ३२८ ।
अगडाति-अवट-कूपा । ठाणा० ८६ ।
अगडेसु-अवटेषु, कूपेषु । प्रज्ञा० ७२ ।
अगडो-कूप । नि० चू० प्र० ४३ अ । अवट, कूप । प्रज्ञा० २६७ ।
अगणि-अग्नि, इन्धनस्य प्लोषक्रियाविशिष्टरूपस्तथा विद्युदुल्कादिनिसर्गसमुत्थित सूर्यमणिसृतादिरूपश्च । आचा० ४९ । आव० ६२१ । अय पिण्डानुगत । दश० २२८ । दश० १५४ । अग्निभयात्-प्रदीपनभयात् । ओघ० ११८ ।

अगणिज्झामिय–अग्निध्यामितम्, वह्निना ध्यामितं, श्यामीकृतम्। भग० २१३।

अगणि-झूसिए–सेवितः, क्षपितः। भग० ६८३।

अगणिज्झूसिय–अग्निना शोषितं, पूर्वस्वभावक्षपणात्, अग्निना सेवितं वा। भग० २१३।

अगणिपरिणामिय–अग्निपरिणामितम्, सञ्जाताग्निपरिणामम्। भग० २१३।

अगणी–अग्निः। ओघ० १५६। चतुर्दशशतके पञ्चमोद्देशकः। भग० ६३०।

अगतं–नकुलाजादि। नि० चू० प्र० ७६ अ।

अगतो–अगदः, औषधिः। आव० ८३५।

अगत्थिओ–वृक्षविशेषः। अनुत्त० ५।

अगत्थिगुम्मा–अगस्त्यगुल्माः। जं० प्र० ९८।

अगत्थी–अगस्तिः,ग्रहविशेषः। जं० प्र० ५३५। ठाणा० ७९।

अगदो–अणेगदव्वेहिं। नि० चू० द्वि० १८ आ।

अगमा–वृक्षाः। बृ० द्वि० १८३ आ। नि० चू० प्र० १५२ आ, १८३ अ।

अगमेत्त–ज्ञात्वा, आज्ञापयेदात्मानमनासेवनयेति। आचा० २१९।

अगम्मगामी–अगम्यगामी, भगिन्याद्यभिगन्ता। प्रश्न० ३६।

अगर–अगुरुः–दारुविशेषः। प्रश्न० १६२।

अगरला–सुविभक्ताक्षरता। औप० ७८।

अगरिहिअं–अगर्हणीयम्, सामायिकनवमपर्यायः। आव० ४७४।

अगलदत्तो–अगडदत्तः,। उत्त० ११५।

अगहणे–अग्रहणं–अकरणे। ओघ० १४९।

अगा–वृक्षाः। नि० चू० तृ० १४० अ।

अगामितं–अगामिकं, अकामिक–अनभिलपणीय। ठाणा० ३१४।

अगामियं–अगामिकां, अकामिकां वा–अनभिलापविषयभूताम्। भग० ६७२।

अगारं–अगैः कृतं गृहम्। नि० चू० तृ० १४० अ। गेहम्। प्रश्न० ८। गृहम्। आव० ३२९। अगारः, गृहस्थः। आव० ३२९।

अगार–अगारम्, गृहम्। दश० ६२।

अगारट्ठिय–अगारस्थितभाषा–गृहस्थभाषा। व्य० प्र० ५४ आ।

अगारधम्मं–अगारधर्मम्, गृहाचारं गार्हस्थ्यम्। उत्त० ५७८।

अगारबंधणं–गृहपाशं पुत्रकलत्रधनधान्यादिरूपम्। आचा० ४२९।

अगारस्थेभ्यः–(गारत्थेहिं), अनुमतिवर्जमवोत्तमदेशविरतिप्राप्तेभ्यः। उत्त० २५०।

अगार–अगाराः, गृहिणः। ठाणा० ५३।

अगाराओ–गृहवासात्। जं० प्र० १४५।

अगारिसामाइयङ्गाइं–अगारिणो–गृहिणः सामायिकं–सम्यक्त्वश्रुतदेशविरतिरूपं तस्याङ्गानि–निःशङ्कताकालाध्ययनाणुव्रतादिरूपाणि अगारिसामायिकाङ्गानि। उत्त० २५१।

अगारी–अगारी, क्षत्रियादिकः। सूत्र० १४३। गृही, असंयतः। ठाणा० १८१। जं० प्र० १४५।

अगारो–अगारः, गृहस्थस्तस्येदमगारिकं, देशचारित्रसामायिकं देशविरतिसामायिकम्। विशे० १०६३।

अगालिणो–अगारिणः। बृ० द्वि० २८२ अ।

अगाहा–अगाधा, अपरिमितजला। आव० ८१९। प्रायोगंभीरम्। दश० २२०।

अगिण्हियव्वं–अग्रहीतव्यम्, अनुपादेयं, हेयम्। दश० ८०।

अगिला–अग्लानिः। नि० चू० प्र० १७ आ। अग्लानः–उचितकर्तव्यसहिष्णु.। आचा० २८१।

अगिलाए–अग्लान्या, अखिन्नतया बहुमानेनेत्यर्थ.। ठाणा० २९९। विशे० ८७५।

अगिलायउ–अग्लान्येव, शरीरश्रममविचिन्त्यैव। उत्त० ५३६।

अगीयत्थं–अपरीणामग, अतिपरिणामगाय। नि० चू० प्र० ४५ आ।

अगीयत्थत्त–अगीतार्थत्वम्। आव० ५२।

अगीयत्थो–जेण आवस्सगादीयाण अत्थो ण सुतो। नि० चू० तृ० २५ अ।

अगुण–अगुणः, अविद्यमानगुणः। दश० २६३।

अगुणगुणे–वक्ता। आचा० ८६।

अगुणरिणं–अगुणा एव अणंतगुणाणं अणंति वा रिणंति वा एगट्ठा तं च। दश० चू० ८९।

अगुणा-अगुणाः, मिथ्यात्वादयो दोषाः। उत्त० ४३१।

अगुत्ती-अगुप्तिः, इच्छाया अगोपनम्। परिग्रहस्य त्रयोविंशतितमं नाम। प्रश्न० ९२।

अगुरु-अगुरुः, सुगन्धिद्रव्यः। आव० १०१। काष्ठविशेषः। जीवा० १३६।

अगुरुलहु-अगुरुकलघुकम्, अत्यन्तसूक्ष्मं भाषामनःकर्मद्रव्यादि। ठाणा० ४७५।

अगुरुलघु-यदुदयात् प्राणिनां शरीराणि न गुरूणि नापि लघूनि तत्। प्रज्ञा० ४७३। सूक्ष्मपुद्‌गलद्रव्याणि। जं० प्र० १३०।

अगुरुलहुफासपरिणामे-स्पर्शविशेषः। सम० ४१।

अगेहि-अगृद्धिः-भोजनादिषु परिभोगकाले अनासक्तिः। भग० ९७।

अगो-अगः, विपाककालेऽपि जीवविपाकितया शरीरपुद्‌गलादिषु बहिःप्रवृत्तिरहितः, अनन्तानुबन्ध्यादिः। उत्त० ०१९।

अगाधे-(गाधे), पदप्रचारालङ्घनीये। विशे० ५७६।

अग्गं-अग्रम्, अपरिभुक्तम्। जीवा० २५४। अग्र्यम्, प्रधानम्। प्रश्न० १३६। अन्तः। भग० ३५। मूर्धा। प्रज्ञा० १०८। परिमाणः। सूर्य० २८०। आलम्बनम्, आव०। २६५। परिमाणम्। भग० ३५। संयमतपसी मोक्षो वा। आचा० १६०। भवोपग्राहिकर्मचतुष्टयं। आचा० १६०। प्रमाणम्। ठाणा० ४६२। कोटिः। उत्त० २८३। अग्रं, वरं प्रधानं अहवा जं पढमम्। नि० चू० प्र० १४२ अ।

अग्ग-निर्वाणस्थानम्। आव० १४८। द्रव्यावगाहनाद्यग्रेषु। आचा० ३१८।

अग्गकूरमंडी-अग्रकूरमण्डी, ओदनस्योपरिभागः। आव० ५७५।

अग्गकोडीणं-अग्रकोटयः, प्रकृष्टा विभागाः। जं० प्र० ९५।

अग्गजायाणि-अग्रजातानि, वनस्पतिविशेषः। आचा० ३४९।

अग्गजिब्भा-अग्रजिह्वा, जिह्वाग्रं। ठाणा० ३६५।

अग्गतावसगोत्ते-अग्रतापसगोत्रम्। सूर्य० १५०।

अग्गपलंबं-आम्रातकफलं। बृ० प्र० १४३ आ। तलादिप्रलंबा। नि० चू० द्वि० १२४ आ।

अग्गपिंडो-जइ दिणे २ दाहिमि, अग्गपिंडो अग्गकूरो। नि० चू० द्वि० ९० आ। अग्रपिण्डम्-निष्पद्यमानस्य शाल्योदनादेराहारस्य देवतार्थं स्तोकस्तोकोद्धारं। आचा० ३३६। काकपिण्ड्यां। आचा० ३४०। शाल्योदनादेः प्रथममुद्धृत्य भिक्षार्थं व्यवस्थाप्यते। आचा० ३२६। अग्रकूरो परिवेषणे आदावेव यो गृह्यते। ठाणा० ५१५।

अग्गबीए-अग्रबीजाः, अग्रे बीजं येषामुत्पद्यते ते तलताली-सहकारादयः शाल्यादयो वा, अग्राप्येवोत्पत्तौ कारणतां प्रतिपद्यन्ते येषां कोरण्टादीनां ते वा। सूत्र० ३५०।

अग्गबीय-अग्रबीजाः, कोरण्टकादयः दश० १२९। आचा० ५८। व्रीह्यादयः। ठाणा १८६। जपाकुसुमादि। आचा० ३४९।

अग्गभावे-अग्रभावम्, धनिष्ठा गोत्रम्। जं० प्र० ५००।

अग्गमहिसी-अग्रमहिषी, पट्टराज्ञी। जीवा० १६२। ठाणा० ११७।

अग्गरसो-अग्र्यः रसश्च, प्रधानो मधुरादिकश्च, अग्र्यो रसः शृङ्गारादिकः। उत्त० ४०५।

अग्गल-अर्गलम्, गोपुरकपाटादिसम्बन्धि। दश० १८४।

अग्गल-अर्गलः, षडशीतितमग्रहनाम। जं० प्र० ५३५।

अग्गलपासाया-अर्गलाप्रासादाः, यत्रार्गला नियम्यन्ते। जं० प्र० ४८। जीवा० २०४।

अग्गला-गोवाडादीहारेसु भवति। दश० चू० ८५। अर्गला, प्रतीता। जीवा० २०४। जीवा० ३५९। अधिकं। उत्त० ७, ६६०।

अग्गलापासाय-अर्गलाप्रासादः, प्रासादे यत्रार्गला प्रविशति सः। जीवा० ३५९।

अग्गवपूरओ-परिधानविशेषः। बृ० तृ० १०२ अ।

अग्गविडवं-अग्रविटपम्, शाखामध्यभागाग्रं, विस्ताराग्रं वा। प्रश्न० ९२।

अग्रशिरः-(अग्गसिरा), उष्णीषलक्षणम्। जं० प्र० ११३।

अग्गसिंगं-अग्रशृङ्गम्। आव० १७४।

अग्गहणं-अनादरः। ओघ० ९४। बृ० प्र० २४५ अ।

अग्गहत्था-अग्रहस्ता, बाह्वग्रभूताः शयाः। अनुत्त० ६। अग्रहस्तौ, भुजौ। प्रज्ञा० ९१।

अग्गहत्थो-अग्रहस्तः, बाह्वग्रभागवर्ती हस्तः। जीवा० २७५।

अग्गाइं-अग्र्याणि, वयस्कानि। जं० प्र० २१८।

अग्गासणे कूरं-अग्रासनम्, प्रतिग्रहं सदक्षिणं भोजनम्। आव० ६७९।

अग्गाहारो-अग्रासनम्। आव० ३००।

अग्गितेण-अग्न्यन्तेन, अग्निमार्गेण। आव० ७१।

अग्गि-तीर्थकरविशेषशिबिका। सम० १५१।

अग्गिउत्तं-ऐरवतावसर्पिणीतीर्थकरः। सम० १५३।

अग्गिओ-अग्निकः, उत्सन्नवंशजो दारकः। आव० ३९१।

अग्गिकुमारा-अग्निकुमाराः, सोमस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्तिनो देवाः। भग० १९५। भवनपतिभेदविशेषः। प्रज्ञा० ६९।

अग्गिकुमारीओ-अग्निकुमार्यः, सोमस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्तिन्यो देव्यः। भग० १९५।

अग्गिघरं-अग्निगृहम्। आव० २९९।

अग्गिच्चा-कौशिकगोत्रभेदः। ठाणा० ३९०। सुप्रतिष्ठाभविमानवासी अष्टमो लोकान्तिकदेवः। भग० २७१। ठाणा० ४३२।

अग्गिच्चामे-कृष्णराज्यवकाशान्तरे लोकान्तिकविमानम्। ठाणा० ४३२। सम० १४।

अग्गिओ-अग्निः, मरुत्। आव० १३५।

अग्गिज्जोओ-अग्निद्योतः, पुष्पमित्रजीवः। आव० १७१।

अग्गितरोगी-अग्निकरोगी। आव० २०४।

अग्गिभीरु-अग्निभीरुः, प्रद्योतस्य रथः, द्वितीयं रत्नम्। आव० ६७३।

अग्गिभूई-अग्निभूतिः, अग्निद्योतजीवः। आव० १७२। द्वितीयगणधरः। आव० २४०। श्रीवीरस्य द्वितीयगणधरः। भग० १५३। सम ८४।

अग्गिमाणव-अग्निमानवः, उत्तरनिकाये पञ्चम इन्द्रः। भग० १५७।

अग्गिमाणवे-अग्निमाणवः, उत्तरदिग्वर्तिनामग्निकुमाराणामधिपतिः। प्रज्ञा० ९४। ठाणा० ८४। जीवा० १७०।

अग्गिमेह-अग्निमेघाः, अग्निवद्दाहकारिजला मेघाः। भग० ३०६।

अग्गिमो-प्रथमः। ओघ० ३३।

अग्गिय-व्याधिविशेषः। नि० चू० द्वि० ६० अ।

अग्गियय-अग्निः, तितिक्षोदाहरणे प्रथमो दासचेटः। आव० ७०२। अग्निकः, भस्मकाभिधानो वायुविकारः। विपा० ४२।

अग्गियओ-अग्निः, दासचेटः। आव० ३४३।

अग्गियतो-अग्निकः, इन्द्रदत्तराजस्य दासचेटः। उत्त० १४८।

अग्गिल्लप-*ग्रहविशेषः। ठाणा० ७९।*

अग्गिवेससगोते-कृत्तिकानक्षत्रनाम। सूर्य० १५०।

अग्गिवेसाणं-अग्निवेशस्यापत्यं वृद्धं अग्निवेश्यो 'गर्गादिभ्य'-*इति यञ् प्रत्ययः तस्याप्यपत्यमाग्निवेश्यायनः।* नंदी० ४८।

अग्गिवेसायणे-गोशालनिशाचरः। भग० ६५९।

अग्गिवेसे-अग्निवेश्यः, शास्त्रीयचतुर्दशदिवसनाम। सूर्य० १४७। *द्वाविंशतिमुहूर्तनाम।* सूर्य० १४६। जं० प्र० ४९१। अग्निवेश्म-शास्त्रीयचतुर्दशदिवसनाम। जं० प्र० ४९०। अग्निवेश्यं-कृत्तिकागोत्रम्। जं० प्र० ५००।

अग्गिसिहा-*अग्निशिखम्, वनविशेषः। दश० १०३।*

अग्गिसिहे-अग्निसिंहः, दत्तवासुदेवपिता। आव० १६३।

अग्गिसिहो-विष्णुविशेषपिता। सम० १५२।

अग्गिसीहे-*अग्निसिंहः, दक्षिणदिग्वर्तिनामग्निकुमाराणा-*मधिपतिः। जीवा० १७०। ठाणा० ८४। प्रज्ञा० ९४। पञ्चमो दक्षिणनिकायेन्द्रः। भग० १५७।

अग्गिसेणं-ऐरवतावसर्पिणीतीर्थकरः। सम० १५३।

अग्गिहोत्त-अग्निहोत्रः, अग्निकारिका। उत्त० ५२५।

अग्गिहोत्तसाला-*अग्निहोत्रशाला। आव० २२५।*

अग्गी-अग्निः, ग्रहविशेषः। जं० प्र० ५३५। वह्निः। आचा० ३३। आव० २७३।

अग्गीसेणं-*ऐरवतावसर्पिणीतीर्थकरः। सम० १५३।*

अग्गुज्जाणं-अग्रोद्यानम्, अग्न्युद्यानम्। आव० १९०।

अग्गो-दशिकापर्यन्ते। ओघ० २१४।

अग्गेई-आग्नेयी, पूर्वदक्षिणमध्यवर्तिदिक्। आव० २१५।

अग्गेज्ज-आग्नेयः, मण्डलकोणः। सूर्य० २२।

अग्गेणियं-*द्वितीयपूर्वम्। सम० २६।*

अग्गेणीयं-अग्रायणीयम्, द्वितीयपूर्वनाम। ठाणा० १९९।

अग्गेया-वत्सगोत्रान्तर्गतं गोत्रम्। ठाणा० ३९०।

अग्गेयी-अग्निकोणः। भग० ४९३। ठाणा० १३३।

अग्गोवरयंकरेति। नि० चू० द्वि० ३५ अ।

अग्गोदयं-अग्रोदकम्, देशोनयोजनार्धजलादुपरि वर्द्धमान जलम्। जीवा० ३०९। षोडशसहस्रोच्छ्रिताया वेलाया यदुपरि गव्यूतद्वयमानं वृद्धिहानिस्वभावं तदग्रोदकम्। सम० ७५।
अग्घं-अर्घम्। आव० ३००। महार्घ्यम्। आव० ८२७। आव० २९५। अर्घ्यम्-मूल्यम्। आव० ८२६।
अग्घंति-अर्घन्ति, महार्घन्ति। आव० ८२९।
अग्घविए-अर्घितम्, कृतमूल्यम्। दश० ६१।
अग्घाडग-गुच्छाविशेष। प्रज्ञा० ३२।
अग्घाया-आघ्राता, आहूता। विशे० ९६०।
अग्घियं-बहुमोल्लं। नि० चू० प्र० १३९ अ।
अग्घेइ-अर्हति। उत्त० १४२।
अग्घेऊणं-अर्धित्वा। आव० २६१।
अग्घो-अर्घ, मत्स्यकच्छपविशेष। जीवा० ३२१।
अग्निमानव-भवनपतीन्द्रविशेष। ठाणा० २०५।
अग्निशर्मा-यो मिथ्यादृष्टयदिष्पुतपसाऽपि अनन्त काल संसारे पर्यगत्। सूत्र० ५७।
अग्निशिख-भवनपतीन्द्रविशेष। ठाणा० २०५।
अग्निष्टोम-यागविशेष। दश० २७६।
अग्रश्रुतस्कन्ध-द्वितीयश्रुतस्कन्ध। आचा० ३१८।
अग्राह्य-अप्रमेय। जीवा० १८७।
अघा गर्ता हृदो। बृ० प्र० १०९ आ।
अघोर-मन्त्रविशेष। उत्त० २६७।
अङ्कुसल-अङ्कुशयुक्त। (मर०)
अङ्गमंगो-अंगोपांगानि। (मर०)
अचंड-अचण्ड, सौम्य। उत्त० ४७।
अचंडो-अचण्ड, कारणविकलकोपविकल। प्रश्न० ७४।
अचक्किय-अचकिता, अत्रासिता। उत्त० ३५३।
अचक्खुदंसण अचक्षुर्दर्शनम्, चक्षुर्वर्जशेषेन्द्रियमनोभि दर्शनम्। जीवा० १८।
अचक्खुसे-अचाक्षुषम्, चक्षुरिन्द्रियाग्राह्यम्। दश० २०२।
अचक्खुस्सं-अनिष्टम्। बृ० तृ० ४१ अ।
अचक्षुषा-चक्षुर्वर्जेन्द्रियचतुष्टयेन मनसा। ठाणा० ४४८।
अचरम-अचरम, यस्य चरमो भवो न भविष्यति सोऽचरम। भग० २९९।
अचरमसमयनियंठो-अचरमसमयनिर्ग्रन्थ, अचरमा-आदिमध्यास्तेषु यो वर्तमान स। उत्त० २५७।
अचरिमं-अचरमम्। प्रज्ञा० २३४। अप्रान्तं, मध्यवर्ति। प्रज्ञा० २२८।
अचरिमंतपएस-अचरमान्तप्रदेश। भग० ३६६।
अचरिमो-अचरम, अभव्य सिद्ध। प्रज्ञा० १४३। जीवा० ४४४।
अचल-(अयलो) कलाशिक्षायामुदाहरणगत पुरुष। दश० १०९।
अचलेन्द्र-मेरु। आव० ४७।
अचले-अचल, अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्य पंचमाध्ययनम्। अन्त० ३।
अचवचवं-चवचवेतिशब्दरहितम्। प्रश्न० ११२। अचवचवम्। अनुकरणशब्दोऽयम्। भग० २९४। वल्कमिव चर्वयन् न चवचवावेद। ओघ० १८७।
अचवलं-अचपलम्, मानसचापल्यरहितम्। भग० १४०।
अचवलो-अचपल, कायिकादिचापल्यरहित। प्रश्न० ७४। नाऽऽरब्धकार्यं प्रत्यस्थिर, अथवा अचपलो-गतिस्थान-भाषाभावभेदत चतुर्धा। उत्त० ३४६।
अचिअत्तं-अप्रीतिकरम्। दश० २२१।
अचिअत्तकुलं-अप्रीतिकुलम्, यत्र प्रविशद्भि साधुभिरप्रीतिरुत्पद्यते तत्कुलम्। दश० १६६।
अचिअत्ति-य साधुभिरागच्छद्भिर्दु सैनास्ते। ओघ० ९३।
अचिणित्तु-आचित्य, आत्मप्रदेशैं सहोपचित्य। प्रश्न० ९८।
अचित्तं-आयु क्षयेणाचित्त न परसयतार्थम्। बृ० द्वि० १०६ अ। अचित्तम्, दग्धदेशादि। दश० १७८।
अचित्तद्रव्यपरिघून-(अचित्तदव्वपरिज्जुण्ण), जीर्णपटादि। आचा० ३५।
अचित्त-अचित्तमहास्कन्ध। आव० ३५।
अचित्तस्कन्ध-द्विप्रदेशिकादिस्कंध। विशे० ४२४।
अचियत्तं-अचियत्त, स्वचेनमि करोति वाचा न किमपि ब्रूते एष देशीभाषया। बृ० प्र० २४६ अ।
अचियत्तं-अदानशील। ओघ० १५६। अप्रतीति। ओघ० १६९। अप्रीतिकम्। आव० ११९। आव० ११८।
अचियत्ता-न रोचते। ओघ० १५४।

अचियत्ते-अचियत्तः, अनभिमतः। सूत्र० ३३७। अप्रीतिकरः। उत्त० ३४६। अप्रीतिकानि-नास्ति प्रीतिः साधुषु गृहमुपगतेषु येषां तानि। बृ० प्र० २३५ अ।

अचियत्तो-साधुन् प्रत्यप्रीतिमान्। प्रश्न० १२४। अप्रतीत्युत्पादकः। प्रश्न० ६४।

अचियत्तोग्गहो-अप्रीतिकावग्रहः। आव० ३०४। आव० १८९।

अचिरं-स्थानम्, स्थण्डिलम्। आचा० २९४।

अचिरकालकयं-अचिरकालकृतम्, द्विमासिके ऋतौ यदग्न्यादिना प्रासुकीकृतम्। ओघ० १२३।

अचिरवत्तवीवाहे-अचिरवृत्तवीवाहः। सूर्य० २९२।

अचुल्ला-चुल्लीए समीवे। नि० चू० प्र० ३२८ आ।

अचेल-अचेल., अल्पचेलो जिनकल्पिको वा। आचा० २४२। अपगतचेलोऽल्पचेलो वा अचलनस्वरूपो वा। आचा० २४५। यः साधुर्नास्य चेलं-वस्त्रमस्तीति अचेलः, अल्पचेल इत्यर्थः। आचा० २४४। नास्य चेलं-वस्त्रमित्यचेलः। आचा० २४४। षष्ठः परीषहः। आव० ६५६।

अचेलकः-अवमानि, असाराणि लघुत्वजीर्णत्वादिना चेलानि-वस्त्राण्यस्येति। उत्त० ३५९। अविद्यमानचेलकः कुत्सितचेलको वा। उत्त० ५००।

अचोक्खं-अचोक्षम्, अपवित्रम्। जीवा० २८२।

अचोक्षाः-पिशाचभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।

अच्चंतत्थावरा-अत्यन्तस्थावरा, अनादिवनस्पतिकायादुद्वृत्य। आव० ४६५।

अच्चंतिओ-आत्यन्तिकः, सर्वकालभावी। सूत्र० ३९५।

अच्चंतिया-तेन सह तत्प्रचारितुकामा। बृ० तृ० १३२ अ।

अच्चइओ-व्यथितः, पीडितः। दश० ४४।

अच्चणिज्जं-अर्चनीयम्। सूर्य० २६७। चन्दनगन्धादिभिः। औप० ५।

अच्चणिज्जाओ-चन्दनादिना। भग० ५०५।

अच्चणिय-अर्चनिका। आव० ३५०।

अच्चणियवावडा-अर्चनिकाव्यापृता। आव० ८६३।

अच्चंतो-विपुदोवि जं पुर्द ण संभरति संभरतो वा असमत्थे ण वि बुज्झति सो अच्चंतो। नि० चू० द्वि० ८६ अ। अन्तमतिक्रान्तोऽत्यन्तः। उत्त० ६२१। अनादिः। उत्त० ६२१। अतिक्रान्तपर्यन्तम्। उत्त० ६१९।

अच्चल्लीणो-आसण्णं। नि० चू० प्र० १७५ अ।

अच्चल्लूढो-अतीव प्रज्वलिते। नि० चू० प्र० १७५ अ।

अच्चसणे-अत्यशनः, शास्त्रीयद्वादशदिवसनाम। जं० प्र० ४९०।

अच्चा-प्रतिमा। बृ० तृ० २६आ। नि० चू० प्र० ११७ आ। अर्चा, मनुष्यतनुर्भाविनी। औप० ८१। तनुः, शरीरं, पद्मादिका लेश्या वा। सूत्र० २३८। लेश्या चित्तवृत्तिः। सूत्र० २३४।

अच्चासणयाए-अत्यन्तं सततमासनं-उपवेशनं यस्य सोऽत्यासनस्तद्भावस्तत्ता तया। ठाणा० ४४६।

अच्चासणे-अत्यशनः, शास्त्रीयद्वादशदिवसनाम। सूर्य० १४७।

अच्चासाइत्तए-अत्याशातयितुम्, छायाया भ्रंशयितुम्। भग० १७५।

अच्चासायणा-अत्याशातना, किमेभिः कलहशाल्मिरिति। आव० ५८०।

अच्चि-ब्रह्मलोककल्पे विमानविशेषः। सम० १४।

अच्चि-अर्चिः, छिन्नज्वालम्। दश० २२८। मूलाग्निविच्छिन्ना ज्वाला। दश० १५४। अनलविच्छिन्ना ज्वाला। जीवा० १०७।

अच्चिकंतं-अर्चिःकान्तम्, विमानविशेषः। जीवा० १३८।

अच्चिकूडं-अर्चिःकूटम्, विमानविशेषः। जीवा० १३८।

अच्चिज्झयं-अर्चिर्ध्वजम्, विमानविशेषः। जीवा० १३८।

अच्चिप्पभं-अर्चिःप्रभम्, विमानविशेषः। जीवा० १३८।

अच्चिमालि-कृष्णराज्यवकाशान्तरे लोकान्तिकविमानः। सम० १४। भग० २७१।

अच्चिमाली-अर्चिर्मालिः, अर्चिषां माला। प्रज्ञा० १०१। अर्चिर्माली, चन्द्रस्य तृतीयाग्रमहिषी। जं० प्र० ५३२। शक्राग्रमहिषीराजधानी। ठाणा० २३१। सूर्यस्य तृतीयाग्रमहिषी। ठाणा० २०४, भग० ५०५। चन्द्रस्याग्रमहिषी। ठाणा० २०४, भग० ५०५। दक्षिणपूर्वरतिकरपर्वतस्यापरस्यां शक्रदेवेन्द्रस्य शच्या अग्रमहिष्या राजधानी। जीवा० ३६५। अर्चीषि-किरणास्तेषां माला, साऽस्यास्तीति किरणमालापरिवृत इति। जीवा० १८७। चन्द्रस्य सूर्यस्य च ज्योतिषेन्द्रस्य तृतीयाग्रमहिषी। जीवा० ३८४। कृष्णराज्यवकाशान्तरे लोकान्तिकविमानः। ठाणा० ४१२। द्वितीयं लोकान्तिकविमानम्। भग० २७१।

अच्चिरावत्तं–अर्चिरावर्तम्, विमानविशेष । जीवा० १३८ ।
अच्चिरुत्तरावडिंसए–अर्चिरुत्तरावतंसकम्, विमानविशेष । जीवा० १३८ ।
अच्चिलेस्सं–अर्चिर्लेश्यम्, विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।
अच्चिवन्नं–अर्चिर्वर्णम्, विमानविशेष । जीवा० १३८ ।
अच्चिसिंगारं–अर्चि शृङ्गारम्, विमानविशेष । जीवा० १३८ ।
अच्चिसिट्ठं–अर्चि सृ(शि)ष्टम्, विमानविशेष । जीवा० १३८ ।
अच्ची–अर्चि, अनलाप्रतिबद्धा ज्वाला । प्रज्ञा० २९, जीवा० २९ । प्रथम लोकान्तिकविमानम् । भग० २७१ । कृष्णराज्यवकाशान्तरे लोकान्तिकविमान । ठाणा० ४३२ । अर्चि, शरीरस्थरत्नादितेजोज्वाला । औप० ५०, भग० १३२ । विमानविशेष । जीवा० १३८ । स्वशरीरगतरत्नादितेजोज्वाला । जीवा० १६२ । अर्चि, लेश्या । सूत्र० १९० । दाह्यप्रतिबद्धो ज्वालाविशेषोऽर्चि । आचा० ४९ ।
अच्चीकरणं–गुणवण्णण । नि० चू० प्र० १९५ आ ।
अच्चीसहस्समालिणीयं – चन्द्रप्रभाशिबिकाविशेषणम् । आचा० ४२३ ।
अच्चुओ–अच्युत, देवलोकविशेष । आव० ११७ ।
अच्चुत्तवडिंसगं–अच्युतकल्पगतविमानविशेष । सम० ४१ ।
अच्चुदयं–अत्युदकम्, महान् वर्ष । ओघ० ३१ ।
अच्चुयवडिंसए–अच्युतावतंसक, अच्युतदेवलोकस्य मध्येऽवतंसक । जीवा० ३९३ ।
अच्चुया–अच्युता, कल्पोपपन्नवैमानिकभेदविशेषा । प्रज्ञा० ६९ । अच्युत –आयात । ओघ० ५० ।
अच्चुव्वाया–परिश्रान्ता । बृ० द्वि० २११ आ ।
अच्चेइ–अत्येति, अतिकामति । आचा० १४४ ।
अच्छं–ऋक्षम् । आचा० ३३८ । अतिस्वच्छम् । जीवा० १६० । स्फटिकवच्छुद्धम् । जीवा० १२३ । आकाशस्फटिकमदतिस्वच्छम् । प्रज्ञा० ८७ ।
अच्छंद–अच्छन्द, अस्ववश । दश० ९१ ।
अच्छंदो–यथाछन्द, पाषण्डस्थ । आव० १९३ ।
अच्छ–ऋक्ष, प्रसिद्ध । भग० १९०, नि० चू० प्र० १३८ आ । ऋक्ष । भग० ३०९ । ऋक्षा, भल्लभा । जं० प्र० १२४ ।
अच्छउ–तिष्ठतु । दश० ३७ ।
अच्छणं–अवस्थानम् । बृ० प्र० २३६ अ । सन्निधौ आगमनम् । आव० ५२४ ।
अच्छणा–उपविश्यावस्थानम् । बृ० प्र० ११० अ ।
अच्छणए–यत्र स्वाध्यायं कुर्वद्भिरास्यते । ओघ० ९४ ।
अच्छणघरं–अवस्थानगृहकम्, यत्र यदा तदा वाऽऽगत्य बहव सुखासिकयाऽवतिष्ठन्ते । जीवा० २०० ।
अच्छणघरगा–अवस्थानगृहकाणि । जं० प्र० ४५ ।
अच्छणजोए–अक्षणयोग, अहिंसाव्यापार । दश० २२८ ।
अच्छणिउपूरे–सङ्ख्याविशेष । भग० ८८८ ।
अच्छणिउराति–सङ्ख्याविशेष । ठाणा० ८६ ।
अच्छणिउरे–सङ्ख्याविशेष । भग० २१० । भग० ७७५ ।
अच्छणिकुरंगाति–सङ्ख्याविशेष । ठाणा० ८६ ।
अच्छणे–आसने, प्रक्रमादाचार्यान्तरादिसन्निधौ अवस्थाने । उत्त० ५३५ ।
अच्छण्णपडिच्छण्णो–आच्छादितप्रत्याच्छादित । जीवा० १४५ ।
अच्छते–तिष्ठति । आव० ८३२ ।
अच्छभल्ल–ऋक्ष । नि० चू० द्वि० ५८ अ । वनजीवा । (मर०)
अच्छभल्लो–ऋक्ष । नि० चू० द्वि० १२९ अ ।
अच्छरं–आस्तारकम्, आच्छादनम् । जीवा० २१० ।
अच्छरसा–अच्छरसा, अतिनिर्मला । जं० प्र० १९२ ।
अच्छरा–अप्सरा, चप्पुटिका । सूत्र० ३२५ । शक्रस्याग्रमहिषीनाम । भग० ५०५ ।
अच्छराणिवातो–अप्सरोनिपात, चप्पुटिका । प्रज्ञा० ६०० ।
अच्छराते–शक्रस्याग्रमहिष्या राजधानीविशेष । ठाणा० २३१ ।
अच्छरानिवाए–अप्सरोनिपात, तिचश्चप्पुटिका । औप० १०९ । चप्पुटिका । भग० २६९ । जीवा० १०९ ।
अच्छरीयं–आश्चर्यम् । आव० ३९५ ।
अच्छवि–अक्षपि, अशरीर, अव्यथक । भग० ८९२ ।
अच्छवी–अच्छवि, अव्यथक । उत्त० २५७, ठाणा० ३३६ ।

अच्छह-तिष्ठत। ओघ० १५८।
अच्छा-अच्छाः, आकाशस्फटिकवत्। ठाणा० २३२।
अच्छा-अच्छापुरी, वरणजनपदे आर्यक्षेत्रम्। प्रज्ञा० ५५। जनपदविशेषः। प्रज्ञा० ४५। आकाशस्फटिकवदति-स्वच्छा। जं० प्र० २०।
अच्छाडेइ-आच्छादयति। आव० ४३४।
अच्छारियभत्तं-लावकभक्तम्। आव० २०७।
अच्छारिया-लावकम्। आव० २०७। मूल्यप्रदानेन शालि-लवनाय कर्मकराः, अस्तारिका-क्षेत्रे क्षिप्यंते ते। व्य० द्वि० १६९ आ।
अच्छाविज्जइ-स्थाप्यते। आव० ६३३।
अच्छाविओ-स्थापितः। आव० ३५२।
अच्छावेइ-स्थापयति। आव० ६३१।
अच्छि-(रोडए), चतुरिन्द्रियजीवभेदः। उत्त० ६९६।
अच्छि-अक्षी। आव० १९२। बीजप्रदेशस्थानानि यस्याः सा निंदिता। ओघ० २१८।
अच्छिउं-स्थातुम्। उत्त० १५३।
अच्छिक्को-अस्पृष्टः। व्य० प्र० १८६ आ।
अच्छिचमढणं-चक्षुषोर्मोलनम्। बृ० द्वि० २०७ आ।
अच्छिज्जं-आच्छेद्यम्। आचा० ३२९।
अच्छिढोकणियं-अक्षिछादनम्। आव० ५६१।
अच्छिणिउपूरंगे-संख्याविशेषः। भग० ८८८।
अच्छिण्णे-अच्छिन्नः, अव्यवहितः,नान्यैः शब्दान्तरैर्वातादि-कैर्वाऽप्रतिहतशक्तिकः। प्रज्ञा० २९९।
अच्छिद्द-अच्छिद्रम्, अविरलम्, निर्दूषणं वा। भग० १३६।
अच्छिद्दजालो-अच्छिद्रजालः, अङ्गुल्यन्तरालसमुद्गरहितः। जीवा० २७२।
अच्छिद्दे-गोशालकदिशाचरः। भग० ६५९।
अच्छिद्दपाणि-प्रतिमापन्नो जिनकल्पिको वा। आचा० २७७।
अच्छिन्न-अच्छिन्नः, अपृथग्भूतः। ठाणा० ४७२।
अच्छिपत्ताइं-अक्षिपत्राणि, नेत्ररोमाणि। जं० प्र० ८१। जीवा० २३४।
अच्छिफुलयं-अक्षिपुष्पिका। नि० चू० प्र० ७ अ।
अच्छियं-वृक्षविशेषफलम्। आचा० ३४९।
अच्छियाइओ-स्थितवान्। आव० ६८३।
अच्छिरे-चतुरिन्द्रियजीवभेदः। उत्त० ६९६।
अच्छिरोडा-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२। चतुरि-न्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२।
अच्छिवेयणा-अक्षिवेदना, नेत्रपीडा। भग० १५७।
अच्छिवेहए-चतुरिन्द्रियजीवभेदः। उत्त० ६९६।
अच्छिवेहा-चतुरिन्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२।
अच्छिवेहो-अक्षिवेधः, चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।
अच्छुत्ता-उद्धृत्य। नि० चू० द्वि० १४ आ।
अच्छुरंति-आस्तृण्वन्ति। ओघ० ८३।
अच्छुरलभे-प्रचुरलाभे। नि० चू० द्वि० १४ आ।
अच्छुढं-अक्षिप्तम्। ओघ० १६५।
अच्छे-अच्छः, सुनिर्मलः, जाम्बूनदरत्नबहुलत्वात् मेरुनाम। जं० प्र० ३७५। ऋक्षः-अच्छभल्लः। प्रज्ञा० २५३।
अच्छेओ-अच्छेकः, अविकलः। आव० ५२७।
अच्छेज्ज-आसीत। भग० ९०। आच्छेद्य-षट्दशावलदोषे। प्रश्न० १४४।
अच्छेज्जे-आच्छेद्य-बलाद् भृत्यादिसत्कमाच्छिद्य यत्स्वामी साधवे ददाति। ठाणा० ४६०।
अच्छेज्जेइ-भोजनदोषः। भग० ४६६।
अच्छेण्णं-आच्छेद्यं, यदाच्छिद्य भृत्यादिभ्यः स्वामी ददाति। प्रश्न० १५५।
अच्छेरं-आश्चर्यम्। जीवा० २७७।
अच्छेरगा-आश्चर्याणि, अद्भुतानि। ठाणा० ५२३।
अच्छेरियं-आश्चर्यम्, आश्चर्यवस्तु। दश० ५५।
अच्छो-अच्छः, स्वच्छ.। सूर्य० ७८। ऋक्षः। जीवा० ३८। नाखरविशेषः। प्रश्न० ७।
अच्छोड-आच्छोटनम्। ओघ० १३३।
अछिन्नछेयनयाइं-अच्छिन्नच्छेदनयिका-सूत्रविशेषः। सम० १२८।
अजगर-अजगरः, शयुपर्यायः, उरःपरिसर्पविशेषः। प्रश्न० ७। सम० १३५।
अजज्जो-अजय्यः, जेतुमशक्यः। उत्त० १६९।
अजताभासविवज्जी-अयताभाषाविवर्जी, दुष्टवाक्परि-हर्ता। आव० ७७५।

अजयं–अयतम्, अनुपदेशेन। दश० १५६। अणुवएसेण। दश० नू० ७०।
अजय–अयतः, अयतनपरः। ओघ० ३७। तत्तत्पापस्थानेभ्योऽनुपरतः। उत्त० १५४।
अजरणं–अजीर्णम्। आव० १३१।
अजवणिज्जोदए–अयापनीयोदकाः, अयापनीयं–न यापनाप्रयोजनमुदकं येषां ते। भग० ३०६।
अजसो–छायाघातः। बृ० तृ० ९९ अ।
अजहण्णमणुक्कोसे–अजघन्योत्कृष्टः, अजघन्योत्कृष्टस्थितिः। आव० ३३५।
अजाकृपाणीयम्–अवितर्कितसम्भवो न्यायविशेषः। आचा० १८।
अजाणंतिया–अजानती पर्यत् जे होइ पगंयमुद्धा। बृ० प्र० ५८ अ।
अजाणू–अज्ञस्य अज्ञानात् वा व्यावृत्तिः। ठाणा० १७४।
अजाता–उत्तरगुणैश्चाधाकर्मादिभिरशुद्धा। ओघ० १९३।
अजायकप्पिओ–अजातकल्पिको, अगीतार्थः। बृ० प्र० ११२ आ।
अजाया–अजाता, याऽतिरिक्तनिरवद्याहारपरित्यागविषया। आव० ६४१।
अजिओ–अजितः, परीषहोपसर्गादिभिर्न जितः, द्वितीयजिनः, यस्मिन् गर्भे सति माता राज्ञाऽजिताऽतः। आव० ५०२।
अजिणं–अजिनं, चर्म। सूत्र० ३०७, आचा० ७१।
अजिण्णओ–अजीर्णम्। आव० ३५२।
अजिम्हं–अमन्दम्। प्रश्न० ८४।
अजिम्ह–अमन्दे, भद्रभावतया निर्विकारचपले। जं० प्र० ११५।
अजियसंतित्थयं–अजितशान्तिस्तवः। आव० ६३८।
अजियसेणं–ऐरवतावसर्पिणीतीर्थकरः। सम० १५३।
अजियसेणे–अजितसेनः, अज्ञातोदाहरणे कौशाम्बीराजा। आव० ६९९। अतीतोत्सर्पिणीकुलकरः। सम० १५०। अलोभोदाहरणे श्रावस्त्यामाचार्यः। आव० ७०१। वसन्तपुरे नृपः खड्गप्रमादिसैनिकशिक्षकः। प्रश्न० ४४१।
अजियं–अपराजिता (आज्ञा)। आव० ५९६।
अजिया–अभिनन्दनजिनप्रवर्तिनीनाम। सम० १५२।
अजिरं–अङ्गणम्। प्रश्न० १३८।
अजीरं–अजरणम्। ओघ० ६३।
अजीरगं–अजीर्णत्वम्। आव० ६५५।
अजीरय–अजीर्णम्। भग० १९७।
अजीर्णम्–रोगविशेषः। जीवा० २८४।
अजीव–अजीवाः, जीवविपरीतस्वरूपाः। प्रज्ञा० ७।
अजीवअपच्चक्खाणकिरिया – यदजीवेषु–मद्यादिष्वप्रत्याख्यानात् कर्मबन्धनं, सा अजीवाप्रत्याख्यानक्रिया। ठाणा० ४१।
अजीवकरणं–अजीवभावकरणं, परप्रयोगमन्तरेणाभ्रादेर्नानावर्णान्तरगमनम्। आव० ४६४।
अजीवकिरिया –अजीवक्रिया, अजीवस्य–पुद्गलसमुदायस्य यत्कर्मतया परिणमनं सा अजीवक्रिया। ठाणा० ४०।
अजीवणेसत्थिया–अजीवनैसृष्टिकी, यत्तु काण्डादीनां धनुरादिभिः निसर्जनम्। ठाणा० ४३।
अजीवपाउसिया–अजीवप्राद्वेषिकी, अजीवस्योपरि प्रद्वेषाद्या क्रिया प्रद्वेषकरणमेव वा। भग० १८२। अजीवे–पाषाणादौ स्खलितस्य प्रद्वेषात्। ठाणा० ४१।
अजीवपाओगिअं–अजीवप्रायोगिकम्, अजीवप्रयोगेन निर्वृत्तं, जीवप्रायोगिकद्वितीयभेदः। आव० ४५७।
अजीवपारिग्गहिया–अजीवपारिग्रहिकी, पारिग्रहिकीक्रियाया द्वितीयो भेदः। आव० ६१२।
अजीवमिस्सिया–अजीवमिश्रिता, प्रभूतेषु मृतेषु स्तोकेषु जीवत्सु एकत्र राशीकृतेषु–अहो महानयं मृतो जीवराशिरिति भाषा। प्रज्ञा० २५६।
अजीवमीसए–अजीवानाश्रित्य मिश्रमजीवमिश्रं। ठाणा०। ४९०।
अजीवमीसग–अजीवमिश्रा, सत्यामृषाभाषाभेदः। दश० २०९।
अजीववेयारणिया – पुरुषादिविप्रतारणबुद्ध्यैव वाऽजीवं भणत्येतादृशमेतदिति। ठाणा० ४३।
अजीवसामंतोवणिवाइया – अजीवसामन्तोपनिपातिकी, सामन्तोपनिपातिकीक्रियाया द्वितीयो भेदः। आव० ६१३।
अजीवसाहत्थिया–यच्च स्वहस्तगृहीतेनैवाजीवेन–खड्गादिना जीवं मारयति सा अजीवस्वाहस्तिकी। ठाणा० ४२।
अजीवारंभिया – जीवकडेवराणि पिष्टादिमयजीवाकृतींश्च वस्त्रादीन् वा आरभमाणस्य या अजीवारंभिकी। ठाणा० ४१।

अजुतं-अयुतम्, चतुरशीतिरयुताङ्गशतसहस्राणि। जीवा० ३४५।

अजुतंगं - अयुताङ्गम्, चतुरशीतिरर्थनिकुरशतसहस्राणि। जीवा० ३४५।

अजुत्तं-अयुक्तम्, अनुपपत्तिक्षमम्, सूत्रदोषविशेषः। आव० ३७५।

अजुत्तो-अनुपयुक्तः। बृ० तृ० ६ आ।

अजुरणया-शरीरापचयकारिशोकानुत्पादनेन। भग० ३०५।

अजो-अजः, छगलको द्विखुरश्चतुष्पदः। जीवा० ३८।

अजोगवं-अयोगवम्, वैश्याशूद्राभ्यां जातो वर्णः। आचा० ८।

अजोगी-अयोगी, निरुद्धयोगः, शैलेश्यां गतो ह्रस्वपञ्चाक्षरोद्गिरणमात्रकालं यावत्, भूतग्रामस्य चतुर्दशं गुणस्थानम्। आव० ६५०।

अयोनिभूतम्-(अजोणि° उभूए), विध्वस्तयोनि, प्ररोहासमर्थम्। दशा० १४०।

अजोसिया-अजुष्टा, असेविता, क्षयं वा अवसायलक्षणमतीता। सूत्र० ५०।

अज्झंहिज्जो-अवद्य'। आव० ७१५।

अज्ज-अद्य, आरब्धः, आर्यः। उत्त० ३६३। आर्यः-आराम्सर्वहेयधर्मेभ्यो यातः-प्राप्तो गुणैरित्यार्यः। प्रज्ञा० ५। भावाराधनयोगादारायातः सर्वहेयधर्मेभ्य इत्यार्यः। दश० २८४। आर्या-प्रशान्तरूपा चण्डिका। भग० १६४। अद्य-साम्प्रतम्। जं० प्र० २४६, आचा० १५८। आर्यः-(गौतमः)। आचा० १५८। पापकर्मबहिर्भूतत्वेनायाय' '(क्षेत्रादिभेदेन नवधा)। ठाणा० २०८।

अज्जए-हरितविशेषः। प्रज्ञा० ३३।

अज्जकण्हा-आर्यकृष्णाः, आचार्याः। उत्त० १७८।

अज्जकण्हो-आर्यकृष्णः, आचार्य। आव० ३२३।

अज्जकालका-नाम आयरिया। बृ० प्र० ३९ अ।

अज्जकालगायरिय-चतुर्थीप्रवर्तको युगप्रधानः। नि० चू० प्र० ३३९ आ।

अज्जकालगो-आर्यकालकः। आव० ३६९।

अज्जकालय-प्रश्नादृष्टान्तः। (मर०)

अज्जखउडो-विद्यासिद्ध आचार्यः। नि० चू० प्र० ३०४ अ, नि० चू० प्र० २७६ अ, नि० चू० प्र० १६ अ। आर्यखपुटः, विद्यासिद्ध आचार्यविशेषः। आव० ४११।

अज्जगो-आर्यकः, वनस्पतिविशेषः लोके आजओ। जं० प्र० ४२४। प्रत्येकवनस्पतिविशेषः। नि० चू० द्वि० ६० अ।

अज्जगोविंदो-आर्यगोविन्दः, मिथ्योपस्थितायामुदाहरणम्। आव० ८६१।

अज्जचंदणा-आर्यचन्दना, आर्याविशेषः, यस्याः पार्श्वे मृगावत्याः केवलोत्पत्तिः। आव० ४८५, नि० चू० तृ० १३४ आ।

अज्जत्ताए-आर्यतया, पापकर्मबहिर्भूतया अद्यतया वा अधुनातनतया वर्तमानकालतया। भग० ६५६।

अज्जपयं-आर्यपदम्, शुद्धधर्मपदम्। दश० २६९।

अज्जप्पभिई-अद्यप्रभृति, सम्यक्त्वप्रतिपत्तिकालादारभ्याद्य यावत्। आव० ८१९।

अज्जभावे-आर्यभावः क्षायिकादिज्ञानादियुक्तः। ठाणा० २०९।

अज्जमंगू-आर्यमङ्गु', ऋद्धिरससातगौरवदृष्टान्ते मथुरायामाचार्यः। आव० ५७५। अवसन्नाचार्य। नि० चू० प्र० ३५१ अ। आचार्यातिभेदकः दुर्बलाऽऽचार्यः। व्य० द्वि० १७४ आ।

अज्जमणग-आर्यमणकः, आर्यश्चासौ मणकश्चेति विग्रहः, यस्मार्थेदशवैकालिकस्याऽपेता। दश० २८४।

अज्जमहागिरि-स्थूलभद्रदत्तगणधारकाचार्य। नि० चू० प्र० २४३ अ।

अज्जमहागिरी-आयरिओ। नि० चू० तृ० ४४ आ।

अज्जमूलं-आर्यमूलम्, मानामहपादमूलम्। आव० ६८४।

अज्जय-आर्यक', पिता। उत्त० ९८। आव० ३०५। भग० ४७०। आव० ३५७।

अज्जयमंजरी-आर्यमञ्जरी। आव० १२५।

अज्जरक्खितो-सागरकानुशाष्टदाचार्यः। नि० चू० द्वि० १०९ अ।

अज्जरक्खिय-गोष्ठामाहिलप्रव्रयकाचार्य। नि० चू० प्र० ३३५ आ, १०१ आ। उज्जयिन्यामभेलकार्य। (मर०)। 'आर्यरक्षित'। विशे० १००० । आचार्यविशेष। व्य० द्वि० ३१९ अ।

अज्जव-आर्जवम्, परस्मिन्निकृतिपरेऽपि मायापरित्याग। दश० २६१।

अज्जवइरसामि-आर्यरक्षितविद्यागुरु । नि० चू० प्र० १०१ आ।

अज्जवइरा-आर्यवैरा। विशे० ९२८। आर्यवज्र, वात्सल्योदाहरणे आर्य । दश० १०३।

अज्जवइरो-आर्यवैर । आव० २८५। आर्यवज्र, युगप्रधान ।आव० ३०२। आर्यवैर, चैत्यभक्तिद्वारे आचार्य । आव० ५३६।

अज्जवट्ठाणा-आर्जवम्, संवरभेदा । ठाणा ३०२।

अज्जवे-आर्जवम्, ऋजुता योगसङ्ग्रहे दशमो योग । आव० ६६४।

अज्जसमिओ-आर्यसमित, सुनन्दाभ्राता। आव० २८९। आर्यसमित । उत्त० ३३३।

अज्जसमिया-आर्यसमिता, वज्रस्वामिनो मातुला । आव० ४१२।

अज्जसमुद्दा-आचार्यातिशेषानतिसेवि। व्य० द्वि० १४७ अ। नि० चू० प्र० ११९ अ।

(अज्जसा)-अञ्जसा, प्रगुणेन न्यायेन । विशे० ७७९।

अज्जसामस्स-आरात्सर्वहेयधर्मेभ्यो यात -प्राप्तो गुणैरित्यार्य स चासौ श्यामश्च आर्यश्याम, तस्मै । प्रज्ञा० ५।

अज्जसुनन्दा-आर्यसुनन्दा । उत्त० ३२१।

अज्जसुहत्थी-आर्यसुहस्ती, योगसंग्रहेऽनिश्रितोपधानदृष्टान्ते आर्यस्थूलभद्रस्य लघु शिष्य । आव० ६६८। स्थूलभद्रदत्तगणधारकाचार्य । नि० चू० प्र० २४३ अ। आयरिओ। नि० चू० तृ० ४४, वृ० द्वि० १५३ आ।

अज्जसुहम्मे-आर्यसुधर्मा, महावीरस्यान्तेवासी स्थविर । प्रश्न० १।

अज्जहिज्जो-अयच्च (ध)। आव० ६९२।

अज्जा-तुलसीसमो वनस्पतिविशेष । भग० ८०२। मुनिसुव्रतजिनप्रवर्तिनीनाम। १५२। आर्या, सप्तचतुरस्र गणादिव्यवस्थानिबद्धा मात्राछन्दोरूपा। जं० प्र० १३८।

अज्जाकप्पं-आर्यानीतम् । (गणि०)

अज्जाघरे-आर्यागृहे । ठाणा० ३७०।

अज्जावेयव्वा-आज्ञापयितव्या । आचा० १७८।

अज्जासाढो-आर्याषाढ, स्थिरीकरणोदाहरणे उज्जयिन्यामार्याषाढ ।दश० १०३। वत्सभूम्यामाचार्यविशेष । उत्त० १३३। आचार्य । आव० ३१५।

अज्जिए-आर्यिका, आर्यिका मातु पितुर्वा माता। दश० २१६।

अज्जिया-पितामही मातामही वा। वृ० द्वि० ५८ आ। माउ पिउ वा जा माता सा। दश० चू० १०० ।

अज्जिया-आर्यिका । आव० ७९३।

अज्जियालाभो-आर्यिकालाभ, आर्यिकाभ्यो लाभ.। आव० ५३५।

अज्जुण-अर्जुन, वृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३२। अर्जुनाभिधानं यत्पाण्डुरस्वर्णम्। जं० प्र० २४१। बहुबीजविशेष । भग० ८०३। नीरविशेष । व्य० द्वि० १३० आ। तृणविशेष.। प्रज्ञा० ३३।

अज्जुणए-अर्जुनक, राजगृहे मालाकारविशेष । अन्त० १८।

अज्जुणओ-अर्जुनक, राजगृहे मालाकार । उत्त० ११२।

अज्जुणगस्स-अर्जुनक, गोशालपरावर्तिस्थानम्। भग० ६७४।

अज्जुणमालार-अर्जुनमालाकार, आक्रोशगह । (मर०)

अज्जुणसुवण्णं-अर्जुनसुवर्ण, श्वेतकाञ्चनम्। औप० ११५।

अज्जुणस्स-गौतमगोत्रो गोशालगृहीतशरीर । भग० ६७३।

अज्जुण्णो-अर्जुन, सुघोषनगरनृपति । विपा० ९५।

अज्जुन्ने-गोशालकदिशाचर । भग० ६५०।

अज्जे-आर्य । उत्त० २८९। अय, आर्य, स्वामिन। भग० १०६।

अज्जो-आर्य, पितामह, तीर्थंकराणाम् प्रथम। आव० १६८। आर्य । आव० ७९३। श्रीवर्द्धमानस्वामी। जं० प्र० ५४१।

अज्जोत्ति-आरात्पापकर्मभ्यो याता आर्यास्तदामन्त्रणं हे आर्या। ठाणा० १३५।

अज्जोरुह-हरितविशेष । प्रज्ञा० ३३।

अज्झत्त-अध्यात्मम्, चेत । दश० १६।

अज्झत्थं-अध्यात्मम्, सुखदु खादि। आचा० ७६। आत्मविषय । जीवा० २४३। आत्मस्था मिथ्यात्वादय । उत्त० ४०२। अन्त करणम्। आचा० २१०। अध्यात्मम्। आचा० २०८। अध्यात्मक्रिया-यत्केनापि कथमनाघ्नपरिभूतस्य दौर्मनस्यकरणम्। ठाणा० ३१६। अध्यात्म-परिणाम.। व्य० प्र० १८१आ। अध्यात्मम्-मन । ठाणा० ५।

अज्झत्थदंडे-अध्यात्मदण्डः, शोकाद्यभिभवः। प्रश्न० १४३।
अज्झत्थनिप्फन्नं-अध्यात्मनिष्पन्नम्, अध्यवसानोद्गतम्। दश० २२६।
अज्झत्थवयणं-अध्यात्मवचनम्, अभिप्रेतमर्थं गोपयितुकामस्य सहसा तस्यैव भणनम्। प्रश्न० ११८। यदन्यच्चेतसि निधाय विप्रतारकबुद्ध्याऽन्यद् विभणिषुरपि सहसा यच्चेतसि तदेव ब्रूते तत्। प्रज्ञा० २६७, आचा० ३८७।
अज्झत्थिए-अध्यात्मिकः, अभ्यर्थितः। विपा० ३८। अध्यात्मिकः-आत्माश्रितः। भग० ४६३। आध्यात्मिक-क्रियास्थानविशेषः। सम० २५।
अज्झत्थिओ-आध्यात्मिकः, आत्मविषयः, सङ्कल्पविशेषः। जीवा० २४३।
अज्झत्थियं-अध्यवसितं, सङ्कल्पम्। आव० ६६९। आध्यात्मिकं-अन्तःकरणोद्भवम्। सूत्र० ३११।
अज्झत्थीओ-अध्यात्मस्थः। आव० ६४९।
अज्झत्थेव-अध्यात्मन्येव, ब्रह्मचर्ये व्यवस्थितः। आचा० २०८।
अज्झत्थो - आध्यात्मिकः, आत्मन्यध्यात्मं - तत्रभवः दण्डविशेषः। सूत्र० ३०६।
अज्झप्पं-अध्यात्मं, सद्भावनारूढं चित्तमेव। प्रश्न० १३४। आध्यात्मिकं, आत्मन्यधीत्यध्यात्मं तत्र भवम्। आन्तरशक्तिजनितं सात्त्विकं। सूत्र० १६७। आत्मानमधिकृत्यात्मालम्बनम्। प्रश्न० १२८। मनः। सूत्र० ६५। अधि आत्मनि वर्त्तते इति अध्यात्मं-ध्यानम्। आव० ७७४। स्थितो मनः। उत्त० ७। आत्मनि। उत्त० ६१८। चेतः। आव० ५२५। धर्मध्यानादिकम्। सूत्र० २६९। मनः। आचा० २१९। आत्मनि। उत्त० ४६५। मनः। उत्त० ५९१।
अज्झप्पजोग-अध्यात्मयोगः। (महाप्र०)
अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते - अध्यात्मयोगसाधनयुक्त, अध्यात्मं-मनस्तस्य योगा - व्यापारा धर्मध्यानादयस्तेवो साधनानि एकाग्रतादीनि तैर्युक्तः। उत्त० ५९१।
अज्झप्पज्झाणं-अध्यात्मध्यानं, अमुकोऽहं अमुककुले अमुगसिस्से अमुगपव्वज्जाणठिइए न य तव्विराहणेयादिरूपम्। प्रश्न० १२८।
अज्झप्परए-अध्यात्मरतः, प्रशस्तध्यानासक्तः। दश० २६७।
अज्झप्पसंवुडे-अध्यात्मसंवृतः, स्त्रीभोगादपगतमनाः सूत्रार्थोपयुक्तनिरुद्धमनोयोगः। आचा० २१९।
अज्झप्पे-अध्यात्मनि, आन्तरम्। सूत्र० २३०।
अज्झयणं-अध्ययनम्, विशिष्टार्थध्वनिसन्दर्भरूपम्। जीवा० ४। ठाणा० ६। पाठः। आव० ७३२, विशे० ४५०। सज्झाओ। दश० चू० १२५। स्वस्वभावे आनीयतेऽनेनेति आनयनं प्रस्तावादात्मनः, निरुक्तविधिना। उत्त० ६। निरुक्तविधिनाऽर्थनिर्देशपरत्वाद्वाऽस्य अयतेरेतेर्वाऽधिपूर्वस्य। उत्त० ७। नाम। सूर्य० ९, १४६। आव० ७१९। अध्यात्मानयनाच्चेतसो विशुद्धयापादनात्। दश० ११८। अनेन करणभूतेन साधुर्बोधसंयममोक्षान् प्रत्यधिकं गच्छति यस्मादेवं तस्मादध्ययनम्। दश० १६। अध्यात्मानयनं, अधिगम्यन्ते परिच्छिद्यन्ते वा अर्था अनेनेत्यधिगमनमेव प्राकृतशैल्या तथाविधार्थप्रदर्शकत्वाच्चास्य वचसोऽध्ययनमिति, अधिके नयनमधिकनयनं चाध्ययनम्। दश० १६। अध्यात्मानयनं-अध्ययनश्रुतनाम। दश० १६। शास्त्रम्। दश० २८४।
अज्झयणछक्कं-अध्ययनषट्कं। विशे० ४१५।
अज्झल-म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५।
अज्झवसाए-अध्यवसायः, सूक्ष्मो मनःपरिणामस्तद्रूपः। आचा० ६८। सूक्ष्म आत्मनः परिणामविशेषः। आचा० ३१।
अज्झवसाणं-अध्यवसानं, अन्तःकरणप्रवृत्तिः। सूत्र० ३४०। मनोविशेषः। औप० ९९। जीवा० १३०। अन्तःकरणसव्यपेक्षम्। आव० १८४। रागस्नेहभयभेदानि अध्यवसानानि। आव० २७२। अध्यवसायाः। प्रज्ञा० ५४३। श्रवणविधिक्रियाप्रयत्नविशेषरूपम्। औप० ६०। मन एकाग्रतालम्बनम्। आव० ५८३। रागस्नेहभयात्मकोऽध्यवसायः। ठाणा० ४००। विशे० ८४३।
अज्झवसाणावरणिज्जाणं-भावचारित्रावरणीयानि। भग० ४३३।
अज्झवसाणेहिं-अध्यवसानैः, मनःपरिणामैः। जै० प्र० २०९।
अज्झवसिए-अध्यवसितम्, परिभोगक्रियासंपादनविषयम्। भग० ८९। अध्यवसानम्, प्रयत्नविशेषः। भग० ८९।
अज्झवसियं-अध्यवसितं, क्रियासंपादनविषयम्। औप० ६०

अज्झयस्संति-अध्यवस्यन्ति। दश० ३५।

अज्झाइत्तं-अधीतम्। आव० ३४७।

अज्झाय-अध्ययनम्। विशे० ५०६। अध्यायः। भग० ४। वस्तूनां मनःपीडानां वा आयः। भग० ४। पाठः। उत्त० ७११। शास्त्रोऽंशविशेषः। आव० ६८। अध्ययनानि। उत्त० ७१२।

अज्झारुहो-अध्यारुहः, वृक्षयोनिकेषु वृक्षेषु कर्मोपादाननिष्पादितेषु उपर्युपरि अध्यारोहतीति, वृक्षोपरिजातो वृक्षः, यद्वीशाभिधानः कामवृक्षाभिधानो वा वृक्षः। सूत्र० ३५२।

अज्झायमित्त-अध्युष्येति। ठाणा० ३५१।

अज्झियगं-उपधानितकं। बृ० तृ० ७४ आ।

अज्झीणं-अक्षीणम्। विशे० ४५०। अक्षीणधुननाम। दश० १६। यदीयमाने न क्षीयते स्मः तद् अक्षीणम्। ठाणा० ६।

अज्झुववातो-अगमगमणामवणे वि (आगमितः)। नि० चू० द्वि० ७१ आ।

अज्झुसिरं-अशुषिरम्-अग्रथिता दशिका निघता च। ओघ० २१४।

अज्झुसिरे-तृणादिरहिते न। ओघ० १२३।

अज्झुसिरो-शुषिरतानिरहितः प्रतिस्थिरगन्तरहितो वा। बृ० द्वि० २५२ आ।

अज्झोभर-अध्यवपूरकम्, स्वार्थमूलाद्रहणप्रक्षेपरूपम्। दश० १७४। नि० चू० प्र० १४७ आ।

अज्झोयरए इ-भोजनदोषः। भग० ४६६। स्वार्थमूलाद्ग्रहणे गतार्थे कणप्रक्षेपमध्यवपूरक। ठाणा० ४६०।

अज्झोवगमियाए-आभ्युपगमिकी, प्रव्रज्याप्रतिपत्तितो ब्रह्मचर्यभूमिशयनकेशलुञ्चनादीनामङ्गीकारेण निर्वृत्ता वेदना। भग० ६५।

अज्झोववज्जंति-अध्युपपद्यन्ते-तदेकचित्ता भवन्तीति तदर्जनाय धाविकत्वेनोपपद्यन्ते उपपन्ना घटमानाः। ठाणा० २९२।

अज्झोववज्जणं-अध्युपपादनं, कर्णेन्द्रियार्थेऽध्युपपत्तिरभिष्वङ्गः। ठाणा० १३४।

अज्झोववज्जिज्ज-अध्युपपद्येत, अभिष्वङ्गं कुर्यात्। दश० ४९।

अज्झोववण्णं-अध्युपपन्नः, तिरस्करोऽत्यासक्तोऽसि। आचा० ७८।

अज्झोववण्णो-अध्युपपन्नः, आसक्तः। ओघ० ११४। अध्युपपन्नः। आव० ३५९, ९२।

अज्झोववन्ने-अध्युपपन्नः, आसक्तः। दश० ४५। अनप्राप्तविषयाकाङ्क्षाधिकतेयासक्तः। भग० ६५०।

अज्झोववन्नो-अध्युपपन्नः, तदेकाग्रो गतः। भग० २९२। मूर्च्छितः। विपा० ३८।

अज्झोववन्नो-अध्युपपन्नः। आव० ३९९।

अज्झोववाय-अध्युपपातः, प्रार्थकामनिरता। प्रश्न० १५३।

अज्झोवाल-अध्युपपातः-श्रद्धा। व्य० प्र० २१७ आ।

अझंझपत्ते-अझञ्झाप्राप्तः, अकलहप्राप्तः कलहरहितः। सूत्र० २३४। वीतरागः। सूत्र० २३७।

अनालोऽन्ध्यवृत्ति-(अकाउस्सग्गेणं), कृत्वे कृत्वे भिक्षाम्। उत्त० ४०४।

अज्ञानम्-अनाभोगः, अननुस्मरणं वा। दश० १०१।

अट्टं-आर्तम्, शरीरादपचयाय। दश० चू० १४। कलहपीडितस्येदं चलनमिति कृत्वा। आर्तशब्दस्य योऽर्थनाम। प्रश्न० ७६। आर्तध्यान - शोकाक्रन्दनविलपनादिलक्षणं ध्यानम्। आव० ५८२।

अट्टहासं-अट्टहासम्। आव० १९१।

अट्टहासो-अट्टहासः। आव० ८३०।

अट्टणसाला-व्यायामशाला। भग० ५४२। अट्टनशाला। औप० ६५।

अट्टणे-अट्टनः, सोमगद्रूमहे आलोचनार्थमट्टने उज्जयिन्या मल्लनिपेः। आव० ६६४।

अट्टणो-अट्टनः, उज्जयिन्यां जितशत्रुराजमल्लः। उत्त० १९२।

अट्टदुहट्टयसट्टे-आर्तदुःखार्तवशार्तः। उत्त० ३३१।

अट्टदुहट्टा-आर्तदुःखार्दिताः, आर्तदुःखार्ताः। आव० ३९५।

अट्टदुहट्टो-आर्तदुःखार्तः। आव० २८८।

अट्टनियट्टियचित्ता-आर्तनिर्वर्तितचित्ताः, आर्ते निर्वर्तितं चित्तं यैस्ते तथा, आर्तेन वा निर्वर्तितं चित्तं येषां ते। भग० १२१।

अट्टमगा-अभिमारका। नि० चू० द्वि० ११ अ।

अट्टमट्टाइ-अर्दवितर्द। उप० गा० ४८६।

अट्टयमट्टा-आर्तवशार्ता। आव० ३८८।

अट्टहासं-अट्टहासम्। आव० ६३४।

अट्टा-आर्ताः, दुखिनः रागद्वेषोदयेन। आचा० १८३।

अट्टाल-प्राकारसम्बन्धिन्यट्टालाः। आचा० ४११।

अट्टालकं-प्राकारकोष्ठकोपरिवर्त्ति आयोधनस्थानम्। उत्त० ३११।

अट्टालक-अट्टालकः, प्राकारस्योपरि मृत्याश्रयविशेषः। जीवा० १५९।

अट्टालका-प्राकारस्योपर्याश्रयविशेषाः। सम० १२७।

अट्टालगं-अट्टालकं। जीवा० १६९।

अट्टालग-अट्टालकः, प्राकारोपरिवर्त्ती आश्रयविशेषः। प्रश्न० ८। अट्टालकम्, प्राकारोपर्याश्रयविशेषः। भग० २३८।

अट्टालगा-पागारस्स अट्टे अट्टहरगो मग्गो। नि० चू० प्र० २६५ अ।

अट्टालगो-अट्टालकः, प्राकारस्योपरि मृत्याश्रयविशेषः। जीवा० २५८।

अट्टालयं-अट्टालकं। आव० ६७५।

अट्टालय-अट्टालकाः, प्राकारस्योपरिवर्त्याश्रयविशेषाः। जं० प्र० ७६, १०६। औप० ३। प्राकारस्योपरि मृत्याश्रयविशेषाः। प्रज्ञा० ८६। प्राकारस्योपर्याश्रयविशेषः। जीवा० २७९।

अट्टालयसंठिओ-अट्टालकसंस्थितः। जीवा० २७९।

अट्टे झाणे-ध्यानस्य प्रथमो भेदः। भग० ९२३।

अट्टो-आर्त्तः, मनसा। विपा० ८१।

अट्ठ-अर्थः। आव० ७९३।

अट्ठ-अर्थान्, धर्मादीन्। जं० प्र० ९८। अर्थाय। उत्त० २६०।

अट्ठकरणं-अर्थकरणं, अर्थाभिनिर्वर्तकमधिकरण्यादि येन द्रम्मादि निष्पाद्यते। अर्थार्थं वा करणं, यत्र राज्ञोऽर्थाधिन्यन्ते। अर्थ एव वा तैस्तैरुपायैः क्रियत इति। उत्त० ११५।

अट्ठखंभसतसंनिविट्ठा-अष्टोत्तरस्तम्भशतसन्निविष्टा, सभाविशेषः। आव० ३४२।

अट्ठग-अष्टकः। औप० १४४। अष्टकम्-चतुर्विंशत्यधिकशततमकभागाष्टकप्रमाणम्। सूर्य० २१८।

अट्ठगुणाए-अष्टगुणया। आव० ६३।

अट्ठगुणे-अष्टगुणाः। ठाणा० ३६४।

अट्ठजायं-अर्थकार्यां अर्थिकायां अर्थप्रयोजनां वा। बृ० तृ० २४२ अ।

अट्ठजुत्तं-अर्थयुक्तं-अर्थते-गम्यत इत्यर्थस्तेन युक्तमन्वितम्। उत्त० ४६।

अट्ठट्ठमियं-अष्टाष्टमिका, भिक्षुप्रतिमाविशेषः। अन्त० २९।

अट्ठट्ठमिया-अष्टावष्टमानि। सम० ७७। अष्टावष्टमम्। ठाणा० ४४०।

अट्ठपयंति-अनुभागसंक्रमस्वरूपनिर्द्धारणम्। ठाणा० ३२२।

अट्ठपिट्ठपुट्ठा(निट्ठिया)-अष्टवारपिष्टप्रदाननिष्पन्ना। जीवा० ३५१।

अट्ठपिट्ठणिट्ठिया-अष्टपिष्टनिष्ठिता, अष्टभिः शास्त्रप्रसिद्धैः पिष्टैर्निष्ठिता। प्रज्ञा० ३६४।

अट्ठफास-अष्टस्पर्शम्, बादरपरिणामम्। भग० ९६।

अट्ठभाइया-अष्टमभागमात्रो मानविशेषः। भग० ३१३।

अट्ठट्ठमंगलय-अष्टमङ्गलकानि, अष्टेति संख्याशब्दः, अष्टमङ्गलकानीति चाखण्डः संज्ञाशब्दः। जं० प्र० ११२।

अट्ठमभत्तं-अष्टमभक्तम्, त्रिरात्रोपवासः। आव० २२८। समयपरिभाषयोपवासत्रयं, यद्वाऽष्टमभक्तमिति सान्वयं नाम, तथैवम्-एकैकस्मिन् दिने द्विवारभोजनौचित्येन दिनत्रयस्य षण्णां भक्तानामुत्तरपारणकदिनयोरेकैकस्य भक्तस्य च त्यागेनाष्टमं भक्तं त्याज्यं यत्र। जं० प्र० १९७। उपवासत्रयस्य संज्ञा। जं० प्र० ११८।

अट्ठमभत्तिआ-अष्टमभक्तिका, दिनत्रयमनाहारिणः। जं० प्र० २३९।

अट्ठमेणं-अष्टमेन, उपवासत्रयलक्षणेन। जं० प्र० १९१।

अट्ठय-तत्ते। आव० ६४३।

अट्ठरससंपउत्त-अष्टभी रसैः शृङ्गारादिभिः सम्यक् प्रकर्षेण युक्तम्। जं० प्र० ३९।

अट्ठसइआदि-अर्थगतानि यानि गतिग् ता अर्थगतिकान्नामिः, अथवा अर्थाना-इष्टकार्याणां दानानि याभ्यस्ता अर्थदानाम्ना स्वार्थनाशिकाः। जं० प्र० १४१, भग० ४८२।

अट्ठसते-अष्टशते। आव० १४२।

अट्ठसयं-अष्टाधिकं शतम्। जं० प्र० ६०।

अट्ठसयंसिओ-अष्टशताश्रिः। आव० १४१।

अट्ठसहस्सं-अष्टसहस्रम्, अष्टोत्तरं सहस्रम्। जं० प्र० ४१०।

अट्ठसहस्सवरकंचणसलागा-अष्टौ सहस्राणि-अष्टसहस्रसङ्ख्याका वरकाञ्चनशलाका-वरकाञ्चनमय्यः शलाका येषु तानि। जं० प्र० ५९।

अट्ठसिरे-अष्टशिराः, अष्टकोणः। औप० १०।

अट्ठसोयण्णिअं-अष्टसुवर्णा मानमस्येत्यष्टसौवर्णिकं, सुवर्णमानमिदम्-चत्वारि मधुरतृणफलान्येकः श्वेतसर्षपः, षोडश श्वेतसर्षपा एकं धान्यमाषफलं, द्वे धान्यमाषफले एका गुञ्जा, पञ्च गुञ्जा एकः कर्ममाषकः, षोडश कर्ममाषकाः एकः सुवर्णः। जं० प्र० २२६।

अट्ठा-अर्थक्रिया, अर्थाय यत्करणम्, क्रियायाः प्रथमो भेदः। आव० ६४८।

अट्ठाणं-अस्थानम्, अयुक्तं, असाम्प्रतं वा। सूत्र० १६०। शब्दप्रतिबद्धावसतिः। बृ० तृ० १९७ आ।

अट्ठाणट्ठवणा-अस्थानस्थापना-गुर्ववग्रहादिके अस्थाने प्रत्युपेक्षितोपधेः स्थापनं-निक्षेपः। ठाणा० ३६२।

अट्ठादंडे-अर्थाय-शरीरस्वजनधर्मादिप्रयोजनाय दण्डः-त्रसस्थावरहिंसा। सम० २५।

अट्ठापय-(अष्टापदः) पर्वतविशेषः। आव० ८२७।

अट्ठापदं-अर्थापदम्। आव० ३५२।

अट्ठारसवंको - अष्टादशवक्रः, अष्टादशसरिको हारः। आव० ६८१।

अट्ठारसवंजणाउलं-अष्टादशव्यञ्जनाकुलम्। सूर्य० २९३। ठाणा० ११७।

अट्ठावए-अष्टापदम्, द्यूतम्, अर्थपदं वा। दश० ११२।

अट्ठावओ-पर्वतविशेषः। आव० १४८।

अट्ठावयं-अष्टापदम्। जीवा० २७६। अर्थपदम्। आव० ४१२। शारिफलकद्यूतं तद्विषयकलाम्। जं० प्र० १३७। द्यूतफलकम्। प्रश्न० ८४। पर्वतविशेषः। आव० १५१। द्यूतक्रीडाविशेषः। सूत्र० १८१। द्यूतफलकं, कैलाशः पर्वतविशेषो वा। प्रश्न० ७०। अष्टापदः, पर्वतविशेषः। आव० ८२७। द्यूतफलकम्। जं० प्र० ११४।

अट्ठावयसेलसिहरंसि - अष्टापदशैलशिखरे। जं० प्र० १५८।

अट्ठाहिअं-अष्टाह्निकाम्, अष्टानामह्नां-दिवसानां समाहारोऽष्टाहं तदस्ति यस्यां महिमायां सा अष्टाहिका ताम्। जं० प्र० १६३।

अट्ठाहिया-अष्टाहिका, महामहिमाविशेषः। जीवा० ३६५। जं० प्र० ४२३।

अट्ठि-अस्थि, बीजकम्। प्रश्न० ८, भग० १३५।

अट्ठिकच्छभा-ये अस्थिबहुलाः कच्छपास्ते अस्थिकच्छपाः। प्रज्ञा० ४४।

अट्ठिकच्छभो-अस्थिकच्छपः, कच्छपविशेषः। जीवा० ३६।

अट्ठिकरकम्-तन्दुलोदकम्। दश० १७७।

अट्ठिखंडं-अस्थिखण्डं। आव० ३६९।

अट्ठिग-अस्थिकम्-बीजकम्। भग० ३०८।

अट्ठिचम्मावणद्धे-अस्थिचर्मावनद्धम्, अस्थीनि चर्मावनद्धानि यस्य। भग० १२५।

अट्ठिज्झामे - अस्थिध्यामम्, अस्थि च तद्ध्यामं च-अग्निना श्यामलीकृतं-आपादितपर्यायान्तरम्। भग० २१३।

अट्ठितग्गामं-अस्थिकग्रामम्, पूर्वं वर्द्धमानकनामकम्। आव० १८९।

अट्ठिभंजणं-अस्थिभञ्जनम्, कीकसामर्दनम्। प्रश्न० ५२।

अट्ठिमिंज-अस्थिमिञ्जः-त्रीन्द्रियजीवविशेषः। उत्त० ६९७।

अट्ठिमिंजा-अस्थिमिञ्जा, अस्थिमध्यम्। सूत्र० ४०८। भग० ५२६।

अट्ठिय-आर्थिकः, अर्थ्यत इत्यर्थः-मोक्षः, स प्रयोजनमस्येति अर्थः स एव प्रयोजनमस्योऽस्यास्तीति। उत्त० ६५।

अट्ठियकट्ठिये-अस्थिकाष्ठोत्थितम्। उत्त० ३३९।

अट्ठियगामं-अस्थिकग्रामं-श्रीवीरस्य प्रथमचातुर्मास्यग्रामः। भग० ६६१।

अट्ठिलग्गो-मुष्टिं कृत्वा। आव० ६९०।

अट्ठिल्लगो-अस्थि (बीजम्)। नि० चू० प्र० ५६ आ।

अट्ठिसरक्खा-अस्थिसरजस्का-कापालिकाः। व्य० द्वि० २७३ आ।

अट्ठिसेणा-वत्सगोत्रान्तर्गतं गोत्रम्। ठाणा० ३९०।

अट्ठि-अस्थि-मज्जा। अनुत्त० ५। गृहस्थकया। नि० चू० द्वि० १७२ अ।

अट्ठुप्पत्ती-ववहारे। नि० चू० तृ० १०१ अ।

अट्ठे-अर्थः, भाव.। भग० ३४।

अट्टेति–निवसति । नि० चू० द्वि० ६२ आ।

अट्ठो–अर्थित्वं च धर्मः। आव० ३४१। अर्थ–विज्ञानम्। सूत्र० ३९८। अर्थेन द्रव्यर्थो मोक्षः। उत्त० ६५।

अट्ठियकप्पा–मध्यमजिनानां महाविदेहजिनानां वा साधवः। बृ० तृ० २५४ आ।

अडंडिमकुदंडिमं–अदण्डिमकुदण्डिमम्, दण्डो निग्रहस्तेन निर्वृत्तं राजदेयतया व्यवस्थापितं दण्डिमं, कुदण्डः–अस-म्यग्निग्रहस्तेन निर्वृत्तं द्रव्यं कुदण्डिमं, ते अविद्यमाने यत्र प्रमोदे सः। विपा० ६३।

अडड–चतुरशीतिरडडाङ्गशतसहस्राणि। जीवा० ३४५।

अडडंगं–अडडाङ्ग, चतुरशीतिस्त्रुटितशतसहस्राणि। जीवा० ३४६। संख्याविशेषः। ठाणा० ८६। भग० ८८८। अडडाङ्गः, संख्याविशेषः। सूर्य० ९१।

अडडाति–संख्याविशेषः। ठाणा० ८६।

अडडे–अडडः, संख्याविशेषः। सूर्य० ९१। भग० २१०, २७५, ८८८।

अडयालं–अष्टचत्वारिंशत्, प्रशस्तं वा। जीवा० १६०। अडयालशब्दो देशीवचनत्वात् प्रशंसावाची। प्रज्ञा० ८६। देशीशब्दः प्रशंसावाची अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविच्छित्तय कृता वनमाला येषु तानि। जं० प्र० ७६।

अडयालकोट्ठगरइय–अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविचित्रच्छन्दगोपुररचितानि। सम० १३८।

अडयालकोट्ठरइयं–अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितम्, अष्ट-चत्वारिंशद्भेदभिन्नविच्छित्तिकलिताः कोष्ठकाः–अपवरका रचिताः–स्वयमेव रचनां प्राप्ता येषु तत्। प्रशस्तकोष्ठक-रचितं वा। जीवा० १६०।

अडयालिय (ल)–शब्दः किल प्रशंसावाचकः। सम० १३८।

अडविंगतो–देशं देशेन हिंडइ। व्य० प्र० १६२ अ।

अडविणीहुत्तं–अटवीनिःसृतम्, अरण्याभिमुखम्। उत्त० ३७५।

अडविमिगी–अटवीमृगी। आव० ३६२।

अडवी–अटवी, अटव्यो–दूरतरजननिवासस्थाना भूमयः। जं० प्र० ६६।

अडिला–चर्मपक्षिविशेषः। जीवा० ४१। अडिला, चर्म-पक्षिविशेष। प्रज्ञा० ४९।

अडुयालित्ता–आर्थित्य, बलात्कारं कृत्वा। दश० ३८।

अडेइ–चलापयति, लगयति। आव० ६९०।

अडो–लोमपक्षिविशेषः। जीवा० ४१।

अडोलिया–यवोनाम राजा तस्य दुहिता। बृ० प्र० १९१ अ। उद्दोद्दयाए। बृ० प्र० १९१ अ।

अड्ड–तिर्यग्वलितम्। जीवा० २०७। तिर्यक्। आव० ३६०।

अड्डपल्लाणं–लाटविषये प्रसिद्धम्, यदन्यविषये खिल्लीरिति रूढम्। जीवा० २८२।

अड्डया–वंशिका। नि० चू० प्र० १६७ अ। खिल्ली। भग० ३९९।

अड्ढवियड्ढं–अर्धवितर्धम्–क्रमहीनम्। ओघ० १७७। विप्र-कीर्णम्। नि० चू० तृ० १३ अ।

अड्ढवियड्ढा–अक्रमम्। ओघ० १७६।

अड्ढिया–अड्डिका, द्वात्रिंशत्, लौकिकमवक्रकरणम्। आव० ४६५।

अड्ढ–आढ्यम्, परिपूर्णम्। औप० १०१।

अड्ढ–आढ्य, धनधान्यादिभिः परिपूर्णः। सम० १२४।

अड्ढग–आढ्य, सम्पन्नः। आव० २६४।

अड्ढरत्त–अर्धरात्र, निशीथः। दश० १०४। आर्धरात्रिक। व्य० द्वि० २५५ आ।

अड्ढाइ–धनवन्ति। ठाणा० ४३१।

अड्ढाइज्जा–अर्धतृतीयानि। आव० ३९।

अड्ढायति–आद्रियते। आव० ८४८।

अड्ढेऊण–अवष्टभ्य। आव० ६२०।

अड्ढेज्ज–आश्चर्य–धनपतित्वं मुदत्राणध्यानमुखं अथवा आढ्यं क्रियमाणा इज्या–पूज्या आशैज्या। ठाणा० ४८८।

अड्ढोकंति–अर्धावक्रान्तया। नि० चू० प्र० ११७ आ।

अड्ढोकंती–अर्धापक्रान्तिः। बृ० द्वि० १९ अ।

अड्ढोरुगो–कटिविभागाच्छादक निर्ग्रन्थ्युपकरणम्। ओघ० २०९। निर्ग्रन्थ्युपकरणविशेषः। नि० चू० प्र० १०९ आ।

अणं–कर्म। दश० चू० १४५। पापम्। विशे० ११०९। अणं–अणंति–गच्छति तासु तासु जीवो योनिष्वनेनेति पापम्, सावद्ययोगो वा। आव० ३०३। कर्म। आचा० १४७। ऋणम्, कर्म। दश० २६२।

अणंगकीडा–अनङ्गक्रीडा, अनङ्ग–कुचकक्षोरुवदनादि, मोहो-दयोद्भूतानी मैथुनाध्यवसायात्व. कामो वा, तेन सन्धिम

वा क्रीडा कृतार्थस्यापि स्वलिङ्गेनाहार्यैः काष्ठफलपुस्तमृत्तिकाचर्मादिघटितप्रजननैर्योषिद्वाच्यप्रदेशासेवनम् । आव० ८२५। कुचकक्षोरुवदनादिमोहोदयोद्भूतस्तीव्रो मैथुनाध्यवसायाख्यः कामः। आव० ८२५। मैथुनादावर्थक्रियासम्प्राप्तकामस्य चतुर्दशो भेदः। दश० १९४।

अणंगपडिसेवणी-मैथुने प्रधानमङ्गं मेहनं भगश्च तत्प्रतिषेधोऽनङ्गं तेनानङ्गेनाहार्यलिंगादिना अनङ्गे वा-मुखादौ प्रतिसेवाऽस्ति यस्याः अनङ्गं वा-काममपरापरपुरुषसंपर्कतोऽतिशयेन प्रतिषेवत इत्येवंशीलाऽनङ्गप्रतिषेविणी। ठाणा० ३१३।

अणंगसेण-सुवण्णगारो, मदविषये दृष्टान्तः। नि० चू० तृ० ५ अ।

अणंगसेणा-अनङ्गसेना, गणिकामुख्या। अन्त० ३।

अणंगसेणो-चम्पावास्तव्यः स्वर्णकृत्, हासाप्रहासाद्दृष्टा.। बृ० द्वि० ४४ अ।

अणगरति-अनङ्गक्रीडा। बृ० तृ० १०७ आ।

अणंतं-अनन्तम्। विशे० ३९६। केवलात्मनाऽनन्तत्वात्। जीवा० २५६। अनन्त, अनन्तार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वादन्तरहितः। भग० ७, सम० ५। अपरिमाणम्। भग० ६६। अनन्तकर्मपुद्गलनिर्वृत्तत्वात्तदनन्तमिति अनन्तानां वा भवानां हेतुर्यत्तदनन्तम्। ओघ० १२८।

अणंतकायं-मूलकादिकम्। प्रज्ञा० २५९।

अणंतकिरिया-अनन्तक्रिया, परम्परामुक्तिफला। उत्त० ५८३।

अणंतखुत्तो-अनन्तकृत्वः, अनन्तवारान्। भग० १३०।

अणंतगं-वस्त्रलादिवस्त्रम्। ओघ० ३४।

अणंतगमेजुत्त-अनन्ता-अपर्यवसिता गम्यते वस्तुरूपमेभिरिति गमा-वस्तुपरिच्छेदप्रकारा नामादयस्तैर्युक्तानि-अविनाश्यनन्तगमयुक्तानि। उत्त० ३४२।

अणंतगुणपरिहाणीए-अनन्तगुणपरिहाणि, अनन्तगुणानो परिहाणि.। जं० प्र० १२९।

अणंतगुणविसिट्ठतरा-अनन्तगुणविशिष्टतरा। सूर्य० २९४।

अणंतघाई-अनन्तघातिन-अनन्ते ज्ञानदर्शने हन्तु शीलं येषां ते। उत्त० ५८०।

अणंतजिणेण-रागद्वेषजेता, ज्ञानी निम्र्यथ। आचा० ४३०।

अणंतजीविया-अनंतजीविका-पनकादयः। ठाणा० १३२।

अणंतणाणी-अनन्तज्ञानी, केवली। आव० ६६३।

अणंतते-अनन्तकम्-एकप्रदेशिके क्षेत्रम्। ठाणा० १४७।

अणंतमिस्सिया-अनन्तमिश्रिता, मूलकादिरमनन्तकायं तस्यैव सत्कैः परिपाण्डुपत्रैरन्येन वा केनचित्प्रत्येकवनस्पतिना मिश्रमवलोक्य सर्वोऽप्येषोऽनन्तकायिक इति वदतो भाषा। प्रज्ञा० २५९। ठाणा० ४९०।

अणंतमीसग-अनन्तमिश्रा, सत्यामृषाभाषाभेदः। दश० २०९।

अणंतयं-अनंतकम्-जिनम्। सम० १५३।

अणंतरं-अनन्तरम्, बहिर्भूतम्। सूर्य० ३४। सम० १२८।

अणंतरगंठिया-अनन्तरग्रथिता, अनन्तरं व्यवस्थापितैः ग्रन्थिभिः सह ग्रथिता (ग्रन्थिता)। भग० ३१४।

अणंतरपज्जता-अनन्तरपर्याप्तका-प्रथमसमयपर्याप्तका। ठाणा० ५१४।

अणंतरपुरक्खडे-अनन्तरपुरस्कृतः, अनन्तरं-अव्यवधानेन पुरस्कृत-अग्रेकृतो य स.। सूर्य० १०।

अणंतरबंधे-येषां पुद्गलानां बद्धानां गतामनन्तरः समयो वर्तते तेषामनन्तरबन्धः भग० ७९१।

अणंतरहिता-अंते ठिया-अंता न अंता-अणंता सचित्ता। नि० चू० प्र० २५५ आ। नि० चू० द्वि० ८२ आ।

अणंतरहियाए-अनन्तर्हि(रहि)तया-अव्यवहितया। आचा० ३३७।

अणंतरा-अनन्तरौ, एष्यातीतौ। आव० ७६९।

अणंतरिया-अनन्तरिका, अन्तरस्य विच्छेदस्य करणम्। भग० २२०।

अणंतरो-अनन्तर-वर्तमान समय। ठाणा० ५१४।

अणंतरोगाढं-अनन्तरावगाढम्, येषु प्रदेशेष्वात्मावगाढस्तेष्वेव यदवगाढं तदनन्तराभिनावगाढत्वादनन्तरावगाढम्। भग० २३। अव्यवधानेनावगाढम्। जीवा० २०।

अणंतरोगाढे-उत्पत्त्यनन्तरसमयावगाढत्वम्। भग० ९३७।

अणंतरोववण्णगा-उपप(न्न)त्तिप्रथमसमयवर्तिन। प्रज्ञा० ३०४।

अणंतवत्तियाणुप्पेहा-अनन्तवर्तितानुप्रेक्षा। ठाणा० १९०। भवसन्तानस्यानन्तवृत्तितानुचिन्तनम्। औप० ४५।

अणंतविजए-आगामिन्यां उत्सर्पिण्यां भरते चतुर्विंशे जिननाम। सम० १५४। ऐरवते भविष्यज्जिनः। सम० १५४।

अणंतवीरिय-अनन्तवीर्यः। आव० ३९२।

अणंतसंजयं-एकेन्द्रियादिषु सम्यग् यतः। आचा० ४२९।

अणंतसंसारा-अपर्यवसितसंसारा अभव्याः। उत्त० ७१३।

अणंतसंसारवद्धणा-अनन्तसंसारवर्द्धनः। उत्त० ३३०।

अणंतसेणे-अनन्तसेनः, अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य द्वितीयाध्ययनम्। अन्त० ३। भरतेऽतीतोत्सर्पिणीकुलकरः। सम० १५०। ठाणा० ५१८।

अणंतसो-अनन्तशः, अविच्छेदेन। सूत्र० ३४।

अणंतहिअ-अनन्तहितम्-मोक्षः। दश० २५०।

अणंता-तित्थकरा। बृ० प्र० २२४ आ।

अणंताणुबंधी-अनन्तानुबन्धी, अनन्तं संसारमनुबध्नन्तीत्येवंशीलः। प्रज्ञा० ४६८। षोडशकषाये प्रथमो भेदः। सम० ३१, आचा० ९१। अनन्तं भवं अविच्छिन्नं करोति, अनन्तो वाऽनुबन्धो यस्य। ठाणा० १९४।

अणंतियं-अनन्तिकम्, नञोऽल्पार्थत्वान्नात्यन्तमन्तिकम-दूरासन्नमित्यर्थः। भग० २१७। अनासन्नम्। भग० २१७।

अणंतेहिं-अनादित्वात् अनन्ताः। भग० ६१०।

अणंतो-अनन्तः अनन्तकर्मांशजयात्, अनन्तानि वा ज्ञानादीन्यस्येति, चतुर्दशो जिनः, रत्नखचितमनन्तं दाम-स्वप्ने जनन्या दृष्टमतः। आव० ५०४। अपर्यवसितः। उत्त० २१३। अनन्तानामेकैकं शरीरम्। ओघ० ३४।

अणंधो-राजविशेषः। नि० चू० द्वि० ४२ आ।

अणंबिलं-अनाम्लम्-स्वस्वादादचलितम्। आचा० ३४६।

अण-अणाः, अणन्ति-शब्दयन्ति अविकलहेतुत्वेनासातवेद्यं नारकायायुष्कमिति, अनन्तानुबन्धिनः क्रोधादयो वा। आव० ८१। नारकायायुष्कं च शब्दयन्त्याकारयन्तीत्यणाः, अनाः। विशे० ५६१।

अणइक्कमणाइ-अनतिक्रमणं, मयमयोगानामनुल्लङ्घनम्। उत्त० ५४३।

अणइक्खा-अनाख्याता। (गणि०)

अणइचत्तिय-अनतिपत्य-यथावस्थितं वस्त्वागमाभिहितं तथाऽनतिक्रम्य। आचा० २५६।

अणइवरं-अनतिवरं, अविद्यमानद्दामतया प्रधानं न विद्यतेऽतिवरं यस्मात्तत। औप० ५४।

अणईइपत्तो-अनीतिपत्रः, न विद्यते ईतिः-गड्डरिकादिरूपेति रहितपत्रः। जीवा० १८८।

अणकरो-ऋणकरः, ऋणं-पापं करोतीति, प्राणवधस्य चतुर्विंशतितमः पर्यायः। प्रश्न० ६।

अणको-अणकः, चिलातदेशवासी म्लेच्छविशेषः। प्रश्न० १४।

अणक्खित-परीक्षितः। नि० चू० द्वि० ८१ आ।

अणगार-अनगारः, सूत्रकृताङ्गे पञ्चममध्ययनम्। आव० ६५८। साधुः। दश० ६२। सूत्रकृताङ्गस्यैकविंशमध्ययनम्। उत्त० ६१६। चतुर्दशशतके भवमोद्देशकः। भग० ६३०। द्रव्यतो भावतश्चाविद्यमानागारः। दश० १५९। न विद्यतेऽगारं गृहमेषामित्यनगाराः-यतयः। आचा० ३६। तीर्थिकप्रव्रजिताः। आचा० ३०९। अनगारी-यतिः। उत्त० ५७८। साधुः। आव० ३२९।

अणगारमग्गे-उत्तराध्ययने पञ्चत्रिंशत्तमाध्ययनम्। सम० ६४।

अणगारसुयं-सूत्रकृताङ्गे एकविंशतितमाध्ययनम्। सम० ४२।

अणगारस्सभिक्खू-अनगारास्वभिक्षुः, अस्वेषु भिक्षुरस्वभिक्षुः-आत्मायत्तजीवनादनात्मीकृतत्वेनानात्मीयानेव गृहिणोऽसादि भिक्षत इतिकृत्वा, स च यतिरेव, ततोऽनगारश्चासावस्वभिक्षुश्च। उत्त० १९।

अणगारियं-अनगारिकं (अनगारित्वं वा), अनगारेषु-भावभिक्षुषु भवं अनुष्ठानम्। उत्त० ३३९।

अणगारे-अनगारः, न विद्यते अगारं-गृहं यस्यासौ साधुः। जीवा० १४२। भावितात्मा लब्धिसामर्थ्यात्। भग० ५९६। न विद्यते अगारं-गृहं द्रव्यतो भावतश्च यस्यासौ-संयत इति। प्रज्ञा० ३०३। न विद्यते अगारं-गृहं यस्य सः। सूर्य० ४। अगाः-वृक्षास्तैर्निष्पन्नमगारं तन्न विद्यते त्यक्तगृहपाशः। आचा० ४०३।

अणगारो-ऋणकारः, ऋणमिव कालान्तरक्लेशानुभवहेतुतया ऋणम्-अष्टप्रकारं कर्म तत् करोतीति, तथा तथा गुरुवचनविपरीतप्रवृत्तिभिरुपचिनोतीति। उत्त० २०।

अणगालो-दुष्कालः। बृ० तृ० २३ अ।

अणघा-निरोगा। नि० चू० प्र० ८० अ।

अणचाविंशं-अनर्त्तायितम्। ओघ० १०९।

अणब्भाविंतं-वस्त्रमात्मा वा यत्र न नर्तितः। ठाणा० ३६१। प्रस्फोटनं प्रमार्जनं वा। उत्त० ५४०।

अणब्भासादणाविणए-आशातना तन्निषेधरूपो विनयोऽनत्याशातनाविनयः। भग० ९२२।

अणज्जं – अनार्यम्, अनार्यवचनत्वात्, अधर्मद्वारस्य तृतीयं नाम। प्रश्न० २६।

अणज्जधम्मे-अनार्यधर्म, क्रूरकर्मकारी। सूत्र० १५८।

अणज्जभावे-अनार्यभाव, क्रोधादिमान्। ठाणा० २०९।

अणज्जे-अन्याय्य., न न्यायोपेतः। प्रश्न० ५।

अणज्जो-अनार्यः, म्लेच्छचेष्टितः। दश० २७५। पापकर्मा। प्रश्न० ४०।

अणज्झाए-अकाले, अस्वाध्यायिके वा। नि० चू० प्र० १० आ।

अणट्टा-अनार्त -आर्तध्यानविकल। उत्त० ४४८। सकलदोषविगमतोऽबाधिता। उत्त० ४४९।

अणट्ठा-अनर्थक्रिया, अनर्थाय यत्करणम्, क्रियाया द्वितीयो भेदः। आव० ६४८।

अणट्ठादंडे-अर्थविलक्षणो दण्डः। सम० २५।

अणणुगामी-अननुगामुकः-स्थितप्रदीपवत्। आव० ४२।

अणण्णं-अनन्यः-ज्ञानादिकः। आचा० १६३।

अणण्हकर – 'स्नु-प्रस्रवण' इति वचनात् आस्नव-आश्रवः कर्मोपादानं तत्करणशीलं आस्नवकरस्तन्निषेधादनास्नवकर -प्राणातिपाताद्याश्रववर्जित इत्यर्थः। ठाणा० ४०९।

अणण्हय-अनाश्रव। आव० २८०।

अणण्हयत्ते-अनंहस्करत्वम्-अविद्यमानकर्मत्वं। उत्त० ५८६।

अणण्हयफले-अनाश्रवफल, संयम। भग० १३८।

अणति-प्रज्ञापयति। उत्त० १२८। शब्दयति। आव० ७८८। आदत्ते-गृह्णाति। नि० चू० द्वि० ९ आ।

अणतिक्कमणिज्ज-अनतिक्रमणीयम्, अचालनीयम्। भग० १३५।

अणत्तट्ठिए-अनात्मार्थिक, नात्मार्थ एव यस्यास्त्यसौ परमार्थकारी। प्रश्न० ११३।

अणत्तट्ठियं-अस्वीकृतम्। आचा० ३२०।

अणत्तपन्ने-अनात्मप्रज्ञ-नात्मने हिता प्रज्ञा येषां ते। आचा० २३४।

अणत्ते-ऋणपीडितः। ठाणा० १६५।

अणत्थको-अनर्थकः, परमार्थतया निरर्थकः, परिग्रहस्याष्टाविंशतितमं नाम। प्रश्न० ९३।

अणत्थदंडे-अनर्थदण्डः, अप्रयोजनदण्डः। आव० ८१०।

अणत्थमियसंकप्पे – सूर्यानस्तमयभोजनसंकल्पवान्। बृ० तृ० १७९ अ।

अणत्थो-अनर्थ अपायः। प्रश्न० ९२। अनर्थहेतुत्वात् परिग्रहस्यैकविंशतितमं नाम। प्रश्न० ९२।

अणद्दिट्ठं-अनादिष्ट-अविशेषितम्। बृ० तृ० ६६ अ।

अणन्नदंसी-अनन्यदर्शी-यथावस्थितपदार्थद्रष्टा, भगवदुपदेशादन्यत्र न रमते। आचा० १४५।

अणन्नपरमे-अनन्यपरम -संयमः। आचा० १६६।

अणन्नारामे – अनन्यारामो-मोक्षमार्गादन्यत्र न रमते। आचा० १४५।

अणपज्झो-अजाणमाणो। नि० चू० प्र० ११० अ।

अणपन्निय-अवान्तरव्यन्तरभेदः। जीवा० १०७।

अणप्पगंथो-अनल्पग्रन्थ (अनर्घ्यग्रन्थ) महागम अविद्यमानो वाऽऽत्मन सम्बन्धी ग्रन्थो-हिरण्यादिर्यस्य सः। भावधनयुक्त। औप० ३७।

अणप्पज्झ-(देशी) अनात्मवश.। बृ० द्वि० २०९ अ।

अणप्पज्झो-अनात्मवश। बृ० तृ० २५८ अ।

अणप्पियं-अनर्पितविषयविभागम्। बृ० तृ० ११० अ। अविशेषितम्। ठाणा० ४८१।

अणप्फिडंतं-अचलन्। नि० चू० द्वि० ३३ अ।

अणबलो-ऋणबल, बलवानुत्तमर्णः। प्रश्न० ३०।

अणब्भुवगओ-अनभ्युपगत, श्रुतसम्पदाऽनुपगम्पन्नोऽनिवेदितास्मीत्यर्थः। विशे० ६२०।

अणभंजकः-ऋणं-देयं द्रव्य भनक्ति-न ददाति य स। प्रश्न० ४६।

अणभिक्कंत-अनभिक्रान्त, अनतिलङ्घित। आचा० १६३। नाभिक्रान्ता जीवितादनभिक्रान्ता नष्टेनेत्यर्थः। आचा० ३२३।

अणभिगताणं-अपरिज्ञाना। बृ० प्र० १३० अ।

अणभिग्गहिओ – अविद्यमानमभीति-आभिमुख्येन गृहीतं ग्रहणं-ज्ञानमस्येत्यनभिगृहीत. – अनभिज्ञ। उत्त० ५६१ अनङ्गीकृता। उत्त० ५६५।

अणभिग्गहिय-न विद्यते आभिमुख्येनोपादेयतया गृहीतं ग्रहणमस्येत्यनभिगृहीत । प्रज्ञा० ६०। अनिश्चितमश्रिवा-शिभिर्निर्गममभावात्। ठाणा० ३०९।

अणभिग्गहियमिच्छादंसणवत्तिया- अनभिगृहीतमिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी, जेहिं न किंचि कुतित्थियमयं पडिवण्ण। आव० ६१२।

अणभिग्गहिया-अनभिगृहीता, अनभिग्रहा यत्र न प्रतिनियतार्थावधारण सा भाषा। प्रज्ञा० २५६। असत्यमृषा भाषाभेद । दश० २१०। अर्थानभिग्रहेण योच्यते। भग० ५००।

अणभिजोए-अनभियोग', इच्छा। आव० ६६८।

अणभिहियं-अनभिहितं, अनुपदिष्ट स्वसिद्धान्ते सूत्रदोषविशेष। आव० ३७५।

अणभिज्जय-अच्छिद्रे, अभिन्ने। (भग०)

अणराए-रण्णो कालगते-णिक्खए वि जाव णो राया ठविजति। नि० चू० तृ० ७१ अ।

अणरायं-राजयुवराजोभयाभिषेकरहित राज्यम्। बृ० द्वि० ८२ अ। मते रायाणे जाव मूलराया युवराया य एते दोवि अणभिसित्ता। नि० चू० द्वि० १० आ।

अणलगिरि-अनलगिरि । आव० २९९।

अणला - अपर्याप्ता, दीक्षापालनेऽसमर्था । बृ० द्वि० २८७ आ।

अणलो-अनल, असमर्थ। आव० ७५९। वेयावच्च प्रति मुत्ते अत्थे अभिगमे परिहरणे। नि० चू० द्वि० ४९ आ।

अणलिअंता-अनाश्रयन्त । ओघ० ९७।

अणवः-स्वल्पा । उत्त० ४२०।

अणवं-ऋणवान्। सूर्य० १४६। जं० प्र० ४९१।

अणवकंखवत्तिया-अनवकाङ्क्षाप्रत्ययिकी, क्रियाक्रिया मध्ये पञ्चदशी। आव० ६१२। अनवकाङ्क्षा-स्वशरीराद्यनपेक्ष सैव प्रत्ययो यस्या सा। ठाणा० ४३। इहलोकपरलोकापायानपेक्षत्येति । ठाणा० ३१०।

अणवगल्ल-अनवकल्प, जरसा अनभिभूत । भग० ३७६। जं० प्र० १०।

अणवज्ज - अनवद्यम्, सामायिकस्यनामपर्याय । आव० ४७४। सामायिकम्। आव० ३६४। पापानुबन्धरहितम्। दश० ११५।

अणवज्जय-अणवज्र्यता, पापवर्ज्यता। आव० ३७३।

अणवज्जुत्तो-तद्युक्त, अपृथग्भूत। आव० ७५८।

अणवट्टप्पा-अनवस्थाप्य -नावस्थाप्यते-नाधिक्रियते। ठाणा० १६४। कृततपसो व्रतारोपणम्। भग० ९२०।

अणवट्टप्पारिहे-कृततपसो व्रतारोपणम्। भग० ९२०।

अणवट्ठया-अनवस्थाप्यता, हस्ततालादिप्रदानदोषादुष्टतरपरिणामत्वाद् व्रतेषु नावस्थाप्यते इति अनवस्थाप्य, तद्भाव। आव० ७६४। ठाणा० २००।

अणवट्ठिओ-अनवस्थित । बृ० प्र० १२५ अ।

अणवट्ठियं-अनवस्थित, सन्ततम। जीवा० ३४५। अनियतप्रमाणम्। सूर्य० ८७।

अणवट्ठिया-नावश्यभाविन । ठाणा० ३७४।

अणवट्ठिया-अनवस्थिता-येन पुन प्रतिसेवितेनोत्थापनाया अप्ययोग्य सन् कंचित्काल न व्रतेषु स्थाप्यते यावन्नाया वि विशिष्टं तपश्चीर्ण भवति पश्चाच्च चीर्णतपास्तद्दोषोपरतो व्रतेषु स्थाप्यते। व्य० प्र० १४ आ।

अणवत्था - अनवस्था, यत्सावद्यमाचरणा-प्रायश्चित्त न दीयते क्रियते वा सा। ओघ० २२०।

अणवदग्गं-अनवदग्रम्, अनन्तम्। प्रश्न० ६३। ठाणा० १२०। औप० ४८। अपर्यवसानम् । सूत्र० ३७९।

अणवन्निय - अणपन्निका, व्यन्तरनिकायानामुपरिवर्त्तिनो व्यन्तरजातिविशेषा। प्रश्न० ६९। वाणमन्तरविशेष। प्रज्ञा० ९५।

अणवयक्खित्ता-अनवेक्ष्य पश्चाद्भागमनवलोक्य। भग० ३१०।

अणवयग्ग-अनवनताग्र-अपर्यन्तम्। ठाणा० ४६। अनन्त अपार, अनवनताग्र-अनवनत-अनामन्न अग्र-अन्तो यस्य तत्। अनवगताग्र-अनवगतं-अपरिच्छिन्न अग्र-परिमाण यस्य तत्। भग० ३५। कालतोऽपरिमाणम्। व्य० प्र० २०५ अ।

अणवयग्ग-अनवदत, अनवग्गच्छा। उत्त० ५८५।

अणविक्खया-अपेक्षणा (गणि०)

अणसणं-अनशन, भोजननिरोध । औप० ३७। बाह्यतपो ऽश। उत्त० ६००।

अणसण-अनशनम्, आहारत्यागः। दश० २६। भग० ९२१।
अणसणा-अनशनम्, व्रतविशेषः, उपवासः। भग० १२८।
अणसायणा-अनाशातना, अहीलना। दश० २४१। मनोवाक्कायैरप्रतीपप्रवर्तनम्। उत्त० १७।
अणसिओ-अनशितः, न अशितः-भिक्षाप्रदानानभिज्ञेन लोकेनाभ्यर्हितः। आव० १४४।
अणहं-अनघं, अक्षतम्। सूर्य० २९२। अणहशब्दोऽक्षतपर्यायो देश्यस्तेनाणहं-अक्षतं। जं० प्र० २२१।
अणहवीया-अविणट्ठवीया। नि० चू० प्र० ८० अ।
अणहारए-ऋणधारकः। विपा० ७२।
अणहारेणं-स्वदेशजाहाराभावेनेति। ठाणा० ५४।
अणहिअपरमत्था-अनधिगतपरमार्थाः। (गणि०)
अणहिकड्ढा-अनधिकृता-तल्लक्षणायोगतस्तत्रानन्तर्भाविनी। प्रज्ञा० २४८।
अणहियासिया-अनध्यासिनी। आव० ४२८।
अणहियासी-अनधिकासिकाः, सञ्ज्ञावेगोत्पीडितः सन् या याति सा। ओघ० २००।
अणहे-अनघः, नास्याघमस्तीति, निरवद्यानुष्ठायी। सूत्र० ६९।
अणहो-अनघः, अक्षतशरीरः। प्रश्न० ११५।
अणाइण्णं-पणगपरिहाणीक्रमेण पत्तं। नि० चू० द्वि० १५७ अ।
अणाइण्णा-अणासेविय। नि० चू० द्वि० १४४ आ।
अणाइन्नं-अनाकीर्णं-असंकुलं। उत्त० ४२८।
अणाइयं-अणातीतं, अनादिकं, अज्ञातिकं, ऋणातीतं अणातीतं वा, अविद्यमानादिकं, अविद्यमानस्वजनं, ऋणं वाऽतीतं ऋणजन्यदुःस्थतातिक्रान्तम्, दुःस्थतानिमित्ततयेति ऋणातीतं, अणं वा अणकं-पापमतिशयेनेतं-गतमणातीतम्। भग० ३५। आ-समन्तादतीव इतो-गतोऽनाद्यनन्ते समारे आतीतः, न आतीत अनातीतः, अनादत्तो वा संसारो येन स तथा, समारार्णवपारगामी। आचा० २८६।
अणाइत्तो-अनुपयुक्तः। (महाप्र०)
अणाइयंतो-विवादानतिक्रामन्। व्य० प्र० १० अ।
अणाइले-अनाविलः, अदीनस्य चतुर्थं नाम। अन्त० २२। अकलुषः। प्रश्न० १११। अकलुषः, शुद्धस्वभावः। प्रश्न० १३६।
अणाइसेसि-अनतिशयी, अवध्याद्यतिशयरहितः। आव० २४०।
अणाई-अनादिः, नास्यादिरस्तीति संसारः। सूत्र० ३४१।
अणाउट्टी-अनाकुट्टिः। आव० ३७३।
अणाउत्तं-असावधानता। औप० ४२। अनुपयुक्तः। ठाणा० ४३।
अणाउत्तआइयणया-अनायुक्तवस्त्रादिग्रहणता। ठाणा० ४३।
अणाउत्तपमज्जणया-अनायुक्तपात्रादिप्रमार्जनता। ठाणा० ४३।
अणाउत्तो-अनाकुलः-अक्षणिकता। बृ० तृ० ४४ आ।
अणाउल-अनाकुलः, क्रोधादिरहितः। दश० १६६।
अणाउले-अनाकुलः। आचा० ४२४।
अणाउलो-अनाकुलः। आव० ४०४।
अणाए-अनया। आव० ३९९।
अणाएसे-अनादेशः, न आदेशः, सामान्यम्। उत्त० ३२।
अणागई-अनागतिः, सिद्धिः, अशेषकर्मच्युतिरूपा लोकाग्राकाशदेशस्थानरूपा वा। सूत्र० २२३।
अणागतं-अनागतम्, अनागतकरणात्, पर्युषणादावाचार्यादिवैयावृत्यकरणान्तरायसद्भावादारत एव तत्तप करणम्। आव० ८४०, ठाणा० ४९८।
अणागमणधम्मिणो-अनागमनधर्माणः-यस्मिन् मनुष्यलोके अनागमनं धर्मो येषां ते, न पुनर्गृहं प्रत्यागमनेप्सवः। आचा० २४३।
अणागमो-अनागम-अनवसरः। आचा० १२२।
अणागयं-अनागतम्, एष्यत्कालम्। आव० ५०९।
अणागय-अनागताम्-आयत्याम्। आव० ५०९। अनागतं, अनागतकरणादनागतम्। भग० २९६।
अणागलिय-अनिर्गलितः-अनिवारितोऽनाकलितः। भग० ६७३।
अणागारं-अनाकारम्, अविद्यमानाकारम्। आव० ८४०। ठाणा० ४९८। अविद्यमानाकारं-यद्विशिष्टप्रयोजनसम्भवाभावे कान्तारदुर्भिक्षादौ महत्तरायाकारमनुच्चारयद्भिर्विधीयते तदनाकारम्। भग० २९६।

अणागारपासणया–अनाकारपश्यत्ता-चिन्त्यमानायां प्रकृष्टं परिस्फुटरूपमीक्षणमवसेयम्। प्रज्ञा० ५३०।

अणागारो–अनाकारः, यथोक्ताकारविकलः। जीवा० १८। सामान्यग्राही। भग० ७३।

अणाजीवी–अनाशंसी। नि० चू० प्र० १८ अ। अनाजीविको–निःस्पृहः। दश० १०६।

अणाढिया–अनादृति.। आव० ५५। अपराधः। बृ० प्र० ३० आ।

अणाढायमाणे–अनाद्रियमाणः–सखडिमनादरयन्। आचा० ३२९।

अणाढिअस्स–अनादृतनाम्नः जम्बूद्वीपाधिपतेः। जं० प्र० ३३४, जीवा० ३२६।

अणाढिउ–जम्बूवृक्षस्थो देवः। ठाणा० ६९।

अणाढियं – अनादृतम्, अनादरे सम्भ्रमरहितम्, कृति-कर्मणि प्रथमदोषः। आव० ५४३।

अणाढिय–अनादृतः, जम्बूद्वीपाधिपतिर्व्यन्तरसुरः। उत्त० ३५२। अनादृताद्–अनादराद्या सा अनादृता, शिथिलस्य या सा। ठाणा० ४७४।

अणाणत्ता–अनानात्वाः–नानात्ववर्जिता येष्वेवाधारभूता-काशप्रदेशेष्वेके तेष्वेवेतरेऽपि। भग० ९६१। नानात्ववर्जिताः देशभेदेनालक्षितनानात्वाः। प्रज्ञा० ७४।

अणाणाए–अनाज्ञया, स्वैरिण्या बुद्ध्या। आचा० ११३। स्वमनीषिकाचरितोऽनाचारः। आचा० २२७।

अणाणुकित्ती–जो एवं ण कथयति। नि० चू० प्र० ३३३ आ।

अणाणुगामिते–अवधिज्ञानस्य द्वितीयो भेदः। ठाणा ३७०।

अणाणुगामियत्ताते–अननुगामिकत्वाय–अशुभानुबन्धाय। ठाणा० १४९, ३५८।

अणाणुपुव्वी–अनानुपूर्वी, यत्र पूर्वपश्चाद्विभागो नास्ति। भग० ८०। अत्थमहणाईए पदे अप्पत्तो। नि० चू० द्वि० ५३ अ। अनियतक्रमानुपूर्वी। ठाणा० ४। यथोक्तप्र-कारद्वयातिरिक्तस्वरूपा। अनु० ७३।

अणाणुबंधि–न विद्यतेऽनुबन्धः–गात्रस्य प्रस्फोटनादीनां यत्र तदननुबन्धि। ठाणा० ३६१।

अणादिट्ठी–अनादृष्टिः, अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य त्रयो-दशमध्ययनम्। अन्त० ३।

अणादीओ–अनादिकः, अणं–पापं कर्म आदिः–कारणं यस्य सः। ऋणातीतः, ऋणं–अधर्मेण न देयं द्रव्यं तदतीतो-ऽतिदुरन्तत्वेनातिक्रान्तः। प्रश्न० ४। अनादिकः, प्रवाहा-पेक्षयाऽऽदिविरहितः। प्रश्न० ४।

अणादीयं–नास्त्यादिरस्येत्यनादिकं। ठाणा० ४४।

अणादेज्ज–अनादेयम्–यदुदयवशादुपपन्नमपि ब्रुवाणो नोपा-देयवचनो भवति, नाप्युपक्रियमाणोऽपि जनस्तस्याभ्युत्थानादि समाचरति। प्रज्ञा० ४७५।

अणापुच्छा–अनापृच्छा। आव० १९८।

अणाबाहं–अनाबाधकत्वं वेदनाभावत्ववत्। उत्त० ५१०।

अणाबाहि–अनाबाधः–मोक्षसुखम्। ठाणा० ४८८।

अणाभिगता–अगहियसुत्तत्था। नि० चू० तृ० १४३ अ।

अणाभिडंतो–अस्पृशन्। नि० चू० प्र० १८७ अ।

अणाभोगं–अनाभोगम्, अतिचारविशेषः। आव० ५६४। विस्मृतिः। ठाणा० ४८५।

अणाभोगनिव्वत्तिए – अनाभोगनिर्वर्तितः, यदा त्वेवमेव तथाविधमुहूर्तवशाद्गुणदोषविचारणाशून्यः परवशीभूय कोपं कुरुते तदा सकोपः। प्रज्ञा० २९१।

अणाभोगबकुसो – अनाभोगबकुशः, योऽनाभोगेनाजानन् करोति सः, बकुशस्य द्वितीयो भेदः। उत्त० २५६। सहसाकारी। ठाणा० ३३७।

अणाभोगवत्तिया – अनाभोगप्रत्ययिकी, विंशतिक्रिया-मध्ये चतुर्दशी। आव० ६१२। अनाभोगेन पात्राद्यादत्ते निक्षिपति वा। ठाणा० ३१७। अनाभोग–अज्ञानं प्रत्ययो–निमित्तं यस्याः सा। ठाणा० ४३।

अणाभोगे–अनाभोग–अज्ञानम्। भग० ९१९। एकान्त-विस्मरणम्। व्य० द्वि० ३३२ आ।

अणाभोगो–अनाभोगः, अत्यन्तविस्मृतिः। आव० ८५०। नि० चू० प्र० २९ आ। अज्ञानं। नि० चू० प्र० १४७ आ। विस्मृतिः। आव० ८४८।

अणायगे–अनायकः, अन्यो न विद्यते नायकोऽस्येति अनायकः–स्वयम्प्रभुधर्मवर्त्यादि। सूत्र० ६१। अविद्यमान-नायको राजा। सम० ५३।

अणायण–अनायतनम्, विरुद्धस्थानम्। दश० २२६। अस्थानम्, वेश्यागामन्नादि। दश० १६५।

अणायतणं–अनायतनं, साधूनामनाश्रयः। प्रश्न० १३८। नि० चू० प्र० ११६ अ। स्त्रीपशुपण्डकसंसक्तं स्थानम्। ओघ० १२।

अणाययणं–पशुपक्षिमद्गृहं। बृ० तृ० १९५ आ।

अणाययण–स्त्रीपशुपण्डकसंसक्तगृहवर्जनं। नि० चू० तृ० २५ आ।

अणायरिया–अनार्या–अर्द्धषड्विंशजनपदबाह्यानि। आचा० ३७७।

अणायवेतियं–छायायाम्। नि० चू० द्वि० ७६ आ।

अणाया–अनात्मा घटादिपदार्थः। सम० ५।

अणायार–अनाचारः, सावद्ययोगः। दश० २२३।

अणायारो–अनाचारः। आव० ७७८। गिलिते सति आधाकर्मणि दोषविशेषः, यावल्लम्बनोत्क्षेपोत्तरकालम्। आव० ५७६। व्यभिचारः। आव० ५७८। आचारस्य साध्वाचारस्याभावः परिभोगतो ध्वंसः। व्य० प्र० ९० अ।

अणारद्धं–अनारब्धम्, अनाचीर्णम्। आचा० १४८।

अणारिओ–अनार्य. म्लेच्छादिः। प्रश्न० ५। क्रूरकर्माणः। आचा० १८६।

अणारिय–आचार्यं मुक्त्वा। बृ० प्र० २४५ अ। म्लेच्छाः। ठाणा० ३०९।

अणारिया–कामकहा। नि० चू० प्र० २५८ अ। अनार्य–क्षेत्रभाषाकर्मभिर्बहिष्कृतः। सूत्र० ३९३। उत्त० ३५८। अनार्यः–न आर्यः, अज्ञानात्तत्त्वादमदनुष्ठायी। सूत्र० ३३।

अणारोहए–अनारोहक., योधवर्जितः। भग० ३२२।

अणालावे–अनालापः–कुत्सित आलापः। ठाणा० ४०७।

अणालिओ–अचेष्टा। आव० ३७०।

अणावडंतो–अस्पृशन्। नि० चू० प्र० १८७ अ।

अणावसं–अवशम्। (मर०)

अणावाय–अनापात। आचा० ३३५। अनापात–आपातादिरहिता उच्चारभूमी। दश० २२१। उत्त० ५१८। विजनम्। आचा० ३३९। स्त्र्याद्यापातरहितः। उत्त० ६०८।

अणावायमसंलोए–अनापातासंलोकम्। ओघ० १२२।

अणाबाहो–मोक्खो। दश० चू० १३।

अणासगं–परिज्ञा। नि० चू० प्र० ३५२ आ। अनशनं। नि० चू० प्र० २५८ अ।

अणासए–अनश्वः, अश्वरहितः। भग० ३२२।

अणासन्नं–अनासन्नं, यद्द्रव्यासन्नं भावासन्नं वा न भवति। ओघ० १२३।

अणासवो–अनाश्रवः, मध्यस्थो रागद्वेषरहितः। सूत्र० २४४। कर्मबन्धनिरोधोपायत्वात्, अहिंसायाः पञ्चत्रिंशत्तमं नाम। प्रश्न० ९९। अनाश्रवा–व्रतविशेषाः। आचा० १८२।

अणासायणाविणअ–अनाशातनाविनयः, उपचारविनयभेदः। दश० २४९।

अणासेवियं–अनास्वादितम्। आचा० ३२५।

अणाहपव्वज्जा–उत्तराध्ययनस्य विंशतितमाध्ययननाम। सम० ६४।

अणाहप्पाओ–अनाधात्मानौ। आव० ७१।

अणाहसाला–अनाथशाला–आरोग्यशाला। व्य० द्वि० ५७ आ। नि० चू० द्वि० ३८ आ।

अणाहसालालओ–अनाथशालालयः। आचा० ११९।

अणाहारो–अनिष्टं शोभनमपि न रोचते यदि अणाहारो भवति। नि० चू० द्वि० ५१ अ।

अणाहूय–अनाहूतः, अनित्यपिण्ड.,. अनभ्याहृतो वा, स्पर्धारहितः। भग० २९३। भग० २९४।

अणिंगालं–रागपरिहारेणेत्यर्थ. प्रश्न० ११२।

अणिंत–अनिर्गच्छन्। नि० चू० प्र० २५८ आ।

अणिंदियं–अनिन्दितं–शिष्टनिन्द्येन – स्वपरप्रशंसादिहेतुनाऽनुत्पादितम्। उत्त० ६६७।

अणिंदिआ–अनिन्दिता, अष्टमी दिक्कुमारी। जं० प्र० ३८३।

अणिंदिया–अनिन्दिता, अधोलोकवास्तव्या दिक्कुमारी। आव० १२१।

अणिंदिया–अनिन्द्रियाः अपर्याप्ताः, केवलिनः, सिद्धाः उपयोगतः। ठाणा० ३५५, ५१९।

अणिगणा–अनग्ना, अनग्ना नाम द्रुमगणाः। जं० प्र० ९९।

अणिगामसुक्खा–अनिकामसौख्याः–अप्रकृष्टसुखाः। उत्त० ४००।

अणिगिण–अनग्नत्वम्, नग्नत्वं तद्धेतुत्वादनग्ना इति। सम० १८।

अणिगूहंतो–अनिगूहन्, प्रकटयन्। आव० ५३४।

अणिगूहियबलविरिए–अनिगूहितबलवीर्यः, न निगूहिते बलवीर्ये येन सः बलं–शारीरं वीर्यं–आन्तरः शक्तिविशेषः। आव० २५९।

अणिग्गहो-अनिग्रह , अनिषेधो मनसो विषयेषु प्रवर्त्तमानस्य, अब्रह्मण एकादशं नाम। प्रश्न० ६६। स्वैर। प्रश्न० ३१।

अणिच्चं-अनित्यम् , न नित्यमस्थिरत्वात्। प्रश्न० ९६।

अणिच्चमावासं-अनित्यावास -मनुष्यादिभवस्तच्छरीरम्। आचा० ४२९।

अणिच्चाणुप्पेहा – अनित्यानुप्रेक्षा– जीवितादेरनित्यस्यानुप्रेक्षा। ठाणा० १९०।

अणिचेऊण-अ(न)र्चयित्वा। आव० १४६।

अणिच्छियत्ता-अनीप्सितता, आप्तुमनिष्टता। भग० २३। प्राप्तुमनभिवाञ्छितत्वम्। भग० २५३। प्रज्ञा० ५०४।

अणिच्छियव्वो-अनेष्टव्य , मनागपि मनसाऽपि न प्रार्थनीय। आव० ५७२, ७७८।

अणिज्जिण्णा-अनिर्जीर्ण , सामस्त्येनात्मप्रदेशेभ्योऽपरिशाटित। प्रज्ञा० ६०२।

अणिज्जुहियाअंसी-अनिर्यूढा-कुलविभागापि नान्यत्र नीतां शिक्षा। बृ० द्वि० १९९ आ।

अणिज्झापत्ता-अनिदर्पाय, चक्षुरन्धायार्थ। भग० ३१३।

अणिट्ठं-अनिष्टम् , सतामनभिलषणीयम्। आव० ५८९।

अणिट्ठत्ता-अनिष्टता, इष्टा-मनसा इच्छाविषयीकृता तद्विपरीता अनिष्टा तस्या भाव। प्रज्ञा० ५०४। अनिष्टता, इच्छाया अविषयता। भग० २५३।

अणिण्हवणं-अनपलाप। नि० चू० प्र० ९ अ।

अणितणा-वक्रदामिन। ठाणा० ५१७।

अणित्तिप-अनितिक -अविद्यमाननियतस्वरूप। भग० ४६९।

अणित्थंत्थं – अनित्थंस्थम् , इतीदंप्रकारमापन्नमित्थं, इत्थं तिष्ठतीति इत्थंस्थं, न इत्थंस्थं अनित्थंस्थमिति, केनचित्प्रकारेण लौकिकेनाप्यितमिति। आव० ४४५। नेत्थं तिष्ठतीति, अनियताकारम्। जीवा० २५।

अणित्थंथे-अनित्थंस्थं परिमण्डलादिव्यतिरिक्तम्। भग० ८५८, ८५९।

अणिदा-अनिदा-अनिर्द्धारणा। भग० ८४। चित्तविकला सम्यग्विवेकविकला वा। प्रज्ञा० ५५७।

अणिदाणो-अनिदान ,देवेन्द्रादैश्वर्याप्रार्थक। प्रश्न० १४७।

अणिद्देसं-अनिर्देश्यं। विशे० १५५।

अणिद्धरिय-(अणिज्जरेत) कम्म ण कारविज्जति। नि० चू० द्वि० १०६ अ।

अणिमिसच्छो-अनिमेषाक्ष ,निश्चलनयन। आव० ७८४।

अणिमिसनयणे-अनिमिषनयनम् , विकसितं नयनम्। भग० १७१।

अणिमिसा-अनिमेषा। आव० १२४।

अणिमिसे-अनिमिषा , मत्स्या। दश० १०२।

अणियं-अणिकं, अग्रम्-तुण्डम्। प्रश्न० ११५। अनीकं-कटकम्। उत्त० ४३८।

अणियट्ट-अनिवर्त्त., मोक्ष। आचा० १९३।

अणियट्टिबायरो-अनिवृत्तिबादर ,निवृत्तिबादरादूर्ध्वं लोभाणुवेदन यावत् भूतग्रामस्य नवमं गुणस्थानम्। आव० ६५०।

अणिअट्टी-भरते भविष्यजिन। सम० १५४।

अणियण-अनग्नकारणत्वादनग्ना-विशिष्टवस्त्रदायिन , संज्ञा शब्दो वाऽयमिति। ठाणा० ३९९।

अणियणो-अनग्न। आव० ११९।

अणियतो-अनियत , अनियमवान् , अनवस्थित। प्रश्न० २८।

अणियत्तो-अनिवृत्त। आव० ८२३।

अणियदरिसणं हयगजरथपदात्यनीकदर्शनम्। नि० चू० द्वि० ७१ अ।

अणियया-अनियता-अनिर्धारिता। प्रज्ञा० ३३९।

अणिया-अनिदा, अकारणम्। आचा० ३४। मेधाधारणेन्द्रियपाटवदेहायुर्वर्धनकारी। नि० चू० प्र० २५४ अ। अनाभोगत। सम० १४६।

अणियाणे-प्रार्थनारहित। भग० १२३।

अणियाहिवई– अनीकाधिपतय -गजादिसैन्यप्रधाना ऐरावतादय। ठाणा० ११७।

अणिलामयी-वातरोगिणी। बृ० द्वि० २९९ अ।

अणिलो-निल्लओ जस्स नत्थि। दश० चू० ५८।

अणिवारिए-अनिवारित , निषेधरहित। विपा० ७०।

अणिविट्ठ-कम्मं ण कारविज्जति। नि० चू० द्वि० १०६ अ।

अणिव्वणं-सचित्त। नि० चू० प्र० ४३ आ।

अणिसिट्ठं-अनिसृष्टं, बहुसाधारणं न सर्वैर्य दत्तं ददाति। प्रश्न० १०१। परिहारिकम्। नि० चू० प्र० १६१ आ। गृह

कर्तव्यं। ओघ० २१४। ठाणा० ४६०। भग० ४६६। नि० चू० तृ० १६ अ, ४८ आ। तत्स्वामिनाऽननुत्सकलितम्। आचा० ३२५। दोषविशेष। आचा० ३२९। साधारणं बहूनामेकादिना अननुज्ञातं दीयमानम्। ठाणा० ४६७। दोषविशेष। प्रश्न० १४४।

अणिसिद्धो-अनिषिद्ध, अनुपयुक्त। आव० २६७।

अणिस्सि(स्मि)अप्पा-अनिभृतात्मा, अनिदान। आव० ८४३।

अणिस्सिए-अनिश्रित, द्रव्यभावनिश्रारहित प्रतिबन्धविमुक्त। दश० २२३।

अणिस्सिओवहाणे-अनिश्रितोपधान, ऐहिकामुष्मिकापेक्षाविकल तप, योगसंग्रहे चतुर्थो योग। आव० ६६४। अनिश्रितं तप। प्रश्न० १४६।

अणिस्सितं-अनिश्रितम्। आव० ३५८। सर्वाशंसारहित। भग० ३८५।

अणिस्सिय-अनिश्रितम्, कीर्त्यादिनिरपेक्षम्। प्रश्न० १२६।

अणिस्सिय - अनिश्रितम्, कुलादिष्वप्रतिबद्धम्। दश० ७२।

अणिस्सेयस - अनिश्रेयस -अमोक्षाय। ठाणा० १४९। अकल्याणाय, अमोक्षाय। ठाणा० २९२। अकल्याणाय। ठाणा० ३५८।

अणिस्सो-अनिश्र -कस्यचित्संबन्धिनाऽवष्टम्भेन रहित। उत्त० ६३३।

अणिहय-अनिहत अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य तृतीयमध्ययनम्। अन्त० ३।

अणिहे-अनिभ, अमाय। दश० २६८। अनिह, परीषहोपसर्गैर्नहन्यत इति निह, न निह अनिह -उपसर्गैरपराजित इति। सूत्र० ६९। अस्निह -अष्टकर्मरहित, अराग -रागद्वेषरहित, भावरिपुभिरनिहत। आचा० १९०। स्निह्यत इति स्निह, न स्निह अस्निह -सर्वत्र ममत्वरहित इति। सूत्र० ६९। अवृद्धि। दश० चू० १०१।

अणीए-अनीकम्, सैन्यम्। भग० ८९।

अणीयजसे - अनीकयशा, नागस्य गाथापते कुमार। अन्त० ४।

अणीयसे - अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य प्रथममध्ययनम्। अन्त० ३।

अणीसट्ठं-हस्तमानावग्रहादनिःसृतम्। बृ० द्वि० २३९ अ।

अणीहारि-अनिर्हारि, तपोभेद। उत्त० ६००।

अणीहारिमे-अनिर्हरणाद् गिरिकन्दरादौ अनशनम्। ठाणा० ९४। जइ बहिं पडिबद्ध। नि० चू० द्वि० ५८ अ।

अणु - अनु-प्रतिदिवसम्। सूर्य० ११६, १११। थेवे। दश० चू० ८९। स्तोकप्रदेशम्। प्रज्ञा० २६३। पश्चाद्भावे स्तोके च। बृ० प्र० ३३अ,। स्तोकम्। प्रज्ञा ५०२। प्रमाणतो वज्रादि। दश० १४५। लघु, हीन। सूर्य० २६१। जं० प्र० ५२२।

अणुअतणुअ-अनुकतनुकानां-अतिसूक्ष्माणाम्। जै० प्र० २३७।

अणुओग - अनुयोग, अर्थकथनम् सूत्रादनु-पश्चादस्य योगोऽनुयोग सूत्राध्ययनात्पश्चादर्थकथनम्। अणोर्वा लघीयस सूत्रस्य महताऽर्थेन योगोऽनुयोग। आचा० २। व्याख्यान। ओघ० ७१।

अणुओगत्थो-अनुयोगार्थ, व्याख्यानभूतोऽर्थ। आचा० ७।

अणुओगदार - अनुयोगद्वारम्, सूत्रविशेष। आव० ७४०। अस्वाध्याये परिहर्तव्यसूत्रविशेष। नि० चू० तृ० ७१ आ०।

अणुओगदारे-अनुयोगद्वारम्, अनुयोगद्वारसूत्रम्। भग० ७२१।

अणुओगस्स-अनुयोगस्य। विशे० ५९३।

अणुओगो - अनुयोग, सूत्रस्यार्थेनानुयोजनम्, अभिधेये व्यापार सूत्रस्य योगो वा, अनुकूलोऽनुरूपो वा योग। आव० ८६, ठाणा० ४८१। निजेनाभिधेयेनार्थेनानुयोजनं-सम्बन्धनम्। विशे० ५९३। सूत्रपाठानन्तरमनु-पश्चात्सूत्रस्यार्थेन सह योगो-घटना। जीवा० २। अनुकूल -आविरोधी सूत्रस्यार्थेन सह योगो वा। जीवा० २। सूत्रस्यार्थेन सह सम्बन्धनं, अनुरूपोऽनुकूलो वा योगो व्यापार सूत्रस्यार्थप्रतिपादनरूप। अणो -लघो पश्चाज्जाततया वाऽनुशब्दवाच्यस्य योऽभिधेयो योगो-व्यापारस्तत्सम्बन्धो वाऽणुयोगो अनुयोगो वा। नं० प्र० ४। दृष्टिवादचतुर्थो भेद। सम० १२८। निशेग। आव० ६६४। अनुयानम्, अनुकूलो वा योग। अनु-सूत्रं, मश्चान

अर्थस्ततो महतोऽर्थस्याणुना सूत्रेण योगो वा। ओघ० ४। विचारः। ठाणा० ४८१, ४९५। अनुरूपोऽनुकूलो वा योगः। सम० १३१। अध्ययनार्थः। आव० ५४। सूत्रस्पर्शकनिर्युक्तिः सूत्रानुगमश्च। आव० ८६। परीक्षा। आव० १५७।

अणुकंपं-अनुकम्पां-उपष्टम्भम्। ठाणा० १७०।

अणुकंपओ-अनुकम्पकः-अनुरूपक्रियाप्रवृत्तिः। उत्त० ३५९।

अणुकंपा-अनुकम्पा, अनुग्रहः। दश० ६७। भक्तिः। ओघ० १९६। आव० ३४८। सम्यक्त्वगुणविशेषः। आव० ५९१। अनुक्रोशः। सम० १२७। दीनानाथविषयं दानम्। ठाणा० ४९६।

अणुकंपाए-अनुकम्पया-अनुग्रहेण। व्य० द्वि० १७२ आ।

अणुकंपे-अनुकम्पते, उपकुरुते। उत्त० ४१९।

अणुकड्ढइ-अनुकर्षयति। आव० २१८।

अणुकुपति-प्रच्छादयति, अणुक्षिप्ता। नि० चू० प्र० १८० अ।

अणुकुयितं-अरलथम्। बृ० द्वि० २५२ अ।

अणुकूला-संजमविषयकरा (राज्यार्पणादिकाः)। नि० चू० प्र० १६४ आ।

अणुक्कंतो-अनुक्रान्तः-अनुचीर्णः। आचा० ३०६।

अणुक्कमं-अनुक्रमः। आव० ३४२। पारम्पर्यम्। उत्त० १४७।

अणुक्कमंतो-अनुक्रम्यमाणः, प्रेर्यमाणः। सूत्र० १३६।

अणुक्कसाई-अनुत्कशायी, अणुकषायी, उत्कण्ठितः सत्कारादिषु शेत इत्येवं शील उत्कषायी, न तथा। यो न सत्कारादिकमकुर्वते कुप्यति, तत्सम्पत्तौ वा नाहङ्कारवान् भवति सः। उत्त० १२४। अणवः-स्वल्पाः सज्वलननामान इतियावत् कषायाः-क्रोधादयो यस्य। उत्त० ४२०।

अणुगच्छइ-अनुगच्छति, आगतो भवति। जं० प्र० १८७।

अणुगच्छण-अनुगमनम्, आगच्छतः प्रत्युद्गमनम्। दश० २४१।

अणुगच्छमाणो-अनुगच्छन्-अवगच्छन्-बुद्ध्यमानः सन्। आचा० २२२।

अणुगम-अनुगमः, अनुगमनमनेनास्मादस्मिन्निति वा अर्थकथनम्। आचा० ३। अन्वय। विशे० ९६४।

अणुगमणं-अनुगमनम्, आगच्छतः प्रत्युद्गमनम्। उत्त० १७।

अणुगमिओ-अनुगमितः, अनुनीतः। आव० ५५।

अणुगमो-अनुगमः, सूत्रार्थयोरनुरूपसंबंधकरणम्। विशे० ४३१। निक्षिप्तसूत्रस्यानुकूलः परिच्छेदोऽर्थकथनम्। जं० प्र० ५।

अणुगयं-अनुगतं, अनवच्छिन्नम्। प्रश्न० ९६। युक्तम्। दश० २०७। अभिप्रायानुवर्तिनमात्मानम्। उत्त० ३२२। युक्तः। उत्त० ६३१।

अणुगामं-अनुग्रामः, ग्राममार्गानुकूलः लघुर्वा ग्रामः, स्थित एकस्माद्वा ग्रामादन्यो ग्रामः। उत्त० ९९।

अणुगामियत्ताए-अनुगामिकता-परम्परया शुभानुबन्धसुखाय भविष्यति। जीवा० २४२।

अणुगीया-अनुगीता तीर्थकरादिभ्यः श्रुत्वा प्रतिपादिता। उत्त० ३८५।

अणुग्गह-अनुग्रहः, अनुग्रहपरिहरणा अक्खोडभंगपरिहरणा, (अकृष्टभूशुल्कपरिहारः) आव० ५५२। ज्ञानाद्युपकारः। ठाणा० १५५।

अणुग्गहकसिणं-*छण्हं मासाणं आरोवियाणं छद्दिवसा गता, ताहे अण्णो छम्मासो आवण्णो, ताहे जं तेण अद्धवूडे तं ज्झोसितं जं पच्छा आवण्ण छम्मासित तं वहति, एत्थ पंचमासा चउव्वीसं च दिवसा जेण ज्झोसिया।* नि० चू० तृ० १३५ अ।

अणुग्गहत्थं – अनुग्रहार्थं-अनुग्रहः – उपकारोऽभिधीयते, अथशब्दः प्रयोजनवचनः। ओघ० ४।

अणुग्गहपरिहारो-अनुग्रहपरिहारः-राजकृतानुग्रहवशेन एकद्वित्र्यादिवर्षमर्यादया यथोक्तरूपं खोडादिभंजनं एक द्वे त्रीणि वर्षाणि यावत् वसति, यावन्तं वा कालं राजानुग्रहः कृतस्तावन्तं कालं वसति, न च हिरण्यादि प्रददाति, नापि वेष्टिं करोति, न चापि चारभटादीनां भोजनादि प्रदानं विधत्ते, एष खोडादिभंगो। व्य० प्र० ४५ अ। तत्तियं कालं सो दव्वादिणु परिहरिज्जति तावत्कालं न दाप्यतेऽर्थः। नि० चू० तृ० ८९ आ।

अणुग्गहो-अनुग्रहः, उपकार। ओघ० ४।

अणुग्गामो-अनुग्राम, विवक्षितग्रामानन्तरो ग्रामः। औप० २२।

अणुग्घाई-अनुद्घातिमं-यत्र गुरुमासादि प्रायश्चित्तं वर्ण्यते। प्रश्न० १४५।

अणुग्घाडिया-अनुद्घाटिता, अगुप्ता। दश० ४१।

अणुग्घाता गुरवः। नि० चू० प्र० ८७ अ।
अणुग्घातियं-जं निरंतरं वहति गुरुं। नि० चू० प्र० ३०५ आ। गुरुतं। नि० चू० प्र० २५७ अ।
अणुग्घायं-आचारप्रकल्पस्य सप्तविंशतितमो भेद.। आव० ६६०।
अणुग्घायकसिणं-जं कालगं जहा मासगुरुगादि अहवा जं निरंतरं दागं एस मासलहुगादिपि निरंतरं दिज्जमाणं अणुग्घातं भवति। नि० चू० तृ० १३५ आ।
अणुग्घायण-अणोद्घातन-अणन्यनेन जन्तुगणश्चतुर्गतिकं संसारमित्यर्थं-कर्म्म तस्योत्-प्राबल्येन घातनम्-अपनयनम्। आचा० १४७।
अणुग्घायाणि-गुरूणि प्रायश्चित्तानि। बृ० तृ० ६७ अ।
अणुघट्टंता-अतृप्यन्तः। ओघ० ७८।
अणुघाइय-अनुद्घातं, न विद्यते उद्घातो-लघुकरणलक्षणो यस्य तपोविशेषस्य तत्, यथाश्रुतदानं, तदेषां प्रतिसेवा-विशेषतोऽस्ति ते। ठाणा० ३११।
अणुचरिया-चरिका, नगरप्राकारयोरपान्तराले। बृ० तृ० ५३ अ।
अणुचिण्णो-अनुचीर्णम्, आचरितम्। आव० २२७। अनुष्ठित। ओघ० १०३।
अणुचिंतणं-अनुचिन्तनम्, पर्यालोचनम्। आव० ५८९।
अणुचिन्नं-अनुचीर्णम्, सम्यक् तत्प्रत्यनीकमासंगशक्तिप्र-भोनिवर्तकसमभावप्रापया धर्ममेघनामकसमाधिरूपेण परिणमि-तम्। जीवा० ४। अनुचीर्णा-व्यायसगमागता सम्पाति-मादय.। आचा० २१७।
अणुचिय-अनुचित-भावित शैक्षो वा। बृ० द्वि० २३८ अ।
अणुजत्तं-अनुयात्रम्। उत्त० ३०४। अनुयात्रा, राजपा-टिका। आव० ७२०।
अणुजत्ता-अनुयात्रा। आव० ३६५।
अणुजाए-अनुजात., सदृश। सूर्य० २३३।
अणुजाणं-रथयात्रा। बृ० द्वि० १५५ अ। बृ० प्र० २५८ आ। व्य० द्वि० १७ आ।
अणुजाणपेक्खओ-अनुयानप्रेक्षक। आव० ५७७।
अणुजाणे-अनुजानन्। उत्त० २९३।
अणुजाते-पितृसम.। ठाणा० १८४।
अणुजायं-अनुयाने, सृतम्। जं० प्र० २१२।
अणुजीवंति-अनुजीवन्ति-तदुपार्जितद्रविणमुपभोगाः उप-जीवन्ति। उत्त० ४४१।
अणुजोगगत-तीर्थकरादिपूर्वभवादिव्याख्यानग्रंथो गण्डि-कानुयोगश्च भरतनरपतिवंशजानां निर्वाणगमनानुत्तरविमान-वक्तव्यताव्याख्यानग्रन्थ इति द्विधाऽनुयोगे गतोऽनुयोग-गतः। ठाणा० ४९१।
अणुजोगी-अनुयोगी-अनुयोगो-व्याख्यानं प्रश्नर्न वा। ठाणा० ३७५।
अणुजोगो-अणोः-लघो पश्चाज्जाततया वा अनुशब्दवाच्यस्य सूत्रस्य योऽभिधेये योगो-व्यापारस्तेन सम्बन्धो वा सो-ऽणुयोगोऽनुयोगो वेति। ठाणा० ३। अनु-पश्चाभावओ य थेवे य। बृ० प्र० ३३ अ। विचारः। सम० ५०। सूत्रस्यार्थेन सह सम्बन्धनम्, सूत्रस्यार्थप्रतिपादनस्य.। ठाणा० ३।
अणुज्जंगी-अनवद्याङ्गी, शिवादेवीविशेषणम्। उत्त० ४९९। श्रीमहावीरस्वामिन· सुता जमालेर्भार्या, प्रियदर्शनाऽपर-नाम। उत्त० १०१।
अणुज्जग्गमाणाइं-एकं रूपपतोऽनुजनि अपरं न तेषां ध्वनिकार्मेऽनुरयोगानीनविदनूजक्रियमाणानि। उत्त० ५४९।
अणुज्जता-ऋजुभावविरहिता। नि० चू० प्र० २८९ आ।
अणुज्जा-अनवद्याङ्गी, श्रीमहावीरस्वामिनो ज्येष्ठा भगिनी, सुदर्शनाऽपरनाम। उत्त० १०१। महावीरस्वामिन· पुत्री-नाम। आचा० ४२२।
अणुज्झियत्तं-वगाकत्वम्। बृ० तृ० २ आ।
अणुज्जुए-अनृजुक, कथिंजकर्मशक्यतया। उत्त० ६७६।
अणुज्जुकं-अनृजुकम्, वक्रम्, अधर्मद्वारस्य नवमं नाम। प्रश्न० २६।
अणुट्ठाणे-अनुयाने। ठाणा० ३३०।
अणुट्ठिएसु-अनुत्थितेषु-स्थावरादिषु। आचा० २५६।
अणुट्ठिया-अनुत्थिता, निविष्टा। आव० ७२७।
अणुट्ठिहंतो-अनुत्तिष्ठन्त। बृ० तृ० ४ अ।
अणुण्णवण-अनुज्ञापयति। ओघ० १९९।
अणुण्णवणाजयणा-वसत्याद्यनुज्ञापनदोषगुणा। नि० चू० तृ० १२ आ।
अणुण्णवेंति-अनुज्ञापयन्ति। आव० ११७।
अणुण्णासं-नासिकाविनिर्गतस्वरानुगतम्। जं० प्र० ४०।

अणुण्णेत्ता-अनुनीय-प्राप्य ध्यात्वा । सम० १२३ ।

अणुतडियमेय-अनुतटिकाभेदः, अवटतटभेदवद् यो भेदः । भग० २२४ ।

अणुतडियामेदे-अनुतटिकाभेदः, इक्षुत्वगादिकः । प्रज्ञा० २६७ ।

अणुत्तप्पो-लज्जनीय । नि० चू० प्र० २६६ आ ।

अणुत्तरं-अनुत्तरम्, सम्यक् । दश० १५९ । अनन्यसदृशः । आव० ६० । अनुत्तरं-सर्वसंयमस्थानोपरिवर्त्तिनं । उत्त० ३९३ । अनुत्तरां-सर्वलोकाकाशोपरिवर्त्तिनीमतिप्रधानां वा । उत्त० ३९२ ।

अणुत्तर-अनुत्तरम्, वृद्धिरहितम् । आचा० १४ ।

अणुत्तरणवासो-अनुत्तरणपाशः, आत्मनः पारतन्त्र्यहेतुतया पाशवत्पाशः, अनुत्तरणश्चासौ पाशश्च । उत्त० ४३ । अनुत्तरणवासः-न विद्यते उत्तरणं-पारगमनमस्मिन् सतीत्यनुत्तरणः, स चासौ वासश्च-अवस्थानम् । उत्त० ४३ ।

अणुत्तरनाणी-केवलज्ञानवान् । उत्त० २७० ।

अणुत्तरधरे-न विद्यते उत्तरमन्यत्प्रधानमेषामिति । उत्त० ३५७ ।

अणुत्तरधरो-अनुत्तरधरः, न विद्यते उत्तरं-अन्यत्प्रधानमेषामित्यनुत्तराः, ते च प्रकमात्प्रकर्षप्राप्ता ज्ञानादय एव गुणास्तान् धारयतीति । अनुत्तरान् गुणान् धारयतीति वा । उत्त० ३५७ ।

अणुत्तरविमाणे-नैषामन्यान्युत्तराणि विमानानि सन्ति इति अनुत्तरविमानानि । अनु० ९२ ।

अणुत्तरे - स्थित्यादिभिः सकलनरकज्येष्ठेऽप्रतिष्ठान इति । उत्त० ३९२ ।

अणुत्तरो-अनुत्तरः-न विद्यन्ते उत्तरा-प्रधानाः स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्यादिभिरेभ्योऽन्ये देवाः । उत्त० ७०२ ।

अणुत्तरो-अनुत्तरः, कृष्णवासुदेवागमनम् । आव० १६३ । अचल १ विजयभद्र २ बलदेवत्रयागमनम् । आव० १६३ ।

अणुत्तरोववाइय-अनुत्तरोपपातिकम् । भग० २२२ ।

अणुत्तरोववाइया-अनुत्तरोपपातिकाः । प्रज्ञा० ६९ ।

अणुदिन्नं-(अनुदीर्णम्) । भग० ५८ ।

अणुदिसा-अनुदिशः, प्रतिदिशः । दश० २०१ । एकप्रदेशा अनुत्तराः (दिक्कोणाः) । ठाणा० १२२ ।

अणुद्दिट्ठो-अनुद्दिष्टः, यावन्तिकादिभेदवर्जितः । प्रश्न० १०८ ।

अणुद्धरी-अनुद्धरी, आत्मदोषोपसंहारविषये द्वारवत्यामर्हमित्रश्रेष्ठिभार्या । आव० ७१४ ।

अणुद्धुअ - अनुद्धूताम्, आनुरूप्येण यथामार्दङ्गिकविधि उद्धूता-वादनार्थमुत्क्षिप्ता । जं० प्र० १९४ ।

अणुधम्मो-अनुधर्मः । सूत्र० ३९९ ।

अणुनई-अनुनदि, नदीं नदीं प्रति । आव० ४५२ ।

अणुनवतं-अनुज्ञातम् । ओघ० १६० ।

अणुनाओ-अनुज्ञातः । ओघ० २१५ ।

अणुनासं-सानुनासिकं नासिकाकृतस्वरम् । ठाणा० ३९६ ।

अणुन्नया-अनुन्नया-नोर्ध्वमुखा । व्य० द्वि० २३७ आ ।

अणुन्नवणा-अनुज्ञापना, वन्दनके द्वितीयं स्थानम् । आव० ५४८ ।

अणुन्नविय - अनुज्ञापितः । आचा० ४२६ । अनुज्ञाप्य-याचित्वा । आचा० ३३८ ।

अणुन्नवेमाण - तत्स्वजनादीस्तत्परिष्ठापनायानुज्ञापयन्तः । ठाणा० ३५४ ।

अणुन्ना-अनुज्ञा, अनुमोदनम् । सूत्र० ३२९ । सूत्रार्थयोरन्यप्रदानम् । व्य० प्र० २६ अ । अधिकारदान । ठाणा० १३९ ।

अणुन्नायं-अनुज्ञातम्, भोग्यतयैव वितीर्णम् । प्रश्न० १०२ ।

अणुपभु - जुवराया, सेणावति । नि० चू० प्र० १७४ आ । सेनाधिपति । बृ० प्र० ९०आ ।

अणुपरियन्ति-अनुपरियन्ति, सातत्येन पर्यटन्ति । उत्त० २९६ ।

अणुपरिवट्टइ - अनुपरिवर्त्तयते, आत्मनश्चावयते । सूर्य० १०७ ।

अणुपरिवट्टिय - अनुपरिवर्त्त्य, प्रादक्षिण्येन परिभ्रम्य । जीवा० ३७५, ३९९ ।

अणुपरिहारी-जतो जतो परिहारी गच्छति ततो ततो अणुपिट्ठतो गच्छति । अणु-थोवं पडिलेहणादि साहेज्जं करेतीति । नि० चू० तृ० ११२ आ ।

अणुपविट्ठे अनुप्रविष्टः-तदुदयवर्ती । ठाणा० २११ ।

अणुपस्सओ-अनुपश्यतः-पर्यालोचयतः । उत्त० २१० ।

अणुपासं-कम्मं ण करावेज्जतिति । नि० चू० द्वि० १०६ अ ।

अणुपालइत्ता-अनुपाल्य-सततमासेव्य । उत्त० ५७२ ।

अणुपालणा-अनुपालना, अनु० विशुद्धि, प्रत्याख्यानशुद्धया पञ्चमो भेद । आव० ८४७ ।

अणुपालणासुद्ध-अनुपालनाशुद्धं-कान्तारादिषु न भग्नं यत्प्रत्याख्यानम् । ठाणा० ३४९ ।

अणुपालिय-अनुपालितं, पूर्वकालस धुमि पालितत्वाद्विप क्षिनमाधुभिधानु-पश्चात्पालितमिति । प्रश्न० ११३ ।

अणुपालिया-आत्मसयमानुकूलतया पालिता । ठाणा० २४० ।

अणुपालेइ-अनुपालयति । भग० १२१ ।

अणुपालेमि अनुपालयामि, पौन पुन्यकरणेन । आव० ७६१ ।

अणुपिट्ठिं-अनुपूर्व्या । सम० ६८ ।

अणुपुव्वसोअनुपूर्वेत, क्रमेण । उत्त० २९२ । आनुपूर्व्या० क्रमेण । उत्त० ५१८ ।

अणुपुव्वि-अनुपूर्वी, मूलादिपरिपाटी । ज० प्र० २१ । शास्त्रीयोपक्रमभेद । आचा० ३ ।

अणुपुव्विविहारीण – अनुपूर्वं वहारिणा-प्रतिपालितदीर्घसंयमानां शास्त्रार्थग्रहणप्रतिपादनोत्तरकालमवसीदत् सयमाध्ययनाध्यापनक्रियाणां शिष्यादितशिष्याणामुत्सर्गेण द्वादशसंवत्सरसंलेखनाक्रमसंलिखितदेहानां । आचा० २६० ।

अणुपुव्वेण-आनुपूर्व्या-यथेष्टकालावश्यकक्रियारूपया चतुर्थषष्ठाचाम्लादिकया । आचा० २८४ । अनुक्रमेण-परिपाट्या यौगपद्येन । आचा० २४१ ।

अणुपुव्वो-अनुपूर्वे, पूर्वस्या पूर्वस्या अनु । जीवा० २७० ।

अणुपेहा-अनुप्रेक्षा, अनु-पश्चाद्भावे प्रेक्षा पेक्षा, स्मृति, ध्यानाद्भ्रष्टस्य चित्तचेष्टा । आचा० ५८३ ।

अणुपेहे-अनुगुणनं करोति । ओघ० ८४ ।

अणुप्प-अनर्प्य-अनर्पणीय, अढौकनीय । ठाणा० ४६५ ।

अणुप्पगंथे-अनूरूपतया-औचित्येन विरलेनैवपुण्योदयाद्गुरवि वा-सूक्ष्मोऽप्यल्पोऽपि ग्रथतो ग्रन्थो-धनादिर्यस्य यस्माद्वा । ठाणा० ४६५ ।

अणुप्पदाउ-अनुप्रदातु-परंपरकेण प्रदातुम् । व्य० प्र० २१७ आ ।

अणुप्पवाए-अनुप्रवाद पूर्वविशेष । उत्त० १६३, विशे० ५६१ ।

अणुप्पवादपुव्वं-अनुप्रवादपूर्वम् । आव० ३१६ ।

अणुप्पविसे-अनुप्रविशेत, मनसि स्वभावपदो भवेत् । उत्त० ९९ ।

अणुप्पसूयाइं-अनुप्रसूता-आश्रिता । आचा० ३४८ ।

अणुप्पियं अनुमतम् । बृ० द्वि० १ अ ।

अणुप्पेच्छा-अविहला । उत्त० मा० १४० ।

अणुप्पेह-धर्मध्यानस्य पश्चात्प्रेक्षणानि-पर्यालोचनान्यनुप्रेक्षा । भग० ९२६ ।

अणुप्पेहा-मनसा । बृ० द्वि० ५४ आ । अनुप्रेक्षा, अर्हद्गुणानां मुहुर्मुहु सततमनुचिन्तना । आव० ७८६ । यो मनसा परिवर्तयति, न वाचा । दश० ३२ । ध्यानोपरमकालभाविनी अनित्यत्वाद्यालोचनारूपा । आव० ५९० । सूत्रार्थानुस्मरण ध्यानस्य पश्चात् पर्यालोचनानि, भावना । ठाणा० १९० । सूत्रवदर्थेऽपि सम्भवति विस्मरणमत सोऽपि परिभावनीय इत्यनुप्रेक्षण, चिन्तनिका । ठाणा० ३४९ । ग्रन्थार्थयोचिन्तनम् । ओघ० १८९ ।

अणुफासे अनुस्पर्श, अनुभाव । दश० १९८ ।

अणुफासो-अनुभवो । दश० चू० ९६ ।

अणुबंध अनुबन्ध, निरन्तरम् । ओघ० १०८ । सन्तानभावेन प्रवृत्ति । ज० प्र० १२५ ।

अणुबंधो-विवक्षितपर्यायेणाव्यवच्छिन्नेनावस्थानम् । भग० ८०८ । सातत्येन भवन तन्मरणानाम् । उत्त० २३९ ।

अणुबद्ध-अनुबद्धम्, सन्ततम् । आव० २३८ । ठाणा० ४३७ ।

अणुबद्धरोसपसरो-अनुबद्ध-सन्तत, कोऽर्थ ?-अव्यवच्छिन्नो रोषस्य-क्रोधस्य प्रसरो-विस्तारोऽस्येति अनुबद्धरोषप्रसर । उत्त० ७११ ।

अणुबद्धा-सन्ततमालिंगिता सम० १२६ ।

अणुबल-अनुबलम् । उत्त० १७८ ।

अणुब्भडो-अनुद्भट, अनुल्बण । जीवा० २७५ । उत्त० ५८७ ।

अणुभवणसण्णा-अनुभवनसञ्ज्ञा, आहाराद्या । आचा० १२ ।

अणुभवो-अनुभव, स्वेन स्वेन रूपेण प्रकृतिना विपाकतो वेदनानुभव । विशे० १००६ ।

अणुभाग – अनुभागः, आयुर्द्रव्याणामेव विपाकः। भग० २८०। अचिन्त्या शक्तिर्वैक्रियकरणादिका। ठाणा० ६९, १४४।

अणुभागकम्मे – अनुभागकर्म-कर्मप्रदेशानां संवेद्यमानता-विषयो रसस्तद्रूपं कर्म। भग० ६५।

अणुभागो–अनुभागः, विशिष्टवैक्रियादिकरणविषयाऽचिन्त्या शक्तिः। जीवा० १०९। सामर्थ्यम्। प्रज्ञा० ८८।

अणुभावकम्मे–यथाबद्धरसो वेद्यते तदनुभावतो वेद्यं कर्मा-नुभावकर्मेति। ठाणा० ६६।

अणुभावनामनिहत्ताउए – अनुभावनामनिधत्तायुः–अनु-भावः–प्रकर्षप्राप्तो विपाकः, तत्प्रधानं नाम, यस्मिन् भवे तीव्रविपाकं नामकर्मानुभूयते त(य)था नारकायुषि अशुभ-वर्णगन्धरसस्पर्शोपघातानादेयदु:स्वरायशःकीर्त्यादिनामानि तदनुभावनाम तेन सह निधत्तमायुरनुभावनामनिधत्तायुः। प्रज्ञा० २१८।

अणुभावे–अनुभावः, विपाको रसविशेषः। भग० ३५। तीव्रतमदुःखादिः। आव० ४९६। अनुभावः। सूर्य० २७९। विपाक उदयो रस इत्यर्थः। ठाणा० ४१४।

अणुभावो–अनुभावः, माहात्म्यम्। सूत्र० १२६। विपाकः। प्रज्ञा० २१८। स्वभावः, स्वरूपम्। जं० प्र० २९९। तीव्रादिभेदो रसः। सम० १०। शापानुग्रहसामर्थ्यम्। उत्त० ३६५। प्रभावः। जं० प्र० २४६। रसः, विपाकः। विशे० ५६५। कारणम्। जीवा० ३३९। विपाकोदयः। जीवा० १३०। सामर्थ्यादिलक्षणः। आव० ५९६। विपाकः। आघ० ५९८। रसः। उत्त० २३०।

अणुभासइ–अणुभाषते। आव० ३११।

अणुभासणा–अनुभाषणा, प्रत्याख्यानशुद्धिः। आव० ८४७।

अणुभासमाण–अनुभाषमाण। विशे० १००५।

अणुमए–अनुमतम्, मानितम्। भग० १२२। बाह्यव्या-घातस्य पश्चादपि मतः। भग० ४६८।

अणुमओ–अनुमतः, अभिप्रेतो मोक्षाङ्गता। आव० ३२६। अभिप्रेता। बृ० प्र० २८९ आ।

अणुमणा–शीघ्रम्। (आउ०)

अणुमतं–अनुमतं, वैगुण्यदर्शनस्यापि पश्चान्मतम्। औप० ९६।

अणुमत्रा–अनुमतिः। बृ० तृ० १२८ अ।

अणुमयं–अनुमतम्, अभिमतम्। औप० ६४। अनु-मतः–सम्मतः। जीवा० २०६।

अणुमया–अनुमता, अनुज्ञाता। प्रज्ञा० २५७। विप्रियद-र्शनस्य पश्चादपि मता। विपा० ४२।

अणुमहत्तरो – मूलमहत्तरे असण्णिहिते जो पुच्छणिज्जो धुरे ठायति सो। नि० चू० प्र० १५८ आ।

अणुमहयरो–मूलमहत्तराभावे प्रष्टव्यः पुरःस्थानश्च। बृ० द्वि० १९० आ।

अणुमाणं–अनुमानम्, स्वार्थम्। आव० ४२७। दृष्टान्तः। दश० १३०, १२६।

अणुमाणइत्ता–लघुतरापराधनिवेदनेन मृदुदण्डादित्वमाचा-र्यस्याकलय्य यदालोचनम्। भग० ९१९। अनुमानं कृत्वा। ठाणा० ४८४।

अणुमाणे–अनुमानम्, अनु–लिङ्गग्रहणसम्बन्धस्मरणादेः प-श्चान्मीयतेऽनेनेत्यनुमानम्। भग० २२२। अन्विति–लिंग-दर्शनसम्बन्धानुस्मरणयोः पश्चान्मानं – ज्ञानमनुमानम्। ठाणा० २५४।

अणुमाणेउं – अनुमान्य, सम्यक् क्षमयित्वा। व्य० प्र० २५४ आ।

अणुमोदणे–माइज्जणामेओ। नि० चू० प्र० १०३ आ।

अणुम्मुयंतो–अनुन्मुञ्चन्, अपरित्यजन्। आव० ४०७।

अणुयत्तंत–अनुवर्त्तयन्। आव० ३०५।

अणुया–अणुकाः। दश० १९३।

अणुयाणं–रथयात्रा। बृ० तृ० ६१ आ। पडिमातिमहिमा। नि० चू० प्र० २३९ आ।

अणुयोगं–अनुयोगो, व्याख्यानं विधिप्रतिषेधाभ्यामर्थप्ररूप-णम्। विशे० २।

अणुरंगा–गड्डीए। नि० चू० प्र० ३२४ अ। घंसिका, यान-विशेषः। बृ० द्वि० १२५ आ।

अणुरंगिणी–अनुरङ्गिनी, अनुरज्यते–अनुकारं विदधातीत्येवं-शीला। जं० प्र० ५१८। सूर्य० १३६।

अणुरत्तो–धंसिओ। नि० चू० तृ० १७ आ।

अणुरत्ता–अनुरागः – भावतः प्रतिबन्धः। उत्त० ३९४। अन्तरप्रतियोगतः परस्परस्नेहवन्तौ। उत्त० ७२१। अनु-रक्ताः–सततं प्रतिबद्धाः। उत्त० ७०८।

अणुरागो–अनुरागः। आव० ३०४।

अणुरागयं–अन्वागतम्, अनुस्मागतम्। भग० ११७।

अणुराधा–अनुराधा, नक्षत्रविशेषः। सूर्य ११०।

अणुराहा–नक्षत्रविशेषः। ठाणा० ७७।

अणुलिंपइ–अनुलिम्पति। जीवा० २५४।

अणुलिंपणं–अनुलिम्पनं–मकृल्लिप्ताया भूमेः पुनर्लेपनम्। प्रश्न० १२७।

अणुलिंहंतं – अनुलिम्पत्, अभिलङ्घयत्। सूर्य० २६४, जीवा० ३७९, जं० प्र० २९७। अनुलिम्पत्–अतिलङ्घयत्। प्रज्ञा० ९९।

अणुलिहति–अनुलिखति, अभिलङ्घयति। जीवा० २०९।

अणुलेवणं – अनुलेपनम्, सकृल्लिप्तस्य पुनः पुनरुपलेपनम्। प्रज्ञा० ८०।

अणुलोमं–अनुलोमम्, अनुकूलमनुगुणं वा। जीवा० ३। अनुकूलकरणम्०। ठाणा० ३७६।

अणुलोमछाया–अनुलोमच्छाया, सूर्यच्छायाविशेषः। सूर्य० ९५।

अणुलोमणा–अनुलोमना–प्रज्ञापना। बृ० तृ० १२३ आ।

अणुलोमवाउवेगो – अनुलोमवायुवेगः। अनुलोमः–अनुकूलो वायुवेगः, शरीरान्तर्वर्तिवातजयो यस्य सः। वायुगुल्मरहितोदरमध्यप्रदेशः। जीवा० २७७।

अणुलोमिअ–अनुलोमम्, मनोहारि। दश० २२३।

अणुलोमियं–कटुकपरिमादिदोषवर्जियं जं भासमाणो अभामओ लभइ। दश० चू० ११५।

अणुल्लय–द्वीन्द्रियविशेषः। उत्त० ६९५।

अणुल्लसिओ–अभिद्यमानः। आव० ६२१।

अणुल्लावे–अनुलाप–पौनःपुन्यभाषणम्। ठाणा० ४०८।

अणुवउत्तो – अनुपयुक्तः, साधुः प्रत्यवदत्तावधानः। ओघ० २३।

अणुवकयं–अनुपकृतम्, परैरवर्तितम्। आव० ५९७।

अणुवघाइए – अनुपघातिके–उपघातश्च यत्र न भवति वृक्षाहादि तस्मिन्। ओघ० १२२।

अणुवघाइया – आचारप्रकल्पस्य षड्विंशतितमो भेदः। सम० ४७।

अणुवचओ – अनुपचयः, अनुपचीयमानता, अनुपादानमिति। उत्त० ६।

अणुवट्टंते – अनुपतिष्ठति, अरुचमाणे अरुजंते। ओघ० १४५।

अणुवट्टावणीया–अनुवर्तनीया। ओघ० १३४।

अणुवट्टेति–करोति। भग० ३२०।

अणुवत्त–अनुवृत्तः–भूयः प्रवृत्तो वाद्वयं प्राणः। व्य० द्वि० ४४१ अ।

अणुवत्तइ–अनुवर्तते। आव० ५६१।

अणुवत्ति–अनुवृत्तिः–सर्वेषु अर्थेषु अप्रतिकूलता। बृ० प्र० ४३ अ।

अणुवत्तिओ–अनुवर्तितः। आव० १११। परिगृहीतो महाजनेन। व्य० द्वि० ४४१ आ।

अणुवत्तिया–परिवेष्टिता। नि० चू० प्र० १८४ आ।

अणुवत्ती–अनुवृत्तिः। आव० ५१५।

अणुवत्ते–अनुवर्तमानः–साम्प्रतकालभावी। दश० ६२।

अणुवदिट्ठं – जं णो आयरियपरंपरागतं मुत्कलव्याकरणवत्। नि० चू० द्वि० २३ आ।

अणुवदेसा–अनुपदेशः–गुरुणाऽनुक्तः। ओघ० १५३।

अणुवभुज्जो – संगकामवपिशितादिराहारः, शुषिरतृणवल्कलादिरुपधिः। बृ० तृ० ४७ अ।

अणुवमा–अनुपमा। जीवा० २७८।

अणुवयमाणा–अनुवदत्–अनु–पश्चाद्वदतः प्रवृत्तो वदनोऽन्येन वा मिथ्यादृष्ट्यादिना कुशीला इत्येवमुक्तः। आचा० २५१।

अणुवयारं–निष्ठुरं। नि० चू० प्र० २७८ अ।

अणुवरय–अनुपरतम्, अविरतम्। भग० १८१।

अणुवरयकाइया – अनुपरतकायिकी–देशतः सर्वतो वा सावद्ययोगाद्विरतः नोपरतोऽनुपरतः कुतश्चिदप्यनिवृत्त इत्यर्थः तस्य कायिकी। प्रज्ञा० ४३६।

अणुवरयकायकिरिया–अनुपरतस्य–अविरतस्य सावद्यात् मिथ्यादृष्टेः सम्यग्दृष्टेर्वा कायक्रिया–उन्क्षेपादिलक्षणा, कर्मबन्धनिबन्धनम्। ठाणा० ४१।

अणुवसंते–अनुपशान्तः, उदयावस्थः। प्रज्ञा० २९१।

अणुवसंपज्जमाणगती – अनुपसम्पद्यमानगतिः, परस्परमुपष्टम्भरहितानां पथि गमनं, विहायोगतेश्चतुर्थो भेदः। प्रज्ञा० ३२७।

अणुवसु–अनुवसु–सरागः श्रावकश्च। आचा० २४७।

अणुवाए–अनुपातः, अनुसारः। प्रज्ञा० १४४। अनुगमनं–अनुरागः उत्त० ६३१।

अणुवायगइए–अनुपातगतिः–अनुसारगतिः। सूर्य० १६

अणुवालय-गोशालकश्रावकविशेष । भग० ३७० ।

अणुवासग-अनुपासक मिथ्यादृष्टि । नि० चू० द्वि० २५ अ ।

अणुवासणा-अनुवासना, अपानेन जठरे तैलप्रवेशनम् । विपा० ४१ ।

अणुविचित्तिबुद्धि-अनुचिन्तिबुद्धि-अनुपाताकारबुद्धि । विशे० १८९८ ।

अणुविद्ध-अनुविद्ध-मिश्रा व्याप्ता । जं० प्र० १९३ ।

अणुवीइ-अनुवीचि, आनुकूल्यम्, मैथुनाभिलापम् । सूत्र० १११ । अनुचिन्त्य विचार्य सम्यग्मिश्रित्य । आचा० ३८६ । आलोच्य । दश० २२१ ।

अणुवीइनिट्ठाभासि - अनुविचिन्त्य निष्ठाभाषी-विचार्य निश्चितभाषक । आचा० ३९२ ।

अणुवीइभासय-अनुविचिन्त्यभाषक, पर्यालोच्य भाषक, द्वितीयव्रतस्य द्वितीया भावना । आव० ६५८ ।

अणुवीति-चिंतेऊण । नि० चू० प्र० १०० अ ।

अणुवीयि-पुव्वि बुद्धीए अणुचितिय । दश० चू० ११५ ।

अणुवूहेता-अनवहयिता-परेण स्वस्य क्रियमाणस्य तस्या नुमोदयिता, तद्भावे हपकारी । ठाणा० ३८९ ।

अणुवेलंधर लवणसमुद्रशिखारक्षक । सम० ३३ ।

अणुवेलंधरराया-अनुवेलन्धरराजा, भुजगेन्द्र । जीवा० ३१२ ।

अणुवेलंधरनागरातीण-अनुवेलंधरनागराजा-नागजाति विशेष । ठाणा० २२८ ।

अणुवेहसलागा-शस्त्रविशेष । नि० चू० द्वि० १८ अ ।

अणुव्वट्टे-अनुवर्त्तयन, तत्रस्थ एव । आव० ३३९ ।

अणुव्वणो-अगर्वित । बृ० तृ० ४ अ ।

अणुव्वत्त-अनुव्रतम् । आव० ८३३ ।

अणुव्वत्ता-अनुव्रतानि-अनु-महाव्रतकथनस्य पश्चात्तत्प्रतिपत्तौ यानि व्रतानि कथ्यन्ते तानि, अथवा सर्वविरतापेक्षया अणो लघोर्गुणिनो व्रतानि । ठाणा० १९१ ।

अणुव्वय - अनुवर्तिनी, परिणामविवृद्धिदृष्टान्ते भार्या आव० ४३६ । अनिविति-कुलानुरूपं व्रतम्-आरोऽस्या अनुव्रता पतिव्रता इति पर्योऽनुरूपा वा । उत्त० ४७१ । अनुव्रतं-स्थूलप्राणातिपातनिवृत्ति दश० १९० ।

अणुव्वाण-अनाव्या(म्या)नं-स्निग्धम् । आव० १७१ ।

अणुव्विग्गो-अनुद्विग्न -प्रशान्त परीषहादिभ्योऽबिभ्यत् । दश० १६३, १७९ ।

अणुसंचरे - अनुसंचरे, अन्विति-लक्षीकृत्य सञ्चरे -त्व सम्यक् सममाध्वनि यायात् । उत्त० ४४६ ।

अणुसंसरइ-अनुसंसरति दिग्विदिशा गमन भावदिगागमन वा स्मरति वा । आचा० २० ।

अणुसज्जइ-अनुसजति, सन्त तेनानुवर्त्तते । जीवा० २८४ ।

अणुसज्जणा-अनुसर्जना । आव० १५७ । अव्यवच्छेद करोति । उत्त० ५८४ । अनुवत्तना । बृ० प्र० २८९ अ ।

अणुसज्जमाणा अनुसजत सन्तानेनानुवर्तमाना । जं० प्र० ३५५ ।

अणुसज्जित्था-अनुसक्तवन्तः पूर्वकालात्कालान्तरमनुवृत्त वन्त । भग० २७८ ।

अणुसज्जित्था - अनुसक्तवान्त कालात्कालान्तरमनुवृत्त यत सन्ततिभावेन भवति स्म । जं० प्र० १२८ ।

अणुसट्ठ अनुशिष्ट उत्कलनम् । बृ० प्र० १९९ अ ।

अणुसट्ठि - अनुशासनम्-अनुशास्ति सद्गुणोत्कीर्तनेनोपबृहणम् । दश० ६६ । धम्मकहा । नि० चू० द्वि० १०० अ ।

अणुसट्ठी उवदेसपदाण, थुनिकरण वा । नि० चू० तृ० १३४ आ । सद्भावपुरस्सर प्रज्ञापना । बृ० द्वि० ८७आ । उवदेसो । नि० चू० प्र० २०७ आ । ५१ अ । इहलो कापायदर्शनम् । बृ० द्वि० १०३ अ । अनुशासनम् । ठाणा० १५५ ।

अणुसम-अनुसमा-अनुरूपा, अविषमा । ठाणा० ४५० ।

अणुसमय-समयमाश्रित्य । उत्त० २३१ । अनुसमय प्रतिक्षणम् । सूर्य० ८० । भग० २० । सततम् । उत्त० २३५ ।

अणुसया अनुशय -पश्चात्ताप । जं० प्र० १२३ ।

अणुसार-अनुस्मारवदनुस्वारम् । विशे०-२७४ । अनक्षर मपि यदनुस्वारवदुच्चार्यते हुकारकरणादिवत्, सत् । आव० २५ । अलाक्षणिक सुखमुखोच्चारणार्थं । दश० ८६ ।

अणुसासणाणि - अनुशासनानि-दु स्थस्य सुस्थतासम्पादनानि । सम० ११८ । शिक्षणम् । उत्त० २६७ ।

अणुसासम्मि-अनुशासित । उत्त० ५५३ ।

अणुसासिज्जंतो अनुशास्यमान, तत्र तत्र चोद्यमान । दश० २५६ ।

अणुसिट्ठी–अनुशासनमनुशास्ति.–सद्गुणोत्कीर्तनेनोपबृंहणं सा विधेयेति यत्रोपदिश्यते सा। ठाणा० २५१। अनुशिष्टिः–उपदेशप्रदानम्। व्य० प्र० ११७ अ। शिक्षाम्। उत्त० ३२३। धर्मकथाम्। ओघ० ७३।

अणुसूयगा – अनुसूचका'–नगराभ्यंतरे चारमुपलभन्ते, सर्वमनुसूचकेभ्यः कथयंति। व्य० प्र० १७० आ।

अणुसूयत्तं–अपरशरीराधिततता, परनिश्रा। सूत्र० ३५७। अनुस्यूतत्वं–परनिश्रया कृष्यादित्वम्। सूत्र० ३५७।

अणुसोयचारी – अनुश्रोतश्चारि–प्रतिश्रयादारभ्य भिक्षाचारी। ठाणा० ३४२। नद्यादिप्रवाहगामी। ठाणा० २७२।

अणुस्सासिय–अनुच्छ्वसत्। दश० ११।

अणुस्सियत्त–अनुत्सिक्तत्वम्–अनुद्धतत्वम्। उत्त० ५६१।

अणुस्सुयं–अनुश्रुतम्–अवधारितम्। उत्त० २४७।

अणुस्सुयत्तं–अनुत्सुकत्वम्–विषयसुखं प्रति निःस्पृहत्वम्। उत्त० ५८६।

अणूया–अनूपः, सजलप्रदेशः। विशे० ७२७।

अणेगचित्ते–अनेकचित्त, अनेकानि चित्तानि कृषिवाणिज्यावलगनादीनि यस्यासौ, खलुरवधारणे, संसारसुखाभिलाष्यनेकचित्त एव भवति। आचा० १६३। अनेकसङ्ख्यानि चञ्चलतया चित्तानि–मनांसि यासां सा। उत्त० २९७।

अणेगगुणा–अनेकगुणा –अनेकप्रकारा। बृ० प्र० ७५ अ।

अणेगतालाचराणुचरियं – नानाविधप्रेक्षाचारिसेविताम्। भग० ५४४।

अणेगदव्वो–अनेकद्रव्य। विशे० ४२४।

अणेगपत्ती–अनेकपत्नी। आव० ९५।

अणेगरूवधुणा–बहूनि वस्त्राणि एकीकृत्य धुनाति। ओघ० ११०।

अणेगरूवधुणे – अनेकरूपा चासौ सङ्ख्याश्रयातिक्रमणतो युगपदनेकवस्त्रग्रहणतो वा धुनना च प्रकम्पनात्मिका अनेकरूपधूनना। उत्त० ५४२।

अणेगवासानउयं–अनेकवर्षनयुत, अनेकवर्षाणां–असङ्ख्येयवत्सराणां नयुतं–सङ्ख्याविशेषम्। उत्त० २७७।

अणेगावाती–परस्परविलक्षणा एव भावा इति वादिनः। ठाणा० ४२५।

अणेलिसं–अनीदृश–अनन्यसदृशम्। आचा० ४२९।

अणेव्वाणी – जाहे ताणि गुरादीणि ण लब्भंति ताहे तेसिं अभावे परमं दुक्खं समुप्पज्जतित्ति, मोक्खऽभावो वा। दश० चू० ८८।

अणेसणा–अनेषणा–भिक्षादोषविशेषः। आव० ५७५।

अणेसणिज्जं–अनेषणीयम्–आधाकर्मादिदोषदुष्टम्। आचा० ३२१।

अणोक्कंता–अनुपक्रान्ता–अनिराकृता। औप० ३४।

अणोघसिअ–अनिर्मार्जनम्। ब० प्र० ५७।

अणोज्जा–अनवद्या, स्वामिदुहिता। आव० ३१२।

अणोतप्पया–अलज्जनीयता। बृ० प्र० ३०९ आ।

अणोदरया–अपारा (सं०)

अणोमदंसी–अवमं–हीनं मिथ्यादर्शनाविरत्यादि तद्विपर्यस्तमनवमं तद्द्रष्टुं शीलमस्येत्यनवमदर्शी, सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रवान्। आचा० १६४।

अणोमाणं–अपमानं अनादरकृतं न भवति। ओघ० १०२।

अणोरपारं–अनर्वाक्पारम्–विस्तीर्णस्वरूपम्। प्रश्न० ६२। अनाद्यपर्यवसितम्। आव० ६०१। अर्वाग्भागपरभागवर्जितमनाद्यनन्तम्। सूत्र० ४०३। अनर्वाक्पारमिव महत्त्वादनर्वाक्पारम्। प्रश्न० ५१। देशीवचनं, प्रचुरार्थे, आराद्भागपरभागरहिते। आव० ३४५। (भक्त०)

अणोलहविज्जंतो–अविध्यापितः। आव० ३८४।

अणोवणिहिआ – अनौपनिधिकी –वक्ष्यमाणपूर्वानुपूर्व्यादिक्रमेणाविरचनं प्रयोजनं यस्या इति। अनु० ५२।

अणोवमा–अनुपमा। प्रज्ञा० ३६४।

अणोवमाइ–खाद्यविशेष। जं० प्र० ११८।

अणोहट्टं–अजाजिय, कोंटलाति उवकारेण विरहियं। नि० चू० प्र० १८३ अ।

अणोहंतरा–समारतरणाममर्था। आचा० १२३।

अणोहट्टिए–अनपघट्टकः, यो बलाद्धस्तादौ गृहीत्वा प्रवर्त्तमानं निवारयति सोऽपघट्टकस्तदभावात्। विपा० ५२।

अणोहियं – अविद्यमानजलौघिकामतिगहनत्वेनाविद्यमानोर्द्धा वा। भग० ६५२।

अण्णउत्थिए – अन्ययूथिका· अन्ययूथं–विवक्षितसंघादपरः संघस्तदस्ति येषां तेऽन्ययूथिकाः तीर्थान्तरीयाः। भग० ९८। अन्यतीर्थिका। जीवा० १४३।

अण्णउत्थिया – तच्चणियादि धम्मणा खत्तिया गारत्था। नि० चू० द्वि०।

अण्णओमुहो-अन्यतोमुख। आव० ६४०।

अण्णओहुत्तं-अन्यतोभूतम्। आव० २०५।

अण्णगच्छेल्लय-अन्यगच्छीय.। आव० ३३३।

अण्णगिलायं-अन्नग्लान -पर्युषितमन्न मया भोक्तव्यमित्येवं प्रतिपन्नाभिग्रह्। वृ० प्र० ३१२ अ।

अण्णगिलायए-अन्नग्लायक। औप० ३९। वृ० प्र० ११२ आ।

अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे-अन्यतीर्थिकेभ्य -कपिलादिभ्य सकाशात् प्रवृत्त -स्वकीयाचारवस्तुतत्त्वानामनुयोगो-विचार तत्पुरस्करणार्थं शास्त्रसंदर्भ इत्यर्थ सोऽन्यतीर्थिकप्रवृत्तानुयोग। सम० ४९।

अण्णतित्थिया – रक्तपटादय। नि० चू० प्र० ७६ अ। अन्यतीर्थिका – चरकपरिव्राजकशाक्याजीवकवृद्धश्रावकप्रभृतय। नि० चू० प्र० १४७ आ।

अण्णत्थ-अन्यत्र, परिवर्जनार्थे। आव० ८५०।

अण्णत्थे-अन्वर्थे-अनुगत सवद परमैश्वर्यादिकोऽर्थो यत्र स। विशे० ३२।

अण्णदत्तहरे-अन्यदत्तहर -अन्येभ्यो दत्त-राजादिना वितीर्णं हरति अपान्तराल एवाच्छिनत्ति। उत्त० ३७४। अन्याद त्तहर -ग्रामनगरादिषु चौर्यकृत। उत्त० ३७४।

अण्णमण्णघडत्ता-अन्योऽन्यघटता, अन्योऽन्य पत्रसमुदायरचना यत्र तदन्योऽन्यघटं तद्भावस्तत्ता जालिका। भग० ३१५।

अण्णवं-अर्णव -अर्णो-जल विद्यते यत्रासावर्णव। उत्त० २४१।

अण्णसंभोइय-अन्यसाम्भोगिक। आव० ८४७।

अण्णहत्थिमणी-परतीर्थिका अगारस्था अविरतिका। वृ० तृ० ४७ आ।

अण्णाइट्ठसरीरं-अन्याविष्टशरीरम्,व्यन्तराधिष्ठितशरीरम्। आव० ६३३।

अण्णाइट्ठो-अन्याविष्ट, परायत्त, यक्षाविष्टो वा। उत्त० ११३। आविष्ट। अन्त २०।

अण्णाइत्तो-अपराद्ध। नि० चू० तृ० १०१ अ।

अण्णाएसि-अज्ञातैषी, अज्ञातो जातिश्रुतादिभि एषतिउञ्छति पिण्डादीति। उत्त० १३४।

अण्णाणं-अज्ञानम्, चतुर्थं कुडङ्ग। आव० ८५६। एकविंशतितम परीषह, कर्मविपाकजादज्ञानाद्योद्विजेत। आव० ६५७।

अण्णाणदोसे-अज्ञानदोष। औप० ४४।

अण्णाणिय-अज्ञानिक, कुत्सितं ज्ञानमस्यास्तीति। आव० ८१७।

अण्णाणियवाई – सप्तषष्टिभेदा अज्ञानवादिन। सम० ११३।

अण्णाणो-अज्ञान, दुष्टमोहित। आव० ३४६।

अण्णातचज्जा-अज्ञातचर्या। आव० ८३२।

अण्णातपिंडे-अज्ञातपिण्ड, अन्तप्रान्त, अज्ञातेभ्यो वा-पूर्वापरासंस्तुतेभ्यो वा पिण्डोऽज्ञातोञ्छवृत्त्या लब्ध। सूत्र० १६४।

अण्णातं-अज्ञातोञ्छ। वृ० द्वि० १८६ आ।

अण्णाय-अज्ञातम्, अनुमानत अज्ञातम्। भग० १६७, २००।

अण्णायया-अज्ञातता, तपसोऽप्रकाशनम्। प्रश्न० १४६। अज्ञातता तपस्यज्ञातता, योगसङ्ग्रहे सप्तमो योग। आव० ६६४।

अण्णायदेसो-अदसियभावो। नि० चू० प्र० ७२ आ।

अण्णियपुत्तो-अर्णिकापुत्र। नि० चू० प्र० १६४ आ।

अण्णिया-अर्णिका, दक्षिणमथुराया वणिक्पुत्री। आव० ६८८।

अण्णियापुत्ते-अर्णिकापुत्र। वृ० तृ० १३० आ।

अण्णोण्णता-ईर्ष्यावत्ता। व्य० द्वि० १२४ आ।

अण्हयति-क्षरति (तः)

अण्हय-आस्रव, अ-आभिविधिना स्नौति-स्रवति कर्म यस्मात् स आश्रव प्राणातिपातादि। प्रश्न० १।

अण्हयकर-आश्रवकर। आव० ४२।

अण्हयकरि-कर्माश्रवकरी। आचा० २८८

अण्हयकरे-कर्माश्रवकारी। आचा० ४०५।

अण्हाण-अस्नानम्। आव० १४४।

अण्हायगो-अस्नायक। आव० ८३१।

अतज्ञाय-अतज्ञातपारिष्ठापनिकी, पारिष्ठापनिक्या द्वितीयो भेदः। आव० ६१९।
अतज्ञायं-अतज्जातीयं, भिन्नजातीयम्। आव०। ६२३।
अतडं-अतीर्थं, अन्यतीर्थं वा। बृ० द्वि० ३१ अ। अनिर्थं। नि० चू० तृ० १७ अ।
अतति-सततमवगच्छति। ठाणा० १०।
अतन्त्रम्-शास्त्रलक्षणरहितम्। आव० १२०।
अतरं-तरीतुमशक्यं, विषयगणं भवं वा। उत्त० २६२।
अतरंतं-ग्लानम्। बृ० प्र० २२६ आ। अतरन्त-अतिग्लानः। ओघ० १८३।
अतरंत-ग्लाना। ठाणा० १३८।
अतरंते-अतरत्-असहः। व्य० द्वि० ३७ अ।
अतरंतो-अतरन्, अशक्नुवन्। आव० ८४७। अशक्नुवन्-असमर्थः। दश० ८९। अशक्नुवान्। आव० ६३७। ग्लानः। ओघ० ४५। यदाऽऽकाशव्यवस्थिताभ्यां पादाभ्यां न शक्नोति स्थातुं तदा। ओघ० ८४। गिलाणो। नि० चू० प्र० ४३ अ, ३० आ, ३६० अ। ग्लानः। बृ० तृ० ५ आ, नि० चू० प्र० ८४ अ।
अतरण-अलरण, अशक्तः, ग्लानः। ओघ० ६७, बृ० प्र० २३४ आ।
अतरो-ग्लानः। बृ० द्वि० २२४ अ। रत्नाकरः। बृ० प्र० ३७ अ।
अतसी-अयसी, धान्यविशेषः। ठाणा० ४०६। गुच्छविशेषः। प्रज्ञा० ३२। धान्यविशेषः। नि० चू० प्र० १४४ आ।
अतहणाणं-अनथाज्ञानम्। ठाणा० ४८१।
अतारं-अतारम्, तरितुमशक्यम्। भग० ८२।
अतारिमा-दुस्तरा। सूत्र० ८६।
अति-अतिशयवान। ठाणा० ४७३।
अतिंति-प्रविशन्ति। नि० चू० प्र० २०३ अ।
अतिंतिणः-अतिन्तिणः, अलाभेऽपि नेषदपत्किमनभाषी। दश० २३३। अतिन्तिनः, न सकृत्किंचिदुक्तः सन्नसूयया भूयो भूयो वक्ता, प्रतिपूर्णः सूत्रादिना। दश० २५८।
अतिअत्तिय - आतियात्रिकाः, सार्थरक्षकाः। बृ० द्वि० १२५ अ।
अतिउच्चाओ-अतिश्रान्तः, प्राघूर्णकादिः। ओघ० १८६।
अतिउच्चरिए-अभ्युदरिते। ओघ० १३८।

अतिकाए-महोरगेन्द्रः। ठाणा० ८५। अतिकायः-महोरगभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।
अतिकमा - अतिक्रमः-अतिलङ्घनं, विनाशः। आचा० १३५। प्रतिश्रवणतो मर्यादाया उल्लंघनम्। व्य० प्र० ९० अ।
अतिक्रीलायासो - अतिक्रीडावासः, सुस्थितलवणाधिपस्य भौमेयविहारविशेषः। जीवा० ३१५।
अतिक्खतुंडो - अतीक्ष्णतुण्डम्-अतीक्ष्णमुखम्। आव० ७६४।
अतिक्रान्ता-अतीता। आचा० १७८।
अतिखद्धं-प्रभूतम्। बृ० द्वि० १८७ अ।
अतिखद्ध - गुरोरालोके भोक्तव्यम्, अतिप्रचुरं भक्षयेत। ओघ० १८२।
अतिगए-अतिगतः। आव० १७३।
अतिगओ-अतिगतः। दश० ४१।
अतिगता-प्रविष्टाः। बृ० द्वि० १८४ अ।
अतिगमणं-प्रवेश। बृ० द्वि० १६३ आ। अतिगमनं, प्रवेशनम्। बृ० प्र० २७५ आ।
अतिगुपिल-अतिगूढम्। आव० २९६।
अतिगुलिका-(अइगुलिया)-कुक्कुसा। बृ० तृ० १९५ अ।
अतिघरं-सजतिपडिस्सतो। नि० चू० प्र० २३७ आ।
अतिचारो-व्यतिक्रमः स्खलनपर्यायः। तत्त्वा० ७-१८।
अतिच्छिए- अतिक्रान्तायाम्। ओघ० १५२।
अतिजाति-प्रविसति। नि० चू० प्र० ३४ आ।
अतिजाते-समृद्धतरः। ठाणा० १८४।
अतिजाणं-अतियानम्। आव० ३६६।
अतिजाहिइ-अतियास्यति-प्रवेक्ष्यति। ठाणा० ४६३।
अतिणिओ-आनीतः। आव० २०४।
अतिणीओ-अतिनीतः, प्रापितः। आव० ८००।
अतिणेउं-प्रवेश्य। बृ० तृ० ७४ आ।
अतिण्णो-ग्लानः। बृ० प्र० २८८ आ।
अतितरणित-आगच्छच्छन्। नि० चू० प्र० १२० आ।
अतिताणकहा-अतियानकथा-नगरादौ प्रवेशकथा। ठाणा० २१०।
अतिताणगिहाति-अतियानगृहाणि-नगरादिप्रवेशे यानि गृहाणि। ठाणा० ८६।
अतितेया-अतितेजा, रात्रिनामविशेषः। सूर्य० १४७।

अतित्थ.– अतीर्थम्, तीर्थस्याभावोऽतीर्थम्, तीर्थस्याभावश्चानुत्पादोऽपान्तराले व्यवच्छेदो वा। प्रज्ञा० १९।

अतित्थसिद्धा–अतीर्थे-तीर्थान्तरे साधुव्यवच्छेदे जातिस्मरणादिना प्राप्तापवर्गमार्गा मरुदेवीवत् सिद्धा अतीर्थसिद्धाः। ठाणा० ३३।

अतित्थाविते–प्रत्याख्यातः, निषिद्धः। नि० चू० प्र० १८५ अ.।

अतित्थिओ–अस्तमितो। नि० चू० प्र० ३१२ अ। समाप्तेत्यर्थः। नि० चू० तृ० १२६ अ।

अतिथिसंविभाग–न्यायागतानां कल्पनीयानामन्नपानादीनां द्रव्याणां देशकालश्रद्धासत्कारकर्मोपेतं परया आत्मानुग्रहबुद्ध्या संयतेभ्यो दानम्। तत्त्वा० ७-१६।

अतिददाति–(अइए) प्रकरोति अतिगच्छति वेति। ठाणा० २९८।

अतिधाडिय–अतिधाडितः-भ्रामितः। प्रश्न० ५३।

अतिपरिणामकं–अपवादैकमतिः। बृ० प्र० १३२ अ।

अतिपरिणामा–अतिपरिणामाः, अतिव्याप्त्याऽपवादद्रष्ट्योऽतिपरिणामाः। विशे० १३१। अतिव्याप्त्या परिणामो ग्रहोपलक्षणो यस्य सः। व्य० प्र० ७२ अ।

अतिपात–प्राणिनः विध्वंसः। ठाणा० २१०।

अतिपातनम्–प्राणवता सह वियोजनम्। ठाणा० २६।

अतिपासे–अतिपार्श्व-ऐरवतावसर्पिणीतीर्थंकरः। सम० १५३।

अतिपुरुषः–किंपुरुषभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।

अतिप्पणया – अधुतत्वादिविरणकारणतोकानुत्पादनेन। भग० ३०५।

अतिबलराया–अतिबलराजा। आव० ११६।

अतिमन्द्रः–गम्भीरः। जं० प्र० ५२९।

अतिम(मु)त्तकुमारो–राजर्षिनाम। नि० चू० द्वि० २७आ।

अतिमुत्तकः–षड्वर्षप्रव्रजितः। भग० ५८६। अतिमुत्तक–नालवद्पुष्पविशेषः। प्रज्ञा० ३७।

अतिमुत्तकचन्द्र–(अइमुत्तचंदग) पुष्पविशेषदलम्। भग० ११९।

अतिमुत्तग–अतिमुक्तकलता-लताविशेषः। जीवा० १८३।

अतिमुत्ते–अतिमुक्तः, कुमारश्रमणः। अन्त० ६। विज्ञयराजः श्रीदेवयाः सुतः। अन्त० २३।

अतियाण–अतियानं-नगरप्रवेशः। ठाणा० १७३। प्रवेशः। नि० चू० प्र० २७३ अ।

अतियातो–अतियातः, गतः। उत्त० ४८१।

अतियारे–अतिचारः-अतिचरणं प्रहणतो व्रतस्यातिक्रमणम्। व्य० प्र० ९० अ।

अतिराउले–स्वामिकुलम्। प्रश्न० २५३।

अतिरायितं–अताडितम्। औप० ११०

अतिरिच्छच्छिन्नं–अतिरश्चीनच्छिन्नं-तिरश्चीनमपाटितं। आचा० ४०५।

अतिरित्तं – अतिरिक्तम्, कुक्षिपूराहारप्रमाणातिक्रान्तम्। प्रश्न० १५४।

अतिरित्तसज्जासणिए–अतिरिक्ता-अतिप्रमाणा शय्यावसतिरासनानि च पीठकादीनि यस्य सन्ति सोऽतिरिक्तशय्यासनिकः। सम० ३७।

अतिरित्ता–धर्मशाला। नि० चू० प्र० १०६ आ।

अतिरूपः–भूतभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।

अतिरेगं–अतिरेकः, आधिक्यम्। भग० १८६। अतिरेकम्-अत्यर्थम्। औप० २२७।

अतिलोलुए–अतीव रसलम्पटः। उत्त० ३४५।

अतिवट्टमाणे – अतिवर्तमान-मर्यादाया सर्वाभ्यन्तरे प्रतिगच्छन्। सम० ९७।

अतिवट्टिय–अतिवर्तितः-भ्रामितः। प्रश्न० ५६।

अतिवतिसाणं – अतिव्रज्य-अतिशयेन गत्वा। प्रश्न० ५१०।

अतिवयती–अतिव्रजति, बाहुल्येन गच्छति। जीवा० १२९।

अतिवासा–अतिवर्षा, अतिशयवर्षा वेगवद्वर्षणम्। भग० ११९।

अतिवाहयति–प्रेरयति, विनयति च। प्रश्न० ६४।

अतिविज्जे–अतिविद्यः, तत्त्वपरिच्छेत्री विद्या यस्य। आचा० १५९।

अतिविद्वान्–विदिताशेषसद्भाव. सन्। आचा० १९१।

अतिवेगो–अतिवेग.-अतिक्रान्तात्मीयवेगः। प्रश्न० ५१।

अतिशुक्लो–शुक्ललेश्यः। ठाणा० २०४।

अतिसेसे–शेषातिशयिकानि ज्ञानादीनि। ठाणा० १८४। अतिशेषा–अतिशयाः। ठाणा० २१९। अतिसेसे–अतिशये। उत्त० २८४।

अत्तव-आत्मवान् , सचेतन । दश० २३६ ।
अत्तसंपग्गहिए-आत्मसम्प्रगृहीत , आत्मैव सम्यक् प्रक-र्षेण गृहीतो येन। दश० २५६ ।
अत्तसमाहिए-आत्मसमाहित , आत्मना समाहित ज्ञान-दर्शनचारित्रोपयोगेन सदोपयुक्त इत्यर्थ । आत्मा या समा-हितोऽस्येत्यात्मसमाहित । सदा शुभव्यापारवानित्यर्थ । आचा० ९९१ ।
अत्तसरिसो-आत्मसदृश , तुल्यानुरूप । उत्त० ४० ।
अत्तहिय – आत्महित , मोक्ष । दश० १५० । मोक्खो। दश० चू० ६८ ।
अत्ता-आत्मा । आव० २५८ । मोक्ष , सयमो वा । सूत्र० ९० । आत्ता -गृहीता , स्वीकृता । ठाणा० ६३ । आ-अभिविधिना त्रायन्ते-दु खात् सरक्षन्ति सुख चोत्पादयन्तीति आत्रा आप्ता वा-एकान्तहिता.। भग० ६५६ । आर्ता -क्षुत्तृड्भ्या पीडिता , आप्ता – रागद्वेषरहिता , आत्ता – गीतार्था । बृ० द्वि० १४३ अ ।
अत्ताणओ-अत्राण । आव० २११ ।
अत्ताणा-यदिद्वितीया मान्या , कार्पटिका , मंखता वा। बृ० द्वि० ८२ आ ।
अत्ताणो – अत्राण , अनर्थप्रतिघातवर्जित । प्रश्न० ९१ । त्राणरहित , अनर्थप्रतिघातकाभावात्। प्रश्न० ९१ । गवा दिहारिणो । नि० चू० द्वि० ११ अ ।
अत्ताहिट्ठिय-आत्माधिष्ठित । ओघ० १५० ।
अत्ति(ति)मुत्तय-अतिमुक्तक , पुष्पप्रधानवनस्पतिविशेष । जं० प्र० ४६ ।
अत्तुक्कोसे-आत्मोत्कर्ष । सम० ७१ । आत्मगुणाभिमान । ठाणा० २७१ ।
अत्तेय-आत्रेय ऋषिनाम । आव० ३७२ ।
अत्तो – आप्त , मोक्षमार्ग , प्रक्षीणदोष , सर्वज्ञ । सूत्र० १९५ । रागादिरहित । दश० १२८ ।
अत्तोवणीए – आत्मैरोपनीत – तथा निवेदितो-नियोजितो यस्मिन्। ठाणा० २५९ ।
अत्थं-अस्त्रम् , नाराचादि क्षेप्यायुधम्। प्रश्न० ११६ । अर्थ , विषय , आव० २८३ । अर्थ -ज्ञेयत्वात् सर्वमेव वस्तु, अभिधेय । उत्त० ३६८ । अभिधेय , जीवादितत्त्वरूपो वा। उत्त० ३८९ । अर्थ्यत इत्यर्थ -स्वर्गापवर्गादि । उत्त० ४४८ । व्याख्यानं । ठाणा० ५० । सूत्रस्य व्याख्यानं । ठाणा० १५० । विशे० ५९२ ।
अत्थंगओ-अस्तं पव्वए गतो, अचक्खुविसयपथे वा गतो। दश० चू० १३३ ।
अत्थंतमयम्मि-अस्तमयति । उत्त० ४३५ ।
अत्थंतरं-अर्थान्तरम् , पृथग्भूतम् । आव० ६०१ ।
अत्थंतरभावे-अर्थान्तरभाव -भेद । आव० ४७६ ।
अत्थ – अर्थ , शब्दादिविषयभावेन परिणतद्रव्यसमूह । विशे० १६० ।
अत्थ-(अत्थपुरिसे) अर्थपुरुष , अर्थोत्तिनपर । आव० २५७। अर्थ , निरुपमसुखरूपमोक्ष । दश० १८९ । अर्थनम् , असम्प्राप्तकामभेद , तदभिप्रायमात्रम् । दश० १९४ । अस्त , अस्तपर्वत अदर्शन वा । दश० २३३ । आदेश । बृ० प्र० २० आ ।
अत्थअवगमो-अर्थावगम , अर्थपरिच्छेद । दश० १२५ ।
अत्थई-गुच्छविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।
अत्थकंखिया-प्राप्तेऽप्यर्थेऽविच्छिन्नेच्छा । सम० ६७१ ।
अत्थकरो-अर्थकर विद्यार्थकरणशील , भावकरविशेष । आव० ४९१ ।
अत्थकहा – अर्थकथा, विद्या शिल्पमुपायोऽनिर्वेद सचयश्च दक्षत्व साम दण्डो भेद उपप्रदानम् । दश० १०७ ।
अत्थक्के-अकाण्ड –अनवसर । दश० ९३ ।
अत्थगवेसणया-अर्थगवेषणया, अर्थगवेषणनिमित्तम् । सूर्य० ०९२ ।
अत्थग्घं-अस्ताघ । ओघ० ३० । अस्ताघम् । आव० ४११ ।
अत्थजुत्ती-अर्थयुक्ति , हेयेतररूपा अर्थयोजना। दश० १६२ ।
अत्थजुत्तो-अर्थयुत , अर्थसार , अपुनरुक्तो, महार्थ । जीवा० २५५ ।
अत्थदूसणं-अर्थदूषणव्यसनम् । अर्थोत्पत्तिहेतवो ये साया द्युपायचतुष्यप्रभृतय प्रकारास्तेषां दूषणम् । व्य० प्र० १५७ अ ।
अत्थधम्मगई-अर्थश्च धर्मश्चार्थधर्मौ यदि वाऽर्थ्यते-हितार्थिभिरभिलष्यते, गति -गत्यर्थानां ज्ञानार्थतया हिताहित लक्षणा स्वरूपपरिच्छित्ति । उत्त० ४७० ।
अत्थनिउरंगे-सख्याविशेष । सूर्य० ९१ ।
अत्थनिउरे-सख्याविशेष । सूर्य० ९१ ।

अत्थनिकुरं-अर्थनिकुरं, चतुरशीतिरर्थनिकुराङ्गशतसहस्राणि। जीवा० ३४५।

अत्थनिकुरंगं - अर्थनिकुराङ्गम्, चतुरशीतिर्नलिनशतसहस्राणि। जीवा० ३४५।

अत्थपज्जाया-अर्थपर्यायाः, ये तु तेषामेव वाचकशब्दानामभिधेयार्थस्यात्मभूता भेदाः, यथा कनकस्य कटककेयूरादय, ते सर्वेऽप्यर्थपर्याया भण्यन्ते। विशे० ७७८। ये तु तद्देकदेशमभिदधति तेऽर्थैकदेशप्रतिपादकाः पर्याया अर्थपर्याया उच्यन्ते। विशे० ७७७।

अत्थपयं-अर्थपदम्, युक्तिर्हेतुर्वा। सूत्र० १५३।

अत्थपलिमंथो-अर्थपरिमन्थ। विशे० ६७८।

अत्थपिवासिय - अप्राप्तार्थविषयसञ्जाततृष्णा। भग० ६७१।

अत्थपुहुत्त-अर्थपृथक्त्व-श्रुताभिधेयोऽर्थं तस्मात् सूत्रं पृथक्, अर्थेन वा पृथु अर्थपृथु तद्भाव अर्थपृथुत्व। आव० ६१। अर्थात् पृथक्त्व कथञ्चिद्भेदो यस्य, विस्तीर्णमर्थपृथु। विशे० ४९२।

अत्थमणमुहुत्तं - अस्तमनमुहूर्त्तम्, अस्तोपलक्षितं मुहूर्तम्। जं० प्र० ४७९।

अत्थमंत-अर्थवताम्, प्रयोजनवताम्। भक्षणाद्यर्हाणाम्। जं० प्र० २४३।

अत्थमंतमेत्त - अस्तमयति मित्रे-सूर्ये, सायम्। जं० प्र० २४३।

अत्थरणं-आस्तरणम्, आस्तरण करोति। आव० ४१।

अत्थरय - आच्छादनम्। जं० प्र० ५५। आस्तरकेण, अस्तरजसा वा। भग० ५४२।

अत्थलोला-अर्थे लोला-अर्थलोला-लम्पट-चौरादय। उत्त० ५९०।

अत्थविगप्पणा-अर्थविकल्पना। आव० ४८४।

अत्थविणिच्छय-अर्थविनिश्चय-अपायरक्षक कल्याणावह वा अर्थाविनथभावम्। दश० ७३०।

अत्थसंजुत्तं-सद्भावसंयुक्त। दश० चू० ८९।

अत्थसंपयाणं-सांवत्सरिकार्थदानम्। आचा० ४२२।

अत्थसत्थं-अर्थशास्त्रम्। आव० ४२२। अर्थोपायप्रतिपादनं शास्त्रम्। प्रश्न० ९७। नीतिशास्त्रादि। जं० प्र० २१९।

अत्थसिद्धे - अर्थसिद्धः, पाक्षीयदशमदिवसनाम। सूर्य० १४७, जं० प्र० ४९०।

अत्थसस-अस्तो मेर्वन्तर्दिनान्तरितो रविरस्तं गत इति व्यपदिश्यते तस्य पर्वतराजस्य गिरिप्रधानस्य। सम० ६५।

अत्था-अर्थाः, द्रव्याणि। उत्त० ३८४। अर्थ्याः, प्रार्थनीया वा। उत्त० ३८४। अर्यन्त-गम्यन्त इत्यर्थाः। ओघ० ५। शब्दादय। ठाणा० २५३, आचा० २०३। फलानि, वस्तूनि। ठाणा० ३३। अर्यन्ते-अभिलष्यन्ते क्रियार्थिभिरर्यन्ते वा अधिगम्यन्ते। ठाणा० ३३५। निर्युक्तिभाष्यसंग्रहणिवृत्तिचूर्णिपञ्जिकादिरूपा। सम० १११।

अत्थाणं-देशविशेष। भग० ६८०।

अत्थाणमंडविया-आस्थानमण्डपिका। आव० ८९।

अत्थाणि-आस्थानिका। उत्त० ११५।

अत्थाणिमंडवो-आस्थानमण्डप। नि० चू० प्र० २७४ आ।

अत्थाणियं-आस्थानम्। उत्त० १४६।

अत्थाणियमंडविया - आस्थानमण्डपिका। बृ० प्र० ७७ आ।

अत्थाणी-आस्थानी। आव० ६७२। आस्थानिका। आव० १४५, २९८।

अत्थाणीवरगओ-आस्थानीवरगत। आव० २१६।

अत्थादाणं-अष्टाङ्गनिमित्तं प्रयोग। बृ० तृ० ८६ अ।

अत्थामा - अस्थामान, सामान्यत शक्तिविकला। जं० प्र० २३९। अस्थामा, सामान्यत शक्तिविकल। भग० २२३।

अत्थायणयं-आस्थानिका। आव० ३४२।

अत्थायाणं-अर्थादानं-द्रव्योपादानकारणमष्टाङ्गनिमित्तं सद्दत्-प्रयुञ्जान। ठाणा० १६४।

अत्थावत्ती-सामर्थ्यगम्या। बृ० द्वि० १२१ आ।

अत्थावत्तीदोसो-अर्थापत्तिदोष, यत्रार्थादनिष्टापत्तिः, सूत्रदोषविशेष। आव० ३७४।

अत्थाहं-अस्ताघम्, अविद्यमानस्ताघम्, अगाधम्। भग० ८२। अस्ताध-निरस्ताघस्तलम्। भग० ८२। अप्रमाणम्। आव० ३७४।

अत्थि-येन येन यदा यदा प्रयोजनं तत्तदा तदाऽस्तिभवति जायते इति सुखमानन्दहेतु वाऽस्तीति। ठाणा० ४८८। अस्ति, विद्यन्ते, सर्वमस्त्यर्थं, अथवाऽस्ति अत्र पर्शा यत्र।

भग० ३२। प्रदेश.। भग० १४९, जीवा० ६। अस्ति, निपातः सर्वलिङ्गवचन । प्रज्ञा० ५६३। प्रदेश । आव० ६००। त्रिकालवचनो निपात । अभूत्, भवति, भविष्यति च। आव० ७६८। अस्तिद्वारम्, अस्त्यन्यश्चैतन्यरूप । दश० १२५। स्वामी। विशे० ६७२।

अत्थिकाए-अस्तिकाय प्रदेशराशि । भग० ३२४।

अत्थिकाय – अस्तिकाय., प्रदेशराशि, अस्तीति सन्ति आसन् भविष्यन्ति च ये काया प्रदेशराशयस्ते अस्तिकाया। भग० १४८। प्रदेशसङ्घात । जीवा० ६। धर्मास्तिकायादि । दश० १३४।

अत्थिकायउद्देसए – भगवत्याद्वितीयशतकस्य दशमोद्देशकनाम । भग० ६०८।

अत्थिकायधम्म-अस्तिकायधर्म । दश० २१।

अत्थिकायधम्मे-अस्तय -प्रदेश स्तेषा कायो-राशिरस्तिकाय स एव धर्मो-गतिपर्याये जीवपुद्गलयोर्धारणात। ठाणा० ५१५।

अत्थिक्क-आस्तिक्यम्-जीवस्यास्तित्वनित्य कर्तृत्वभोक्तृत्वमोक्षतत्साधनश्रद्धानम्। आव० ५९१।

अत्थिनत्थि-अस्तिनास्तिनामपूर्व । ठाणा० १९९।

अत्थिय-अस्थिक-बहुबीजकभवप । प्रज्ञा० ३२। अस्तिकाय । भग० ८१। अत्थिकम्, अस्थिकफलम्। दश० १७६।

अत्थिया-बहुबीजकवृक्ष । भग० ८०३।

अत्थी-अर्थज्ञाता। बृ० प्र० ११२ अ।

अत्थीनत्थिपवायं – यद्यथा लोके अस्ति नास्ति च तथोच्यते चतुर्थपूर्वनाम। सम० २६।

अत्थुआ-आस्तृता। आव० १७३।

अत्थुरणं-पाथरणं। नि० चू० द्वि० ६१ अ।

अत्थुव्वइ-(अत्थुरइ) आस्तीर्यते। ओघ० ८३।

अत्थे – अनेन ध्यन्तरित मूर्तामिस्त इत्यभिधीयते। मेरुनाम। ज० प्र० ३७०।

अत्थेगइया-सन्त्येके। प्रज्ञा० ४४१।

अत्थो-अर्थ, अभिधेय, प्रयोजन वा। प्रश्न० ११०। कारण, तात्त्विक पदार्थो वा। जीवा० ९८। अर्थत-मध्यम इति। आव० १०। पल्हवा, अचक्षुविषयपदार्थो वा। दश० चू० १२३। अर्थ-य मृग्यमाणित्य । विशे० ५८८। अर्यत इति, वितर्क प्रबोधित विकल्पकल्पम्। आव० ८६। अभिप्रेतपदार्थ । आव० ४१५। द्रव्यम्। आव० ६०७। अर्थ्यत इति। उत्त० ६८। त्रिवादि। दश० ११४।

अत्थोग्गहणं-फलनिश्चयम्। भग० ५४१।

अत्थोग्गहे-अर्थावग्रह, अर्थस्यावग्रहणम्, अनिर्देश्यसामान्यरूपार्थग्रहणम्। व्यञ्जनावग्रहोत्तरकालमेकसामायिकमनिर्देश्य सामान्यमात्रार्थग्रहणम्। प्रज्ञा० ३११। अर्थस्य-सामान्यनिर्देश्यस्वरूपस्य शब्दादे अवेति-प्रथम व्यञ्जनावग्रहानन्तर ग्रहण-परिच्छेदनमर्थावग्रह । नन्दी० १२। भग० ३४४। व्यञ्जनावग्रहचरमसमयोपात्तशब्दाद्यर्थावग्रहणलक्षण । आव० १०। अर्यते-अधिगम्यतेऽर्यते वा अन्विष्यत इत्यर्थ – सामान्यरूपादे प्रथमपरिच्छेदनमर्थावग्रह । ठाणा० ५१।

अत्थोभं – अस्तोभक, वैहिहकारादिपदच्छिद्रपूरणस्तोभकनिपातशून्यम्, सूत्रगुण । आव० ३७६।

अथंडिलं-सचित्तभूमी। नि० चू० प्र० ३८ आ।

अथ-अथशब्द प्रक्रियाप्रश्नानन्तर्यमङ्गलोपन्यासप्रतिवचनसमुच्चये ष्वत्रानन्तर्यार्थे। ठाणा० ४९१। वाक्योपन्यासार्थ परिप्रश्नार्थो वा। भग० १४। प्रक्रियाप्रश्नानन्तर्यमङ्गलोपन्यासप्रतिवचनसमुच्चयेषु। प्रज्ञा० २४७।

अथक्क-अप्रस्ताव । बृ० प्र० ५५ आ।

अथक्कागओ-अकाण्डागत । आव० ८००।

अथक्को-अविश्रान्त । आव० १०२।

अथालंदोग्गहो-यथालन्दिकावग्रह । नि० चू० प्र० २३९ अ।

अथाहं-जत्थ पुण वुड्ढति नासिया त। नि० चू० द्वि० ७८ आ।

अथिरो-अस्थिर, क्षणावस्थायी। सूत्र० ६।

अदंडे-अदण्ड, प्रशस्तयोगत्रयमहिंसामात्र वा। सम० ५।

अदंसणो-अन्ध । ठाणा० १६५।

अदक्खु अदक्ष, अनिपुण । सूत्र० ७४। अदृष्ट, अदर्शन । सूत्र० ७४।

अदक्खुदंसणो-अचक्षुर्दर्शन अचक्षुर्दर्शनमस्यास्ति, केवलदर्शन यस्य । सूत्र० ७४।

अदक्खियब्ब-मायम्। ओघ० १६३।

अदक्खुव-अरक्षव। ठाणा० ४१३।

अद्दो-पेनाति गैलान्तर जो दुब्बल। नि० चू० प्र० १०८ अ।

अदण्णा-विपादीकृता। नि० चू० प्र० ३२१ अ।
अदत्तं-अदत्तम्, अदत्तद्रव्यग्रहणम्। प्रश्न० ४। अविनीतम्, अधर्मद्वारस्य तृतीयं नाम। प्रश्न० ४२।
अदन्न-आत्मरक्षणपरा। बृ० प्र० १९० आ।
अदसा-अदशा-दशिकारहिता क्षौमा। ओघ० २१७।
अदसी-अलसी। आव० ८५४।
अदिच्छाविज्जिहिइ-अदित्सिष्येथे, निषेत्स्येथे। दश० १०।
अदिट्ठ-अदृष्टम्, प्रत्यक्षापेक्षया अदृष्टम्। भग० १९७, २००।
अदिट्ठलाभिय-अदृष्टलाभिकः, योऽदृष्टपूर्वेण दीयमानं गृह्णाति सः। प्रश्न० १०६।
अदिट्ठहडा-अदृष्टाहृता, अदृष्टोत्क्षेपमानीता, प्राभृतिका। आव० ५७६।
अदिट्ठि-अदृष्टे-तिरोहिते। ओघ० १६७।
अदिण्णे-अदत्तादानक्रिया, अदत्तादानाय यत्करणम्, क्रियायाः सप्तमो भेदः। आव० ६४८।
अदिन्नादाणवत्तिए-अदत्तादानप्रत्ययः। सम० २५।
अदिन्ने-अदत्तादानक्रिया-आत्मार्थमदत्तग्रहणम्। ठाणा० ३१६।
अदिस्समाणे-अदृश्यमानः, अनपदिश्यमानः। आचा० १३१।
अदीणवं-अदीनवन्तम्, अदीनं, दैन्यरहितम्। उत्त० २८२।
अदीणसत्तु-नमिनाथपूर्वभवनाम। सम० १५१।
अदीणसत्तू-अदीनशत्रुः, हस्तिशीर्षनगरनृपतिः। विपा० ८९। ठाणा० ४०१, ४०२।
अदीणो-पसण्णमणो। नि० चू० प्र० १८९ अ। अदीनः, अविक्लवः। उत्त० १२०। अदीनाकारयुक्तः। अनुत्त० ४। शोकाभावः। अन्त० २२।
अदु-अथ, 'अतः' इत्यर्थे। सूत्र० ६१। अथवा। उत्त० २९५।
अदुअक्खरिय-जुगुप्सिता, अद्वयक्षरिका। नि० चू० तृ० १८ अ।
अदुआलिआ-मथिका, मन्थनकारिणी। दश० ६०।
अदुक्खणया-अदुःखनता, दुःखस्य करणं दुःखनं तदविद्यमानं यस्यासावदुःखनः, तद्भावस्तत्ता अदुःखकरणमित्यर्थः। भग० ३०५।
अदुगुंछिअं-अजुगुप्सनीयम्, सामायिकाष्टमपर्यायः। आव० ४७४।
अदुट्ठे-अद्विष्टः अदुष्टो वा दायके आहारे वा। प्रश्न० १०९।
अदुत्तं-अद्रुतं, अनुत्सुकम्। प्रश्न० ११२।
अदुत्तरं-अथोत्तरम्, अथापरम्। भग० १५५, ३०६। अथान्यत्। जीवा० १६६। अथापरं। औप० ३७।
अदुयं-अशीघ्रम्। भग० २९४।
अ(अं)दुयबंधणं-अन्दुकबन्धनम्। सूत्र० १२८।
अदुवं-अथवा। उत्त० ११०।
अदुव-अथवा। भग० ११७।
अदुवा-अथवा, पक्षान्तरोपन्यासद्वारेणाभ्युपयोपदर्शनार्थः। आचा० ४७।
अदूयालियं-उन्मिश्रितम्। उत्त० १४६।
अदूरं-प्रत्यासन्नम्। आव० २३२।
अदूरसामंते-अदूरसामन्तम्, नातिदूरे नातिनिकटे। सूर्य० ५।
अदेसकालप्पलावी-जदा भायणं पडिक्कमियं भंडकरणत्ति ठे कयं लेवितं, हट्ठं ततो पमाणतं भग्गं ताहे सो अदेसकालप्पलावी मए पुव्वं चेव णायं एयं भज्जिहित्ति। नि० चू० तृ० ८० आ। अदेशकालप्रलापी, अतीते कार्ये यो भणितवानिदं तत्र देशे काले वाऽकरिष्यत ततः सुन्दरमभविष्यदिति। उत्त० ३४७।
अद्द-आर्द्रम्, सरसम्। प्रश्न० ९१। सूत्रकृताङ्गस्य षष्ठमध्ययनम्। उत्त० ६१६। आव० ६५८। गुच्छविशेषः। प्रज्ञा० ३२।
अद्दइज्जं-आर्द्रकीयम्, सूत्रकृताङ्गस्य षष्ठमध्ययनम्। सूत्र० ३८५। सूत्रकृताङ्गाध्ययननामविशेषः। सम० ४२।
अद्दग-आर्द्रकम्, अनन्तकायभेदः। भग० ३००।
अद्दकुमारिज्जं-आर्द्रककुमारीयम् (महाध्ययनम्)। ठाणा० ३८७।
अद्दक्खु-अद्राक्षुः, दृष्टवन्तः। भग० २१९।
अद्दण्णो-पीडितः। आव० ५००। अधृतिमापन्नः, कातरः। आव० ८००। अधृतिमुपगतः। आव० ४१६। अधृतिमापन्नः। दश० ४८। अक्षणिकः। बृ० द्वि० ४६ अ। अधृतिमुपगतः। आव० १९०।
अद्द(ह)न-मल्लविशेषनाम। व्य० द्वि० ३५७ अ।
अद्दया-आकुलीभूताः। बृ० प्र० २९० आ।
अद्दपुरं-आर्द्रपुरं, आर्द्रकराजधानी। सूत्र० ३८५।

अद्दया–आर्द्रका, हरिद्रा । उत्त० २१८ ।
अद्दवद्दं–आर्द्रवद्रवम्, निगालितम् । आव० ८५४ ।
अद्दसुतो–आर्द्रसुतः, आर्द्रकराजकुमारः । सूत्र० ३८५ ।
अद्दहिज्जति–आद्रहति । नि० चू० प्र० ३१७ अ ।
अद्दहिया–आद्रहणम् । आव० ८५४ ।
अद्दा–आर्द्रानामनक्षत्रम् । ठाणा० ७७ ।
अद्दाए–आदर्शः । नि० चू० प्र० ३४७ अ ।
अद्दाओ–आदर्शः । आव० २९८, ४१६ ।
अद्दागं–आर्द्रकं । ओघ० १७२ । दर्पणः । बृ० प्र० ११६ आ । आदर्शः । ठाणा० २४३, सम० १२४ । ओघ० १४८ ।
अद्दागो–आदर्शः । ठाणा० ५१२ ।
अद्दाणक्खत्ते–आर्द्रानक्षत्रम् । सूर्य० १३० ।
अद्दामलगमेत्तं–आर्द्रामलकमात्रं । आव० ८५७ ।
अद्दायं–आदर्शः । आव० ६५ ।
अद्दाय–आदर्शः । प्रज्ञा० २९३ ।
अद्दारिट्ठे–आर्द्रारिष्टः, कोमलकाकः । जं० प्र० ३२ ।
अद्दिज्जमाणेहिं–आर्द्रैः-पुत्रकलत्राद्यनुपङ्गजनितस्नेहादार्द्रीक्रियमाणैः । आचा० २९२ ।
अद्दी–अर्दिः, याञ्चा । प्रश्न० ९३ ।
अद्दीण–अदीनः, अक्षुभितः । प्रश्न० १०९ ।
अद्दीणमाणसे–अदीनमनसा । आचा० ४२४ ।
अद्दीणा–अदीनाः, कथं वयममुत्र भविष्याम इति वैक्लव्यरहिताः परीषहोपसर्गादिसम्भवे वा न दैन्यभाजः । उत्त० २८२ ।
अद्धं–अर्द्धम् । सूत्र० १६ ।
अद्धंसं–उत्तरासङ्गः । बृ० तृ० २५४ अ । नि० चू० प्र० १९१ अ ।
अद्ध– अद्धाकालः–चन्द्रसूर्यादिक्रियाविशिष्टोऽर्द्धतृतीयद्वीपसमुद्रान्तर्वर्त्ती समयादिलक्षणः । आव० २५७ । कालो । नि० चू० प्र० ३३७ अ । अर्द्धम्, भागमात्रा । भग० २०८ । तिर्यग्वलितम् । जं० प्र० ५२ ।
अद्धकविट्ठगसंठाणसंठिते– अर्द्धकपित्थसंस्थानसंस्थितम्, चन्द्रविमानस्वरूपम् । सूर्य० २६२ ।
अद्धकविट्ठसंठाणसंठियं – अर्द्धकपित्थसंस्थानसंस्थितम्, उत्तानीकृतमर्द्धकपित्थं तस्येव यत्संस्थानं तेन संस्थितम् । जीवा० ३७८ ।
अद्धकायसमाणा–आलोकक्व्यन्तरादिकायार्धप्रमाणा । जं० प्र० ५७ ।
अद्धखल्लया–पादार्धच्छादकं चर्म । बृ० द्वि० २२२ आ ।
अद्धखल्ला–अर्द्धं जाव खल्लया जीए उवाणहा । नि० चू० प्र० १३६ आ ।
अद्धखित्तं – अर्द्धक्षेत्रम् । यदहोरात्रप्रमितस्य क्षेत्रस्यार्द्धं चन्द्रेण सह योगमश्नुते तन्नक्षत्रम् । सूर्य० १७७ । जं० प्र० ४७८ ।
अद्धचंदं–अर्द्धचन्द्रः, बाणविशेषः । आव० ६९७ ।
अद्धचंदा–अर्द्धचन्द्राः, खण्डचन्द्रप्रतिबिम्बानि चित्ररूपाणि । जं० प्र० २०१ ।
अद्धचंदो – अर्द्धचन्द्रः, सोपानविशेषः । प्रश्न० ८ । द्वारादिषु रत्नमयशिरविशेषः । प्रज्ञा० ९९, सूर्य० २६४ । आव० ४२५, जीवा० १७५ ।
अद्धचक्कवाला–चक्रवालार्धरूपा । भग० ८६६ । अर्धवलयाकारः । ठाणा० ४०७ ।
अद्धजंघा–जङ्घार्धपिधायि चर्म । बृ० द्वि० २२२ आ ।
अद्धजंघमेत्तो–अद्धजङ्घा । नि० चू० द्वि० ७९ आ ।
अद्धद्धामीसग – अद्धद्धामिश्रा, सत्यामृषाभाषाभेदः । दश० २०९ ।
अद्धद्धामीसए–अद्धद्धामिश्रकं, अद्धा–दिवसो रजनी वा तदेकदेशः प्रहरादिः अद्धद्धा तद्विषयं मिश्रकं–सत्यासत्यं । ठाणा० ४९१ । अद्धाद्धा, दिवसस्य रात्रेर्वा एकदेशः । प्रज्ञा० २५९ । अद्धद्धा, दिवसरजन्येकदेशः । दश० २०९ ।
अद्धद्धामिस्सिया–अद्धाद्धामिश्रिता, दिवसस्य रात्रेर्वा एकदेशोऽद्धाद्धा सा मिश्रिता यया सा भाषा । प्रज्ञा० २५६ ।
अद्धनारायं–अर्द्धनाराचम्, यत्रैकपार्श्वे मर्कटबन्धो द्वितीये च पार्श्वे कीलिका तत् । जीवा० १५, ४२ । प्रज्ञा० ४७२ ।
अद्धपत्थए–मानविशेषः । भग० ३१३ ।
अद्धपलितंका – अर्द्धपर्यङ्का – ऊरावेकपादनिवेशनलक्षणा । ठाणा० २९९, ३०२ ।
अद्धपलियंकसंठिते–अर्द्धपल्यङ्कसंस्थितम् । सूर्य० ११० ।
अद्धपल्लंका–एके जानुगुप्तपोपवेशनम् । बृ० तृ० २०७ अ ।
अद्धपेडा–गोचरचर्याभिग्रहविशेषः । उत्त० ६०५ । ठाणा० ३६६ ।
अद्धपेला–गोचरचर्याभिग्रहविशेषः । नि० चू० तृ० १२ अ ।

अद्धमंडल-अर्द्धमण्डलम् । जं० प्र० ४७८ ।

अद्धमंडलसंठिती-अर्द्धमण्डलसंस्थितिः, अर्द्धमण्डलव्यवस्था । सूर्य० ११ ।

अद्धमागहयिब्भमं-अर्द्धमागधविभ्रमम्, गृहविशेषः । जीवा० २६९ । जं० प्र० १०७ ।

अद्धमागहा-अर्द्धमागधी, अर्द्ध मागध्या इत्यर्द्धमागधी भाषा । भग० २२१ । मागधभाषालक्षणं किञ्चित्किञ्चिच्च प्राकृतभाषालक्षणं यस्यां सा, अर्द्ध मागध्या इत्यर्द्धमागधी । भग० २२१ । मगधद्धविसयभासानिबद्धं, अट्ठारसदेसीभासानियतं । नि० चू० द्वि० ३६ अ ।

अद्धमासिपसु-अर्धमासिका । आचा० ३२७ ।

अद्धरत्तकालसमओ-अर्द्धरात्रकालसमयः । आव० १२१ ।

अद्धसंकासा-अर्द्धसङ्काशा, सर्वकामविरक्ततावेिषये देवलासुतराजस्य तापसावस्थायामुत्पन्ना पुत्री । आव० ७१४ ।

अद्धसम-अर्द्धसमम्, पद्यविशेषः । दश० ८८ । एकतरसमम् । ठाणा० ३९७ ।

अद्धसेलसुत्थियं-अर्द्धशैलसुस्थितम् । जीवा० २६९ ।

अद्धहारा-अर्धहारा, नवसरिकः । जं० प्र० २४, १०५ ।

अद्धहारभद्दो-अर्धहारभद्रः, अर्द्धहारे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अद्धहारमहाभद्दो-अर्द्धहारमहाभद्रः, अर्द्धहारे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अद्धहारमहावरो-अर्द्धहारमहावरः, अर्द्धहारे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अद्धहारवरभद्दो-अर्द्धहारवरभद्रः, अर्द्धहारवरे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अद्धहारवरमहाभद्दो-अर्द्धहारवरमहाभद्रः अर्द्धहारवरे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अद्धहारवरमहावरो-अर्द्धहारवरमहावरः, अर्द्धहारवरे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अद्धहारवरावभासभद्दो-अर्द्धहारवरावभासभद्रः, अर्द्धहारावभासे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अद्धहारवरावभासमहाभद्दो-अर्द्धहारवरावभासमहाभद्रः, अर्द्धहारावभासे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अद्धहारवरावभासमहावरो-अर्द्धहारवरावभासमहावरः, अर्द्धहारवरावभासे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अद्धहारवरावभासवरो-अर्द्धहारवरावभासवरः, अर्द्धहारवरावभासे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अद्धहारवरावभासो-अर्द्धहारवरावभासः, द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च । जीवा० ३६९ ।

अद्धहारवरो-अर्द्धहारवरः, अर्द्धहारवरे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ । द्वीपविशेषः, समुद्रविशेषश्च । जीवा० ३६८ ।

अद्धहारो-अर्द्धहारः, नवसरिकः । औप० ५५ । जीवा० १८१ । भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६८ । द्वीपविशेषः, समुद्रविशेषश्च । जीवा० ३६८ । प्रज्ञा० ३०५ ।

अद्धा-अध्वा, पन्थाः । आव० ६६२ । समयः । विशे० ९९१ । कालः, अर्धतृतीयद्वीपसमुद्रान्तर्वर्ती समयादिलक्षणः । विशे० ८३७ । कालम् । ठाणा० ४४ । कालसमाख्या । प्रज्ञा० ९ । अवधिलब्धिकालः । आव० ४३ । अध्वा-मार्गः । आव० ६१७ । कालः । आव० ८४० । दिवसो रात्रिर्वा । प्रज्ञा० २५९ । अद्धा, पाश्चात्यधिकरात्रिन्दिवलक्षणप्रमाणा । सूर्य० ११ । अद्धाए अर्द्ध जाव कोसो । नि० चू० प्र० ११६ आ ।

अद्धाउए-अद्धा-कालः तत्प्रधानमायु-कर्मविशेषोऽद्धायु, भवात्ययेऽपि कालान्तरानुगामी । ठाणा० ६६ ।

अद्धाए-कालस्य पौरुष्यादिकालमानमाश्रित्य इति । ठाणा० ४९८ । काले अर्थाद्गमनिकायाम् । उत्त० १८०,

अद्धाकालः-अद्धैव कालः, कालशब्दो हि वर्णप्रमाणकालादिष्वपि वर्तते, ततोऽद्धाशब्देन विशिष्यत इति । ठाणा० २०१ । चन्द्रसूर्यादिक्रियाविशिष्टोऽर्द्धतृतीयद्वीपसमुद्रान्तर्वर्ती अद्धाकालः । दश० ९ ।

अद्धाकाले-चन्द्रसूर्यादिक्रियाविशिष्टोऽर्द्धतृतीयद्वीपसमुद्रान्तर्वर्ती समयादिः । भग० ५३३ ।

अद्धाद्दए-अद्धोदकः, मानविशेषः । भग० ३१३ ।

अद्धाणं-पहो । नि० चू० प्र० ५१ आ । महदरण्यं । बृ० द्वि० १७४ आ । अध्वा-पन्थाः । बृ० द्वि० १२२ अ । महंता अडवी । नि० चू० प्र० ५० आ । छिन्नापातं महदरण्यम् । बृ० द्वि० २१ आ । उत्पथिलक्षणम् । उत्त० २६८ ।

अद्धाण-अध्वनः। आव० ५३५। अध्वा-विप्रकृष्टो मार्गः। बृ० प्र० २३८ आ।

अद्धाणतेणो-पंथे मुसतो। नि० चू० द्वि० ३८ आ।

अद्धाणपडिवन्ने-अध्वप्रतिपन्नः, मार्गप्रतिपन्न। भग० ११६।

अद्धाणपरिस्संतो-अद्धानपरिश्रान्तः। ओघ० १०७।

अद्धाणपवण्णगो-अध्वप्रपन्नकः। आव० ५७८।

अद्धाणसीसए-यतः परं समुदायेन गन्तव्यं सम्यग्मार्गोद्वहनात्। बृ० तृ० ६१ आ।

अद्धाणसुत्ते-अद्धाणविहिजयणाविदंसणसुत्तं। नि० चू० द्वि० १४८ अ।

अद्धामिस्सिया-अद्धामिश्रिता, अद्धा-काल. स चेह प्रस्तावाद्दिवसो, रात्रिर्वा, स मिश्रितो यया सा भाषा। प्रज्ञा० २५६।

अद्धामीसए-कालविषयं सत्यासत्यम्। ठाणा० ४९०।

अद्धामीसग-अद्धामिश्रा, सत्यामृषाभेद.। दश० २०९।

अद्धासमय-कालसमयः, अद्धाण निर्विभागो भागो वा। जीवा० ६।

अद्धिती-अधृति.। आव० ३५३।

अद्धुट्ठाई-अर्द्धचतुर्थानि। आव० ३९।

अद्धुट्ठाण-अर्युष्ठानाम्, अर्द्धाधिकत्रिणाम्। प्रश्न० ७३।

अद्धोवमिए-अद्धौपमिकम्-यत्कालप्रमाणमनतिशयिना ग्रहीतुं न शक्यते तत्। ठाणा० ९०।

अद्भुतम्-वाण्यतिशय। सम० ६३।

अधम्मजुत्ते-येन उक्तेन प्रतिपाद्यस्याधर्मबुद्धिरुपजन्यते तदधर्मयुक्तम्। ठाणा० २५३।

अधम्मपलज्जणो-अधर्मप्ररक्तः, अधर्मप्रायेषु कर्मसु प्रकर्षेण रज्यत इति। सूत्र० ३२९।

अधम्मपलोई-अधर्मप्रलोकी, अधर्मानेव-परगम्बन्धिदोषानेव प्रलोकयति-प्रेक्षते इत्येवंशीलः। विपा० ४८।

अधम्मो - अधर्मः, अचारित्ररूपत्वात्। अब्रह्मण. षोडशं नाम। प्रश्न० ६६। अधर्मास्तिकायः स्थित्युपष्टम्भगुणः। ठाणा० ४०। अधर्मे-श्रुतलक्षणविहीनत्वादनागमे अपौरुषेयादौ। ठाणा० ४८७। अधर्मास्तिकाय.। सम० ६। अविद्यमानसदाचार-। उत्त० ४३४।

अधरं-भाग्यन्निर्वं कारणम्। बृ० तृ० १९ अ।

अधरक्काए-गर्भिणा। व्य० द्वि० २९९ अ।

अधरिमं - अविद्यमानधारणीयद्रव्यम् ऋणमुत्कलनात्। भग० ५४४।

अधरो-अधर, अधस्तनौष्ठ.। प्रश्न० १४०। अधीरः। उत्त० १५३।

अधरोट्ठा-अधरोष्ठ, अधस्तनो दन्तच्छदः। जं० प्र० ११२। प्रश्न० ८१।

अधस्तनकाय-पादपाणिशिरोग्रीवमुच्यते। ठाणा० ३५७।

अधस्तारका-पिशाचभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।

अधारणिज्जं-अधारणीयं, धारयितुमशक्यम्, स्थातुं वाऽशक्यम्। विपा० ६२। अविद्यमानाधमर्णम्। विपा० ६३। अप्रशस्तप्रदेशग्रजनादिकलङ्काङ्कितत्वात्। आचा० ३९६।

अधिकरणं-अधिकं-अतिरिक्तं उत्सूत्रं करणं, अवधौ अधमा जघन्या गतिः तामात्मानं प्राहयति। क्षपार्थे-भावः। नि० चू० प्र० २९४ अ। अधोकरणं, अधितिकरणं, अबुद्धिकरणम्। नि० चू० प्र० २१३ आ। कलहो। नि० चू० प्र० ३४४ आ, २३९ अ।

अधिकरणनिर्वर्त्तिनी - खड्गादिनिर्वर्त्तिनी, अधिकरणिकी-क्रियाया द्वितीयो भेद। आव० ६११।

अधिकरणप्रवर्त्तिनी-चक्रमह पशुबन्धादिप्रवर्तिनी क्रिया, अधिकरणिकीक्रियाया प्रथमो भेद। आव० ६११।

अधिकरणसाला-अधिकरणशाला, लोहपरिकर्मगृहम्। भग० ६९७।

अधिकरणाणं-अधिकरणानां-कलहानां यन्त्रादीनां वोत्पादयिता। सम० ३७।

अधिकरणिखोडी-अधिकरणिखोडी-यत्र काष्ठेऽधिकरणी निवेश्यते। भग० ६९७।

अधिकरणिसंठिते-अधिकरणीसंस्थितम्। ठाणा० ४३४।

अधिकरणीतो-चुल्ली। नि० चू० द्वि० १०१ अ।

अधिकासिका-या मज्जावेगेनापीडित मुखेनेव गन्तुं शक्नोति ता। ओघ० १९९।

अधिके-अर्गले। उत्त० ६६०।

अधिकवाउ-अधिकतरं व्यापारो। नि० चू० प्र० १५१ अ।

अधिगमजं-दर्शनभेद। आव० ५२७।

अधिगरणं-अधिकरणं, अधिक्रियते-स्थाप्यते-नरकादिष्वात्माऽनेनेति, अनुष्ठानविशेष.। प्रज्ञा० ४१५।

अधिगरणंसि-विरोधे। ठाणा० ४४१।

अधिगरणिया-आधिकरणिकी, अधिकरणेन निर्वृत्ता। प्रश्न०
अधिगारो-अधिकारः. नियोगः। प्रश्न० ६६। [४३५।
अधिघटिकया-कपिलदरिद्रदृष्टान्तविशेषः। आचा० १६३।
अधिट्ठणं-संगिसेजवेढिए चेव उपवेसणं। नि० चू० प्र० २४६ आ।
अधिट्ठाणं-अधिष्ठानम्। ओघ० १४८।
अधिट्ठिज्जा-अधितिष्ठेत्-योन्याकर्षणेन संगृह्णीयात्। ठाणा० ३१३।
अधिट्ठेति-परिभुञ्जति। नि० चू० प्र० २२५ आ।
अधिमरगा-अहिवत् अनपकृतेऽप्यपकारे मारका। नि० चू० द्वि० ११ अ।
अधियं-अधिकम्, वर्णादिभिरभ्यधिकं, सूत्रदोषविशेषः। आव० ३७४।
अधियासितो-अध्यासितः, अधिवासितः। आव० ३४३।
अधिशय-आश्रयतः। आचा० २५५।
अधिष्ठानम्-गुदास्थानम्। दश० ११८।
अधीकारो-प्रयोजनम्। बृ० द्वि० २२५ अ।
अधीकारवशः-प्रसङ्गः। आचा० २४१।
अधीता-अधीना, श्रुतनिषद्धा सती पठिता। प्रश्न० १०५।
अधीतान्वीक्षिकीकस्य-दुर्गृहीतहेतुदृष्टान्तलेशस्य। आचा० २२३।
अधुवं-अध्रुवं-नावश्यभाविनम्। प्रश्न० ९६। प्रातिहारिकम्। नि० चू० द्वि० ११७ आ।
अधुववग्गणा-अध्रुववर्गणा, इतश्चोर्ध्वमित्थमेवैकोत्तरवृद्धिक्रमेण वर्द्धमाना ध्रुववर्गणाभ्य इतरा अनन्ता भवन्ति। विशे० ३३३।
अधुवे-न ध्रुव, सूर्योदयवन्न प्रतिनियतकालेऽवश्यंभावी। भग० ४६९। अध्रुवं-स्वल्पकालानुज्ञापनात्। आचा० ३९६। नित्यो न। उत्त० २८९।
अधो-भूमौ। ओघ० १६२।
अधेणू-सूक्ता वन्ध्या वा। नि० चू० प्र० ३२७ अ।
अधोघट्टना-अधो भुवं घट्टयति। ओघ० १०९।
अधोणता-गजदंतवत् अवनता। नि० चू० द्वि० ४९ आ।
अधोदृष्टिता-दोषविशेषः। उत्त० ४९०।
अधोभागा-भूमिभागः। जं० प्र० ३२१।
अधोभावो-अधोभावः, तिरस्कारबुद्धिः। आव० ६९९।
अधोविवृतम्-अनाच्छादितममालगृहम्। ठाणा० १५७।
अधोवेदिका-जानुनोरधो हस्तयोर्निवेशः। ठाणा० ३९३।
अध्यसनं-अजीर्णे भोजनम्। ठाणा० ४४७।
अध्यास्यन्ते-गम्यन्ते। प्रज्ञा० ८०।
अध्याहार-व्याख्याक्रम्। आचा० ५५।
अध्येषणा-यदृच्छया। गम० ३७।
अध्वर-यज्ञः। उत्त० ५२५।
अनंगप्रविष्टं-गणधरानन्तराद्याचार्यदृब्धम्। तत्त्वा० १-२०।
अनक्रमिन्नेहिं-अनस्तिनैः। भग० ३७३।
अनग्गओ-अनग्नकः, द्रुमविशेषः। जीवा० २६९।
अनङ्गसेन-वैषयाभिमुखर्णकारः। सू० तृ० १०८ आ।
अनतिचारम्-छेदोपस्थापनीयभेदविशेषः। ठाणा० ३२३।
अनतिविलम्बितम्-वाण्यतिशयविशेषः। सम० ६३।
अनध्यवसायः-संशयो विपर्ययो वा। आचा० १५०।
अनानुक्रमाद्-पश्चानुपूर्व्या। विशे० २८४।
अनन्तकम्-समयभाषया वस्त्रमिति। ठाणा० ३४६।
अनन्तगुणितम्-अनन्तगुणितं, अनन्तशो गुणितम्। विशे० २६८।
अनन्तरवली-मात्रादयः पद्। बृ० तृ० ४२ आ।
अनन्यत्वद्रव्यशुद्धिः-आदेशतो द्रव्यशुद्धेर्भेदः, यथा शुद्दन्तः। दश० २११।
अनपनीतम्-वाण्यतिशयविशेषः। सम० ६३।
अनभ्भुयगओ – अनभ्युपगतः, श्रुतोपसम्पदानुपसम्पन्नः। आव० १००।
अनभिग्रहिकः-मिथ्यात्वविशेषः। ठाणा० २७।
अनममाणे-अनममानान्, निर्घृणतया मावद्यानुष्ठायिनः। आचा० २५४।
अनर्गलितकपाटम्-उद्घाटकपाटम्। ओघ० १६६।
अनर्थकम्-अर्थशून्यम्। आव० ५१।
अनलं – अनलम्-अभिष्टकार्यासमर्थ हीनादित्वात्। आचा० ३९६। न अलो अनलः-अपचलः। नि० चू० द्वि० २५ आ।
अनलगिरी-अनलगिरिः, प्रद्योतस्य हस्ती, तृतीयं रत्नम्। आव० ६७३।
अनलसा-उत्साहवन्तः। ओघ० १००।
अनवत्राप्यता-अविद्यमानमवत्राप्यं-अवत्रपणं लज्जनं यस्य सः, अवत्रापयितुं-लज्जयितुमर्हः, शक्यो वाऽवत्राप्यो लज्जनीयः न तथा तद्भावः। उत्त० ३९।

अनवगतानि-असङ्कल्पितान्यनालोचितानि। विशे० १४५।

अनवयाङ्गी-महावीरभगवद्दुहिता। विशे० ९३५।

अनवयग्ग-अनवदग्रम्, अनन्तम्। भग० २४८।

अनवसर-अनागमः। आचा० १२१।

अनाकारा-सामान्यांशग्रहणशक्तिः। भग० ७३।

अनाघात-(अणघायं), अमारिघोषणा। आचा० ३६०।

अनाचारश्रुतम्-सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चममध्ययननाम। ठाणा० ३८७।

अनाचीर्णम्-अनारब्धम्। आचा० १४८।

अनायुक्ता-(अणाउत्ता)-लोपकृता। ओघ० १८६।

अनाद्यन्तं-आद्यन्तरहितम्। ठाणा० १२०।

अनानुगामिकः-अनानुगामिकः-शृङ्खलाप्रतिबद्धदीप इव यो गच्छन्तं पुरुषं नानुगच्छति। प्रज्ञा० ५३९।

अनाभवद्व्यवहार-अस्वामित्वव्यवहार। आव० ८३९।

अनाभोगिक-मिथ्यात्वविशेषः। ठाणा० २७।

अनालीढं-(अणालीढं)-अनवबुद्धः। ओघ० २२७।

अनालोचितानि-असङ्कल्पितान्यनवगतानि। विशे० १४५।

अनाहो-अनाथः, नाथरहितः, योगक्षेमकारिनायकाभावात्। प्रश्न० ११। योगक्षेमकारिविरहितः। प्रश्न० १९।

अनिदं-अनित्थम्, सामायिकसप्तमपर्यायः। आव० ४०४।

अनिन्द्रियं-मनः। बृ० प्र० ९आ।

अनिकामं-परिमितम्। बृ० द्वि० ४ अ।

अनिन्दितः-किन्नरभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।

अनिउणमई-अनिपुणमतिः। आव० ४६२।

अनिग्गहे-अनिग्रहः-न विद्यते इन्द्रियनिग्रह-इन्द्रियनियमात्मकोऽस्येति। उत्त० ३४४।

अनिज्जूहित्ता-अदत्त्वा। भग० ७०६।

अनिट्ठं-अनिष्टम्, इष्यन्ते स्मेतीष्टाहृतविशेषादनिष्टाः। भग० ७२।

अनिट्ठता-अनिष्टता, अवाञ्छता। भग० २३।

अनिट्ठुभओ-अनिष्टीवकः, मुखश्लेष्मणोऽपरित्यागकः। प्रश्न० १०७।

अनित्थंत्थे-अनित्थंस्थं, इत्थंप्रकारमापन्नमित्थं, इत्थं तिष्ठतीति इत्थंस्थं, न इत्थंस्थं अनित्थंस्थं-वदनादिषु परिप्रतिपूरणेन पूर्वाकाराद्यथाभावतोऽनियताकारमिति। प्रश्न० १०९।

अनित्यत्वम्-अतादवस्थ्यम्। जं० प्र० ३६।

अनिद्देस-अनिर्देशदोषः, यत्रोद्देश्यपदानामेकवाक्यभावो न क्रियते, एतादृशः सूत्रदोषविशेषः। आव० ३७४।

अनिभृता-निष्ठुरवक्रोक्त्यादिरूपा। बृ० प्र० २१३ अ।

अनिदोज्जं-अनिर्भयं, अस्वस्थम्। व्य० द्वि० २४३ आ।

अनियट्टि-अनिवृत्ति-शुक्लध्यानचतुर्थभेदरूपम्। उत्त० ५८९। आ सम्यग्दर्शनलाभाद् न निवर्तते। विशे० ५३५।

अनियट्टी-ग्रहविशेषः। ठाणा० ७९। जं० प्र० ५३५।

अनियओ-अनियतः, अनियतवृत्तिः। उत्त० २६९।

अनियतवृत्ति-अनियतविहाररूपा। उत्त० ३९। अनियतविहारः। ठाणा० ४२३।

अनियाओ-अनियता। ओघ० ७३।

अनियाणे-अनिदानः, न विद्यते निदानमस्येति निराकाङ्क्षोऽशेषकर्मक्षयार्थी संयमानुष्ठाने प्रवर्तेत। सूत्र० २६४।

अनिरक्खिय-क्षिप्तः। आव० ६८१।

अनिरुद्धे-अनिरुद्ध, अन्तकृद्दशाना चतुर्थवर्गस्याष्टमाध्ययनम्। अन्त० १४।

अनिरुद्धो-अनिरुद्ध, कृष्णवासुदेवापत्यनाम। प्रश्न० ७३।

अनिर्विष्ट-न दत्तफलम्। बृ० प्र० ५० आ।

अनिव्वुइ-अनिर्वृतिः, अस्वास्थ्यनिबन्धना कायादिचेष्टा। आव० ४९९।

अनिल-अनिलनरेन्द्रः यवराजर्षिपिता। बृ० प्र० १९० आ।

अनिलसुओ-अनिलसुतः यवराजा। बृ० प्र० १९१ अ।

अनिलुंछियहिं-अवर्द्धितकैः। भग० ३०२।

अनिवृत्तिकरण-सम्यक्त्वप्राप्तौ करणविशेषः। ठाणा० ३१। अनिवृत्तिकरणं, न निवर्तनशीलम्। आव० ७५।

अनिवृत्तिबादरः-दर्शनसप्तकक्षयोपशमयोरन्तरम्। आव० ८२१।

अनिव्वाणि-अनिर्वाणि-असुखम्। व्य० प्र० ६२ अ। भेदः (शनि०)

अनिव्वुइकरो-अनिवृतिकरः, अस्वास्थ्यनिबन्धनकायादिचेष्टाकरः। आव० ४९९।

अनिव्वुई-अचित्तभोजी त्रिदण्डोद्वृत्तभोजी। दश० चू० ५१।

अनिश्रितवचनता-रागाद्यकलुषितवचनता। उत्त० ३९।

अनिष्पन्नातापना-(अणिप्फण्णायावणा)-आतापनाया भेदः। ओघ० ४०।

अनिसाइ-अनिशादी । सम० २० ।
अनिसीहं-अनिशीथम्, निशीथाद्विपरीतम् । उत्त० २०४ । बद्धश्रुतम् । आव० ४६४ ।
अनिहुआ-त्रिदण्डिनः । बृ० द्वि० २३५ आ । कन्दर्पबहुला मायिनश्च । बृ० तृ० १९५ आ ।
अनिहो-अनिहः-अमायः, न निहन्यत इति वा परीषहैरपीडित', अस्निहः-स्नेहरूपबन्धनरहितः । सूत्र० ४०० ।
अनीकाधिपतयः-दंडनायकस्थानीया' । तत्त्वा० ४-४ ।
अनीहडं-अनिर्गतम् । आचा० ३२५ ।
अनीहारिमे-अनिर्हारितम् । अटव्यादिकृतमनशनम् । भग० १२० । गिरिकन्दरादौ अनशनम् । ठाणा० ९४ । भग० ६२५ ।
अनु-पश्चात् । आव० २४२ । सातत्यम् । उत्त० ६२७ ।
अनुकूलं-अनुगुणं, अनुलोमं च । जीवा० ३ ।
अनुगमः-सूत्रस्य न्यासानुकूलः परिच्छेदः । ठाणा० ४ । संहितादिव्याख्यानप्रकाररूप', उद्देशनिर्देशनिर्गमादिद्वारकलापात्मको वा । सम० ११५ । अनुगमनम्, अनुगान । उत्त० ६३१ ।
अनुगामि-यन्मोक्षाय अनुगच्छति । व्य० द्वि० ३९८ अ ।
अनुगामिकता-परम्परया शुभानुबन्धसुखम् । जीवा० २४२ ।
अनुगुणं-अनुकूलमनुलोमं च । जीवा० ३ ।
अनुग्गहे-अनुग्रहकृत्स्नं, यत् षण्णां मासानामारोपितं षड् दिवसा गतास्तदनन्तरमन्यत् षण्मासान् आपन्नस्ततो यत् अव्यूढं तत्समस्तं क्षोषितं पश्चात् यदन्यत् षाण्मासिकमापन्नं तद्वहति । व्य० प्र० ११८ आ ।
अनुज्येष्ठ-पश्चाद्वृत्तयज्ञ. । विशे० ४४३ ।
अनुज्ञा-विधि' । आव० ७१३ ।
अनुज्ञातभक्तादिभोजनम् - अदत्तादानविरमणचतुर्थभावना । प्रश्न० १२८ ।
अनुज्ञातसंस्तारकग्रहणम् - अदत्तादानविरमणद्वितीयभावना । प्रश्न० १२७ ।
अनुज्ञापनाय-अनुमतये । आव० ५४२ ।
अनुतटभेदः-तटाद्भेद तटभेद. । ठाणा० ४७५ ।
अनुत्संकलितम्-अवितीर्णम् । आचा० ३६ ।
अनुदिशा-उपाध्यायप्रवर्तिनीलक्षणम् । व्य० द्वि० २०० अ । अनुदिक् । व्य० द्वि० १९६ आ । व्य० द्वि० २०४ आ ।
अनुद्घातकृत्स्न - कालगुरु निरन्तरं वा । व्य० प्र० ११८ आ ।
अनुद्धरिः-कुन्थुविशेषः, त्रीन्द्रियजीवभेदः । उत्त० ६९५ । चलनेव कुन्थु' स विभाव्यते । ठाणा० ४३० ।
अनुनादि-वाण्यतिशयविशेषः । सम० ६३ ।
अनुपथ-मार्गमध्यः । आचा० २६५ ।
अनुपरतम्-उत्सन्नं, बाहुल्येन । आव० ५९० ।
अनुपरिहारकाः-पारिहारकवैयावृत्त्यकराः । ठाणा० ३२४ ।
अनुप्रवाचयति-(अनुपयाएइ), अनु-परिपाट्या प्रकर्षेण विशिष्टार्थावगमरूपेण वाचयति । जीवा० २५४ ।
अनुप्रास-अलङ्कारविशेष. । जं० प्र० १४३ ।
अनुप्रेक्षा-मनसा ग्रन्थार्थयोरभ्यासः । तत्त्वा० ९-२५ ।
अनुप्रेक्षितम्-ध्यातम् । ठाणा० १७३ ।
अनुभयसञ्ज्ञा-स्वकृतासातवेदनीयादिकर्मविपाकोदयसमुत्था । जीवा० १५ ।
अनुभूयते-लक्ष्यते । विशे० १७६ ।
अनुमतं-काम्यम् । आव० ५२७ ।
अनुमानं - साधनधर्म्ममात्रात् साध्यमाननिर्णयात्मकम् । ठाणा० ४९२ ।
अनुयोगद्वाराणि-व्याख्याङ्गानि । आचा० ३ ।
अनुलिखन्-अभिलङ्घयन् । जीवा० १७५ ।
अनुलेपनेन-सकृल्लिप्तस्य पुनः पुनरुपलेपनेन । सम० ११६ ।
अनुलोम-उत्सर्ग' । ओघ० ६५ ।
अनुलोमवचनसहितत्वं-प्रतिरूपविनयविशेषः । व्य० प्र० २२ अ ।
अनुल्वण-अनुद्भटः । जीवा० २७५ ।
अनुवातनम्-उच्चारणम् । आव० ८३५ ।
अनृतम्-असत्यम् । ठाणा० ५०० ।
अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रम्-वाण्यतिशयविशेषः । सम० ६३ ।
अनैकान्तिक-हेतुदोषविशेषः । ठाणा० ४९३ ।
अनुशयः-क्रोधः । उत्त० ३७७ ।
अनुश्रेणि-ऋजुश्रेणिः । उत्त० ५९७ ।
अनुष्ठानं-(अणुट्ठाण)-विहितम् । आव० ६१९ ।
अनुसारगति-अनुपातगति. । सूर्य० १६ ।

अन्नं-अन्यत्। उत्त० १३७। मण्डकखण्डखाद्यादिसमस्तमपि भोजनम्। उत्त० ३६९।

अन्नंति-अनुयन्ति, आगच्छन्ति। ओघ० १२६।

अन्नंदाई-असूया, अन्यामिदानीं वा। आव० ५०९।

अन्न-अन्यः। भग० ३१७। अन्न-भर्त्ता। दश० २१६।

अन्नइलाय-अन्नतिलाए, दोषान्नभोजी। प्रश्न० १०६।

अन्नइलायए-अन्नं विना ग्लानो भवति। भग० ७०५।

अन्नइलायचरए-अन्नग्लानको दोषान्नभुगिति, अथवा अन्नं विना ग्लायकः-समुत्पन्नवेदनादिकारण एव, अन्यस्मै वा ग्लायकाय भोजनार्थं चरतीति अन्नग्लानकचरकोऽन्नग्लायकचरकोऽन्यग्लायकचरको वा। ठाणा० २९८।

अन्नउत्थिए - अन्यतीर्थिकः, चरकपरिव्राजकभिक्षुभौतादिकः। आव० ८११।

अन्नउत्थिता-अन्ययूथिकाः-अन्यतीर्थिकाः। ठाणा० १३५।

अन्नउत्थिय-अन्ययूथिकः, अन्यतीर्थिकः, चरकादिकः। जीवा० १४३।

अन्नकाले-अन्नकालः, सूत्रार्थपौरुष्युत्तरकालं भिक्षाकालः। सूत्र० ३०१।

अन्नकिच्चकरो-अन्यतृप्तिकरः। आव० ७२०।

अन्नगिलाय-पर्युषितम्। आचा० ३१३।

अन्नत्थ-अन्यत्र, परिवर्जनार्थे। प्रज्ञा० २५३। व्य० प्र० १६४ आ।

अन्नधम्मिय-अन्यधार्मिकः, मिथ्यादृष्टिः। ओघ० २४।

अन्नपर-अन्यपरं-अन्यरूपतया परमन्यत्। आचा० ४१५।

अन्नपाणं-अन्नपानम्, ओदनकाञ्जिकादि। उत्त० ३६३।

अन्नभयं-परचक्रभयं। नि० चू० द्वि० २१ अ।

अन्नभावेणं-अन्यभावः-योऽसौ गन्ता सोऽन्यभावः, उन्निष्क्रमितुकामः। ओघ० २२।

अन्नमन्नं-अन्योऽन्यं-परस्परं। ठाणा० १६१।

अन्नमन्नओगाढाइं-एकक्षेत्राश्रितानि। भग० ७५८।

अन्नमन्नघडिया - अन्योऽन्यमथिता, परस्परगुम्फिता। भग० २१५।

अन्नमन्नगुरुयत्ता - अन्योऽन्यगुरुकता, अन्योऽन्येन प्रन्थनाद्गुरुकता-विस्तीर्णता। भग० २१५।

अन्नमन्नगुरुयसंभारियत्ता - अन्योऽन्यगुरुकसम्भारिकता, अन्योऽन्येन गुरुकं यत्सम्भारिकं तद्भावस्तत्ता। भग० २१५।

अन्नमन्नघडत्ताए-परस्परसमुदायतया। भग० ७५८।

अन्नमन्नपुट्ठाइं-आगाढाश्लिष्टतः। भग० ७५८।

अन्नमन्नबद्धाइं-गाढाश्लिष्टतः। भग० ७५८।

अन्नमन्नभारित्ता-अन्योऽन्यभारिकता, अन्योऽन्यस्य यो भारः स विद्यते यत्र तदन्योऽन्यभारिकं तद्भावस्तत्ता। भग० २१५।

अन्नयरंसत्थं-अन्यतरत् शस्त्रम्ः सर्वशस्त्रम्, एकधारादिशस्त्रान्यवच्छेदेन सर्वतोधारशस्त्रकल्पम्। दश० २०१।

अन्नयर-अन्यतरम्, स्तोकम्। दश० १९८। प्रतिकूलम्। आचा० ३४२।

अन्नयरायम्मि-अन्यतरस्मिन्। उत्त० ५४३।

अन्न भण-अन्येनाकृष्यमाणः। ओघ० १६५।

अन्नलिंगे-अन्यलिङ्गम्, साधुलिङ्गम्। आव० १३४।

अन्नवत्थुवन्नास-अन्यवस्तूपन्यासः, उपन्यासस्य द्वितीयो भेदः। दश० ५५।

अन्नवालए-अन्यपालः-अन्ययूथिकः। भग० ३२३।

अन्नवेल-तत्रान्यस्यां-भोजनकालापेक्षयाऽऽयावसानरूपायां वेलायां-समये चरतीति। ठाणा० २९८।

अन्नहाभावो-अन्यथाभावः। बृ० द्वि० २८९ अ। उन्निष्क्रमणाभिप्रायः। ओघ० ८१।

अन्नाइट्ठे-अन्याविष्टः-अभिव्याप्तः। भग० ६८३।

अन्नाओ-अन्यस्मात्, अन्येन द्वारेण। उत्त० २१९।

अन्नाणं-अज्ञानम्, मिथ्याज्ञानम्। उत्त० १५१। मिथ्यात्वतिमिरोपप्लुतदृष्टेर्यद्वस्तु विपर्ययः। विशे० ८०३। द्रव्यपर्यायविषयबोधाभावः। ठाणा० १५४। लौकिकश्रुतम्। ठाणा० ४५१।

अन्नाणतावादा-अज्ञानमेव श्रेय इत्येवंप्रतिज्ञाः। ठाणा० २६८।

अन्नाणकिरिया - अज्ञानात् या चेष्टा कर्म वा सा। ठाणा० १५३।

अन्नाणदोसे - अज्ञानदोषः-अज्ञानात्-कुशास्त्रसंस्कारात् हिंसादिष्वधर्मस्वरूपेषु नरकादिकारणेषु धर्मबुद्ध्याऽभ्युदयार्थं वा प्रवृत्तिस्तल्लक्षणो दोषः, अज्ञानमेव दोषः। ठाणा० १९०।

अन्नाणियवाइ-कुत्सितं ज्ञानमज्ञानं तदेषामस्ति तेऽज्ञानिकास्ते च ते वादिनश्चेत्यज्ञानिकवादिनः। भग० ९४४।

अन्नाणी-अज्ञानी, मिथ्याज्ञान । जीवा० ४३९। ज्ञाननिह्नववादी। सूत्र० २०८।

अन्नाणमूढा-जो सम्मादिमता अन्नाणा णाणबुद्धीए गेण्हति, णो जतिण हेउमएहिं दंसिय घटमाणमत्थपि गिण्हति। नि० चू० द्वि० ४३ अ।

अन्नातचरते-अज्ञात -अनुपदर्शितस्वाजन्यर्द्धिमत्प्रव्रजितादिभाव सन् चरति-भिक्षार्थमटतीत्यज्ञातचरक । ठाणा० २९८ ।

अन्नायउंछं - अज्ञातोञ्छम्, विशुद्धोपकरणग्रहणविषयम् । दश० २८०।

अन्नायएसी - अज्ञातैषी-अज्ञात -तपस्वितादिभिर्गुणैरनवगत एषयते-ग्रासादिक गवेषयति। उत्त० ४१४।

अन्निं-अन्यदीयम्। सूत्र० ३०८।

अन्निआपुत्तो-गङ्गाप्राप्तकेवल आचार्य । (म०)

अन्निकापुत्रिक-आचार्यविशेषनाम। व्य० प्र० १९२ आ।

अन्नितो-अन्वित -युक्त । उत्त० ४४८।

अन्नियपुत्ता-अर्णिकापुत्रा, वैनयिक्यामाचार्या । आव० ४०९ ।

अन्नियपुत्तो-अन्निकापुत्र, आर्यिकालाभद्वारे आर्यिकाऽऽनीताहारभोक्ता आचार्य । आव० ५३७।

अन्ने - नानादेशापेक्षया गौरवगुरुसादिगर्भमामन्त्रणवचनमिदम्। दश० २१६।

अन्नेसमाण-अन्वेषमाण, भगवदाज्ञामनुपालयन्। दश० १८७।

अन्नेसिं-अन्वेषयेत् गवेषयेत्। आचा० ७७।

अन्नो-अन्यदीयम्। सूत्र० ३०८।

अन्नोन्नं-अन्यदन्यद्। ओघ० १४३।

अन्नोन्नकारणं-परस्परवैयावृत्त्यकरणम्। बृ० द्वि० २९२ अ।

अन्नोन्नघडत्ता - अन्योऽन्यघटता, परस्परमम्बद्धता । जीवा० ९३।

अन्यस्वम् - अनगारद्वयसम्बन्धिनो से पुद्गलास्तेषा भेद । भग० ७४१।

अन्यस्वद्रव्यशुद्धि-अन्यद्रव्यशुद्धि, आदेशतो द्रव्यशुद्धे भेद, यथा शुद्धवासा। दश० २११।

अन्यद्रव्यनानाता-परमाणोर्द्व्यणुकादिभेदभिन्नता । आव० २८१।

अन्यपुष्ठः (अण्णपुट्ठ)-कोकिल । उत्त० ६५३।

अन्योऽन्यक्रियासत्तिकक-सप्तमसप्तकम्। ठाणा० ३८७।

अन्योऽन्यप्रगृहीतम्-काव्यतिशयविशेष । सम० ६३।

अन्योऽन्याविभागसम्बद्ध-क्षीरनीरादिवत्सम्बद्धम्। आव० ३२२।

अन्वीक्षिष्यामि-अन्वेषयिष्यामि। आचा० २८२।

अन्वेषयेत्-प्रार्थयेत्। आचा० २९०।

अन्यतीर्थिक-चरकसरकादय । आचा० ३२४। अन्यानि च तान्यर्हत्प्रणीततीर्थादन्यत्वेन तीर्थानि च-निजनिजाभिप्रायेण भवजलधेस्तरणं प्रति कारणतया विकल्पितत्वेनान्यतीर्थानि तेषु भवा, ते च शाक्यसरकादय । उत्त० २९९।

अपइट्ठाणे-अप्रतिष्ठान, सप्तम्या नरकावासविशेष । प्रज्ञा० ८३।

अपकर्षणं-ह्रास । ठाणा० २२२।

अपकसंती-परिहसन्ती नीयमाना वा। ठाणा० ३०८।

अपकिट्ठ-अपकृष्टम्। विचिकित्सम्। भग० २९२।

अपक्खग्गाही-अपक्षग्राही, न पक्षं शास्त्रबाधितं गृह्णाति इति। ठाणा० ४४१।

अपक्खो-कालपक्खो। नि० चू० द्वि० ३३ आ।

अपचयद्रव्यमन्द - कृशशरीरतया प्रवासे न कर्तुमीष्टे। बृ० प्र० ११३ अ।

अपचयभावमन्द -बुद्ध्यभावेन हिताहितप्रवृत्ति-निवृत्ती न कर्तुमीष्टे । बृ० प्र० ११३ अ।

अपच्चक्खाणकसाए-देशविरतिप्रतिबन्धको मोह । सम० ३१।

अपच्चक्खाण किरिआ-सूत्रकृताङ्गे द्वितीयश्रुतस्कन्धाध्ययनविशेष । सम० ४२।

अपच्चक्खाणकिरिया-अप्रत्याख्यानकिया, विंशतिक्रिया मध्य पञ्चमक्रिया। आव० ६१२। अविरतिनिमित्तकर्मबन्ध । ठाणा० ४१। निवृत्त्यभावेन क्रिया-कर्मबन्धकारणम्, सम्यग्दृष्टेश्चतुर्थी क्रिया। प्रज्ञा० ३२४। प्रत्याख्यानक्रियाया अभाव, अप्रत्याख्यानजन्य कर्मबन्धो वा। भग० १०१।

अपच्चक्खाणा-अप्रत्याख्यान। प्रज्ञा० ४६८। कषाया ण्व। आव० ७७। देशविरत्यावारक । ठाणा० १९४।

अपच्चलो-अपचलः, असमर्थः। आव० ५२७। अयोग्यः। नि० चू० द्वि० २५ आ।

अपच्छिमं-अपश्चिमम्, चरमम्। आव० ५४४। पश्चात्कालभाविन्यः। सम० १२०।

अपच्छिमा-अपश्चिमा। आव० ८३९। पश्चिमैवामङ्गलपरिहारार्थमपश्चिमा। ठाणा० ५७।

अपज्जत्तं-अपर्याप्तम्-अशक्तः। उत्त० ४०८।

अपज्जत्ता-अपर्याप्ता, पर्याप्तभाषाविपरीतो भाषाभेदः। दश० २१०।

अपज्जत्तिया-अपर्याप्तिका, या मिश्रतया उभयप्रतिषेधात्मकतया वा न प्रतिनियतरूपतयाऽवधारयितुं शक्यते सा, भाषाया द्वितीयो भेदः। प्रज्ञा० २५५।

अपज्जोसवण-अपत्ते अतीते वा जो पज्जोसवति। नि० चू० प्र० ३३६ अ।

अपडिकम्म-शरीरप्रतिकर्मवर्जितम्। भग० ६२६।

अपडिण्णे-अप्रतिज्ञः, नास्य प्रतिज्ञा विद्यते। आचा० १३२। अनिदानो, वसुदेववन् संयमानुष्ठानं कुर्वन् निदानं न करोति। आचा० १३३। यदि वा स्याद्वादप्रधानत्वान्मौनीन्द्रागमस्यैकपक्षावधारणं प्रतिज्ञा तद् रहितः। आचा० १३३। अनिदानः। आचा० ३०६।

अपडिबद्धया-अप्रतिबद्धता, स्वजनादिषु स्नेहाभाव.। भग० ९७।

अपडिभाणी-अप्रतिभाणी। आचा० ३०६।

अपडिरूवा-अप्रतिरूपा। उत्त० ११३।

अपडिलेह-अल्पार्थे नञ्, ततोऽप्रत्युपेक्षित इति अन्योपकरणत्वादन्यप्रत्युपेक्षः। उत्त० ५९०।

अपडिवाती-अवधिज्ञानभेदः। ठाणा० ३७०।

अपढमसमयनियंठो-अप्रथमसमयनिर्ग्रन्थः, यः शेषेषु समयेषु वर्त्तमानः सः। उत्त० २५७।

अपतिट्ठिए-अप्रतिष्ठितः-आक्रोशादिकारणनिरपेक्ष केवलं क्रोधवेदनीयोदयाद् यो भवति सः। ठाणा० १९३।

अपत्तं-अपात्रं-अभाजनम्। नि० चू० तृ० ८० अ।

अपत्तपडिच्छण-अप्राप्तामपि वेलाम् प्रतिपालयति। ओघ० ४९।

अपत्ति-अप्रीति.। आव० २०१।

अपत्तियं-अप्रीतिकम्। आव० २७३। अपात्रिकाम्-अविद्यमानाधाराम्। भग० ७०५।

अपत्तियंते-अप्रत्ययेति। बृ० द्वि० २२८ आ।

अपत्थं-अपथ्यं-अहितम्। उत्त० २७६।

अपत्थिअपत्थिआ-अप्रार्थितप्रार्थकः। आव० १९२।

अपत्थियपत्थए-अप्रार्थितं प्रार्थयते यः सः। भग० १७४।

अपदंसो-पित्तारअ। नि० चू० प्र० ११७अ।

अपदर्पितं। जीवा० १९९।

अपद्रापयेत्-जीविताद्व्यपरोपयेत्। आचा० ४२८।

अपदलम्-अपशदं द्रव्यं (दल) कारणभूतं मृत्तिकादि यस्या- *सावपदलः, अपदलति वा दीर्यत इत्यपदलः आमपक्वतया* ऽसार इत्यर्थः। ठाणा० २७९।

अपद्रावन्ति-प्राणान्मुचन्ति। आचा० ५५।

अपद्वारं-कुत्सितद्वारम्। ठाणा० ४०२।

अपद्वारिका-(अवदारिआ)-स्थानविशेषः। बृ० द्वि० २७२ आ।

अपध्यानम्-विस्रोतसिका। आव० ६०२।

अपनीत-विधूत. प्रकम्पितो वा। आव० ५०७।

अपनीता-विनाशिता। ओघ० ४६।

अपभ्रंशः-तत्तद्देशेषु शुद्धं भाषितम्। उ० प्र० २५९।

अपमज्जियं-अप्रमार्जितम्, द्वितीयासमाधिस्थानम्। आव० ६५३।

अपमज्जियचारि-*अप्रमार्जितचारी, असमाधिस्थाने द्वितीयो* भेद। सम० ३७।

अपमज्जियदुप्पमज्जियसिज्जासंथारए-अप्रमार्जितदुष्प्रमार्जितशय्यासंस्तारकः, शय्यादेश्चक्षुषा न प्रत्युपेक्षणं, शय्यादेरुद्भ्रान्तचेतसा प्रत्युपेक्षणं दुष्प्रत्युपेक्षणं यस्य सः। आव० ८३५।

अपमत्ते-अप्रमत्त.-निद्रादिप्रमादरहितः। आचा० १०३।

अपमानभीरु-भिक्षां भ्रमन्नपि न यस्य तस्यैव वेश्मनि प्रवेष्टुमिच्छति, यदि वा 'ओमाण' ति प्रवेश, स च स्वपक्षपरपक्षयोरन्यतरदृहिर्वतिवन्येन मा मां प्रविशन्तमवलोकयान्ये साधव. गौतमादयो वाऽत्र प्रवेश्यन्तीति। उत्त० ५५२।

अपमित्यकः-पद वाक्यदोष। प्रश्न० १४४।

अपयं-अपदम्, पदविधौ पदे विधातव्येऽन्यच्छन्दोऽभिधानम्। सूत्रदोषविशेष। आव० ३७४। न विद्यते पदम्-अवस्थाविशेषो यस्य न। आचा० २११।

अपयाण-अपादानं-मर्यादया दानं (खण्डनं)। आव० २७८।
अपया-लोमसीआदि। नि० चू० प्र० ३ आ।
अपर-सयम । आचा० १६७।
अपरच्छं-अपराक्षम्, अममक्ष, अधर्मद्वारस्य त्रिंशत्तम नाम। प्रश्न० ४३।
अपरद्धो-अपराद्ध, व्याप्त । आव० १०८।
अपरमं-दुक्खम्। दश० चू० ६२।
अपरमविद्धम्-वाण्यतिशयविशेष । सम० ६३।
अपराइआ-वप्रावतीविजये अपराजिता राजधानी। जं० प्र० ३५७।
अपराइए-प्रतिवासुदेवनाम। सम० १५४।
अपराइय-पद्मबलदेवस्य पूर्वभवनाम। सम० १५३।
अपराजिअ-अपराजित, अरजिनप्रथमभिक्षादाता। आव० १४७।
अपराजिआ - अपराजिता, राजधानीनाम। जं० प्र० ३५२। *पौरस्त्यरुचकवास्तव्याऽष्टमी दिक्कुमारी। जं० प्र०* ३९१। रात्रिनाम। जं० प्र० ४९१। चन्द्रस्याग्रमहिषीनाम। जं० प्र० ५३२। पद्मबलदेवमाता। आव० १६२।
अपराजिए-ग्रहविशेष । ठाणा० ७९।
अपराजित-जगतीद्वारनामविशेष । सम० ८८।
अपराजिता - अपराजिता, अञ्जनपर्वते पुष्करणीविशेष । ठाणा० २३१। अनुत्तरोपपातिकविमानविशेष । प्रज्ञा० ६९।
अपराजिते-जगतीद्वारनामविशेष । ठाणा० २२५।
अपराजिय-कुन्थुजिनप्रथमभिक्षादाता। सम० १५१।
अपराजिया - अपराजिता-नैद्धान्तिकरात्रिनाम । सूर्य० १४७। अग्रमबलदेवमाता। सम० १५२। अङ्गारकम हाग्रहस्याग्रमहिषी। भग० ५०५ ठाणा० २०४। मुनिधि नाथदीक्षाशिबिका। सम० १५१। विदहेषु राजधानीविशेष नाम। ठाणा० ८०। राजधानीविशेष । ठाणा० ८०।
अपराधालोचना-आलोचनाभेद । व्य० प्र० ४८ आ।
अपरिआविआ - अपरितापिता, स्वत परतो वाऽनुप जातकायमन परितापा । जं० प्र० १२६।
अपरिकम्म-अपरिकर्म-व्याघाते गिरिभित्तिपतनाभिघातादि रूपे सल्लेखनामविधायैव भक्तप्रत्याख्यानादि क्रियते तत्। उत्त० ६०३।
अपरिक्खिउ-अनालोच्य। नि० चू० प्र० ९८ आ।
अपरिसेविदितं-वाण्यतिशयविशेष । सम० ६३।
अपरिग्गहियागमणे - अपरिगृहीतागमनम्, वेश्या अन्य सत्कगृहीतभाटी कुलाङ्गना अनाथा वा तस्या गमनं-मैथुनासेवनम्। आव० ८२५।
अपरिग्गहो-अपरिग्रह, धर्मोपकरणवर्जपरिग्रहवस्तुधर्मो पकरणमूर्च्छावर्जित । प्रश्न० १४२। न विद्यते धर्मो पकरणादृते शरीरोपभोगाय स्वल्पोऽपि परिग्रहो यस्य स । सूत्र० ४९। अगीतार्थ तदायत्ताश्च। व्य० प्र० २३३ अ।
अपरिणत-अमार्गस्य । आव० ८५१।
अपरिणते-भोजनपरिणामभाव । ओघ० २३।
अपरिणय-सेहप्राय । ओघ० ८९। बाल्यग्रहणभावोऽ पगतोऽपरिचितो वा ज्ञान। ओघ० २०३। अपरिणत -एषणा-दोषविशेष । आचा० ३४५। अविध्वस्त। आचा० ३४८।
अपरिणामा - अपरिणामा, अपरिणतजिनवचनरहस्या। विशे० ९३१। अपरिणामिप । व्य० प्र० ७२ अ।
अपरितंतजोगी - अपरितान्तयोगी अविश्रान्तसमाधि । अन्त० १३, अनुत्त० ४। अपरितान्ता -अश्रान्ता योगा - मन प्रभृतय सदनुष्ठानेषु यस्य स । प्रश्न० १०९।
अपरितंतो-वैयावृत्यादी अनिर्वेदी। बृ० तृ० ९२ आ। अनिर्विण्णो। बृ० प्र० २७१ अ।
अपरितावियं-अपरितापित, स्वत परतो वाऽनुपजात-कायमन परिताप । जीवा० २८४।
अपरिपुण्णं-अपरिपूर्णम्, सद्गुणविरहाच्छुच्छम्। सूत्र० ३२६।
अपरिभुत्तं-अपरिभुक्तम्। आचा० ३२५।
अपरिभुत्त-अपरिभुक्त अनाक्रान्त । ओघ० ५७।
अपरिमाण-अपरिमाण -अनन्त । आचा० २४१।
अपरिमितम् अमितम्। आव० ७९५।
अपरिमियपरिग्गह-अपरिमितपरिग्रह । आव० ८२५।
अपरिमियमणंता - *अपरिमितानन्ता - अलन्तानन्ता ।* प्रश्न० ९२।
अपरियाइत्ता-अपर्यादाय-समन्तादगृहीत्वा। ठाणा० २०। अपर्यादाय-अगृहीत्वा। भग० ६४३। जीवा० ३७५। ठाणा० ४६।
अपरियाणित्ता-*अपरिज्ञाय। ठाणा० ४६।*
अपरियावणया-शरीरपरितापानुत्पादनेन। भग० ३०५।
अपरिसाडि-*अनवयवोज्झनम्। भग० २९४।*

अपरिसाडि-अपरिशाटि, परिशाटिविवर्जितम् । प्रश्न० ११२ ।
अपरिसाडी-वसकपिमादी । नि०-चू० प्र० १६८ अ ।
अपरिसुद्धं-अपरिशुद्धम्, अयुक्तियुक्तम् । आव० ५७६ ।
अपरिस्साइ – न परिश्रवति-नालोचकदोषानुपश्रुत्यान्यस्मै प्रतिपादयति य एवशील सोऽपरिश्रावीति । ठाणा० ४२४ ।
अपरिस्सावी-अपरिश्रावी-अवन्धको निरुद्धयोग । भग० ८९२ । अघरक (आउ०)
अपरिहत्थो-अदक्ष । आव० ५६७ ।
अपरिहरित्ता – अपरिहृत्य – द्विर्नैर्मासैर्व्यवधानमकृत्वा । आचा० ३६६ ।
अपरिहारिया-अपरिहारिका-साधर्मिका । आचा० ३५२ ।
अपरीत्ता-साधारणशरीरा । ठाणा० १३२ ।
अपर्याप्ति-तत्परिणामयोग्यदलिकद्रव्यमात्मना नोपात्त (सत्त्वपि तत्पुद्गलेषु स परिणामो रुध्यते)। तत्त्वा० ८-१२ ।
अपवरगो-अपवरक । जीवा० २६९ । अपवरकम्, अन्तर्गृहम् । ओघ० १५३ ।
अपवरिका-अपवरकम् । व्य० द्वि० २०७ आ ।
अपवर्त्तनम्-कमणा स्थित्यादेरध्यवसायविशेषेण हीनताकरणम् । भग० ७५ । उपक्रमैराशुफलस्य शीघ्र पाक । तत्त्वा० २-५२ ।
अपवर्त्तना-हानिकरणम् । सूर्य० । १३ ।
अपवर्त्तयन्-तिरश्चीन कुर्वन् । आचा० ३४३ ।
अपवाद –कारण, विशेषवचन च । ज० प्र० ५४१ । विभाग । नि० चू० तृ० १०५ आ ।
अपवादम् प्रवचनरहस्यम् । बृ० प्र० १३१ अ ।
अपवादापवादरूपम्-शाक्यादीनां प्रयाणे रुद्राणां विज्ञापनम् । ठाणा० ३१२ ।
अपव्वावित्तो-न प्रव्रजित न मुडितानि कृतानि । व्य० द्वि० २८ आ ।
अपसत्थविहायगति – अप्रशस्तविहायोगति – नामकर्मविशेष । प्रज्ञा० ४७४ ।
अपसिणा-अप्रश्ना -या पुनर्विद्या मन्त्रविधिना जप्यमाना अपृष्ट एव शुभाशुभं कथयन्ति एता । सम० १२४ ।
अपसु-अपशु -द्विपदचतुष्पदादिरहित । आचा० ४०३ ।
अपहार-मत्स्य । ठाणा० ३०९ ।
अपहुप्पते अप्रभवति, अपूर्यमाण । पिण्ड० ८८ ।
अपहृतान्योत्तरम्-वाण्यतिशयविशेष । सम० ६३ ।
अपाईणवाए-अप्राचीनवात य प्रतीच्या दिश समागच्छति वात स । प्रज्ञा० ३० ।
अपाचीने-अशुभे । आचा० २५० ।
अपान्तरालम्-अबाधा । जीवा० ५४ ।
अपान्तरालसामान्यम्-वृक्षत्वगोत्वगन्तत्वादिकम् । विशे० ८९५ ।
अपाय-अपादम्, विशिष्टछन्दोरचनायोगात् पादवर्जित गद्यगुण । दश० ८८ ।
अपाय-सम्यगसम्यगिति गुणदोषविचारणाध्यवसायापनोद । तत्त्वा० १-१५ ।
अपायतो-विश्लेषत । ठाणा० ४२८ ।
अपारगमा-अपारङ्गमा, पार –त परकूल तद्गच्छन्तीति पारङ्गमा न पारङ्गमा अपारङ्गमा । आचा० १२४ ।
अपावते-अपापक शुभचिन्तारूप । ठाणा० ४०९ ।
अपावभाव-अपापभाव, शुद्धचित्त । दश० २३ ।
अपाश्रय –आधार । विशे० ४१५ ।
अपि. – सम्भावनानिवृत्त्यपेक्षासमुच्चयगर्हाशिष्यामर्षणभूषणप्रश्नेष्विति । ठाणा० ४९५ । बाढम् । जीवा० १९० । विद्यमान । आव० ४५० । च । उत्त० १८२ । इति । ओघ० ३६ । यथा इत्यर्थे, समुच्चयार्थश्च । आचा० ६५ । पुन । आचा० २८२ । बाढार्थे । ज० प्र० ४६ । एवकारार्थे । आव० ५८९ । अभ्युपगमवादसमूचक । आव० ५३१ । बाढम् । ज० प्र० ४१३ ।
अपिट्टणया-यष्ट्यादिताडनपरिहारेण । भग० ३०५ ।
अपियत्ता-अप्रियता, सर्वषामेव द्वेष्यतया । भग० २३ ।
अपीओ-अपीत, न पीन । उत्त० ८७ ।
अपुज्जो-अपूज्य, अवन्दनीय । आव० ५१९ ।
अपुट्ठवागरण-अपृष्टव्याकरणम्, अपृष्ट सति प्रतिपादनम् । भग० ११७ ।
अपुणरावत्तय-अपुनरावर्त्तकम्, कर्मबीजाभावाद्भवावतार-रहितम् । भग० ५ ।
अपुणरावित्ति-अपुनरावर्तकम्-आवर्त्तमानपुनर्भवावतारम् । सम० ५ ।
अपुत्तो-अपुत्र, स्वजनपुत्ररहित, निर्मम इत्यर्थ । आचा० ४०३ ।

अपुप्फिय–अपुष्पितं–तरिकारहितम्। ओघ० १०२। मन्त्रम्। बृ० प्र० ६८ अ।

अपुम–नपुंसकम्। ओघ० ९०।

अपुरिसंतरकडं – अपुरुषान्तरकृत–तेनैव दात्रा कृतम्। आचा० ३२५।

अपुरिस–अपुरुष, नपुंसक। ठाणा० ३७२।

अपुव्वो–अपूर्व, अननुभूतपूर्वोऽनुभूतपूर्वो वा। अनु० १३७।

अपुव्वं–अपूर्वम्, अपूर्वकरणम्। आव० ८५२।

अपूर्वश्रुतप्रत्याख्यानम्–आतुरप्रत्याख्यानादिकम्। आव० ४७९। अप्राप्तपूर्वं, स्थितिघात–रसाघाताद्यपूर्वार्थनिर्वर्तकम्। विशे० ५३५। अश्रुतपूर्वम्। आव० २३०, बृ० प्र० १९४अ।

अपुव्वकरण–अपूर्वकरण–असदृशाध्यवसायविशेषम्। भग० ४३६। अप्राप्तपूर्वम्। आव० ७५। सम्यक्त्वप्राप्तौ करणविशेष। ठाणा० ३१।

अपुहुत्ते–अपृथक्त्व, अपृथग्भाव, चरणधर्मसङ्ख्याद्रव्यानुयोगानां प्रतिसूत्रम विभागेन वर्तनम्। आव० २८५। अपृथक्त्वानुयोग –एकस्मिन्नेव सूत्रे सर्व एव चरणादय प्ररूप्यन्ते। दश० ४।

अपूरेंतो अपूरयन् अकुर्वन्। आव० २७। अकुर्वन्, अनाचरन्। आव० ८६३।

अपूर्वभक्तिकम्–अपूर्वरचनाकम्। ठाणा० ४०१।

अपेक्षाकारणम् – दिग्देशकालाकाशपुरुषचक्रादि। ठाणा० ४९४।

अपेज्जं–अपेयम्। जीवा० २७०। अपेयम्–मद्यादिरम्। व्य० प्र० ८ अ।

अपोद्धारः–साक्षादुक्ति। आचा० ४९। निरास। आव० ३०९।

अपोरसीय–अपौरुषेयम्, अपुरुषप्रमाणम्। भग० २९०।

अपोरसिय–अपौरुषेयम्, पुरुषप्रमाणरहितम्। भग० ८०।

अपोह अपोह, पृथग्भाव। ओघ० १२। अपोहनं–निश्चय। आव० १८। विपक्षनिरास। भग० ४३३। अपोहनमपोहो–निश्चय। विशे० २२६।

अपोहए–यदादिष्टं गुरुभिरेव निश्चिनोति। विशे० ३ ३।

अपोहते एवमेतत् यदादिष्टमाचार्येणेति पुनस्तमर्थमागृहीत धारयति करोति च सम्यक्तदुक्तमनुष्ठानमिति। आव० २६।

अप्पं–अल्पम्, मूल्यत एरण्डकाष्ठादि। दश० १४७। अभावे, स्तोके वा। आव० ५८६।

अप्पइट्ठाणे–अप्रतिष्ठान। सम० २। मोक्ष। आचा० २३१।

अप्पइट्ठिते – अप्रतिष्ठित –निरालम्बन एव केवलक्रोधवेदनीयादुपजायते य क्रोध। प्रज्ञा० २९०।

अप्पईकारं–अप्रतीकारम्, सुतिकर्मादिरहितम्। प्रश्न० २७।

अप्पउलिओसहिभक्खणया–अपक्वौषधभक्षणता। आव० ८२८।

अप्पग–शरीरे। आव० ५५५।

अप्पकम्मपच्चायाते – अल्पकर्मप्रत्यायात –अल्पै –स्तोकैः कर्मभिः करणभूतै प्रत्यायात –प्रत्यागतो मानुषत्वमिति, अथवा एकत्र जनित्वा ततोऽल्पकर्मा सन् य प्रत्यायात स तथा लघुकर्मतयोत्पन्न। ठाणा० १८०।

अप्पकिरियतराए –अल्पक्रियत्वम्– तथाविधकायिक्यादिकक्रियाऽपेक्षम्। भग० ७६९।

अप्पकुकुई – अल्पकौत्कुच, अल्पस्पन्दन, अल्पं–असत् 'कुकुय' कौत्कुच–करचरणभ्रमणाद्यसच्चेष्टात्मकमस्येति। उत्त० ५९।

अप्पक्खम–आत्मक्षमा–आत्महिताम्। ओघ० १८९।

अप्पक्खर–अल्पाक्षरम्, सूत्रगुण। आव० ३७६।

अप्पग्घ–अल्पार्घम्, स्वल्पमूल्यम्। भग० १९९।

अप्पच्चओ अप्रत्यय, प्रत्ययाभाव। अधर्मद्वारस्य चतुर्विंशतितमं नाम। प्रश्न० २६। अप्रत्ययकारणत्वात्। अधर्मद्वारस्य सप्तदशं नाम। प्रश्न० ४३।

अप्पच्चक्खाण–अप्रत्याख्यानम्, सर्वप्रत्याख्यानं देशप्रत्याख्यानं च येषा उदये न लभ्यते। विशे० ५४४।

अप्पच्चक्खाय अप्रत्याख्याय–अनिराकृत्य। उत्त० ३६६।

अप्पच्छन्दमईओ–आत्मच्छन्दमति, आत्मच्छन्दा–स्वाभिप्रायकार्यकारी। आव० १००।

अप्पजूहिए–निर्धेऽप्योदनादिकं। आचा० ३३५।

अप्पज्झं–आत्मवश, स्वस्थचित्तम्। बृ० द्वि० २१० अ।

अप्पज्झाणं–आत्मध्यानम्, अमुकोऽहं अमुककुले अमुगम्मि अमुगधम्मट्ठाणट्ठिदए न य तव्विराहणेत्यादिरूपम्। प्रश्न० १२८।

अप्पसंझे–अल्पसंझ, अविद्यमानकलहविशेष। औप० ३९।

अप्पझंझा – अल्पझंझाः – विगततथाविधविप्रकीर्णवचनाः। ठाणा० ४४२।

अप्पडिकुट्ठाइं–अप्रतिक्रुष्टे–अनिवारिते। ठाणा० ९३।

अप्पडिबद्धे–अप्रतिबद्ध–मनसि निरभिष्वंगता। उत्त० ५८७।

अप्पडिबुज्झमाणे –अप्रतिबुद्ध्यमानः–शब्दान्तराण्यनवधारयन् अप्रत्युद्यमानो वा – अनपह्रियमाणमानसो। भग० ४८३।

अप्पडिरूवा–अप्रतिरूपा। आव० ६७५।

अप्पडिरूवे–अप्रतिरूपः, अविद्यमानं प्रतिरूपमतिप्रकर्षवत्त्वेनानन्यतुल्यमस्येति। उत्त० १८८।

अप्पडिलेहणा–अप्रत्युपेक्षणा, गृह्नत एव चक्षुषाऽनिरीक्षणा। आव० ५५६।

अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियउच्चारपासवणभूमि– अप्रतिलेखितदुष्प्रतिलेखितोच्चारप्रश्रवणभूमि–पौषधेऽतिचारः। आव० ८३५।

अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियसिज्जासंथारए – अप्रतिलेखितदुष्प्रतिलेखितशय्यासंस्तारकः–पौषधेऽतिचारः। आव० ८३५।

अप्पडिलेहियदूसे–अप्रतिलेखितदूष्यः। ठाणा० २३४।

अप्पडिलेहियपणयं–अप्रतिलेखितदूष्यपञ्चकम्, दूष्यपञ्चकस्य प्रथमो भेदः, तूल्यु१पधानक२गण्डोपधाना३लिङ्गिनी४पोतमयमसूर५भेदभिन्नम्। आव० ६५२।

अप्पडिवाइ–अप्रतिपाति, अनुपरतस्वभावम्। आव० ६०८।

अप्पडिसुणणं–अप्रतिश्रवणम्, अप्रतिश्रोता। आव० ७२६।

अप्पडिसेवी–अप्रतिसेवी–न कुत्सितं कर्म आचरति। ओघ० १६५।

अप्पडिहओ–अप्रतिहतः, सौगन्धिककाननगर्भधिपति। विपा० ९५।

अप्पडिहट्टु–अगप्पगित्ता। नि० चू० प्र० १६९ अ।

अप्पडिहयं–अप्रतिहतं, अप्रतिस्खलितम्। जीवा० २५६।

अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे – अप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा, न प्रतिहतं तपोविधानेन मरणकालादारादर्वाक् प्रत्याख्यातं च मरणकालेऽप्याश्रवनिरोधेन पापकर्म येन स.। न प्रतिहतं सम्यग्दर्शनसंनिवर्तितं प्रत्याख्यातं च सर्वविरत्यङ्गीकरणतः पापकर्म–ज्ञानावरणाद्यशुभं कर्म येन सः। भग० ३६।

अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे – अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधरः, योऽप्रतिहते कटकुड्यादिभिरस्खलितेऽविसंवादके वा वरे–प्रधाने ज्ञानदर्शने–विशेषसामान्यबोधात्मके धारयति सः। भग० ७।

अप्पडिहो–अप्रतिघः (भक्त०)

अप्पणं–अर्पणं, प्राधान्येन विवक्षणम्। विशे० १२७७, ७७१।

अप्पणच्चिय–आत्मीयम्, स्वकीयम्। भग० १३२।

अप्पणट्ठा–आत्मार्थम्, आत्मनिमित्तम्। दश० २४९।

अप्पणियं–आत्मीयं। आव० १८९।

अप्पणिया–आत्मीया। आव० २१२।

अप्पतिट्ठाणं–अप्रतिष्ठानम्, नरकविशेष। आव० ३४८।

अप्पतुमंतुमा – अल्पतुमन्तुमाः – विगतक्षोभकृतमनोविकारविशेषा.। ठाणा. ४४२।

अप्पतुमंतुमे–अल्पम्–अविद्यमानं त्वं त्वमिति स्वल्पापराधिन्यपि त्वमेव पुराऽपि कृतवान् त्वमेवं सदा करोषीत्यादि पुनः पुनः प्रलपनं यस्य स.। उत्त० ५८९।

अप्पतेअ–अल्पतेज.–तेजशून्यः। दश० २७६।

अप्पत्तियं–अप्रीतिकम्। उत्त० ९०। दश० चू० १२५। पच्चामरिसस्सरणम्। नि० चू० प्र० ३१ अ। मनस पीडां कुर्यात्। आचा० ४०५। क्रोधः। सूत्र० ३४। अप्रेम। भग० २९२। मनस दुष्प्रणिधानम्। सूत्र० ३३१।

अप्पपरिकम्मं–तननं, सन्धानं दशाछेदनं वा। बृ० द्वि० २०२ आ।

अप्पपाणं–अल्पप्राणम्, अल्पा –अविद्यमाना· प्राणा –प्राणिनो यस्मिंस्तत्, अवस्थितागन्तुकजन्तुविरहितम्। उत्त०६०।

अप्पपुण्णेहिं–अपुण्यैः–अनार्यैः पापाचारैः। आचा० ३०३।

अप्पभाए–अप्रभात। आव० ३०१।

अप्पभक्खी–अल्पलघुभक्षी–अल्पानि–स्तोकानि लघूनि निःसाराणि निष्पावादीनि भक्षयितुं शीलमस्य। उत्त० ४२०।

अप्पभु–अप्रभव.–भृत्यादयः। ओघ० १६३।

अप्पभूतं–अल्पभूता–अल्पा। ठाणा० २९८।

अप्पमज्जणा–अप्रमार्जना, गृह्नत एव रजोहरणादिनाऽप्रमार्जना। आव० ५५६।

अप्पमज्जियदुप्पमज्जियउच्चारपासवणभूमी–अप्रमार्जितदुष्प्रमार्जितोच्चारप्रश्रवणभूमि –पौषधेऽतिचार । आव० ८३५।

अप्पमत्तो–अप्रमत्त, गुरुपारतन्त्र्यापहारिप्रमादपरिहर्त्ता। उत्त० २२३। अप्रमत्तसंयतग्राम, भूतग्रामस्य सप्तम गुणस्थानम्। आव० ६५०। आत्महितेषु जाग्रन्। आचा० १७२। प्रयत्नवान्। ओघ० २२१।

अप्पमाए–अप्रमाद, योगसङ्ग्रहे षड्विंशतितमो योग। आव० ६६४। अकर्मकम्। सूत्र० १६९।

अप्पमाओ–अप्रमाद, उत्तराध्ययनेषु एकोनत्रिंशत्तममध्ययनम्। उत्त० ९। सम० ६४। उवओगपुव्वकरणकिरियालक्खणो। नि० चू० प्र० २९ अ।

अप्पमाणभोती–अप्रमाणभोजी, द्वात्रिंशत्कवलाधिकाहारभोक्ता। प्रश्न० १२५।

अप्पमातो–अप्रमाद प्रमादवर्जनम्, अहिंसाया एकोन पञ्चाशत्तम नाम। प्रश्न० ९९।

अप्पयं–आत्मानम्। अल्पमेव वा। उत्त० ९०।

अप्पयाणय–अप्रयाणम्। आव० ३८५।

अप्परए–अल्परत, अल्प–अविद्यमान रतमिति क्रीडित मोहनीयकर्मोदयजनितमस्येति, स्वसप्तमादि, अल्परजा, प्रतनुबध्यमानकर्मा। उत्त० ६७।

अप्परिसाडियं–अपरिसाडिकम्, परिसाटविरहितम्। उत्त० ६१।

अप्परिहारिए–अपरिहारिक पार्श्वस्थावसन्नकुशीलसमक्त यथाच्छन्दरूप। आचा० ३२४।

अप्पलीयमाणा–अप्रलीयमाना–अनभिरक्ता। आचा० २४१।

अप्पलेवा–अल्पलेपा, निर्लेपा, चतुर्थी पिण्डैषणा। आव० ५७०। अप्पलेवा–जस्स दिज्जमाणस्स णिप्पावचणगादिगस्स लेवो ण भवति गा। नि० चू० तृ० १२ अ।

अप्पवणिज्जोदग–अपात०यजला मेघा। भग० ३०६।

अप्पवुट्ठिकाए–अल्पवृष्टिकाय, अल्प–स्तोकोऽविद्यमानो वा वर्षणं वृष्टि –अध पतनं वृष्टिप्रधान कायो–जीवनिकायो व्योमनि पतदप्काय इत्यर्थ, वर्षणधर्मयुक्त बोदक वृष्टि, तस्या कायो–राशिर्वृष्टिकाय अल्पश्चासौ वृष्टिकायश्चाल्पवृष्टिकाय। ठाणा० १४१।

अप्पसत्थाओ अप्रशस्ता –आश्रयस्योऽनादेया। ठाणा० १७५।

अप्पसद्दा–अल्पशब्दा –विगतरात्रौमहाध्वनय। ठाणा० ४४२।

अप्पससरक्खं–अल्परजस्कम्। आचा० ३३७।

अप्पसागारियं–अल्पसागारिकम्। आव० १५५। अल्पगृहस्थम्। उत्त० ९०। आव० ३५८।

अप्पसावज्जं–अल्पसावद्यम्, अपाप, स्तोकपाप वा। आव० ५८६।

अप्पसाहणो–अल्पसाधन, वस्त्रादिरहित। आव० ७१२।

अप्पहाणो–अप्रधान, लघु। उत्त० १४९।

अप्पहिट्ठे–अप्रहृष्टम्, अहसन्। दश० १६६।

अप्पा–आत्मा, अभिहितरूपस्तदाधाररूपो वा देह। उत्त० ५३। शरीरम्। प्रज्ञा० ३०५। अतति सन्तत गच्छति शुद्धिसङ्क्लेशात्मकपरिणामान्तराणीति। उत्त० ५७। नि० चू० प्र० १५ अ। आत्मा–स्वभाव। ठाणा० ६१।

अप्पाइय–आप्यायित। आव० ७१६।

अप्पाउरण–अप्रावरण, अभिग्रहविशेष। आव० ८५४।

अप्पाणं–आत्मानम्, अतीतसावद्ययोगकारिणमश्लाध्यम्। अप्राणम्–अतीतसावद्ययोगत्राणविरहितम्। अतनम्–अतीत सावद्ययोग सततभवनप्रवृत्त निवर्तयामि। आव० ४८६।

अप्पाणमेव–आत्मनैव। उत्त० ३१४। आत्मान–अनरात्मानम्। आचा० २८३।

अप्पायक–अल्पातङ्क, रोगरहित। आव० ७९३। अरोगी। आचा० ३९३।

अप्पाहंति–सन्दिशन्ति। बृ० तृ० ४४ आ।

अप्पाहट्ट–आहृत्य, व्यवस्थाप्य, अपाहृत्य वा। सूत्र० २७४।

अप्पाहणया–सन्देशस्तस्यैव दातव्य। ओघ० १०२।

अप्पाहार–अप्पधारणा, सामर्थ्यम्, अप्पाहारता जत्थ त। नि० चू० तृ० ८२ आ।

अप्पाहार–अल्पाहार, ऊनोदरताया प्रथमो भेद। दश० २७। ठाणा० १४९।

अप्पाहारे–अल्पाधार –तमेव पृष्ट्वा सूत्रार्थवाचना ददाति। बृ० तृ० १३३ आ। अल्पाहार, अष्टकवलाहार। औप० ३८। भग० ९२१। स्तोकाहार, साधु। भग० २९२। स्तोकाशी, षष्ठाष्टमादिसल्लेखनाक्रमायात तप कुर्वन् यनादि पारयेत्तनाल्प एमित्यर्थ। आचा० २९०।

अप्पाहारो-जो आयरिओ सकियसुत्तत्थो त चेव पुच्छिउ पायणं देति, तारिस ति मोत्तु ण गतव्वं । नि० चू० तृ० ९१ आ।

अप्पाहिंति-सन्दिशन्ति । बृ० द्वि० ११४ आ। सन्दिशत । आव० ३०२।

अप्पाहिकरणे-अल्पाधिकरणं-निष्कलह् । ठाणा० ४१६।

अप्पाहितो-सन्दिष्टः । उत्त० २१९।

अप्पाहे-तद्गुरोस्तत्प्रवर्तिन्या वा एव सन्दिशति-यथैतामात्मसकाशे कुरुत । ओघ० ४३।

अप्पाहेइ-सन्दिशति । दश० १०३।

अप्पाहेति-संदिसइ । नि० चू० प्र० २११ आ।

अप्पाहेत्ता-सन्दिश्य । उत्त० १७३। आव० ३१०।

अप्पिच्छे-अल्पेच्छ, अल्पा-स्तोका, अल्पशब्दस्याभाववादित्वेनाविद्यमाना वा इच्छा-वाञ्छा वा यस्येति। उत्त० १२४। न्यूनोदरतयाऽऽहारपरित्यागी। दश० २३१।

अप्पिणिच्चिया-आत्मीया । आव० २०२ ।

अप्पितणप्पिते-अर्पित-विशेषित, अनर्पित-अविशेषितम्। ठाणा० ४८१।

अप्पियं-अर्पितम्, आहितम् । भग० ८९।

अप्पिय-अप्रियम्, अनिष्टम् । भग० ७२। अर्पित, विशेष । विशे० १३४६।

अप्पियणियं-अप्रीतिकम्, कलह । उत्त० ३५५।

अप्पियत्ता-अप्रियता, अप्रेमहेतुता । भग० २५३ । प्रज्ञा० ५०४।

अप्पियवहा-अप्रियवधा -अप्रिय-दुःखकारणम् तत् घ्नन्ति। आचा० १२२।

अप्पुण्णकप्पिया-अपूर्णकल्पिका-अन्योन्यस्य सुसटु खोपस पद प्रतिपद्यते। व्य० द्वि० ३७८ आ।

अप्पुट्ठायी-अल्पोत्थायी, अल्पमुत्थातु शीलमस्येति । प्रयोजनेऽपि न पुन पुनरुत्थानशील । उत्त० ५८।

अप्पुस्सुए-अपौत्सुक्य । भग० १७४। त्वरारहित । भग० १२३। अविमनस्क । आचा० ३७९।

अप्पे-आप्य, अप्प्रभव हद । भग० १४१।

अप्पो-अल्प, सर्वथाऽविद्यमान.। जीवा० १२१। नास्ति किंचिदित्यर्थ । ओघ १७७। निषद्याद्वयोपेत रजोहरणं मुखवस्त्रिका चोत्पट्टकाश्च। बृ० प्र० १५७ आ।

अप्पोदए-अल्पोदके-भौमान्तरिक्षोदकरहिते। आचा० २८५।

अप्पोलं-दृढवेष्टनाद् घनवेष्टनात्। ओघ० २१४।

अप्पोवही - अल्पोपधि, अनुल्बणयुक्तस्तोकोपधि । दश० २८०।

अप्पोसे - अल्पावश्याये - अधस्तनोपरितनावश्यायविप्रुड्वर्जिते। आचा० २८५।

अप्फदणया - भाण्डोचितहस्तपादादिचेष्टाविकत्था । व्य० प्र० २३६ अ।

अप्फद्धितो-अदृष्ते। नि० चू० प्र० १४७ आ।

अप्फालिया-शिक्षिता -उपालब्धा, उक्ता ।आव० ५५७।

अप्फालेइ - आस्फालयति, हस्तेनाऽऽताडयति-उत्तेजयति। औप० ६४।

अप्फिडिऊण-आस्फाल्य । आव० ३४४।

अप्फुण्णा-व्याप्ता । बृ० तृ० ७० आ।

अप्फुण्णे-आपूर्ण -परिपूर्णशरीर । उत्त० ४८३।

अप्फुण्णो-व्याप्त । आव० ३५४।

अप्फेया-वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२।

अप्फोआ-वनस्पतिविशेष । जं० प्र० ४६।

अप्फोडेइ-आस्फोटयति, करास्फोटं करोति । भग० १७१।

अप्फोया-वनस्पतिविशेष । जीवा० २०१।

अप्फोव-आस्तीर्णं, वृक्षगुच्छगुल्मलतासछन्न । उत्त० ४३८।

अप्रकीर्णप्रसृत-वाग्यतिशयविशेष । सम० ६३।

अप्रतिहत- (अप्पडिहय) -कुड्यपर्वतादिभिरस्खलिते अविसंवादके वा। सम० ४।

अप्रत्याख्यानम्-द्वितीयकषायचतुष्कम् । आचा० ९१।

अप्रमार्जितचारित्वम् - द्वितीयमसमाधिस्थानम् । प्रश्न० १४४।

अप्रोषित-सामानिक, सन्निहित । विशे० १०६५।

अप्सरा-दक्षिणपश्चिमरतिकरपर्वतस्य दक्षिणस्यां भूतावतंसिकाराजधान्यधिपत्नी, शक्रदेवेन्द्रस्य द्वितीयाग्रमहिषी। जीवा० ३६५। शक्रस्याग्रमहिषी। जं० प्र० ११९।

अफलवतकी-अफलवान्, अप्राप्तिः । प्रश्न० ६४।

अफव्वता-अशक्नुवाना । नि० चू० प्र० १८३ आ।

अफासुअ-अप्रासुकम्, सचित्तसम्मिश्रादि । दश० २३१। सचित्तम्। आचा० ३२१।

अफासुए-अप्रासुकम्, न प्रगता असवः-असुमन्तो यस्मात्तदप्रासुकम्-सजीवमित्यर्थः । भग० २२६ ।

अफुडिय-अस्फुटितः-राजीरहितः । आव० ३३९ ।

अफुण्णे-आपूर्णम् । प्रज्ञा० ५९२ ।

अफुसं-अस्पृश्यम्, अबन्धनीयम् । भग० १०४ ।

अफुसमाणगतिपरिणामे-अस्पृशद्गतिपरिणामः, अस्पृशतो गतिपरिणामः । प्रज्ञा० २८९ ।

अफुसमाणगती-अस्पृशद्गतिः,यत्परमाण्वादिकमन्येन परमाण्वादिना सह परस्परसम्बन्धमननुभूय गच्छति सा, विहायोगतेर्द्वितीयो भेदः । प्रज्ञा० ३२७ ।

अबंधव-अबान्धवः, स्वजनरहितः । प्रश्न० १९ ।

अबंधवो-अबान्धवः, बान्धवरहितः, स्वजनसम्पाद्यकार्याभावात् कर्मनिगडबद्धः । प्रश्न० ११ ।

अबंधिउं-पात्रकबन्धग्रन्थिमदत्त्वा । ओघ० १४४ ।

अबंभं-अब्रह्म, अकुशलं कर्म, मैथुनम् । प्रश्न० ६५ । अकुशलानुष्ठानम्, अब्रह्मणः प्रथमं नाम । प्रश्न० ६६ । मैथुनम् । आव० ६५३ । बस्त्यनियमलक्षणं । आव० ७६१ ।

अबंभ-अब्रह्मवर्जकः, श्रावकस्य षष्ठी प्रतिमा । आव० ६४६ ।

अबंभचारिणो-अब्रह्मचारिण, मैथुनं आसेवितुं शील धर्मो वा येषां ते । उत्त० ३५८ ।

अबद्धिआ-अबद्धिकाः, अबद्धं सत्कर्म कंचुकवत्पार्श्वतः स्पृष्टमात्रं जीवं समनुगच्छन्तीत्येवं वदन्ति । औप० १०६ ।

अबद्धिगा -अबद्धिकाः, स्पृष्टकर्मविपाकप्ररूपकाः । आव० ३११ । अबद्धिकः, बद्धं-जीवप्रदेशैरन्योऽन्याविभागेन सम्पृक्तं न बद्धं-अबद्धं, अर्थात्कर्म, तदभ्युपगमविषयमेषामस्तीति । उत्त० १५२ ।

अबद्धिता-अबद्धिकाः-स्पृष्टकर्मविपाकप्ररूपकाः। ठाणा० ४१०।

अबला-अबला, शारीरशक्तिविकलाः । जं० प्र० २३९ ।

अबले-अबल, शरीरशक्तिवर्जित । भग० ३२३ ।

अबहुस्सुए - अल्पश्रुताय-अवगाढस्तोकशास्त्राय । सूर्य० २९६ ।

अबहुस्सुतो-जेण आयारपकप्पो ण ज्झातितो । नि० चू० तृ० २५ अ ।

अबहोड-अवखोटकः, बन्धविशेषः । उत्त० ११३ ।

अबाध-अन्तरालम् । विशे० ३७६ ।

अबाधाए-अबाधया अपान्तराल । सूर्य० २६२ ।

अबाल-अष्टाधिकवर्षः । नि० चू० प्र० १७३ आ ।

अबाहा-अबाधा, कर्मणो बन्धोदययोरन्तरम् । भग० २५५ । अन्तरं, अन्तरालत्वाप्रतिघातरूपा । अव्यवधानेनान्तरम् । जं०प्र० ४३५ । दूरवर्तित्वेनानाक्रमणमपान्तरालम् । जं० प्र० ६४ । अन्तरं-व्यवधानम् । जं० प्र० ६५ । अपान्तरालम् । जीवा० ९४, २०४ । अन्तरालत्वाव्याघातरूपा । जीवा० ३०२ । अन्तरालम् । ओघ० ९० । आव० ४६ । विशे० ३७६ । अन्तरं । जं० प्र० ४३५ ।

अबाहाए-अबाधया, व्यवधानेन कृत्वा । सम० २१ । अबाधायां कृत्वा, अपान्तरालेषु मुक्त्वा । जीवा० ३२२ ।

अबाहिरा-अबाह्यः, न बाह्य इति । आव० ४५१ ।

अबितिज्जओ-अद्वितीयः, सहायो न भवति । प्रश्न० १२१ ।

अबुद्धा अबुद्धजागरियं-अबुद्धाः-केवलज्ञानाभावेन यथासंभवं शेषज्ञानसद्भावाच्च बुद्धसदृशास्ते चाबुद्धानां-छद्मस्थज्ञानवतां या जागरिका । भग० ५५४ ।

अबुहजण-अबुधजनः, अविपश्चिज्जनः-परिजनो यस्य सः, अकल्याणमित्रपरिजनः । दश० ८६ ।

अबोद्द-अनाक्रमणीय । ओघ० ९२ ।

अबोहि-अबोधिः, मिथ्यात्वकार्यम् । आव० ७६२ । मिथ्यात्वसंहतिः । दश० २४४ ।

अबोहिअ-अबोधिकम्, मिथ्यात्वफलम् । दश० २०५ ।

अबोहिकलुसं-अबोधिकलुष, मिथ्यादृष्टिः । दश० १५८ ।

अब्बहुलकाण्डम्-रत्नप्रभाया तृतीयकाण्डः । सम० ८८ ।

अब्बुयं-द्वितीयसप्ताहगर्भावस्था (तं०)

अब्भं-अभ्रम्, सामान्याकारेण प्रतीतम् । जीवा० २८३ ।

अब्भंगियलुय-स्नेहाभ्यक्तशरीरः । ओघ० ७४ ।

अब्भंगिओ-अभ्यङ्गितः । आव० ११७ ।

अब्भंगेति-वेगेण अब्भंगं । नि० चू० प्र० ११६ आ ।

अब्भंगो-योवेग । नि० चू० प्र० १८८ अ ।

अब्भंतरं-लोकेऽन्यैरलुप्तम् । दश० चू० १४ ।

अब्भंतरकरणं - द्वयोः साध्वोः गच्छमेदीभूतयोरभ्यन्तरे कुलादिकार्यनिमित्तं परस्परमुक्ततोरतृतीयस्योपश्रुण्वतोः बहिः-करणं । व्य० प्र० २३८ अ ।

अब्भंतरगो-अभ्यन्तरम्-अभ्यन्तः मध्ये भवं । ठाणा० ५५ ।

अब्भंतरे पोग्गले-भवधारणीयेनौदारिकेण वा शरीरेण ये क्षेत्रप्रदेशाः अवगाढास्तेष्वेव ये वर्तन्ते तेऽवसेयाः, विभूषापक्षे तु निष्ठीवनादयोऽभ्यंतरपुद्गलाः । ठाणा० १०५ ।

अब्भिंतरसंबुक्का-सलनाभिक्षेत्तोधमाए आगिइए अतो आढ-यति बाहिरओ सणियद्दइ। उत्त० ६०५।

अब्भिंतरिया-अभ्यन्तरिका, नगरीविशेष। आव० २००।

अब्भिडिऊण-आस्फाल्य। उत्त० १४९।

अब्भुक्खेइ-अभ्युक्षति, अभिमुखं सिञ्चति। जीवा० २५६। अभ्युक्षति, सिञ्चति, स्नपयति। जं० प्र० १६२।

अब्भुक्खेंति-अभ्युक्षन्ति सिञ्चन्ति। जं० प्र० ४०५।

अब्भुग्गए-अभ्युद्गतः, आभिमुख्येन सर्वतो विनिर्गत०। सूर्य० २६३।

अब्भुग्गओ-अभ्युद्गतः, आभिमुख्येन सर्वतो गतः। जीवा० १७५। अभ्रोद्गत-यद्वा आकाशे उद्गता प्रबलतया सर्वतस्तिर्यक् प्रसृता। जं० प्र० २९७।

अब्भुग्गय-अभ्युद्गत०, आभिमुख्येन सर्वतो विनिर्गत०। प्रश्ना० ९९। अभिमुखसमुद्गतः, अभिमभागे मनाक् उन्नतः। जीवा० २०५। सजातः। सम० १३९।

अब्भुग्गयमूसिय-अभ्युद्गतोच्छ्रितः, अभ्युद्गतमभ्रोद्गतं वा यथाभवत्येवमुच्छ्रित., अथवा मकारस्यागमिकत्वादभ्युद्गतश्चासावुच्छ्रितश्चेत्यभ्युद्गतोच्छ्रितः, अत्यर्थमुच्च इत्यर्थ। भग० १४५।

अब्भुग्गया-अभ्युद्गता, आभिमुख्येन सर्वतो विनिर्गता। जीवा० ३७९। अभिमभावे मनागुन्नता। जं० प्र० ५०। अभ्युद्गता, अतिरमणीयतया द्रष्टृणां प्रत्यभिमुखमुत्-प्राबल्येन स्थिता। जीवा० २२६।

अब्भुग्गयाओ-अभ्युद्गतान्यभ्रोद्गतानि वोचानि। भग० ६७२।

अब्भुग्गयुच्छियपभासियं-अभ्युद्गतोत्सृतप्रभामितं, अभ्युद्गता-आभिमुख्येन सर्वतो विनिर्गता उत्सृता-प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता या प्रभा तया सितम्। जीवा० ३७९।

अब्भुज्जयं-अब्भुज्जतमरणेण अब्भुज्जयविहारेण वा। नि० चू० तृ० ३५ अ।

अब्भुज्जया-अभ्युद्यता, सुविहिता। अनुत्त० ३।

अब्भुज्जियविहारो जिनकल्पादि। नि० चू० प्र० २६३ आ।

अब्भुट्ठाणं-अभ्युत्थानम्, आगच्छति गच्छति च दृष्टे गुरावासनमोचनम्। उत्त० १७। ससम्भ्रममासनमोचनम्। उत्त० १२४। अभीलाभिमुख्येनोत्थाने-उद्यमनम्। उत्त० ५३५। विनयार्हस्य दर्शनादेवासनत्यजनं। ठाणा० ४०८। आसनत्याग। सम० ९५। गौरवार्हदर्शने विष्टरत्याग.। भग० ६३७। जओ दीसइ तओ चेव आयव्वं। दश० ३०। आगतस्याभिमुखमुत्थानम्। दश० २४०।

अब्भुट्ठित्ति-सिंहासनादभ्युत्तिष्ठेयुरिति। ठाणा० ११७।

अब्भुट्ठिओ-अब्भुट्ठिएत्ति सामाइयकडो पडिवंत्ता मनारोपितः। नि० चू० तृ० ८४ आ।

अब्भुट्ठितो-वैयावृत्त्यकरणोद्यतः। नि० चू० प्र० ३३४ अ।

अब्भुट्ठित्तए-अभ्युत्थातुम्-अभ्युपगन्तुम्। ठाणा० ५७।

अब्भुट्ठियं-अभ्युत्थितम्-अभ्युद्यतं। उत्त० ३०७। अभ्युत्थापन-वंदनकप्रतीच्छनकादिकं। व्य० प्र० १७२ आ। अभ्युत्थित-उद्यतः। ओघ० १८०।

अब्भुट्ठेमि-अङ्गीकरोमि। भग० १२१।

अब्भुत्तरोमा-प्रहीनरोमाः। नि० चू० द्वि० ६१ अ।

अब्भुदए-अद्भुतवान्, आश्चर्यवान्। उत्त० ३१७।

अब्भुदओ-उत्सवविशेष०। बृ० द्वि० १९८ अ।

अब्भुन्नय-अभ्युन्नत०, अभिमुखमुन्नत.। जीवा० २०५।

अब्भुवगमिया-आभ्युपगमिकी, या स्वयमभ्युपगम्य वेद्यते (वेदना)। भग० ४९७।

अब्भुवगमे-स्वेच्छया अभ्युपगम्य यादृच्छया क्रियते। बृ० प्र० ३१ आ।

अब्भुवगमो-अभ्युपगम, स्वयमङ्गीकार। प्रज्ञा० ५५७। भग० ६८३।

अब्भे-आभिन्द्यात्, आच्छिन्द्यात्। आचा० ३८।

अब्भोवगमिया-आभ्युपगमिकी-केशोलुचनातापनादिभिः शरीरपीडा। प्रज्ञा० ५५७। शिरोलोचब्रह्मचर्यादिनामभ्युपगमे भवा (वेदना)। ठाणा० ४७।

अब्रह्म-मैथुनम्। आचा० ३३१।

अभओ-अभय.। आव० ९५। अभयकुमारोऽष्टमकारी। अन्त० ९। व्यक्तिविशेष। आव० ३६८। उदाहरणदोषे अभयकुमार.। दश० ५३। नामविशेष.। बृ० प्र० ४६ आ।

अभओ सव्वस्सवि-अभयं सर्वस्यापि प्राणिगणस्याशयम्। अहिंसाया द्विपञ्चाशत्तम नाम। प्रश्न० ९९।

अभक्तार्थः-श्रमणः, क्षपण। व्य० प्र० १८१ आ।

अभग्गं-अभग्नम्, अपीडितम्। आव० ७७२।

अभग्गजोगो-अभग्नयोग.। आव० ७९३।

अभग्गसेण-अभग्नसेनः, विजयस्य चौरसेनापतेः स्कन्दश्रीभार्यायाः पुत्रः। विपा० ५७। विजयस्य चौरसेनापतेः पुत्रः। विपा० ६०। अभग्नसेन, विपाकश्रुताध्ययनम्। ठाणा० ५०७।

अभग्गो-अभग्नः, अभग्नसेनः, विजयाभिधचौरसेनापतिपुत्रः, अन्तकृद्दशासु तृतीयाध्ययनम्। विपा० ३५।

अभज्जियं-अभग्नाम्-अमर्दितामविराधिताम्। आचा० ३२३।

अभडप्पवेसं-अभटप्रवेशम्, कौटुम्बिकगेहेषु राजवर्णवतां भटानामविद्यमानप्रवेशम्। विपा० ६३।

अभत्तच्छंदो-अभक्तच्छन्दः, भक्तारुचिरूपः। उत्त० ७८।

अभत्तट्ठं-अभक्तार्थम्, उपवासः। आव० ८५२।

अभत्तट्ठो-अभक्तार्थ, न भक्तार्थ, उपवासः। आव० ८५३।

अभय-अभयः, श्रेणिकपुत्रनाम। सूत्र० १०३। दानविशेषः। प्रश्न० १३५। अभयः, संयमः। आचा० ६२। कुमारविशेषः। नि० चू० प्र० ७ आ, नि० चू० तृ० ३७ अ। वृक्षाधिष्ठायकव्यंतरदर्शी। व्य० प्र० १७ अ।

अभयकरा-मल्लिजिनदीक्षाशिबिका। सम० १५१।

अभयकरो-अभयकरः। आव० ४५९।

अभयकुमारः-प्रद्योतस्यापकारकः। सूत्र० ३१३। विशेषनाम। विशे० ६१२। औत्पातिकीबुद्धेर्दृष्टान्तः। बृ० प्र० १८६ अ। आर्द्रकुमाराय प्रतिमाप्रेषकः। सूत्र० ३८५। प्रद्योतगणिकाभिर्धार्मिकवचनया वञ्चितः। सूत्र० ३२९। कालसौकरिकसुतसुलसासखा। सूत्र० १७८। मवरपूर्विवैहिकार्थसिद्धौ दृष्टान्त.। जं० प्र० १९७। रोहिणीयस्य लौकिकसूक्ष्मपरिनिर्वापण। व्य० प्र० २०९ आ।

अभयकुमारो-दृष्टान्तविशेषः। नि० चू० प्र० १९४ अ।

अभयदए - अभयदयः, प्राणापहरणरसिकेऽप्युपसर्गकारिणि प्राणिनि यो न भयं दयते ददाति, अभया सर्वप्राणिभयपरिहारवती वा दया-अनुकम्पा यस्य सः। भग० ७। अभयं-विशिष्टमात्मनः स्वास्थ्यं निःश्रेयसधर्मभूमिकानिबन्धनभूता परमा धृतिरितिभावः तद्भयं ददाति। जीवा० २५५।

अभयदयेणं-अभयदयः, न भयं दयते प्राणापहरणरसिकोपसर्गकारिण्यपि प्राणिनि ददातीत्यभयदयः। सम० ४। अभया वा-सर्वप्राणिभयपरिहारवती दया-घृणा यस्यासावभयदयः। सम० ४।

अभयसेण-अभयसेनः, संवेगोदाहरणे वारत्रकपुरे राजा। आव० ७०९।

अभयसेणो-वारत्तपुरं नगरं, तत्थ अभयसेणो राया। नि० चू० तृ० ५४ आ। वारत्रकपुरराजा। बृ० द्वि० २४९ आ।

अभयसेन-छर्दितदोषदृष्टान्ते राजा। पिंड० १६९।

अभयसेना-वापीनाम। जं० प्र० ३७०।

अभया-हरीतकी। आचा० १३०। नि० चू० द्वि० १४१ आ।

अभये-अभयः, अनुत्तरोपपातिकदशानां प्रथमवर्गस्य दशमाध्ययनम्। अनुत्त० १।

अभवसिद्धिय-अभवसिद्धिकः, अभव्यः। जीवा० ४४९। ठाणा० ३०।

अभविय-अभव्यः-अयोग्यः। उत्त० ७१३।

अभाग-अभाग्यः, अशोभनः। आव० ७०८।

अभावं - नञः कुत्सायामपि दर्शनादशोभनं भावं-सर्वतो निष्काशनलक्षणं पर्यायम्। उत्त० ४६।

अभाविआ-अगीतार्था। बृ० द्वि० १६६ आ।

अभाविओ-अभावितः। आव० १०१। अभावित -अपरिणतजिनवचनस्तस्य निर्लेपनाभावे मा भूद् विपरिणाम। बृ० प्र० २०२ अ।

अभाविते-असंसर्गप्राप्ते प्राप्तसंसर्गे वा। ठाणा० ४८१।

अभावितो-कृताभ्यास.। नि० चू० तृ० १३१ आ।

अभावुक-नलस्तम्बः। ओघ २३३।

अभावो-असम्भव। दश० ३९। विनाश। बृ० द्वि० ७२ आ।

अभासो-स्वदेशभाषाया अज्ञ। बृ० द्वि० १९ आ।

अभि-पृथग्। बृ० द्वि० १९५ अ।

अभिई-अभिजित्, नक्षत्रविशेष। सूर्य० ११४। ठाणा० ७७।

अभिओग-अभियोगः, आज्ञाप्रदानलक्षणः। दश० २४९। विद्यादिका। भग० १९१। बलात्कारः। उत्त० ३६५।

अभिओगकया-अभियोगकृता, या वशीकरणचूर्णमन्त्रयोः सद्योजिता सा। ओघ० १९३।

अभिओगपावणं - अभियोगप्रापणं, हठाद्व्यापारवर्त्तनम्। प्रश्न० ९२।

अभिओगिओ-आभियोगिक। आव० १२४।

अभिओगे-अभियोगः, प्रेष्यकर्मणि व्यापार्यमाणत्वम्। जीवा० २४३।

अभिओगो-अभियोगः, पारवश्यम्। विपा० ५४। गर्वः। आव० ७७२। वशीकरणचूर्णो मन्त्रश्च। ओघ० १९३।
अभिओग्गो-अभियोग्यः, अभिमुखं कर्मसु युज्यते व्यापार्यत इति वा, तस्य भावः कर्म वा। जीवा० २८०।
अभिकंख-अभिकाङ्क्ष्य-उद्दिश्य। आचा० २८१। पर्यालोच्य। आचा० ३८८।
अभिकंखमाणो-अभिकाङ्क्षन्, मायारहितः। दश० २५२।
अभिकंता - अभिकान्ता-शय्यायास्तृतीयप्रकारः। सू० प्र० ९३ अ।
अभिकंतं-अभिकान्तम्, अभिक्रमणम्। प्रज्ञापकं, प्रत्यभिमुखं क्रमणम्। दश० १४१।
अभिक्कमंति-अभिलसंति। दश० चू० ६२।
अभिक्कममाणे-अभिकामन्-गच्छन्। आचा० २१७।
अभिक्खसेवा-पुणो पुणो गमनं। नि० चू० प्र० ३९ आ।
अभिक्खं-अभिक्ष्णं-अनवरतं। आव० ११८।
अभिक्खणं-अभिक्ष्णं, अनवरतम्। भग० २२, ४१। आचा० ३६५। सूत्र० ११५। उत्त० ३४३, २१४। आव० ४०७। अनुसमयम्। भग० ४३। पुनः पुनः। उत्त० ३४४, ४२८, ठाणा० ३०१।
अभिक्खणं अभिक्खणं ओहारइत्ता - शबलदोषः। सम० ३७।
अभिक्खणंऽभिक्खमोहारी-अभीक्ष्णमभीक्ष्णमवधारकः, योऽमीक्ष्णमवधारिणीं भाषां भाषते, यथा दासस्त्वं चौरो वेति, यद्वा शङ्कितं तन्निःशङ्कितं भणति। एकादशममसमाधिस्थानम्। आव० ६५३, ६५४।
अभिगच्छंति-अभिगच्छन्ति, समीपमभिगच्छन्ति। भग० १३७।
अभिगता-अभिगताः, अभिगतजीवाजीवाः। आव० ३०४।
अभिगम-अभिगमः, ज्ञानम्। उत्त० ५९२। बोधिलाभः। सम० १२०। मैथुनासेवना, गमनं च। आव० ८२१। अभिगम्य, विज्ञाय, आसेव्य। दश० २५८।
अभिगमकुसले-अभिगमकुशलः, लोकमाघूर्णकादिप्रतिपत्तिदक्षः। दश० २५५।
अभिगमणं - अभिगमनं, सर्वबाह्यान्मण्डलादभ्यन्तरप्रवेशनम्। जीवा० २४१। सूर्य० २४३।
अभिगमरुई - अभिगमरुचिः-यस्य श्रुतज्ञानमर्थतो दृष्टं स भवति। प्रज्ञा० ५६। अभिगमो-ज्ञानं ततो रुचिर्यस्य स, येन दशाचारादिकं श्रुतमर्थतोऽभिगतं भवति सः। ठाणा० ५०४। अभिगमरुचिः-अभिगमो-ज्ञानं तेन रुचिर्यस्य सः। उत्त० ५६३।
अभिगमसड्ढे-अभिगमश्राद्धः-यत्र कारणे आपन्नं प्रतिश्यते। ओघ० १५६।
अभिगमसम्मदिट्ठी-सम्मद्दिट्ठी-गिहीताणुव्वओ। नि० चू० प्र० १९९ आ।
अभिगम - अभिगमः, निस्तरबोधः। भग० १००। प्रतिपत्तिः। भग० १३७।
अभिगमो- अधिगमः, यथावस्थितपदार्थपरिच्छेदः। आव० ८३८। साधूणमागयाणं जा विणयपडिवत्ती सा। दश० चू० १४१।
अभिगया-जीवाजीवादिपदार्थाभिगमोपेता श्राविकेत्यर्थः। सू० तृ० १३९ आ।
अभिगहियट्ठ - अभिगृहीतार्थम्, प्रश्नितार्थस्याभिगमनात्। भग० १३५।
अभिगाहइ-सेवते। आचा० ११४। अभिगाहन्ते-सेवन्ते। आचा० १३३।
अभिगिज्झ-अभिगृह्य, आलोच्य। दश० २१६। अङ्गीकृत्य, तदभिमुखीभूय। ठाणा० ५६।
अभिग्गह-अभिग्रहः, गुरुवियोगकरणाभिसन्धिः। दश० २४१।
अभिग्गहियमिच्छादंसणवत्तिया - अभिगृहीतमिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी, मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकीक्रियाया द्वितीयोभेदः। आव० ६१२।
अभिग्गहिया-अभिगृहीता, प्रतिनियतार्थावधारणम्। प्रज्ञा० २५६। अभिग्रहिका-वस्त्राणि वा पात्राणि वा पूरणीयानि अपरेण वा येन प्रयोजनमिति प्रतिपन्नाभिग्रहाः। सू० प्र० ९९ आ।
अभिग्गहो-अभिग्रहः-प्रत्याख्यानविशेषः। आव० ८५३। कुमतपरिग्रहः। ठाणा० ४९। नियमः। भग० ६२।
अभिग्रहिकः-मिथ्यात्वविशेषः। ठाणा० २७।
अभिघट्टिज्जमाणस्स-अभिघट्टयमानस्य-वेगेन गच्छतः। जं० प्र० ३७। जीवा १९३।

अभिघातो–उवलओ वा घत्तिजाति। नि० चू० प्र० १०६ आ।

अभिचंदे–अस्यामवसर्पिण्यां चतुर्थकुलकरः। सम० १०३, १५४। अभिचन्द्रः, अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्याष्टमाध्ययनम्। अन्त० ३। अभिचन्द्रः–मुहूर्तविशेषः। सूर्य० १४६। जं० प्र० ४९१। कुलकरविशेष। आव० ११११। जं० प्र० १३२। अभिचन्द्रः–अमुष्यामवसर्पिण्यां चतुर्थकुलकरः। ठाणा० ३६८।

अभिचारकमन्त्रविद्यादि–अशिवपुररोधादौ तत्प्रशमनार्थं। ठाणा० १६४।

अभिचारुअं–चारकता। नि० चू० प्र० २७४ आ।

अभिचारुकं–वशीकरणं। नि० चू० प्र० १०१ आ।

अभिजाए–अभिजातः, शार्वीयद्वादशदिवसनाम। जं० प्र० ४९०। विनीतः। उत्त० १८८। कुलीनः। जं० प्र० १८२।

अभिजाओ–शिष्टः। बृ० द्वि० २५५ आ।

अभिजाणइ–अभिजानाति, विवेचयति। आचा० २०३।

अभिजातं–वाण्यतिशयविशेषः। सम० ६३।

अभिजाति–कुलीनता। उत्त० ३४७।

अभिजातिए–अभिजातिग, अभिजाति–कुलीनता ता गच्छति–उत्क्षिप्तभारनिर्वाहणादिनेति। उत्त० ३४७।

अभिजाते–अभिजातः, शार्वायैकादशदिवसनाम। सूर्य० १४७।

अभिजाय–अभिजातम्–कुलीनम्। भग० ४६९।

अभिजायइ–अभिजायते, उपभोग्यतयाऽऽभिमुख्येनोत्पद्यते। उत्त० १८७।

अभिजित्–नक्षत्रदेवविशेषः। प्रश्न० ९५। उदायनपुत्र। ठाणा० ४३१।

अभिजुंजंति–अभियुञ्जते, योजयन्ति। प्रश्न० ३६।

अभिजुंजित्तए–अभियोक्तुम्, विद्यादिसामर्थ्यतस्तदनुप्रवेशेन व्यापारयितुम्। भग० १९१।

अभिजुंजिया–अभियुज्य, व्यापार्य, स्मारयित्वा। सूत्र० १३९। योजयित्वा, अभियोगं प्राहयित्वा, व्यापारयित्वा। आचा० १२३। आभिमुख्य–वशीकृत्य। ठाणा० १०६। सम्यक्प्रयुज्य, प्रतिपाद्य। ठाणा० १७७।

अभिजोइंति–निरुन्धन्ति, निर्भर्त्सयन्ति। बृ० प्र० २८१ अ।

अभिजोयगंति–वशीकुर्वन्ति। बृ० द्वि० २५५ अ।

अभिज्जं–अभेद्य। उत्त० २०७।

अभिज्जा–अभिध्यानमभिध्येयस्य। सम० ७१। लोभः, अभिध्यानं वा। प्रश्न० ९७।

अभिज्झा–अभिध्या–अदृढाभिनिवेश, चित्तलक्षणः। भग० ५७३। अभिध्या, अभिध्यानम्, अभिलाषः। प्रज्ञा० ५०४।

अभिज्झिअ–अभिध्यातम्, इष्टम्। दश० २७७।

अभिज्झियत्ता–अभिध्यितता, भिध्या–लोभः सा सञ्जाता यत्र सो भिध्यितो, न भिध्यितोऽभिध्यितस्तद्भावस्तत्ता। भग० २९२। अभिध्यितता, अभिध्यानमभिध्या–अभिलाष, सा सञ्जाताऽस्मिन् तस्य भावः। प्रज्ञा० ५०४। अभिध्येयता–अदृष्टत्वं, अशुभत्वं। भग० ३३।

अभिणए–अभिनय, चतुर्भिराङ्गिकवाचिकसात्त्विकाहार्यभेदैः समुदितैरसमुदितैर्वाऽभिनेतव्यवस्तुभावप्रकटनम्। जं० प्र० ४१४।

अभिणंदणो–अभिनन्दनः, अभिनन्द्यते देवेन्द्रादिभिरिति, चतुर्थजिन, गर्भात्प्रभृतिरभीक्ष्णं शक्रोऽभिनन्दितवानिति। आव० ५०२।

अभिणंदिए–अभिनन्दितः–लोकोत्तरप्रथममासनाम। जं० प्र० ४९०।

अभिणंदियाइओ–अभिनन्दितवान्। आव० ५०२।

अभिणंदे–अभिनन्द, लोकोत्तरप्रथममासनाम। सूर्य० १५३।

अभिणिक्खंतो–अभिनिष्क्रान्तः। आव० ११७।

अभिणिबोहे–अभिनिबोध, अर्थाभिमुखो नियतः प्रतिनियतस्वरूपो बोधो–बोधविशेष, अभिमुखयतेऽस्माद् अस्मिन् चेति। तदावरणकर्मक्षयोपशमः। प्रज्ञा० ५३६।

अभिणिवट्टमाणे–अभिनिवर्त्तमान, पृथग्भवन्। सूत्र० ३५४।

अभिणिविट्ठं–अभिनिविष्टं, विशिष्टविशिष्टतराध्यवसायभावतोऽतितीव्रानुभावजनकतया व्यवस्थितम्। प्रज्ञा० ४०३।

अभिणिवेसे–अभिनिवेश, विपाकदम्भ। औप० १०६।

अभिणिव्वट्टित्ता–अभिनिर्वर्त्य, समाकृष्य। सूत्र० २०९।

अभिण्णाणं–अभिज्ञानं, चिह्नम्। उत्त० १४९। आव० ३४४।

अभिण्णाय–अभिज्ञातम्, अभिनतम्। भग० ११५।

अभितावयंति-अभितापयन्ति, अपनयन्ति । सूत्र० १३३ ।
अभितुर-अभि-आभिमुख्येन त्वरस्व-शीघ्रो भव । उत्त० ३४० ।
अभितोसइज्जा-अभितोषयति, येन वा तेन वा यापयति । दश० २५३ ।
अभिदुग्गा-अभिदुर्गा, आभिमुख्येन दुर्गा-दु खोत्पादिका । सूत्र० १२९ ।
अभिद्दवं-अभिद्रवन्ति । आचा० ४२९ ।
अभिद्दुय-अभिद्रुतः, सर्वात्मना व्याप्तः । जीवा० १३० ।
अभिधानं-वचनपर्यायः । आव० २१ ।
अभिधारए-अभिधारयेत्-यायात् । दश० १८६ । किमेते उपसर्गा ममाचलितचेतसः कर्त्तुमलमिति चिन्तयेत् । उत्त० १०५ । अभिधारयेयु-अन्तर्भावितेव । उत्त० १०९ ।
अभिधारणा – धारणा, विचारणा, संकल्पः । व्य० द्वि० ३७३ आ ।
अभिधारयामो-गर्हणाद्युद्धघोद्घट्टयामः । सूत्र० ३९२ ।
अभिधारेमाणे-अभिसन्धारयत्-गच्छतः । आचा० ३२९ ।
अभिधास्ये-कीर्तयिष्ये । आचा० ४ ।
अभिनंदिज्जा-अभिनन्देत्, अनुमन्येत । उत्त० १०० ।
अभिनयिका-नृत्यकलाभेदः । सम० ८४ ।
अभिनव-विशिष्टवर्णादिगुणोपेत. । जीवा० १२१ ।
अभिनवम्-नवम् । सूर्य० १८ ।
अभिनिक्खमणं-अभिनिष्क्रमणं-दीक्षा । आचा० ४२२ ।
अभिनिक्खमति-अभिनिष्कामति-धर्माभिमुख्येन गृहस्थपर्याय निर्गच्छति । उत्त० ३०६ ।
अभिनिचरिका-आभिमुख्येन नियता चरिका सूत्रोपदेशेन बहिर्ग्रामजिकादिषु दुर्बलानामाप्यायननिमित्तं पूर्वाह्निकाले समुत्कृष्टं समुदानं लब्धु गमनं । व्य० द्वि० ६९ अ ।
अभिनिदुवारं-अनेकद्वारम् । बृ० द्वि० १२ आ ।
अभिनिबोध-अर्थाभिमुखोऽविपर्ययरूपत्वान्नियतोऽसंशयरूपत्वाद् बोधः-संवेदनम् । ठाणा० ३४७ ।
अभिनिपयाए-अभिनिप्रजा-अभि-प्रत्येकं नियता-विविक्ता प्रजा पुरी । व्य० द्वि० ३३९ अ ।
अभिनिवर्त्तनम्-क्रिया । उत्त० ५८९ ।
अभिनिविट्टा-अभिनिर्वृत्ता । आव० २२७ ।
अभिनिविट्ठे-अभिनिविष्टम् । तीव्रानुभावतया निविष्टम् । भग० ९० ।
अभिनिविट्ठाइं-अभि-अभिविधिना निविष्टानि-सर्वाण्यपि जीवे लग्नानि । भग० ५६९ ।
अभिनिवुडच्चे-अभिनिर्वृत्तार्चः-शरीरसंतापरहितः । आचा० २८४ ।
अभिनिवेशिकः-मिथ्यात्वविशेषः । ठाणा० २७ ।
अभिनिवेसए-अभिनिवेशयेत्, कुर्यात । दश० २३२ ।
अभिनिवेसं-अभिनिवेशः । आव० ३११ । आग्रहः । भग० ४८९ ।
अभिनिव्वट्टित्ता-अभिनिर्वर्त्य, विधाय । भग० २२४ ।
अभिनिव्विगड-विष्वक् अपवरकः । व्य० द्वि० १९० आ ।
अभिनिव्वगडा-अभिनिर्व्याकृत-पृथग्विभिन्नद्वारायां वसतौ । व्य० प्र० ४० आ ।
अभिनिव्वगडाए-अभि-प्रत्येकं नियतो वगडः-परिक्षेपो यस्यां सा अभिनिव्वगडा । व्य० द्वि० १८१ अ ।
अभिनिसिज्जा-अभिनिषद्या-रात्रिस्वाध्यायभूमिः, अभिनैषेधिकी-सामान्यस्वाध्यायभूमिः । व्य० प्र० १२७ अ ।
अभिनिसिट्ठो – अभिनिसृष्ट', अभिमुखं – बहिर्भागाभिमुखं निसृष्ट. । जीवा० ३६१, २०६ ।
अभिनिस्सवति-अभिनि'श्रवति, जिघ्रतामभिमुखं निस्सरति । जीवा० १९२ ।
अभिन्नं-अव्यपगतजीवं । बृ० प्र० ३५ आ ।
अभिन्नाय-अभिधाय-ज्ञात्वा । आचा० ३०४ ।
अभिप्पाओ-अभिप्रायः, बुद्धिः । आव० ४१४ ।
अभिप्पेय-अभिप्रेतः, कामयन् । दश० १९५ । अभिप्रेते-अभिरुचिते । उत्त० २५४ ।
अभिभवे-अभिभवकायोत्सर्ग – उपसर्गाभियोजने द्वितीयः । आव० ७७१ । विशे० ६१२ ।
अभिभूतः-आतुलः । आव० ५८९ । प्रारब्धः, अपराद्धो वा । प्रश्न० ६० ।
अभिभूय-तिरस्कृत्य । आचा० ३०८ । सर्वथा तत्सामर्थ्यमुपहत्य । उत्त० ८१ । पराजित्य । सूत्र० १४५ । अभिव्याप्य । सूत्र० २८५ ।
अभिमरए-अभिमरकः । आव० ८१९ ।
अभिमरा-अभिमरा । उत्त० १६२ । आव० ३१६ ।
अभिमुखं-अभिमुखं । व्य० प्र० ९९ अ ।

अभिमुखनामगोत्रः- (अभिमुहनामगोत्तं), नोआगमतो द्रव्यंद्रुमस्य तृतीयः प्रकारः । दश० १७ । अभिमुखे-संमुखे जघन्योत्कर्षाभ्यां समयान्तर्मुहूर्त्तानन्तरभावितया नामगोत्रे इन्द्रसम्बन्धिनी यस्य स तथा । ठाणा० १०३ ।

अभिमुखनामगोत्रा - ये पुनर्वादरापर्याप्ततेज.कायिकायुर्नामगोत्राणि पूर्वभवमोचनानन्तरं साक्षाद्वेदयन्ते तेऽभिमुखनामगोत्राः । प्रज्ञा० ७६ ।

अभिमुह-पव्वजाभिमुहो, संपट्ठितो । नि० चू० प्र० १०४ अ ।

अभिमुहो-अभिमुखः, उद्युक्तः । दश० २४५ । अभि-भगवन्तं प्रति मुखमस्य । सूर्य० ६ ।

अभियोग-आज्ञा । ठाणा० ५२१ ।' ग्रहणप्रवणः, अर्थवलाऽऽयाततत्वेन तन्नान्तरीयकोद्भवः ।' विशे० ५२ । कार्मणं कुर्यात् । बृ० प्र० ९९ आ ।

अभियोग-आभियोग्यः, अभियोगार्ह आदेशकारी देवः । प्रश्न० १२१ ।

अभियोगो-वशीकरणं । व्य० द्वि० ३१५ आ ।

अभियोजनम् - विद्यामन्त्रादिभिः परेषां वशीकरणादि । प्रज्ञा० ४०६ ।

अभिरई-अभिरतिः, आभिमुख्येन रतिः । आव० ४५१ ।

अभिरामयंति-अभिरमयन्ति, आभिमुख्येन विनयादिषु युञ्जते । दश० २५६ ।

अभिरू-मध्यमग्रामस्य सप्तममूर्छनानाम । ठाणा० ३९३ ।

अभिरूइए-स्वादुभावमिवोपगतः । भग० ४३७ ।

अभिरूप-अभिमुखमतीवोत्कटं रूपं आकारो यस्य सः । सूर्य० ६ ।

अभिरूवं-अभिरूपं, अभि-सर्वेषां द्रष्टृणां मनःप्रसादानुकूलतयाऽभिमुखं रूपं यस्य तत्, अत्यन्तकमनीयमिति । जीवा० १६१ । प्रज्ञा० ८७ ।

अभिरूवा-अभिरूपाणि, कमनीयानि । सम० १३८ । अभि-सर्वेषां दृष्टृणां मनःप्रसादानुकूलतया अभिमुखं रूपं यस्याः सा, अत्यन्तकमनीया । जं० प्र० ३१ । अभिरूपाः-कमनीयाः । ठाणा० २३२ ।

अभिलंघमाण-अभिलङ्घयन्, अनुलिखन् । जं० प्र० २९७ ।

अभिलसंति-अभिलषन्ति । औप० ९४ ।

अभिलसइ-अभिलषति, अभिलाषं-तत्प्राप्तिलालसतया वाञ्छनम् । उत्त० ५८७ ।

अभिलावपुरिसे - अभिलापपुरुषः पुंल्लिङ्गाभिधानमात्रम् । आव० २७७ । ठाणा० ११३ ।

अभिलाप-तीव्रलोभोदयप्रभव आत्मपरिणामः । आव० ५८०।

अभिलोयणं-अभिलोकनम्, अभिलोक्यते यत्रस्थैस्तत्, उच्चतरस्थानम् । प्रश्न० १३८ ।

अभिवंदओ-अभिवन्दकः, अभिवन्दिष्यत इति । आव० १६७ ।

अभिवंदिऊण-अभिवन्द्य, अभिमुखं वन्दित्वा-प्रणम्य । प्रज्ञा० ३ ।

अभिवड्ढिए-अभिवर्द्धितः, तृतीयः पञ्चमश्च युगे संवत्सरौ । सूर्य० १५४ । ठाणा० ३४४ ।

अभिवड्ढिए णं मासे-अभिवर्द्धितसंवत्सरस्य चतुश्चत्वारिंशद्-होरात्रविंशत्छिभागाधिकत्र्यस्त्रीलधिकशलत्रयरूपस्य द्वादशो भागः । सम० ५६ । अभिवर्द्धितमासः, अभिवर्द्धितो नाम मुख्यतस्त्रयोदशचन्द्रमासप्रमाणसंवत्सरः । बृ० प्र० १८६ आ।

अभिवड्ढियवरिसं-जत्थ अधिकमासगो पडिति वरिसे तं । नि० चू० प्र० ३३९ अ ।

अभिवड्ढियसंवच्छरे-अभिवर्द्धितसंवत्सरः । सूर्य० १६९, १७१ ।

अभिभवंति-अभिभवन्ति-न्यक्कुर्वन्ति । ठाणा० १७७ ।

अभिवड्ढी-अभिवृद्धिः, उत्तराभाद्रपदाया देवता । जं० प्र० ४९९ ।

अभिवयणा-'अभी'त्यभिधायकानि वचनानि-शब्दा अभिवचनानि, पर्यायशब्दाः । भग० ७७६ ।

अभिवायणं - अभिवादनम्, शिरोनमनचरणस्पर्शनादि-पूर्वमभिवादये इत्यादि वचनम् । उत्त० १२४ ।

अभिवायण अभिवादनं-नमोक्काराइकरणं । दश० चू० १६३ ।

अभिवाहारो - अभिव्याहारः, आचार्यशिष्ययोर्वचनप्रतिवचनेऽभिव्याहरणम् । आव० ४५१ ।

अभिविधग्गहणं-पर्यायिचपरिष्ठापितादेर्ग्रहणम् । बृ० द्वि० २४ अ ।

अभिवुड्ढित्ता-अभिवर्ध्य । सूर्य० १२ ।

अभिवुड्ढमाणे-अभिवर्द्धयन् । सूर्य० १२ ।

अभिव्यज्यते-अनन्तपरिणामस्य द्रव्यस्य तत्तत्सहकारिकारणसन्निधाने तत्तद्रूपम् । ठाणा० ४९० ।

अभिशासनम् – असदध्यारोपण, अभ्याख्यानं च । आव० ८२१ ।

अभिसंधारिज्जा–अभिसन्धारयेत, पर्यालोचयेत । आचा० ३२९ ।

अभिसन्धि–आलोचनम् । प्रज्ञा० ५०० ।

अभिसंभूया–अभिसम्भूता, प्रादुर्भूता । आचा० ३७६ ।

अभिसमण्णागय–तद्योगापेक्षया । भग० १५९ । गतेन यता लब्ध । भग० २२८ ।

अभिसमन्नागच्छामि – अभिसमागच्छामि, अभिविधिना साङ्गत्येन चावगच्छामि-सर्वैः परिच्छित्तिप्रकारैः परिच्छिनद्मि । भग० ७२५ ।

अभिसमन्नागय – परिणमयितुमारब्धम् । भग० २२४ । उदयाभिमुखीभूतम् । भग० ९० । अभिसमन्वागतम्–उदयाभिमुखीभूतम् । प्रज्ञा० ४०३ । विशेषत परिच्छिन्नम् । भग० ०२३ ।

अभिसमन्नागया–अभिसमन्वागता अभि–आभिमुख्येन सम्यग–इष्टानिष्टावधारणतयाऽन्विति–शब्दादिस्वरूपावगमात्पश्चादागता ज्ञाता –परिच्छिन्ना यस्य । आचा० १५३ । भोग्यावस्थां गता । ठाणा० २४५ ।

अभिसमन्नागयाइ–अभिविधिना सर्वाण्यर्थ समन्वागतानि–सम्प्राप्तानि । भग० ०६९ ।

अभिसमागच्छति–अभिसमागच्छति साध्यसिद्धौ व्यापारणेन सम्यक् प्राप्नोति । भग० २३९ ।

अभिसमागम – अभिसमागम, वस्तुपरिच्छेद । ठाणा० १७२ ।

अभिसमेच्चा – आभिमुख्येन सम्यगित्वा–ज्ञात्वा । आचा० ४४ ।

अभिसित्त–अभिषिक्त दीक्षासंस्कृत । दश० २४५ ।

अभिसेअ–अभिषेक, शियोऽभिषेक । आव० १७८ ।

अभिसेअसिला अभिषेकशिला, अभिषेकाय-जिनजन्मस्नात्राय शिला । न० प्र० ३७१ ।

अभिसेआ–प्रवर्तिनी । नि० चू० प्र० १३२ आ ।

अभिसेय–आचार्यपदस्थापनार्ह, सूत्रार्थतदुभयोपेत । बृ० द्वि० २८३ आ ।

अभिसेयण–अभिषेकेण,शुक्रशोणितनिषेकादिक्रमेणेति। आचा० २३९ ।

अभिसेओ–अभिषेक –सूत्रार्थतदुभयोपेत आचार्यपदस्थापनार्ह । व्य० प्र० १४१ आ । जीवा० ७७६ ।

अभिसेक्कभंडे–अभिषेकभाण्डम्, अभिषेकोपस्कर । जीवा० २३६ ।

अभिसेग–अभिषेक, अभिषिक्त । बृ० प्र० १७७ आ ।

अभिसेगपत्ता – अभिषेकप्राप्ता–प्रवर्तिनीपदयोग्या । बृ० द्वि० ३२ आ ।

अभिसेगसिलाओ – अभिषेकशिला, तीर्थकराणामभिषेकार्था शिला । ठाणा० २२० ।

अभिसेज्ज–अभिशय्या, अभिनिषद्या । व्य० प्र० १२८ अ ।

अभिसेज्जा–अभिशय्या, द्वितीयवसति । विशे० १३०९ ।

अभिसेय–अभिषेक –उपाध्याय । व्य० द्वि० १६५ अ ।

अभिसेयसभा–अभिषेकसभा । जीवा० २३६ ।

अभिसेयसभा–अभिषेकसभा, यस्यां राज्याभिषेकेणाभिषिच्यते । ठाणा० ३५२ । अभिषेकभवनविमानभाविनी सभा । प्रश्न० १३५ ।

अभिहआ–अभिहता, अभिमुखेन हता, चरणेन घट्टिता, उत्क्षिप्य क्षिप्ता वा । आव० ५७३ ।

अभिहड – अभ्याहृतम्, स्वग्रामाद साधुनिमित्तमभिमुखमानीतम् । दश० ११२ । गृहस्थेनानीतं । आचा० ३२५ । निष्पन्नमेवान्यत समानीतम् । आचा० ३६१ । अभ्याहृत–स्वग्रामादिभ्य आहृत्य यद्दाति । ठाणा० ४६० । भग० ४६७ ।

अभिहणति – अभिघ्नन्ति, अभिमुखमागच्छन्तो घ्नन्ति । प्रज्ञा० ५१२ ।

अभिहणह–आभिमुख्येन हथ । भग० ३८१ ।

अभिहणिज्ज – अभिहन्यात, पादेन ताडयेत । आचा० ४२८ ।

अभीक्ष्णमवधारकत्वम्–अद्वितस्याप्यभ्यासवधारकत्वम् । प्र.१० १४४ ।

अभीति–अभिचि, उदायननृपपुत्र । भग० ६१८ ।

अभीयी–अभिजित्, नक्षत्रविशेष । सूर्य० १२६ ।

अभीरू–सत्त्वसम्पन्न । ओघ० २०२ ।

अभु(ब्भु)ज्जियमरणं–पण्डितादि । नि० चू० प्र० २६३ आ ।

अभुत्त–अभुक्त, य कुमार एव प्रव्रजित । ओघ० ९१

अभूइभाव–अभनिभाव, असम्पद्भाव । दश० २४३ ।

अभूएणं-अभूतेन, असद्भुतेन। सम० ५० ।
अभूतोद्भावनम्-यथा सर्वगत आत्मा। ठाणा० २६ ।
अभूतिभावो-विनाशभावो। दश० चू० १३१ ।
अभेज्ज-अभिध्या, रौद्रध्यानम्। प्रश्न० ४२ ।
अभेज्झलोभो – अभिध्यालोभ , रौद्रध्यानान्विता मूर्च्छा। प्रश्न० ४२ ।
अभेत्तु-कणिकाकारं कुर्युः। आचा० २८३ ।
अभ्यंतरं तप-संवरनिर्जराद्वारा निर्वाणप्रापकं। तत्वा० ९-४६ ।
अभ्यन्तरशम्बूका – यस्यां क्षेत्रमध्यभागाच्छङ्खवद्वृत्तया परिभ्रमणभङ्गया भिक्षां गृह्णन् क्षेत्रबहिर्भागमागच्छति। बृ० प्र० २५७ अ।
अभ्यन्तरान्-अवगाहक्षेत्रस्थान्। ठाणा० २८४ ।
अभ्यन्तरानिर्वृति-बाह्यनिर्वृते खड्गधारासमानाया स्वच्छतरपुद्गलसमूहात्मिका। प्रज्ञा० २९४ ।
अभ्यस्तः-जित उचितो वा। आव० ५९४ ।
अभ्यस्तम्-कृतं, निर्वर्तितम्। आव० ५९३ ।
अभ्यागत-अतिथि । उत्त० १८१ ।
अभ्यासगुणे-(अभ्यासगुणे), भोजनादिविषय । आचा० ८६ ।
अभ्यासराशि-गुणकार । सम० ६१ ।
अभ्युद्यतविहारेण-जिनकल्पादिना। बृ० प्र० २१० आ।
अमंडलिउवजीवी-अमण्डल्युपजीवक -तत्र योऽमण्डल्युपजीवकः स साधुर्गुरुमगाम गत्वा तमेव गुरु भणति-यथा हे आचार्या ! संदिशत-ददत यूयमिदं भोजनं प्राघूर्णकक्षपक-असहत्वबालवृद्धशैक्षकेभ्य -साधुभ्य इति । ओघ० १७८ ।
अमंथरम्-अविलम्बितम्। ओघ० १८७ ।
अमओ-अमय , न किस्मयोऽपि। दश० १३२ ।
अमग्गो-अमार्ग , मिथ्यात्वादि । आव० ७६२ ।
अमच्च-अमात्य , राज्याधिष्ठायक । भग० ३१८। सचिव । दश० १०५ ।
अमच्चा-अमात्या , राज्याधिष्ठायका । भग० २६४ ।
अमच्चो-अमात्य । आव० ११६ । राज्यचिन्तक । प्रश्न० ७९, ९६ । राज्याधिष्ठायक । ओघ० १४ । राजमन्त्री । बृ० तृ० २२ अ । यो राजाऽपि शिक्षां प्रयच्छति सो। व्य० प्र० १६० आ । उत्त० ३८० ।
अमच्छरी-अमत्सरी, परगुणग्राही। प्रश्न० ७४ ।
अमण-अवमानम्। विशे० १३०७ ।
अमणाम-अमनोऽमम् , न मनसा अन्त मनम्यन्ते, पुन पुन स्मरणगम्यम्। भग० ७२ ।
अमणामत्ता-अमनोऽम्यता, अमनोगम्यता। भग० २३ । न मनमा अम्यते-गम्यते सस्मरणतोऽमनोऽम्यस्तद्भा वस्तता, प्राप्तुमवाञ्छितत्वम्। भग० २५३ । भोज्यतया मन आप्नुवन्तीति मनआपा प्राकृतत्वाच्च पकारस्य मकारत्वे मणाम इति सूत्र निर्देश , न मनआपा अमनआपा । प्रज्ञा० ५०४ ।
अमणुण्णा-अमनोज्ञम् , न मनसा -अन्त सवेदनेन शुभतया ज्ञायन्ते । भग० ७२ । अमनोज्ञ -रजनशील । ओघ० १५३ । अमनोज्ञ -असविग्न । ओघ० १२० ।
अमणुण्णसंपओगसंपउत्ते – अमनोज्ञसम्प्रयोगसम्प्रयुक्त – अमनोज्ञ -अनिष्टो य शब्दादिस्तस्य य संप्रयोगो-योगस्तेन सप्रयुक्तो य स । ओघ० ४३ ।
अमणुण्णा-असाम्भोगिका । बृ० द्वि० १८ आ ।
अमणुन्नता-अमनोज्ञता, न मनोज्ञा अमनोज्ञा , विपाककाले दु खजनकतया न मन प्रह्लादहेतु । प्रज्ञा० ५०४ । न मनमा ज्ञायते सुन्दरता। भग० ३५३ । कथयाऽप्यमनोरमतया। भग० २३ ।
अमणुन्ने – अमनोज्ञो-न कथित् प्रतिभाति रमनशीलत्वात् सर्वकार्ये हिण्डते। ओघ० १०० । सर्वेषामप्यनिष्ट । बृ० प्र० २६६ अ।
अमणो-अमनस्क , मनोरहित -सम्मूर्छज । ओघ० २२१ ।
अमत-अमृतम्-क्षीरोदधिजलम्। जीवा० २१० ।
अमम-अमम , ममकाररहित । भग० २७६ । द्वादशोऽर्हन् । ठाणा० ६३४ । जातिवाचक शब्द । जं० प्र० १०८, २१३ । भरत वर्षे मनुष्यमेदविशेष । जं० प्र० १२८ ।
अममायमाणे-अममीकुर्वन-अगृह्णन । आचा० ११२ ।
अममे-जिनवरनाम। सम० १०३ । भारते द्वादशोऽर्हन् । भग० १६ । अमम , पर्यन्तिमो मुहूर्त । जं० प्र० ४९१ । मुहूर्तनामविशेष । सूर्य० १४६ ।
अमम्मणा-मन्मनत्वरहिता। ओघ० ४८ ।

अमुत्ती – अमुक्तिः, सलोभता, परिग्रहस्य षड्विंशतितमं नाम। प्रश्न० ९२।

अमुय–अस्मृतम्, मनोऽपेक्षया अस्मृतम्। भग० १९७।

अमुहं–अमुखं, निरुत्तरम्। व्य० द्वि० १६० अ।

अमुहा–अमुखाः, निर्वाचः। भग० ३७६।

अमूढ–अमूढः, अविप्लुतः। दश० २६६।

अमूढदिट्ठी–अमूढदृष्टिः, बालतपस्वितपोविद्यातिशयदर्शनैर्न मूढाः स्वभावाचलिता दृष्टि.–सम्यग्दर्शनरूपा यस्यासावमूढदृष्टि·। प्रज्ञा० ५६। अचलितसम्यग्दृष्टिः। दश० १०२। ऋद्धिमत्कुतीर्थिकदर्शनेऽप्यनवगीतमेवास्मद्दर्शनमिति मोहविरहिता सा चासौ दृष्टिश्च–बुद्धिरूपा। उत्त० ५६७।

अमूढलक्खो – अमूढलक्षः, सर्वज्ञेयाविपरीतवेत्ता। आव० २३४।

अमृतरसा–वापीनाम। जं० प्र० ३७१।

अमेज्झं–अमेध्यम्। आव० २९३।

अमोसलिं–न विद्यते मोसली यत्र तदमोसलि। ठाणा० ३६१।

अमोहं–अमोघम्, अन्तरिक्षम्। सूत्र० ३१८। अवन्ध्यम्। दश० २३३। जुवगो। नि० चू० तृ० ७०आ।

अमोहदंसणं–अमोघदर्शनम्, पुरिमताले उद्यानम्। विपा० ५५।

अमोहदंसि–अमोहदर्शी, योऽमोहं–यथावत्पश्यति। दश० २०७।

अमोहदंसी – अमोघदर्शी, पुरिमतालनगरेऽमोघदर्शनोद्याने यक्षः। विपा० ५५।

अमोहपहारी – अमोघप्रहारी, जिनशत्रो राज्ञो रथिक। उत्त० २१४।

अमोहरहो–अमोघरथः, जिनशत्रो राज्ञो रथिक। उत्त० २१३।

अमोहमत्थं–अमोघशस्त्रम्। आव० ४०७।

अमोहा – अमोघा, पूर्वदिग्भागजम्बूस्य दक्षिणस्यां दिशि पुष्करिणीविशेष·। जीवा० ३६४। ठाणा० २३०। अनिष्फला, जम्ब्वा सुदर्शनाया द्वितीयं नाम। जीवा० २९९। सफला। जं० प्र० ३२६। अमोघाः, आदित्योदयास्तमययोरादित्यकिरणविकारजनिता दण्डाः। भग० १९६। सिद्धशिलानाम। (दे०)। सूर्यबिम्बस्याधःकदाचिदुपलभ्यमानशकटोर्द्धिसंस्थिता श्यामादिरेखा। जीवा० २८३।

अमोहे–अमोहः, वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देवः। भग० २००। ग्रैवेयकविमानप्रस्तटनामविशेष·। ठाणा० ४५३।

अमोहो–अमोघ·। उत्त० ४०३। अमोघ·, आदित्यकिरणविकारजनित आदित्योद्गमनास्तमयने आताम्र. कृष्णश्यामो वा शकटोर्द्धिसंस्थितो दण्ड., यूपक·। आव० ७३६। अमोह., शाहजनीनगर्यां देवरमणोद्याने यक्ष.। विपा० ६५।

अम्मड–(अम्मड.), परिव्राजकः। भग० ६५३।

अम्मधाई–धात्री। उत्त० ३३१।

अम्मया–अम्बा, पुरुषसिंहवासुदेवमाता। आव० १६२। अम्बा। आव० ८१६।

अम्माहिती – पञ्चमवासुदेवमाता। सम० १५२। व्य० प्र० १८० आ।

अम्मि(भि)ओ–अभ्यागतः। आव० ५६०।

अम्मो–अम्बा। आव० ७७२।

अम्मोगइया–अहपूर्विका। आव० २९३।

अम्मोगतिया·–अभिमुख.। आव० ३००।

अम्ल –(अबिले), आश्रवक्लेदनकृत्। ठाणा० २६। अम्लम्–(अबिलं), काञ्जिकम्। ठाणा० ४९२। रसविशेष। प्रज्ञा०४७३।

अम्लवेतस–अम्लरसपरिणताः। प्रज्ञा० १०।

अम्हपहिं–अस्मदीयम्। आव० ८१३।

अम्हच्चयं–अस्मदीयम्, अस्मत्सम्बन्धि। दश० ११२।

अम्हच्चय–अस्माकीन। आव० २९५।

अम्हे–अस्माकम्। पउ० २८–४६।

अयं–अयं, प्रत्यक्षगोचरीभूत ससारी। आचा० १६३। अष्टफल, कर्म। जीवा० ३२। लोहं। भग० ६९७। अष्टफलम्। भग० ४।

अयंतिय–अयन्त्रित, अनियमित। उत्त० ४७८।

अयंते–(अइंते), पुन शायिका व्युत्सृज्य वसतिं प्रविशत·। ओघ० ८१।

अयंपिर–अजल्पनशीला, नोच्चैर्लसविरमा। दश० २३६।

अयंपुले – वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देव। भग० १९९। मत्स्यबन्धविशेष·। विपा० ८१। गोशालकश्रावक। भग० ६८०।

अयंबुले-आजीवकोपासकविशेष । भग० ३७० ।
अय-अय, लोह । प्रज्ञा० २७। पृथिवीभेद । आचा० २९।
अयआकरो-लोहाकर यत्र लोहं ध्मायते। ठाणा० ४१९।
अयककरभोई-अजकर्करभोजी, अज -छागस्तस्य कर्करयवनकवद्द्रव्यमार्गं कर्करायते तच्चेह प्रस्तावान्मेदोऽन्नुरमतिपक्वं वा मासं तद्भोजी वा। उत्त० २७८।
अयकरए-भजकरक, ग्रहविशेष । ठाणा० ७८। जं० प्र० ५३८।
अयकोट्ठसि-लोहप्रतापनार्थ कुशूले। भग० ६६७।
अयकोट्ठसठिता-अय कोष्ठसंस्थित, अय कोष्ठ लोहमय कोष्ठस्तद्वत्संस्थिता । जीवा० १०१।
अयगरा-अजगरा, उर परिसर्पभेदविशेषा । प्रज्ञा० ४९।
अयगरो-अजगर, उर परिसर्पविशेष । जीवा० ३९।
अयगोलो-बालो [illegible]दिम्मो वा। नि० चू० प्र० ६२ अ।
अयण-अयन, त्रय ऋतव । जीवा० ३४४। सूर्य० ९१।
अनन-मातलभवनप्रवृत्त । विशे० १३४३।
अयणाति-अयनानि-ऋतुत्रयमानानि। ठाणा० ८६।
अयणे-(अयन), त्रय ऋतव । भग० ८८८।
अयत-(अजय) अयतनया। आघ० २१९।
अयधार्यम्-पलाशाभिधानवत । आव० ५१।
अयमाणे-आददान प्रवत्तमान । सूर्य० १२। आयान आगच्छन । सम० ९८।
अयमाणे (अयमाण)-अददान । जं० प्र० ४४२।
अयराइ अतराति, सागरासमाण। विशे० १०७१।
अयरामर – अजरामरम् अविद्यमानौ जरामरौ यस्मिन तत। आव० ८।
अयल-अचल स्वाभाविकप्रायोगिकचलनक्रियाव्यपोहात । जीवा० २५ । अचल -स्वाभाविकप्रायोगिकचलनहेत्वभावात निश्चल । भग० ७।
अयलपुर-अचलपुर नगरविशेष । उत्त० ९९। पिंड० १४४।
अयलभाया-अचलभ्राता, नवमगणधर । आव० २४०।
अयले-अचल, प्रथमबलदेव । आव० १५९ १७४। सम० ८८। अन्तकृद्दशाना प्रथमवर्गस्य षष्ठ ध्ययनम्। अन्त० १।
अयलो-अचल, उज्जयिन्या वणिग्दारक । उत्त० ११८।
स्वाभाविकप्रायोगिकचलनहेत्वभावात्। सम० ५।
अयवीही-अजवीथी, शुक्रमहाग्रहस्य सप्तमी वीथी। ठाणा० ४६८।
अयश कीर्त्तिनाम (अजसोकित्तिणाम), यदुदयवशात् मध्यस्थस्यापि जनस्याप्रशस्यो भवति तत्। प्रज्ञा० ४७०।
अयशोभयम्-अश्लाघाभयम्। आव० ६४६।
अयसि-अतसी, धान्यविशेष । दश० १९३। भग० ८०२, ८०३। मद्री, धान्यविशेष । भग० २७४। अतसीपुष्पम्। उत्त० ४६०। कुसुभिआ। ओघ० १४६।
अयसिकुसुमं-अतसीकुसुमम्। प्रज्ञा० ३६०।
अयसिवणं-अतसीवनम्। आव० १८६।
अयसिवणे-(अतसीवनम्)। भग० ३६।
अयसी-औषधिविशेष । प्रज्ञा० ३३। धान्यविशेष । उत्त० ६५३।
अया-द्विखुरविशेष । प्रज्ञा० ४५।
अयागर-अयआकर, यस्मिन् निरन्तर महामूषास्वयोदल प्रक्षिप्यायः उत्पाद्यते स । जीवा० १२३। लोहाकर -यत्र लोह ध्मायते। भग० १९९।
अयि-अयि कोमलामन्त्रणे प्रयुज्यमान शब्द । दश० ८९
अयोगी न सन्ति योगा यस्य स, न योगीति वा यो-ऽसावयोगी शैलेशीकरणव्यवस्थित । ठाणा० ५०।
अयोग्य (अजोग्गो) अशक्त, अपरिपक्व । नि० चू० द्वि० २० आ।
अयोध्या-दशरथराजधानी । प्रश्न० ८७। भरतसगरादिचक्रवर्त्तिनां नगरी। प्रज्ञा० ३००। कोशला। जं० प्र० १२९।
अयोमुहा-अयोमुख एकादशमान्तरद्वीप । प्रज्ञा० ५०।
अय्यावारोवेक्षा-मृतकस्य ननालिभक्त सक्रियमाणमुपेक्षमाणास्त्वाज्ञामाना । ठाणा० ४३।
अय्याहतपौर्वापर्यम्-वाक्यातिशयविशेष । सम० ६३।
अरजरं – अरञ्जरम्, उदकुम्भा, अलञ्जरम्। ठाणा० २८३, २८८।
अरइ-अरति, मोहनीयोदयाच्चित्तोद्वेग । भग० ८०।
अरइकम्म – अरतिकर्म यदुदयेन तद्विचारतिर प्रयते तत्। ठाणा० ४५९।

अरइमोहणिज्जं–अरतिमोहनीयम्–यदुदयवशात् पुनर्बाह्या-भ्यन्तरेषु वस्तुषु अप्रीतिं करोति तत्। प्रज्ञा० ४६९।

अरइयं–अरतितो जं ण पचति। नि० चू० प्र० १८९ अ।

अरई– अरतिः, इष्टाप्राप्तिविनाशोत्थो मानसो विकारः। आचा० १६८। वातादिजनितचित्तोद्वेगः। उत्त० ३३८।

अरए–अरजाः, ग्रहविशेषः। जं० प्र० ५३५। ठाणा० ७९।

अरक्खुरी–आरक्षुरीम्, संवेगोदाहरणे मित्रप्रभस्य प्रत्यन्त-नगरम्। आव० ७१०।

अरगंतरं–अरकान्तरम्। आव० ३४४।

अरगाउत्तासिया–आरकोत्तासिता, अरकैरायुक्ता–अभिवि-धिनाऽन्विता अरकायुक्ता, 'सिय'त्ति स्यात्–भवेत्, अथवा-ऽऽरकोत्तासिता–आस्फालिता यस्यां सा। भग० १५४।

अरघट्टघटीनिवहादिः। उत्त० ५९९।

अरजा–अरजाः। जं० प्र० ३५७।

अरणी–काष्ठविशेषः। प्रज्ञा० २९।

अरण्णं–अरण्यम्, काननम्। दश० १४७।

अरण्णवडिंसगं–विमानविशेष.। सम० ३९।

अरण्णानी–अरण्यम्। उत्त० ३८१।

अरति – अरतिः, मोहनीयोदयजचित्तविकार उद्वेगलक्षणः। ठाणा० २६।

अरते – अरजा, ब्रह्मलोके विमानप्रथमप्रस्तटनाम। ठाणा० ३६७।

अरय–अरजांसि स्वाभाविकरजोरहितत्वात्। सम० १४०।

अरयं–अरत, रतस्याभावरूपः, अरओ–रजसोऽभावरूपः। अरमं–शृङ्गारादिरसाभावम्। उत्त० ४४८।

अरविंद्–अरविन्द, [illegible]। प्रज्ञा० [illegible] जलरुहविशेषः। प्रज्ञा० ३३।

अरसं–अरसम्, हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृतम्, प्रश्न० १०६। प्रश्न० ६३। अविद्यमानाहार्यरसम्। हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृत-मिति। प्रश्न० १६३। अरसम्। दश० चू० ८३। अमनोज्ञरसम्, हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृतम्। दश० १८०।

अरसजीवी – अरसेन [illegible] जीवितुं शीलमस्येति [illegible]। ठाणा० २९६।

अरसमेहं–अरसमेघ, अमनोज्ञमेघः। भग० ३०६।

अरसाहारे – अरसाहार, अरसो–हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृतमा-हारयतीति, अरसो वाऽऽहारो यस्यासावरसाहारः। ठाणा० २९८।

अरसाहिं–प्रहरणविशेषैः। उत्त० ४६०।

अरसिया–अर्शांसि। उत्त० १२१।

अरसेहिं–अविद्यमानरसैः। भग० ४८४।

अरसो–अरसः, हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृतः। औप० ४०।

अरहंत–अर्हन्तः, अशोकाद्यष्टमहाप्रातिहार्यादिरूपां पूजाम-र्हन्तीति। दश० ६२।

अरहंतघरं–अर्हद्गृहम्। आव० २९५।

अरहंता –अर्हन्, अमरवरविनिर्मिताशोकादिमहाप्रतिहार्य-रूपां पूजामर्हंतीति। भग० ३। अरहोऽन्तः–अविद्यमानं रहः-एकान्तदेशोऽन्तो–मध्यं गिरिगुहादीनां सर्ववेदितया येषां ते। भग० ३। अरथान्तः -अविद्यमानो रथः–स्यन्दनः सकल-परिग्रहोपलक्षणभूतः अन्तः–विनाशो जराद्युपलक्षणभूतो येषां ते। भग० ३। अरहन्तः–क्वचिदप्यासक्तिमगच्छन्तः। भग० ३। अरहयन्–प्रकृष्टरागादिहेतुभूतमनोज्ञेतरविषय-सम्पर्केऽपि वीतरागत्वादिकं स्वं स्वभावमत्यजन्। भग० ३। अर्हाः–अर्हन्तः। आव० ४०६। प्रज्ञा० ५५। अशोका-द्यष्टमहाप्रातिहार्यादिपूजामर्हन्तीति तीर्थकराः। आव० ४८। अर्हन्ता। ठाणा० ३३०।

अरहंतुवएसो–अर्हदुपदेश., आगम.। आव० ४७१।

अरह–अर्हन्, अष्टविधमहाप्रातिहार्यरूपपूजायोग्यः ठाणा० ४६५। अर्ह.–पूजार्हः। भग० ६।

अरहट्ट–अरघट्ट। (आउ०)।

अरहट्टो–अरघट्ट। औप० १०८।

अरहण्णए–मुनिविशेष। (मर०)।

अरहण्णओ–अर्हन्नक, [illegible] [illegible]। आव० ६३६।

अरहण्णग – [illegible]. (मर०)। अर्हन्नक, [illegible]। व्य० प्र० २५६ अ।

अरहदत्ता – अर्हद्दत्ता, [illegible]। विपा० ९५।

अरहधम्मो–अर्हद्धर्मः। आव० ३८८। [illegible]।

अरहन्नग–अर्हन्नक, [illegible]। बृ० द्वि० ८९ अ।

अरहमित्तो–अर्हन्मित्रः, [illegible] [illegible]। आव० [illegible]। अर्हन्मित्रः। आव० ३८८।

अरहया-अर्हत्ता, तीर्थकरता। आव० २३०।

अरहस्सं - अतीवरहस्यभूतं छेदशास्त्रार्थतत्त्वम्। बृ० तृ० २६२ आ।

अरहसिज्ज्ञा-अर्हच्छय्या, अर्हद्भवनम्। व्य० प्र० ३० आ।

अरहा-देवादिकृतां पूजामर्हन्तीति अर्हन्त, अरहस अथवा नास्ति रह-प्रच्छन्नं किञ्चिदपि येषां प्रत्यक्षज्ञानित्वात्। ठाणा० १७४। जिन। सम० १०३। अर्हन्-पूजा मर्हतीति। अरहा, नास्य रहस्यं विद्यत इति वा। उत्त० २०७।

अरहितं-समपादेनैकपादेन वा साधुसाध्व्योः परस्परं सन्निबन्धो वा। बृ० द्वि० १८ अ।

अरातिः-व्याधि। विशे० ७७१।

अरायाणि-अराजानि, यत्र राजा मृत। आचा० ३७८।

अरि-अरि, सामान्यतः शत्रु। ज० प्र० १२०।

अरिक्को-अरिक्त। ओघ० १९९।

अरिट्ठ-अरिष्ट, पिचुमन्द वृक्षविशेष। प्रज्ञा० ३१।

अरिट्ठनेमि-अरिष्टनेमि। आव० २७३, ५१५। दश० ३६, ९६। तीर्थकरविशेष। बृ० प्र० ३० आ। अन्त० २ ५। समुद्रविजयसुत। उत्त० ४८९। समुद्रविजयस्य प्रथम पुत्र। उत्त० ४९६।

अरिट्ठयं-अरिष्टकं, रत्नविशेष। प्रज्ञा० ३६०।

अरिट्ठा-मेडवगोत्रस्य नामविशेष। ठाणा० ३९०।

अरिट्ठ-धर्मजिनप्रथमशिष्य। सम० १०२।

अरिणो-अरय, इन्द्रियविषयकषायपरीषहवेदनोपसर्गरूपा। आव० ४०६।

अरिदमन-अरिदमनो अभयसेनसामान्येवसन्तपुरे राजा। सूत्र० १०२।

अरिमर्दन-मेत्रासमस्थाने वसन्तपुरे राजा। पिंड० ४८।

अरिष्टनगरम्-रामसातुलहिरण्यनाभराजधानी। प्रश्न० ८८।

अरिष्टपुरम्-रुधिरराजधानी। प्रश्न० ९०।

अरिस-अर्शांसि रोगविशेष। विपा० ४०। नि० चू० प्र० १८९ अ। नि० चू० द्वि० ६२ आ। अर्श गुदाङ्कुर। ज० प्र० १२०।

अरिहंत अर्हन्त, अरहन्त-न रहन्तीन। ग्ना० ७९। अशोकाद्यष्टमहाप्रातिहार्यादिरूपां पूजामर्हन्तीति अर्हन्त - नामानः। आव० ११९।

अरिहंतचेइयं-अर्हच्चैत्यम्, तीर्थकरबिम्ब। आव० ४८९।

अरिहंता-अरिहन्ता, कर्मारिविनाशक। भग० ३। कर्मारि-हन्ता। भग० ३। अरिहन्तार, इन्द्रियविषयकषायपरी-षहवेदनोपसर्गरूप(नाश)का। आव० ४०६। अरिह-न्तार, रजोहन्तार। आव० ४०६।

अरिहमित्तो-अर्हन्मित्र। उत्त० ९०।

अरिहा-अर्हा। आव० ३८७।

अरिहो-अर्ह, अर्घ। प्रश्न० ३६।

अरी-अरि, शत्रु। जीवा० २८०।

अरुअ-अरु, व्रण। बृ० द्वि० ११ आ। अरु-व्रण। बृ० तृ० २०८ आ।

अरुगं-अरुकं, व्रण। बृ० द्वि० २५८ अ।

अरुज्झंते-अरुध्यमाने-रुध्यमाने पात्रक। ओघ० १४९।

अरुण-अरुण, नन्दीश्वरसमुद्रानन्तरं द्वीप, तदनन्तरं समुद्रोऽपि। प्रज्ञा० ३०७। सप्तममहाग्रहेषु प्रथमभेद। आचा० २३०।

अरुणुत्तरवडिंसगं-ब्रह्मलोककल्पे विमानविशेष। सम० १८।

अरुणप्पभ-शीतलनाथदीक्षाशिबिका। सम० १०१।

अरुणप्पभो-अरुणप्रभ, चतुर्थोऽनुवेलन्धरनागराज तदधि-वासावासपर्वतश्च। जीवा० ३११। ठाणा० २२६।

अरुणमहावरो-अरुणमहावर, अरुणवरोदसमुद्रेऽपरार्द्धा-धिपतिर्देव। जीवा० ३६७।

अरुणवर-अरुणवर अरुणसमुद्रानन्तरं द्वीप, तदनन्तरं समुद्रोऽपि। प्रज्ञा० ३०७। द्वीपविशेष। ठाणा० २१७।

अरुणवरभद्दो-अरुणवरभद्र अरुणवरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिप-तिर्देव। जीवा० ३६७।

अरुणवरमहाभद्दो-अरुणवरमहाभद्र, अरुणवरद्वीपेऽप-रार्द्धाधिपतिर्देव। जीवा० ३६७।

अरुणवरावभास -अरुणवरसमुद्रानन्तरं द्वीप तदनन्तरं समुद्रोऽपि। प्रज्ञा० ३०७।

अरुणवरावभासभद्दो-अरुणवरावभासभद्र, अरुणवरा-वभासद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव। जीवा० ३६७।

अरुणवरावभासमहाभद्दो - अरुणवरावभासमहाभद्र, अरुणवरावभासद्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देव। जीवा० ३६७।

अरुणवरावभासवरो - अरुणवरावभासवर, अरुणवरा-वभाससमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव। जीवा० ३६७।

अरुणवरावभासो – अरुणवरावभास, अरुणवरोदसमुद्रसत्को द्वीप। जीवा० ३६७।

अरुणवरो–अरुणवर, अरुणोदसमुद्रसत्को द्वीप। जीवा० ३६७। अरुणवरोदे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देव। जीवा० ३६७।

अरुणवरोए – अरुणवरोद, अरुणवरद्वीपसत्क समुद्र। जीवा० ३६७।

अरुणा–शिखरिपर्वतवासिदेवनाम। ठाणा० ८०।

अरुणाभं–ब्रह्मलोककल्पे विमानविशेष। सम० १४।

अरुणाभे–अरुणाभ, राहुप्रलापीसत्के कृष्णपुद्गलविशेष। सूर्य० २८७। सौधर्मकल्पे विमान। भग० ५५१।

अरुणावभासो – अरुणावभास, अरुणावभासद्वीपसत्क समुद्र। जीवा० ३६७।

अरुणे–ग्रहविशेष। ठाणा० ७९।

अरुणो–अरुण – लोकान्तिकदेवविशेष। आव० १३५। महाशुक्रस्य प्रथमो भेद। प्रश्न० १६१। ग्रहविशेष। ज०प्र० ५३४। द्वीपविशेष, यो देवप्रभया परेनादिगनव ब्ररत्नप्रभया चारुण इति। जीवा० ३६७। देव। ज० प्र० ३०१।

अरुणोए–अरुणोद, अरुणद्वीपसत्क समुद्र, सभद्रसुमनो भद्रदेवाभरणयुताऽरुणम्-आरक्तमुदकं यस्यासौ। जीवा० ३६७।

अरुणोदए–अरुणोदक, अन्धकार, तमस्कायस्य नाम। भग० २७०।

अरुणोद–समुद्रविशेष। ठाणा० २९७।

अरुणोपपात–सूत्रविशेष। वृ० प्र० ६० आ।

अरुणोववाते–अरुणोपपात, इहारुणो नामदेवस्तत्समयनिबद्धो ग्रन्थस्तदुपपातहेतु, अध्ययननाम। ठाणा० ५१३।

अरुय – अरुज, अविद्यमानरोग। भग० ९। अरु – व्रण। सूत्र० ९२। अरुज, शरीरमनसोरभावेनाधिव्याधिरहितम्। जीवा० २५२। अरुजम्-अविद्यमानरोग शरीरमनसोरभावात। सम० ५।

अरुयं–अरु। आव० ८२०।

अरुह–न रुहोऽरुह अपुनर्भावी। आचा० २३३।

अरुहंत–अरोहन्, क्षीणकर्मबीजत्वादनुपजायमान। भग० ३। अरोहन, अनुत्पद्यमान क्षीणकर्मबीजत्वात। भग० ३।

अरुहय–अर्हता। विशे० ८६१।

अरूविण:–अमूर्ता। ठाणा० १९२।

अरूवी–अरूपि, अमूर्तम्। भग० १५०।

अरेण–आरत। आव० २८५।

अरो–अर, तीर्थकृच्चक्रवर्तिविशेष। उत्त० ४४८। सप्तम चक्रवर्ती। आव० १५९। सम० १५२। सर्वोत्तमे कुले वृद्धिकरो जायतेऽत, अष्टादशो जिन, यस्मिन् गर्भगते माता स्वप्न सर्वरत्नमयोऽतिमहान्तरोऽतिप्रमाणश्चारको दृष्टोऽत। आव० ५०५।

अरोगी–अरोगी-रोगविप्रमुक्त। दश० २०१।

अरोस–अरोष, चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेष। प्रश्न० १४।

अर्कतूलम्–उत्त० ६७७। प्रज्ञा० १०।

अर्गलम्–अधिकम्। उत्त० ६६०।

अर्गलपाशका–अर्गलापाशकानि, यत्रार्गलाऽऽप्राणि निक्षिप्यन्ते। आचा० ३२७।

अर्गला–(अग्गल), प्रकरणभेद। आचा० ६०। परिघ। उत्त० ३११।

अर्घति–(अग्घइ), अर्हति। उत्त० ३१६।

अर्चा – (अच्चे) लेश्या, शरीरं, क्रोधाद्यध्यवसायाग्निका ज्वाला। आचा० २८४।

अर्चि–(अच्ची), अच्छिन्नमूल। ठाणा० ३३६। अचि – मूलप्रतिबद्धा ज्वलनाशखा। उत्त० ६९४।

अर्चिषा–(अचीए) शरीरनिर्गततेजोज्वाला। ठाणा० ४२१।

अर्जितदु:खा–अर्जित उपार्जित दु:खं यैस्ते। उत्त० २६३।

अर्जुन–तृणविशेष। प्रज्ञा० ३० उत्त० ६९०। जीवा० २५। ज० प्र० १३।

अर्जुनसुवर्णकम्–(अज्जुणसुवण्णग) अर्जुन शुक्ल तच्च तत्सुवर्णकम्। उत्त० ५८०।

अर्जुनसुवर्णमयी–सर्वात्मना कनकमयी। ज० प्र० ३०३।

अर्त्ति –(अट्ट) शारीरमानसी पीडा तत्र भवा। आचा० १३६।

अर्थ–अर्यते गम्यते, परिच्छिद्यत इति। आव० १०। आचा० आव० ६०४। सिद्धस्य पर्याय। ठाणा० २०।

अर्थम्–निमित्तम्। उत्त० ४७३।

अर्थकर–(अट्ठकर) मन्त्री नैमित्तिक। ठाणा० २४१।

अर्थजाता–(अट्ठजाय) अथ-कायमुत्पादनतत्सवगि पणिणश्रादेयात यया ना पनिचौरादिना सयमान्तप्यम न त्यर्थस्ता वा। ठाणा० २०१।

अर्धदण्ड –(अद्वादंडे), दण्डयतेऽस्माऽन्यो वा प्राणी येन स दण्ड । ठाणा० ३१६ ।

अर्थधर्माभ्यासानपेतम्–वाग्यतिशयविशेष । सम० ६३ ।

अर्थनिर्यापणा – अर्थस्य पूर्वापरसाङ्गत्येन गमनिकेत्यर्थ । ठाणा० ४२३ । अर्थ –सूत्राभिधेय वस्तु तस्य निरिति–भृश यापना–निर्वाहणा पूर्वापरसाङ्गत्येन स्वय ज्ञानतोऽन्येषा च कथनतो निर्गमना । उत्त० ३९ ।

अर्थपदम् । भग० २०२।

अर्थपदानि–(अट्ठपदा) अर्थप्रधानानि पदानि। उत्त० ३४१ ।

अर्थशास्त्र–धनुर्वेदादि । बृ० प्र० १३० आ ।

अर्थाशया – पुनरभिनिवेशतोऽन्यथा प्ररूपणादिलक्षणया । सम० १३२ ।

अर्थात्–(अट्ठ), निमित्तात् । उत्त० ४९१ ।

अर्थाधिकारः–(अत्थाहिगारो), शास्त्रीयोपक्रमस्य पञ्चमभेद । आचा० ३ । ठाणा० ४ । वक्तव्यताविशेष एव, न चैक स्वविशिष्टारमादिपदार्थप्ररूपणलक्षण इति । ठाणा० ५ । आव० ५६ । अध्ययनसमुदायार्थ । आव० ५८ ।

अर्थान्तराभिधानम् – गामश्वमित्याद्यन्यार्थप्रतिपादनम् । आव० ५८८ ।

अर्थान्तरोक्ति–मृषावादविशेष । ठाणा० २९० ।

अर्द्धवितर्दी–विह्नरा । ज० प्र० १७० ।

अर्द्धचन्द्र–अद्धचद । सम० ३०, १३९ ।

अर्द्धतृतीया–अर्द्ध तृतीय येषा ते । प्रज्ञा० ४७ ।

अर्द्धपेटा–यस्या तु साधु क्षेत्र पेटावच्चतुरस्र विभज्य मध्य वर्त्तीनि गृहाणि मुक्त्वा चतसृष्वपि दिक्षु समश्रेण्या भिक्षा मटति सा पेटा एवमेव नवरमर्द्धपेटासदृशसस्थानयोर्दिग द्वयसम्बद्धयोगृहश्रेण्योरत्र पर्यटति । बृ० प्र० २५७ अ ।

अर्द्धभारम्–पञ्चसहस्रात्मकम् । ज० प्र० २५३ ।

अर्द्धमागधभाषा–भाषाविशेष । ज० प्र० १४ ।

अर्द्धासन्यासम्–उत्तरासगरूपम् । बृ० प्र० १०५ अ ।

अर्धापक्रान्ति – (अड्ढापङ्क्तीए), एतदेवार्धापक्रान्त्या निशिरे कुर्वन्ति तत्रार्धस्यासमप्रविभागरूपस्यैकदेशस्य वैका दिपदात्मकस्यापक्रमणमवस्थानम्, शेषस्य तु द्व्यादिरूपस्य ज्ञातरूपस्यैकदेशयोर्गमन यस्या रचनाया सा समय परिभाषया अर्धापक्रान्तिरुच्यते । विशे० ५०८ ।

अर्वाक्–अध । आव० ८२७ ।

अर्हन्–मातिशयरूपसम्पत्समन्वित । आचा० ४१२ ।

अलं–अलम्, अत्यर्थम् । दश० २३८ ।

अलकार–अलङ्कार । नि० चू० प्र० २७६ आ । अलङ्कारान्, वस्त्रादीन् । जं० प्र० १४५ । आव० १८२ ।

अलकारियसभा–अलङ्कारसभा । जीवा० २३६ । अलङ्कारभवनविमानभाविनी सभा । प्रश्न० १३५ ।

अलंकारित्ति–अलङ्कारिका, यस्यामलङ्क्रियते । ठाणा० २५३ ।

अलकियं–अलङ्कृतम्, उपमादिभिरुपेतम् । सूत्रगुणविशेष । आव० ३७६ । अन्योऽन्यस्फुरच्छुभस्वरविशेषाणां करणात् । ज० प्र० ४० । मुकुटादिभिर्विभूषितम् । भग० ११९ । काव्यालङ्कारयुक्तम् । ठाणा० ३९७ । अन्यान्यस्वरविशेषाणा स्फुरच्छुभाना करणात् । ठाणा० ३९६ । अलङ्कृतं । ज० प्र० ४२० ।

अलगारो–अलङ्कार, आभरणम् । जीवा० २४९ ।

अलद । नि० चू० द्वि० ९१ आ ।

अलंदक–वसीमूलम् । बृ० द्वि० १७९ अ ।

अलघुसा–अलम्बुषा, उत्तररुचकवास्तव्या दिक्कुमारी । आव० १२२ । उत्तररुचकवास्तव्या प्रथमा दिक्कुमारी महत्तरिका । ज० प्र० ३९१ ।

अलकम्–ललाटम् । जीवा० २७३ ।

अलकापुरी अलकापुरी, लौकिकशास्त्रे धनदपुरी । जं० प्र० १८१ । वैश्रमणयक्षपुरी । अन्त० १ ।

अलक्का–सविषश्वा । (भक्त०) ।

अलक्ख–अलक्ष्यम् गुप्तम् । आव० ४२१ ।

अलक्खणया – अलक्षणता–असमर्थता, अभिधायिता । विशे० २०५ ।

अलक्खे–अलक्ष्य, वाणारस्या राजा । अन्त० २५ । अन्तकृद्दशाना षष्ठमवर्गस्य षोडशाध्ययनम् । अन्त० १८ ।

अलत्त–अलक्तक । उत्त० ६५३ ।

अलत्तगपहो – जेणेत्त अलत्तगेण पादो रजति तेणेत्तो कद्दमो जमि पहे सो अलत्तगपहो । नि० चू० ७९आ ।

अलत्तगा–रंगविशेष । नि० चू० प्र० १८८ अ ।

अलब्धमध्यम –गम्भीर । उत्त० ५५४ ।

अलमथु–समयभाषया समर्थोऽभिधीयते । ठाणा० २९६ ।

अलमत्थु–अलमस्तु, पर्याप्त भवतु । भग० ६७ । निषेधो भवतु निषेधक । ठाणा० २९६ ।

अलल्ल-अलल्ला, व्यक्ता भाषा। दश० २३५।
अलवो-अलपः, मौनव्रतिको निष्ठितयोगः, गुटिकादियुक्तो वा। सूत्र० ३९३।
अलसंडविसयवासी-अलसण्डविषयवासिनः, म्लेच्छविशेषाः। जं० प्र० २२०।
अलस-अलसः, अन्येन सह प्रभूतं पर्यटितुमसमर्थः। ओघ० १५०। गण्डूलकः। प्रश्न० २४।
अलसगे-हस्तपादादिस्तम्भः श्वयथुर्वा। आवा० ३६२।
अलसा-अलसाः, प्रयत्नरहिताः। ओघ० २२२। द्वीन्द्रियजीवभेदः। उत्त० ६९५।
अलाउ-अलावु, अलाबुतुम्बयोर्लम्बवर्तुलत्वकृतभेदः। जं० प्र० २४४। अलातं-उल्मुकम्। ओघ० १७।
अलाउय-अलाबुके। आचा० ४००।
अलाते-अलातम्, उल्मुकम्। जीवा० २९, १०७। प्रज्ञा० २९। ओघ० १७। ठाणा० ३३६। दश० १६१।
अलातद्रव्यम् - वक्तयाऽवभासमानमेकान्तवाद्यभ्युपगतं वा वस्तु। ठाणा० ४८३।
अलाबुकं। ओघ० १४५।
अलाभ-अलाभः, याचितभिक्षाद्यलाभः, पञ्चदश परीषहः। आव० ६५७। अभिलषितविषयाप्राप्तिः। उत्त० ८३।
अलायं-अलातम्, उल्मुकम्। उत्त० ८३। दश० १२८, १५४।
अलायचक्कं-अलातचक्रं, कालभेदेन दिक्षु भ्रमत्। विशे० ९७५।
अलाहि-अलम्। आव० ११६, ७०२। भग० ४७०। ओघ० ५५१।
अलिंजरम्-कुम्भम्। दश० २६०।
अलिंद-कुण्डकम्। ओघ० १६६।
अलिंदट्ठिओ-अलिन्दकस्थितः। उत्त० ३५५।
अलिंदाति। नि० चू० प्र० १६२ अ।
अलिंदेण-अलिन्देन-कुण्डकेन। ओघ० १६७।
अलिंदो-दोषविशेषः। बृ० द्वि० ६२ अ। नट इव। व्य० प्र० १६४ अ।
अलिय-अलीकम्, भूतनिह्नवरूपं, असत्यं वा। भग० ३१२।
अलिसय-अलिन्नम्। आचा० ३३।
अल्लिय-अलीकं, मृषावादः। प्रश्न० ९५। मिथ्या, अधर्मद्वारस्य प्रथमं नाम। प्रश्न० २६। सद्भूतार्थनिह्नवरूपम्। प्रश्न० ११९। अभूतं-अभूतोद्भावनं भूतनिह्नवश्च, मृषावादविशेषः। आव० ३७४। विशे० ४६४। शुभफलापेक्षया निष्फलः। प्रश्न० २७।
अलियवयणे-अलीकवचनम्। ठाणा० ३७०।
अलिया-अलिका, पक्षिविशेषः। अनुत्त० ४।
अलियाण-अलीकाज्ञः, अलीका आज्ञा-आगमो यस्य सः। प्रश्न० ४०।
अलिसिंदा-चवलगारा। नि० चू० प्र० १४४ आ।
अलुद्धो-अलुब्धः। आव० ८५९।
अलेव-प्रक्षणेन सर्पिषा-घृतेन वसया च निर्वृत्तो लेपोऽलेपो ज्ञातव्यः। बृ० प्र० ८२ आ।
अलेभड्डो-अस्थिरः, अनाहारः। आव० २१२।
अलोए-अलोकः-केवलाकाशरूपः। औप० ७१।
अलोला-इंदियविसयणिग्गहकारी, एसणं ण पेल्लेति। नि० चू० प्र० ३३२ आ।
अलोलुओ-अप्पडिबद्धो। दश० चू० १४०।
अलोहे-अलोभः, योगसङ्ग्रहेऽष्टमो योगः। आव० ६६४। स्वल्पलोभः। जं० प्र० १४८।
अलौकिकत्वम्-असाधारणम्। दश० १६७।
अल्पगृहभिक्षादः। आचा० ३३६।
अल्पझञ्झ-अविद्यमानवाक्कलहः। उत्त० ५८९।
अल्पपरिकर्माणि-यानि कचिन्मनाक् तर्क्षितानि। ओघ० ११२।
अल्पलेपा-चतुर्थी पिण्डैषणा। आचा० ३५७।
अल्पार्थके- ठाणा० ३३०।
अल्लइ-वृक्षविशेषः। भग० ८०३।
अल्लइकुसुमं-अल्लकीकुसुमम्, लोके प्रतीतम्। प्रज्ञा० ३६१। जं० प्र० ३८।
अल्लगं-आर्द्रकम्, कन्दविशेष। आव० ८२८। आर्द्रं आर्द्रकं च। आव० ८२८।
अल्लचम्मे। नि० चू० प्र० १९० अ।
अल्लपल्ली-अली, ग्रन्थिकपुच्छाकृतिः। विपा० ७१।
अल्लय-आर्द्र (सं०)
अल्लिउं-अभिद्रोतुम्, आश्रयितुं वा। आव० ४३०।

अल्लिए–आश्रयेत्। (गणि०)
अल्लितो–अर्पित । आव० ४३४।
अल्लियंतुं–उपसर्पतुम्। आव० ६५।
अल्लियतो–आश्रयन्। आव० ४००।
अल्लियइ–आश्रयति। आव० ६९५।
अल्लियउ–अलगीन्। आव० १११।
अल्लियस्सह–आश्रयत। उत्त० ३९६।
अल्लियह – आलीयेताम्– आश्रयताम्। उत्त० ३९४। ओघ० १५९।
अल्लियावं–प्रवेशम्। आव० ३४१।
अल्लियावणबंधे–अल्लियावण द्रव्यस्य द्रव्यान्तरेण श्लेषादिना ऽऽलीनस्य यत्करण तद्रूपो यो बन्ध स। भग० ३९०।
अल्लियावो–प्रवेश, आश्रयणम्। उत्त० १४५।
अल्लिविओ–अर्पित । आव० ४२१।
अल्लिवेई–अर्पयति, ददाति। आव० ५६०।
अल्लीण–आलीनम्, सुश्लिष्टम्। जं० प्र० ४२९। आलीन – मस्तकभित्तौ क्वचिल्लग्नौ न तु टप्परौ। जं० प्र० ११३। *मनोवाक्कायगुप्ताश्रितौ वा, यद्वा अलीनौ–पृथगवस्थानन* परस्परमश्लिष्टौ। उत्त० ४९९। गुरुवचनमाश्रित । अनुशासनेऽपि न गुरुषु द्वेषमापद्यन्ते, अथवा आ–समन्तात्सर्वासु क्रियासु लीना–गुप्ता नोल्वणचेष्टाकारिण । जं० प्र० ११०। जीवा० २७८। गुरुमाश्रित । औप० ८८। इष लीन । आव० १९७। आलीन । आव० ६३। आश्रित (आउ०)। आ–समन्तात् लीना आलीना। व्य० द्वि० ४४० आ।
अल्लेसेहिं अश्लेषै । आव० ६३।
अवं–(अवाङ्) अधस्तात्। आचा० ६३।
अवंगाओ–अपाङ्गा, नयनप्रान्तम्। जं० प्र० ९२।
अवंगुअ–अप्रावृतम्। नि० चू० प्र० २०४ अ।
अवंगुदुवारे– अप्रावृतद्वार कपाटादिभिरस्थगितगृहद्वार। औप० १००।
अवंगुय–अप्रावृतम् न स्थगयति। बृ० द्वि० ७५ आ, १६४ अ।
अवंगुतंमि–उद्घाटिते। बृ० द्वि० ४१० आ।
अवंगुयदुवारो–अप्रावृतद्वार, अप्रावृतं द्वारं येन स, उद्घाटितद्वार । सूत्र० ३३१।
अवंगो–अपाङ्ग, नयनोपान्तम्। जीवा० २०६।
अवंझ–अवन्ध्य, एकादशपूर्वनाम। ठाणा० १९९।
अवंझपुव्वं–अवन्ध्यपूर्व–यत्र सम्यग्ज्ञानादयोऽवंध्या –सफला वर्ण्यन्ते तत्, एकादशपूर्वनाम। सम० २६।
अवंतिवद्धण–अवन्तीवर्धन, अज्ञातोदाहरणे प्रद्योतात्मजपालकसुत । आव० ६९९।
अवंतिसुकुमार–प्राणिन आहारविमोचने दृष्टांत। आचा० २९१।
अवंतिसुकुमालो–अवन्तिसुकुमार, योगसङ्ग्रहेऽनिश्रितोपधानदृष्टान्ते उज्जयिन्या सुभद्रापुत्र। आव० ६७०। वंशकुडंगेऽनशनी (मर०)। शृगालीभक्षित (भक्त०)।
अवंतिसेण – अवन्तीषेण, अज्ञानोदाहरणे धारिणीपुत्र। आव० ६९९।
अवंती – देशविशेष। बृ० तृ० ११८ अ। उत्त० ४९।
अवंतीजणवए – अवन्तीजनपद, देशविशेष । आव० २८९। उत्त० ४९। नि० चू० प्र० ६४ आ।
अवंतीजणवय–देशविशेष। व्य० प्र० १४९ आ।
अवंतीसुकुमार–नामविशेष, उदाहरणविशेष। बृ० द्वि० २२४ अ।
अवंतीसुकुमालो–वंशकुडंगेऽनशनी (मर०)। शृगालीभक्षित (भक्त०)
अवंतीसुत–शृगालीभक्षितो मुनि। (स०)
अवंतीसोमालो। नि० चू० प्र० ११७ आ।
अव–अपृथक्त्वम्। आव० २७८। अध। प्रज्ञा० ५२६। उत्त० ४५७। मर्यादया एतावत्क्षेत्र पश्यन। विशे० ५४।
अवइद्धो – अपविद्ध, तोमराग्निना सम्यग्विद्ध। प्रश्न० ४९।
अवइण्णगो–अवकीर्णक। आव० ७१८।
अवउज्झिअ–अधोऽवनम्य। आचा० ३४४।
अवउज्झत्ति–परित्यज्यते। आव० ७६५।
अवउज्झियधोवमाहारो – उज्झितस्तोकाहार, उज्झितधर्मा स्तोक –स्वल्प आहारो यस्य स। आव० ५६८।
अवउडग – अवकोटनम्, ग्रीवाया पश्चाद्भागनयनम्। विपा० ५३। अवकोटक, कृकाटिकाया अधोनयनम्। विपा० ४७।

अवए-अवकम्, अनन्तजीववनस्पतिभेदः। आचा० ५९। जलरुहविशेषः। प्रज्ञा० ३१, ३३। साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। जीवा० २६। प्रज्ञा० ३४। साधारणवनस्पतिविशेषः। प्रज्ञा० ४०।

अवपडए-तापिकाहस्तकात्। भग० ५४८।

अवओडयबंधणयं – अवमोटनतोऽवकोटनतो वा पृष्ठदेशे बाहुशिरसा संयमनेन बन्धनं यस्य सः। अन्त० १९।

अवकंखइ – अवकाङ्क्षति, अपेक्षते, अनुकम्पते। भग० १०२।

अवकरिसो-अपकर्षः-अभावः। प्रश्न० ६२।

अवकारं-अपकरणम्, अङ्गारोपरिक्षेपः। प्रश्न० ४०।

अवकिन्नतो-अवकीर्णकः, करकण्डोः प्रथमं नाम। उत्त० ३०१।

अवकिरति-उत्सृजति। आव० ७७१।

अवकिरियव्वं-अवकरणीयम्, विक्षेपणीयम्, त्याज्यम्। प्रश्न० ९६।

अवकुंडिय-अवगाढ-व्याप्त। (मर०)

अवकुज्जियं-उद्दाए तिरियहुत्तकरणं। नि० चू० तृ० ५९ अ।

अवकोडकबंधणं-अवकोटकबन्धनम्, बाहुशिरसां पृष्ठदेशबन्धनम्। प्रश्न० १४।

अवकोडयं-अवकोटकम्, कोटायाः-ग्रीवाया अधोनयनम्। प्रश्न० ५६।

अवक्कंत-अपक्रान्तः, सर्वेशुभभावेभ्योऽपगतः-भ्रष्टः, अपक्रान्तः-अकमनीयः। ठाणा० ३६६। आव० ५०४। अवक्रान्तः-अवस्थितः। उत्त० १५६।

अवक्कमइ-अपक्रामति, च्यवते। जीवा० ११०। गच्छति। जीवा० २४३, ३०६, ३३३, ४००। अपक्रामति। आव० १३६। अपक्राम्यति। उत्त० १५७।

अवक्कमिज्जा-अपक्रामेद्-गच्छेत्। आचा० ३८५।

अवक्कमित्ता-अपक्रम्य, गत्वा। दश० १७८।

अवक्कमेज्ज – अपक्रामेत्, अपसर्पेत्, उत्तमगुणस्थानकाद् हीनतरं गच्छेदित्यर्थः। भग० ६४।

अवक्कासे-अपकर्षणं, अपकर्षणं, अप्रकाशो वा। भग० ५७२। अपकर्षः। सम० ७१।

अवक्खिरं-अपत्र। दश० चू० ११३।

अवक्खय-विनिर्गत्य। व्य० प्र० १४६ आ।

अवक्खारणं-अपक्षारणम्, अपशब्दं क्षारायमाणं वचनं, अपक्षकरणम्-सान्निध्याकरणम्। प्रश्न० ४१।

अवक्खित्तो-आक्षिप्तः। उत्त० ११७।

अवगति-बुद्धिः। उत्त० ३९२।

अवगम-संज्ञा। आचा० १२।

अवगाढ-अवस्थिताः। ठाणा० ५१४।

अवगाढगाढ – गाढावगाढम्, अतिगाढम्, प्राकृतत्वादेवं रूपम्। भग० ३७।

अवगाढा-आश्रिताः। ठाणा० ५२७।

अवगाढाअवगाढं – अवगाढावगाढम्-अत्यन्तव्याप्तिदर्शनम्। भग० १५३।

अवगायति-परिभवति। आचा० १०६।

अवगासो-अवकाशः, यद्यस्योत्पत्तिस्थानम्। सूत्र० ३५०। अवस्थानम्। विशे० ५७१। गमनादिचेष्टास्थानम्। आव० ८३५। अवस्थानमवतारो। ठाणा० ३३७। बहूनां विवक्षितद्रव्याणामवस्थानयोग्यं क्षेत्रम्। भग० ६०१।

अवगाहणा-आश्रयभावः। भग० ६०९। अवस्थानरूपा। विशे० ८६२।

अवगील-बाल्यादेशेऽपि केनचिदप्यननुवर्त्यमानः। आचा० १०६।

अवगीतम्-निन्दितम्। भग० ११।

अवगुणंति-अपावृण्वन्ति। भग० ६८३।

अवगूहितो-अवगूहितः। आव० ३४४।

अवगुण्ठ्यते-लिप्यते। आचा० १४७।

अवग्गहो-अवग्रहः, अव इति-प्रथमतो, ग्रहणं-परिच्छेदनम्। ठाणा० २८३। अवष्टम्भः। ओघ० २११। सामान्यार्थस्याशेषविशेषनिरपेक्षानिर्देश्यस्य रूपादेरवग्रहणम्। आव० ९।

अवग्गह-ओगाह, अव्यक्तं यथास्वमिन्द्रियैर्विषयाणामालोचनावधारणं। तत्त्वा० १-१५।

अवग्गहावधि-कारणे आपन्ने संयमार्थं यो गृह्यते। ओघ० २०८।

अवघाटनप्रायश्चित्तं दोषप्रायश्चित्तानि दोषयति। व्य० प्र० ९३ आ।

अवघाडो। नि० चू० प्र० १२६ अ।

अवच-जघन्यः। सूत्र० १९२।

अवचए-अपचय, ह्रास, शरीरेभ्य पुद्गलानां विचटनम्। प्रज्ञा० ४३०। देहातोऽपगम। भग० ५४०।

अवचयो-अपचय-हीनत्वम्। सूर्य० १६।

अवचनम्-त्रिविधवचनप्रतिषेध। ठाणा० १४१।

अवचुलकम्। बृ० प्र० २९८ आ।

अवचूल-अवचूलम्। भग० ३१८।

अवचलेणसारक्खणा – अपत्यलयनसरक्षणा। आव० ४०५।

अवच्चे-अपत्ये। आव० १९९।

अवच्छेए-अवच्छेद, देश। ठाणा० २०५।

अवजाते-अपजात-अप-हीन, जातोऽपजात, पितु सका-शादीषद्धीनगुण। ठाणा० १८४।

अवज्जं-अवद्यम्, पाप। विशे० १३१७। आव० ३६४।

अवज्जपडिच्छन्नो – अवद्यप्रतिच्छन्न, पापप्रच्छादित। आव० ५३७।

अवज्जभीरू-अवद्यभीरु, साधु। ओघ० २२४।

अवज्जुत्त-पृथग्भूतम्। आव० ७५८।

अवज्झा-अवध्या, गन्धिलविजयराजधानी। ज० प्र० ३५७।

अवज्झाओ। ठाणा० ८०।

अवज्झाणायरिए – अपध्यानाचरित, अप्रशस्तध्यानाचरित। आव० ८३०।

अवट्ठिए-अवस्थित, नित्य। भग० ७८०। एवमुभयरूप नया। ठाणा० ३३३। निश्चलत्वात्। ठाणा० ३३३। अवस्थितानि-शाश्वतानि। ठाणा० १४६। अवधे पञ्चमभेद। प्रज्ञा० ५४३। आव० २८।

अवट्ठिय-अवस्थित, स्थितम्। भग० ११९। अवट्ठिएणु। जीवा० २७२। अवस्थिता-स्वप्रमाणावस्थिता। जीवा० ९९। स्वप्रमाणेऽवस्थिता मानुषोत्तरपर्वताद्बहि समुद्रवत्। ज० प्र० ७७।

अवट्ठिया कप्पा-अवस्थिता कल्पा-सामायिकमात्रनाम वत्तयभ वित। ठाणा० ३७४।

अवडिंसगभूय – अवतसकभूतम्, शेखरकल्पम्, प्रधान मित्यर्थ। प्रश्न० १३७।

अवडेसग-अवतसक, शेखरक। भग० ३२२।

अवड्ढं ह्रसादिकाम्। भग० ६७९।

अवड्ढं-अपार्धम्, अर्धमात्रम्। सूर्य० ३०, १०४। अर्द्ध-ध्रुवमात्रम्। ओघ० ८६।

अवड्ढकुखेत्ता-अपार्द्धक्षेत्रम्, अपार्द्ध-समक्षेत्रापेक्षया अर्द्ध-मेव क्षेत्रम्। ठाणा० ३६७।

अवड्ढखेत्तं-अपार्द्धक्षेत्रम्, अर्धमात्रक्षेत्रम्। सूर्य० १०४। पञ्चदशमुहूर्त्तभोग्य नक्षत्र अभिचिर्वा, पञ्चदशमुहूर्त्तभोग्यानि भरणी आर्द्रा अश्लेषा स्वातिर्ज्येष्ठा च। बृ० तृ० १४८ आ।

अवड्ढगोलावलिच्छाया-अपार्द्धगोलावलिच्छाया, गोला-नामावलिर्गोलावलिस्तस्या छाया गोलावलिच्छाया अपा-र्द्धाया –अपार्द्धमात्राया गोलावले'छाया। सूर्य० ९५।

अवड्ढचंदो-अपार्धचद्र-अर्धचंद्र। बृ० प्र० १०९ अ।

अवड्ढवाविसंठित-अपार्द्धवापीसंस्थित। सूर्य० १३०।

अवड्ढा-अपार्द्धा। ठाणा० १४९।

अवड्ढो-अर्द्ध। नि० चू० प्र० १४२ आ।

अवड्ढोमोअरिआ-उपार्द्धावमोदरिका, द्वात्रिंशतोऽर्द्ध षोडश, एव च द्वादशानामर्द्धसमीपवर्तित्वादुपार्द्धावमोदरिका द्वाद-शभिरिति। औप० ३८। भग० २९२।

अवणए-अपनय-पूजासत्कारादेरपनयनम्। ठाणा० ४१८।

अवणय-एकान्ते स्थापनम्। बृ० द्वि० २६३ अ।

अवणिज्जतु-अपनीयन्ताम्। आव० ४३६।

अवणितमूलो-अपनीतमूल, अपनीतमूलत्रिभाग, त्रिभा-गनिर्वाटितवान्, ऊर्ध्वभागादपि त्रिभागहीन इति। जीवा०, ३५५।

अवणीओवणीयवयणं – अपनीतोपनीतवचनम्, यत्नि-न्दित्वा प्रशसति। प्रज्ञा० २६७।

अवणीय अपनीतम्, स्थानान्तरस्थापित निराकृतगुण वा। औप० ३९।

अवणीयवयणं-अपनीतवचनम्, निन्दावचनम्। प्रज्ञा० २६७। गुणापनयनरूपम्। प्रश्न० ११८। निंदावचनम्। आचा० ३८७।

अवणीयोवणीयवयणं – अपनीतोपनीतवचनम्, यत्रैक गुणमपनीय गुणान्तरमुपनीयते। प्रश्न० ११८। अल्पवती स्त्री किन्तु सद्वृत्ता। आचा० ३८७।

अवणेति-महामसि प्रकाशयति। नि० चू० प्र० ११६ आ।

अवणेज्जा-अपनयेत्, परित्यजेत्। दश० १०६।

अवण्ण-अवर्णः, अवज्ञा वा, अनादरः, वर्णनाया अकरणम्। औप० १०५। अश्लाघात्मकः। उत्त० ५१०। निन्दा। आव० १०३।

अवण्हाणं-अपस्नानम्, तथाविधद्रव्यसंस्कृतजलेन स्नानम्। विपा० ४१।

अवतंसो-पुरुषव्याधिनामको रोगः। बृ० तृ० ३४९ अ।

अवतासण-बाहाहिं अवतासिता। नि० चू० प्र० ११३ अ।

अवत्त - अप्राप्तम्-अस्पृष्टम्। भग० १२७। अव्यक्तः, अष्टानां वर्षाणामधो बालः। ओघ० १६२।

अवत्तदंसणे - अव्यक्तदर्शनः-अव्यक्ते-अस्पष्टं दर्शने-अनुभवः। भग० ७०९।

अवत्तमय-अव्यक्तमताः, संयतासंयतावगमे संदिग्धबुद्धयः। विशे० ९३३।

अवत्तव्वं-अवक्तव्यम्। प्रज्ञा० २३४। यचरमशब्देनाचरमशब्देन वा स्वव्यनिमित्तशून्यतया वक्तुमशक्यं तत्। प्रज्ञा० २३५। अनन्तगुणं। दश० २२१।

अवत्तव्वगसंचिता-अव्यक्तव्यकसंचिता-समये समये एकतयोत्पन्नाः। ठाणा० १०५।

अवत्ता - छगणमट्टियाए पाणिएण य। नि० चू० प्र० २३२ अ।

अवत्तिता-अव्यक्तिकाः, अव्यक्तं-अस्फुटं वस्तु अभ्युपगमतो विद्यते येषां ते। ठाणा० ४१०।

अवत्तो-सोलसवरिसारेण वयसा। नि० चू० प्र० २९० आ।

अवत्थयं-अपार्थकम्, पौर्वापर्यायोगादप्रतिसम्बद्धार्थं, चतुर्थसूत्रदोषः। आव० ३७४। अमवद्धार्थम्। विशे० ४६८। अनु० २६१।

अवदारं-अपद्वारम्। आव० ३०६।

अवदारियं-अवदारितम्, उद्घाटम्। आव० ६८७।

अवदाल-पादादिन्यासेऽधोगमनम्। भग० ५४०।

अवदालिओ-अवदारितः। आव० ७०५।

अवदालियं-अवदालितम्, रविकरैर्विकासितम्। औप० १७। रविकिरणैर्विकासितम्। जीवा० २०३। मन्नाना-वदलनं-विकसितम्। प्रश्न० ८२।

अवदाली-अवदारयति-दवकर्ं स्वस्वामिनं विनाशयतीत्येवंशीलः। उत्त० ५४८।

अवदालेइ-अवदालयति, उत्पाटयति। प्रज्ञा० ६०० ।

अवदू-कृकाटिका। विपा० ७२।

अवद्दहणा-दम्भनम्। विपा० ४१।

अवद्दारं-अपद्वारम्। आव० ३०६।

अवद्धगाढलगोलछाया-अपार्धगाढलगोलच्छाया। सूर्य० ९५।

अवद्धगोलच्छाया-अपार्धगोलच्छाया। सूर्य० ९५।

अवद्धगोलपुंजछाया-अपार्धगोलपुञ्जच्छाया। सूर्य० ९५।

अवद्धचंद-अपकृष्टमर्द्धं चन्द्रस्यापार्धचन्द्रः। ठाणा० ७१।

अवद्धजवरासिसंठाणसंठिए - अपार्धयवराशिसंस्थानसंस्थितः, अपगतमर्द्धं यस्य सः, स चासौ यवश्च राशिश्च अपार्धयवराशी तयोरिव यत्संस्थानं यस्य तेन संस्थितः। जीवा० ३४३।

अवद्धपोरिसी - अपार्धपौरुषी, अपगतमर्द्धं यस्याः सा अपार्धा सा चासौ पौरुषी। सूर्य० ९५।

अवद्धं-मिथ्यात्वकषायनोकषायलक्षणम्। आव०'।

अवद्धाय-मृत्वा। जीवा० २६२।

अवधारियं-तात्पर्यग्रहणतो हृदये विश्रामितं। व्य० प्र० २५७ अ।

अवधिकेवली - केवलिद्वितीयभेद. । नि० चू० द्वि० १३९ आ।

अवधिजिनः-विशिष्टावधिधरः। आव० ५०१।

अवधिज्ञानम्-ज्ञानस्य तृतीयभेदः। ठाणा० ३३२।

अवधिज्ञानजिनाः-विशुद्धावधिज्ञाना.। व्य० प्र० ८९ अ।

अवधीरयेत्-उपेक्षेत। उत्त० ११२।

अवधीरित.-परिभूतः। आचा० १०३।

अवधूतम्-अवज्ञातम्। ओघ० १५।

अवन्नं-अवर्णम्, निन्दा। आव० ६६२। अश्लाघामवज्ञा। ठाणा० ३६०।

अवन्ना-अवज्ञा, परिभवः। ओघ० १८६।

अवपंगुरे-अपावृणुयात्, उद्घाटयेत्। दश० १६७।

अवपात - पर्वतविशेषाः,.येषु वैमानिका देवा अवपतन्ति अवपत्य च मनुष्यलोकमागच्छन्ति। प्रश्न० ९६।

अवपीलइ-अवपीडयति, जलेन शाययति। जीवा० ३२६।

अवबोह-अवबोधः, मतिः। आचा० १२।

अवभासियं-अवभासितं, दुष्टभाषणं, विरूपं भाषणं। व्य० प्र० ७० अ।

अयमंथित-अयाद्गुर्गन्धित। बृ० प्र० ८० आ।
अयमः-लघु पर्यवेग। ठाणा० २४२।
अयमण्णइ-अवमन्यते, अवमाऽऽस्ते मन्यते। भग० १६६।
अयमण्णह - उचितप्रतिपत्त्यकरणेन। भग० २१९।
अयमद्-अवमद। जै० प्र० १०१।
अयमद्दं-अपमर्दम्, उपमर्दनम्। प्रश्न० ३०।
अयमप्रतिजागरणम्-गुणविशेष। आव० ७२८।
अयमा-हीना। आचा० ३३२।
अयमाणणं-अपमाननम्, विनयभ्रंश। प्रश्न० ९७। अन-भ्युत्थानादिकरणम्। भग० २२७। मानहरणम्। प्रश्न० ४१। अपमानम्, अपूजनम्। औप० ४६।
अयमाणो-अपमान०, दैन्यम्। प्रश्न० ११८।
अयमानं-हस्तादि। ठाणा० १९८।
अयमारियं-अपस्मार-अपगत स्मार स्मरणं यस्मात् स अपस्मार, तस्मिन् सति तद् रोगिण सदविवेका स्मृति भवति। आचा० २३३।
अयमोदर-अवमं-ऊनमुदरं-जठरं यस्य स। ठाणा० १४८।
अयम्मो-अधाम्य। आव० १०१।
अययकाओ-अवपाकयाल्लापका। भग० ४८८।
अययक्खंत-अपक्षमाण (भग०)। पृष्ठतोऽभिमुख निर-यनयन। औप० १२७।
अययक्खमाणस्स-अवकाश्यतोऽपेक्षमाणस्य वा। भग० ८९६।
अययग्गे - अन्त, अन्तवाचको देशवचनोऽयं शब्द। भग० ३०। अवदग्रम् पर्यन्तम्। ठाणा० ८४।
अययणं-अपचनम्। आव० २८३।
अययय-अवयवा, प्रतिज्ञादय। दश० ७०। अवयव - प्रमाणाङ्गलक्षण। दश० ७३। अवयवा तथाविधाशावत्र परिणामापेक्षया। ठाणा० ११।
अययविद्धत्थता-तथाविधैकापरिणामिता। ठाणा० ११।
अययवी - अवयवानां समाप्य महाशरीरनामविशेष। जीवा० ६।

अययाणं-नैपथ्यि। बृ० द्वि० २११ आ।
अययानी-मनुष्यलोकविमी। व्य० प्र० २४ आ।
अययारी-अवतार, प्रस्ताव। व्य० द्वि० २५ आ।
अययासं-आलिङ्गनम्। औप० १६४।
अययासणं-कण्ठीनामविशेषनम्। बृ० प्र० २१९ अ।
अययासि-आश्लिष्य। बृ० मृ० २९ आ।
अययासिज्जमाणे - आश्लाष्यमान, अन्यान्यमपगे वा। औप० १०२।
अययासित्ता-अवकाश्य। आव० ३०१।
अययासेउं-निवारयितुं, निरोद्धुम्। आव० ४३८।
अयरं-अपरं, पश्चात्कालभावी। आचा० १६०।
अयरज्झियाउ - अपरादयात। आव ८३१।
अयरकंका-अपरकङ्का, शाताया षोडशमध्ययनम्। भग० ६०१। ज्ञाता षोडशी ज्ञातम्। उत्त० ६१४। सम० ३६।
अयरगब्भो-अपरगर्भे। आव० ३८०।
अयरज्जइ-अपराध्यति, अपराधमाप्नोति। दश० १९६।
अयरण्हसंमई दिया गृहीतं गतो भुते, गर्भिणीसमाज वितियमद्दी। नि० चू० द्वि० १५ अ।
अयरभो-अपरत, अपरस्मात। निशी० ८३०।
अयरत्त - अपरात्र, अपरस्या रात्रि, पश्चिमरात्र। भग० १२७। रात्रि पश्चिमयामो। दशा० चू० ११८।
अयरद्क्खिणा-अपरदक्षिण। आव० ६३०।
अयरदारिता - अपरद्वारिका, अपरस्यां दिशि स्यद्वारं येषु। ठाणा० ४१४।
अयरद्धं-अपराद्धम्, दग्धम्। उत्त० १४३।
अयरद्धिगा-लूता फोडिका, तस्या मुत्रादयोऽतिकायामुच्छि-तायां शाह्यमालार्पमनस्त्रेन पूर्वकारेन परिषेक क्रियते। आव० ११०। सर्वदोमरूपस्मिन परिषेकादि क्रियते। औप० ११०।
अयरभू-अपरभू, अधोभू। सूर्य० ४६।
अयररायं-अपररात्रं-रात्रे पाश्चात्य याम। आचा० ३१०।
अयरविदेहकूडे-अपरविदेहकूटम्, निषधे अष्टमकूट। जै० प्र० ३०८। अपरविदेहाभिधकूटम्। जै० प्र० ३३३।

अवरविदेहे-अपरविदेहः, मेरोर्जम्बूद्वीपगतः पश्चिमविदेहः। जं० प्र० ३१०। महाविदेहापरभागः। ठाणा० ६८। निषधे कूटविशेषः। ठाणा० ७२। नीले कूटविशेषः। ठाणा० ७२।

अवरवीयावो-अपरबीजापः। आव० ३८७।

अवरा-अपरा। आव० ६३०।

अवराइअ-अपराजितः, पद्मबलदेवपूर्वभवनाम। आव० १६३।

अवराइआ-अपराजिता, शङ्खविजये नगरी। जं० प्र० ३५७।

अवराओ। ठाणा० ८०।

अवराजिआ-अपराजिता, पूर्वदिग्रुचकवास्तव्या दिकुमारी। आव० १२२।

अवराजिया-अपराजिता, उत्तरदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्योत्तरस्यां पुष्करिणी। जीवा० ३६४।

अवराह-अपराधः, गुरुविनयलङ्घनरूपः। आव० ५४१।

अवराहखामणा-अपराधक्षामणा, वन्दनके षष्ठं स्थानम्। आव० ५४८।

अवरुंडिओ-आलिङ्गितः। आव० २७४।

अवरुज्जय। आव० ६३८।

अवरुत्तरा-अपरोत्तरा। आव० ६३०।

अवरुद्धो-अवरुद्धः, अन्तर्भूतः। विशे० ११६७।

अवरेय-अवरेकः, रिक्तता। उत्त० ३०५।

अवरेण-अपरेण-जन्मादिना सार्द्धम्। आचा० १६७।

अवरो-अववादो। नि० चू० तृ० १४६ अ।

अवरोप्परमसंबद्ध-परस्परमसम्बद्धः। आव० ६३९।

अवण्णे - अवर्णः, अश्लाघा। असद्दोषोद्भट्टनम्। ठाणा० २७५। अयशः, सर्वदिग्गामिन्यप्रसिद्धिः। ठाणा० ४१८।

अवन्न-अवर्णः अप्रसिद्धमात्रम्। भग० ४८९। अश्लाघा। ओघ० १२१। अयशः। ओघ० १२५।

अवलंबण - अवलंबिज्जतित्ति अवलंबणं, तो पुण वेतिता मत्तावलंबो वा। नि० चू० प्र० ११९ अ। बाह्वादिमात्रैकदेशग्रहणम्। बृ० तृ० २३० अ। अवतरतामुत्तरतामवलम्बनहेतुभूताः। जं० प्र० ४३। अवलम्बनः, अवतरतामुत्तरतां चालम्बने हेतुभूतः। जीवा० १९८। अवलम्बनं देशे ग्रहणम्। ठाणा० ३२७।

अवलंबणबाहा-अवलम्बनबाहा, उभयोरुभयोः पार्श्वयोरवलम्बनाश्रयभूता भित्तिः। जीवा० १९८।

अवलंबनीयम्-लम्बयितव्यं रज्ज्वादिनिबद्धं हस्तादिना धरणीयम्। भग० ४७।

अवलंबमाणे - अवलम्बयन् हस्तवस्त्राञ्चलादौ गृहीत्वा। ठाणा० ३५३।

अवलंबमाने - अवलम्बमानः, पतन्तीं बाह्वादौ गृहीत्वा धारयन्। ठाणा० ३२७।

अवलगका-सेवकाः। भग० ४६४।

अवलगनं-सेवा। आचा० १३२।

अवलद्ध - अपलब्धः न्यक्कारपूर्वकतया। ठाणा० ४६६। ईषल्लब्धः, अलब्धो वा। प्रश्न० १३८।

अवलद्धि-अपलब्धिः, अलाभोऽपरिपूर्णलाभो वा। भग० १०१।

अवलम्बए - अवलम्बेत-अवष्टम्भादिकां क्रियां कुर्यात्। आचा० २९३।

अवलियाति। ठाणा० ८६।

अवलितं-वस्त्रं शरीरं वा न वलितं कृतं तत्। ठाणा० ३६१। यथाऽऽत्मनो वस्त्रस्य च वलितमिति मोटनं न भवति। उत्त० ५४१।

अवलियं-अवलितम्। ओघ० १०९।

अवलुपण। आचा० ३७८।

अवलहणिया - वासासु कद्दमफेडणी। नि० चू० प्र० १२४ अ।

अवलेखकं-मायाया लक्षणम्। आचा० १७०।

अवलोकनम्-गवाक्ष। बृ० प्र० २०७ अ।

अवलोवो - अपलोपः, वस्तुसद्भावप्रच्छादनम्। अधर्मद्वारस्य त्रिंशत्तमं नाम। प्रश्न० २७।

अवल्लगन। आचा० १०६।

अवल्ल-गोणी। आव० ६६५।

अवल्लखेवा-मविलया क्षेपा। नि० चू० द्वि० ७८ अ।

अवल्लगं। ओघ० ३३। निर्यामकाः (मर०)।

अवयं - अववम्, चतुरशीतिरववाङ्गशतसहस्राणि। जीवा० ३४५।

अवयंगं-अववाङ्गम्, चतुरशीतिरडडशतसहस्राणि। जीवा० ३४५। भग० ८८८।

अववंगाति । ठाणा० ८६ ।
अववरय-अपवरक, गृहान्तर्भाग । दश० ४२ ।
अववाइयं-आपवादिक यद्द्रव्यक्षेत्राद्यपेक्षम् । उप० मा० गा० ४०० ।
अववाओ – अपवाद, द्वितीयपदम् । नि० चू० द्वि० ९२ अ ।
अववाडणं-अवपाटनम्, विदारणम् । भग० १२० ।
अववाति । ठाणा० ८६ ।
अववाय-अपवाद, परदूषणाभिधानम् । प्रश्न० ११६ ।
अववायसुत्तं-तिण्हमन्नयरागस्स इत्यादि । बृ० प्र० २०१ आ । नि० चू० तृ० ११ अ ।
अववायाववाओ-अववाए पुण अण्णो अववाओ । नि० चू० द्वि० ६५ आ ।
अववायाववातियं । नि० चू० प्र० २२५ आ ।
अवविहे-आजीविकोपासकविशेष । भग० ३६९ ।
अववे-कालविशेष । भग० २१०, २७५, ८८८ । सूर्य० ९१ ।
अवश्रावणम्-आयामम् । ओघ० १३३ ।
अवग्रमम्-उपग्रह । ओघ० १०४ । उत्त० ५५ ।
अवष्टब्धा-आक्रान्ता । आचा० २५८ ।
अवसण्णा-अवसन्ना । आव० ६७० । स्वगूढप्राया । ओघ० ११६ ।
अवसद्दो-अपशब्द । आव० ४०१ ।
अवसरो-अवसर, उपयोगकाल । सूत्र० ११ । विभाग, पर्याय, देश, प्रस्ताव । विशे० ८३७ ।
अवसर्पण । आचा० ३६४ ।
अवसाणं – अवमानम् । आव० ३८४ । अन्त । प्रज्ञा० ३९७ ।
अवसाय -निश्चय । प्रश्न० १०४ ।
अवसावणं-अवश्रावणम्, काञ्जिकम् । बृ० द्वि० १२९ आ ।
अवसिओ-अवसित, जित । विशे० ९९४ ।
अवसिद्धंतो-अपसिद्धान्त । आव० ३२० ।
अवसोहिय – अवशोध्य, अपमार्य, पृथक् कृत्य, परिहृत्य । उत्त० ३४० ।
अवसेसं-अवशेषम्, उद्धरितम् । उत्त० ५९६ । भिक्षाप्रक्रमात्पात्रनियागाद्धरितम्, यद्वाऽपगत शेषमपशेषम् । उत्त० २४४ ।
अवस्कन्द-शिबिर । आचा० १८० ।
अवस्थानम्-सम्पिति । सूर्य० ७ ।
अवस्सं-अवश्यम्, नियोगत । आव० २६५ ।
अवस्सकरणिज्जं – अवश्यकरणीयम्, आवश्यकपर्याये द्वितीयनाम । विशे० ४१५ ।
अवह्-अव्याप्रियमाण । बृ० द्वि० २७ आ ।
अवहट्टण-त्याग । (मर०)
अवहट्टु – अपहृत्य, त्यक्त्वा । भग० १००१ परिहृत्य । औप० २४ । परित्यज्य । ओघ० ११४ । आहृत्य-निष्कृष्य, त्यक्त्वा । आचा० ४०० ।
अवहट्टुअसंजमे-अपहृत्यासयम –अविधिनोच्चारादीनां परिष्ठापनतो य स । सम० ३३ ।
अवहट्टुसंजमो – अपहृत्यसंयम –प्राणिभि संसक्त भक्तपानमथवाऽविशुद्धमुपकरण पात्रादि यद्वाऽतिरिक्त भवेत् तत्परिष्ठापनं विधिना । आव० ६५३ ।
अवहडे-अपहृतम् । भग० २०७ ।
अवहन्न-उदूखलम् । बृ० द्वि० ६० अ ।
अवहारइ-अवधार्यते, प्रथमतया स्थाप्यते । सूर्य० ११३ ।
अवहारव-अवधारणावान् । ठाणा० ४८४ ।
अवहाराइ-अपहृतवन्त –गृहीतवन्त । आचा० ३३७ ।
अवहारो – अपहार, अधर्मद्वारस्य दशम नाम । प्रश्न० ४३ । जलचरविशेष । प्रश्न० ९२ । अवधार्य –ध्रुवराशि । सूर्य० ११३ । ज० प्र० ७०७ ।
अवहितचित्तः-एकाग्रमना । उत्त० ५९९ ।
अवहियं – अपधीकम्, अपमदा-निन्द्या धीर्यस्मिस्तत । अधर्मद्वारस्याष्टाविंशतितम नाम । प्रश्न० २६ ।
अवहीयए-अवधीयते, अवशब्दस्याव्ययत्वेनानेकार्थत्वादधोऽधोविस्तृत धीयते-परिच्छिद्यते रूपिवस्तु तेन ज्ञानेनेत्यवधि, अथवा अव-मर्यादया एतावत्क्षेत्रं पश्यन्, एतावन्ति द्रव्याणि, एतावन्त काल पश्यतीत्यादिपरस्परनियमितक्षेत्रादिलक्षणया धीयते-परिच्छिद्यते । विशे० ७४ ।
अवहेडय-अर्द्धशिरोरोगम् । उत्त० १४३ ।
अवहेडियं-अवहेठितम्, अधोमुखीकृत, हेठित-बाधित अधोनामितमिति । उत्त० ३६७ ।
अवाअ-अपाय, उदाहरणस्य प्रथमो भेद । दश० ३५ ।

अवाईण-अवाचीनम्, अधोमुखम्। औप० ५। अवातीनानि, न वातोपहतानि, न वातेन पातितानि। जं० प्र० २९।

अवाईणपत्ता-अवाचीनपत्रा, अधोमुखपर्णा, अधोमुखपलाशा वा। औप० ७। अवातीनपत्रा -अवातोपहतपर्णा। औप० ९।

अवाउड-अप्रावृतम्, प्रावरणरहितम्। दश० ११६। अप्रावृता। ओघ० १६७। प्रावरणाभाव। भग० १२५।

अवाउडय-अप्रावृतक, प्रावरणवर्जक। औप० ४०। न विद्यते प्रावरणकम्। ठाणा० २९९।

अवाउडिय-अप्रावृतिक, सकलां रात्रिं यावद् अप्रावरणाभिग्रहवान्। बृ० द्वि० २१२ अ।

अवाए-अवाय, अवधारणात्मको निर्णय। प्रज्ञा० ३१०। अपाय -अवग्रहज्ञानेन ईहितस्यार्थस्य निर्णयरूपो योऽध्यवसाय। प्रज्ञा० ३१०।

अवाओ-अवाय -प्रक्रान्तार्थविनिश्चय। भग० ३४४। ईहार्थविशेषनिश्चय। आव० ९।

अवाधाय-अव्याघात, प्रव्रज्यासूत्रार्थग्रहणादिक्रियाऽऽनुपूर्व्या विपक्त्रिममायुष्कक्षयमनुभवतो यो भवति सोऽव्याघात। आचा० २६२।

अवाच्यप्रदेश-गुह्यम्। प्रज्ञा० ४१०।

अवातदंसी-अपायदर्शी। ठाणा० ४८४।

अवातीणपत्तो-अवातीनपत्र, न वातोपहतं पत्र, वातेनापातितं पत्रम्। जीवा० १८७।

अवाते-अपाय -अनर्थ। ठाणा० २५१।

अवादाणे-अपादान -विश्लेषतो मर्यादया दीयते, खण्ड्यते, गृह्यते, अवधिमात्रम्। ठाणा० ४२८।

अवाय-अपाय, विवक्र। विशे० ८७३।

अवायदंसी-आणालोयगस्स पलिउंचेमाणस्स परिहरि अब्भे तस्स समारं जम्मणमरणादीदुग्गयाणीयस्स च पाणेगा वाए दरिसेति इहलोगे च ओमासिवादी सो अवायदंसी। नि० चू० तृ० १२८ आ। मातिचारस्य पारलौकिकापायदर्शीति। ठाणा० ४८६। अपायान्-अनर्थान् शिष्यादिभ्यस्त्रानिर्वाहादीन् दुर्भिक्षदौर्बल्यादिकृतान् परत्रापि दीर्घसम्यगनालोचनायां च दुर्लभबोधिकत्वादीन् अपायान् शिष्यस्य दर्शयति। ठाणा० ४२४।

अवायाणुप्पेहा-अपायानुप्रेक्षा, आश्रवाणामपायानामनुप्रेक्षा। ठाणा० १८८।

अवालुयाखिल्ल-अवारितश्लेष्म। (त०)

अवावारे-अव्यापार, इन्द्रियाव्यापार। आव० ६१२।

अवाहाणं-देशविशेष। भग० ६८०।

अविंदतो-अलभमान। आव० ५३५।

अविंधणं-आव्यधनम्, सन्नावेशनम्। प्रश्न० ३८।

अवि-अपि, अपिशब्द पद्यबन्धत्वेन पादपूरणार्थ एवाकारार्थो वा। जं० प्र० २४५। प्रकारवाची। नि० चू० प्र० १६८ आ।

अविअ-अपिच, अभ्युच्चये। ओघ० ३६।

अविभत्तो-अव्यक्त, मुग्ध -सहजसद्विवेकविकल। सूत्र० ३४।

अविइ-समन्ताद् वीचय इव वीचय। उत्त० २३१।

अविउट्टमाणो-पीड्यमान। सूत्र० ५१४।

अविउप्पकड-अविद्वत्प्रकृता, अव्युत्प्रकृता वा न विशेषत उत्-प्राबल्यतश्च प्रकृता। भग० ३२१। अपिशब्द सम्भावनार्थे उत्-प्राबल्येन च प्रकृता-प्रस्तुता प्रकृता वा वेत्प्रकृत प्रकृत वा। भग० ७०३।

अविउस्सिया-अव्युत्सृज्य, अपरित्यज्य। सूत्र० ३१४।

अविओगिओ-अवियोगिक, वियोगासहिष्णु। आव० ४२६।

अविओगो-अवियोग, धनादेरव्ययनम्। परिग्रहस्य पञ्चविंशतितम नाम। प्रश्न० ९२।

अविओसित-अव्यवशमितम्, अनुपशान्तम्। ठाणा० १६६।

अविकत्थण-अविकत्थन -न बहुभाषी। उत्त० १। अविकत्थनम्-परिमितभाषणम्। आचा० २।

अविकप्प-अविकल्प, निश्चय। आव० ८६४।

अविकलकुल-अविकलकुल, अच्छिद्रपरिपूर्णकुला। भग० ४६१।

अविकोविओ-जो या अणिओ अजओ या सुत्ते सुत्तत्थ विहिं तो वा छट्टं सुत्त वा णाहासो, एते विकोविदो, एतेण चव विवरीता जो स पडमनाण नजिस्त परिवज्जति से अकोविओ भवति। नि० चू० तृ० १२१ अ।

अविकडिय-अप्रकाश्य भगवत्। बृ० द्वि० २१ आ।

अविक्कयेण-अविक्रयेण-भाटकेन। व्य० प्र० २३८ आ।
अविक्किअ – असस्कृतम्, सुलभमीदृशमन्यत्रापि। दश० २२१।
अविक्कीवो-आमायमाणो। दश० चू० १२३।
अविकूलं-अप्रतिकूल। (मर०)
अविगणिया-अविमता। आव० ६९२।
अविगियवयणो-अविकृतवदन, नात्यन्तनिर्गमितमुख। ओघ० १८२।
अविगीत-अविप्रतिपन्न। व्य० प्र० १९२ अ।
अविग्गुह-अवारित। (मर)
अविग्गहगइसमावन्नग – अविग्रहगतिसमापन्न, ऋजुगतिक, स्थितो वा। भग० ८५। विग्रहगतिनिषेधादृजुगतिक अवस्थितश्च। भग० ८७७।
अविग्गहमणे-अविग्रहमना, अकलहचेता अव्युद्ग्रहमना वा, अविद्यमानासदभिनिवेश। प्रश्न० १११।
अविघाटा-अप्रकट। व्य० द्वि० २०३ अ।
अविघुट्ट-विक्रोशनमिव यत्न विस्वरम्। ठाणा० ३९६। विक्रोशनमिव यद्विस्वरं न भवति तत्। ज० प्र० ४०।
अविचिंतिय-अविचिन्तितम्, अविवक्षितम्। विशे० ७३।
अविच्चुति-धारणाभेद। दश० १२५।
अविज्जा-अविद्या, न विद्या-मिथ्यात्वोपहतकुत्सितज्ञानात्मिका। उत्त० २६२।
अविज्जापुरिसा – अविद्यापुरुषा, अविद्या-मिथ्यात्वोपहतकुत्सितज्ञानात्मिका तत्प्रधाना पुरुषा अविद्यमाना वा विद्या-प्रभूतश्रुत येषां ते। उत्त० २६२।
अविण्णोपचितम्-अविज्ञानमविज्ञा तयोपचित, अनाभोगकृतमिति। सूत्र० ११।
अविणए-अविनय। आव० ७९३।
अविणासी – अविनाशी, क्षणपेक्षयाऽपि न निरन्वयनाशधर्मा। दश० १२९।
अविणीअप्पा-अविनीतात्मा, भवान्तरेऽकृतविनय। दश० २४९। विनयरहिता अनात्मज्ञा। दश० २४८।
अविणीओ – अविनीत, सूत्रार्थदातृवन्दनादिविनयरहित। ठाणा० १८५। अविनीता, ये बहुशोऽपि प्रतिनोद्यमाना प्रमाद्यन्ति, ते च छन्देऽवर्तमाना भण्यन्ते। बृ० प्र० २४९ अ।
अविण्णाय-अविज्ञातम्, अवध्यपेक्षया अज्ञातम्। भग० १९७, २००।
अवितथभाव-अर्थविनिश्चय। दश० २३५।
अवितहं – अवितथम्, सत्यम्। आव० ७६१। भग० १२१।
अवितहमेयं-अवितथमेतत्-न कालान्तरेऽपि विगताभिमतप्रकारम्। भग० ४६७।
अविदलकडाओ-अद्विदलकृता, न द्विदलकृता अद्विदलकृता, अनूर्ध्वपाटिता। आचा० ३२३।
अविद्धवंतो-अविद्वस्त। उत्त० २७९।
अविद्धकण्णए-अविद्धकर्ण, अव्युत्पन्नम्। भग० ६७७।
अविद्धत्थ-अविध्वस्त, प्ररोहसमर्थ। दश० १४०।
अविद्यमानम्-मामलनयाऽनुपलभ्यमाणम्। जीवा० २७१।
अविधिभिन्ने – उर्ध्वफालिकया पेश्य कृत तदनुकभिन्नं, यत्पुनस्तिर्यक्खण्डकतालिकाकृत तच्च कल्किाभिन्नमेते द्वे। बृ० प्र० १७५ अ।
अविधो-वृच्छितो। नि० चू० प्र० २७७ अ।
अविनेया – ग्रहणधारणविज्ञानेहापोहवियुक्ता महामोहाभिभूता दुष्टावग्राहिताश्च। तत्त्वा० ७-६।
अविपक्कदोसा-कषायेन्द्रियनिग्रहेऽसमर्था, अकोविदा वा। बृ० द्वि० १४१ अ।
अविपरीतदर्शन -साम्प्रतक्षी। सूत्र० ३९४।
अविपु(घु)ट्ठ-अविपु(घु)ष्टम्, न विस्वरं कोशतीव। जीवा० १९४।
अविप्पकड – अविप्रकृत, आनुकूल्येन प्रकृता-प्रक्रान्ता, अथवा न विशेषेण प्रकटा अविप्रकटा। भग० ३२५।
अविप्पणासो-अविप्रणाश, शाश्वतं, सिद्धाना नमस्कारार्हत्वे हेतु। आव० ३८३।
अविप्पण्णं। नि० चू० द्वि० ३१ आ।
अविबंधणो – अविबन्धन, अविद्यमानमन्त्रादिनियन्त्रण। उत्त० ४७९।
अविभागा-अविभागा, अनुभागा। ठाणा० १२१।
अविभागपलिच्छेदो – अविभागपरिच्छेद, केवलिप्रज्ञाछेदेनाविभागम्। बृ० तृ० १५ आ।
अविमणे – अविमना, न शून्यचित्त, अदीनस्य द्वितीयं नाम। अन्त० २२।

अविमोत्ति-अविमुक्ती, गृद्धि । नि० चू० प्र० १५५ अ।
अवियं-उच्छिष्टम्। बृ० प्र० २७१ आ।
अवियत्तकुलं-जत्थ बहुणावि कालेण भिक्खा न लब्भइ। दश० चू० ७७।
अवियद्धो-अविदाध, अतृप्त । (महाप्र०)
अवियाइ-इत्येवमादीनुद्दिश्य। आचा० ३५३।
अवियाउरी-अप्रसविनी। आव० २१२।
अवियाणओ-अविजानन्, हिताहितप्राप्तिपरिहारशून्यमना। आचा० ७०।
अवियारं-अपराक्रममप्रभवति काले। (भक्त०)
अवियार-अविचारम्, चेष्टात्मकविचारविरहितमरणानशनतप। उत्त० ६०२। अविकारा-गीतादिविकाररहिता। बृ० प्र० ३१० आ।
अवियोगज्झवसाणं-अवियोगाध्यवसानम्, अविप्रयोगदृढाध्यवसाय। आव० ५८५।
अविरइ-अविरति, इच्छाया अनिवृत्ति। भग० १०१।
अविरइय-अविरतिक। आव० २१८, ६२०, ६४०, ४०४, ५६०। दश० ८९। गृहस्थी। ओघ० १५४।
अविरए-अविरत, प्राणातिपातादिविरतिरहित, विशेषेण या तपसि रतो यो न भवति स। भग० ३६।
अविरओ अविरत, न विरत, सावद्यव्यापारादनिवृत्तमना। प्रज्ञा० २६८।
अविरतओ-अविरत। आव० ३९६।
अविरतकायिकी-कायिकीक्रियाया प्रथमो भेद। मिथ्यादृष्टेरविरतसम्यग्दृष्टेश्च उत्क्षेपणादिलक्षणा क्रिया कर्मबन्धनिबन्धना। आव० ६११।
अविरति-अविरति, अब्रह्म। ठाणा० ३७२। अप्रत्याख्यानमथवा अविरतिरूपो भाव, शस्त्रम्। ठाणा० ४९२। अविरति। आव० ९३।
अविरतिया-अविरतिका, न विद्यते विरतिर्यस्या सा। ठाणा० ३७२। अविरतिका। आव० ३९६।
अविरत्ताए-अविरक्तया विप्रियकरणे। भग० ५७९।
अविरत्तो-अविरक्त। औप० १३।
अविरय-अविरत, अनिवृत्त। प्रश्न० ३०। मिथ्यादृष्टिसम्यग्दृष्टिश्च। आव० ५८८।
अविरयसम्मद्दिट्ठी-अविरतसम्यग्दृष्टि, देशविरतिरहितसम्यग्दृष्टि, भूतग्रामस्य चतुर्थं गुणस्थानम्। आव० ६५०।
अविरलं-परस्परासन्नम्। प्रश्न० ८३।
अविरलपत्तो-अविरलपत्र। जीवा० १८७।
अविरहिए-अविरहितम्-चूकस्खलितन्यायादपि न विरहित, अथवा प्रदीर्घकालोपभोग्याहारस्य सकृद्ग्रहणेऽपि भोगोऽनुसमय स्यादतो ग्रहणस्यापि सातत्यप्रतिपादनार्थम्। भग० २०।
अविरहिय-अविरहित, अविमुक्त। आव० ५३२।
अविरहो-अविरह, सातत्येनावस्थानम्। आचा० ६९।
अविराहणं-अविराधना। भग० ८९८।
अविराहियसंजम-अविराधितसयम, प्रव्रज्याकालादारभ्याभग्नचारित्रपरिणाम, सञ्ज्वलनकषायसामर्थ्यात्प्रमत्तगुणस्थानकसामर्थ्याद्वा स्वल्पमायादिदोषसम्भवेऽप्यनाचरितचरणोपघात। भग० ५०।
अविरिक्का-अविरक्ता, अविभक्तरिक्था। बृ० तृ० २४३ अ।
अविरेक-रोष। व्य० द्वि० १३७ अ।
अविरुद्धो-अविरुद्ध, वैनयिक। औप० ९०।
अविलं-लोमपसिद्धं। दश० चू० ६। गडुलमाकुल वा। सम० ५३।
अविलंबियं-अविलम्बितम्, नातिमन्थरम्। भग० २९४। अमन्थरम्। ओघ० १८७। अनतिमन्दम्। प्रश्न० ११२।
अविवज्जओ-अविपर्यय। विशे० ६४१।
अविशुद्धकोटि। आचा० २७१।
अविवन्न-अविपन्न, अप्राप्तविपन् मन्त्रादिभिरनियन्त्रित। उत्त० ४७९।
अविसेस-अविशेष, विशेषरहित। भग० ९३१। प्रज्ञा० ७४।
अविसंधि-प्रवाहेणाव्यवच्छिन्नम्। भग० ४७१। अव्यवच्छिन्नम्। आव० ७६१।
अविसंवायण-अविसंवादनम्, पराविप्रतारणम्। उत्त० ५९१।
अविसंवायणाजोगे-अविसंवादनायोग। ठाणा० १९६।
अविसादी-अविषादी, चिन्तारहित, अदीनस्य प्रथम नाम। अन्त० २२।
अविसारओ-अविशारद। प्रज्ञा० ६०।

अविसुद्धलेस्से – अविशुद्धलेश्य, कृष्णादिलेश्य । जीवा० १४२ । विभङ्गज्ञान । भग० ३८४ ।

अविसुद्धो – पागत्थादी तेसिं मज्झातो जो आगतो विहारा विसुद्धा तस्स जो पुव्वोवद्दी सो अविसुद्धो । नि० चू० द्वि० ११३ अ ।

अविसेसियं–अविशेषितम्, विशेषरहितम् । ज० प्र० ८८ ।

अविसोहिकोडी–अविशोधिकोटि । दश० १६२ ।

अविहड–बालक (देश्याम्) । बृ० प्र० ।

अविहम्ममाण –त्रिविध परीषहोपसर्गैर्हन्यमानो विहन्यमान, न विहन्यमानोऽविहन्यमान, न निर्विण्ण सन् वैहानस गार्द्धपृष्ठमन्यद्वा बालमरण प्रतिपद्यत इति । आचा० २५९ ।

अविहाड–अप्रगल्भ । व्य० द्वि० ३७९ अ ।

अविहाव–अविभाव्य, अविभावनीयस्वरूप । प्रश्न० १९ ।

अविहि – अविधि । आव० ५२ । अयतना । बृ० द्वि० १५ अ ।

अविहिगहिअ – अविधिग्रहणम् अशुद्धस्य–उद्गमादिदोषादिनस्य यद् ग्रहण, अथवा गुडादेर्द्रव्यस्य मण्डकादिना प्रच्छाद्य यदेकत्र पात्रप्रदेशे स्थापन तत् । आव० १९२ ।

अविहिपरिट्ठावणिया – अविधिपरिष्ठापनिका । आव० ६३८ ।

अविहेडए–अविहेठक न कञ्चिदुचितेऽनादरवान । दश० २६६ ।

अवीइ–अवीचि वीचि –वि च्छेदस्तदभावात् । उत्त० २३१ ।

अवीरिए–अवीर्य उत्थानादिक्रियाविकल । भग० ९५ । मानसशक्तिवर्जित । भग० ३२३ ।

अवीरिय–अवीर्य सिद्ध । भग० ९५ ।

अवीसंभो – अविश्रम्भ अविश्वास, प्राणवधस्य तृतीय पर्याय । प्रश्न० ५ ।

अवीहीपुच्छण–अविधिपृच्छा, वक्ष्यमाणानुपदर्ग विहाराथ मुद्गप्राय पृच्छति । बृ० प्र० २४१ अ ।

अवुण्ण–अपुण्यम् । उत्त० २१० ।

अवुत्तपूर्वम् । आव० २३० ।

अवेइअ अवदित, मनसाऽप्यनालोचित । आव० ४१५ ।

अवोच्छिन्ना–अव्युच्छिन्ना यावदेकोऽपि तिष्ठति तावत् । आव० ७२७ ।

अव्वुच्छेदम्–पाक्षिकादिविशेष, विनिर्माणैर्मार्गो निर्व्याघात सिद्धि यावदनवच्छिन्नपरम्परागम् । सम० ६३ ।

अव्वइओ । दश० चू० २० ।

अव्वए–अव्ययम्, व्ययरहितम् । भग० ११० ।

अव्वओ–अव्यय, अव्ययत्वादव्यय । जीवा० १८३ ।

अव्वये–अव्यय पर्यायाणामनन्तपर्यायतया । भग० ३३३ । अव्ययापेक्षया । ठाणा० ३३३ । व्ययाभाव । भग० ७६० ।

अव्वत्तं–अव्यक्त, अव्यक्तमतं, अस्फुटमतं, संयताद्वर्गो सन्दिग्धबुद्धि । आव० ३११ । अव्यक्तम् । औप० १०६ । शब्दादिगोचररहितं, अनिर्देश्यम् । नि० १०० । अगीतार्थ गुरो सकाशे यदालोचन तत् । ठाणा० ४८४ ।

अव्वत्तगमणिया–अव्यक्तस्य गमनिका, इत्यादिसद्भ्यन्याव्यवहारत शीर्षप्रहृतिक्रियाया परतोऽगम्यत्यागम्यव्यवहारतश्च सद्भ्यान्तरेणासद्भ्यान्तरेण च वक्तु न शक्यतेऽन्यत्र वक्तव्य स चैकस्मिन्नात्मन्यन्येन–एकेन एकाकी प्रदेश गमिता । भग० ७९६ ।

अव्वत्तलिंगो – अव्यक्तलिङ्ग । आव० ३०२ । अप्रकटलिङ्ग । आव० ५६० ।

अव्वत्तस्स अव्यक्तस्य–अगीतार्थस्य सूत्रार्थापरिनिष्ठितस्य । आचा० १९६ ।

अव्वत्तो – जाव कक्खादिसु रोमसभवो ण भवति, ताव अहवा जाव सोलसवरिसा ताव अव्वत्तो । नि० चू० तृ० ८२ अ । श्रतऽगीतार्थ वयसि अप्राक् षोडशाब्द । चू० तृ० १३० अ । अगीयट्ठो । नि० चू० प्र० १७३ आ ।

अव्वया – अव्यया । जीवा० ९९ । अव्ययत्वादसात्या, मनागपि स्वरूपात्तत्त्वस्य नानुचिन्त्यसम्भवात् । ज० प्र० २७ । तत्सारम्भप्रदेशापरिहाण । ज० प्र० ००७ ।

अव्वयमितस्स अव्यवसितस्य–अनिश्चयवतोऽपराक्रमवतो वा । ठाणा० १७६ ।

अव्वहिओ–अव्यथित, परीषहादिना न । ज० प्र० १६ । जीवा० ९९ । आचा० ४०४ । अदीनमना । दश० ०३० । अभागी । दश० चू० १२३ ।

अव्वहे–अव्यथम्, देवादिकृतोपसर्गाज्जनित भय चलनं वा व्यथा तस्या अभावो अव्यथम् । ठाणा० १९२ ।

अव्वाण आस्यान, म्लान, म्लानम् । औप० १७१ ।

अव्वाबाधं,०हं-अव्याबाधम्, केनापि विबाधयितुमशक्यत्वात्। जीवा० २५६। वन्दनके तृतीयं स्थानम्। आव० ५४८। अव्याबाधः, परेषां पीडाकारित्वाभावाद्विनष्टबाधः। भग० ७। अव्याबाधम्-उपरतसकलपीडं मोक्षम्। उत्त० ५७८।

अव्वाबाह-शुक्राभविमानवासी सप्तमो लोकान्तिकदेवः। भग० २७१। ठाणा० ४३२। अव्याबाधः सप्तमलोकान्तिकदेवः। आव० १३५। अपीडाकारित्वम्। सम० ५।

अव्वायडा-अव्याकृता, अस्पष्टा अप्रकटार्था, असत्यामृषाभाषाभेदः। दश० २१०।

अव्वावारपोसहे-*अव्यापारपौषधः*। आव० ८३५।

अव्वाहयं – अव्याहतम्, एकान्तिकमिहपरलोकाविरुद्धं फलान्तराबाधितं वा। आव० ४१५।

अव्वाहितो-अव्याहितः, अनाहूत। जीवा० १६६।

अव्वितिगिट्ठ – अव्यतिकृष्टे, उद्घाटाया पौरुष्यामित्यर्थः। व्य० द्वि० २२७ आ।

अव्वुक्कंताइं – अव्युत्क्रान्ताः, अविध्वस्तपर्यायाः। आचा० ३४८।

अव्वुच्छित्तिनयट्ठया–अव्युच्छित्तिनयार्थता, द्रव्यास्तिकनयमतम्। सूर्य० २८६।

अव्वुच्छिन्ननयट्ठता-अव्यवच्छिन्ननयार्थता, द्रव्यास्तिकनयमतम्। सूर्य० २५८।

अव्वो-सबोधने, अहम्। व्य० द्वि० २०३ आ।

अव्वोगडं-अव्याकृतम्, गुरुभिर्विशेषतोऽनाख्यातम्। भग० १००। दायादादिभिरविभक्तं अननुज्ञातं वा। बृ० तृ० ५० अ। अव्याकृतं नामदायिना मामान्यं न पुनर्नैर्विभक्तं, यदिविवृतं न केनापि विसारमापादितं, यद् भवेत् पूर्वराजेन संदिष्टं, वंशस्य परम्परया समागतम्। व्य० द्वि० २७९ आ। अविभक्तम्। व्य० द्वि० २७९ अ। अव्यक्तोऽपरिस्फुटः। आचा० ३२०।

अव्वोगडा-अव्याकृता, अविसम्बृता। आव० ७२७। कृतेऽपि भागे निर्देशहीना अविकृता। बृ० द्वि० ११९ आ। अव्याकृता गम्भीरशब्दार्था, अव्यक्ताक्षरप्रयुक्ता वा अनाभोगप्रभवाद् भाषाभेदः। प्रज्ञा० २५६।

अव्वोच्छित्तिणय – अव्यवच्छित्तिनय, द्रव्यास्तिकनय। उत्त० १५।

अव्वोच्छित्तिणयट्ठया-अव्यवच्छित्तिनयार्थता, अव्यवच्छित्तिप्रधानो नयोऽव्यवच्छित्तिनयस्तस्यार्थो-द्रव्यमव्यवच्छित्तिनयार्थस्तद्भावस्तत्ता। भग० ३०२।

अव्वोच्छिन्न-अव्यवच्छिन्नम्, अखण्डितम्। आचा० ४०५। अव्यवच्छिन्नाः, अनवरतम्। ओघ० १२६।

अव्वोच्छिन्ना-कृतेऽपि भागे मूलराशेरव्यवच्छेदो यावत्। बृ० द्वि० ११९ आ।

अव्वोच्छिन्नाओ-अव्यवच्छिन्नाः, व्यवच्छिन्ना-जीवरहिता न व्यवच्छिन्ना अव्यवच्छिन्नाः। आचा० ३३३।

अव्वोयडा-अव्याकृताः, गम्भीरशब्दार्था मन्मनाक्षरप्रयुक्ता वाऽनाविर्भावितार्थाः। भग० ५००।

असरणानुप्रेक्षा – अशरणस्य-अत्राणस्यात्मनोऽनुपेक्षा। ठाणा० १९०।

असुसिरे-*अशुषिरे, तृणपर्णाद्यनाकीर्णे*। उत्त० ५१८।

असून्यान्तरा-न शून्यानि अन्तराणि यासां ता। आव० ३५।

असोकपल्लवप्रविभक्तिः – विंशतितमो नाट्यविधि। जीवा० २४७।

असोकलता-लताविशेषः। आचा० ३०।

अश्रयः-(अस्र), कोणा, कोऽय। ठाणा० ४३५। चतुर्दिग्विभागोपलक्षिता शरीरावयवा पर्यङ्कासनोपविष्टस्य जानुनोरन्तरं, आसनस्य ललाटोपरिभागस्य चान्तरम्, दक्षिणस्कन्धस्य जानुनश्चान्तरम्, वामस्कन्धस्य दक्षिणजानुनश्चान्तरमिति। ज० प्र० ११। चतुर्दिग्विभागोपलक्षिताः शरीरावयवाः। ठाणा० ३५७।

अश्रुतनिश्रितम्-यत्पुनः पूर्वं तदपरिकर्मितमते क्षयोपशमपटीयस्त्वादौत्पत्तिक्यादिलक्षणमुपजायते तत्। आव० ९।

अष्टवंदसः-बादर। उत्त० ६२।

अष्टिवती-प्रथमं नक्षत्रम्। दश० २३६।

अष्टभाग-अट्ठभागो-अष्टमो भाग। भग० ८३२।

अष्टमीपौषध – अट्ठमीपोसहो – अष्टम्यां पौषधः-उपवासादिरूपोऽष्टमीपौषधः। आचा० ३२७।

अष्टमीपौषधिका – अट्ठमीपोसहिया-उत्सवा। आचा० ३२७।

अष्टापदम्-अष्टापद, मार्गविशेष। आचा० ४१८। आव० २८७। सू० सू० ५२ अ।

अघ्राष्टकिका–चतु पष्टि । व्य० द्वि० ३४७ आ ।

अष्ठीवती–जानुनी । प्रश्न० ८० ।

अष्ठीवान्–जानु । जीवा० २७० ।

असंकप्पिय–असंकल्पित, असङ्कल्पितानि च तानि शब्दादि-विषयभावेन परिणतद्रव्यरूपाणि । विशे० १४५ ।

असंकमणो–अशङ्कमना, न विद्यते शङ्का यस्य मनस स्तदशङ्कम्, अशङ्क मनो यस्य स । आचा० १२२ ।

असंकिया–अशङ्किता । आव० ५६१ ।

असंकिलिट्ठ–असङ्क्लिष्टम्, निर्दूषणम् । औप० ४९ । विशुद्ध्यमानपरिणामवान् । प्रश्न० ११० ।

असंक्षेपकालः । ठाणा० ३७८ ।

असंखड–कलह, वैरं वा । वृ० तृ० ४८ अ । वृ० प्र० ८६ अ । नि० चू० प्र० ३१ अ । कलह । (गणि०) । ओघ ८० ।

असंखडबोलो–कलहबोल । आव० ६५४ ।

असंखडि । आव० ६३० ।

असंखडिओ–असङ्खडिक, कलहकारक । ओघ० १५१ ।

असंखय–असंस्कृतम् । दश० १०५ । उत्तराध्ययनेषु चतुर्थमध्ययनम् । उत्त० ९ । सम० ६४ ।

असंखया–असङ्ख्यका, सङ्ख्याविरहिता । उत्त० ३१६ ।

असंखेज्जजीविया – असङ्ख्यातजीविका वृक्षविशेषा । भग० ३६४ । यथा निम्बाम्रादीना मूलकन्दस्कन्धत्वक्छाखाप्रवाला । ठाणा० १२२ ।

असंखेज्जवित्थडे–असङ्ख्येयविस्तृत, असङ्ख्येय विस्तृत यस्य स । जीवा० १०६ ।

असंखेप्पद्धा – असङ्क्षेप्याद्धा, विभागादिना प्रकारेण या सङ्क्षेप्तु न शक्यते सा चासौ अद्धा च । प्रज्ञा० ४८९ ।

असङ्ख्येयकः । अनु० २४० ।

असंगहरुई–असङ्ग्रहरुचि, गच्छोपग्रहकरस्य-पीठादिकस्योपकरणस्यैषणा दोषविमुक्तस्य लभ्यमानस्यात्मभरित्वेन न विद्यते सङ्ग्रह रुचिर्यस्यासौ । प्रश्न० १२५ ।

असंगे – असङ्ग, वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देव । भग० २०० ।

असंघयणो – आदिल्लेहिं तिहिं संघयणेहिं वज्जितो । नि० चू० तृ० १३२ अ ।

असंघातिमो–एगगिओ । नि० चू० द्वि० ७९ अ ।

असंचइआ–असञ्चयिता –ये मासिके द्वैमासिके त्रैमासिके चतुर्मासिके पञ्चमासिके षण्मासिके वा प्रायश्चित्ते वर्तन्ते ते । व्य० प्र० ९७ आ ।

असचेअयओ–असचेतयत, अजानानस्य । ओघ० २२० ।

असंजअ–असयत, गृहस्थ । आचा० ३४२ । अप्रशस्ताध्यवसायवान् । विशे० १०२७ ।

असंजगविसओ – भगवया पडिसिद्धो । नि० चू० द्वि० १८ अ ।

असजण–असगो, अगेही । नि० चू० प्र० ८१ अ ।

असजमो–असयम, प्राणवधस्य चतुर्दशपर्याय । प्रश्न० ५ । अधर्मद्वारस्य षष्ठ नाम । प्रश्न० ४३ ।

असंजय – असयत चरणपरिणामशून्य । भग० ४९ । गृहस्थ । दश० २२२ । असयमवान् । प्रश्न० ३० ।

असंजलं – जम्बूद्वीपैरवते पञ्चदशतीर्थकरनाम । सम० १५३ ।

असंजातकिणस्कन्धः । आचा० ८७ ।

असंजोगरया–असयोगरता –सयोग –सम्बन्ध पुत्रकलत्रमित्रादिभिस्तत्र रता सयोगरतास्तद्विपर्ययेणैकत्वभावनाभाविता असयोगरता । आचा० १८० ।

असंजोगिमे – असयोगिम, सयोगिमाद्विपरीत आदित्यविम्बादि । उत्त० २१२ ।

असज्झा–असन्ध्या, विगतसन्ध्या । ओघ० २०२ ।

असण्णी–असज्ञी–अविदितपूर्वमुदात्तम् । व्य० द्वि०३७७ आ ।

असतई–असन्तान, असत्ता वा । वृ० प्र० । असन्तति (त्ता) परिणामविशेष । आव० ८४८ ।

असतक–असत्कम्, असदर्थाभिधानरूपत्वात्, द्वितीयाधर्मद्वारस्य पञ्चम नाम । प्रश्न० २६ ।

असंतगं–असत, असद्भूतार्थम् । अशान्त–अनुपशमप्रधानम्, अशोभन वा । प्रश्न० १२१ । असत्क–अविद्यमानार्थम्, असत्यमिति । प्रश्न० ३६ ।

असंतती–भायणवोच्छेदो अभाव इत्यर्थ । नि० चू० द्वि० ११६ आ ।

असंतय – अशान्तक, अनुपशान्त, असन्–अशोभनम् । प्रश्न० ४१ ।

असंतरणए–असंतरणे । ओघ० १४३ ।

असंतासंते–मार्गितस्याप्यलाभ । वृ० द्वि० २७२ आ ।

असंते-असत्, नाभाववचन शब्दोऽयम्। आचा० ७४। अविद्यमान। उत्त० ६१७।

असंतोसो-असन्तोष, परिग्रहस्य निंगतम नाम। प्रश्न० ९३।

असंथडाइं – असंस्तृतानि, बीजादिभिरव्याप्तानि। उत्त० ४८७।

असंथडो-छट्ठऽट्ठमादिणा तवेण किलंतो असथडो, गेलण्णेण वा दुब्बलशरीरो, दीहठाणेण वा पज्जत अलभंतो। नि० चू० प्र० ३१३ अ।

असंथरताणं-असंस्तरताम्। ओघ० ७८।

असंथरमाणा-असंस्तरमाणा, अतृप्ता। ओघ० ७८।

असंथरे-असंस्तरताम्। ओघ० १५४।

असंथुओ-इय वइरित्तो सणायगो अनायगो वा। नि० चू० द्वि० १२१ आ।

असंदिग्धम् – वाण्यतिशयविशेष, असंशयकारिता। सम० ६३।

असंदिग्धवचनता-परिस्फुटवचनता। उत्त० ३९।

असंदिद्ध – असन्दिग्धा, स्पष्टम्। दश० २१३। असन्दिग्धम्-सूत्रस्य द्वितीयगुण, सैन्धवशब्दवल्लवणघोटकवनेवत्संशयकारि न भवति। आव० ३७६। सन्देहवर्जितम्। भग० १२१।

असंदीणो – असन्दीन, सन्दीनादितर जलप्लावनात् न क्षयमाप्नोति। उत्त० २१२। आदित्यचन्द्रमण्यादि। आचा० २४७। प्रचुरेन्धनतया विवक्षितकालावस्थायि। आचा० २४७। कषतापच्छेदैर्निर्घर्षितोऽसन्दीन। आचा० २४८। पुनर्कोप्रभृत्यतयाऽसन्दीन अक्षोभ्य, प्राणिनां त्राणाया ऽऽश्वासभूमि। आचा० २४८।

असंधिए-असन्धित, असंयोजित। उत्त० २१२।

असंधिया-पोरजिणा। नि० चू० प्र० १६१ अ।

असंनिहिसंचय-असन्निधिसंचय, न विद्यते सन्निधिरूप संचयो यस्य स। जीवा० २७८।

असंपओगचिंता – कथमिदंभाव मासम्प्रयोगचिन्ता। आव० ५८९।

असंपओगाणुसरणं – मनि प्रयोग सम्प्रयोगानुस्मरणम्-चिन्तनम्। आव० ५८९।

असंपग्गहिया-असंप्रगृहिता-संप्रग्रहरहितता। व्य० द्वि० ३९१ अ।

असंपत्त-असम्प्राप्त। दश० १९४। असम्प्राप्तम्। जीवा० १८१। विशिष्टान् वर्णादीनप्राप्त। जीवा० २३।

असंप्रग्रह –आत्मनो जात्याद्युत्सेकरूपग्रहवर्जनमिति भाव। ठाणा० ४२३।

असंप्रग्रहता-असम्प्रग्रह, समन्तात्प्रकर्षेण जात्यादिप्रकृतात्प्रकर्षेण ग्रहणम्-आत्मनोऽवधारण सम्प्रग्रहस्तदभाव। जात्याद्यनुत्सिक्तत्वेति। उत्त० ३९।

असफुरो-अस्फुट। बृ० तृ० ३ आ, बृ० द्वि० २२४ आ। सङ्कुचितपादो, म्लान। बृ० द्वि० २२९ अ।

असबद्ध-असम्बद्धम्, स्वशरीरात्पृथग्भूतम्। जीवा० १२०।

असंभंते-असम्भ्रान्तम्, असम्भ्रान्तज्ञान। भग० १४०।

असंभवंता-असं भवन्त, ते गौरवत्रिकान्यतरदोषाज्ज्ञानादिके मोक्षमार्गे न सम्यग्भवन्त –नोपदेशे वर्तमाना। आचा० २५०।

असंभासो-असम्भाष्य। आव० २२१।

असंभम-असम्भ्रम, न भय कर्त्तव्यम्। ओघ० ५२।

असमत्तं-असम्यक्त्वम्, द्वाविंशतितम परीषह। आव० ६५७।

असंलोए – असंलोके, न विद्यते संलोको-दूरस्थितस्यापि स्वपक्षादेरालोको यस्मिंस्तत्। उत्त० ५१८। आचा० ३२५।

असंववहारिए – असांव्यवहारिक, अनादिकालादारभ्य निगोदावस्थामुपगता एवावतिष्ठन्ते ते व्यवहारपथातीतत्वात्। प्रज्ञा० ३८०।

असंविग्गा पासत्थोसण्णो कुसीलो संसत्तो अहछंदो। नि० चू० तृ० ३३ अ।

असंविभागी-संविभजति-गुरुग्लानबालादिभ्य उचितमशनादि यच्छतीत्येवशील संविभागी, न तथा य असंविभागी त्वेवंविध स। उत्त० ४३४। आचार्यग्लानादीनामेषणागुणविशुद्धिलब्ध मन्न विभजतेऽसौ। प्रश्न० १२९।

असंवुडण। नि० चू० प्र० २१६ आ।

असंवुडबउसो – असंवृतबकुश, यो मूलगुणादिष्वसंवृत सन् करोति, बकुशस्य चतुर्थ भेद। उत्त० २५६। भग० ८९०। प्रवचनसारो। ठाणा० ३३७।

असंवुडे–असंवृत, प्रमत्त । भग० ३१५ ।
असंशुद्धम्–सङ्कीर्णम् । आव० ७६० ।
असंसट्ठा–दायगो असंसट्ठेहिं हत्थमत्तेहिं देतित्ति । नि० चू० तृ० १२ अ । असंसृष्टा–अक्खरडिय । ठाणा० ३८६ ।
असंसारसमावण्णा–असंसारसमापन्ना, मुक्ता । प्रज्ञा० १८ ।
असंसारो–असंसार, संसारप्रतिपक्षभूतो मोक्ष । जीवा० ८ । न संसारोऽसंसार, मोक्ष । प्रज्ञा० १८ ।
असंहनन–असंघयण, आदिमाना त्रयाणां संहननानामन्य तमेनापि संहननेन विकल । व्य० प्र० ११४ अ ।
अस–अशनरूपाणि । व्य० द्वि० १२९ आ ।
असइ–असकृद्, अनेकधा । उत्त० ३१३ ।
असइ–असति, अवाङ्मुखहस्ततलरूपा मुष्टि । जं० प्र० २४४ ।
असई–असती । ओघ० १४६ । संस्तरणाभावे । बृ० द्वि० १६३ आ ।
असईपोसणया–असतीपोषणता, असती पोषयति । आव० ८२९ ।
असक्कओ–असत्कृत, स्वभावसम्पन्न । आव० ११४ ।
असक्कय–असत्कृत, न विद्यते सत्कृत–सत्कारो यस्य स । असत्कृत –अविद्यमानसत्कार । प्रश्न० ४१ ।
असक्कयमसक्कय–असत्कृतमसत्कृत, अविद्यमानसत्कारस त्कार । न विद्यते सत्कृत–सत्कारो यस्य सोऽसत्कृत, असत्कृत –अविद्यमानसत्कार । प्रश्न० ४१ ।
असगडतातो–शानातहन । (मर०)
असगडपिया–अशकटपिता, अशकटाया पिता । उत्त० १३० । नामविशेष । व्य० प्र० १८ अ । नि० चू० प्र० १५ अ ।
असगडा–अशकटा । उत्त० १२९, १३० । एतन्नाम्नी आभीरपुत्री । दश० १०९ ।
असगडाताए–अशकटापिता । व्य० प्र० १८ अ ।
असच्चसघत्तणं – असत्यसन्धत्वम्, असत्य–अलीक सन्द धाति अभिप्रेते करोतीति, तद्भाव । द्वितीयाधर्मद्वारस्य षड्विंशतितम नाम । प्रश्न० २६ ।
असच्चो–असत्य, सन्त्योऽहित । प्रश्न० ३० ।
असज्झं(ब्भं)–ग्राम्यवचनं, कर्कशं, कटुकं, निष्ठुरं, जकारा दिक वा । नि० चू० तृ० ८० आ ।
असज्झाइयं – अस्वाध्यायिकम्, अशोभन आध्याय एव, रुधिरादि कारणे कार्योपचारात् । आव० ७३१ ।
असढ–शठभावरहित । ओघ० २२० ।
असढकारणो–'सढ' च्छादने, जो अप्पाणं मायाए ठाति–असढो होऊणं करण करेति । नि० चू० तृ० १४१ अ ।
असढत्तणं–अशठत्वम् । आव० ५२ ।
असण–अशनम्, घृतपूर्णादि । आव० ८११ । मण्डको दनादि, आशु–शीघ्र क्षुधा–बुभुक्षा शमयतीति । आव० ८५० । बीजक । आव० १८६ । अश्यत इत्यशनम्, ओदनादि । दश० १४१ । अश्यते–भुज्यत इति अशेषा हाराभिधानम् । उत्त० ६०० ।
असणवण–अशनवनम्, बीजवनम् । आव० १८६ । वनविशेष । भग० ३६ ।
असणि–अशनि, वज्रम् । दश० १६४ । आकाशे पतत्स ग्निमय कण । जीवा० २९ । प्रज्ञा० २९ । वइरोयणिंदस्स अग्गमहिसी । भग० ५०४ । ठाणा० २०४ ।
असणिमेहा–अशनिमेघा, करकादिनिपातवन्त, पर्वता दिदारणसमर्थजलत्वेन वज्रमेघा । जं० प्र० १६८ । कर कादिनिपातवन्त पर्वतादिदारणसमर्थजलत्वेन वा वज्रमेघा । भग० ३०६ ।
असणे–अशन, वृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३१ । बीयक । उत्त० ६५३ ।
असण्णातय–असज्ञातीय । आव० ८४६ ।
असतिं–असकृत्, अनेकवारम् । जीवा० १२८ ।
असतिणिवेसणे । नि० चू० प्र० १६२ अ ।
असतिघाडगा । नि० चू० प्र० १६२ अ ।
असतिसाहीओ । नि० चू० प्र० १६२ अ ।
असत्थ–अशस्त्रम्, सप्तदशभेद संयम । आचा० ५३ ।
असत्थस्स–अशस्त्रस्य, निरवद्यानुष्ठानरूपस्य संयमस्य । आचा० १५६ ।
असदध्यारोपणम्–आव० ८२१ ।
असद्–अविद्यमानम् । उत्त० २४७ ।

असद्दहंतो-अश्रद्दधान, अश्रद्दधान । आव० १८१ ।
असद्दहण-अश्रद्धानम् । आव० ५७३ ।
असद्भुते.-साधो कर्मयुक्ते । आचा० २४२ ।
असनिरूवेण-ईतिरूपो हि पतङ्गादेरापात इति दश० १६४ ।
असनो-अशन, बीयक । आचा० ४११ ।
असन्निआउए-असंज्ञ्यायु, असंज्ञी सन् परभवयोग्य बद्धमायु । भग० ५१ ।
असन्निभूए-असज्ञिभूत, असञ्ज्ञिभ्य उत्पन्न । प्रज्ञा० ५५८ ।
असन्निभूय-असञ्ज्ञीभूता, असञ्ज्ञिनो या जायते सा । प्रज्ञा० ३३१ ।
असन्नी-असञ्ज्ञी, मिथ्यादृष्टिरमनस्को वा । प्रज्ञा० ३३१ । यथोक्तमनोविज्ञानविकल । प्रज्ञा० ५१३, ४०७ ।
असबलायारे-अशबलो यस्य सितासितवर्णोपेतबलीवर्द इव कर्बुर आचारो-विनयशिक्षाभाषागोचरादिक । व्य० प्र० २३५ अ ।
असबलो-अशबल, एकान्तशुद्ध । उत्त० २५७ ।
असब्भं - असभ्यम्, अनुचित जकारमकारादि । आव० ५८८ ।
असब्भावं-असद्भावम्, अविद्यमाना सन्त -परमार्थसन्तो भावा-जीवादयोऽभिधेयभूता यस्मिन् तत् । उत्त० ५५१ ।
असब्भावनिहतर-रहस्य पार्श्वत पुरोहडेऽङ्गणे मध्ये वा । बृ० तृ० २३ आ ।
असब्भावठवणा - एक एवाक्ष पिण्डकल्पनया बुद्धया कल्प्यते तत् । ओघ० १२९ । असद्भावस्थापना, असद्भावकल्पना । जीवा० १२२ ।
असब्भावपट्ठवणा-असद्भावप्रस्थापना । आव० १५१ ।
असब्भावभावणा-असद्भावभावना । उत्त० १६५, २२३ ।
असब्भावुब्भावणा - असद्भावोद्भावना । उत्त० १५७ । आव० ३१४ ।
असब्भावो असद्भाव । आव० ३२० ।
असब्भूए - असद्भूतम् अभूताद्भावनरूपमशोभनरूपं वा । भग० २३० ।
असब्भूय-असद्भूतम्, अनृतम् । आव ५८८ ।
असभ्यम असभ्यम् । आव० ८३८ । खरपरुषादि । उत्त० ३४७ ।
असमंजसं-अननुकूलम् । उत्त० २२६ ।
असमओ - असमय, असम्यगाचार, द्वितीयाधर्मद्वारस्य पञ्चविंशतितम नाम । प्रश्न० २६ ।
असमणपाउग्गो-अश्रमणप्रायोग्य । आव० ७७८ ।
असमणुन्न - असमनुज्ञ, आचाराङ्गेऽष्टमाध्ययनस्य प्रथमोद्देशक । आचा० २६० । असमनोज्ञा, असाम्भोगिका । ओघ० ५४ ।
असमर्था-अतिभारेण न शक्नुवन्ति फलानि धारयितुम् । आचा० ३९१ ।
असमाणो-असमान, न विद्यते समानोऽस्य गृहिष्वाश्रयामूर्च्छितत्वेनान्यतीर्थिकेषु वाऽनियतविहारादिनेति, असदृशसमानो वा साहङ्कारो न तथेति । उत्त० १०७ ।
असमारभमाणस्स - असमारभमाणस्य, सङ्घट्टादीनामपर्यायुर्वत । ठाणा० ३२४ ।
असमासदोसो-असमासदोष, समासव्यत्यय सूत्रदोषविशेष । आव० ३७४ ।
असमाहडा-असमाहृता, अनङ्गीकृता । सूत्र० ३१४ ।
असमाहडाए-असुद्धया लेश्यया-उद्गमादिदोषदुष्टमिदमित्येव चित्तविप्लुत्या । आचा० ३३८ ।
असमाहि असमाधि, अस्वास्थ्यनिबन्धना कायादिचेष्टा । आव० ४९९ । समाधि -समाधानं-ज्ञानादिषु चित्तैकाग्र्य न समाधि । उत्त० ६१४ । चित्तोद्वेगरूपम् । उत्त० ७०१ ।
असमाहिकरो असमाधिकर, अस्वास्थ्यनिबन्धनकर । आव० ४९९ ।
असमाहिठाणा - असमाधिस्थानानि, न चित्तस्वास्थ्यस्याश्रया । प्रश्न० १४४ । सम० ३७ ।
असमिक्खियप्पलावी - बुद्धीए अणूहिय पुव्वावरं इह परलोयगुणदोस वा ना सहसा भणइ । नि० चू० तृ० ८० आ । असमीक्षितप्रलापी अपर्यालोचितार्थवादी । प्रश्न० ३० ।
असमित्त-अश्रामत्र । विशे० ९३८ ।
असमीक्ष्य अनालोच्य । उत्त० ३४७ ।
असमोहएण-अनुपयुक्तेनात्मना । भग० ९८९ ।
असमोहयाधि-दण्डाद्युपरता असमुद्धाता वा । भग० ७६४ ।
असम्मोहे - असम्मोह [illegible] देवादिकृतमायाजनितस्य सूक्ष्म

पदार्थविषयस्य च सम्मोहस्य मूढताया निषेधात्। ठाणा० १९२।

असरण-अशरणः, शरणरहितः, अर्थापकाभावात्। प्रश्न० ११। अर्थकारकविरहितः। प्रश्न० १९। गृहं नास्ति शरणं मस्यीत्यशरणः संयमः। आचा० ३०३। शरणमनालम्बमानोऽदीनमनस्कः। आचा० ३०६।

असहीण-अगत। बृ० द्वि० १८७ अ। अस्वाधीनः, परायत्त। आचा० १५२।

असहु-सुकुमारो राजपुत्रादिप्रव्रजितः। ठाणा० १३८। असमर्थः। नि० चू० प्र० ३६० अ। असहिष्णु। ओघ० १४३। सुकुमारशरीरं। उत्त० मा० गा० ४०३। असमर्थ.-राजपुत्रादि.। ओघ० १३८।

असहू-असमर्थ-क्षुत्पीडितः। ओघ० ४४। राजादिदीक्षित। बृ० द्वि० २२४ अ। रायजुवरायां सेट्ठि अमचपुरोहिया य एते असहू। नि० चू० प्र० १०१ अ। भिक्षावेलां प्रतिपालयितुमशक्त। ओघ० ८६। असहिष्णु.। आव० ८५८। असमर्थ। ओघ० १५५।

असांव्यवहारिक.-छेक। आव० ५२७।

असाए-असात, असातोदयकलित। जीवा० १३०।

असाढभूई-आसाढभूतिः, मायापिण्डोदाहरणे धर्मरुचिशिष्य। पिण्ड० १३७।

असाढए-तृणविशेष। प्रज्ञा० ३३।

असाढा-आषाढा, पूर्वोत्तराषाढानक्षत्रविशेष। आव० १००।

असाधू-असाधव, असयत। ठाणा० ३९९।

असामण्णं असामान्यम्, अनाचीर्णपूर्वम्। सूर्य० २३८।

असालजरदा-अकालजरदा। ओघ० २१८।

असारणा-असंवेदना। बृ० प्र० १५६ अ।

असारयणा-असंवेदना। नि० चू० द्वि० १२६ अ।

असारहिए-असारथिक, सारथिरहित। भग० ३२२।

असारिए-असागारिकं। नि० चू० द्वि० ३१ आ।

असावज्ज-असावद्यम्, अध्यतनस्य प्रथमः पर्याय। ओघ० २२२।

असासए-अशाश्वतम्, प्रतिक्षणमावीचीमरणेन मरणम्। आचा० ६६। क्षणनश्वरत्वम्। भग० ४६९।

असासयं-अशाश्वतम्, प्रतिक्षणं विनाशात्वम्-अनित्यम्। प्रश्न० ९६।

असाहुया-असाधुता, शोकरभावना। उत्त० ११४।

असाहु-असाधुः, अशरणभावनाधुक्तः। उत्त० ५८।

असि-असिः, खड्गः। जीवा० ११०। भग० १८२। प्रज्ञा० ९७। तलवारः। आव० ५८८, ४८७, ३६०। खड्गाभ्यासम्। प्रश्न० ९७। खड्ग.-करवालः। भग० १९१। शस्त्रविशेषः। आव० ३६०।

असिअं-असितम्, कृष्णमशुभं च संक्लेशानुबन्धित्वात्। आव० ४१९।

असिअपण्णं-दात्रेण। भग० ६५०।

असिए-असितः-अबद्ध-नैः सार्धं संगमकुर्वन् भिक्षु। आचा० ४१०।

असिकच्छए-असिकच्छपः, कच्छपविशेषः। सम० १३५।

असिक्खग-अशिक्षकः, चिरप्रव्रजितः। दश० ३९।

असिखेडगं-असिखेटकम्, असिना सह फलकम्। प्रश्न० २१।

असिचम्मपायं-असिचर्मपात्रम्-स्फुरक, अथवा असि.-खड्ग धर्मपात्रं च-स्फुरक, खड्गकोशको वा। भग० १९१।

असिचम्मपायहत्थकिच्चगए-असिचर्मपात्रहस्तकृत्यागत, असिचर्मपात्रे हस्ते यस्य स तथा कृत्यं-सङ्घादिप्रयोजनं गतः-आश्रित कृत्यगतस्ततः कर्मधारय, अथवाऽसिचर्मपात्रं कृत्वा हस्ते कृतं येनासौ असिचर्मपात्रहस्तकृत्वाकृत', प्राकृत्वाच्चैवं समास', अथवाऽसिचर्मपात्रस्य हस्तकृत्यां-हस्तकरणं गतः-प्राप्तो य. स तथा। भग० १९१।

असिट्ठो-अशिष्ट, अप्रतिपादित। प्रश्न० १११। अशिष्ट। आव० २१८।

असिणाइ - अन्ये श्रमणादयो येऽसुमप्रविष्टमशितवन्त। आचा० ३३७।

असिणाणए-अस्नानतया। आचा० ३६४।

असिता-गृहवासविमुक्ता। आचा० २२२।

असिद्ध-न सिद्ध', हेत्वाभासविशेष। ठाणा० ४९३। संसारी। जीवा० ४३६।

असिपंजरं-असिपञ्जरम्, शक्तिपञ्जरम्। प्रश्न० ११०।

असिपत्त-असिपत्र, असीना पत्रम्। विपा० ७१। खड्गपत्रम्। जीवा० १०६। असिः-खड्गः, स एव पत्रम्। ठाणा० २७३। अथवा-खड्गाकारैरिस्कतया पत्राणि-पर्णानि यस्मिंस्तत्। उत्त० ४६०। प्रज्ञा० ८०। परमा-

धार्मिकेषु नवम । उत्त० ६१४ । नवम परमाधार्मिक । आव० ६५० । सूत्र० १२४ । सम० २९ ।

असिपुत्रिक । उत्त० ४५ ।

असिय-असित, कृष्ण । प्रज्ञा० ९१ ।

असियअं-दात्रम् । आव० २५५ ।

असियग-असियगम्, दात्रम् । आचा० ६१ ।

असिरयणं - असिरत्नम्, चक्रवर्तेरेकेन्द्रियपञ्चमरत्नम् । जं० प्र० २३८ । ठाणा० ३९८ ।

असिलट्ठी-असियष्टि, खड्गलता । विपा० ५६ । असि - खड्ग स एव यष्टि -दण्डोऽसियष्टि, अथवा असिश्च यष्टिश्च । जं० प्र० २६४ ।

असिलायं-विस्वरम् । बृ० तृ० २१ आ ।

असिलिट्ठं-अश्लिष्टम् । आव० ९९ ।

असिलोगभते - अश्लोकभयम्, अकीर्तिभयम् । ठाणा० ३८९ । अश्लाघाभयम् । आव० ४७२ ।

असिलोगो-अश्लाघा, अयश । आव० ६४६ ।

असिव-अशिवम्, व्यन्तरकृतं व्यसनम् । आव० ६२६ । उद्दाइयाए अभिद्रुत । नि० चू० प्र० ९७ अ । नि० चू० प्र० ७१ अ । व्यन्तरकृत उपद्रव । बृ० प्र० २३१ अ । देवतादिजनितो ज्वराद्युपद्रव । ओघ० ११, १४ ।

असिवाइखेत्तं-अशिवादिक्षेत्रम्, अशिवादिप्रधानं क्षेत्रम्, आदिशब्दादूनोदरताराजद्विष्टादिपरिग्रह । दश० ३९ ।

असिवुवसमणी-अशिवोपशमनी कृष्णस्य चतुर्थी भेरी । आव० ९७ ।

असिवोवसमणी-अशिवोपशमनी, कृष्णस्य चतुर्थी भेरी, पण्मासान् सर्वे रोगोपशमनी । बृ० प्र० ५६ अ ।

असी-असि, अस्युपलक्षित सेवकपुरुष । जीवा० २५९ । हीरो । नि० चू० द्वि० १४१ अ । खड्ग, प्रस्तुतसूत्र जन गमावतितो भवति, यथा साहचर्यलक्षण्या असिशब्देन अत्र अस्युपलक्षिता पुरुषा गृह्यन्ते । जं० प्र० १०२ ।

असील-अशील, अविद्यमानशील, सर्वथा विनष्टचरित्र धर्म । उत्त० ३४० । अशीला-कुशीला । ठाणा० ३०३ ।

असीलया-अशीलता नारित्रधर्मविराधना । अब्रह्म नाम ८ो नाम । प्रश्न० ६६ ।

असुआ-असूया, असूयाम्, ईर्ष्या । दश० २४३ ।

असुइ-अशुचि अशुचित्वं । पंच० ६१ । स्नानब्रह्मचर्या दिवर्जितत्वात् अशुचि, शास्त्रवर्जितो वा अशुचि । भग० ३०८ । स्नानब्रह्मचर्यादिवर्जिता, अशुचय, शास्त्रवर्जिता । जं० प्र० १७० । विगन्ध शरीरमलादि । जीवा० २८२ ।

असुण्णंतरा अशून्यान्तरा, एकोत्तरवृद्धया सर्वदैवाशून्या न्यव्यवहितान्यन्तराणि यासा ता अशून्यान्तरा । विशे० ३३१ ।

असुति-अशुचानि, अमेध्यानि मूत्रपुरीषाणि । ठाणा० ४०६ ।

असुद्ध-अशुद्धम्, आधाकर्मादि । ओघ० १७७ ।

असुन्नकाल-अशून्यकाल, नारकभवानुगमनावस्थानका लस्य द्वितीयभेद । भग० ४७ ।

असुभ-अशुभकार्ये मृतकस्थापनादौ । व्य० प्र० १६९अ ।

असुभजोग-अशुभयोग, अनुपयुक्ततया प्रत्युपेक्षादिकरणम् । भग० ३२ ।

असुभणाम - अशुभनाम, यदुदयवशात् नाभेरधस्तना पादादयोऽवयवा अशुभा भवन्ति तत् । प्रज्ञा० ४७४ ।

असुभत्ता-अशुभता, न शुभता । प्रज्ञा० ५०४ । अम नुज्ञता । भग० २५३ ।

असुभाणुप्पेहा-अशुभानुप्रेक्षा, अशुभत संसारस्यानुप्रेक्षण-अनुस्मरणम् । ठाणा० १८८ ।

असुभाते-असुखाय-दुःखाय । ठाणा० १४९ । अशुभाय, अपुण्यबन्धाय असुखाय वा । ठाणा० २९२ । पापाय, असुखाय वा-दुःखाय । ठाणा० ३०८ ।

असुयंग-अश्रुताङ्गम्, नोश्रुताङ्गम् । उत्त० १४४ ।

असुय-अश्रुत परवचनद्वारेण । भग० २००, ११३ ।

असुर-रौद्रकर्मकारी । उत्त० २७६ ।

असुरकुमार-असुरकुमारा, देवविशेषा । भग० १०७ । असुराश्च ते नवयौवनतया कुमारा इव कुमाराश्चासुर-कुमारा । ठाणा० २८ । भवनपतिभेदविशेष । प्रज्ञा० ६० ।

असुरकुमारीओ-असुरकुमार्य, देवीविशेषा । भग० १०७ ।

असुरद्दारे-विदायतनस्य द्वितीयं द्वारम् । ठाणा० ३१० ।

असुरसुरं-असुरसुरम्, असुरसुरम् ...ऽशब्दम् । भग० ३९४ । ... ओघ० १८७ । ... । प्रज्ञा० ११० ।

असुरा - असुरा न सुरा असुरा, भवनपतिदेवा । ठाणा० २३ । भवनवासिन भवनपति ... वा ।

ठाणा० १०४। असुरकुमार। भग० १३५। भवनपति व्यन्तरलक्षण। ठाणा० ४६६।
असुरो-असुर, आसुरभावान्वितत्वाद् यक्ष। उत्त० ३६६। भवनवासी। बृ० द्वि० २६४ अ।
असुह-अशुभम्, अशुभस्वभावम्। भग० ७२। अशुभ-अतीवासातरूप। जीवा० १०३।
असुहदुक्खभागी - असुखदुःखभागी, दुःखानुबन्धिदुःख भागी। भग० ३०८।
असुहया-अशुभदा, असुखदा। आव० २३६।
असुहिय-असुखित, अविद्यमानसुहृद् वा। प्रश्न० ४१।
असूइअ-असूचितम्, व्यञ्जनादिरहितम्। दश० १८१।
असूचया-साक्षात्। ठाणा० ३०४।
असूयपुत्तो-असूयपुत्र। आव० २११।
असूया-अप्पणो दोस भासति ण परस्स। नि० चू० प्र० २७८ अ। आत्मगता। नि० चू० प्र० २७८ अ।
असूत्ता-स्फुटमेव परदोषोद्घट्टनम्। बृ० प्र० १२८ अ।
असेयं-सुख। नि० चू० प्र० ८८ आ।
असोंडो-अमद्यपायी। नि० चू० द्वि० १४४ अ।
असोअ-अशोक, सुप्रभबलदेवपूर्वभवनाम। आव० १६३। अरुणद्वीपे महर्द्धिको देवविशेष। जीवा० ३६७। द्विमस्तितमग्रह। जं० प्र० ५३५। वृक्षविशेष। जीवा० २२२। त्रिंशत्यतराणां चैत्यवृक्ष। ठाणा० ४४२। अशोकनामदेव। जं० प्र० ३२०। लताविशेष। प्रज्ञा० ३२। बिन्दुसारपुत्र। बृ० प्र० ४७ अ। वृक्षविशेष। भग० ८०३। एकास्थिकवृक्षविशेष। प्रज्ञा० ३१। ठाणा० ७९। मल्लिनाथस्य चैत्यवृक्ष। सम० १५२। विजयपुरस्य नन्दन वनोद्याने यक्ष। विपा० ९५। बिंदुसारपुत्तो। नि० चू० प्र० २४३ अ।
असोगचंदो-अशोकचन्द्र, योगसङ्ग्रहेषु शिक्षाया दृष्टान्त। आव० ६७९।
असोगदत्तो-अशोकदत्त, मायोदाहरणे साकेतपुरे समुद्रदत्तसागरदत्तपिता। आव० ३९४।
असोगललिय-चतुर्थबलदेवपूर्वभवनाम। सम० १५३।
असोगवण - अशोकवनम्। आव० १८६। पुष्करिण्या वनम्। ठाणा० २३०। वनखण्डनाम। जं० प्र० ३२०। भग० ३७।
असोगसिरी - पाडलिपुत्ते असोगसिरी राया। नि० चू० तृ० ४४ आ। बृ० द्वि० १५३ आ। अशोकश्री, बिन्दुसारपुत्र। विशे० ४०९।
असोगा-अशोका, नलिनविजयराजधानी। जं० प्र० ३५७। नागकुमारेन्द्रस्याग्रमहिषी। भग० ५०४। ठाणा० २०४।
असोच्चा-अश्रुत्वा। भग० ४२५। आगमानपेक्षम्। भग० ४५५।
असोणिअ-अशोणितम्, रक्तरहितम्। आव० ७६४।
असोत्थो-अश्वत्थ। आव० ४१७।
असोयणया-अशोचनता, दैन्यानुत्पादनेन। भग० ३५।
असोयलया-अशोकलता, लताविशेष। भग० ३०६।
असोयवडेंसए। भग० १९४।
असोयाओ। ठाणा० ८०।
असोही-अशोधि, प्रतिसेवना, स्खलना। ओघ० २२५।
अस्तमयनप्रविभक्तिः-नवमनाट्यभेद। जं० प्र० ४१६।
अस्तान्ते-अत्थंतंमि, अस्तमयपर्यन्ते। उत्त० ४३५।
अस्ति-अत्थि, प्रदेश। ठाणा० १५, ५१६।
अस्तिकायः-अत्थिकाय, धर्म्मादिपञ्चविधास्तिकायमाश्रित्य काय। आव० ७६७।
अस्तिकायधर्म - अत्थिकायधम्म, अस्तिशब्देन प्रदेशा उच्यन्ते, तेषां कायो-राशिरस्तिकाय स चासौ सज्ञया धर्म्मश्चेति गत्युपष्टम्भलक्षण धर्मास्तिकाय। ठाणा० १५४। योऽस्तिकायानां धर्मादीनां धर्मो-गत्युपष्टम्भादि। उत्त० ५६६।
अस्तिकायाः-अत्थिकाया, अस्तीत्यय त्रिकालवचनो निपात, अभूवन् भवन्ति भविष्यन्ति चेति भावना, अतोऽस्ति च ते प्रदेशानां कायाश्च राशय इति, अस्तिशब्देन प्रदेशा क्वचिदुच्यते, ततश्च तेषां वा काया अस्तिकाया। ठाणा० १९६। अस्तीना-प्रदेशानां सङ्घातात्मकत्वात् काय। ठाणा० १५।
अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वम् - अत्थिनत्थिप्पवातपुव्व, चतुर्थं पूर्वम्। ठाणा० ४८४। तत्र यद्वस्तु लोकेऽस्ति धर्मास्तिकायादि यच्च नास्ति खरशृङ्गादि तत् प्रवदति, सर्वं वस्तु स्वरूपेणास्ति पररूपेण नास्तीति प्रवदति। नदी १४१।
अस्थानस्थापनम् - अठाणठवण - अयोग्यतास्थापनम्। ओघ० १३१।
अस्थिका-अट्ठिग, कपालिकापर्याय। व्य० प्र० २०६ अ।

अस्थितकल्पिकः-साधुभेदविशेषः । भग० ४ ।
अस्थिमिंजा-अट्ठिमिंजा, अस्थिमध्यरसः । ठाणा० १७० ।
अस्थिमिंजानुसारि-अट्ठिमिंजाणुसारी । ठाणा० ३७५ ।
अस्थिरम्-अथिरं, जीर्णम् । आचा० ३९६ ।
अस्थिरणाम -(अथिरणाम), यदुदयवशाज्जिह्वादीनामवयवानामस्थिरता भवति तत् । प्रज्ञा० ४७४ ।
अस्निहः-(अणिह), स्निह्यते-दिलष्यतेऽष्टप्रकारेण कर्म्मणेति स्निहः, न स्निहोऽस्निहः, यदि वा स्निह्यतीति स्निहो रागवान् यो न तथा सोऽस्निहः, उपलक्षणार्थत्वाचास्य रागद्वेषरहित इत्यर्थः । आचा० १९१ । स्नेहरहितः । आचा० २१० । स्निह्यतीति स्निहो, न स्निहोऽस्निहः-रागद्वेषरहितत्वात् अप्रतिबद्धः । आचा० २५८ ।
अस्पृशद्गति-समयप्रदेशान्तरमस्पृशती । आव० ४४१ ।
अस्फुटितम्-अफुडिआ, सर्वविराधनापरित्यागः । दश० १९६ ।
अस्संजए-असंयतः-गृहस्थः, स च श्रावकः प्रकृतिभद्रको वा । आचा० ३२६ । असंयताः-असंयमवन्तः, आरम्भपरिग्रहप्रसक्ताः, अब्रह्मचारिणः । ठाणा० ५२४ ।
अस्संजतो-गिहत्थो । नि० चू० प्र० ३० आ ।
अस्संजमो - असंयमः, प्राणातिपातादिलक्षणः । आव० ५१६ ।
अस्संपडियाए - न विद्यते स्वं-द्रव्यमस्य सोऽयमस्वो निर्ग्रन्थ इत्यर्थः, तत्प्रतिज्ञया । आचा० ३२५ ।
अस्सकण्णी - अश्वकर्णी, वनस्पतिविशेषः । आचा० ५७ । साधारणवनस्पतिकायिकभेदः । जीवा० २७ ।
अस्सकन्न-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।
अस्सकन्नी-अनन्तकायभेदः । भग० ३०० । भग० ८०४ । कन्दविशेषः । उत्त० ६९१ ।
अस्सतरो-अश्वतरः, खरतरः, एकखुरश्चतुष्पदः । जीवा० ३८ । एकखुरचतुष्पदः । प्रज्ञा० ४५ ।
अस्सपुरं-अश्वपुरम्, पुरुषसिंहपुरम् । आव० १६२ ।
अस्सपुरा - अश्वपुरी, पद्मविजयराजधानी । जं० प्र० ३५७ ।
अस्सरोनिवाए - अश्वरोनिपातः, चप्पुटिका । जीवा० ३९९ ।
अस्सगल्लापेलयं । आचा० ४२३ ।
अस्सलेसा-नक्षत्रविशेषः । ठाणा० ७७ ।
अस्सवाणियओ-अश्ववणिक् । आव० २२० ।
अस्सवाहणिया-अश्ववाहनिका । उत्त० २७७ । आव० ५६ ।
अस्ससेणे-अश्वसेनः, सनत्कुमारपिता । आव० १६२ । पार्श्वपिता । आव० १६१ ।
अस्सादणसगोत्ते - आस्वादनसगोत्रम्, अश्विनीनक्षत्रगोत्रम् । सूर्य० १५० ।
अस्सामिणी-अस्वामिनी । आव० २२४ ।
अस्सायणे-आश्वायनम्, अश्विनीगोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।
अस्सासणे - अष्टाशीतिमहाग्रहे चतुर्दशमहाग्रहः । ठाणा० ७८ ।
अस्सासो - आश्वासः, प्राणिनामेव आश्वासनम्, अहिंसायाः पञ्चाशत्तमं नाम । प्रश्न० ९९ ।
अस्सिं-अयम् । ठाणा० १३८ ।
अस्सिंपडियाए-एतत्प्रतिज्ञया एतान् साधून् प्रतिज्ञाय-उद्दिश्य । आचा० ३६१ ।
अस्सिंलोए-अयं लोकः, अयं मनुष्यलोकः । जीवा० ३४८ ।
अस्सिणि-अश्विनी, नक्षत्रविशेषः । सूर्य० १३० । ठाणा० ७७ । मेतार्यजन्मनक्षत्रम् । आव० २५५ ।
अस्सीइ-अश्विनी, नक्षत्रविशेषः । ठाणा० ४६९ ।
अस्सेसा-अश्लेषा । सूर्य० १३० ।
अस्सो-अश्वः, घोटकः, एकखुरश्चतुष्पदः । जीवा० ३८ । अश्वः । जीवा० २८४ । प्रज्ञा० ४५ ।
अहं-अधं-अधस्तात् । आचा० ६३ । अधः-बुध्ने । ओघ० १६८ ।
अह-एष । नि० चू० प्र० ११८ अ । व्य० प्र० १०३ आ । अयं । नि० चू० द्वि० ९२ आ ।
अहक्खाओ-यथास्थितः । (मं०)
अहक्खायं - अथाख्यातम्, अथशब्दो यथार्थे, आङ्-अभिविधौ, याथातथ्येनाभिविधिना वा यत् ख्यातं-कथितं अकषायं चारित्रम् । प्रज्ञा० ६८ । यथाख्यातम्-अकषायमित्यर्थः । विशे० ५४७ । यथाख्यातं-सूक्ष्मसम्परायानन्तरं सर्वस्मिन् साधुजीवलोके ख्यातं-प्रसिद्धं, परमं चारित्रम् । विशे० ५५५ । यथाख्यातं-यथैवाख्यातम्-अकषायम् । आव० ७८ । यथैवाख्यातं-यथाख्यातं प्रसिद्धं सर्वस्मिन् जीवलोके, अकषायचारित्रमिति । आव० ७९ ।

अथशब्दो यथार्थे, आख्यात-अभिहित अथाख्यातम्। ठाणा० ३२४।

अहक्खित्तो। नि० चू० प्र० १६४ अ।

अहगुरु-येन प्रव्राजितो यस्य वा पार्श्वे अधीत, रत्नाधिकतरक। व्य० द्वि० ३९५ अ।

अहछंदो-यथाछन्द, यथेच्छयैवागमनिरपेक्ष प्रवर्त्तते य। आव० ५१८।

अहछंदिया-अथाछन्दिका, अव्यापारिता, स्वय प्रवृत्ता। बृ० द्वि० २६१ अ।

अहण्णे-अधन्य। उत्त० ३२९।

अहतह यथातथ, सूत्रकृताङ्गस्यश्रुतस्कन्धे त्रयोदशमध्ययनम्। आव० ६५१। सूत्रकृताङ्गस्य त्रयोदशमध्ययनम्। उत्त० ६१४।

अहतानि। भग० ५०६।

अहत्ता-अधस्ता, गुरुपरिणामता। प्रज्ञा० ५०४। भग० २३। जघन्यता। भग० २५३।

अहत्थे-यथास्थान्, यथावस्थितान् यथार्थान् वा-यथाप्रयोजनान् भावान् जीवादीन्, यथा द्रव्यान्, पर्यायान्। ठाणा० ३५१।

अहप्पहाण-यथाप्रधान। भग० ६७९, ६८३। यथाप्रधान, यो यत्र प्रामादौ प्रधान। ओघ० ५९।

अहमं-अधमम्, जघन्यम्। आव० ५८५।

अहमती-अह अना इति अन्तो-जात्यादिप्रकर्षपर्यन्तोऽस्या स्तीयन्त अहमेव जात्यादिभिरुत्तमतया पर्यन्तवर्ती। ठाणा० ४७३।

अहमिंदा अहमिन्द्राणि, अह अह इत्येवमिन्द्रा। सम० ४३।

अहमो-अधम, मलाविलत्वाज्जुगुप्सित। सूत्र० ८२।

अहम्म-अधम, अमयम। दश० २७१। धर्मविपक्ष-पापम्। उत्त० २७४। धर्मप्रतिपक्ष। उत्त० २४८। अधर्म, अधर्मपोषकं दान अधर्मकारणत्वात्। ठाणा० ४९६। भारहरामायणादिपावसुत। नि० चू० द्वि० ४ आ। धर्मविपक्ष विषयासक्तिरूपम्। उत्त० २८५।

अहम्मक्खाई अधर्माख्यायिन, न धर्ममाख्यान्तीत्येव शीला न धर्मान् ख्यातियथा ते। भग० ५६०।

अहम्मखाई-अधर्माख्यायी, अधर्मभाषणशील। अधर्मख्याति-अधार्मिकप्रसिद्धिको वा। विपा० ४८।

अहम्मजुत्तं-अधर्मयुक्तम्, पापसम्बद्धम्। दश० ५२।

अहम्मपलज्जणे-अधर्मप्ररञ्जन, अधर्मे हिंसादौ प्ररज्यते अनुरागवान् भवतीति। विपा० ४८।

अहम्माणी-अहमानी, अहमेव विद्वान् इति मानोऽस्येति। आव० २४१।

अहम्माणुए-अधर्मानुग, अधर्मान्-पापलोकान् अनुगच्छतीति। विपा० ४८।

अहम्मिट्ठा-अधर्मीष्टा अधर्मिष्टा वा-धर्म -श्रुतरूप एवेष्टो-वल्लभ पूजितो वा येषा ते धर्मेष्टा, धर्मिणां वेष्टा धर्मीष्टाः अतिशयेन वा धर्मिणो धर्मिष्ठास्तन्निषेधादधर्मेष्टा अधर्मीष्टा अधर्मिष्ठा वा। भग० ५६०।

अहम्मिट्ठे-अधर्मिष्ठ, अतिशयेनाधर्मो-धर्मरहित। विपा० ४८। अधर्मेष्ट, अधर्मो-धर्मविपक्ष -पापमिति स इष्ट-अभिलषितोऽस्येति, यद्वा अधर्मगुणयोगादधर्म, अतिशयेना धर्म। उत्त० २७४।

अहम्मियं-आधार्मिक-अधार्मिकाणामिदम्। प्रश्न ११०।

अहय-अहतम्, मलमूषिकादिभिरनुपद्रुपितं, प्रत्यग्रमिति। औप० ६६। अव्यवच्छिन्नम्। औप० ७४। अपरिमलितम्। जीवा० २५४। ततुगत। नि० चू० प्र० २५३ अ। आख्यानकप्रतिबद्धम्, अव्याहत, नित्य, नित्यानुबन्धि वा। जीवा० २१७। प्रज्ञा० ८९। ज० प्र० ६३। अव्याहतम्। भग० १५४। सूर्य० २६७। अपरिभुक्तम्। भग० २५४।

अहर-अधरम्, अध -नरकतिर्यक्। दश० २७०। नरक। आव० ५३२।

अहरगतिगमणं - अधरगतिगमनम्, अधोगतिगमनकारणम्। प्रज्ञा० ३६८।

अहराई-अहोरात्रिकी। आव० ६४८।

अहव-अथवा-अथार्थे। विशे० ११२०।

अहवण-अथवा। बृ० द्वि० १४ आ। विकल्पप्रदर्शने। नि० चू० प्र० २९० अ। विकल्पार्थो निपात। बृ० द्वि० २४६ आ।

अहवा-अनन्तरम्। नि० चू० प्र० १८ आ। अथ निपात। नि० चू० प्र० १६८ आ।

अहव्वणवेद-अथर्वणवेद, चतुर्णा वेदाना चतुर्थ वेद। भग० ११०।

अहसंथडं-निष्प्रकम्प चम्पकपट्टादि। बृ० तृ० ३१ अ।

अहसिता-न सहेतुकमहेतुक वा हसन्नेवास्ते। उत्त० ३४५।

अहसुद्धो-यथाशुद्ध, निर्दोषोपदेशदाता। बृ० तृ० ७१ आ।

अहसिरे-अहसनशील। उत्त० ३४५।

अहस्ससच्चे-अहास्यात्सत्य, हास्यपरित्यागात्सत्य, द्वितीयम तस्य प्रथमा भावना। आव० ६५८।

अहामत्थं-यथार्थम्-निर्युक्त्यादिव्याख्यानानतिक्रमेणेत्यर्थ। ठाणा० ३८८। अर्थस्य निर्युक्त्यादेरनतिक्रमेण। ठाणा० ५१९।

अहाउअकाल-यथायुष्ककाल, देवाद्यायुष्कलक्षण। दश० ९।

अहाउनिव्वत्तिकाले-यथायुर्निर्वृत्तिकाल, यथा-येन प्रकारेणायुषो निर्वृत्ति-बन्धनं, तथा य काल-अवस्थितिरसौ। भग० ५३३।

अहाउयं-यथायुष्कम्, यथाबद्धमायुष्कम्। प्रश्न० १९। यथायुष्कम्। आव० ११५, २५८। यथायु-आयुषोऽनतिक्रमेण। उत्त० १८८।

अहाकडं-यथाकृतम्, गृहस्थेन स्वार्थं निर्वर्तितम्। प्रश्न० १२७।

अहाकडा-आधाकृता, साधूनाधाय-सम्प्रधार्य कृता। बृ० प्र० ९२ अ।

अहाकप्पं-यथाकल्पम्, प्रतिमाकल्पानतिक्रमेण तत्कल्पवस्त्वनतिक्रमेण वा। भग० १२४। कल्पनीयानतिक्रमेण प्रतिमासमाचारानतिक्रमेण वा। ठाणा० ३८८।

अहाकम्मं-यथाकर्म, बद्धकर्मानतिक्रमेण। भग० ६५।

अहाकम्मिए। भग० ४६६।

अहागडा-याथाकृतानि, अल्पपरिकर्माणि। ओघ० ९२।

अहागडे-यथाकृतम्, आत्मार्थमभिनिर्वर्तितम्। दश० ७२।

अहाचरा-अधश्चरा-बिलवासित्वात्सर्पादय। आचा० २९१।

अहाच्चयं-दृष्टिवादे सूत्रभेद। सम० १२८।

अहाच्छंदे-यथाछन्दान्, स्वच्छन्दान्। ओघ० ५६।

अहाछंद-यथाछन्दा-यथा कथञ्चिदागमपरतन्त्रतया छन्द-अभिप्रायो-बोध। भग० ५०२। यथा स्वाभिप्रेत तथा प्रज्ञापयन्। नि० चू० द्वि० ७३ आ।

अहाजातो-अपरिग्रही। नि० चू० द्वि १३१ आ।

अहाजायं-रजोहरणमुखवस्त्रिकाचोलपट्टयुत रचितकरपुटश्च। बृ० तृ० १० आ।

अहाड-यथाकृतम्, परिकर्मशून्यं। बृ० द्वि० २१२ आ।

अहाणी-असीयण। नि० चू० प्र० ५ आ।

अहातच्चं-यथातत्त्वम्, तत्त्वानतिक्रमेण वर्तमानम्। भग० १२४। सम्यक्समितिकेत्यभिधानार्थानतिक्रमेणान्वर्थसत्यापनेनेत्यर्थ। ठाणा० ३८८। शब्दार्थानतिक्रमेण। ठाणा० ५१९।

अहातच्चे-यथातथ्यो यथातत्त्वो वा, यथा-येन प्रकारेण तथ्य-सत्य तत्त्व वा। भग० ७०९।

अहातच्चो-जहेव दिट्ठो तहेव जो भवति सो अहातच्चो भवति। नि० चू० द्वि० ८६ अ।

अहापज्जत्तं-यथापर्याप्तम्। भग० १३९।

अहापडिरूवं-यथाप्रतिरूपम्। आव० १९९। भग० ६६१।

अहापदं-यथापदम्। आव० ३५२।

अहापरिग्गहिए-यथाप्रतिगृहीतम्, यथाप्रतिपन्नम्। भग० १३६।

अहापरियाय-यावन्मात्र क्षेत्रमनुजानीते तावन्मात्र काल तावन्मात्र च क्षेत्रमाश्रित्य वय वसाम इत्येवंवत्। आचा० ४०३।

अहापवत्तं-यथाप्रवृत्तम्। आव० ११०।

अहाबायरा-यथाबादरा, यथोचितबादरा आहारपुद्गला इत्यर्थ। भग० १८९। यथाबादराणि, स्थूलतरस्कन्धान्यसाराणि। भग० २५१।

अहाबायरे-यथाबादरम्, स्थूलप्रकारम्। भग० २५१। असारम्। भग० १५४।

अहाभद्दगो-यथाभद्रक। आव० ७१९।

अहाभद्दे-यथाभद्र, शासनबहुमानवान्। बृ० प्र० ३ २ अ।

अहाभद्दो दाण्यी। नि० चू० प्र० १९९ आ। दंसणविरहितो अरहंतेसु तम्सासणे साधू उभयभद्दो। नि० चू० प्र० ३२५ अ।

अहाभावो-स्वप्रसिद्धं स्वारूप्यम्। बृ० द्वि० ७४ आ। अधाप्रवृत्ति। नि० चू० प्र० २५१ आ। प्रतिस्थानिन-प्रतिगृहीत न तु भुज्यते गमनादि। बृ० द्वि० २८९ आ।

अहामग्गं-यथामार्गम्, ज्ञानादिमोक्षमार्गानतिक्रमेण क्षायोपशमिकभावानतिक्रमेण वा वर्तमानम्। भग० १२४। मार्ग-क्षायोपशमिको भावस्तदनतिक्रमेण। ठाणा० ३८८।

अहारिणो-मनसोऽनिष्टा। आचा० २४२।

अहारियं-यथारीतम्, रीत-रीति-स्वभाव, तस्यानतिक्रमेण वर्तते तत्, यथास्वभावमित्यर्थः। भग० २१२। यथाऽऽर्यम्। आचा० ३७९। यथाऋजु। आचा० ३८१।

अहालंद-मध्यमसमयपौरुषीमानम्। बृ० तृ० ३५ आ। पोरिसी। नि० चू० तृ० १८ अ। जघन्येन तरुणीदकार्द्रकरशोषकाल, उत्कृष्ट पूर्वकोटी। बृ० द्वि० ३२ आ। सयोगवर्जिते तृतीयभेद। नि० चू० प्र० २३९ अ। यावन्मात्र काल भवानवुजानाति। आचा० ४०३।

अहालहुस्सए-स्तोकप्रायश्चित्तदानम्। बृ० तृ० २०९ आ।

अहालहुस्सगाइं-यथालघुस्वकानि, 'यथे'ति-यथोचितानि लघुस्वकानि-अमहास्वरूपाणि, महतां हि तेषां नेतुं गोपयितुं वाऽशक्यत्वादिति यथालघुस्वकानि, अथालघूनि-महान्ति वरिष्ठानीति वृद्धा। भग०।

अहावच्चा-यथापत्यानि, पुत्रस्थानीया। भग० १९७।

अहासंथड-गिणकर पट्ट। नि० चू० प्र० १७० अ।

अहासंथडा-अचला। नि० चू० प्र० १६० आ।

अहासच्चं-यथासत्यम्, इद यन्मया कथित कथ्यमान च तथ्यमलम्, याथातथ्यम्। आचा० १८३।

अहासन्निहिआ-यथासन्निहिता। आव० १७५।

अहासमं-यथासाम्यम्, समभावानतिक्रमेण वर्तमानम्। भग० १२४।

अहासुत्तं-यथासूत्रम् सूत्रानतिक्रमेण। ठाणा० ३८८। सामान्यसूत्रानतिक्रमेण वर्तमानम्। भग० १२४।

अहासुहुमणियंठो-यथासूक्ष्मनिर्ग्रन्थ, यथासूक्ष्म एतेषु मववृ। उत्त० २५७।

अहासुयं-यथाश्रुत यथासूत्र वा। आचा० ३०१।

अहासुहुमकसायकुसील-कषायकुशीलस्य पञ्चमो भेद। भग० ८९०।

अहासुहुमपुलाए पुलाकस्य पञ्चमो भेद। भग ८९०। यथासूक्ष्मपुलाक, पुलाकस्य पञ्चमो भेद। पञ्चस्वपि पुलाकेषु य स्तोर स्तोर विराधयति स। उत्त० २५६।

अहासुहुमबउस-बकुशस्य पञ्चमो भेद। भग० ८९०। उत्त० २५६। यथासूक्ष्मबकुश, योऽक्ष्णो पुष्पिकामपनयति, शरीराद्वा धूल्यादिकमपनयति। उत्त० २५६।

अहासुहुमे-यथासूक्ष्मान सारान्। भग० १५५।

अहि-सर्प, पृथिव्याश्रितो जीवविशेष। आचा० ५५। सर्प। उत्त० ६९९। उर परिसर्पभेद। सम० १३५। परिसर्पविशेष। प्रज्ञा० ४०।

अहिंडितओ-अहिण्डमान, असहिष्णोर्द्वितीयभेद। आव० ८५८।

अहिंसा-अनुकम्पा। प्रश्न० १०३। प्राणातिपातविरति। दश० २१।

अहिअ-अधिकम्, अहितम्, अपथ्यम्। ज० प्र० १६७।

अहिअगामिणि-अहितगामिनीम्, उभयलोकविरुद्धाम्। दश० २३५।

अहिउत्थ-अभ्युषित। उत्त० १२०।

अहिकरणं-अधिकरणम्, गन्त्रीयन्त्रकादि। भग० १३५।

अहिकरणकरो-अधिकरणकर, योऽन्येषा कलहयति, द्वादशमसमाधिस्थानम्। आव० ६५३।

अहिकरणोईरण-अधिकरणोदीरण, योऽन्येषा यन्त्रादीन्युदीरयति, त्रयोदशमसमाधिस्थानम्। आव० ६५३।

अहिकिच्च-अधिकृत्य-आश्रित्य। भग० २४।

अहिक्खेव-अधिक्षेप, निन्दाविशेष। प्रश्न० ४१।

अहिगमरुइ-अधिगमरुचि, विशिष्ट परिज्ञान तेन रुचिर्यस्यासौ। प्रज्ञा० ५८।

अहिगमास-अधिकमास। दश० २५०।

अहिगमो अधिगम, विशिष्ट परिज्ञानम्। प्रज्ञा० ५०। ज्ञानम्। आव० ५३०। अभिगम-सेवा। सम० ५३।

अहिगरणं-अधिकरणम्, कलह। सूत्र० ६६। बृ० तृ० १४२ अ। कूटपाशरूपम्। भग० ९३। अधिक्रियते आत्मा नरकादिषु येन तदधिकरण-अनुष्ठान बाह्य वा वस्तु चक्रमहादि। आव० ६११। कलह यन्त्रादि वा। आव० ६५४। ज्योतिषादि। आव० ६६२। अनुष्ठानविशेष, बाह्य वा वस्तु चक्रखड्गादि। भग० १८१। अनुष्ठान बाह्य वा वस्तु। ठाणा० ४१। वास्तुदपलशिलापुत्रकगोधूमयन्त्रकादि। आव० ८३१। रात्रि। ओघ० १८२।

अहिगरणकिरिया – अधिकरणक्रिया, दुर्गतौ ययाऽधिक्रियन्ते प्राणिन सा। प्रश्न० ३७।

अहिगरणि–अधिकरणि, सुवर्णकारोपकरणम्। जं० प्र० २२६।

अहिगरणिए–अधिकरणकर–कलहकरम्। आचा० ४२५।

अहिगरणिया–अधिकरणिकी–अधिक्रियते नरकादिष्वात्मा ऽनेनेति अधिकरण–अनुष्ठानविशेष बाह्य वा वस्तु चक्रखड्गादि, तत्र भवा तेन वा निर्वृत्ता, क्रियाभेदविशेष। भग० १८१। अधिक्रियत आत्मा नरकादिषु येन तदधिकरणम्–अनुष्ठान बाह्य वा वस्तु चक्रखड्गादि, तेन निर्वृत्ता क्रिया। आव० ६११। सम० १०।

अहिगरणी–अधिकरणी, यत्र लोहकारा अयोधनेन लोहानि कुट्टयन्ति। भग० ३५१।

अहिगरणे–अधिकरणसिद्धान्त। बृ० प्र० ३१ आ।

अहिगारनिउत्तो–अधिकारनियुक्त। आव० ७३८।

अहिगारो–अधिकार, प्रयोजन, प्रस्ताव। आव० २७६। विशे० ८५९। ओघत प्रथमप्रस्तावरूप। दश० ७०८। आ–अध्ययनपरिसमाप्तेर्योऽनुवर्तते स। दश० १२। नियोग। प्रश्न० ६६। प्रयोजनम्। दश० ११९। व्य० प्र० ४ अ। वृत्ति। उप० मा० गा० ३७१।

अहिगरणिता – अधिकरणिकी–खड्गादिनिर्वर्तनी। ठाणा० ३१७।

अहिछत्ता – अहिच्छत्रा – नगरीविशेष। उत्त० ३७[illegible]। पार्श्वनाथस्य धरणेन्द्रमहिमास्थानम्। आचा० ४१८। पश्चिमेषु जनपदस्यार्यक्षेत्रम्। प्रज्ञा० ५०। महापरिहरणपय पुरी। आव० ७२३।

अहिजुजिय–अभियुज्य [illegible], अभि[illegible] वा। भग० १३२।

अहिज्ज–अ[illegible]। उत्त० ३६२।

अहिज्जिउ–अ[illegible]तुम्, प[illegible]तुम्, [illegible], आत्र[illegible]तुम्। द[illegible]० ११८।

अहिट्ठए–अ[illegible] [illegible]। दश० [illegible]। अ[illegible] यथावत् करोति। दश० [illegible]।

अहिट्ठग–अ[illegible], [illegible]। दश० २०६।

अहिट्ठाए अ[illegible]म्, [illegible]। आव० ४१०।

अहिट्ठाणपुद–अ[illegible]। अप० [illegible]।

अहिट्ठित्तए–अधिष्ठातुम्–परिभोक्तुम्। बृ० द्वि० २१८ अ।

अहिट्ठित्ता–अधिष्ठाय, आरोहण कृत्वा। दश० ६१।

अहिठाणि–अधिष्ठाने, अपानप्रदेशे। ओघ० ६९।

अहित अनुचितविधायी। बृ० प्र० २१४ अ। अपथ्यम्। उत्त० २७६।

अहितुंडए–आहितुण्डिक, गारुडिक। दश० ३७।

अहिनदइ – अभिनन्दति, बहु मन्यते। आव० ५९०।

अहिनायदंसणे–अभिज्ञातदर्शने–सम्यक्त्वभावनया भावित। आचा० ३०४।

अहिमडे–अहिमृत, मृताहिदेह। जीवा० १०६।

अहिमन्त–मन्त्रसाधनोपायशास्त्राणि। सम० ४९।

अहिमर–अभिमर, अभिमुखमाकार्य मारयति म्रियते वा। आव० १८। राजादिघातक। विशे० ७४७। विशे० ५७१। अभिमुख पर मारयति य स। प्रश्न० ४६।

अहिमरका–घातका। बृ० द्वि० ८२ आ।

अहिमार–अभिमार, वृक्षविशेष। उत्त० १४३।

अहिमासयसिम–अधिकमासे। आव० ५५७।

अहिय–अधिक, अहितं वा अधिकं, अपाय वा। भग० १०६। अर्गलम्। उत्त० ६२३। अर्गल, दीप्तितरम्। उत्त० ७। अतिशयेन। जीवा० २२९। जीवा० ३५०। अहितम्, अश्रेय। आचा० ३८।

अहियपिच्छणिज्ज अधिकप्रेक्षणीयम्। आचा० ४[illegible]।

अहियाते–अहिताय, अपथ्याय। ठाणा० १४६। अपायाय। ठाणा० २९२। अपायाय। ठाणा० ३५८।

अहियासपज्ञा–अधिसहेत्, [illegible], [illegible]। भग० ११४।

अहियासणा–अधिसहना [illegible]। आव० ६६०। अधिसहना। आव० ७[illegible]।

अहियासेमए–अध्यासितुम्। [illegible]।

अहियासिमि – अध्यासयामि–[illegible] [illegible]। ठाणा० २४७।

अहिओगो अभियोग, [illegible]। बृ० [illegible] अ।

अहिरामा–अभि[illegible] [illegible]। बृ० प्र० ४ आ।

अहिरिय [illegible]। बृ० प्र० १४० आ।

अहिरिमाणा–[illegible]। [illegible]।

अहिर्बुध–[illegible]। [illegible] ६[illegible]।

अहिलाणं-मुखसयमनम्। भग० ४८०, जं० प्र० २६७। औप० ७१। मुखसयमनविशेष। जं० प्र० २३५।

अहिलिंति-समागच्छति। बृ० द्वि० १०८ अ।

अहिलोडिया - गोपालिकाख्यो हिंसकजीव। बृ० तृ० १९० आ।

अहिलियाए-अहिलिका, मैथुने दृष्टान्त। प्रश्न० ८९।

अहिवई-अधिपति -आचार्य। ओघ० ७४।

अहिवास-अधिवास -अवस्थान। भग० ४७०।

अहिवासिऊण-अधिवास्य। आव० २६१।

अहिसका-अभिशङ्का, तथ्यनिर्णय। सूत्र० ३९३।

अहिसक्कण-उत्सूरे आगच्छति। नि० चू० प्र० १४२ आ। अभिष्वष्कण-तस्यैव विवक्षितकालस्य सवर्द्धन, परत कर णमित्यर्थ। बृ० प्र० २६८ आ।

अहिसरणेहिं-अग्रतो वा सरेति। नि० चू० द्वि० ४९ आ।

अहिसरिया-अभिसृता। आव० ३७२।

अहिसलागा-मुउलि-अहिभेदविशेष। प्रज्ञा० ४६।

अहिसेया-अभिसेका, गणावच्छेदिनी। बृ० द्वि० २६३ अ।

अही-अहि, सर्प, उर परिसर्पविशेष। जीवा० ३९। प्रज्ञा० ४५। मुउलि अहिभेदविशेष। प्रज्ञा० ४६। सामान्यत सर्प। ज० प्र० १२५।

अहीणपडिपुन्नपंचिंदियसरीर-अहीनप्रतिपूर्णपचेन्द्रियश रीर, प्रतिपूर्णानि स्वकीयस्वकीयप्रमाणत, प्रतिपुण्यानि वा पवित्राणि पञ्चेन्द्रियाणि-करणानि यस्मिंस्तत्तथा अही नमङ्गोपाङ्गप्रमाणत प्रतिपूर्णपञ्चेन्द्रिय प्रतिपुण्यपञ्चेन्द्रिय वा शरीरं। ठाणा० ४५८।

अहीणपुन्नपंचिंदियसरीर-अहीनानि-स्वरूपत पूर्णानि सङ्ख्यया, पुण्यानि वा-पूतानि पञ्चेन्द्रियाणि यत्र तत्तथा तदेवंविधं शरीर यस्य स। भग० ५४१।

अहीणो - अहीन, प्रकृष्ट, अधानो वा स्वायत्त। प्रश्न० १३९।

अहीनग्रहण-समग्रहणम्। व्य० प्र० ८६ आ।

अहीलणिज्ज - अहीलनीयम् अज्ञातुमनुज्ञातम्। उत्त० ३६५।

अहुणुव्वासिय-अधुना यदुद्गमितम्। ओघ० ५७।

अहुणोत्तणो-अधुनातन। आव० ४२१।

अहुणोववन्ने-अधुनोपपन्न, अचिरोत्पन्न। ठाणा० १८७।

अहुमरंतो-स्पन्दयन्। आव० २७३।

अहे-अध, आकाश। सूर्य० ४५। अधशब्दार्थे। बृ० द्वि० १७९ अ। आमन्त्रणार्थो निपात। भग० ४६०। अथ-आनन्तर्यार्थोऽय शब्द। भग० ८३, ८६। गर्तायाम्। उत्त० २१३। भूमितले। प्रज्ञा० ८०। अध। ठाणा० १६२। अथेति परिप्रश्नार्थे। ठाणा० ४०६। अध - अधस्तात् नीचै। भग० २६९। अथशब्दोऽत्र पदत्रयेऽपि त्रयाणामप्याश्रयाणा प्रतिमाप्रतिपन्नस्य साधो कल्पनीयतया तुल्यताप्रतिपादनार्थं। ठाणा० १५७। यथार्थे। ठाणा० ३२४। अधशब्दार्थ। बृ० द्वि० १७९ अ। आधाकर्म। बृ० प्र० ८३ अ।

अहेपन्नगद्धरूवो-अध पन्नगार्द्धरूप, अधस्तन यत्पन्नग स्यार्द्धं तस्यैव रूपमाकारो यस्य स, अध पन्नगार्द्धवदति सरलो दीर्घश्च। जीवा० २०६। अध -अधस्तन यत्पन्न गस्यार्द्धं तस्यैव रूपम्-आकारो यस्य स। जीवा० २६१।

अहेऊहिं - अहेतुभि, क्रियावाद्यादिपरिकल्पितकुहेतुभि। उत्त० ४४९।

अहेवाए-अधोवात गोऽध उद्गच्छन् वाति वात स। जीवा० २९।

अहेविगडे - अधोविकटे-अध -कुड्यादिरहिते छन्नेऽप्युपरि तदभावेऽपि च। आचा० ३०९।

अहेचियड-पार्श्वतोऽप्यावृत गृहम्। बृ० द्वि० १८१ अ।

अहेसणिज्जे - यथाऽसावुद्गमादिदोषरहित एषणीयो भवति तथाभूतो दुर्लभ। आचा० ३७६। यथाऽसौ मूलोत्तर गुणदोषरहितत्वेनैषणीयो भवति, तथाभूतो दुर्लभ इति। आचा० ३६८।

अहेसि-अभूवम्। आव० १४६। अभूत्। उत्त० ४९६।

अहो-अध अर्वाक्। आव० ८७७। दीनभावे, विस्मय, आमतणे य। दश० चू० ९६। उद्गतोऽतोऽनुक्रम्। नि० चू० तृ० ५३ आ।

अहोकाय-अध काय पादलक्षण। आव० ५४७।

अहोत्था-अभूत्। उत्त० ४७५।

अहोधार-अहतधारा वर्षा। आव० ७९१।

अहोधिय - नियतक्षेत्रविषयोऽवधिर्यस्य स्वरूप ज्ञानदर्शनम्। ठाणा० ४७३।

अहोरत्ता-अहोरात्रा -त्रिंशन्मुहूर्तप्रमाणा। ठाणा० ८६।

अहोरत्ते-अहोरात्रम् । भग० ८८८ ।

अहोराइयाभिक्खुपडिमा – अहोरात्रप्रमाणा एकादश भिक्षुप्रतिमा । सम० २१ ।

अहोलोए-अधोलोक , तिर्यग्लोकस्याधस्ताल्लोक । प्रज्ञा० १४४ ।

अहोलोयतिरियलोए-अधोलोकतिर्यग्लोक , यदधोलोकस्योपरितनमेकप्रादेशिकमाकाशप्रदेशप्रतर यच्च तिर्यग्लोकस्य सर्वाधस्तनमेकप्रादेशिकमाकाशप्रदेशप्रतरम् , एतद्वयमपि । प्रज्ञा० १४४ ।

अहोवाए-अधोवात , अध उद्गच्छन् यो वाति वात स । प्रज्ञा० ३० ।

अहोविहारो-आश्चर्यभूतो विहार । आचा० १०७ ।

अहोवेइया – अधोवेदिका, यत्र जान्वोरधो हस्तौ कृत्वा प्रतिलिख्यते सा । ओघ० ११० । जाणू हेट्ठाओ द्विलेसु हत्थेसु पडिलेहेति । नि० चू० प्र० १८२ अ ।

अहोसिरा-अध शिरस , अधोमुखा । ज० प्र० १५४ ।

आ

आगुल-व्याक्षिप्त । नि० चू० प्र० ३४७ अ ।

आटरगमाद्दि-वनस्पतिविशेष । नि० चू० द्वि० १५७ अ ।

आइ-निपात । भग० ६७५ । विस्मयतक्षयन्ते । ठाणा० ५२३ । वाक्यालङ्कारे । भग० १०६ । वाक्यालङ्कारार्थे । प्रश्न० ११७ । अलङ्कार । प्रश्न० १२६ । वाक्यालङ्कार, अवधारणे वा निपात । उपा० २७ । आदि–धर्मस्य प्रथमा प्रवृत्ति । जीवा० ०५५ । गणितप्रक्रियाया आदि (आगा पर्यन्त्यायाग)। सूत्र० १ । यस्मात्परमस्ति न पूर्वम् । अनु० ५४ । स्वभेद । अनु० ३४ ।

आइत्तिणिया-दासी तस्य सुन्दरेत परिकर्मणोनाम स प्रा मए करल कथयति सा य तत गिर्ले–वदित मद्दत कं कथयति परिय मिट्ठे पण्हहह । वृ० प्र० ११० अ ।

आइमत्ता-सार्धचित्तव । वृ० तृ० ०४० अ ।

आइय(ग)रे-आदिकर , आदौ–प्रथमत धुतधर्मम् आचाराविकमर्थ करोति–तदर्थप्रणायकत्वेन प्रकाशयतीति । भग० ७।

आइक्खति-आख्याति, सामान्यत कथयति । भग० ९८ । ईषद् भाषन्ते । ठाणा० १३६ । आचष्टे । आचा० १७८ ।

आइक्खगा-आख्यायका , शुभाशुभकथका । ज० प्र० १४२ । य शुभाशुभमाख्याति । प्रश्न० १४१ ।

आइक्खणं-कहितोच्चारणम् । वृ० तृ० २५ अ ।

आइक्खिए-मातङ्गविद्या यदुपदेशान्तीतादि कथयन्ति ते डोम्बो वधिरा इति लोकप्रतीता । ठाणा० ४५१ ।

आइगर-आदिकर , ऋषभनामा भगवान् । उत्त० ६२० ।

आइच्च – आदित्य , अर्चिमाल्यविमानवासी द्वितीयो लोकान्तिकदेव । भग० २७१ । आदित्यमासो येन कालेन दित्यो रासिं भुंक्ते । सम० ५६ । आदित्य । आव० १३५ । सूर्य० २९२ ।

आइच्चजसाई-आदित्ययश प्रभृति । नन्दी २४२ ।

आइच्चजसे-आदित्ययशा, भरतचक्रिपुत्र । ठाणा० ४३० ।

आइच्चपेढ-आदित्यपीठम् । आव० १४६ ।

आइच्चसवच्छरे-आदित्यसंवत्सर , युगभाविसंवत्सरविशेष । सूर्य० १६८ । 'पुढविदगाण' मित्यादिलक्षण संवत्सरविशेष । सूर्य० १७१ ।

आइज्ज-आदेय –रम्य । प्रश्न० ८३ ।

आइज्जा आदया दर्शनपथमुपगता, उपादेया सभगा त । जीवा० २७१ ।

आइट्ठ-विशिष्टम् । वृ० तृ० ६६ अ । आविद्ध-अविद्धा । ठाणा० ३२८ ।

आइ(य)ड्ढि – आत्मर्द्धि, आत्मशक्ति आत्मलब्धिर्वा । भग० १०७ ४१० ।

आइणग-चर्ममय वस्त्रम् । जं० प्र० ३६ । मृगचर्मनिष्पन्नानि । आचा० ३९४ ।

आजिनक चर्ममया वस्त्रविशेष । भग० ५४० ।

आइण्ण – आकीर्णम् , समन्ताद्व्याप्तम् । भग० १५१ । गम्यार । आकर्णनाविशेषा । आव० ४८ । आकीर्णम् । नि० चू० द्वि० १०७ अ । आकीर्णम् । वृ० तृ० ३३० अ ।

आइण्णता–आनयन् । आव० ६२० ।

आइण्णपोग्गल । वाचनान्तरे अनेकविधाह्यो ज (सर्व) निर्गत । नि० चू० तृ० ४१ अ ।

आइण्णा-आकीर्णा । नि० चू० प्र० १८६ अ । राजादयो मिन्ना । नि० चू० प्र० १८६ अ । राजा । भग० ३३३ ।

आइण्णे-पश्चात् सदृशा ज्ञातम् । उत्त० ६१४ । सम० ३६ ।

आइण्णो-आकीर्णं, गुणैर्व्याप्तः । जीवा० २७० । जात्यः । औप० ७१ । रित्तमिव रत्तिणं गुणेहिं जयविजयाईहिं आपूरिओ, अस्सो जातिरेव या । दश० चू० १६५ ।

आइद्ध-आरब्ध । (मर०) । आदिग्धः, आश्लिष्टः । प्रश्न० ४१ । आविद्धः, प्रेरितः । आव० ६०२ ।

आइन्नं – आचीर्णम्, आसेवितम् । आचा० ५ । आयरियपरंपरएण थालुवलाओ आदिण्णं जिम्मीगोरत्तराइ आसेवित त आइन्न । नि० चू० द्वि० १५७ आ । आत्मीयात्मीयाऽऽवासमर्यादानुलङ्घनेन व्याप्ताः । भग० ३७ । कल्प्यम् । पिण्ड० १६५ । आकीर्णम्-राजकुलसङ्कुलादि । दश० २८० ।

आइन्नवर-जात्यप्रधानः । भग० ३२२, ४८१ ।

आइन्नसंलिक्खं-हयादिचिह्नाकीर्णं । आचा० ३८१ ।

आइन्ना-आकीर्णानि, गुणवन्ति । जं० प्र० २३२ ।

आइन्ने-आकीर्णः, आकीर्यते-व्याप्यते विनयादिभिर्गुणैरिति जात्यादिगुणोपेतं । उत्त० ३४९ । व्याप्त. । उत्त० ३४८ ।

आइन्नो-आकीर्णं, गह्वीर्णं, गुणव्याप्तो मनुष्यजन. । औप० ७ । विनीत. । उत्त० ४८ । आचार्यगुणैराचारश्रुतसंपदादिभिर्व्याप्तः-परिपूर्णः । उत्त० ५५ ।

आइमउ-आदिमृदु, प्रथमतः कोमलम् । अनु० १३१ ।

आइमूल-वृक्षादिमूलो यथावाथं कारणम् । आचा० ८७ ।

आइयणं-अदनं, भक्षणम् । आचा० ७२६ । व्य० प्र० १८० अ । भोजनम् । बृ० द्वि० १२६ आ । समुद्देशनम्-भोजनम् । बृ० तृ० ४ आ । आपानम् । बृ० द्वि० ३४ अ । ठाणा० ३३१ । भूय प्रत्यापिबामि । बृ० तृ० १८५ आ ।

आइयंति-आददति, गृह्णन्ति, वधन्तीत्यर्थः । ठाणा० ३२० ।

आइयति-आदत्ते । उत्त० १९८ ।

आइलं-आविलम्-गडुलम् । जीवा० ३१० ।

आइल्लचंदसहिय-आदित्यचन्द्रसहितः । सूर्य० २८० ।

आइसुय – आदिश्रुतः, सामायिकादिश्रुत. । बृ० प्र० ३८ आ ।

आइसुरं-प्रथमकलम् । बृ० तृ० २४९ आ ।

आइक्खइ-आविश्यते-अधिशीयते । भग० ७४९ ।

आई-आदिः, संसारः, धर्मकारणानां वाऽऽदिभूतं शरीरम् । सूत्र० ११२ । सामीप्यम्, व्यवस्था, प्रकारः, अवयवश्च । प्रश्न० ७ । निर्वेदः । औप० ५ ।

आईण-आनीतः, आ-समन्तादनीव इतो-गतोऽनाद्यनन्ते संसारे । आचा० २८५ ।

आईणं-आजिनकम्, चर्ममयं वस्त्रम् । जीवा० १९३ ।

आईणगं-आजिनकम्, चर्ममयं वस्त्रम् । जीवा० २१० । औप० ११ । जं० प्र० ५५ । जं० प्र० १०७ । निरया० १ ।

आईय-आ समन्तादनीव इतो-गतोऽनाद्यनन्ते संसारे भ्रमणम् । आचा० २८६ ।

आईयट्ठे-आ-समन्तादतीव इताः-ज्ञाताः परिच्छिन्ना जीवादयोऽर्था येन सोऽयमातीनार्थः आदत्तार्थो वा, यदिवाऽतीता.-सामस्त्येनातिक्रान्ता अर्था·-प्रयोजनानि यस्य स तथा, उपरतव्यापार । आचा० २८६ ।

आउं – वैदकम् । आव० ६६० । भावितनिष्ठेनव· कार्मपुद्गला । आचा० १०२ ।

आउंटणं – आकुञ्चनम्, गात्रसङ्कोचलक्षणम् । आचा० ५७४ ।

आउंटणपसारणं-आकुञ्चनप्रसारणम् । आव० ८०३ ।

आउंटियं-सङ्कोचितम् । भग० ६३१ ।

आउ-आयु, स्थिति । भग० २३६ । उत्ताहो । सू० प्र० २१० अ । एति-उपक्रमहेतुभिरनपवर्त्यतया यथास्थितं वानुभवनीयतां गच्छतीति । उत्त० ३३५ । जीवितं । ठाणा० १०८ । आयु, कर्मविशेष । ठाणा० ३२० ।

आउकाए-अप्काय, पूर्वसमुद्र, पश्चिमसमुद्रो वा । सूर्य० ४७ ।

आउक्खएणं-आयु क्षयेण, आयु पूर्णीकरणेन । आचा० ४२१ ।

आउखेम – आयुक्षेम-आयुष सम्यक् पालन । आचा० १९० । जीवितं । आचा० २५१ ।

आउज्जं-आतोद्यम्, वादित्रं, मृदङ्गादि । आव० ५२८ । पटहभेरीवंशवीणाझल्लर्यादीनि । आचा० ६१ ।

आउज्जंगं-आतोद्याङ्गम्, आतोद्यकारणम् । उत्त० १४३ ।

आउज्जिय-आयोजिक, उपयोगवान्, ज्ञानी । भग० १८० ।

आउज्झिया-आयोजिका, आ-मर्यादया केवलिदृष्ट्या योजनं-शुभानां योगानां व्यापारणम्। प्रज्ञा० ६०४।

आउज्झियाकरणं-आयोजिकाकरणम्। प्रज्ञा० ६०४।

आउज्जीकरणं-आवर्जीकरणम्, उदीरणावलिकायां कर्मप्रक्षेपव्यापाररूपम्। औप० ११०। आवर्जितकरणम्। प्रज्ञा० ६०४।

आउज्जो-आवर्जः, आत्मानं प्रति मोक्षस्याभिमुखीकरणं-आत्मनो मोक्षं प्रत्युपयोजनमिति, अथवा आवर्ज्यते-अभिमुखीक्रियते मोक्षोऽनेनेति वा-शुभमनोवाक्कायव्यापारविशेषः। प्रज्ञा० ६०४।

आउट्ट-आकुट्टम्, आलजालम्। उत्त० १४६। आवर्जितः। बृ० द्वि० ३४ आ।

आउट्टइ-आवर्त्तते, प्रवर्त्तते। भग० २८९।

आउट्टणं-आकम्पनम्। बृ० तृ० ८५ अ।

आउट्टणया-आवर्त्तना, आवर्त्तते-ईहातो निवृत्यापायभावं प्रत्यभिमुखो वर्त्तते येन बोधपरिणामेन सः, तद्भावः, अपायपर्यायः। नन्दी १७६।

आवट्टति-निवर्त्तते। सूत्र० १९०। आवर्त्तते-निवर्त्तते तमालोचयतीत्यर्थः। ठाणा० १३९। करोति। नि० चू० प्र० २५६ अ।

आउट्टा - आराधिता। बृ० द्वि० ११२ अ। आवर्जिता। ओघ० १५९।

आउट्टामो-प्रवर्त्तामिहे। आचा० ३३१।

आउट्टाविज्ज-अभिमुखयेत्। आचा० ३६४।

आउट्टिआए-आकुट्या-उपेत्य। सम० ३९।

आउट्टिज्जमाणं -आकोट्यमानम्, सङ्कोच्यमानम्। सूत्र० २९८।

आउट्टि-उपेत्य। व्य० प्र० १६ आ।

आउट्टिय-ज्ञात्वा। आव० ७५८। उत्तमार्थकृतः आहारः। नि० चू० द्वि० ५७ आ।

आउट्टिया-आवट्टिया नाम आभोगो जानान इत्यर्थः। नि० चू० द्वि० ५९ आ। आवर्जिताः। बृ० द्वि० १८६ आ।

आउट्टी-समाधानम्। बृ० तृ० १२३ आ।

आउट्टे - कर्मभिलषेत्। आचा० ४१७। निवर्त्तयेत्। आचा० १११। आवर्तयेत्-अनुकूलयेत्। व्य० द्वि० २८९ आ। आवृत्तः-व्यवस्थितः। आचा० २७९। समन्तात् व्यवस्थितः। आचा० २७९।

आउट्टेउं-आवर्ज्य। बृ० तृ० ३४ अ।

आउट्टो-व्यावृत्तः। उत्त० ३३२। आवर्जितः। हृष्टः। उत्त० ३३३। स्वस्थः। उत्त० ३५५। आव० ३२०। उत्त० १०८। आवृत्तः। आव० ५७८, २९४, ५३६ २८७। उत्त० ३३४। आवर्जितः। आव० ४१२।

आउडिज्जमाण-'जुड' बन्धने, इतिवचनाद् 'आजोड्यमानेभ्यः' आसम्बध्यमानेभ्यो मुखहस्तदण्डादिना सह शङ्खपटहझल्लर्यादिभ्यो वाद्यविशेषेभ्य आकुट्यमानेभ्यो वा एभ्य एव ये जाताः शब्दास्ते, आजोड्यमाना आकुट्यमाना एव वोच्यन्ते, अतस्तानाजोड्यमानानाकुट्यमानान् वा शब्दान् शृणोति, इह च प्राकृतत्वेन शब्दशब्दस्य नपुंसकनिर्देशः, अथवा आकुट्यमानानि-परस्परेणाभिहन्यमानानि। भग० २१६।

आउडेइ-आजुडति, सम्बद्धं करोति, लिखति। जं० प्र० २५०। आकुट्टयति, ताडयति। जं० प्र० ३३४। आकुट्टयति। भग० १७३।

आउत्त-आयुक्तम्, उपयोगपूर्वकम्। भग० १८४। सम्यक् प्रवचनमालिन्यादिरक्षणतया। प्रज्ञा० २६८। उपयुक्तः। ठाणा० ४०९। प्रयत्नपरो मरणाराधनयुक्तः। उपयुक्तः। औप० २०२। उपयोगतत्परम्। ओघ० १७६। आयुक्तः। व्य० द्वि० २६६ अ।

आउत्तगो-आवर्तकः। उत्त० ३०४।

आउत्तियं-आयुक्तिकम्। उत्त० ११९।

आउत्तो-आयुक्तः, व्यवस्थितः। दश० २२६।

आउय-आयुष्कम्, जीवितम्। आव० ३४१। आयुष्ककालः, देवायायुष्कलक्षणः। आव० २५७।

आउयकम्मस्स गालणा-आयुःकर्मणो गालनं, प्राणवधस्य द्वादशः पर्यायः। प्रश्न० ५।

आउयकम्मस्स निट्ठवणं-आयुःकर्मणो निष्ठापनम्, प्राणवधस्य द्वादशः पर्यायः। प्रश्न० ५।

आयुकम्मस्स भेय -आयुःकर्मणो भेदः, प्राणवधस्य द्वादशः पर्यायः। प्रश्न० ५।

आउयकम्मस्स संवट्टगो-आयुःकर्मणः संवर्तकः, प्राणवधस्य द्वादशः पर्यायः। प्रश्न० ५।

आउयकम्मस्सुयद्दयो–आयुःकर्मण उपद्रव, प्राणवधस्य द्वादश पर्याय । प्रश्न० ५।

आउयबंधद्धा–आयुर्बन्धाद्धा । प्रज्ञा० ४८९ ।

आउयसंवट्टय–आयुःसंवर्तक–आयुरुपक्रम । ठाणा० ६७।

आउर–आतुर, शरीरदुःखेनागन्तुकेन वा रोगेण ग्लान । दश० २७०। क्षुधा पिपासया वा पीडित । व्य० प्र० २३ आ। दृष्टान्त । नि० चू० प्र० २०२ आ। आतुर, क्वचिदपि स्वास्थ्यमलभमान सन् आकुल ।जीवा० १२२। आतुर –दुःस्थ । भग० ७०५। ग्लाने सति प्रतिजागरणार्थं (प्रतिसेवा)। ठाणा० ४८४। अत्यन्ताकुलतनु । उत्त० ८६। कामेष्वाऽन्धा'। आचा० २३८। प्रतिसेवनाभेद'। भग० ९१९। आतुर, चिकित्साया अविषयभूत'। विपा० ७६। चिकित्साया अविषयभूतो रोगी। सू० प्र० २८१ आ। मर्तुकाम । उत्त० २७३।

आउरपच्चक्खाण – नोपूर्वश्रुतप्रत्याख्यानभेद । विशे० १३२०। प्रकीर्णकनाम। आव० ८०४। श्रुतप्रत्याख्यानम्। आव० ४७९। अस्वास्थ्यमना । आचा० ७२। आतुर –चिकित्साक्रियाव्यपेत तस्य प्रत्याख्यानवर्णनम्। नंदी २०६। अपूर्वश्रुतप्रत्याख्यानम्। आव० ४७९।

आउरसरणं–आरोग्यशाला। दश० चू० ५१।

आउरस्सरण–आतुरशरणम्, दोषातुराश्रयदानम्। दश० ११८। आतुरस्मरणम्, क्षुधाद्यातुराणां पूर्वोपभुक्तस्मरणं नानाचरितम्। दश० ११७।

आउरीभूएहिं–आतुरीभूतै, आतुरीभूतै ।सू०प्र० ३६अ।

आउल–आकुलम्। व्यग्रम्। आव० ५८५। प्रचुरम्। भग० ९५। आकुल, व्याप्त। विशे० ४२६। संकुलं, आकीर्णं वा। सम० ५३।

आउलगमणं–आकुलगमन–एकत्र मिलिता गच्छन्ति।ओप० १२६।

आउलमाउल–आकुलाकुलम्, दयाभिरिभोगविवाहयुद्धादिसंदर्शननानाप्रकारम्। आव० ५७४।

आउला–आकुला, त्वरमाणा। सू० द्वि० ६५ अ।

आउलाकुल–आकुलाकुल, अनिष्पाकुल । प्रश्न० ५०।

आउली–तरुविशेष । जीवा० १९१।

आउलो–आकुल, अभिभूत । आव० ०८९।

आउसं – आयु–जीविते तत्संयमप्रधानतया प्रशस्तं प्रभूतं वा विद्यते यस्यासावायुष्मान्तस्यामन्त्रणम्। ठाणा० ५।

आउसंत–आयुष्मान्, शिष्य। दश० ११७। आवसन् गुरुमूलमावसन् वा। दश० ११७।

आउसंतेणं–आयुष्मता, धर्माचार्यमर्यादया गुरून् सेवमानेन। उत्त० ८०। भगवतैतस्य विशेषणमायुष्मता–चिरजीविता। सम० २। धर्माचार्यमर्यादया गुरूनासेवमानेन। ठाणा० ९। आयुष्मदन्ते, आयुष्मता। नंदी २१२। आयुष्मतेन–प्रीतिवचनमेतत्। सम० २। हे आयुष्मन्। सम० २। नंदी २१२। आमृशता–गुरुपादयुगं संस्पृशता। सम० २। गुरुमूलमावसता। दश० ११०। आवसता गुरुकुले। सम० २। आयुष्मन्, शिष्यामन्त्रणम्। उत्त० ८०।

आउसंवट्टणं आयुरुपक्रम । नि० चू० प्र० २३४ अ।

आउसणाहिं–आक्रोशना मृतोऽसि त्वमित्यादिभिर्वचनै । भग० ६८३।

आउसेइ–आक्रोशयति, शपति। भग० ६८३।

आउसो–आयुष्मन्, पुत्रादेरामन्त्रणम्। भग० १३०।

आउस्स–आक्रोश, असभ्यवचनरूप । सूय० ९३।

आउस्सियकरणं – आवश्यककरणम्, आवर्जीकरणम्। प्रज्ञा० ६०४।

आउह–आयुधम्, क्षेप्यं शस्त्रम्। प्रश्न० ४७। अक्षेप्यम्। विपा० ४६। खेटकादि। जीवा० २७९। क्षेप्यास्त्रम्। भग० १९४। शस्त्रम्, अथवाऽऽयुध–अक्षेप्यशस्त्र खड्गादि। भग० ३१८।

आउहसाला–आयुधशाला–शस्त्रागारम्। आव० १४८।

आऊ–आयु एति–आगच्छति प्रतिबन्धकतां स्वकृतकर्म नरकादिकुगतेर्निष्क्रमितुमनसो जन्तोरिति। अथवा आ–समन्तादेति–गच्छति भवाद् भवान्तरसंक्रान्तौ जिवो दयमिति वा। प्रज्ञा० ४५४।

आए–अनन्तकाय –वृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३३।आगमन। ठाणा ११९।

आएस–प्राघूर्णक । ओप० ६७। निर्देश । नि० चू० प्र० १९ आ। प्राघूर्णक आयात । ओप० १०१। अग्र। नि० चू० प्र० २८० आ। आदेश–कृत्रिमकृतभृकुटीभंगादय । आचा० ९१। प्राघूर्णक । आचा०

१२६, ३५२। वर्मकरादि । आचा० ४१५। व्यापारनियोजना। आचा० ३१८। दर्शन । आचा० २६१। आदिश्यते इत्यादेश आचार्यपारम्पर्यश्रुत्यायातो वृद्धवादो, यमेतिह्यमाचक्षते। आचा० २६१। वृद्धवाद । आचा० २६३। प्राधूर्णक । ठाणा० ११८। उपचारो, व्यवहार (देशे प्रधाने च)। ठाणा० २२३। एतद्गृविष्यतीत्यादिनिर्णय । उपा० मा० गा० ११५। आज्ञा, विशेष, आङिति मर्यादया विशेषरूपानतिक्रमात्मिकया दिश्यते-कथ्यत इति। उत्त० ३२। प्राघूर्णकसाधु । आव० २६३। प्राघूर्णक । ओघ० १८३। आदेश -प्रकार सामान्यविशेषरूपस्तत्र यादेशेन-ओघतो द्रव्यमात्रतया न तु तद्गतसर्वविशेषापेक्षयेतिभाव, अथवा आदेशेन-श्रुतपरिकर्मिततया। भग० ३५७। आदेश, कथनम्। उत्त० ५४७। सकलदेशिग्राह्यो दृष्टान्त । बृ० द्वि० १३५ आ। उपचार । विशे० ११३५। प्राघूर्णक । नि० चू० प्र० १४ आ। पाहुणक। नि० चू० प्र० २९३ आ। प्राघूर्णक । बृ० द्वि० १९५ अ। प्रायश्चित्तप्रकार । बृ० द्वि० ९८ आ। सूत्रमुच्यते। विशे० २३१। आदशो नाम ज्ञातव स्तुप्रकार। स च द्विविध -सामान्यप्रकारो विशेषप्रकारश्च। विशे० ३३०। असत्यार्थदेश । प्रश्न० १०। विध्यन्तरम्। दश० १३। व्यपदेश । आचा० ७४। अभ्यर्हितप्राहुणकम्। उत्त० २०२। अधिकार । बृ० प्र० २७६ आ। प्रकार । विशे० ९२२। अनुज्ञा। व्य० द्वि० ३४६ अ। उपचार, व्यवहार, स च बहुतरे प्रधाने वाऽऽदिश्यते। ठाणा० १२३। नयान्तरविकल्प । व्य० द्वि० ३५४ आ। आदिश्यते-आज्ञाप्यत इत्यादेश -कर्मकरादि । आचा० ४१५।

आएसणं-आवेशन अयस्कारकुम्भकारादिस्थानम्। औप० ६६।

आएसणाणि – आदेशनानि-लोहकारादिशाला। आचा० ३२६।

आएसपर-आदेश -कर्मकरादि स चासौ पश्चादेशपर। आचा० ४१५।

आएसा-आदेश, प्रतिवचनमुपादव्ययध्रौव्यवाचकं पदत्रयम्। विशे० २९८।

आएसारि-आगमिता। सूत्र० ७६।

आएसिय-आदेशम्, विभागौद्देशिकस्तृतीयभेद। पिण्ड० ७६।

आओ-आय, प्राप्ति । विशे० ४५०। उत्ताहो। बृ० द्वि० ७ अ। लाभ । आव० ३४२। लाभ, उपादान, हेतु । विशे० ५४३। ज्ञानादिलाभायहेतुत्वादध्ययनम्। ठाणा० ६। भूमिस्तोमकविशेष । आचा० ५७।

आओग – आयोग, द्विगुणादिवृद्ध्या अर्थप्रदानम्। भग० १२५। द्विगुणादिवृद्ध्यर्थं प्रदानम्। जं० प्र० १३२। अर्थलाभ । औप० १२। अर्थोपाय यानपात्रोद्गमण्डिकादि । सूत्र० ४०७। परिकर । औप० ६३।

आओगपओगसंपउत्ताइं आयोगेन – द्विगुणादिलाभेन द्रव्यस्य प्रयोग -अधमर्णाना दान तत्र सम्प्रयुक्तानि-व्यापृतानि तेन वा सम्प्रयुक्तानि-सङ्गतानि तानि। ठाणा० ४२२। आयोगो-द्विगुणादिवृद्ध्याऽर्थप्रदान, प्रयोगश्च-कलान्तरं तौ सम्प्रयुक्तौ-व्यापारितौ यैस्ते। भग० १२५।

आओगपयोगसंपउत्ते -आयोगप्रयोगा -द्रव्यार्जनोपायविशेषा सम्प्रयुक्ता -प्रवर्तिता येन। ठाणा० ४२३।

आओडावेइ-आखोटयति, प्रवेशयति। विपा० ७२।

आओसे-प्रदोषे। ओघ० ७६।

आओसेज्जा-आक्रोशयेत्। उपा० ४२।

आओहण-आयोधनम्, (युद्धम्)। ठाणा० ४०२।

आकंदिय-आक्रन्दितम्, ध्वनिविशेषकरणम्। प्रश्न० २०।

आकंपइत्ता-वैयावृत्त्यादिभि आकम्प्य-आवर्ज्य। ठाणा० ४८४। यदाऽऽचनाऽऽचार्यं वैयावृत्यकरणादिनाऽऽवर्ज्य यदालोचनम्। भग० ९१९।

आकड्ढविकड्ढि-आकर्षविकर्षिकाम्। भग० ६८५।

आकड्ढि-आकर्षि । भग० ६८३।

आकड्ढविकड्ढि करेइ-आकड्ढविकड्ढिं करोति आकर्षविकर्षिका करोति। भग० १६७।

आकरणम् – आगरण आह्वानम्। आव० २०४।

आकासम् आङिति मर्यादाभिव्याप्त्या काशत इति। उत्त० ६७७। स्वभावावकाशनात् आ-मर्यादया काश्यन्ते-दीप्यन्ते पदार्थाश्चार्या यत्र तत्। आ-अभिविधिना काश्यन्ते-दीप्यन्ते पदार्था यत्र तत्। अनु० ७४। आङिति मर्यादया-स्वस्वभावापरित्यागरूपया काशन्ते-स्वरूपेणैव प्रतिभासन्ते तस्मिन् पदार्था इति। उत्त० ६७७। बृ० प्र० ९१ अ।

आकासगा – आकाशगा भूतविशेषा। प्रज्ञा० ७०।

आकासादि-आश्चर्य । आचा० ३७८ ।
आकासिह-खाद्यविशेष । जं० प्र० ११८ ।
आकिण्ण-अतिकीर्ण । नि० चू० तृ० १३ अ ।
आकुट्टि-हिंसा । आचा० ३०५ ।
आकुट्टिय-उपेत्य । बृ० तृ० १२२ आ ।
आकुल-आकुल, व्याप्त । जं० प्र० १८८ ।
आकूतम्-अभिप्रेतम् । विशे० ८८५ ।
आकृष्टिविकृष्टि । व्य० प्र० ९४ आ ।
आकेवलिआ-आकेवलिका, न केवल अकेवलम्, तत्र भवा आकेवलिका -सद्वन्द्वा -सप्रतिपक्षा इतियावत् असम्पूर्णा वा । आचा० २४१ ।
आकोट्टिमं - आकुट्टिक यथा रूप्यकोऽधस्तादपि उपर्यपि मुख कृत्वाऽऽकुट्यते । दश० ८६ ।
आकोडन-आकोटनम्, कुट्टनेनाङ्गे प्रवेशनम् । प्रश्न० ५७ ।
आकोडेमाणे - आउडेमाणे, आकुट्यमानम्, आहन्यमानम् । भग० २५१ ।
आकोसायंत-आकोशायमानम्, विकचीभवत । जीवा० २७१ । जं० प्र० ११९ ।
आक्षोधुका-क्षुधा रहिता । दश० १२७ ।
आख्यातिकम्-क्रियाप्रधानत्वात् धावतीति । अनु० ११३ ।
आख्यायिकास्थानानि - अक्खाइयठाणाणि, कथानकस्थानानि । आचा० ४१३ ।
आगतागारं-गामपरिसट्ठाण, आगतागारं-बहिया वासो । नि० चू० प्र० १८३ अ । आगन्तुकाना कार्पटिकादीनाम गारमागन्तागारम् । सूत्र० ३९३ । ग्रामादेर्बहिरागत्यागत्य पथिकादयस्तिष्ठन्ति । आचा० ३६५ ।
आगतार-यत्र गारिणं आगत्य तिष्ठन्ति तदागन्तुकागारम् । बृ० तृ० ४८ आ । प्रत्याययाता आगत्य वा यत्र तिष्ठन्ति तदागन्तारम्, तत्पुनर्ग्रामाद्बहिस्थानं बहि स्थान तत्र । आचा० ३०७ । आगन्तागारम् (धर्मशाला) । आचा० ३०१ । पत्तनाद्बहिर्गृहम् । आचा० ३४८ ।
आगतु-आगन्तुक पथिकादिरगारस्थजनो यत्रागत्य सन्निष्ठते । बृ० द्वि० १७९ आ ।
आगतुओ-आगन्तुक, कण्टकादिप्रभव । आव० ७६४ ।
आगतुगो-आगन्तुक । आव० २७० । आगतुएण सत्थातिगाकओ चो गो । नि० चू० प्र० १८८ आ ।
आगंतुय-आगन्तुक । दश० १०८ ।
आगंतू-आगन्तुक । उत्त० १९३ ।
आगंपिया-वशीकृता । नि० चू० द्वि० ९७ अ ।
आगइ-आगति, प्रत्यावृत्त्या-प्रातिकूल्येनागमनम् । आव० २८१ । प्रज्ञापकप्रत्यासन्नस्थाने आगमनम् । ठाणा० ११३ ।
आगम - आगमनम्-आगम -आ-अभिविधिना मर्यादया वा गम -परिच्छेद इति । आव० २६ । आचार्यपारम्पर्येणागत, आप्तवचनं वा । अनु० ३८ । आगम्यन्ते-परिच्छिद्यन्ते अर्था अनेनेति, केवलमन पर्यायावधिपूर्वचतुर्दशकदशकनवकरूप । ठाणा० ३१७ । सूत्रार्थोभयरूप । आव० ५२४ । आगम्यन्ते-परिच्छिद्यन्ते अर्था अनेन इति आगम -आप्तवचनसम्पाद्यो विप्रकृष्टार्थप्रत्यय । ठाणा० २६२ । गुरुपारम्पर्येणागच्छतीति आगम, आ-समान्ताद्गम्यन्ते-ज्ञायन्ते जीवादय पदार्था अनेनेति वा । अनु० २१९ । आप्तप्रणीत । आचा० ४८ । (आगममिद) । ठाणा० २५ । सूत्रम् । आव० ६०४ । श्रुतपर्याय । विशे० ४१६ । अध्ययनम् । आव० ३०० । आगम, प्राप्ति । दश० १६ । सद्ग्रहम् । बृ० प्र० ३२ आ । अर्थपरिज्ञानम् । व्य० प्र० २५१ आ । आ-अभिविधिना सकलश्रुतविषयव्याप्तिरूपेण मर्यादया वा यथावस्थितप्ररूपणारूपया गम्यन्ते - परिच्छिद्यन्तेऽर्था येन स । नदी २४९ । आगच्छति गुरुपारम्पर्येणेत्यागम । भग० २२२ । आगम । विशे० ४३२ ।
आगमकुसला-आगम -श्रुतिस्मृत्यादिरूपस्तस्मिन् कुशलाघागमकुशली । उत्त० ५२१ ।
आगमणं-प्रयोजनपरिसमाप्तौ पुनर्वसति गमनम् । आव० ५७३ । आकसण । नि० चू० तृ० ६३ आ ।
आगमणगिहं - सभाप्रपादेवकुलादिपथिकस्थानम् । बृ० द्वि० १७९ आ । आगमनगृह-सभाप्रपादि, पथिकादीनामागमनेनोपेन, तदर्थं वा गृहम् । ठाणा० १५७ ।
आगमत -आगममाश्रित्य (ज्ञानापेक्षयेत्यर्थ) । अनु० १४ ।
आगममाणे - आगमयन्-आपादयन् । आचा० २७८ । २८३ । अवगमयन्, बुध्यमान । आचा० २४५ ।
आगमववहारी-आगमववहारी छव्विहे-केवलणाणी ओहीण्णणी मणपज्जवणाणी चोद्दसपुव्वी अभिण्णदसपुव्वी णवपुव्वी य । नि० चू० तृ० १०० अ । आगमव्यवहारिण,

व्यवहारपञ्चके प्रथमभेदः। व्य० प्र० ५ अ। प्रत्यक्षज्ञानिनः। व्य० प्र० ६३ अ।

आगमसत्थ-आगमशास्त्रम्, आ-अभिविधिना सकलश्रुतविषयव्याप्तिरूपेण मर्यादया वा यथावस्थितप्ररूपणारूपया गम्यन्ते-परिच्छिद्यन्तेऽर्था येन स आगमः, स चैवं व्युत्पत्त्या अवधिकेवलादिलक्षणोऽपि भवति ततस्तद्व्यवच्छेदार्थं विशेषणान्तरमाह-'शास्त्रे'ति शिष्यतेऽनेनेति शास्त्रमागमरूपं शास्त्रमागमशास्त्रम्। नंदी २४९।

आगमियपलगो-ज्ञानः। आव० ३१७।

आगमिओ-आगमितः, ज्ञातः। आव० ४३७।

आगमियं-ज्ञातम्। आव० ११६। ओघ० १०५। ज्ञातः। आव० ३१६।

आगमियाणि-प्राप्तानि, अधीतानि। आव० ४३३।

आगमिस्सं-आगमिष्यम्, आगामि। आचा० १६७।

आगमिस्सभद्दत्ताए - आगमिष्यदिति-आगामिकालभावि भद्रं-कल्याण यस्मिंस्तथा तस्य भावस्तत्ता तया, यदि वाऽऽगमिष्यतीत्यागमः-आगामी कालस्तस्मिन् शश्वद्भद्रतया-अनवरतकल्याणतयोपलक्षितम्। उत्त० ५८५।

आगमिस्सा-आगामिकाल.। आव० ५३२।

आगमेति-जानाति। विपा० ७३।

आगमेयव्वं-आगमयितव्यम्-ज्ञातव्यम्। बृ० प्र० १९२ अ।

आगमेसा-आगमिष्यन्ती। आव० १७४।

आगमेसिभद्दा-आगमिष्यत् भद्रा-द्वितीयभवे अन्तकृत.। उपा० २९।

आगमेस्संति - आगमिष्यामि-गृहीष्यामि। व्य० द्वि० ४१८ आ।

आगमेस्सा-भविष्यतः (मर०)।

आगमेस्साणं-आयत्याम्। आव० ३५८। भविष्यताम्। (महाप्र०)।

आगमोगं-आगमौक, पथिकागारिणां स्थानं, तेषा आगमने वा यद् गृहं तत्। बृ० द्वि० १७९ आ।

आगयं-आगतम्-स्वीकृतम्। आचा० १८१।

आगया-आगता -सिद्धा। रागद्वेषाभावात् पुनरावृत्तिरहिता सर्वज्ञा। आचा० १६७।

आगयपण्हय - आयातप्रश्नवा पुत्रस्नेहादागतस्तनमुखस्रोतोर्थः। भग० ४६०।

आगर - आकर, यत्र खनिवैरो लवणाद्युत्पद्यते। ठाणा० ४४९। उत्पत्तिस्थानम्। (मर०)। अन्त० ७। पृथिव्याद्याकरः। आव० ६२२। लोहाद्युत्पत्तिभूमि। ठाणा० २९४, ७८६। आकरः, हिरण्याकरादिः। प्रज्ञा० ४८। खानि। प्रश्न० ३८। ओघ० ९। रत्नादीनामुत्पत्तिभूमि। प्रश्न० १३४। उत्त० ६०५। हिरण्याकरादिकः। जीवा० २७९। लोहाद्युत्पत्तिस्थानम्। प्रश्न० १२७। अनु० १४२। आगत्य तस्मिन्कुर्वन्तीत्याकरः। आचा० ५। हिरण्याकरादिः। जीवा० ४०। लोहाद्युत्पत्तिस्थानम्। भग० ३६। भिल्लपल्ली भिल्लकोट्टं वा। नि० चू० तृ० ५२ अ। बृ० द्वि० २४६ अ। कुत्रिकापणादिः। बृ० द्वि० २४२ अ। जत्थ धरद्दारिसमीवेसु बहुं जव भुसुद्दं तो। नि० चू० प्र० ६२ अ। रूप्यसुवर्णाद्युत्पत्तिस्थानम्। नंदी २२८। सुवर्णादिरुत्पत्तिस्थानम्। ओघ० १५१। ताम्रादेरुत्पत्तिस्थानम्। आचा० ३२९। सुवर्णादिधातूनां खानि। नि० चू० द्वि० ७० आ।

आगरमहेसु-आकरमहो-खानिमहोत्सव.। आचा० ३२८।

आगररूवं-आकररूपम्। भग० १९३।

आगरिस-आकर्ष -चारित्रस्य प्राप्तिः। भग० ९०५। आकर्ष - तथाविधेन प्रयत्नेन कर्मपुद्गलोपादानम्। प्रज्ञा० ११८। आकर्षणम्, प्रथमतया मुक्तस्य वा ग्रहणम्। आव० ३६३। एकानेकभवेषु ग्रहणानि। आव० १०५। आकर्षमाकर्ष -एकस्मिन्नानाभवेषु वा पुन. पुन सामायिकस्य ग्रहणानि प्रतिपत्तये। अनु० २६०।

आगलणं-वैकल्यम्। व्य० प्र० १३३ आ।

आगलेंति-आकलयन्ति, जेष्याम इत्यध्यवस्यन्ति। भग० १७४।

आगलेइ-गृह्णाति। उप० मा० गा० ३१३।

आगल्लो-ग्लानः। बृ० तृ० १२२ आ।

आगसणं-आकृष्यत इति आगस्रण तं च दविण। नि० चू० प्र० १७४ आ।

आगाढ-कर्कशम्। बृ० द्वि० ७३ आ। तीव्र। आव० ५८८। अत्यर्थम्। व्य० प्र० २५२ अ।

आगाढजोग-आगाढयोग, गणियोग। ओघ० १८१।

आगाढपण्ण-आगाढप्रज्ञ, आगाढा-अवगाढा परमार्थ-

पर्यवसिता तत्त्वनिष्ठा प्रज्ञा-बुद्धिर्यस्यासौ। सूत्र० २३७। शास्त्राणि। व्य० प्र० २२६ अ।

आगाढो-आगाढतरा जम्मि जोगे जतणा सो। नि० चू० प्र० १९७ अ।

आगामिपहं-आगामिपथ, आगामिनी-लब्धव्यस्य वस्तुन पन्था। ठाणा० ९८।

आगार-गृहम्। अनु० २४४। आगार-आक्रियतेऽनेना-मित्येत गायत इति, बाह्यचेष्टारूप। आव० २८१। प्रत्याख्यानापवादहेतवोऽनाभोगादय। आव० ८४०। आ-कार-आक्रियत इत्याकार-प्रत्याख्यानापवादहेतुर्महत्तराद्या-कार। भग० २९६। आकारा-प्रत्याख्यानापवादहेतवोऽना-भोगादय। ठाणा० ४९८। शरीरगता भावविशेषा। व्य० प्र० ६४ आ। प्रतिनियतोऽर्थग्रहणरिणाम। प्रज्ञा० ५२६। तच्छायामात्रम्। प्रज्ञा० २७१। प्रत्याख्यानापवादहेतुरनाभो गादि। आव० ८४०। बाह्यचेष्टारूप। विशे० ८८५। आकृतय, स्वरूपाणि। अनु० १३१। ठाणा० ३९५। दिग वलोकनादि। बृ० प्र० ४३ अ। आकृति। जीवा० २०७। प्रभा। जीवा० २६९। प्रतिवस्तु प्रतिनियतो ग्रहणपरि-णाम। जीवा० १८। मूर्ति। जीवा० २७३। विशेषाज्ञ ग्रहणशक्ति। भग० ७३। स्थूलधीसवेद्य प्रस्थानादिभावा-भिव्यञ्जको दिगवलोकनादि। उत्त० ४४। सन्निवेशविशेष। सूर्य० २९३।

आगारधम्मं-आगारधर्मं द्वादशव्रतरूपो गृहस्थधर्म।

आगारभाव-आकारभाव, स्वरूपविशेष। जं० प्र० १८। जीवा० १७६। आकार एव भाव। आव० ३३८।

आगारभावपडोयारे-आकारभावप्रत्यवतार, आकारस्य-आकृतेर्भावा-पर्याया, अथवा आकाराश्च भावाश्च आकार भावास्तेषां प्रत्यवतार-अवतरणमाविर्भाव। भग० २७७।

आगारभावमायाए-आकारभाव एव आकारभावमात्र। आव० ३३८।

आगारभेए-आकारभेद। प्रज्ञा० ५३१।

आगाल-आगाल, आगालनमागाल-समप्रदेशावस्थानम्। आचा० ५।

आगास-आकाशम्, अनावृतस्थानम्। प्रश्न० १३८। आकाशम्, सर्वद्रव्यस्वभावानाकाशयति-आदीपयति तेषां स्वभावलाभेऽवस्थानदानादिति, आङ्-मर्यादाऽभिविधिवाची, तत्र मर्यादायामाकाशे भवन्तोऽपि भावा स्वात्मन्येवाऽऽगते नाकाशतां यान्तीत्येवं तेषामात्मस्वाद्व्यरणाद्, अभिविधौ तु सर्वभावव्यापनादाकाशमिति। ठाणा० ५५। 'आङ्' इति मर्या-दया स्वस्वभावापरित्यागरूपया काशन्ते-स्वरूपेण प्रति-भासन्ते अस्मिन् व्यवस्थिता पदार्था इत्याकाशम्, यद्वा स्वभिविधावाङ् तत 'आङ्' इति सर्वभावाभिव्याप्त्या काशते इत्याकाशम्। प्रज्ञा० ९। आकाशम्-तृणादिरहितम्। बृ० प्र० ९१ अ। आ-मर्यादया अभिविधिना वा सर्वेऽर्था काशन्ते-स्वं स्वभावं लभंते यत्र तदाकाशम्। भग० ७७६। आङिति मर्यादया स्वस्वभावापरित्यागरूपया काशन्ते-स्वरू-पेणैव प्रतिभासन्ते तस्मिन्पदार्था इत्याकाशं, यद्वा स्वभिविधा-वाङ् तदा आङिति-सर्वभावाभिव्याप्त्या काशत इति। उत्त० ६७२।

आगासगामित्तं-आकाशगामित्वम्। ठाणा० ३३०।

आगासगयं-आकाशगतं-व्योमवर्ति आकाशं वा-प्रकाश-मित्यर्थ। गम० ६१।

आगासतल-आकाशतलम्। जीवा० २६९। कटाग्रच्छन्न-कुट्टिमम्। जं० प्र० १०६। आव० ६९५, ६९९।

आगासथिग्गलं-आकाशथिग्गलं, शरदि मेघापान्तराल-वर्त्याकाशखण्डम्। प्रज्ञा० ३६०। शरदि मेघमुक्तमाकाश-खण्डम्। जं० प्र० ३२।

आगासफलिहं-आकाशस्फटिकम्, अतिस्वच्छस्फटिकवि-शेष। जीवा० २५३। जं० प्र० २०५। भग० १०।

आगासफलितोवमा-आकाशस्फटिकोपमा। प्रज्ञा० ३६४।

आगासफलोवमाइ-खाद्यविशेष-। जं० प्र० ११८।

आगासवासिणो-जातिजुंगितविशेषा। नि० चू० द्वि० ४३ आ।

आगासाइवाई-आकाशादिवादिन, अमूर्त्तानामपि पदार्थानां साधन(ने) समर्थवादिन। औप० २९। आकाशातिपातिन-आकाशे व्योमातिपतन्ति-अतिक्रामन्ति आकाशगामिविद्या-प्रभावात् पादलेपादिप्रभावाद्वा आकाशाद्वा हिरण्यवृष्ट्यादिक-मिष्टमनिष्टं वाऽतिशयेन पातयन्तीत्येवंशीला। औप० २९।

आगासिया-आकाशिता, आकाशे-अम्बरमिता-प्राप्ता, आकर्षिता वा-आकृष्ण, उत्पादितेति वा। औप० ७२।

आघ-सूत्रकृताङ्गे प्रथमश्रुतस्कंधे दशमाध्ययननाम। सूत्र० १८६। आख्यातवान्। सूत्र० १८८।

आघंसणं-एतेहिं एकसिं आघसणं। नि० चू० द्वि० ११९ अ। नि० चू० प्र० १९० अ।

आघवइत्ता-धर्ममाख्याय, आख्याय सामान्यतो यथा कार्यो धर्म। ठाणा० ११९। आख्यायक-प्रज्ञापक। ठाणा० २९७।

आघवउ-आख्यात, तस्मिन् क्षेत्रे प्रसिद्ध। आव० ५२४।

आघवणा-आख्याना। उपा० ४७।

आघविए-आख्यात, सामान्यविशेषपर्यायाभिध्यातिकथ नेन। उत्त० ५९८।

आघविज्जंति-प्राकृतशैल्या आख्यायन्ते-सामान्यविशेषाभ्या कथ्यन्ते। सम० १०९। नंदी० २१२।

आघवियं-अर्घापितम्, अर्घ-पूजा तस्य आप-प्राप्ति र्जाता यस्य तत्, अर्घं वा आपितं-प्रापितं यत्तत्। प्रश्न० ११३।

आघवेइ-आख्यापयति सामान्यविशेषरूपत। ठाणा० ५०२। भग० ७११।

आघवेज्ज-आग्राहयेच्छिष्यान् अर्घापयेद् वा-प्रतिपादनत पूजा प्रापयेत्। भग० ४३६।

आघाअ,ए-आघात। दश० २०११ मरणम्। सूत्र० १७८। तथाविधयतनयाऽन्यप्राणिनामात्मनश्च विधिवत् सलि खितशरीरतया यस्मिंस्तत्। उत्त० २४९।

आघातणं-आघातनम्, यत्र सङ्ग्रामे बहूनि मृतानि तत्। आव० ७४४।

आघातो-जावंतो भूतो अगणि मणासमल्लियते ते सव्वे घातयतीति। दश० चू० ९८।

आघादियं-कथयित्वा। नि० चू० द्वि० ७१ अ।

आघायट्ठाणं-आघातस्थानम्, वधस्थानम्। आव० ७४१।

आघायणं-आघातनम्, वध्यभूमिमण्डलम्। प्रश्न० ५९। जत्थ (मूषकादि) हतो त। नि० चू० तृ० ७२ अ।

आघायाय-आघातायन, क्लेशनाभिरिपक्कमवारणं सम ताद्घातयन-विनाशयन्। उत्त० ३५४।

आचरियं-आचरितम्, कप्प्यम्। दश० ११६।

आचार-(आयार), पञ्चानामाचाराणा। सू० प्र० २४९ आ। साध्वाचारप्रतिपादके ग्रन्थ। विशे० ६४८। आत्मविरितो व्यवहार। उत्त० ७११। व्यवहार। ठाणा० ६४। निशाराणादिको बाह्य क्रियाकलाप। उत्त० ४५६। पूर्वपुरुषाचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधि, तत्प्रतिपादको ग्रन्थ। नंदी २०९। चारित्रम्। उत्त० ५८३। आचरणमाचार-उचितक्रिया विनय इतियावत्। उत्त० ३४४।

आचारप्रणिधिः-(आयारपणिही), दशवैकालिकस्याष्टम मध्ययनम्। दश० २२४।

आचारवस्तु-(आयारवत्थू), नवमपूर्वगततृतीयवस्तु। उत्त० २५९।

आचारसम्पत्-(आयारसंपया), संयमध्रुवयोगयुक्ततादि चतुर्भेदभिन्ना सम्पत्। उत्त० ३९।

आचारिकम्-(आयरियं), निजनिजाचारभवमनुष्ठानम्। उत्त० २६६।

आचार्यपरिभाषित्वम्-(आयरियपरिभासित), प्रथम-समाधिस्थानम्। प्रश्न० १४४।

आचालो-आचाल, आचाल्यतेऽनेनातिनिबिडं कर्मादीत्या-चाल। आचा० ५१।

आच्छिद्दणं-एकसिं ईषद्वा। छेदनम्। नि० चू० प्र० १८९ अ।

आजवंजवीभाव-पुन पुनर्भ्रमणभाव। आचा० ७९। उत्त० ३३६।

आजवंजवे-अजवंजवी, पुन पुनर्भ्रमणम्। आचा० १६१।

आजाइ-आजायन्ते तस्यामित्याजाति, आचारपर्याय। आचा० ६। आजाति-मनुष्यजन्म गर्हिता जात्यैश्वर्यरूपा दिरहिततया। ठाणा० ४१९। सम्मूर्च्छनगर्भोपपाततो जन्म। ठाणा० ५१२। च्युतस्योद्वृत्तस्य वा पुमानुषत्व तिर्यक्त्वरूपा गर्हिता पुमानुषादित्वादेव। ठाणा० १२२।

आजाइसहस्स-आजातिसहस्रम्, अनेकेषु देवादिजन्म प्रतिजीव क्रमप्रवृत्तेषु अधिकरणभूतेषु षट्‌त्रावुपक्रमदशामितं त स्वामिजीवानामाचार्यानां च बहुशतसहस्रसङ्ख्यत्वात्। भग० २१७।

आजिणभद्दो-आजिनभद्र, आजिने द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपति देव। जीवा० ३६९।

आजिणमहाभद्दो-आजिनमहाभद्र, आजिने द्वीपेऽपरार्द्धा धिपतिर्देव। जीवा० ३६९।

आजिणय-आजिनकम्, चर्ममयं वस्त्रम्। जीवा० २६९।

आजिणवरभद्दो-आजिनवरभद्र, आजिनवरे द्वी। पूर्वा र्द्धाधिपति। जीवा० ३६९।

आढत्तं-आरब्धम्। भग० २८२।
आढत्ता-आरब्धा। आव० ३३५।
आढत्तो-आरब्धः। आव० १०३, ४१३, ३६२। दश० ९७।
आढयं-आढकः, सेतिकाप्रमाणः। जं० प्र० २४४।
आढवेइ-आरभते। दश० ३८।
आढवेऊण-आरभ्य। आव० ३४१।
आढा-आदरः। बृ० द्वि० ६७ आ।
आढाति-आद्रियते। दश० ५९। आव० ९२, ८१२।
आढायमाणे-आद्रियमाणः। आचा० २८४।
आणं-आज्ञा-योगेषु प्रवर्त्तनलक्षणाम्। ठाणा० ३३१। विधिविषयमादेशम्। ठाणा० ३८६।
आणंतरिए-आनन्तर्यम्-सातत्यमच्छेदनमविरहः। ठाणा० ३४६।
आणंद-आनन्दः, द्वितीयमासक्षपणे भिक्षादाता। आव० २००। उपासकदशांगाद्यध्ययनम्, तन्नाम श्रावकः। उपा० १। गाथापतिः। आव० २१५। नालंदबाहिरिकायां गाथापतिः। भग० ६६२। आनन्दः, षष्ठो बलदेवविशेषः। आव० १५९। श्रुतेन सामायिकाप्तौ दृष्टांतः। आव० ३४७। षोडशः मुहूर्तविशेषः। सूर्य० १४६। जं० प्र० ४९१। धरणेन्द्ररथानीकाधिपतिः। ठाणा० ३०२। षष्ठो बलदेवः। समः १५४। शीतलजिनाद्यगणभृत्। सम० १५२। भगवान महावीरशिष्यः। भग० ६६८। अवधिनिर्णयविषये श्रमणोपासकः। सूत्र० ९। प्रथमश्रावकनाम। आव० २१५।
आणंदकूडे-आनन्दनाम्नो देवस्य कूटमानन्दकूटम्। जं० प्र० ३१३।
आणंदपुरं – आनन्दपुरम्, इहलोकगुणविषये फच्छदेही नगरम्। आव० ८२४। द्रव्यमूलोदाहरणे पुरं। नि० चू० द्वि० ४२ अ। स्थलपत्तनविशेषः। नि० चू० प्र० २२९अ। (मार्गोपसंपदि) नगरविशेषः। नि० चू० प्र० २४१ अ। नगरविशेषः। नि० चू० द्वि० ७१ अ। क्षेत्रविपर्यासे नगरविशेषः। नि० चू० द्वि० ८ अ।
आणंदपुरे मूलचैत्यगृहे सर्वजनसमक्षं दिवसतः कल्पकर्षणं भवति। नि० चू० प्र० ३५५ अ।
आणंदरक्खिए – आनन्दरक्षितः, पार्श्वापत्यस्थविरनाम। भग० १३८।
आणंदा-आनन्दा, पूर्वदिग्रुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। आव० १२२। दक्षिणदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्यापरस्यां पुष्करिणी। जीवा० ३६४। अंजनकपर्वते पुष्करिणी। ठाणा० ३३०। पौरस्त्यरुचकवास्तव्या तृतीया दिक्कुमारी। जं० प्र० ३९१।
आणंदिए-आनन्दितः, तुष्टः, हृष्टः, ईषन्मुखसौम्यतादिभावैः समृद्धिमुपगतः। भग० ११९, ३१७।
आणंदियं-आनन्दितम्, स्फीतीभूतम्। जीवा० २४३।
आण-आज्ञा, श्रुतपर्यायः। विशे० ४२३।
आणइंति-आनयन्ति। बृ० द्वि० १०९ अ।
आणक्खिऊण-परीक्ष्य। आव० २९१।
आणक्खिस्सामि – अन्वीक्षिष्यामि – अन्वेषयिष्यामि। आचा० २८३।
आणक्खेउं-परीक्ष्य। ओघ० ३३। अनुमीय। बृ० तृ० १६४ आ।
आणक्खेऊण-ज्ञात्वा, निश्चित्य। नि० चू० प्र० ६ आ।
आणतं-एकोनविंशतिसागरोपमस्थितिके विमानम्। सम० ३७।
आणत्तं-अन्यत्वम्-अनगारद्वयसम्बन्धिनो ये पुद्गलास्तेषां भेदः। भग० ७४१।
आणत्तिअं – आज्ञप्तिकाम्, आज्ञां प्रत्यर्पयत। जं० प्र० १६२।
आणत्तो-आज्ञप्तः। आव० ४१९।
आणपाण-आनप्राणः। सूर्य० २९२।
आणपाणकालो-आनपानकालः, उच्छ्वासनिःश्वासौ समुदितावेकः। जीवा० ३४४।
आणपाणलद्धी – अंतर्मुहूर्तेन चतुर्दशपूर्वपरावर्तनशक्तिः। ओघ० १५८।
आणमंति – आनन्ति। भग० १९। उच्छ्वसन्ति, अन्तःस्फुरन्तीमुच्छ्वासक्रियां कुर्वन्ति, आनमन्ति उच्छ्वसन्ति। प्रज्ञा० २१९। 'णमु प्रह्वत्वे' इत्येतस्यानेकार्थत्वेन श्वसनार्थत्वात्, आनन्ति इत्यनेनाध्यात्मक्रिया। भग० १९।
आणमणिया-आज्ञापनी, विंशतिक्रियामध्ये द्वादशी क्रिया। आव० ६१२। कार्ये परस्य प्रवर्त्तनं यथेदं कुर्विति भाषा। प्रज्ञा० २५६।
आणय-आनत, नवमदेवलोकनाम। प्रज्ञा० ६९।

आणरुई–आज्ञारुचि, आज्ञा-सर्वज्ञवचनात्मिका तस्यां रुचि-अभिलाषो यस्य स आज्ञारुचि। जिनाज्ञैव मे तत्त्वं न शेषं युक्तिजातमिति योऽभिमन्यते स आज्ञारुचि। प्रज्ञा० ५६।

आणरुती–आज्ञारुचि आज्ञा-सर्वज्ञवचनात्मिका तया रुचिर्यस्य स तथा, यो हि प्रतनुरागद्वेषमिथ्याज्ञानतयाऽऽचार्यादीनामाज्ञयैव कुग्रहाभावाज्जीवादि तथेति रोचते स। ठाणा० ५०३।

आणवणप्पओगे–आनयनप्रयोग। आव० ८३४। इह विशिष्टावधिके भूदेशाभिग्रहे परतः स्वयगमनायोगाद्यदन्यः सचितादिद्रव्यानयने प्रयुज्यते सन्देशकप्रदानादिना त्वयेदमानेयम् इत्यानयनप्रयोग (दशावकाशिके अतिचार)। उपा० १०।

आणवणिया–आज्ञापनिका, जीवाजीवानानाययत। ठाणा० ३१७। आज्ञापनस्य-आदेशनस्येयमाज्ञापनमेव वेत्याज्ञापनी सैवाज्ञापनिका, तज्ज कर्म्मबन्ध, आदेशनमेव वेति, आनायनं वा आनायनी। ठाणा० ४३।

आणवणी–आज्ञापनी, असत्यामृषाभाषाभेद। दश० २१०। कार्ये परस्य प्रवर्तनी। भग० ५००।

आणवेस्सामि–आनाययिष्यामि। आव० ४१०।

आणा–आज्ञा, मौनीन्द्रवचनम्। आचा० ४४। तीर्थंकरगणधरोपदेश। दश० २६५। ज्ञानाद्यासेवारूपजिनोपदेश। भग० ५४। कर्त्तव्यमेवेदमित्याद्यादेश। भग० १६७। दुवालसंगं गणिपिडगं। नि० चू० तृ० ४ अ। उपदेश। सूत्र० १८३। अर्थ। आव० ६०४। आज्ञाप्यते-आज्ञा – हिताहितप्राप्तिपरिहाररूपतया सर्वज्ञोपदेश। आचा० ११३। आज्ञया सूत्राज्ञया अभिनिवेशतोऽन्यथा पाठादिलक्षणया अतीतकाले अनन्ता जीवाश्चतुरन्तं संसारकान्तारं नारकतिर्यग्नरामरविविधवृक्षजालदुस्तरं भवाटवीगहनमित्यर्थ, अनुपरावृत्तवन्तो जमालिवत् अर्थाज्ञया पुनरभिनिवेशतोऽन्यथाप्ररूपणादिलक्षणया गोष्ठामाहिलवत् उभयाज्ञया पुनः पञ्चविधाचारपरिज्ञानकरणोद्यतगुर्वादेशादेरन्यथाकरणलक्षणया गुरुप्रत्यनीकद्रव्यलिंगधार्यनेकश्रमणवत् सूत्रार्थोभयेविराध्येत्यर्थ, अथवा द्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षमागमोक्तानुष्ठानमेवाज्ञा तया तदकरणेनेत्यर्थ। सम० १३३। हे साधो! भगवतेदं विधेयमित्येवंरूपामादिष्टि। ठाणा० ३०१। गूढार्थपदैरगीतार्थस्य पुरतो देशान्तरस्थगीतार्थनिवेदनाय गीतार्थो यदतिचारनिवेदनं करोति सा। ठाणा० ३०१। यदगीतार्थस्य पुरतो गूढार्थपदैर्देशान्तरस्थगीतार्थनिवेदनायातिचारालोचनं इतरस्यापि तथैव शुद्धिदानं सा। भग० ३८४। ठाणा० ३१८। आदेश। भग० १२२। जीवा० २४३। सर्वज्ञवचनात्मिका। प्रज्ञा० ५८। आङिति स्वस्वभावावस्थानात्मिकया मर्यादयाऽभिव्याप्त्या वा ज्ञायन्तेऽर्था अनयेति, भगवदभिहितागमरूपा। उत्त० ४४। आगम। सूत्र० ४०५। आव० ८६२। उत्त० ४४९। अनुज्ञा। पिण्ड० १६९। गुरुनियोगात्मिका। उत्त० ५७२। यथोक्ताज्ञापरिपालना। नंदी २४८। द्वादशांगं सूत्रार्थोभयभेदेन त्रिविधं, द्वादशांगमेव चाज्ञा, आज्ञाप्यते जन्तुगणो हितप्रवृत्तौ यया साऽऽज्ञेति, अथवा पञ्चविधाचारपरिपालनशीलस्य परोपकारकरणैकनिरतस्य गुरोर्हितोपदेशवचनमाज्ञा। नंदी २४८। श्रुतस्य पर्याय। विशे० ४१६।

आणाइणो–आज्ञादय, आज्ञाभङ्गादय। पिण्ड० ६९।

आणाइयं – *आज्ञातिगं-आज्ञा-जिनादेशमतिगच्छति-अतिक्रामति यत्तत्*, अधर्मद्वारस्य पाठान्तरेणाष्टाविंशतितमं नाम। प्रश्न० २७।

आणाईसरसेणावच्चं–आज्ञेश्वरसेनापत्यम्, आज्ञाप्रधानस्य सतो यत् सेनापत्यम्। भग० १५४। स्ववर्गस्य प्रस्तुतमाज्ञाप्राधान्यम्। प्रज्ञा० ८९।

आणाकखी–आज्ञाकाङ्क्षी, आगमानुसारप्रवृत्तिक। आचा० २१०।

आणानिद्देसयरे – आज्ञानिर्देशकर, आज्ञा-'सौम्य! इदं कुरु इदं च मा कार्षी' इति गुरुवचनं तस्या निर्देश, इदमित्थमेव करोमीति निश्चयाभिधानं, तत्कर। उत्त० ४४। भगवदभिहितागमरूपया उत्सर्गापवादाभ्यां प्रतिपादनमाज्ञानिर्देश इदमित्थं विधेयमिदमित्थं वर्येवमात्मकः तत्करणशीलस्तदनुलोमानुष्ठानो वा। उत्त० ४४। आज्ञानिर्देशतर-आज्ञानिर्देशेन वा तरति भवाम्भोधिमिति। उत्त० ४४।

आणानिद्देसे–आज्ञानिर्देश, आज्ञा-भगवदभिहितागमरूपा तस्या निर्देश-उत्सर्गापवादाभ्यां प्रतिपादनम्। उत्त० ४४।

आणापाण – *आनप्राण, उच्छ्वासनिःश्वासकाल*। भग० २११।

आणापाणू-आनप्राणा – उश्वासनिःश्वासकालः संख्यातावलिकाप्रमाणाः। ठाणा० ८५।

आणाफलं – आज्ञाफलम्–जनेन यथोदितवचनप्रतिपत्तिरूपा फलं प्रयोजनं अस्य। उत्त० ५८०।

आणामं-(अननम्–श्वसनम्)। भग० १०९।

आणामियं-आनामितम्, ईषन्नामितम्। प्रश्न० ८२। आरोपितम्। जीवा० २७३।

आणाय-आज्ञाय, स्वरूपाभिव्याप्त्याऽवगम्य। उत्त० १०४। आनायम्, जालम्। उत्त० ४०७। प्रश्न० २२।

आणारुइ-आज्ञारुचिः, आज्ञा–सर्वज्ञवचनात्मिका तया रुचिर्यस्य सः। उत्त० ५६३। आज्ञा–सूत्रव्याख्यानं निर्युक्त्यादिश्रद्धानम्। औप० ४४। निर्युक्त्यादि तत्र तया वा रुचिः। ठाणा० १९०। भग० ९२६।

आणाविजए – आज्ञाविचयम्, आज्ञागुणानुचिन्तनम्। औप० ४४। प्रवचनपर्यालोचनविषयमाज्ञालोचनविषयं धर्मध्यानम्। ठाणा० १९०। आणाविजय-आज्ञा–जिनप्रवचनं तस्या विचयो–निर्णयो यत्र तदाज्ञाविचयम्। भग० ९२६। आज्ञा वा विजीयते अधिगमद्वारेण परिचिता क्रियते यस्मिन्निति। ठाणा० १९०। आ–अभिविधिना ज्ञायन्तेऽर्थो यया साऽऽज्ञा–प्रवचनं सा विचीयते–निर्णीयते पर्यालोच्यते वा अस्मिस्तत्। ठाणा० १९०।

आणावियं-आनायितम्। आव० ४२२।

आणासाएमाणे-अनाशायमानः, आशाविषयमकुर्वाणोऽनास्वादयन् वाऽभुञ्जानोऽतर्कयन्नस्पृहयन्नप्रार्थयमानोऽनभिलषन्। उत्त० ५८८।

आणितिल्लयं-आनीतः। आव० ५५८।

आणिमलो-अनलगिरिगजस्य विष्टा। नि० चू० प्र० ३४९ अ।

आणुकंपिए-अनुकम्पितः, कृपावान्। भग० १६९।

आणुग-अन्नूप –नद्यादिपानीयप्रचुरः। बृ० प्र० १७५ आ।

आणुगामिय-देशान्तरगतमपि ज्ञानिनं यदनुगच्छति लोचनवदिति तदेवानुगामिकम्। ठाणा० ३७०। धूमादिहेतुरनुगामि ततो जातमानुगामिकम्–अनुमानं तद्रूपो व्यवसाय.। ठाणा० १५१।

आणुगामियं-आनुगामिकम्। औप० ५८। आनुगामुकः–अनुगमनशीलः। आव० २८।

आणुगामियत्ताए-आनुगामिकत्वाय, शुभानुबन्धायेत्यर्थः। भग० ४५९। भवपरम्परानुबन्धसुखाय। भग० ११५।

आणुपुव्वी-आनुपूर्वी, शिष्यप्रशिष्यपरम्परात्मिका। उत्त० ८। क्रमेण मरणकालं पत्तस्स आणुपुव्वी। नि० चू० द्वि० ५३ अ। वृषभनासिकान्यस्तरज्जुसंस्थानीया, यया कर्म्मपुद्गलसंहत्या विशिष्टं स्थानं प्राप्यतेऽसौ, यया वोर्ध्वोत्तमाङ्गाधश्चरणादिरूपो नियमतः शरीरविशेषो भवति सा। आव० ८४। यथाऽऽसन्नम्। भग० ३१। मूलादिपरिपाटी। जीवा० १८७। आव० ८०३। क्रमेण यथाऽऽसन्नम्। जं० प्र० ४६१। शास्त्रीयोपक्रमायभेदः। ठाणा० ४। आव० ५६। यदुदयादन्तरालगतो जीवो याति सदानुपूर्वीनाम। सम० ६७। उत्त० ६४१। आनुपूर्वी–यथासन्नम्। जीवा० २०।

आणुपुव्विगढिया-आनुपूर्व्या–परिपाट्या ग्रथिता–गुम्फिता इति आनुपूर्वीग्रथिता। भग० २१४।

आणुपुव्वो-आनुपूर्वः, क्रमेण नीचैर्नीचैस्तरभावरूपः। जीवा० १९८।

आणू-उस्सासो। दश० चू० ५४।

आतंतमे – आत्मतमः–आत्मानं तमयति–खेदयति इति आत्मतमः–आचार्यादिः। आत्मनि तमः–अज्ञानं क्रोधो वा यस्य स आत्मतमाः। ठाणा० २१४।

आत-(आय)-अप्पा। नि० चू० प्र० ३२ अ।

आतवेतावच्चकरे – आत्मवैयावृत्त्यकरः, अलब्धो विसम्भोगिको वा। ठाणा० २४१। आत्मवैयावृत्त्यकरः–यस्मात् स तपसा पूर्वसंचितकर्ममलं शोषयत्यात्मन एवोपकारे वर्तते ततः सः। व्य० प्र० १४८ आ।

आतसरीरसंवेगणी – आत्मशरीरसंवेगनी – यदेतदस्मदीयं शरीरमेतदशुचि अशुचिकारणजातमशुचिद्वारविनिर्गतमिति न प्रतिबन्धस्थानमित्यादिकथनरूपा। ठाणा० २१२।

आतानविताणं-(आयाणवियाण), तन्तुषु वेमादिक्रिया। विशे० ८६९।

आतावणा-आतापना। प्रश्न० १०७।

आतावते – आतापयति–आतापना शीतातपादिसहनरूपा करोतीति इति आतापक.। ठाणा० २९९।

आतियं-आचितम्, रचितम्। प्रश्न० ४७।

आतियणो-अदनो–भक्षणे। व्य० प्र० १८० अ।

आतियाणे-ग्रुंजणवेलाए ठाति। नि० चू० तृ० ३८ आ।
आतुरीभूः। नंदी १५४।
आतुलुगा-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः। प्रज्ञा० ३४।
आतो-आयः। उत्त० १४७। आहोस्वित्। उत्त० ३२३।
आतो(उ)ज्जं-आतोद्यम्, वाद्यम्। प्रश्न० ८। पटहादिः। ठाणा० ६३।
आत्तपणं-आदत्तेन-गृहीतेन, आत्मीयेन वा। अनु० २२।
आत्ततरः-दृढतरः, अयमनयोरतिशयेनात्तो-गृहीतो यत्नेनाध्यवसित इत्यर्थः। आचा० २९४।
आत्तप्रज्ञाहा-(अत्तपण्णहा), आर्ता-सिद्धान्तादिश्रवणतो गृहीतामात्तां वा-इहपरलोकयोः सद्बोधरूपतया हितां प्रज्ञाम्-आत्मनोऽन्येषां वा बुद्धि कुतर्कैर्व्याकुलीकरणतो हन्ति यः स। उत्त० ४३५।
आत्मछन्दाः-आत्मनैव उपधेरानयनाय छन्दोऽभिप्रायो विद्यते येषां ते आत्मछन्दसः। व्य० द्वि० २१ आ।
आत्मरक्षा-शिरोरक्षस्थानीयाः। तत्त्वा० ४-४।
आत्मरक्षी-विषयाभिलाषविगमाभिनिदानः सन् आत्मानं रक्षत्यपायेभ्यः-कुगतिगमनादिभ्य इत्येवंशीलः। उत्त० २२५।
आत्मवादी-अस्त्यात्मा स्वतो नित्य इति वादी। आव० ८१६।
आत्मसमीपे-आत्मोत्सङ्गे। ओघ० ११८।
आत्मसंवेदनीय-आत्मना क्रियत इति। आव० ४०५।
आत्मागम-अत्तागम, गुरूपदेशमन्तरेणात्मन एव आगमः। अनु० २१९।
आत्माधिष्ठितयोगी-अत्ताहिट्ठियजोगी, आत्माधिष्ठितेन-लब्धेन भक्तादिना युज्यत इति, अत्तलद्धिओ। ओघ० १५१।
आत्मार्थ-अत्तट्ठे, अर्थ्यमानतया स्वर्गादि-, यद्वा आत्मैवार्थ.। उत्त० २८४। विशेषणम्। व्य० प्र० ११५ अ।
आत्मार्थिकम्-अत्तट्ठिय, आत्मनोऽर्थं, आत्मार्थस्तस्मिन् भवम्। उत्त० ३६०।
आदंसग-आदर्शक-दर्पणः। उत्त० ६५०।
आदंसगहत्थिआ-आदर्शहस्ता। आव० १२२।
आदंसिआइ-वाद्यविशेष। जं० प्र० ११८।
आदण्ण-खिन्नः। आव० ९४, ३५५।
आदद्दति-विदधति। प्रश्न० १०७।
आदर्शकगृहं-भरतस्केवलज्ञानस्थानम्। प्रज्ञा० २०।
आदर्शसमानः-(अद्दागसमाग), आदंसगसमाणो, सो हि साधुभिः प्रज्ञाप्यमानानुत्सर्गापवादादीनागमिकान् भावान् यथावत्प्रतिपद्यते सविदिनार्थानादर्शवत्र स आदंसगसमानः। ठाणा० २४३।
आदाण-आदानम्, आदीयते-स्वीक्रियतेऽनुष्ठानार्थं धर्मो येन तत्, कषायाः, परिग्रहः, मोक्षानुष्ठानं वा। सूत्र० २६४। (बहिद्धादाणं)-बहिर्द्धा-मैथुनम् आदानं च-परिग्रहः, परिग्राह्यं वा वस्तु धर्मोपकरणाद् बहिः। ठाणा० २०२। मोक्षार्थिनाऽऽदीयते-गृह्यत इति, संयमः। सूत्र० २२९। कारणम्। नि० चू० प्र० ११६ अ। प्रमदः, प्रसृति। नि० चू० प्र० ११६ अ। ग्रहणम्। आव० ८२२। आदीयत इति, धनम्। आव० ६४६। नि० चू० प्र० ३१७ अ। आदानः, अश्व। सूर्य० २०९।
आदाणणिक्खेवणासमिती-आदाननिक्षेपणासमिति, जं वत्थपायसथारफलगपीढगकारण्डा गहनिक्खेवकरणं पडिलेहिय पमज्जिय सा। नि० चू० प्र० १७ अ।
आदाणनिक्खिवणअणाभोगकिरिया-आदाननिक्षेपानाभोगक्रिया, रजोहरणेनाप्रमार्ज्य पात्रचीवरादीनामादानं निक्षेपं वा करोति सा। आव० ६१४।
आदाणभयं-आदानभयम्, धनस्य चौरादिभ्यो यद्भयम्। आव० ६४६। धनहरणभयं। आव० ४७२। आदानं-धनं-तदर्थं चौरादिभ्यो यद्भयम्। ठाणा० ३८९। द्रव्यमाश्रित्य भयम्। प्रश्न० १४३।
आदाणभरियंसि-आदहनमृते। दशा० ३४।
आदाणिज्जं-आदानीयम्, सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चदशमध्ययनम्। सूत्र० २५२।
आदाणियं-आदानीयम्, आदीयते-गृह्यते उपादीयत इति, पदमर्थो वा। सूत्र० ९।
आदाननिक्षेपणासमितिः-रजोहरणपात्रचीवरादीनां पीठफलकादीनां चावश्यकार्थं निरीक्ष्य प्रमृज्य चादाननिक्षेपौ। तत्त्वा० ९५।
आदाणीय-आदानीयः, उपादेयः। सम० ८१। ठाणा० ३६९। परमार्थेनो भवादानीयं ज्ञानदर्शनचारित्ररूपं तद्। आचा० १४०।

आदितियमरण-यानि हि नरकायायुष्कतया कर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते मृतश्च न पुनस्तान्यनुभूय पुनर्मरिष्यत इत्येवं यन्मरणं। भग० ६२४।

आदि-आदिः, कारणम्। प्रश्न० ४।

आदिए-आददीत, गृह्णीयात्। उत्त० ५१७।

आदिकरः-आइगर, आदौ प्राथम्येन श्रुतधर्ममाचारादिग्रन्थात्मकं करोति – तदर्थप्रणायकत्वेन प्रणयतीत्येवंशील आदिकरः। सम० ३। प्रथमतया प्रवर्तनशीलः। व्य० द्वि० ३८५ अ।

आदिगरमंडलगं-आदिकरमण्डलम्। आव० १४६।

आदिच्चो-आदित्यः। जीवा० ३२१। सूर्यसंवत्सरः। सूर्य० १२।

आदिट्ठ-आदिष्टः, विशेषितः। भग० ४७।

आदिट्ठा-गृहीता। नि० चू० प्र० २०७ आ।

आदित्यमासः-त्रिंशदहोरात्राणि रात्रिन्दिवस्य चार्द्धं, दक्षिणायनस्योत्तरायणस्य वा षष्ठभागमानः। बृ० प्र० १८६ आ।

आदित्ययशा-भरतपुत्रनाम। व्य० द्वि० १२९ आ।

आदिमा भावा – आवश्यकादय: सूत्रकृताङ्गं यावद् ये आगमग्रन्थास्तेषु ये पदार्था अभिधेयास्ते। बृ० प्र० १२८ आ।

आदित्यरशः-वालिसुग्रीवपिता विद्याधरः। प्रश्न० ८९।

आदियणं – गहणं। नि० चू० प्र० १३४ अ। पिवंतस्स। नि० चू० तृ० ६५ आ।

आदियणआ-आदानम्, ग्रहणम्। आव० ६१४।

आदियणा-आदानम्, परधनस्य ग्रहणं, तृतीयाधर्मद्वारस्य पञ्चदशं नाम। प्रश्न० ४३।

आदिस्सते। जीवा० १४०।

आदीअदिट्ठभावे – आदौ-आवश्यकादिशास्त्रेषु वर्तमाना अदृष्टा भावा येन सः। बृ० प्र० १२६ आ।

आदेज्ज-आदेया, दर्शनपथमुपगता सती पुनः पुनराकाङ्क्षणीया। जं० प्र० १११। आदेयः, रम्यः। प्रश्न० ८३।

आदेज्जनाम-आदेयनाम, यदुदयवशात् यच्चेष्टते भाषते वा तत्सर्वं लोकः प्रमाणीकरोति दर्शनसमनन्तरमेव च जनोऽभ्युत्थानादि समाचरति तत्। प्रज्ञा० ४७५।

आदेयवचनता-सकलजनग्राह्यवाक्यता। उत्त० ३१।

आदेयाकषाय-वैतवकृतमुकुरिडिंगुराकारः। आव० ३९०।

आदेयातः। नंदी ७०।

आदेशिकं-श्रमणानुद्दिश्यादेशम्। बृ० प्र० ८३ अ।

आदेसं-उद्दिष्टं। नि० चू० प्र० २३० आ। विशेषं प्रतिनियतव्यक्त्यात्मकम्। उत्त० ६७३।

आदेसतिगं-आदेशत्रिकम्, मतत्रिकम्। पिण्ड० १०।

आदेसदव्वसुद्धी – आदेशद्रव्यशुद्धिः, द्रव्यशुद्धिभेदः। दश० २११।

आदेसफलं-आदेशफलम्। आव० ३४३।

आदेसा-पाहुणा। नि० चू० प्र० १११ अ। प्राघूर्णकाः। बृ० प्र० ८५ आ।

आदेसे – आदेशः, आदिश्यते यस्मिन्नागते सम्भ्रमेण परिजनस्तद्दानदानादिव्यापारे सः, प्राघूर्णकः। सूत्र० ३००।

आदेसो-आदेशः, प्रकारः। जीवा० ५३। मुत्ताएसो। नि० चू० प्र० ७१ अ। अनुज्ञा। व्य० द्वि० ३४६ अ। नयान्तरविकल्पः। व्य० द्वि० ३५४ आ।

आद्यशब्द – तर्कणाऽऽशैषादिप्रतिपादनः। नि० चू० प्र० २२५ अ।

आद्रहणम्-उच्छलदुष्णजलम्। दश० १०४। पिण्ड० ३५।

आधरिसितो-आधर्षितः। आव० ३७१।

आधत्त-आधत्तम्, ग्रहणके मुक्तम्। बृ० द्वि० १२० अ।

आधरिसेहिति-आधर्षयिष्यति। आव० १७४।

आधाकम्मिए-आधाय-आश्रित्य साधून् कर्म-सचेतनस्याचेतनीकरणलक्षणं अचेतनस्य वा पाकलक्षणं क्रिया यत्र भक्तादौ तदाधाकर्म तदेवाधाकर्मिकम्। ठाणा० ४६०।

आधायणं-जत्थ वा महा सगासे मता। नि० चू० तृ० ७३ अ।

आधिः-मनःपीडा। भग० ४।

आधिदैविकम्-दैवादिसत्कं दुःखम्। उत्त० २६६।

आधिभौतिकम्-अन्यभूतसत्कं दुःखम्। उत्त० २६६।

आधूय – धर्मयित्वा, जलेन तदाहृत्याहृत्य। जं० प्र० २३०।

आध्यारुहकम्-हरितभेद। आचा० ५७।

आध्यात्मिकम्-अध्यात्मिकं, आत्मसत्कं दुःखम्। उत्त० २६६। आत्मनि क्रियमाणम्। आचा० ४१६।

आनगारिकम् – अनगारेषु-भावभिक्षुषु भवमानगारिकमनुष्ठानम्। उत्त० ३३९।

आनन्द-श्रुतसामायिकलाभे दृष्टान्तः। आव० ३४०।

आनन्दपुरम्-स्थलपत्तने नगरविशेष । बृ० प्र० १८१ आ । जितारिराज राजधानी । बृ० तृ० १०७ आ । नगरविशेष. । व्य० प्र० १४६ अ, ४ आ । व्य० द्वि० २६६ अ ।

आनन्दविजयः-आचार्यनामविशेष । जं० प्र० ५४५ ।

आनन्दविमलः-आचार्यनामविशेष । जं० प्र० ५४३ ।

आनुगामिकः-आ-समन्तादनुगच्छतीत्येवंशीलमानुगामिक, अनुगमः प्रयोजनं यस्य सः । प्रज्ञा० ५३९ । अनुगच्छति साध्यभावे न भवति यो धूमादिहेतु' सोऽनुगामी ततो जातमानुगामिकं, अनुमानं, तद्रूपो व्यवसाय । ठाणा १५१ ।

आनुपूर्वी-यथासक्रम् । प्रज्ञा० ५०३ । कूर्परलाङ्गलगोमूत्रिकाकारेण यथाक्रम द्वित्रिचतु समयप्रमाणेन विग्रहेण भवान्तरोत्पत्तिस्थानं गच्छतो जीवस्यानुश्रेणिनियता गमनपरिपाटी । प्रज्ञा० ४७३ । अन्तर्गतौ गत्यन्तरमानुपूर्व्या प्रापणसामर्थ्ये, शरीराङ्गोपाङ्गानो विनिवेशक्रमनियामक वा कर्म । तत्त्वा० ८-१२ ।

अनुक्रमः-अनुपरिपाटी । अनु० ५१ ।

आपणवीही-आपणवीथि, रथ्याविशेष । जं० प्र० ४१३ । आपणवीथि । भग० ४७६ ।

आपन्नपरिहारः-मासिकं वा द्विमासिकं वा यावत् षण्मासिकं वा प्रायश्चित्तं । व्य० प्र० ४५ आ ।

आपाकः-भाण्डपचनस्थानम् । ठाणा० ४१९

आपागपत्तं – आपाकप्राप्तम्, ईषत् पाकाभिमुखीभूतम् । प्रज्ञा० ४५९ ।

आपाण्डु-आ-ईषत्शुभ्रत्वभाज', पाण्डु । उत्त० ६८९ ।

आपीडः-शेखरक । जीवा० २७२ । आमेलक -शेखरक । जीवा० २०७, ३६९ ।

आपुच्छणा – आप्रच्छनमापृच्छा, विहारभूमिगमनादिप्रयोजनेषु गुरो कार्या, समाचार्या षष्ठभेद । आव० २५९ । आपृच्छना । ओघ० १५१ । भग० ९२० । स्वकार्यप्रस्तावापृच्छनम् । बृ० प्र० २२२ अ । विहारभूमिगमनादिषु प्रयोजनेषु गुरो पृच्छा । ठाणा० ४९९ ।

आपूपिकः । नंदी १६५ ।

आपूरितं – आपूर्यमाणम्, परिस्थिते पवने भूयो जलेन ध्रियमाणम् । जीवा० ३०८ ।

आपूरियं – आपूरितम्, व्याप्तं, भृतं, वासितम् । विशे० १५० ।

आप्त-अप्त, ज्ञानदर्शनचारित्राणि येनाप्तानि स, रागद्वेषप्रक्षीण, इष्टा. शोध्ये हैंपि विषये ये आप्ता । व्य० द्वि० १८९ आ ।

आप्तप्रज्ञाहा – सिद्धान्तादिश्रवणतो गृहीतामाप्तां वा इहपरलोकयो सद्बोधरूपतया हितां-प्रज्ञाम्-आत्मनोऽन्येषां वा बुद्धिं कुतर्कव्याकुलीकरणतो हन्ति य' गः । उत्त० ४३५ ।

आप्नोति-आत्मवशता नयति । प्रज्ञा० १६२ ।

आप्रच्छना-भदन्त ! करोमीदमित्येवं गुरो' प्रच्छनमाप्रच्छना । अनु० १०३ । सम० १५८ ।

आप्फोडिऊण-आस्फोट्य । आव० १६८ ।

आयद्धसेओ-आबद्धस्वेद । आव० ५१५ ।

आयद्धो-आबद्ध', आरब्ध । आव० ५१५ ।

आबाहा-आबाधा, ईषद्बाधा । भग० २१८ । जं० प्र० १२४ । जन्मजरामरणक्षुत्पिपासादिका आबाधा । ठाणा० ४८८ ।

आबाहाए-अन्तरे कृत्वेति शेष । सम० १६ ।

आभंकरं – सनत्कुमारकल्पे त्रिसागरस्थितिकं विमानं । सम० ८ ।

आभंकरपभंकरं-आभंकरवत् । सम० ८ ।

आभंकरे-आभङ्कर, सप्ततितमग्रहनाम । ठाणा० ७९ । अष्टषष्ठितमग्रहनाम । जं० प्र० ५३५ ।

आभट्ठो-आभाषित, सल्पत. । आव० २४१ ।

आभरण-आभरणानि, मुकुटादीनि । जं० प्र० १४५ ।

आभरणचङ्केरी-देवछन्दके पूजोपकरणम् । जीवा० २३४ ।

आभरणपिया । नि० चू० तृ० ९ अ ।

आभरणवासा – आभरणवर्षा, आभूषणवर्षणम् । भग० १९९ ।

आभरणविचित्ताणि-आभरणविचित्राणि, गिरिविट्टकादिविभूषितानि । आचा० ३९४ । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

आभरणविधी-हारऽर्द्धहारादिया आभरणविधी । नि० चू० प्र० २७६ आ । उपभोगविधिविशेष । उपा० २ ।

आभरणवुट्ठी-आभरणवृष्टि । भग० १९९ ।

आभरणाणि – आभरणानि, अङ्गपरिधेयानि । जं० प्र० ७२१ । आभरणप्रधानानि । आचा० ३९४ । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

आभवंतितो-आभवन्तिक -व्यवहार । व्य० द्वि० ३८१ आ।

आभवति-स्वं भवति । आव० ८२१।

आभव्वं-आभाव्यं, शैक्ष दीक्षिका वा । बृ० द्वि० ७० आ।

आभा-आभा, आकार । प्रज्ञा० ८०। छायावर्णे । सम० १४०। प्रतिभास । जीवा० ३११। वर्णस्वरूपम् । जीवा० १०३।

आभागी-भोक्ता । आव० ८१५।

आभासइ-आभासयति, समन्तात सर्वासु दिक्षु अवभासयति। जीवा० ३१२।

आभासिआ-म्लेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५।

आभासिता-अन्तरद्वीपनाम । ठाणा० २२६।

आभासितो-आभाषिक, अन्तरद्वीपविशेष । जीवा० १४४।

आभासियं-अभाषिकम्-विवक्षितभाषामजानान । आव० ६१४।

आभासिय-आभाषिक, म्लेच्छविशेष । प्रश्न० १४।

आभासियदीवे-अन्तरद्वीपनाम। ठाणा० २२६।

आभिओग-आ - समन्तादाभिमुख्येन युज्यन्ते-प्रेष्यकर्मणि व्यापार्यन्ते इति आभियोग्या -शक्रलोकपालप्रेष्यकर्मकारिणो व्यन्तरविशेषा । जं० प्र० ७५। आभियोग्यम्-कर्मकर भाव । दश० २४८। अभियोग्यभावना-कुत्सितभावना। उत्त० ७०७। अभियोगभावनाजनित । ठाणा० २७४।

आभिओगसेढीओ - आभियोग्या -शक्रलोकपालप्रेष्यकर्मकारिणो व्यन्तरविशेषास्तेषामावासभूते श्रेण्यौ। जं० प्र० ७५।

आभिओगिए-आभियोगिक अभियोगे-प्रेष्यकर्म्मणि व्यापार्यमाणत्वे नियुक्ता । जीवा० २४३।

आभिओगिय-आभियोगिक, वशीकरणाय मन्त्राभिसंस्कृतम् । आव० ६४२।

आभिओग्ग-आभियोग्यम्, वशीकरणादि द्रव्यतो द्रव्यसंयोगजनितं, भावतो विद्यामन्त्रादिजनितम्, बलात्कारो वा, प्रश्न० ३८। आभियोग -कार्मणम् । बृ० तृ० १२२ आ।

आभिग्गहिओ-आभिग्रहिक, अभिग्रहेण निर्वृत्त, कायोत्सर्ग । आव० ७८३।

आभिचारुका-विद्याविशेष । बृ० तृ० २०३ आ।

आभिट्ट आपतितम् । पउ० ४-४२।

आभिड्डणं-आवड्डणम् । ओघ० २०४।

आभिणिबोहिय-आभिनिबोधिकम्, अभिमुखो-योग्यदेशावस्थितवस्त्वपेक्षया नियत -स्वस्वविषयपरिच्छेदकतयाऽवबोध -अवगमोऽभिनिबोध, स एवाभिनिबोधिकम् । उत्त० ५५७। विशे० २२६। अर्थाभिमुखो नियत -प्रतिनियतस्वरूपो बोधो-बोधविशेष, अभिबुध्यतेऽस्माद् अस्मिन् वेति । प्रज्ञा० ५२६। आभिनिबोधिकम्-मतिज्ञानम् । आव० १८। आभिमुख्येन निश्चितत्वेनावबुध्यते-संवेद्यते आत्मा तदिति, आभिनिबोध, अवग्रहादिज्ञान, अथवा आत्मा तेन प्रस्तुतज्ञानेन तदावरणक्षयोपशमेन वा करणभूतेन घगादि वस्त्वभिनिबुध्यते, तस्माद् वा प्रकृतज्ञानात् क्षयोपशमाद्वाऽभिनिबुध्यते, तस्मिन् वाऽभिहितलक्षणे, क्षयोपशमे वा सत्यभिनिबुध्यतेऽवगच्छतीत्यभिनिबोधो ज्ञानम्, क्षयोपशमो वा, सो वा 'अभिणिबुज्झए'त्ति, अथवाऽभिनिबुध्यते वस्त्वभिगच्छतीत्यभिनिबोध, स एवाभिनिबोधिकम् । विशे० ५३। अभीत्याभिमुख्ये नीति नैयत्ये, ततश्चाभिमुखो-वस्तुयोग्यदेशावस्थानापेक्षी नियत-इन्द्रियाण्याश्रित्य स्वस्वविषयापेक्षी बोध, अभिनिबुध्यते आत्मना स । अभिनिबुध्यते वस्त्वसौ इत्यभिनिबोध स एवाभिनिबोधिकम् । अनु० २।

आभिणिबोहियनाण-अर्थाभिमुखोऽविपर्ययरूपत्वात् नियतोऽसंशयरूपत्वाद्बोध -संवेदनमभिनिबोध स एव स्वार्थिके कप्रत्ययोपादानादाभिनिबोधिक ज्ञातिर्ज्ञायते वाऽनेनेति ज्ञानम् आभिनिबोधिक च तज्ज्ञान चेति आभिनिबोधिकज्ञानम्, इन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तो बोध इति । भग० ३४३। इन्द्रियमनोनिमित्तो बोध । अनु० २। अर्थाभिमुखो नियतो बोध, अभिनिबोधे भव तेन वा निर्वृत्त तन्मयं तत्प्रयोजनं वा, अथवा अभिनिबुध्यते तत्, अथवा अभिनिबुध्यते ऽनेनास्माद्वा अस्मिन् वा तत् तदावरणकर्मक्षयोपशम इति भावार्थ । आव० ७। अभिनिबोधिकम्, आत्मैव वाऽभिनिबोधोपयोगपरिणामानन्यत्वाद् अभिनिबुध्यत इति वा । आव० ७।

आभियोगिक - अभियोगभावनाभावितत्वेनाभियोगिकदेवे पूत्पन्ना अभियोगवर्तिन । भग० १९०।

आभियोगिय - आभियोगिक, अभियोजनं-विद्यामन्त्रादिभि परेषां वशीकरणादि सेवा ते। प्रज्ञा० ४०६।

आभियोगी-अभिओगा- किङ्करस्थानीयदेवविशेषास्तेषामिय माभियोगी। बृ० प्र० २१२ आ। आभियोग्या -आभिमुख्येन युज्यन्ते-प्रेष्यकर्म्मणि व्यापार्यन्त इत्याभियोग्या, किङ्करस्थानीयदेवविशेषा। बृ० प्र० २१२ आ।

आभिसेक्कं-आभिषेक्यम्, अभिषेकयोग्य, राजपरिधेयम्। ज० प्र० २१६।

आभीरविसओ-आभीरविषय, देशनाम। आव० ४१२। नि० चू० द्वि० १०२ आ।

आभोइत्ता-आभोगयित्वा, ज्ञात्वा। दश० १७६।

आभोईतो-आभोगित। उत्त० १३३।

आभोएउं-आभोगयित्वा, उपयोगपूर्वकेनावधिना विज्ञाय। आव० १२८।

आभोएति-आभोगयति। आव० १२४।

आभोग - आभोग, जानता योऽतिचार कृत। आव० ५६४। अभिसन्धि। भग० २०। आलोचनमभिसन्धि। प्रज्ञा० ५००। उपकरणम्। ओघ० ३३। उपयोग। बृ० द्वि० २११ आ। ठाणा० ५०५। आभोगनमाभोग, उपयोगविशेष। आव० ६११, ६२६। विस्तार। विपा० ३९।

आभोगण-आभोगनम्, अर्थावग्रहसमनन्तरमेव सद्भूतार्थ विषयाभिमुखमालोचनम्। १७६।

आभोगणिव्वत्तिए-यदा परस्यापराध सम्यगवबुद्ध्य कोप कारण च व्यवहारत पुष्टमवलम्ब्य नान्यथाऽस्य शिक्षो पजायते इति आभोग्य कोप विधत्ते तदा स कोप आभोगनिर्वर्तित। प्रज्ञा० २९१। आभोगेन निर्वर्तित -उत्पादित आभोग निर्वर्तित आहारयामीतीच्छापूर्वं निर्मापित। प्रज्ञा० ५००।

आभोगबउस-आभोगबकुश, य आभोगेन जानन् करोति स, बकुशस्य प्रथमो भेद। उत्त० २५६। आभोग -साधूना मकृत्यमेतच्छरीरोपकरणविभूषणमित्येवं ज्ञान तत्प्रधानो बकुश आभोगबकुश। भग० ८९०। शरीरोपकरणभूषयो सञ्चिन्त्यकारी। ठाणा० ३३७।

आभोगिणी-य परिजपिता सती मानस परिच्छेदमुत्पादयति सा। बृ० तृ० ३३ अ। जा विज्जा जविता माणस परिच्छेदमुप्पादयति सा। नि० चू० प्र० १७७ अ।

आमं आमम्। दश० १७६। अपरिणतम्। पिण्ड० ६५। अविशोधिकोटि। बृ० प्र० २०१ अ, ५१ अ। आम णाम जं अपोलिय अग्गिणा ण पक्कंति, अण्णेण वा केणइ पगारेण न पक्क-णिज्जीव। नि० चू० द्वि० १५७ अ। असत्यपरिणय। दश० चू० ५१। अनुमतार्थद्योतकमव्ययम्। बृ० द्वि० १६६ अ। सचित्त। दश० चू० ८६। अपक्वरसम्। प्रश्न० ६०। अनुमतौ सम्मतमेतदस्माकं सर्वमितिभाव। व्य० प्र० ७१ अ। अपक्व। व्य० द्वि० १०६ आ। जओ तेहिं उग्गमादिदोसेहिं घेप्पमाणेहिं चारित्त अविपक्क अपज्जत्त आम भवति तेण ते आम भण्णति, शब्दमात्रोच्चारणम् सरही भूत जो वरिससतायुपुरिसो वरिससत अंतरे मरंतो आमो भण्णति। नि० चू० द्वि० १२६ अ। अपक्वम्। आव० ११०। स्वीकारेऽव्ययम्। आव० ६४। आव० १५४। आव० ४०८। अशस्त्रोपहतम्। आचा० ३४८। दश० २२९। अजीर्णम्। दश० २७०। आमाम्-असिद्धा, सचेतनाम्, अपरिणतं, अपक्वाम्। दश० १८५। अपरिशुद्धम्। आचा० १३१।

आमडे-आमलकम्, परिणामिक्या सप्तदशमोदाहरणम्। नदी १६५। आम्लकम्-आमलकम्। आव० ४३६।

आमंतणी-आमन्त्रणी, असत्यामृषाभाषाया प्रथमो भेद। दश० २१०। हे देवदत्त! इत्यादिरूपा भाषा। प्रज्ञा० २५६। हे देवदत्त! इत्यादिका, असत्यामृषाभाषा। भग०। ५००।

आमंतयामो-आमन्त्र्यावहे, पृच्छाव। उत्त० ३९८।

आमंतिओ-आमन्त्रित, सम्भाषित, पृष्टो वा। उत्त० ३९२।

आमंतेयव्वो-आपुच्छियव्वो। नि० चू० तृ० ९७ आ।

आमग-अपक्वम्। भग० ६८४।

आमगंधि-आमगन्धय, विश्रा। सम० १३६।

आमज्जति - अक्खिपत्तरोमे सठवेति। नि० चू० प्र० १९० अ। हत्थेण आमज्जति। नि० चू० प्र० १८७ आ।

आमज्जमाणे-आमर्जयन्, सकृद्धस्तादिना शोधयन्। आचा० ३४३।

आमज्जिज्ज-सकृदामृज्यात्। आचा० ३३७।

आमट्ट-विपर्यासीकृतम्, परामृष्ट। ओघ० १९२। आमृष्टम्, तेज प्रक्षेपरोपणाय मन शिलादिना समन्तात्परामृष्टम्। उत्त० ५२७।

आमडागं-आमपत्रम्, अरणिकतन्दुलीयकादि तथार्द्रप-क्वमपक्वं वा। आचा० ३४८।

आममहुरे-आममधुरम्, ईषन्मधुरम्। ठाणा० १९६।

आमरणदोसो-आमरणदोषः, महदापद्गतोऽपि स्वतो म-हदापद्गतेऽपि च परे आमरणादसञ्जातानुतापः, अपि स्व-समाप्तानुतापानुशयपर इति। आव० ५९०।

आमरणंतदोसे-आमरणान्तदोषः-आमरणान्तमसञ्जातानु-तापस्य हिंसादिषु प्रवृत्तिः सैव दोषः। ठाणा० १९०।

आमर्षौषधिः-ऋद्धिविशेषः। प्रश्ना० ४२४।

आमलए-आमलकम्। आव० ८३१। आमरकः, साम-स्त्येन मारिः। ठाणा० ५०८। फलविशेषः। पिण्ड० २२। दश० १००।

आमलकप्प-आमलकल्पा, नगरीविशेषः। आव० ३१४, ३१५, ७०७। उत्त० १५९। विशे० ९५०।

आमलग-आमलक, बहुबीजो वृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३२। भग० ८०३।

आमलगा-आमलकानि। अनु० १९२।

आमलपाणगं-फलविशेषप्रक्षालनजलं। आचा० ३४७।

आमाघाओ-अमाघातः, (अमारीपटहः)। आव० ४०१।

आमिस – आमिष-मांसं। उत्त० ६३४। आमिषादु-गृद्धिहेतोरभिलषितविषयादेः। उत्त० ४०९।

आमिसभोगगिद्ध – आमिषभोगगृद्धः, आमिषस्य-मांसा-देर्भोगः-अभ्यवहारस्तत्र गृद्धः। उत्त० ६३४।

आमिसायत्ते-मांसार्थं परिभ्रमणम्। ठाणा० २८८।

आमुसंत – आमृशन्, स्पृशन्। दश० १३०। आचा० ११। आमृशन्, भगवत्पादारविन्दं भक्तितः करतलयुगा-दिना स्पृशन्। ठाणा० ९। उत्त० ८०।

आमुसिज्जा – आमर्षणम्, सकृदीषद्वा स्पर्शनम्। दश० १५३।

आमे-आमः, अविशोधिकोट्याख्यदोषः। सूत्र० १४५।

आमेड-आमेलः, आपीडः, शेखरकः। जीवा० १७२।

आमेडणा-आमेडना, विपर्यस्तीकरणम्। प्रश्न० ५६।

आमेल-आपीडः, शेखरकः। प्रज्ञा० ९६। भग० ४५९। पुष्पशेखरकः। औप० ५१।

आमेलओ-आमेलकः, आपीडः, शेखरक। जीवा० २६१। आमोदकः-पुष्पोन्मिश्रो बालबन्धविशेषः। उत्त० १४३।

आमेलग-आमेलकः, आपीडकः, शेखरः। जीवा० २०५। आपीडः, शेखरकः। जं० प्र० ५२। जीवा० २०७।

आमेलय-आमेलकः, चूडा। औप० ६३।

आमेलिय-आपीडिका, चूडा। भग० ३१८।

आमो-असत्योपहतो। नि० चू० प्र० १९६ अ।

आमोअ – आमोदः, मानसे उत्सवः। आव० ७२१। आमोकः-कचवरपुञ्जः। आचा० ४११।

आमोक्ख-आमोक्षः, आमुच्यन्तेऽस्मिन्निलामोक्षणं वाऽऽ-मोक्षः। आचा० ६।

आमोडणं-हत्थेहि आमोडणं। नि० चू० प्र० २४५ अ।

आमोडेति-सीमन्तयति। नि० चू० द्वि० ३१ अ।

आमोद-गन्धः। उत्त० ३६९।

आमोयगो-आमोदकः। जीवा० २६८।

आमोसगा-आमोषकाः, चौराः। ठाणा० ३१५।

आमोसलि-आमर्शवर्तिर्यग्भूवैमघो वा कुड्यादिपरामर्शव-यथा न भवति। उत्त० ५४१।

आमोसहि – आमर्षौषधिः, तत्रामर्षणमामर्षः-संस्पर्शनमि-त्यर्थः, स एवौषधिर्यस्यासावामर्षौषधिः, करादिसंस्पर्शमा-त्रादेव व्याध्यपनयनसमर्थो लब्धिलब्धिमतोरभेदोपचारा-त्साधुरेवामर्षौषधिः। विशे० ३०९। आचा० १०८। आमर्षौषधिः। ठाणा० ३३२। आमर्शणमामर्शः-संस्पर्श-नमित्यर्थः, स एवौषधिः। आव० ४७। आमर्षणमामर्षः-हस्तादिसंस्पर्शः। औप० २८।

आमोसे-आमर्षणम् आमर्ष-अप्रमृज्य करेण स्पर्शनम्। आव० ५७४। आमोषाः-आ-समन्तान्मुष्णन्ति-स्तैन्यं कुर्वन्तीति। उत्त० ३१२।

आम्नाय-गुणनं, घोषविशुद्धं परिवर्तनं रूपादानं। तत्त्वा० ९-२५।

आम्रसालवनम् – आमलकल्पानगर्या वनम्। विशे० ९५०।

आम्लखलिकायाम्। विशे० ६०६।

आम्लम्-चतुर्थरसम्। आव० ८५४। अंबिला। उत्त० ६७७।

आयं-तोसलिविसए सीयलताए आयाणं सरेसु सेवालतरिया लाभंति, ताय वत्था कीरंति। नि० चू० प्र० २५४ आ। कर्माश्रवलक्षणम्। सूत्र० १८९। इष्टफलम्। भग० ४।

आयंकं-आतङ्क, आशुघाती रोग। आव० ७५९। सद्यो घाती रोग। दश० २७३। कृच्छ्रजीवनं दु:ख। आचा० ७५। आशुघाती शूलादि। जं० प्र० १२५। भग० ४७१। सद्योघातिव्याधि। भग० १२२। नरकादि-दु:खम्। आचा० १६०। कृच्छ्रजीवितकारी, सद्योघाती सर्वं शूलादि। ठाणा० ११९। शूलविशूचिकादि सद्यो घाती। ठाणा० १५०। व्याधि। भग० ६९०। आङिति सर्वात्मप्रदेशाभिव्याप्त्या तकयन्ति – कृच्छ्रजीवितमात्मान कुर्वन्ति इत्यातंका –सद्योघातिनो रोगविशेषा। उत्त० ३३८। आतङ्क, सद्योघातिन। औप० ९६। आव० ५८५। ज्वरादि। पिण्ड० १७७। आचा० २९७। कृच्छ्रजीवित कारी ज्वरादि। भग० ७०२। आतङ्क, आशुकारी व्याधिविशेष। दश० चू० १४। रोग। उत्त० ४८६। ज्वरादि। आव० ८४८। ओघ० १९०। कष्टजीवितकारी। विपा० ४०। आशुजीवितापहारी शूलादिक। सूत्र० २९२। आचा० २०५, ३३०, ३६२।

आयकसंपओग – आतङ्कसम्प्रयोग, आतङ्क –रोग तस्य योग। औप० ४३।

आयगुल-पुरुषात्मसम्बन्धि आत्माङ्गुलम्। अनु० १५६। अङ्गुलस्य प्रथमभेद। प्रज्ञा० २९९।

आयचणं – गोमुत्त। नि० चू० तृ० १२७ अ। व्य० प्र० १०४ आ।

आयचामि-लिंपामि, आश्रियामि। उपा० ३२।

आयतकरे – आत्मनोऽन्तम्– अवसान भवस्य करोतीति आत्मान्तकर, धर्म्मदेशनानासेवक प्रत्येकबुद्धादि। ठाणा० २१३।

आयति-आगच्छन्ति, उत्पद्यन्ते। आव० १७९।

आयतियमरणे-यानि नारकाद्यायुष्कतया कर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते मृतश्च न पुनस्तान्यनुभूय मरिष्यतीति। सम० ३३।

आयंती आयान्ती। आव० ३०७।

आयते-आचान्त, नवानामपि श्रोतसां शुद्धोदकप्रक्षालनेन गृहीताचमन। जीवा० २४३। कृतपान। भग० १६४।

आयदमे – आत्मदम, आत्मानं दमयति–शमयन्त करोति शिक्षयति वेति। ठाणा० २१४।

आयंबिलं-आयाम्लम्, ओदनकुल्माषादि। औप० ४०। आचाम्लम्। आव० ८५२। शुद्धौदनादि। अनुत्त० ३। सक्तूरा। आव० ८५५। पानकम्। ओघ० १३३।

आयंबिलपाउग्गं-आचाम्लप्रायोग्यम्, (कूरविहाणाणि)। आव० ८५५।

आयंबिलवड्ढमाणं आचाम्लवर्द्धमानम्, तपोविशेष। अन्त० ३२।

आयंबिलिए-आचाम्लिक। ठाणा० २९८।

आयंभरे – आत्मानं बिभर्ति पुष्णातीत्यात्मम्भरि। ठाणा० २४८।

आयंस-आदर्श, वृषभादिग्रीवाभरणम्। अनु० ४७। दर्पण। जं० प्र० ३९२। आदर्श। जं० प्र० ५१०।

आयंसघरं-आदर्शगृहम्। आव० १७०।

आयसघरगं – आदर्शगृहकम्, आदर्शमयमिव गृहकम्। जीवा० २००। जं० प्र० ४५।

आयंसमुहदीवे-आदर्शमुखद्वीप, अन्तरद्वीपनाम। ठाणा० २२६।

आयसमुहा – आदर्शमुखनामा नवमोऽन्तरद्वीप। प्रज्ञा० ५०। जीवा० १४४।

आयंसलिवी-ब्राह्मीलिपियदशभेद। प्रज्ञा० ५६।

आय-आय, श्रुतनाम। दश० १६। लाभ। अनु० १५४। आत्मा–शरीरम्। उत्त० ४१५। जीवश्चित्त वा। उत्त० ५०४। अतति–सतत गच्छति तानि तान्यध्यवसायस्थानान्तराणीति आत्मा–मन। उत्त० ३१४।

आयइ-आयति –अनागत, उत्तरकालम्। आव० ५०९।

आयकाय अनन्तकायविशेष। भग० ८०४।

आयक्खाहि-आख्याहि, कथय, निवेदय। भग० ११२।

आयगय-आत्मनि गत आत्मगत, आत्मस्थ इति। सूत्र० १२४।

आयगवेसए-आत्मगवेषक, आत्मान–कर्मविगमाद्युद्दवरूप गवेषयति–अन्वेषयते य स। आयगवेषक –आय – सम्यग्दर्शनादिलाभस्तं गवेषयतीति। आयतगवेषक –मूत्र लाघयतो वा–मोक्षस्त गवेषयतीति वा। उत्त० ४१५।

आयगुत्ते – आत्मा शरीरं तेन गुप्त आत्मगुप्त –न यत्र तत्र करणचरणादिविक्षेपकृत्, गुप्तो–रक्षितो–संयमस्थानेभ्य आत्मा येन स। उत्त० ४१५।

आयजोगे-आत्मयोगी, आत्मनो योगः-कुशलमनःप्रवृत्तिरूप आत्मयोगः, स यस्यास्ति स तथा, धर्मध्यानावस्थितः । सूत्र० ३४२ ।

आयट्ठं - आत्मनोऽर्थ आत्मार्थः, स च ज्ञानदर्शनचारित्रात्मकः, आत्मने हितं-प्रयोजनमात्मार्थं, चारित्रानुष्ठानमेव, आयतः-अपर्यवसानान्मोक्षः स एवार्थः । आयत्तः-मोक्षः, अर्थः-प्रयोजनं यस्य । आचा० ११० । आत्महितं । आचा० १०९ । ज्ञानादिरूपं स्वकार्यम् । बृ० द्वि० ७१ अ ।

आयट्ठी-आत्मार्थी, यो ह्यन्यमपायेभ्यो रक्षति सः, आत्मवान् । सूत्र० ३४२ ।

आयणाणं-आत्मज्ञानम्, वादादिव्यापारकाले किममुं प्रतिवादिनं जेतुं मम शक्तिरस्ति न वा ? इत्यालोचनम् । उत्त० ३९ ।

आयणीली-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

आयण्णं-आकीर्णम्, स्थानविशेषः । ओप० ९५४ ।

आयतंगुली-एगापएसिणी । नि० चू० प्र० २०८ अ ।

आयतगुत्ते-आत्मगुप्तः-सततोपयुक्तः । आचा० २७२ ।

आयतजोग - आयतयोगः-सुप्रणिहितं मनोवाक्कायात्मकम् । आचा० ३१४ । ज्ञानचतुष्टयेन सम्यग्योगप्रणिधानं । आचा० ३१४ ।

आयतणं-आयतनम्, गुणानामाश्रयः, अहिंसायाः सप्तचत्वारिंशत्तमं नाम । प्रश्न० ९९ । आविष्करणं कथनं, निर्णयनं वा । सूत्र० १८१ । स्थानम् । ओघ० २२२ । नि० चू० प्र० १९२ आ । देवकुलम् । नि० चू० द्वि० ६९ आ । दोषाणां स्थानं । आचा० ३२९ । ज्ञानादित्रयम् । आचा० २०५ ।

आयतणा-आयतनानि-बन्धहेतवः । ठाणा० ४५१ ।

आयतणाइं-आयतनादीनि, दोषरहितस्थानानि, वसतिगतानि, संस्तारकगतानि च । आचा० ३७२ । देवकुलपार्श्वापवरकाः । आचा० ३६६ । कर्मोपादानानि । आचा० ४०७ । उपभोगास्पदभूतानि । आचा० १२७ । कर्मोपादानस्थानानि । आचा० ३५६ । दोषस्थानानि । आचा० ३८६ ।

आयतरो-तवबलिओ । नि० चू० तृ० १२३ अ ।

आयतसंठाण-आयतसंस्थानम् । प्रज्ञा० ११ ।

आयता-दीर्घा । जीवा० १६४ ।

आयती-सन्ततिः । बृ० द्वि० २९३ अ ।

आयतीहितं-आगामिकालहितं, आत्मना हितं वा । दश० चू० १५७ ।

आयते-आयतः, संस्थानपञ्चमभेदः । प्रज्ञा० २४२ । भग० ८५८ ।

आयतो-आयतः, मोक्षः । सूत्र० १७३ । मोक्खो । दश० चू० ८८ ।

आयत्तं-आयतम्, सम्मिश्रम् । पिण्ड० ८१ । आधीनीकृतम् । आव० ३६६ ।

आयत्ताए-आत्मत्वाय-आत्मीयकर्म्मानुभवाय । आचा० २३३ ।

आयपइट्ठिते-आत्मप्रतिष्ठितः, आत्मना वा परत्राक्रोशादिना प्रतिष्ठितो-जनित आत्मप्रतिष्ठितः । ठाणा० ९२ । आत्मापराधेनैहिकामुष्मिकापायदर्शनादात्मविषयः । ठाणा० १९३ ।

आयपतिट्ठिए- आत्मप्रतिष्ठितः, आत्मन्येव प्रतिष्ठितः । प्रज्ञा० २९० ।

आयपवायं-आत्मप्रवादं, सप्तमपूर्वम् । ठाणा० १९९ ।

आयप्पवाय-आत्मप्रवादः, यत्रात्मनः संसारिमुक्ताद्यनेकभेदभिन्नस्य प्रवदनम् । दश० १२ । आत्मानं-जीवमनेकधा नयमतभेदेन यत्प्रवदति तत् । नंदी २४१ ।

आयप्पवायपुव्वं - आत्मप्रवादनाम सप्तमपूर्वम् । सम० २६ । विशे० ९४६ ।

आयभाव-आत्मभावः, स्वस्वरूपः । अनु० २२६ । जीवसम्बन्धः । अनु० २२० । उत्थानशयनगमनभोजनादिरूप आत्मपरिणामविशेषः । भग० १४९ । अनादिभवाभ्यस्तो मिथ्यात्वादिकः, विषयलुब्धता वा । सूत्र० २४० ।

आयभाववंकणया - आत्मभाववंकनता, आत्मभावस्याप्रशस्तस्य वङ्कनता-वञ्चीकरण प्रशस्तत्वोपदर्शनता । ठाणा० ४२ ।

आयभाववंचणा - आत्मभाववञ्चनता, मायाप्रत्ययिकीक्रियायाः प्रथमो भेदः । आव० ६१२ ।

आयभाववत्तव्वया-आत्मभाववक्तव्यता, अहंमानिता । भग० १३९ ।

आयमणं-आचमनम्, निर्लेपनादि । ओघ० १२७, १९०, १६२ । आशातनायाः दशमभेदः । आव० ७२५ । गण्ड-

पादिक्षरणम्। उत्त० ३७०। निर्लेपनम्। सू० सू० २०४ आ। णिक्षेपण। नि० चू० प्र० २२० आ। पुरीषोत्सर्गानन्तरं शौच करणम्। पिण्ड० ११। आचमनम्। ठाणा० ३३१।

आयमाणे-आददान, प्रवर्तमान। सूर्य० १२।

आयमेज्जा-निर्लेपन चापाने एवमेव कुर्यात्। ओघ० १२५।

आयय-आयतम्, प्रसारितम्, दीर्घम्। भग० ३३०। आयतं - मोक्ष, आयतम्-अत्यन्तम्। दश० २५८। आकृष्ट, दीर्घश्च। भग० ९३, ३३३। मोक्ष। व्य० द्वि० १९७ अ। आत्मा। आचा० १२२। मोक्ष संयमो वा। उत्त० ५८७। संयत। आचा० ३१४। प्रयत्नवान्। भग० ९३। दीर्घ सर्वकालभवनात् मोक्ष। सूत्र० ७५।

आययकण्णायत्त-आयतकर्णायतम्, प्रयत्नवत्कर्णं याव-दाकृष्टम्। भग० ९३।

आययचक्खू - आयतचक्षु - दीर्घमैहिकामुष्मिकापायदर्शि चक्षु-ज्ञान यस्य स। आचा० १३६।

आययट्ठिए-*आयतार्थिक, मोक्षार्थी।* दश० २५६।

आययट्ठिया-आयतार्थिका, आयतो-मोक्ष संयमो वा स एवार्थ प्रयोजनं विद्यते येषामिति। उत्त० ५८७। आयत - मोक्षस्तत्र स्थिता आयतस्थिता उद्यतविहारिण संविग्ना इत्यर्थ। व्य० द्वि० १९७ अ।

आययट्ठी-आयतार्थी, मोक्षार्थी। दश० १८७।

आययण-आयतनम्। आव० २११। आदानम्। अन्त० २४। गमनम्, गृहम्। जीवा० २०९। स्थानम्। ज० प्र० ७७। दश० १९८। आङ्-अभिविधौ समस्तपापा रम्भेभ्य आरात् आयत्यते-आनियम्यते यस्मिन् कुशला नुष्ठाने वा यत्नवान् क्रियत इत्यायतनं-ज्ञानादित्रयम्। आचा० २०९। उत्पत्तिस्थानम्। उत्त० ६२३।

आययतरे-आयततर, आयमनयोरतिशयेनायत आयत तर। आचा० २९४। यत्नेनाध्यवसित। आचा० २९३।

आयरंति-आचरन्ति, आसेवन्ते। दश० १९८।

आयरंतो-आचरन्, व्यवहरन्, कुर्वन् वा। उत्त० ६४।

आयरक्खा-आत्मरक्षा, स्वात्म्यात्मरक्षा। भग० ११४। अंगरक्षा राज्ञाम्। ठाणा० ११७।

आयरक्खिए-आत्मरक्षित, आत्मा रक्षितो दुर्गतिहेतोरप ध्यानादरनेनेति। उत्त० ९९। आयरक्षित -आयो वा-ज्ञानादिलाभो रक्षितोऽनेनेति। उत्त० ९९। आत्मा रक्षितो दुर्गतिपातनात् आतोऽनेनेति, रक्षिता आया -सम्यग्दर्शना दिलाभा येनेति। उत्त० ४१४।

आयरणं-आचरणम्, अनुष्ठानम्। उत्त० ५३३।

आयरणया-आदरणं, अभ्युपगमं आचरणम् वा। भग० ५७३।

आयरणा-आचरणा, विधि, मर्यादा, सीमा च। आव० ६३९। तृतियभङ्गविरूपो। नि० चू० प्र० १९८ अ। चर्या। बृ० तृ० १२९ आ।

आयरिअ-आचार्य, शिल्पोपदेष्टा। भग० ३१७। औप० ६२। अनुयोगाचार्य। उत्त० १७। व्य० प्र० १३७ अ। अनुयोगधर। आचा० ३५३। गणसंनिर्देशकारी। नि० चू० प्र० १६ अ। आयरिए-आचार्य -प्रतिबोधकप्रव्राजकादि अनुयोगाचार्यो वा। ठाणा० १४३, १४४।

आयरियं-आचरितम्, आसेवितं। आव० २६३। आर्य्य - आराद् यात पापकर्मभ्य इति। भग० ९०। *आराग माचरितं तत्क्रियाकलाप। उत्त० २६६। आराद्यातं* सर्वकुयुक्तिभ्य इत्यार्य-तत्त्वं तत्। उत्त० २६६। आर्यम्-आर्याणां कर्तव्य आचार्यं वा, मुमुक्षुणा यदाचरणीयं ज्ञान दर्शनचारित्रम्। सूत्र० १८४। पापकर्मभ्य आराद्यातमि त्यार्यम्। ठाणा० ११९।

आयरिय-आचार्य। प्रज्ञा० ३२७। शिल्पी। जं० प्र० २१२। आङिममिव्याप्त्या मर्यादया वा स्वयं पञ्चविधा चारं चरत्याचरयति वा परान्, आचर्यते वा, मुक्त्यर्थिभि रासेव्यत इति। उत्त० ३७। *आ-मर्यादया-तद्विषयविन-यरूपया चर्यते-सेव्यते,* जिनशासनार्थोपदेशकतया तदा काङ्क्षिभिरिति, आचार -ज्ञानाचारादि, आ-मर्यादया वा चारो विहार आचार तत्र य स्वयंकरणात्प्रभाषणात्प्रदर्शनाच साधु स, आ-ईषत्-अपरिपूर्णा हेरिका ये ते चारा - आचारा च्चारकल्पा, युक्तायुक्तविभागनिरूपणनिपुणा विने या शिष्यास्तेषु यो यथावच्छास्त्रार्थोपदेशकतया। भग० ३।

आयरियउवज्झाए - आचार्योपाध्याय, आचार्येण सहो पाध्याय। भग० २३२। आचार्योपाध्याय। नि० चू० प्र० १६६ आ।

आयरियजणवय देशविशेष। नि० चू० प्र० ३४४ आ।

आयरियते - आचार्यकम्-तद्भावव्याख्यातृत्वम्। व्य० प्र० १६६ अ।

आयरियव्वं-पढियव्वं। नि० चू० प्र० ५ आ।

आयवणाम-आतपनाम-यदुदयात् जन्तुशरीराणि स्वरूपेणानुष्णान्यपि उष्णप्रकाशलक्षणमातपं कुर्वन्ति तदातपनाम, तद्विपाकश्च भानुमण्डलगतेषु पृथिवीकायिकेष्वेव न वह्नौ, प्रवचनेऽपि निषेधात्, तत्रोष्णत्वमुष्णस्पर्शनामोदयात्, उत्कटलोहितवर्णनामोदयाच्च प्रकाशकत्वम्। प्रज्ञा० ४७३।

आयरिया-आचार्याः-प्राणाचार्या वैद्याः। उत्त० ४७५। व्य० प्र० १७१ अ।

आयरिसो-आदर्शः। आचा० ५।

आयरेणं-आदरेण, प्रयत्नेन। जं० प्र० १९२।

आयरो-आदरः, आद्रियते आदरणं वा, परिग्रहस्याष्टमं नाम। प्रश्न० ९२। सम्भ्रमः। बृ० तृ० ११ अ।

आर्य-अज्ज, पितामहः। व्य० प्र० १७१ अ। अनुग्रहीकारी। व्य० प्र० १४ अ।

आयल्लयं-शृहम्। पउ० ३३-६६। पराधीनताम्। पउ० २४-१५।

आयवं-आतपवान्, चतुर्विंशतितममुहूर्त्तनामविशेषः। सूर्य० १४६। जं० प्र० ४९१। रविबिम्बजनित उष्णप्रकाशः। उत्त० ५६१। आतपः, आ-समन्तात्तपति सन्तापयति जगदिति। उत्त० ३८। घर्मः। उत्त० १२१।

आयवतत्तए-आतपतप्तं पयः। भग० ६८०।

आयवत्ताइं-आतपत्राणि, छत्राणि। जं० प्र० ८१।

आयवाइ-विश्वकारणात्मवादिनः। आव० ८१६।

आयवाई-आत्मवादिनः, क्रियावादिविशेषः। सम० ११०। 'पुरुष एवेदं ग्नि' मित्यादि प्रतिपत्तुरिति। ठाणा० २६८।

आयवाभा-आतपाभा, सूर्यस्य ज्योतिषेन्द्रस्य द्वितीया अग्रमहिषी। जीवा० ३८५। सूर्यस्य पत्नीनाम। भग० ५०५।

आयवी-आत्मवित्, आत्मानं श्वभ्रादिपतनरक्षणद्वारेण वेत्तीति। आचा० १५४।

आयवीरियं-वीर्यस्य पञ्चमभेदः। नि० चू० प्र० १९ अ।

आयसंचेयणिज्जा-आत्मना संचेत्यन्ते-क्रियन्त इति आत्मसंचेतनीया (घट्टन-पतन-स्तंभन-श्लेषजन्या उपसर्गाः)। ठाणा० २८०।

आयसंचेयतो-आत्मसंचेतनीयः-आत्मनैवात्मनो दु खोत्पादनम्। व्य० प्र० १९६ अ।

आयसा-आत्मना। सूत्र० १०६।

आयसी-लोहमयी, दर्भमयी च। प्रश्न० ११।

आयसंवेणिज्जा-आत्मसंवेदनीया-आत्मना क्रियन्ते ये, उपसर्गाः। आव० ४०५।

आयसरीरसंवेयणी-आत्मशरीरसंवेजनी, संवेजनीकथायाः प्रथमोभेदः। दश० ११२।

आयसरीराणवकंखिया-स्वशरीरक्षतिकारिणी क्रिया। ठाणा० ४३।

आयसेण-आत्मसेनः, जंबूद्वीपैरवते अस्यामवसर्पिण्यां चतुर्थतीर्थकृत। सम० १५९।

आया-आत्मा, जीवः। आचा० १६। आत्मा। भग० १२२। आत्मा, रूपं। नंदी २१२। द्वादशशते आत्मभेदनिरूपणार्थो दशमोद्देशकः। भग० ५५२। अतति-सततमवगच्छति 'अत सातत्यगमने' इति वचनादतो, धातोर्गत्यर्थत्वाद्गत्यर्थानां च ज्ञानार्थत्वादनवरतं जानातीति निपातनादात्मा-जीवः उपयोगलक्षणत्वादस्य सिद्धसंसार्यवस्थाद्वयेऽप्युपयोगभावेन सततावबोधभावात्, अतति-सततं गच्छति स्वकीयान् ज्ञानादिपर्यायानित्यात्मा, संसार्यपेक्षया नानागतिषु सततगमनात् मुक्तापेक्षया च भूततद्भावत्वादात्मेति। ठाणा० १०।

आयाए-आत्मविराधनादोषः। ओघ० ७९।

आयाणं-आदानम्, ईप्सितार्थग्रहणम्। औप० १८। अर्गलास्थानं वा। औप० १८। दुष्प्रणिहितमिन्द्रियं। आचा० ३०४। कर्मादानम्। आचा० ३३७। आदीयते-स्वीक्रियते प्राप्यते वा मोक्षो येन तत्, ज्ञानदर्शनचारित्रत्रयम्। सूत्र० ५२। ठगलगा। नि० चू० प्र० २२०,आ। गहणं, जेण मग्गेण गंतूण दगमट्टियहरियादीणि पेप्पंति तं दगमट्टियं। दश० चू० ७८। कुचादिग्रहणम्, सम्प्राप्तकामस्यैकादशो भेदः। दश० १९४। आदानः-आदीयतेऽनेनेत्यादानो-मार्गः। दश० १६८। इन्द्रियम्, करणम्। भग० २८६। आदीयते-द्वारस्थगनार्थं गृह्यत इत्यादानः। जं० प्र० १११। आदीयते- गृह्यते आत्मप्रदेशैः सह श्लिष्यतेऽष्टप्रकारं कर्म येन तदादानम्, हिंसाद्याश्रवद्वारमष्टादशपापस्थानरूपं वा। आचा० १७०। संयमानुष्ठानं। आचा० १२८। कर्मोपादानं। आचा० २४३, ३३०। आदीयते-सावद्यानुष्ठानेन स्वीक्रियते। आचा० १५३। आदिः। व्य०प्र० ११८

आ। हिंसायाश्रवद्वारमष्टादशपापस्थानरूपं वा तत्स्थितेर्नि मित्तत्वात्तयाया वा। आचा० १७१। आदीयत इति, धनधान्यादि। उत्त० २६५। आदीयत इति आदि – प्रथमम्। उत्त० ५७०। आदीयन्ते-गृह्यन्ते शब्दादयोऽर्था एभिरिति आदानानि-इन्द्रियाणि। सू० प्र० २११ आ। आदीयते सद्विवेकैर्गृह्यत इति, चारित्रधर्म। उत्त० ३३८। आदीयते गृह्यतेऽर्थ अनेनेत्यादानम्-इन्द्रियम्। भग० २२४। आदान, आदेयो रम्य। प्रश्न० ८१। आदीयते-स्वीक्रियते आत्महितमनेनेति-सयम। उत्त० २२५। सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्ररूपम्। सूत्र० ४०५।

आयाणपयण – आदीयते-प्रथममेव गृह्यत इत्यादान तच्च तत्पद चादानपद तेन आदानपदेन। आचा० १९६।

आयाणपय – आदानपदम्, शास्त्रस्याध्ययनोद्देशकादेर्धात्रि पदम्। अनु० १४१।

आयाणपरिसाडे–आधानपरिसाटम्, गर्भाधानपरिशाटरूप मूलकर्मतृतीयभेद। पिण्ड० १४२।

आयाणभडमत्तनिक्खेवणासमिई – आदानभाण्डमात्र निक्षेपणासमिति, भाण्डमात्रे आदाननिक्षेपविषया समिति – सुन्दरचेष्टा। आव० ६१६। आदाने-ग्रहणे भाण्डमात्राया वस्त्राद्युपकरणरूपपरिच्छदस्य, उपकरणस्य वा, भाण्डस्य-वस्त्रादेर्मृन्मयभाजनस्य वा मात्रस्य च-पात्रविशेषस्य निक्षे पणायां-विमोचने ये समिता –सुप्रत्युपेक्षितादिक्रमेण सम्यक् प्रवृत्तास्ते। औप० ३५।

आयाणरक्खी – आदानरक्षी, आदीयते-स्वीक्रियते आत्म हितमनेनेत्यादान –सयमस्तद्रक्षी। उत्त० २२५।

आयाणसो–आदानश –आदेरारभ्य। सूत्र० ४२४।

आयाणसोय – आदानस्रोत, आदीयते – सावद्यानुष्ठानेन स्वीक्रियत इति आदानम्-कर्म्म ससारबीजभूत तस्य स्रो तासि-इन्द्रियविषया मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगा वा। आचा० १९२।

आयाणसोयगढिए – ससारबीजभूतेन्द्रियविषय मिथ्या त्वादिगृद्ध -अध्युपपन्न। आचा० १९३।

आयाणिज्जं–आदानीयम्-श्रुत। आचा० १२२। कर्म। आचा० २४२। आदातव्य भोगाङ्ग, आदानीय-कर्म आचा० १२२। प्राप्य, आदयवचनध। आचा० १९१।

आयाणी–त्वग्विशेषास्तेनेऽजा मूषगरोमजाते भवन्ति, तत्र क्ष्मनिष्पन्नानि आजकानि भवन्ति। आचा० ३९४।

आयाणिय–आदानीयम्, ग्राह्यम्। आचा० ३८।

आयाती–आयाति, गर्भान्निर्गम। ठाणा० ६७।

आयापरिणामो – आत्मया परिणाम। व्य० द्वि० ४५० अ।

आयाम – अवश्रायनम्। आव० ५४। दैर्घ्यम्। अनु० १८०, १७१। भग० ११९। ठाणा० ६९। आव० १८४। अवश्रावणम्। ओघ० १३३। पिण्ड० १७। आचाम। ठाणा० ३३९। अवसामग। नि० चू० प्र० ४७ आ। आचाम्लम्। उत्त० ७०६। उत्सवम्। भग० ३११।

आयामग–आयामकम्, अवश्रावणम्। उत्त० ४१९।

आयामणया–आकर्षणम्। भग० ९३।

आयामते–आयामकम्-अवश्रावणम्। ठाणा० १४७।

आयामविक्खंभो – आयामविष्कम्भ। आव० १५०।

आयामुसिणोदग–अवश्रावणमुष्णोदकं च। ठाणा० ३३९।

आयामे–आयाम, दैर्घ्यम्। प्रज्ञा० ४२७।

आयामेति–ददाति। भग० ६६३।

आयामेत्ता–आयामेन समाकृष्य। सूत्र० ३०९। आयम्य, आकृष्य। भग० ९३।

आयामेत्था–भोजितवान्। भग० ६६२।

आयाय–आदाय, स्वीकृत्य चरित्वा। उत्त० १२८। अव गम्य। आचा० ३३९। गृहीत्वा मयैनदर्थ यतितव्यमिति निश्चित्य बुद्ध्या सम्प्रधार्येतियावत्। उत्त० २६८। बुद्ध्या गृहीत्वाऽभ्युपगम्य। उत्त० २५३। गृहीत्वा, अवगम्य। आचा० ३३५। बुद्ध्या गृहीत्वा। उत्त० १०४।

आयार–स्वरूपम्। जं० प्र० १८। मूलगुणादि। दश० २५६। लोचास्नानादि। दश० ११०। आङ्–मर्यादाया चरण चार–मर्यादया कालनियमादिलक्षणया चार आचार इति। आव० ४४८। चतुर्थनिर्युक्ति। आव० ६१। श्रुतज्ञानादिविषयमनुष्ठान कालाध्ययनादि। भग० १२०। व्यवहार। ठाणा० ६४। चारित्रम्। उत्त० ५८३। ज्ञानाचारादि। उत्त० ५८३।

आयारअक्खेवणी–आचाराक्षेपणी, आचारो–लोचास्नाना दिस्तत्प्रकाशनेन आक्षेपणी। ठाणा० २१०।

आयारकहा। नि० चू० द्वि० ६५ अ।

आयारकुसल-ज्ञानाद्याचारेण कर्मकुशलो लावकः। व्य० प्र० २३४। आचारे ज्ञातव्ये-प्रयोक्तव्ये वा दक्षः, अभ्युत्थानासनप्रदानाद्युपहितान्तगुणानामाकरो वा। व्य० प्र० २३६।

आयारक्खी-आत्मरक्षी, आत्मानं रक्षत्यपायेभ्यः दुर्गतिगमनादिभ्य इत्येवंशीलः। उत्त० २२५।

आयारगोअर - आचारगोचरः, क्रियाकलापः। दश० १९१। आचारः - मोक्षार्थमनुष्ठानविशेषस्तस्य गोचरः। आचा० २६६।

आयारग्ग-चूलिका। आचा० ७।

आयारतेणे-आचारस्तेनः, विशिष्टाचारवत्तुल्यरूप. इति। दश० १९०।

आयारदंसणं-आचारदर्शनम्, प्रत्युपेक्षणादिक्रियादर्शनम्। आव० ४४८।

आयारदोसो-आचारदोष। आव० ६५४।

आयारपकप्प -आचारप्रकल्पः, आयरणं आयारो सो य पञ्चविहो-णाणदंसणचरित्ततववीरियायारो य, तस्स पकरिसेणं कप्पणा-सप्रभेदप्ररूपणेत्यर्थ.। नि० चू० प्र० ४ आ। आचार-प्रथमाङ्गं तस्य प्रकल्प.-अध्ययनविशेषो निशीथमित्यपराभिधानं, आचारस्य वा-साध्वाचारस्य ज्ञानादिविषयस्य प्रकल्पो व्यवस्थापनमित्याचारप्रकल्पः। सम० ४८। उत्त० ६१६। (निशीथ) आचार एव। आव० ६६०। प्रत्याख्यानपूर्वस्य विंशतितमं प्राभृतं। आचा० ३१९, ३२०। निशीथाध्ययनम्। ठाणा० ३२५।

आयारपभासणं-कालनियमाद्याचारव्याख्यानम्। आव० ४४८।

आयारफल-आचारफलम्, मुक्तिलक्षणम्। उत्त० ५८३।

आयारभंडय-आचारभाण्डम्। अनुत० १।

आयारभंडग-आचारभाण्डकं-पात्रकम्। ओघ० १५१।

आयारभाव-विशिष्टाचार·। दश० १९०।

आयारमंतरे-आचारान्तरे। आव० ७९३।

आयारवं-पंचविहं आयारं जो मुणइ आयरइ वा सम्मं सो। नि० चू० तृ० १२८ आ। ज्ञानादिपञ्चप्रकाराचारवान्। ठाणा० ४२४, ४८४।

आयारवंतं-आकारवत्, सुन्दराकारं, आकारचित्र वा। औप० २।

आयारसमाही-आचारसमाधिः, चतुर्थं विनयसमाधिस्थानम्। दश० २५५।

आयारे-आचारः। नि० चू० तृ० १४८ आ। ज्ञानादिविषयाऽऽसेवा। ठाणा० ३२५। आचार्याणां नमस्कारार्हत्वे तृतीयहेतु·, तानाचारवत आचाराख्यापकांश्च प्राप्य प्राणिन आचारपरिज्ञानानुष्ठानाय प्रभवन्ति। आव० ३८३।

आयारो-आचारः, साधुसामाचारी। प्रश्न० १२५। आचार्यते आसेव्यत इत्याचारः। आचा० ५। आचार·। व्य० द्वि० ३९१ अ।

आयावए-आतापनाकारी। प्रश्न० १०७।

आयावगा-असुरकुमारविशेष·। भग० ६२०।

आयावणा-आतापनास्थानम्। आव० ३९१।

आयावादी-आत्मवादी। आचा० २२।

आयावतं-सकृदीषद्वा तापनमातापनम्। दश० १६३।

आयाविंतो-आतापयन्। आव० ३७१।

आयास-पीडा। ओघ० १५७। लोहमयम्। भग० ३१९। मन प्रभृतीनां खेद., परिग्रहस्य चतुर्विंशतितमं नाम। प्रश्न० ९२।

आयासकर-आदेशित. आदेश, आदेशत इति आदेश। व्य० द्वि० ३३६ आ।

आयाहिणपयाहिणं - आदक्षिणप्रदक्षिण., आदक्षिणात्-दक्षिणहस्तादारभ्य प्रदक्षिण -परितो भ्राम्यतो दक्षिण एव। सूर्य० ६। आव० १२४। जं० प्र० १७। भग० ११४।

आयाहिण-आदाहिणा, आदक्षिणाप्रदक्षिणा। आव० २३२।

आयु.कर्मानुभूतिः - स्थितिर्जीवितमिति। प्रज्ञा० १६९।

आयुःक्षेमस्य-जीवितस्य। आचा० २९१। आयुष क्षेम - सम्यक्पालनं तस्य। आचा० २९०।

आयुर्वेदः-वैद्यशास्त्रम्। विपा० ७५।

आयो-लाभ। भग० ९। गमनं, वेदनम्। ठाणा० ३४८।

आयोगठाणं - आयोगस्थानम्, मेलनस्थानम्। आव० ८२३।

आयोग्गहो-आयपमाणं खेत्तं। नि० चू० प्र० २४६ आ।

आयोधनस्थानम्-अट्टालकम्। उत्त० ३११।

आरं-आरः, संसारः। बृ० प्र० ५१ अ, २०१ अ। इहभवः, गृहस्थत्वम्, संसारी वा। सूत्र० ५६। इहलोकाख्यं मनुष्यलोकं वा। सूत्र० १५२।

आरंभ – आरम्भः, जीवोपघातः, उपद्रवणं, सामान्येन वाऽऽश्रवद्वारप्रवृत्तिः। भग० ३१। श्रावकस्याष्टमी प्रतिमा। आव० ६४६। आरम्भ्य। आव० ६८८। सावद्यानुष्ठानम्। आचा० ७८। जीवोपघातः। भग० ७३५। पृथिव्याद्युपमर्दनं। ठाणा० १०८। सावद्यक्रियानुष्ठानम्। आचा० १५६। आरम्भणमारम्भः, शरीरधारणायान्नपानाद्यन्वेषणा। आचा० २९०। प्राणिवधः। तत्त्वा० ६-९। द्रव्योत्पादनव्यापाराः। उत्त० ४५६। पृथिव्याद्युपमर्दनम्। प्रज्ञा० ३३५। जीवः, कृष्यादिव्यापारः, जीवानामुपद्रवणं वा। प्रश्न० ६। नि० चू० प्र० ३३ आ। व्यापारः। प्रश्न० ६३। हलदन्तालखननः। आव० ८१८।

आरंभइ-आरभते-पृथिव्यादीनुपद्रवयति। भग० १८३।

आरंभओ – आरम्भजः, आरम्भात्-हलदन्तालखननाज्जायते सः। आव० ८१८।

आरंभकहा-आरंभकथा, छागतित्तिरमहिषारण्यकादिका हता अत्रेति प्रशंसनं द्वेषणं वा। भक्तकथायास्तृतीयभेदः। आव० ५८१। तित्तिराद्युपयोगकथा। ठाणा० २०९।

आरंभपरिण्णाए-आरम्भः-पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षणः परिज्ञातः-तथैव प्रत्याख्यातो येनासावारम्भप्रतिज्ञातः, श्रमणोपासकाष्टमी प्रतिमा। सम० १९।

आरंभसमारंभो-आरंभसमारंभः, आरंभा-जीवास्तेषां समारंभ-उपमर्दः, अथवा आरंभ:-कृष्यादिव्यापारस्तेन समारंभो जीवोपमर्दः, अथवा आरंभो-जीवानामुपद्रवणं तेन सह समारंभः, परितापनमिति वा, प्राणवधस्यैकादशपर्यायः। प्रश्न० ५।

आरंभिया- आरंभिकी, आरंभः-पृथिव्याद्युपमर्दनं स प्रयोजनं-कारणं यस्याः सा, सम्यग्दृष्टेः प्रथमक्रिया। प्रज्ञा० ३३४। विंशतिक्रियामध्ये प्रथमा। आव० ६१२। आरम्भणमारम्भः तत्र भवा आरम्भिकी। ठाणा० ४१।

आरक्खि-आरक्षकः चौरग्राहकः। बृ० द्वि० १०७ अ। आरक्षिकः। ओघ० ८९।

आरक्खिगो-दंडवासिगो। नि० चू० तृ० ३० आ।

आरक्खितो-कोट्टपालो। नि० चू० प्र० २६२ अ।

आरक्खिय – आरक्षकः। उत्त० १६५। दण्डनायकः। दश० १६६। आव० ६३३। ओघ० १०६। आरक्षिकाणामप्युपरि स्थायिनो हिंडिका आरक्षिकाः, पुररक्षिकाः। व्य० प्र० १३५ अ।

आरक्खियपुरिसो-आरक्षकपुरुषः। आव० ३५३।

आरगय – आरादागतम्-आराद्भागस्थितमिन्द्रियगोचरमागतमित्यर्थः। भग० २१७।

आरघट्टिकम्। उत्त० ३८२।

आरडन्ती-रुदन्ती। नंदी १५४।

आरडं-संशब्दनम्। ओघ० ८१।

आरणा – आरणाः, कल्पोपगैकादशवैमानिकभेदः। प्रज्ञा० ६९।

आरण्ण-आरण्यः, तापसादिः। अनु० २४४।

आरण्णगतणं-श्यामाकादितृणम्। बृ० द्वि० २२० अ।

आरण्णिय-आरण्यकः, अरण्ये भवः, तीर्थिकविशेषः। सूत्र० ४२२।

आरण्यकम्-लौकिकश्रुतम्। आव० ४६५।

आरतः-अत्र इतो वा। उत्त० ५४०।

आरत्तं-आरक्तम्, ईषद्रक्तम्। आचा० १२१।

आरद्धो-आरब्धः। विशे० ९८१।

आरनालं-कंजियं (देसीभासाए)। नि० चू० प्र० ४७ अ।

आरनियद्धा-आरकनिबद्धा, गन्त्री। पिण्ड० १०२।

आरन्निय-अरण्ये वसतीति आरण्यकः। सूत्र० ३१५।

आरबके – आरबदेशोद्भवान्, म्लेच्छविशेषान्। जं० प्र० २२०।

आरबदेसजा-आरब्यः। जं० प्र० १९१।

आरबी-आरबदेशवासिनी स्त्री। भग० ४६०।

आरबो-आरबः, चिलातदेशवासी म्लेच्छः। प्रश्न० १४।

आरभंती-आरभमाणा, षट्कायान् विनाशयन्ती। पिण्ड० १५७।

आरभटभसोलः-निंशत्तमो नाट्यविधिः। जीवा० २४७।

आरभड – आरभटम्, नृत्यविशेषः। जं० प्र० ४१२। नि० चू० तृ० १ अ। जहाभिहितविधाणतो विवरीयं, अहवा तुरियं अण्णंमि वा दरपडिलेहिंते अण्णं आढवेंति। नि० चू० प्र० १८१ आ। वितथकरणरूपा, त्वरितं सर्वमारभमाणस्य, अर्द्धप्रत्युपेक्षित एवैकत्र यदन्यान्यवस्त्रग्रहणं सा। ठाणा०

३६१। विपरीता प्रत्युपेक्षणा, आकुल यदन्यान्यवस्त्रग्रहण तद्वा। ओघ० १०९। सोत्साह मुभः तेषामिदम्। ज० प्र० ४१७। अष्टाविंशतितमो नाट्यविधि। जीवा० २४७। ज० प्र० १४७।

आरयं—आरतं, उपरतम्। सूत्र० १०५। अभिविधिना आसक्त। प्रश्न० १२८।

आरसिउं—आरस, रटित्वा। आव० १०४।

आरसियं—आरसितम्, शब्दित। आव० २२७।

आरा—आरा, प्रवणदण्डान्तर्वर्तिनी लोहशलाका। प्रश्न० २२। तुट्टोवाणहसिव्वणट्ठा। नि० चू० द्वि० १८ अ।

आराओ—आरात्, आरसनम्। आव० ६७७।

आरादण्डः—प्रतोद। दश० २५०।

आराम—तत्र रमणीयतातिशयेन स्त्रीपुरुषमिथुनानि यत्र आरमन्ति स विविधपुष्पजात्युपशोभित आराम। अनु० २४। विविधपुष्पजात्युपशोभित। ठाणा० २१२। रति। आचा० २२९। आराम—आरमन्ति यस्मिन्माधवीलतादिके दम्पत्यादीनि स आराम। भग० २३८। आरामा—दम्पत्यादीनि येष्वारमन्ति ते। अनु० १४९। वाटिका। प्रश्न० ८। आरमन्ति—यस्मिन् माधवीलतागृहादौ दम्पत्यादीनि क्रीडन्तीति। औप० ३। पुष्पप्रधानवनम्। औप० ४१। दम्पत्योर्नगरासन्नरतिस्थानम्। ज० प्र० ३८८। आगत्य रमन्तेऽत्र माधवीलतागृहादिषु दम्पत्य इति स। जीवा० २५८। दम्पतिरमणस्थानभूतमाधवीलतादियुक्त। प्रश्न० १२७। दम्पतिरतिस्थानलतागृहोपेतवनविशेष। प्रश्न० ७३। माधवील्लतागृहोपेतो दम्पतिरमणाश्रयो वनविशेष। प्रश्न० १२६।

आरामाइ—विविधवृक्षलतोपशोभिता कदल्यादिप्रच्छन्नगृहेषु स्त्रीसहितानां पुंसां रमणस्थानभूता। ठाणा० ८६।

आरामागार—आराममध्यवर्ति गृहम्। औप० ६१। उद्यान गृहम्। आचा० ३६५। आचा० ३०६।

आरामिओ—आरामिक। आव० ३९०।

आराहइत्ता—आराध्य, उत्सर्गप्रपवादिप्रकारेणाराधयित्वा। उत्त० ५७२। यथावदुत्सर्गापवादकुशलतया यावज्जीवं तद-र्थमिवनेन। उत्त० ५७२।

आराहए—आराधयति, प्रगुणीकरोति। दश० २८४। आराधक—निरतिचारपालनाकृत्। उत्त० ५७८।

आराहओ—आराधक, अविराधक। ओघ० ११२।

आराहगा—आराधका—आराधयन्ति—अविकलतया निष्पादयन्ति सम्यग्दर्शनादीनि इत्याराधका। उत्त० २३३। आवर्जका। उत्त० ३६१।

आराहण—आराधनम्, अखण्डकालकरणम्। भग० २९७।

आराहणा—आराधना, सम्यगासेवना। उत्त० ५८६। अनुष्ठानम्। उत्त० ५९१। ज्ञानाद्याराधनात्मिका। उत्त० ५८२। आवर्जनार्थम्। उत्त० ५११। अखण्डकालस्य करणम्। आव० ८४०। चरमकाले निर्यापणरूपा। दश० २६२। मोक्षमार्गाखण्डना। आव० ५६२। आवश्यकस्य पर्याय। विशे० ४१५। अष्टमशते दशमोद्देशक। भग० ३२८। अखण्डकालकरणम्। उपा० १२। मोक्षाराधनाहेतुत्वात्। अनु० ३१। निरतिचारज्ञानाद्यासेवा। ठाणा० ९८।

आराहणामरणंते—आराधनामरणान्ते, मरणकाले आराधना, योगसङ्ग्रहे द्वात्रिंशत्तमो योग। आव० ६६४।

आराहणी—आराधनी, आराध्यते-परलोकापीडया यथावद् भिधीयते वस्त्वनया, द्रव्यभावभाषाभेद। दश० २०८।

आराहा—आरोहन्ति ते आराहा। नि० चू० प्र० २७७ अ।

आराहिय—आराधितम्, एभिरेव प्रकारै सम्पूर्णैर्निष्ठा नीता। ठाणा० ३८८। सफलीकृत। उत्त० २९८।

आराहियचरणया—आराधितचरणता, चरणप्रतिपत्तिसमयादारभ्य मरणान्त यावन्निरतिचारतया तस्य पालना। भग० ६९५।

आराहेइ—आराधयति, साधयति। उत्त० ५८२।

आरिय—आर्या, आराद् याता सर्वहेयधर्मेभ्य इत्यार्या—समारार्णवत वर्तिन क्षीणघातिकर्म्मांशा समारोदरविवरवर्त्तिभाव द तीर्थकृत। आचा० ११९। ऋद्धिप्राप्ता अर्हदादय, क्षेत्रजात्याद्यार्या। सम० १३५। आर्य—चारित्रार्ह। आचा० १३१।

आरिओ—आर्य, आराद् यात सर्वहेयधर्मेभ्य इति। सूत्र० ३३। आराद्यात सर्वहेयधर्मेभ्य इति, मोक्षमार्ग सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मक। सूत्र० १७२।

आरियदंसी—आर्य—प्रगुण न्यायोपपन्न पश्यति तच्छीलश्चेति आर्यदर्शी-पृथक्प्रहेय कर्मासासनादिसम्पर्करहित। आचा० १३१।

आरियपदेसिए-आर्यप्रदेशित -तीर्थकरप्रणित । आचा० २४७ ।

आरियपन्ने - आर्यप्रज्ञ -श्रुतविशेषितशेमुषीक । आचा० १३१ ।

आरिया-आर्या , आराद्धेयधर्मेभ्यो याता -प्राप्ता उपादेय धर्मैरिति। प्रज्ञा० ५५।

आरुग्ग-आरोग्य-सिद्धत्वम् । आव० ५०७ ।

आरुग्गबोहिलाभो आरोग्यबोधिलाभ , आरोग्यस्य भाव आरोग्य-सिद्धत्व, तदर्थं बोधिलाभ -प्रेत्य जिनधर्मप्राप्ति । आरोग्याय बोधिलाभ । आव० ५०८ ।

आरुभिता छायाया नवमभेद । सूर्य० ९५ ।

आरुहय-आर्हतम् । आव० ४६५ ।

आरुहेत् । आचा० ३७९ ।

आरुहते-अध्यास्यते । उत्त० ५१० ।

आरूढ-आरुढ अध्यासित । उत्त० ३४९।

आरूढे पाउयाहिं-आरुढ पादुकयो -काष्ठमयोपानहो , एषणायां नवमदायकदोष । पिण्ड० १५७ ।

आरुवणा-आरोपणा, यत्रैकस्मिन्प्रायश्चित्तेऽन्यदप्यारोप्यते। प्रश्न० १४५ । आचारप्रकल्पस्याष्टाविंशतितमो भेद । आव० ६६० । पर्यनुयोग । विशे० ११५२ । पच्छित्त । नि० चू० प्र० २३९ आ ।

आरे-पकप्रभापक्रान्तमहानरका । ठाणा० ३६१ ।

आरेण-आरत , प्रत्यूर्पात । ओघ० १४८ । आरात् । सूत्र० ४२३ । समारभ्य । विशे० ९३८ ।

आरोगसाला-आरोग्यशाला । नि० चू० द्वि० ३८ आ ।

आरोग्ग-आरोग्य, रोगाभाव । आव० ३४१। नीरोगता। आव० ३४१।

आरोग्गा-अरोगा -ज्वरादिवर्जिता । ठाणा० २४७ ।

आरोवणा - आरोपणा, आरोपणमेकापराधप्रायश्चित्ते पुन पुन आसेवनेन विजातीयप्रायश्चित्ताध्यारोपणम्। ठाणा० २०० । प्ररूपणाया प्रथमभेद । आव० ३८२ । परस्परा बधारणम् । आव० ३८३ । प्रायश्चित्तम् । वृ० प्र० ८९ आ । चढावना (मायाप्रत्ययमधिकप्रायश्चित्तम्)। ठाणा० ३२५। चढावणा, अहवा न दव्वादि पुरिस विभागेण दाण सा आरोवणा । नि० चू० तृ० ८५ अ । आचाराङ्गस्याष्टविंशति तममध्ययनम् । उत्त० ६१७ ।

आरोवणाकसिणं-आरोपणाकृत्स्नं, षण्मासिकं तत्र परम भगवतो वर्द्धमानस्वामिनस्तीर्थे आरोपणाभावात् । व्य० प्र० ११८ आ ।

आरोवणापायच्छित्तं-प्रायश्चित्तभेद । व्य० प्र० ११ अ।

आरोहकः । उत्त० ४८ ।

आरोहणा - आरोपणा-प्रायश्चित्तविशेष । व्य० प्र० १२४ आ ।

आरोहपरिणाहयुत्तता-आरोहो-दैर्घ्यं परिणाहो-विस्तर स्ताभ्यां तुल्याभ्यां युक्तता, शरीरसम्पत्प्रथमभेद । उत्त० ३९ ।

आरोहा-महामात्रा । विपा० ४६ ।

आरोहो-उस्सेहो । नि० चू० प्र० २६६ आ । नातिदीर्घो नाति ह्रस्वता शरीरोच्छ्रयो वा । वृ० प्र० ३०१ आ ।

आर्जिका-अज्जिए, आर्यिका, मातु पितुर्वा माता । दश० २१६ ।

आर्जवम्-मायादोषवर्जनम् । तत्त्वा० ९-६ ।

आर्त्त-दु खित रागद्वेषोदयेन । आचा० १८३ ।

आर्द्रक -आर्द्रकनगराधिपति । सूत्र० ३६ । स्निग्धत्व धरणकलवान् । सूत्र० २९९ । सचित्त तरुशरीरम् । आव० ८२८ ।

आर्द्रकुमार-प्रतिमादर्शने दृष्टान्त । वृ० प्र० १८७ अ । सदाचारप्रयत्नवज्ज्ञात । सूत्र० ३८९ ।

आर्य-आरात्-सर्वहेयधर्मेभ्योऽर्वाग् यात । नंदी ४९ ।

आर्यकम्-हरितम् । दश० १८५ ।

आर्यकृष्ण-अज्जकण्हे, आचार्यनाम । विशे० १०२० ।

आर्यखपुट-विद्यायां दृष्टान्त । वृ० तृ० १०६ अ । विद्या सिद्ध , सिद्धमन्त्र । दश० १०३ ।

आर्यगङ्ग-आचार्यनाम । विशे० ९३७।

आर्यमंगु-आचार्यनाम । वृ० प्र० २४ अ ।

आर्यरक्षित-अज्जरक्खिय, आचार्यनाम । विशे० ९२९, ९३०, १००२ ।

आर्यवचनम् - अज्जवयणं, आर्याणां-तीर्थकृता वचनम्-आगम । उत्त० ५२६ ।

आर्यवज्र-कर्णाभ्यां श्रुते दृष्टान्त । वृ० प्र० ६३ अ ।

आर्यवैर-अज्जवेर, आचार्यनाम । विशे० ९२९ ।

आर्यश्याम-आचार्यविशेष । प्रज्ञा० ५०५ ।

आर्यसमुद्दः-आचार्यविशेषः। बृ० प्र० २४ अ।

आर्यसुहस्ती-आचार्यविशेषः। बृ० प्र० २४ आ।

आर्या-अज्जा, प्रशान्तरूपा। अनु० २६। भिक्षुणी। ओघ० २०८।

आर्यापाढा-आचार्यनाम। विशे० ९५२।

आर्यासूत्रम्-अज्जासुत्तं, सूत्रभेदः। बृ० प्र० २०१ आ।

आर्यिका-आर्जिका, मातुः पितुर्वा माता। दश० २१६।

आर्यैः-तीर्थकृद्भिः। आचा० २७४। सकलहेयधर्मेभ्यो दूरं यातैस्तीर्थकरादिभिराचार्यैर्वा। उत्त० २९३।

आलंकारिअभंड-आलङ्कारिकभाण्डम्, आभरणभृतभाजनम्। जं० प्र० २५५।

आलंकारियं-आलङ्कारिकम्, अलङ्कारयोग्यं भाण्डम्। जीवा० २३६।

आलंच-आलच्छः, द्रव्यस्य बहुत्वेतरादिभिर्लोके प्रतीतभेदः। प्रश्न० ५६।

आलंब-आलम्बः, प्रलम्बः। भग० १७५।

आलंबण-आलम्बनम्, प्रपतता साधारणस्थानम्। आव० ५३४। प्रवृत्तिनिमित्तं शुभमध्यवसानम्। आव० ५८६। ग्लानादि। उत्त० ५८७। रज्ज्वादिवदापद्गर्तादिनिस्तारकत्वादालम्बनम्। भग० ७३८, ७३९। आश्रयणीयं गच्छकुटुंबकादि। ठाणा० १५४।

आलंबणबाहा-अवलम्बनबाहा., द्वयोः पार्श्वयोरवलम्बनाश्रयभूता भित्तयः। जं० प्र० २१२।

आलइअ-आलगितम्, आविद्धम्। आव० १८५। यथास्थानं स्थापितम्। जं० प्र० १६०। प्रश्ना० १०१।

आलइयमालमउड-आगालितमालमुकुटम्, आगलितमालं मुकुटं यस्य सः। भग० १७४। आलगितमालमुकुटः। आचा० ४२३।

आलए-आलयः, आश्रयः। जीवा० २७१। उत्त० ४५४। जं० प्र० १८। वसतिः, गुणमार्जिताः दीपशुभ्रण्डकविरहिता वा। आव० ५२९।

आलग्गो-अधुनिमाग्न, ग्रागरः। आव० ८००।

आलपाल-प्रलाप। आव० ६६९।

आलभिया-आलंभिका नगरीविशेषः, वीरस्य सप्तमवर्षारात्रस्थानम्। आव० २०१, २२१।

आलभिया-आलंभिका, नगरीविशेषः। भग० ५५०। नगरीविशेषः। भग० ६७५।

आलय-आवासः। ओघ० १५६। आश्रयः। जीवा० १७६। जं० प्र० १२१।

आलयविन्नाणं-आलयविज्ञानं-ज्ञानसंततिः। सूत्र० २६।

आलयगुणेहिं-आलयगुणैः, बहिर्वैष्टाभिः प्रतिलेखनादिभिरुपशमगुणेन च। बृ० प्र० ६२ अ।

आलवंते-आलपन्, अलर्थ लपन्। अनु० १४२। आलपति, आङिति ईषदर्थपति-वदति। उत्त० ५५।

आलवित्त-इषत्सकृद्वा लपनमालपनम्। दश० २१६।

आलवित्तए-आलपनम्, सकृत्सम्भाषणम्। आव० ८११। आलपितुं-सकृत्सम्भाषितुम्। उपा० १३।

आलस्स-आलस्यम्, अनुद्यमस्वरूपम्। उत्त० १५१। अनुत्साहात्मा। उत्त० ३४५।

आला-विद्युत्कुमारीमहत्तरिका। ठाणा० ३६१।

आलापति-आलपति। आव० १००।

आलानम्-हस्तिबन्धनस्तम्भम्। नंदी० १५३।

आलाव-आलापः, सकृज्जल्पः। भग० २२३। आलाप-आङ् ईषदर्थेयाद्वीपलपनम्। ठाणा० ४०७।

आलावगो-आलापकः। आव० २६०।

आलावणबंधे-आलापनबंधः-आलाप्यते-आलीनं क्रियते एभिरित्यालापनानि रज्ज्वादीनि तैर्बन्धस्तृणादीनाम्। भग० ३९९, ३९८।

आलावो-बहुमाणेणभाणितो सरभसं णमोक्खमासमणाणंतितो गुरुआलावो भण्णति। नि० चू० प्र० २३७ आ।

आलि-वनस्पतिविशेषः। जीवा० २००।

आलिंग-आलिङ्ग., यो वाद्येन मुरज आश्रित्य वाद्यते। जं० प्र० १०१। मुरजो वाद्यविशेष। जं० प्र० ३११ मृन्मयो मुरज.। जीवा० १०५।

आलिंगवट्टिक-आलिङ्गवर्तितः, आलिङ्गाया वपुःप्रमाणम्। जीवा० १०४।

आलिंगण-आलिङ्गनम्, ईषत्स्पर्शनम्, स्वकाया कामस्यैको भेदः। दश० १९४। स्पृशनम्। नि० चू० प्र० २५६ आ।

आलिंगणवट्टि-आलिङ्गनवर्ती, शरीरप्रमाणमुपधानेन वर्त्तते यत्। जं० प्र० २८५। जीवा० २३२। सूर्य० २९३।
आलिंगणि – आलिङ्गिनी, अप्रतिलेखितदूष्यपञ्चके चतुर्थो भेद। आव० ६५२।
आलिंगपुक्खरे – आलिङ्गपुष्करम्, मुरजमुखम्। भग० १४५।
आलिंगणी-पुरुषप्रमाण पार्श्वमुपधान। बृ० द्वि० २२० अ। जाणुकोप्परादिसु जा दिज्जति सा। नि० चू० द्वि० ६१ अ।
आलिंगिता – पुरिसेणित्थीस्तनादिसु स्पृष्टा। नि० चू० प्र०.११३ अ।
आलिंगो-आलिङ्ग। जीवा० २६६। आलिङ्ग, मुरजो वाद्यविशेष। जीवा० १८९।
आलिंपइ-सकृत् लिंपइ। नि० चू० द्वि० ७६ आ।
आलि-वनस्पतिविशेष। जं० प्र० ४५। जीवा० २००। जल। विशे० ६११। औषधविशेष। प्रज्ञा० ३३
आलिखिज्जति-आलिख्यते। आव० ८५७।
आलिघरं-आलिगृहकम्, वनस्पतिविशेषस्तन्मय गृहकम्। जीवा० २००।
आलिद्धमणालिद्ध-आलिष्टानाश्लिष्टम्, कृतिकर्मणि चतुर्भङ्ग भिन्न सप्तविंशतितमो दोष। आव० ५४४।
आलित्त-अग्निविधिना ज्वलित। भग० १२१। आदीप्त। अन्त० १७। आलिन, नौवाहनोपकरण। आचा० ३७८।
आलिद्धा – आदिग्धा, शिलायां शिलापुत्रके वा लग्ना। भग० ७६६।
आलिन्दकम्-अलिंदग, वुण्डुलकम्। अनु० १५१।
आलिसंदग-चपलका। जं० प्र० १२४। चवलकप्रकारा, चवलका। भग० २७४। धान्यविशेष। भग० ८०२।
आलिसिंदया-चवलया। ठाणा० ३४४।
आलिहइ-आलिखति, विन्यस्यति। जं० प्र० १९२।
आलिहमाण-आलिखन्, ईषत् सकृद्वाऽऽक्षपन्। भग० ३६५।
आलिहाविज्जा ईषत्सकृद्वाऽऽलेखनम्। दश० १५२।
आलिहित्ता – आलिख्य आकारकरणेन कृत्वा अन्तवर्णकादिभरणेन पूर्णानि कृत्वा। जं० प्र० १९२।
आलीढ-आलीढम्, आक्रान्तम्। आव० ७०४। दक्षिणपादमग्रतो भूत कृत्वा वामपाद पश्चात्कृत्यापसारयति, अन्तरं द्वयोरपि पादयो पञ्च पादा, लोकप्रवाहे प्रथम स्थानम्। आव० ४६५। यत्र दक्षिणं पादमग्रत कृत्वा वामपादं पृष्ठत सारयति, अन्तरं द्वयोरपि पादयो पञ्च पदानि तत्स्थानम्। व्यव० २०५। दक्षिणमूरुमग्रतो मुखं कृत्वा वाममूरुं पश्चान्मुखमपसारयति, अन्तरा च द्वयोरपि पादयो पञ्च पदा ततो वामहस्तेन धनुर्गृहीत्वा दक्षिणहस्तेन प्रत्यञ्चामाकर्षति तत। व्य० प्र० ४६ आ। योधस्थानं। आचा० ८९। योधस्थानम्। ठाणा० ३। वामूरुअ अग्गओ काउं दाहिणं ठितो वामहत्थेण धणू घेत्तूणं दाहिणे एव गच्छइ। नि० चू० तृ० ९० अ।
आलीणाणि-ईसिं लीणाणि। दश० चू० १२५।
आलीणे-आलीन। जीवा० ३७३। गुरुमाश्रित, संलीनो वा। भग० ८१।
आलीवग-आदीपक, गृहादिप्रदीपनकारी। प्रश्न० ४६।
आलीवणं-व्याकुललोकानां मोषणार्थं ग्रामादिप्रदीपनकम्। विपा० ३९।
आलीवण। नि० चू० द्वि० १७० अ।
आलुंचन-आलुञ्चन, ग्रहणम्। आव० ५६२।
आलुंपे – आलुम्प, निर्लाञ्छनगलकर्त्तनचौर्यादिक्रियाकारी। आचा० १०२।
आलुए-आलुक –अनन्तकायभेद। भग० ३००। कन्द विशेष। उत्त० ६९१। आलुकम् – साधारणवनस्पति कायिकभेद। जीवा० २७। आलुका-कुण्डिका। अनुत्त० ५५।
आलुय-आलुकम्, कन्दविशेष। अनुत्त० ६। त्रयोविंशति तमशतकाद्योद्देशक। भग० ८०४। आर्द्रकम्। भग० ८०४।
आलेक्ख:-विचित्रम्। जीवा० १९९।
आलेवण-आलेपनम्। आव० ६२३। आचा० ३२।
आलेहो-आलेख, चित्रम्। जं० प्र० ३२।
आलो-आल, अशक्यक्रियम्। आव० ९४।
आलोअ-अवलोक, निर्यूहकादिरूप। दश० १६६। वहि – प्रस्थानभाविनि शकुनानुकूल्यालोकेन। जं० प्र० २६३। सौरप्रकाशम्। प्रज्ञा० ५००।
आ(अव)लोअचल-आ(अव)लोकचलम्, अवलोकनमालो कस्तस्मिँश्चलं, दर्शनलालसम्। आव० ७८४।
आलोअणं-आलोकनम्, निरूपणम्। ओघ० ५२। अप्पणेमि आख्यान। नि० चू० प्र० ३३४ अ। आलोक्यन्ते दिशोऽ

रिमन् स्थितैरिति। उत्त० ४५१। आलोचनम्-गुरुनिवेदनम्। ठाणा० १३७। प्रायश्चित्तभेदः। ठाणा० २००।

आलोअणा-आलोचना, आभिमुख्येन गुरोरात्मदोषप्रकाशनम्। आव० ४६९।

आलोअभायणं-आलोकभाजनम्, मक्षिकाद्यपोहाय प्रकाशप्रधानं भाजनम्। दश० १८०।

आलोइज्ज-आलोचयेत्-प्रकाशयेत्। उत्त० ५४४।

आलोइज्जा-आलोकयेत्-पश्येत्-ब्रुयात्। आचा० ३२८। अवलोकयेत्। आचा० ३९६।

आलोइत्ता-आलोकिता, ईषद्‌द्रष्टा। उत्त० ४२५। समन्ताद्द्रष्टा। उत्त० ४२५।

आलोइत्तए-आलोचयितुम्, गुरवेऽपराधान्निवेदयितुमिति। ठाणा० ५६।

आलोइयं-आलोकितं-प्रत्युपेक्षितं। आचा० ४२८।

आलोइयपडिक्कंते-आलोचितप्रतिक्रान्तः, आलोचितं गुरूणां यदतिचारजातं तत्प्रतिक्रान्तम्-अकरणविषयीकृतं येनाथवाऽऽलोचितश्चासावालोचनादानात्प्रतिक्रान्तश्च मिथ्यादुष्कृतदानादालोचितप्रतिक्रान्तः। भग० १२८।

आलोए-आलोक, दर्शनम्। भग० ३१८। दर्शनं, दृश्यमानता। जीवा० ३९१। आलोचयेत्-दत्तावधानो भवेत्। आचा० ३४२। चक्षुर्दर्शनपथे। ओघ० १८३।

आलोएइ-आलोचयति। आव० ७२५।

आलोएज्जा-आलोचनं-गुरुनिवेदनम्। ठाणा० १३७।

आलोएत्तो-आलोयणा। व्य० प्र० १०८ अ।

आलोओ-आलोक्यत इति आलोक.-स्थानदिगादिनिरूपणम्। ओघ० १८१। अतिरिक्तप्रदीपशिखादिदर्शनम्। उत्त० ६३१। सावकाशे मुक्तस्वाऽभ्यन्तरे स्वपन्ति। ओघ० १०७। आलोक्यन्ते दिशोऽस्मिन् स्थितैरिति। उत्त० ४५१।

आलोग-आलोकम्, सौरप्रकाशम्। ज० प्र० २२९। चोपलपादी। दश० चू० ७६। समो भूभाग.। ओघ० १९३। आलोकनमालोको यावद्दृष्टिप्रसर.। ओघ० २३।

आलोचनम्-प्रकाशनं प्रकाशनमाख्यानं प्रादुष्करणम्। तत्त्वा० ९-२२।

आलोचयति-गणयति प्रेक्षते च। आव० ५३९।

आलोचयेत्। व्य० द्वि० ७१ अ।

आलोयं-आलोकम्। ओघ० ८४। दृष्टिपथम्। औप० ६९। स्थानदिक्प्रकाशादिसप्तधाऽऽलोकम्। सू० तृ० १४० आ। प्रकाशः। आव० ६४२। आलोकस्थानं-गवाक्षादिकं। आचा० ३४१।

आलोयणं-आलोचनम्, यथागृहीतभक्तपाननिवेदनम्। प्रश्न० १११। आलोचना, प्रयोजनतो हस्तशताद्बहिर्गमनागमनादौ गुरोर्विकटना, मिथ्यादुष्कृतं च। आव० ७६४। एकादशी गुर्वाशातना। आव० ७२५। गुरोः पुरतो वचसा प्रकटीकरणम्। व्य० प्र० १४ अ। ठाणा० २००। अलवणं। व्य० द्वि० ३३५ अ। सकृद् अनेकशः प्रलोकनम्। नि० चू० प्र० २२२ अ।

आलोयणा-आलोचना, आङिति-सकलदोषाभिव्याप्त्या लोचना-आत्मदोषाणां गुरुपुरतः प्रकाशना। उत्त० ५७९। आलोचना। ओघ० २३५। योगसङ्ग्रहे प्रथमो योगः। आव० ६६३। परस्स पागडं करेइ। नि० चू० तृ० ८५ अ। व्य० प्र० १०७ आ।

आलोयणाणुलोमं-आलोचनानुलोम्यम्, पूर्वं लघवः आलोचयन्ते पश्चाद् गुरव.। आव० ७८१।

आलोयणारिहं-आलोचना-निवेदना तल्लक्षणां शुद्धिं यदर्हत्यतिचारजातं तदालोचनार्हम्। भग० ९२०।

आलोयभायणं-आलोकभाजनम्, प्रकाशमुखे भाजने, अथवा आलोके-प्रकाशे नान्धकारे पिपीलिकावालादीनामनुपलम्भात्, तथा भाजने-पात्रे, पात्रं विना जलादिसम्पातितसत्त्वादर्शनादिति। प्रश्न० ११२।

आलोविअ-अलोपिक। दश० ४४।

आलोवेइ-आलोचयति। आव० ७१०।

आवंति-आचारप्रकल्पे प्रथमश्रुतस्कन्धस्य पञ्चममध्ययनम्। प्रश्न० १४५। आचाराङ्गस्य पञ्चममध्ययनम्। उत्त० ६१६। आचारांगे प्रथमश्रुतस्कन्धस्य पंचमाध्ययनम्। सम० ४४। आचा० १९६। यावन्तः। आचा० १८५। आचारप्रकल्पस्य पञ्चमो भेदः। आव० ६६०।

आवंती-लोकसारापराभिध, आचारांगपंचमाध्ययनम्। ठाणा० ४४४।

आवइ-आगच्छत्यापतति। उत्त० २८०।

आवईसु दढधम्मया-आपत्सु दृढधर्मता, योगसङ्ग्रहे तृतीयो योग। आव० ६६४।

आवकधाते–यावत्कथा–यावज्जीवम्। ठाणा० २३६।

आवकहियं–यावत्कथिकम्, प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालादारभ्या प्राणोपरमात् तच्च भरतैरावतभाविमध्यद्वाविंशतितीर्थकरतीर्थान्तरगतानां विदेहतीर्थान्तरगताना च साधूनामवसेयम्। प्रज्ञा० ६३। सकृद्गृहीत यावज्जीवमपि भावनीयम्। आव० ८३९। *यावज्जीविक व्रतादिलक्षणम्। आव० ५६३।* यावज्जीविक महाव्रतभक्तपरिज्ञादिरूपम्। ठाणा० ३८०। ये कल्पसमाप्त्यनन्तरमव्यवधानेन जिनकल्प प्रतिपत्स्यन्ते ते यावत्कथिका। प्रज्ञा० ६८।

आवज्जणं–आवर्जनम्। ओघ० १६९।

आवज्जय–आवर्जक, आराधक। उत्त० ३६१।

आवज्जीकरणं–आवर्जीकरणम्, आवर्जित–अभिमुखीकृत मोक्षगमन प्रत्यभिमुखीकृतस्य *करणं–क्रिया शुभयोग* व्यापार। प्रज्ञा० ६०४। आवर्जीकरणम्–अन्तर्मौहूर्त्तिक उदीरणावलिकाया कर्मप्रक्षेपव्यापाररूपम्। ठाणा० ४४२।

आवट्ट–आवर्त्त शङ्खसत्क। उत्त० ६०५। ससार। आचा० ६२।

आवट्टजोणी–आवर्त्तयोनि, आवर्त्तोपलक्षिता योनि। उत्त० १८३।

आवट्टणं–आवर्तनम्, *परिभ्रमणम्। सूर्य० २७६।*

आवट्टती–आवर्त्यते, पीड्यते–दुःखभाग्भवति। सूत्र० १९०।

आवट्टितो–आवृत्त। आव० ९५।

आवट्टो–आवर्त्त, आवर्त्तयति–प्राणिनं भ्रामयतीति। सूत्र० ८६। उत्त० १८३। जीवा० २४३।

आवड–आवर्त्त–मणीना लक्षण। जीवा० १८९।

आवडइ–आपतति, भवति। ओघ० ९०।

आवडण–अभिघात, आपतन वा। बृ० द्वि० ७७ आ। प्रस्फोटनम्। ओघ० १२२। आभिडण। ओघ० २०४। पक्खलण। नि० चू० प्र० ४९ अ। आपतन–द्वाराग्रे शिरसो घट्टनम्। बृ० प्र० २९५ अ।

आवडणपडणादी–आपतनपतनादय। ओघ० ९०।

आवडणा–*उसुआदिसु पक्खलणा। नि० चू० तृ० २१ अ।*

आवडिऊण–आपत्य। आव० १९६।

आवडिए–अवकोटितानि, अधस्तादामोटितानि। उत्त० ३६७।

आवडिओ–आपतित। आव० ५७८। आस्फालित। आव० १९६। आपतितम्। उत्त० १५०। आव० ३२०।

आवडिया–आपतिती, प्राप्ती। उत्त० ५३०।

आवण–आपण, हट्ट। भग० २३८, १३६। प्रश्न० ८। वीथि। दश० १७६। ज० प्र० १०७। अनु० १५९। आपण, पण्यस्थानम्। प्रश्न० १२७।

आवणवीहि–आपणवीथि, हट्टमार्ग, रथ्याविशेष। जीवा० २४६।

आवणाइ–आयतनानि, आपतनानि वा उपभोगार्थमागमनानि। ज० प्र० १२१।

आवण्ण–आपन्नपरिहारिका। बृ० तृ० २० अ।

आवण्णपरिहारो–आपन्नपरिहारिक, जो मासियं वा जाव छम्मासियं वा पायच्छित्तं आवण्णो तेण सो सपच्छित्ती असुद्धो अ विसुद्धचरणेहिं साहूहिं परिहरिज्जति इह तेण अहिकारो। नि० चू० तृ० ८९ आ।

आवण्णसत्ता–आपन्नसत्त्वा, गर्भवती। उत्त० ५३।

आवती–प्रतिसेवनापञ्चमभेद। भग० ९१९। आपत्–द्रव्यत प्रासुकद्रव्य दुर्लभ क्षेत्रतोऽध्वप्रतिपन्नता कालतो दुर्भिक्ष भावतो ग्लानत्व। ठाणा० ४८४।

आवतीगंगा–*गगामहागगासादीनगगामृत्युगगालोहितगगात* सप्तगुणा आवतीगगा। भग० ६७४।

आवत्त–आवर्त्त, आवर्त्तनम्, *प्रादक्षिण्येन परिभ्रमणम्।* ज० प्र० १८७। षोडशसागरस्थितिक महाशुक्रविमानम्। सम० ३२। आवर्त्तक, पयसा भ्रम। ज० प्र० १११। चिकुरसंस्थानविशेष। ज० प्र० १८३। मणीना लक्षणानि। ज० प्र० ३१। महाविदेहे विजयनाम। ज० प्र० ३४६। अप्राप्तम्–अस्पृष्टम्, आवर्त्त अञ्जलिभ्रावर्तन–परिभ्रमणम्। भग० १२८। आवर्त्तिका। जीवा० २४४।

आवत्तकूडे–आवर्त्तकूटम्, नलिनकूट तृतीयकूटनाम। ज० प्र० ३४६।

आवत्तगा–एकखुरविशेषचतुष्पद। प्रज्ञा० ४५।

आवत्तणपेढिया–आवर्तनपीठिका, यत्रेन्द्रकीलिका। जीवा० २०४। यत्रेन्द्रकीलको निविशति। जीवा० ३०१। यत्रेन्द्रकीलो भवति। ज० प्र० ८८। अग्रद्वारम्। नि० चू० तृ० ३१ अ। आवर्तनम्–मत्तवारणम्। व्य० प्र० १०३ आ।

आवत्ता-आवर्ता, ग्रामविशेष । आव० २०६। आवर्त्तव हुलजला नदी। बृ० तृ० १६२ आ। घातकीखंडे तन्नाम महाविदेहगतो विजय । ठाणा० ८०।

आवत्ते-आवर्त्त, विजयस्य नाम। जं० प्र० ३४६। घोष व्यन्तरेन्द्रलोकपाल । ठाणा० १९८।

आवत्तो-आवर्त्त, एकखुरविशेष । प्रश्न० ७। एकखुरश्च तुष्पद । जीवा० ३८। नाट्यविशेष, भ्रमद्भ्रमरिकादा नैर्त्तनम्। जं० प्र० ४१४। जीवा० २४६।

आवपनम्-लोहमय शकटोपकरणम्। पिण्ड० ३२।

आवबहुले-अब्बहुलम्, जलबहुल, रत्नप्रभापृथ्व्यास्तृ तीयकाण्ड । जीवा० ८९।

आवयं-आवर्त्त, अहोकायमित्यादि सूत्रगभा गुरुचरणन्यस्त हस्तशिर स्थापनाद्यं, सूत्राभिधानगर्भं कायचेष्टाविशेष। आव० ५४२।

आवयइ-अतिपतति । आचा० २६५।

आवरणं-आवरणम्, स्फुरकादि। प्रश्न० १३। आवियते आकाशमनेनेति, भवनप्रासादनगरादि तल्लक्षणशास्त्रम्। ठाणा० ४५१। सन्नाहे। प्रश्न० ४९। कवचादि। उत्त० १४३। आव० ३४६। कपाट। बृ० द्वि० १११ अ। कवच। भग० ९४। आवरणे-प्रच्छादनपटे। जं० प्र० २३६। फरकादि। आचा० ६०। स्फुरकस्फरकादि। भग० ३१८। आङो मर्यादेपदर्थवचनत्वात् ईषन्मर्यादया धाऽऽरणवन्तीत्यावरणा, ततश्च सर्वविरतिनिषेधार्थ एवाय वर्तते। न देशविरतिनिषेधे सत्यावरणशब्द। आव० ७८। खेटकं सन्नाह वा। जं० प्र० ३५९। सन्नाहं। ठाणा० ४५०।

आवरणप्रविभक्ति-अभिनयाख्यभेद। जं० प्र० ४१६।

आवरिसणं-पाणिएण उक्कोराण। नि० चू० प्र० १०२ आ।

आवरेत्ता-आवृत्य-अवष्टभ्य। भग० ५७६।

आवर्जनम्-आराधना। उत्त० ५९१। आवर्जन गन्धो दकादिना। अनु० २६।

आवर्तना-आउट्टणा, आवर्जनं, निवर्तनम्। बृ० प्र० ४० आ।

आवलगनादिका-क्रियाविशेषा। आचा० १२४।

आवलणं-आवर्तनम्, मोटन, अथवा गन्धकस्य पादाद्यावर्तन मार्ग भवति। प्रश्न० २२।

आवलियपविट्ठो-आवलिकाप्रविष्ट, श्रेणिव्यवस्थित। जीवा० १००।

आवलिया-आवलिका-असंख्यातसमयमाना। ठाणा० ८५। आवलिका, श्रेणि। जीवा० १०५। असंख्येयसम यसघातोपलक्षित काल। आव० ३१। परंपरा। आव० ८५८। असङ्ख्यातसमयात्मिका। भग० २११। वश, प्रवाह। जं० प्र० १६६। तत्र या विच्छिन्ना एकाते भवति मण्डली सा आवलिका। व्य० द्वि० २१ अ। असङ्ख्येयसमयसमुदायिका। सूर्य० २९२। वश, प्रवाह। जं० प्र० ३५८।

आवलियाऽऽवगो-आवलिकास्थापक आचार्यपारम्पर्यम्। आव० ३०७।

आवलियापविट्ठ-आवलिकाप्रविष्टम्, यत्पूर्वादिषु चतसृषु दिक्षु श्रेण्या व्यवस्थितम्। जीवा० ३९७।

आवलियाबाहिरं-आवलिकाबाह्यम्, यत्पुनरावलिकाऽऽ विष्टाना प्राङ्गणप्रदेशे कुसुमप्रकर इव यतस्ततो विप्रकीर्णम्। जीवा० ३९७।

आवली-हार। बृ० प्र० ४८ अ। पुद्गलाना दीर्घतया श्रेणि। सूर्य० १३०। आवली, पङ्क्ति। औप० ८२।

आवल्लिक-आवत्रिक। विशे० १३५५।

आवल्लो-बलीवर्द। आव० ६६५। उत्त० १९२।

आवसंत-आवसन्, विवसन्। आचा० ११। आचार्य गुरुदर्शितमर्यादया वासना। उत्त० ८०। ठाणा० ९। मया गुरुकुले आवसन्। सम० २। आवसन्-सेवमान। आचा० २१३।

आवसह-आवसथ, आश्रय। उत्त० ६२६। दश० २४५। दोषभवनप्रकार। उत्त० ३८५। आवसथ, परि ब्राजकस्थानम्। प्रश्न० १२६। औप० ६१। परिव्राजक ... १ प्रश्न० ८१ ... गृहम्। सूत्र० ३९९।

आवसहिय-आवसथिक, तीर्थिकविशेष। सूत्र० ४२२।

आवसिया-आवश्यकी, अवश्यकर्त्तव्ययोगैर्निष्पन्ना। आव० २५९।

आवस्सय-आवश्यकम्, अवश्यकर्त्तव्य संयमव्यापारनि ष्पन्नम्। आव० ११९। कायिकादिव्युत्सर्गम्। औप० १४७।

आवस्सग-आवश्यकम्, समन्तादावश्यकारकम्। अनु० ११। अवश्य कर्त्तव्य आवश्यकं-कायिकाद्युत्सर्गरूपम्। औप० १४१। कायिकीपारादि। आव० ८७। प्रतिक्रमणम्।

ओघ० ९३, ५८। सामायिकादि षडध्ययनकलाप । अनु० ७। आवश्यकम्, श्रमणादिभिरवश्य क्रियत इति, ज्ञानादिगुणा मोक्षो वा आ-समन्तात् वश्य क्रियतेऽनेन इति, आ समन्ताद्वश्या इन्द्रियकषायादिभावशत्रवो येषां ते तथा, तैरेव क्रियते यत् तत् । अनु० ३। । आवासकं वा समग्र गुणग्रामावासक वा। अनु० ३१। दोषत्यागश्क्षणमवनता दिकम्। आव० ५४५। गुणानां आ-समन्ताद्वश्यमात्मान करोति। अनु० १०। श्रमणादिभिरहोरात्रमध्येऽवश्यकर णात्। विशे० ४१५। नियमत करणीयम्। आव० ५९४। अवश्यं कर्त्तव्यम्, सामायिकादिरूपम्, आ-समन्ताज्ज्ञाना-दिगुणै शून्य जीव वासयति, तैर्युक्त करोतीत्यावासक-सामा यिकादिरूपम्। विशे० २। भद्रम्। आव० ४२६। मूल गुणोत्तरगुणानुष्ठानलक्षण । आव० २६७। आवर्त्तादिकम्। ओघ० ५११। कायिकाद्युत्सर्गलक्षणम्। ओघ० १५२। सामायिकादिषड्विधम् । ठाणा० ५१। अवश्य कर्तव्य मावश्यक, अथवा गुणानामावश्यमात्मान करोतीत्यावश्यक, यथा अन्त करोतीत्यन्तक, अथवा 'वस निवासे' इति गुण शून्यमात्मानमावासयति गुणैरित्यावासकम्। आव० ५१।

आवस्सय - अपाश्रय -आधार । विशे० ४१५। सञ्ज्ञा कायिकीलक्षणम्। बृ० द्वि० २६१ अ।

आवस्सयाइ - आवश्यकानि, शरीरचिंतादेवतार्चनादीनि। व्य० प्र० १६९ आ।

आवस्सिआ-आवश्यकी, क्वचिद्बहिर्गमनकार्ये समुत्पन्ने ऽवश्यगन्तव्यमितिभणनम्। बृ० प्र० २२२ अ। ज्ञाना द्यालम्बनेनोपाश्रयाद् बहिरवश्यगमने समुपस्थितेऽवश्य-कर्त्तव्यमिदमतो गच्छाम्यहमित्येवं गुरुं प्रति निवेदना। अनु० १०३।

आवस्सिता-चतुर्थी सामाचारी। ठाणा० ४९९।

आवस्सिया-आवश्यिकी, अवश्यकर्त्तव्यैश्चरणकरणयोगैर्नि र्वृत्ता। आव० ५४७। बृ० द्वि० २२४ अ।

आवहो-दारकपक्षिणामावह । व्य० द्वि० ३४२ आ।

आवाए-आपात, अन्यतोऽन्यत्र आगमनात्मक । उत्त० ८६।

आवाओ-आपाक । विशे० ८७१। आपाकंतीर्णा-नूतना। विशे० ६३०।

आवागसीसाओ-आपाकशिरस । नंदी० १५७।

आवागो-आपाक, आपूं। आव० १०१।

आवाडा-आपाता इति नाम्ना किराता। जं० प्र० २३२।

आवातभद्दते - प्रथममीलके दर्शनात्मापादिना भद्रकारी। ठाणा० १९७।

आवाय-आपात, तत्प्रथमतया संगमं। भग० ३३६। आभिमुख्येन समवाय। आव० ३२६। अभ्यागम। ओघ० ११९।

आवारि-स्थापणम्, आरपदम्। आव० ६७५।

आवावकहा-आवापकथा, इयद्द्रव्या शाकघृतादिश्चात्रोप युज्यते इत्यादि प्रदानं द्वेपणं वा, भक्तकथाया प्रथमभेद। आव० ५८९। शाकघृतादीन्येतावन्ति तस्यां रसवत्यामुप युज्यन्त इत्येवंरूपा कथा आवापकथा। ठाणा० २०९।

आवास - आवास, देववासस्थानम्। जं० प्र० ३९७। आवश्यकम्-प्रतिक्रमणम्। आव० ७८४। ओघ० २००। प्रज्ञा० ६०६। निवास। जीवा० १८०।

आवासग-आवासकम्, समन्ताद्वासयति गुणैरिति। अनु० ११। गुणशून्यमात्मानमावासयति गुणैरिति, गुणसान्निध्य मात्मन करोतीति भावार्थ। आव० ५१। प्राभातिकवैका लिकप्रतिक्रमणलक्षणे। व्य० द्वि० १८२ अ।

आवासिय-आवासित, स्थित। दश० १०७।

आवासेंति-आवासयन्ति, वसन्ति। आव० ६५४।

आवाह-सरीरवज्जा पीडा। नि० चू० प्र० ३३५ अ।

आवाह-आवाह, विवाहात्पूर्वं ताम्बूलदानोत्सव। जं० प्र० १२३। जीवा० २८१।

आवाहणं-आवाहनम्, गमनम्। प्रश्न० २०।

आवाहिओ-आहूत। आव० ३६९, ३९३।

आवाहो-आवाह, अभिनवपरिणतस्य वधूवरस्यानयनम्। प्रश्न० १३९। सुह दिवस। नि० चू० द्वि० ९२ आ। वध्वा वरगृहानयनम्। बृ० तृ० ४३ आ। आहूयन्ते स्वजनास्ता म्बूलदानाय यत्र स। जीवा० २८१।

आविंध-परिधेहि। आव० ९९।

आवि-आवि, जनसमक्ष प्रकाशदेश इतियावत्। उत्त० ५४।

आविइ-अनुसमयम्-प्रतिक्षणम्। भग० ६२५।

आविइत्ता-अवनम्य दद्यात्। व्य० द्वि०

आविद्ध-आविद्ध। उत्त० ३३९।

आविद्धं-परिहितम्। जं० प्र० १९०, २७८। आलगितम्। प्रज्ञा० १०१। व्याप्तम्। उत्त० ५४८। समन्तात्ताडितः। उत्त० ४९५। शिरस्यारोपणेन आविद्धः। भग० १९३।

आविद्धामो-परिदध्मः। आव० ६५।

आविर्भावः-प्रकाशः, प्रकटत्वम्। विशे० १०६२।

आविलं-आविलम्, सकालुष्यमाकुलं वा। प्रश्न० ५३। अविमलमस्वच्छं प्रकृत्या। जीवा० ३०३।

आविद्धलिंग। नंदी ११।

आविसामि-आविशामि, निषेवे। विशे० १२४७।

आवी-गंगागामी नदीविशेषः। ठाणा० ४७७।

आवीईमरणे-आ-समन्ताद्वीचय इव वीचयः-आयुर्दलिकविच्युतिलक्षणाऽवस्था यस्मिंस्तदावीचि, अथवा वीचिः-विच्छेदस्तदभावादवीचि, दीर्घत्वं तु प्राकृतत्वात्तदेवंभूतं मरणमावीचिमरणं-प्रतिक्षणमायुर्द्रव्यविचटनलक्षणम्। सम० ३३।

आवीचिमरणं-आवीचिमरणं, सप्तदशमरणभेदे प्रथमः। उत्त० २३०।

आवीचियमरणं – आ-समन्ताद्वीचय.-प्रतिसमयमनुभूयमानायुषोऽपरापरायुर्दलिकोदयात्पूर्वपूर्वायुर्दलिकविच्युतिलक्षणाऽवस्था यस्मिन् तदावीचिकं, अथवाऽविद्यमाना वीचिः-विच्छेदो यत्र तदवीचिकं अवीचिकमेवावीचिकं तच्च तन्मरणं चेत्यावीचिकमरणम्। भग० ६२४।

आवीलए-आङ् ईषदर्थे, ईषत्पीडयेद्-अविकृष्टेन तपसा शरीरकमापीडयेत्, एतच्च प्रथमप्रव्रज्याऽवसरे। आचा० १९२।

आवीलाविज्ञा-आपीडनम्, सकृदीषद्वा पीडनम्। दश० १५३।

आवेउं-आपातुम्, भोक्तुम्। दश० ३६।

आवेढिओ-एगदुतिदिसिद्वितेसु, अहवा एगपंतीए समंताठिएसु, आङ् मर्यादयाऽऽवेष्टितः। नि० चू० तृ० ४६ आ।

आवेढियं-आवेष्टितम्, सकृदावेष्टितम्। ठाणा० ५०२।

आवेढियपरिवेढिए – आवेष्टितपरिवेष्टितः, गाढतरं सवेष्टितः। प्रज्ञा० ३०६।

आवेयणं – आवेदयति, निवेदयति कालमित्यर्थ। ओघ० २०४।

आवेलिज्ज-आपीडयेत्, गाढमवगाहयेत्। उत्त० ४७५।

आवेसणं – लोगसमवायट्ठाणं। नि० चू० द्वि० ६९ आ। -आ-समन्ताद्विशन्ति यत्र तदावेशनम्-शून्यगृहम्। आचा० ३०७।

आशातनम्-आ-समन्तात् शातयति मुक्तिमार्गाद् भ्रंशयति। अनन्तानुबन्धिकषायवेदनम्। विशे० २८३।

आशाम्बराः-दिगम्बराः। प्रज्ञा० २०१।

आश्यानः। ओघ० ३२।

आश्रयं गच्छामि-भक्तिं करोमीत्यर्थः। आव० ५७१।

आश्रित्य-प्रतीत्य। जीवा० ५६। उत्त० ६०२।

आसं-अश्वम्, मनः। प्रज्ञा० ६००। आशां-भोगाकांक्षां। आचा० १२७।

आसंकलनम्-चयनम्। ठाणा० १७९।

आसंतर – अश्वतरः, वेगसरः, अजात्या घोटक.। दश० १९४।

आसंदओ-आसन्दकः। आव० ५५८।

आसंदग-कट्ठमओ। बृ० द्वि० २११अ। कट्ठमओ अज्झसिरो। नि० चू० प्र० २०८ अ। पल्यङ्कः। आव० ३९८।

आसंदयं-आस्यन्दकम्। आव० ६९३।

आसंदी – मञ्चिका। पिण्ड० १०९। उपवेशनयोग्या मञ्चिका। सूत्र० ११८। दश० २०४। उपवेशनार्हमासनम्। दश० ११७। आसनविशेषः। सूत्र० १८२। मञ्चकः। सूत्र० २७८।

आसंसइयं-असंशयितं, निःसंशयं मनःसंधिनं वा। सूत्र० ३९०।

आसंसपओगो-निदानकरण। नि० चू० प्र० ३५ अ।

आसंसा-आशंसा-अप्राप्तप्राप्तिगाभिलाषः। आचा० ११५।

आस-अश्वः, बाल्हीकादिदेशोत्पन्न., जात्यः। दश० १९४। क्षेपः। आव० ३६४।

आसइ-आस्ते। आव० ३९६।

आसइत्तु-आसितुम्, उपवेष्टुम्। दश० २०४।

आसएण – आश्रयतीति आश्रयः-धूमवलकादि। अनु० २१४।

आसकण्णो-अश्वकर्णः, सप्तदशान्तरद्वीप.। जीवा० १४४।

आसकण्णदीवे-अन्तरद्वीपनाम। ठाणा० २२६।

आसकन्ना-अश्वकर्ण., सप्तदशान्तरद्वीपः। प्रज्ञा० ५०।

आसकरणं-आसमिकरणं। नि० चू० द्वि० ७१ अ।

आसकिसोरो-अश्वकिशोर.। आव० ३७०, ३६१।

आसक्खंधसंठिते-अश्वस्कन्धसंस्थितम्, अश्विनीनक्षत्रसंस्थान। सूर्य० १३०।

आसखंधसंठिओ-अश्वस्कन्धसंस्थित, उभयोरपि पार्श्वयो पञ्चनवतियोजनसहस्रपर्यन्तेऽश्वस्कन्धस्येवोन्नततया षोडश-योजनसहस्रप्रमाणोच्चैस्त्वयो शिखायाभावात्। जीवा० ३२५।

आसगं-आस्यकम्, मुखम्। जीवा० ११९। आस्यके, पिठरादिमुखे। ठाणा० १४८।

आसग्गीव-अश्वग्रीव, त्रिपृष्ठवासुदेवशत्रु। आव० १५९। महामाण्डलिकराजा आव० १७४।

आसघरग-अश्वगृह। आव० ३७०।

आसज्ज-आसाद्य-अंगीकृत्य। आचा० १५९।

आसण-आसनं, सिंहासनादि। प्रश्न० १६१। आधारलक्षणानि धर्मास्तिकायादीनां लोकाकाशादीनि, स्वस्वरूपाणि वा। आव० ५९९। पीठफलकादिकम्। आव० ६५४। स्थानम्। उत्त० १०९। पीठकादि। आव० ७९५। दश० २८१। अपवादगृहीतं पीठकादि। दश० २३१। दश० २२८। वस्त्रादि। सूत्र० ६६। काष्ठपीठकादि। दश० चू० १२६। विष्टरम्। प्रश्न० १३८। प्रश्न० ८। सिंहासनादि। जीवा० ४०६। आसन्दकादिविष्टरं, आस्यते-स्थीयतेऽस्मिन्निति वाऽऽसन-शय्या। आचा० १३४। उपवेशनम्। उत्त० ६०९। अवस्थानम्। उत्त० ६२६। आसन गोदोहिकोत्कुटुकासनवीरासनादिक। आचा० ३१२। पादपीठपुञ्छनादि। उत्त० ४२३। सिंहासनादि। उत्त० २६२। पीठकादि। सम० ३८। शक्रादीनां सिंहासनम्। ठाणा० ११७। आसन्दकादि। दश० २१८। आचा० ६०। भग० २३८। आसन-आसनप्रदान, गुर्वादीनां समागतानां पीठकाद्युपनयनम्। व्य० प्र० २३५ आ।

आसणअणुप्पदाणं आसनानुप्रदानम्, स्थानात्स्थान सञ्चारणम्। दश० ३०।

आसणअभिग्गहो-आसनाभिग्रह, तिष्ठत एवासनानयनपूर्वकमुपविशतोऽत्रेतिभणनमिति। सम० ९५। ठाणा० ४०८।

आसणगाणि पताणि पाशुकरशर्करालोष्टाद्युपचितानि कार्यानि च दुर्धतानि। आचा० ३१०।

आसणत्थ-आसनस्थं, निषद्यागतम्। आव० ५४१।

आसणदाणं - आसनदानम्, पीठकाद्युपनयनम्। दश० २४१। पीठाददानम्। उत्त० ६०९।

आसणमणुप्पयाणं-आसनानुप्रदानम्, आसनस्य स्थानान्तरसञ्चारणम्। ठाणा० ४०८। सम० ९५।

आसणाणुप्पयाणं - आसनानुप्रदानं, गौरव्यमासीनस्य स्थानान्तरसञ्चारणम्। भग० ६३७।

आसणाभिग्गह-आसनाभिग्रह -तिष्ठत एव गौरव्यस्यासनानयनपूर्वकमुपविशतेतिभणनम्। भग० ६३०। यत्र यत्रो पवेष्टुमिच्छति तत्र तत्रासननयनम्। औप० ४२। तिष्ठत एवादरेणासनानयनपूर्वकमुपविशतात्रेतिभणनम्। दश० ३०।

आसणेय-आश्वासन। जं० प्र० ५३४।

आसतरगा-वेसर। नि० चू० प्र० १४४ आ।

आसत्त-आसक्त, भूमी लग्न। जं० प्र० ७६। आ-अर्वाक् अधोभूमौ सक्त आसक्त, भूमौ लग्न। प्रज्ञा० ८६। जीवा० १६०। जीवा० २०७। भूमौ सम्बद्ध। औप० ५।

आसत्तमल्लदामा-आसक्तमाल्यदामा। आव० १८४।

आसत्ती-आसक्ति, धनाद्यासक्त, परिग्रहस्यैकोनत्रिंशत्तमं नाम। प्रश्न० ९३।

आसत्थ-पीप्पलक। भग० ८०३। असुरकुमारचैत्यवृक्ष। ठाणा० ४८७। समाश्वासित। आव० ५२। अनन्तजिन चैत्यवृक्षविशेष। सम० १५२। आश्वस्थ। आव० ३९०।

आसन्दकम्-आसनम्। दश० २१८। आचा० १३४।

आसन्नं-समुत्तीनम्। निर० ८।

आसपुराओ-धातकीखंडे विदेहविशेषस्य राजधानी। ठाणा० ८०।

आसम-आश्रम, तापसादिस्थानम्। भग० ३६। अनु० १४२। सूत्र० ३०९। तीर्थस्थानम्। आचा० ३२९। ठाणा० २९४। ठाणा० ८६। तापसावसथोपलक्षित आश्रय। आचा० २८५। प्रथमतस्तापसादिभिरावासित पश्चादपरोऽपि लोक तत्र गत्वा वसति। बृ० प्र० १८१ आ। तापसावसथादि, आ-समन्तात् श्राम्यन्ति-तप कुर्वन्त्यस्मिन्निति। उत्त० ६०७। सन्महद्गाश्रित। दश० २७९। आश्रम, तापसादिनिवास। प्रश्न० ५२। तापसावसथोपलक्षित आश्रय। प्रज्ञा० ४८। जीवा० ४०। जीवा० २७९। तापसाद्यावास। औप० ७४।

आसमडे-अश्वमृत मृताश्वदेह। जीवा० १०६।

आसमपय-आश्रमपदम्, पार्श्वनाथदीक्षास्थानम्। आव० १३७। आ-समन्तात् श्राम्यन्ति-तप कुर्वन्त्यस्मिन्निति

श्रमः-तापसावसथादिस्तदुपलक्षितं पदं-स्थानम्। उत्त० ६०५।

आसममारी-मारीविशेषः। भग० १९७।

आसमरूवं-आश्रमरूपम्। भग० १९३।

आसमित्त-अश्वमित्रः, कौण्डिन्यशिष्यः। विशे० ९६०। आव० ३१६। उत्त० १६३। चतुर्थनिह्नवनाम। ठाणा० ४१०। यस्मात्सामुच्छेदा उत्पन्नाः। आव० ३११।

आसमुद्दीवे-अंतरद्वीपभेदः। ठाणा० २२६।

आसमुहा-अश्वमुखनामा त्रयोदशान्तरद्वीपः। प्रज्ञा० ५०। जीवा० १४४।

आसय-आशयः, निदानम्। आव० ६१०।

आसयइ-आस्वादते-अभिलषति, आश्रयति वा। सम० ५५।

आसरयणे-अश्वरत्नम्। ठाणा० ३९८।

आसरह-अश्ववहनीयो रथः। भग० ३२२। अश्वरथः-नियुक्तोभयपार्श्वतुरङ्गमो रथ इत्यर्थः। जं० प्र० १९८।

आसल-आसलं, आस्वाद्यम्। जीवा० ३३१। जीवा० २७०। आस्वादनीयः। जीवा० ३५१।

आसव-आसवः, मद्यम्। उत्त० ६१९। पत्रादिवासकद्रव्यभेदादनेकप्रकारः। जीवा० २६५। पुष्पप्रसवमद्यम्। उत्त० ६५४। आश्रवाः-उपादानहेतवो हिंसादयः। उत्त० ५९२। चन्द्रहासादिकम्। जीवा० १९८। चन्द्रहासादिपरमासवम्। जं० प्र० ४२। नि० चू० प्र० ३५ अ। आश्रवः-सूक्ष्मरन्ध्रम्। भग० ८२। आश्रवन्ति-प्रविशन्ति कर्म्माण्यात्मनीत्याश्रवः-कर्म्मबन्धहेतुरितिभावः, स चेन्द्रियकषायाव्रतक्रियायोगरूपः। ठाणा० १८। आश्रवं। प्रज्ञा० ५६।

आसवा-आस्रवाः-कर्मबन्धस्थानानि। आचा० १८१। पापोपादानस्थानानि। आचा० ४१३। बन्धकाः। आचा० १८२। पत्नादिविशेषेण व्यतिरिक्त आसवः। प्रज्ञा० ३६४। आश्रवः-आ-समन्तात् शृणोति-गुरुवचनमाकर्णयतीति। उत्त० ४९। कर्मबन्धहेतुर्मिथ्यात्वादिः। आव० ५९८। आश्रवः-इन्द्रियजयादिरूपः परमार्थपेशलः कायवाङ्मनोव्यापारः। दश० २७९। जलप्रवेशस्थानम्। व्य० प० १६७ आ। पापोपादानहेतुरारम्भादिः। जीवा० १२८। शुभाशुभकर्मादानहेतुः। ठाणा० ४४६।

आसवओ-आश्रावकः, बन्धकः। विशे० १०९३।

आसवदारं-आश्रवद्वारम्, कर्मबन्धद्वारम्। आव० ८५१। आश्रवणं-जीवतडागे कर्म्मजलस्य संगलनमाश्रवः-कर्म्मनिबन्धनमित्यर्थः, तस्य द्वाराणीव द्वाराणि-उपाया आश्रवद्वाराणीति। ठाणा० ३१६।

आसवपीतो-पीतासवः। उत्त० २६३।

आसववुच्छेओ-आश्रवव्यवच्छेदः-कर्मबन्धद्वारस्थगनेन संवरणेनेत्यर्थः। आव० ८५१।

आसवार-अश्ववारः, अश्वारूढपुरुषः। भग० ४८१।

आसासणाय वसणं-आशानाय-विनाशाय व्यसनम्, तृतीयाधर्मद्वारस्य षड्विंशतितमं नाम। प्रश्न० ४३।

आससप्पओगे-आशंसा-इच्छा तस्याः प्रयोगो-व्यापारण करणं आशंसैव वा प्रयोगो-व्यापारः आशंसाप्रयोगः। ठाणा० ५१५।

आससा-आशंसा। विशे० १००८। आव० ३३२। अप्राप्तप्रार्थनम्। ठाणा० १४५।

आससाए-आशंसया, यद्यसन्तप्रवर्षणं भावि तदा स्यलेषु फलावाप्तिरथान्यथा तदा निम्नेष्विस्येवमभिलाषात्मिकया। उत्त० २६१।

आससेण-अश्वसेनः, पार्श्वजिनपिता। सम० १५२। पंचमचक्रिपिता। सम० १५१।

आसा-अश्वाः। आव० २६१। आशा-इच्छाविशेष.। प्रश्न० ६४। औप० ४७।

आसाइज्जा-आशातयेत्-हीलयेत्, बाधयेत्। आचा० २५७।

आसाएज्जा-आस्वादयेत्-परिभुञ्जीत। आचा० ३९८।

आसाएमाणे-आस्वादयन्, ईषत्स्वादयन्। भग० १६३। आसादयेत्-संस्पृशेत्। आचा० ३८०।

आसाढ-आषाढः, निह्नवनाम। विशे० ९३४। यस्मादव्यक्ता उत्पन्नाः। आव० ३११। तृतीयो निह्नव.। ठाणा० ४१०।

आसाढग-तृणभेद.। भग० ८०२।

आसाढबहुलं-आषाढबहुलं, आषाढकृष्णपक्षम्। आव०

आसाढभूई-आषाढभूति-देशभाषानेपथ्यादिविपर्ययकरणे दृष्टांतः। प्रश्न० ३२९। दर्शनपरीषहेभवः। (मट०)। व्य० द्व० १९६ अ।

आसुरत्तं-आसुरत्वम्, क्रोधभावम्। दश० २३१।
आसुरत्तभावणा-आसुरत्वभावना। उत्त० ७०७।
आसुरत्तो-क्रुद्धः। आव० ३८९।
आसुरिनामा-कपिलशिष्यः। आव० १७१।
आसुरिपत्तं। नि० चू० द्वि० ६० अ।
आसुरियं-असुरभावम्। प्रश्न० १२१। अविद्यमानसूर्याम्। उत्त० २७६। असुराणामियमासुरीया। उत्त० २७६।
आसुरी - असुरा-भवनपतिदेवविशेषास्तेषामियं आसुरी। बृ० प्र० २१२ आ।
आसुरुत्ते-आशुरुप्तः, आशु-शीघ्रं रुप्तः-कोपोदयादिमूढः स्फुरितकोपलिङ्गो वा। भग० ३२२। आशु-शीघ्रं रुप्त.-क्रोधेन विमोहितो यः स.। आसुरोक्त-आसुरं वा-असुरसत्कं कोपेन दारुणत्वादुक्त-भणितं यस्य सः। विपा० ५३। आसुरुत्त.-शीघ्र कोपविमूढबुद्धिः, स्फुरितकोपचिह्नो वा। भग० १६७। क्रुद्धः। आव० ६५, १५२, ७११। आशु-शीघ्रं रुष्टः-क्रोधेन विमोहितो यः स आशुरुष्टः, आसुरं वा-असुरसत्कं कोपेन दारुणत्वात् उक्तं-भणितं यस्य स आसुरोक्तः। निर० ८।
आसुरे काए - असुराणामयमासुरस्तम् - असुरसम्बन्धिनं, चीयत इति कायस्तं, निकायमित्यर्थः। उत्त० १८२। असुरसम्बन्धिनि काये असुरनिकाये इत्यर्थः। उत्त० २९६।
आसूणि-आशूनिः, श्लाघा। सूत्र० १८०। येन घृतपानादिना आहारविशेषेण रसायनक्रियया वा अशूनः सन्, आ-समन्ताच्छूनीभवति-बलवानुपजायते तत्। सूत्र० १८०।
आसूणियं-आशूनितम्, ईषत्स्थूलीकृतम्। प्रश्न० ४९।
आसूय-आसूयम्, औपयाचितकम्। पिण्ड० १२०।
आसेवणासिक्खा - आसेवनशिक्षा, प्रत्युपेक्षणादिक्रियोपदेशः। विशे० ९। उत्त० ५४५। शिक्षाद्वितीयभेदः। नंदी २१०। सामाचारीशिक्षणम्। बृ० प्र० ६४ अ। प्रत्युपेक्षणादिक्रियाभ्यासोऽभ्यासः। आव० ८३३।
आसेवियं-स्तोकं आस्वादितं, अनास्वादितं वा। आचा० ३२५।
आसो-जात्या आशुगमनशील. अश्वः॥ जीवा० २८२। मनः। प्रज्ञा० ८८। य एकस्मिन् द्विप्रादीनर्थान् वक्ति यथा अश्नातीत्यश्वः, आशु धावति न च श्राम्यति। बृ० प्र० २४ अ। चतुष्पदविशेषः। प्रज्ञा० ४५।
आसोकंता-मध्यमग्रामपंचमी मूर्च्छना। ठाणा० ३९३।
आसोट्ठे-अश्वत्थः। आचा० ३४८।
आसोठे-अश्वत्थः, बहुबीजवृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३२।
आसोत्थमंथु। आचा० ३४८।
आस्तिक्यम्-सम्यक्त्वस्य पञ्चमलक्षणम्। आव० ५९१।
आस्थानमण्डपः - उपस्थानगृहम्। भग० २००। नंदी ६१।
आस्फोटनम्-सकृदीषद्वा स्फोटनम्। दश० १५३।
आस्या-यत्रास्यते यथासुखेन स्वाध्यायपूर्वकम्। ओघ० ६९।
आस्रपः-मूलः। जं० प्र० ४९९।
आहंसु-आहुः, उक्तवन्तः। भग० ९८। आख्यातवान्। प्रश्न० २६।
आहच्च - आहत्य, कदाचित्। भग० ३०५, २२। उत्त० १८९, ४८। प्रज्ञा० ३३३। बृ० तृ० ११४ आ। कादाचित्कम्। आव० ५३०। सहसा। नि० चू० द्वि० १२० अ। कदाचित् सान्तरमित्यर्थ.। भग० ४१। उपेत्य स्वतः एव, अत्यर्थं कदाचिद्वा। आचा० ५५। ढौकित्वा। आचा० २७२। उपेत्य। आचा० ३६२। सहसा। आचा० ३२२, ३५५। कदाचित् अनन्यगत्या। व्य० प्र० ८ आ। आहत्य-आहननं प्रहारः। भग० ६०३।
आहच्च गंथा-आहृतग्रन्था-श्रयीकृतद्रव्या। आचा० २७२।
आहट्टु-आहृत्य, उपेत्य। सूत्र० ३००। गृहीत्वा। आचा० २८०, ३४५।
आहट्टो-आडम्बरः (उपाधिः)। आव० ३४१।
आहडं - आहृतम्, स्वग्रामादे. साध्वर्थमानीतम्। प्रश्न० १५४। साध्वर्थमभ्याहृतादि। दश० २०३।
आहणइ-आहन्ति, समीकरोति। आव० ३८५।
आहत्तहिए-सूत्रकृताङ्गे त्रयोदशाध्ययनम्। सम० ४२।
आहम्मिए जोगे-वशीकरणादीनि। आव० ६६२।
आहयंति-कथयन्ति। नि० चू० प्र० २७७ अ।
आहय - आहतं, लक्षणया लिखितम्। जं० प्र० २०२। आख्यानकप्रतिबद्धं यथात्मं तेन युक्तं तद्गीतम्। ठाणा० ४२१। आहतं, आख्यानकप्रतिबद्धम्। सूर्य० २६७। जीवा० १६२। आव० २९८। आख्यानकप्रतिबद्धं, आहतमिति वा। औप० ७४।
आहया-आख्यानकप्रतिबद्धानि। राज० ११।

आहरणं–आ–अभिविधिना ह्रियते–प्रतीती नीयते अप्रतीतो ऽर्थोऽनेनेति । ठाणा० २५४ । साध्यसाधनान्वयव्यतिरेक प्रदर्शन दृष्टान्तो वा । आव० ६२ ।

आहरणतद्देसे–आहारणतद्देश, आहरणार्थस्य देशस्तद्देश स चासावुपचाराहरण चेति प्राकृतत्वादाहरणशब्दस्य पूर्वनिपाते आहरणतद्देश इति यत्र दृष्टान्तार्थदेशेनैव दार्ष्टान्तिकार्थस्योपनयनम् क्रियते तत्। ठाणा० २५४।

आहरणतद्दोसे– आहारणतद्दोष, आहारणस्य सम्बन्धी साक्षात्प्रसङ्गसम्पन्नो वा दोषस्तद्दोष सा चासौ धर्म्मे धर्म्मिण उपचारादाहरण चेति आहारणस्य दोषो यस्मिंस्तथा यत्साध्यविकल्पत्वादिदोषदुष्ट तद्दोषाहरण। ठाणा० २५४।

आहरणा–घोरयति घोरण करोति। ओघ० ५८। ज्ञात विशेष । ठाणा० २५३ । उदाहरणम् । दश० ३५ ।

आहरे–आहारयेत्–व्यवस्थापयेत्। आचा० २९२ ।

आहव्वणी–आथर्वणी आथर्वणाभिधाना सद्योऽनर्थकारिणी विद्या। सूत्र० ३१९।

आहा–आधा। भग० १०२। साधूना मनस्याधानम् साधू नाश्रित्य। प्रश्न० १२७। आधानम्, साधूनिमित्त चेतस प्रणिधानम्। पिण्ड० ३५। अधस्तात्। नि० चू० प्र० २९४ आ। आधीयतेऽस्यामिति। पिण्ड० ३६।

आहाकम्म–आधाकम्म, आधाय–निमित्तत्वेनाश्रित्य पूर्वोक्तम ष्टप्रकारमपि कर्म बध्यते, शब्दस्पर्शरसरूपगन्धादिक। कर्मनिमित्तभूता मनोज्ञेतरशब्दादय एवाधाकर्म्म। आचा० ९८। आधान आधाकरण तदुपलक्षितं कर्म। यथाकर्म वा तत्तद्गत्यनुरूपचेष्टित वा। उत्त० १८२। साधुप्रणिधानेन यस्सचेतन मचेतन क्रियते अचेतन वा पच्यते चीयते वा गृहादिक व्यूयते वा वस्त्रादिक तदाधाकर्म। भग० १०२। प्रथम उद्गमदोष। आधान आधा तया आधया कर्म-पाकादि क्रिया, आधाय–साधु चेतसि प्रणिधाय यत् क्रियते भक्तादि तत्। पिण्ड० ३४। चतुर्थशबलदोष। प्रश्न० १४४। सम० ३९।

आहाकम्मिय–आधाकर्म, दोषविशेष। आचा० ३२९।

आहाकम्मेहिं– आधाकर्मभि, आधान-माधाकर्म आत्मनेतिगम्यते, तदुपलक्षितानि कर्माण्याधाकर्माणि, तै–स्वकृतकर्मभि। उत्त० २४७।

आहाण आधानम्, विधानम्। विशे० ८४७।

आहार–आहार, भोजनम्, जीवनम्। प्रश्न० १०६। मनसा तथाविध पुद्गलोपादानरूप। भग० ८६। त्रयोदशशतके पचमोद्देशक। भग० ५९६। अष्टाविंशतितमाहारप्रतिपादकत्वादाहार। प्रज्ञा० ६।

आहारए–आहारकम्, चतुर्दशपूर्वविदा कार्योत्पत्तौ योगबलेनाह्रियत इति। प्रज्ञा० २६८। तथाविधकार्योत्पत्तौ चतुर्दशपूर्वविदा योगबलेनाह्रियत इति। ठाणा० २९५। चतुर्दशपूर्वविदा तीर्थंकरस्फातिदर्शनादिकतथाविधप्रयोजनोत्पत्तौ सत्यां विशिष्टलब्धिवशादाह्रियते–निर्वर्त्यते इति। जीवा० १४। प्रज्ञा० ४०९। तथाविधप्रयोजने चतुर्दशपूर्वविदा यदाह्रियते गृह्यते तत्। आह्रियन्ते–गृह्यन्ते केवलिनसमीपे सूक्ष्मजीवादय पदार्था अनेनेति वा। अनु० १९६। आहारयति–आहारं गृह्णातीति। नदी ९०।

आहारएसणा–आहारैषणा। दश० १८।

आहारग–आहारकम्, तृतीयं शरीरम्। प्रज्ञा० ४६९।

आहारगओवगणाम–आहारकाङ्गोपाङ्गनाम, उपाङ्गनाम। प्रज्ञा० ४७०।

आहारगत्त –आहारकत्व, आहारकशरीरकरणलब्धि। ठाणा० ३३०।

आहारगबंधण–आहारकबन्धनम्, बन्धननाम। प्रज्ञा० ४७०।

आहारगओ–आहारगम, प्रज्ञापनाया अष्टाविंशतितमाहारपदोक्तमूत्रपद्धति। भग० १०९।

आहारगसघायणाम–आहारकसङ्घातनाम, यदुदयवशादाहारकशरीररचनाऽनुकारिसङ्घातरूपा जायते तदाहारकसङ्घातनाम। प्रज्ञा० ४७०।

आहारगसमुग्घात–आहारकसमुद्घात, आहारके प्रारभ्यमाणे समुद्घात। जावा० १७।

आहारट्ठ–आहारार्थ, आहारप्रयोजनमाहारार्थित्वम्। भग० २०। आहारलक्षण प्रयोजन, आहाराभिलाषो वा। प्रज्ञा० ५००।

आहारट्ठि–आहारार्थी, आहारमर्थयते–प्रार्थयते इत्येवंशील, अर्थो वा-प्रयोजनमस्यास्तीत्यर्थी, आहारेण–भोजनेन अर्थी आहारार्थी, आहारस्य–भोजनस्य वार्थी आहारार्थी। भग० २०।

आहारपच्चक्खाण–आहारप्रत्याख्यानम्, अनेषणीयभक्तपाननिराकरणरूपम्। उत्त० ५८८।

आहारपदे–प्रज्ञापनाया अष्टाविंशतितमपदम्। प्रज्ञा० २५१। नंदी १०५।

आहारपयाई–आहारपदानि, आहारग्रहणविषयकानि पदानि। जं० प्र० ४६१।

आहारपरिण्णा–आहारपरिज्ञा, सूत्रकृताङ्गे द्वितीयश्रुतस्कंधे तृतीयाध्ययनम्। आव० ६५८। ठाणा० ३८७। उत्त० ६१६।

आहारपर्याप्तिः–यया शक्त्या करणभूतया भुक्तमाहारं खलरसरूपतया करोति सा। बृ० प्र० १८४ आ। शरीरेन्द्रियवाङ्मनप्राणापानयोग्यदलिकद्रव्याहरणक्रियापरिसमाप्तिः। तत्त्वा० ८-१२।

आहारपोसहे–आहारपौषधः, आहारनिमित्तं पौषधः, आहारनिमित्तं धर्मपूरणं पर्वेति भावना। आव० ८३५।

आहारसण्णा–आहारसञ्ज्ञा, आहाराभिलाषः-क्षुद्वेदनीयोदयप्रभव आत्मपरिणामः। आव० ५८०।

आहारसन्ना–आहारसञ्ज्ञा, क्षुद्वेदनीयोदयाद् या कवलाद्याहारार्थं तथाविधपुद्गलोपादानक्रिया सा। प्रज्ञा० २२२। क्षुद्वेदनीयोदयात्कावलिकाद्याहारार्थं पुद्गलोपादानक्रियैव सञ्ज्ञायतेऽनया तद्वानित्याहारसञ्ज्ञा। भग० ३१४। आहाराभिलाषः-क्षुद्वेदनीयप्रभवः खलु आत्मपरिणामविशेषः। जीवा० १५।

आहारवं–आलोइज्जमाणं जो सभेदं सव्वं अवधारति सो। निः चू० तृ० १२८ आ। अलोचितापराधानां अवधारणावान्। भग० ९२०।

आहाराइणियाए–रत्नैः-ज्ञानादिभिर्व्यवहरतीति रात्निकः-बृहत्पर्यायो यो यो रात्निको यथारात्निकं तद्भावस्तत्ता तया यथारात्निकतया-यथाज्येष्ठ। ठाणा० ३०१।

आहारुद्देस–आहारोद्देशः, प्रज्ञापनाष्टाविंशतितमपदस्योद्देशकः। भग० २०।

आहारेंति–विशेषाहारापेक्षया सामान्याहारस्याविग्रहशरीरबन्धनसमय एव कृतत्वात्। भग० ७६३।

आहारे–आहारः, चरमाचरमपदगतसूत्रम्। प्रज्ञा० २४६। आहारप्रतिपादकं प्रज्ञापनाया अष्टाविंशतितमं पदम्। प्रज्ञा० ६। आधारः। भग० ७३८। फलपत्रकिशलयमूलकन्दत्वगादिनिर्वर्त्यः। आचा० ६०।

आहारेत्ताइतो–आहृतवान्। आव० ३०८।

आहारे भोयणा–आहाराभोगता। प्रज्ञा० ५४३।

आहारो–आहारः, कुरादि एकं चेव खुधं णासेति पाणे तक्कखीरुदगमज्जादि एगंगिया तिस णासेति, आहारकिच्चं च करेंति खाइमे एगंगिया फलमंसादि आहारकिच्चं च करेंति, साइमेऽवि मधुफाणिम तंबोलादिया एगंगिया खुहं णासेति। नि० चू० द्वि० ५० आ। मुक्खत्तो जं किंचिवि भुंजति सो सव्वो आहारो। नि० चू० द्वि० ५१ अ। आधार आधेयस्येव सर्वकार्येषु लोकानामुपकारित्वात्। भग० ७३९।

आहारोवचया–आहारोपचयाः, आहारेणोपचयो येषां ते। आचा० २७५।

आहार्यः–अभिनयचतुर्थभेदः। जं० प्र० ४१४। काष्ठफलपुस्तमृत्तिकाचर्मादिघटितप्रजननैर्योषिद्वाच्यप्रदेशासेवनमित्यर्थः। आव० ८२५। आहार्यं अन्धकाररहितत्वं। सम० १४०।

आहालंदिया–कल्पविशेषः। नि० चू० प्र० ३३८ आ।

आहावंति–आगच्छन्ति। बृ० द्वि० २१३ अ।

आहावणा–आभावना, उद्देशः। पिण्ड० ११६।

आहाविज्ज–आधावेत्। आव० ६३३।

आहासिया–आभासिकनामद्वितीयान्तरद्वीपः। प्रज्ञा० ५०।

आहिंडइल्ल। ओघ० ९६।

आहिंडओ–आहिण्डकः, दूरदेशविहारकर्ता। आव० ५३६।

आहिंडगा–विहरंता। नि० चू० प्र० ३१४ अ।

आहिंडा–सततं परिभ्रमणशीलाः। बृ० तृ० १८४ आ।

आहिंडिओ–आहिण्डकः, आहेटकः। आव० ४३२। अगीतार्थः, चमत्स्तूपादिदर्शनप्रवृत्तः। ओघ० ६०।

आहिंडितो–आहिण्डिकः। उत्त० १०८।

आहिधइ–परिदधाति। आव० ३६०।

आहिअग्गि–आहिताग्निः, अग्निं गृहीत्वा स्वगृहे स्थापनात्। आव० १६९। ब्राह्मणः। दश० १५२। कृतावसथादिर्ब्राह्मणः। दश० २४५। प्रतिपादितोऽनुष्ठितो वा। सूत्र० १५८।

आहिए–आहितः, जनितः। सूत्र० ६९। प्रथितः, प्रसिद्धिगतः। सूत्र० ६९।

आहिज्जइ-आधीयते, व्यवस्थाप्यते, आप्यायते वा। सूत्र० ३३७। सम्बध्यते। सूत्र० ३०६। आख्यायते। सम० ११३।

आहितविशेषम्-आहितविशेषत्वं-वचनान्तरापेक्षया ढौकितविशेषता। एकत्रिंशत्तमवाणीगुण। सम० ६३।

आहितुण्डिग-आहितुण्डिक, गारुडिक। दश० ३७।

आहितो-आख्यात, कथित। सूत्र० ११।

आहित्थ। जीवा० १९४।

आहियं-आहितम् ढौकितम्। सूत्र० ७१। आत्मनि व्यवस्थितं, आ-समन्तात् हित वा। सूत्र० ६८। गृहीतम्। आव० ३७०।

आहियग्गी-ब्रमणो। दश० चू० १३२।

आहियडमर-आहितडमरम्, शत्रुकृतविड्वरोऽधिकविड्वरो वा। औप० १२।

आहिया-आख्याता। ठाणा० ३९७।

आहियोग - आभियोगक्रेवेयूरपत्ता आदेशवर्त्तिन। भग० १९८।

आहिव्वण-आहित्यम्, अहितत्व-शत्रुभावम्। प्रश्न० ३८।

आही-आधि, मन पीडा। प्रश्न० ५५।

आहुइ-आहुति, अग्नौ घृतादिद्रव्यप्रक्षेपरूपा। दश० २४५।

आहुणिय-आधुनिक। सूर्य० २९४। अष्टाशीतौ महद्पचमग्रहनाम। ठाणा० ७८। ज० प्र० ५३४।

आहुणिज्ज-आहवनीय-सम्प्रदानभूतम्। औप० ५।

आहुणिय-आधूय। आव० १२१।

आहुत्त-आहोतु, दातु। औप० ५।

आहूए-आहूत। आचा० ४२१।

आहूतो-उत्पन्न। आव० ३४३। लग्न, उत्पन्न। उत्त० १४८।

आहूय - आहूतम्-आह्वानमामन्त्रणं नित्य मद्गृहे पोषमात्मकं माह्य इत्येवंरूपम्, कर्मकराद्याकारण वा माध्वयं स्थानान्तरात्स्थानानयनाय यत्र स, स्पर्धा वा। भग० २९३। भग० २९४।

आहेडगो-मिगव्व। नि० चू० द्वि० १३६ आ।

आहेण-जमन्नगिहातो आणिज्जति तं अहवा ज वहुगिहातो, वरगिहं णिज्जति तं। नि० चू० द्वि० २२ अ। वधूविवाहोत्तरकाले वधूप्रवेशे वरगृहे भोजनं क्रियते। आचा० ३३४।

आहेति-आधाय, कृत्वा। उत्त० २४७।

आहेवच्च - आधिपत्यम्, अधिपतिकर्म। भग० १०४। अधिपतेः कर्म, रक्षा। ज० प्र० ६३। जीवा० २१७, १६२।

आहेवणं-आक्षेपम्, क्षुभोभादिकरणम्। प्रश्न० ३८।

आहोपुरुषिका-आत्मशक्त्याविष्करणम्। सूत्र० ३४०।

आहोहिओ-आधोऽवधिक, परमावधेरधस्ताद्योऽवधिस्तेन यो व्यवहरति स परिमितक्षेत्रविषयावधिक। भग० ६७।

आहोहिय-नियतक्षेत्रविषयावधय। सम० ९६।

आहोही-यः प्रत्यासत्तोऽवधिस्तेनि यथावधि परमावधेर्योऽधो-वर्त्यवधिर्यस्य सोऽधोऽवधि। नागा० ६१।

आह्निका-पिशाच चतुर्थभेद। प्रज्ञा० ७०।

आह्रियते-निर्वर्त्यते। जीवा० १४।

इ

इंखिणिका-कण्णमूले घष्ट्ट्वा चाडयन्ति। आव० ६३०।

ईखिणी - विज्जाविसेसिया घटिया कण्णमूले चालिज्जति, तत्थ देवता कहिति कहतस्स परिणाणिणि सम्वति स एव ईखणा भण्णति। नि० चू० द्वि० ८५ अ। निन्दा। सूत्र० ६१।

इगना-इङ्गना, संज्ञा। नदी १०।

इंगाल-अङ्गार, दग्धेन्धने विगतधूमज्वाल। आचा० ४१। चारित्रइन्धनमङ्गारमिव य करोति भोजनविषयरागाग्नि सोऽङ्गार। भग० २९१। अङ्गारागमयमाङ्गार। दश० १६४। ज्वालारहितोऽग्नि। दश० १०४, २३८। महाग्रहविशेष। भग० ५०५। निज्वलितेन्धनम्। भग० २९३। विगतधूम। प्रज्ञा० २९। निर्धूमाग्नि। आचा० १०७। विगतधूमज्वाला ज्वलत्यमान खदिराग्नि। जीवा० २८। अङ्गार। आव० ४२२, ३१३। गणो। नि० चू० तृ० ४ अ। ज्वालारहिता वह्नि, अग्निस्तृतीयभेद। पिण्ड० १५७।

इंगालए - अङ्गारक, अष्टाशीतिमहाग्रहविशेष। सूर्य० २९४। महाग्रहविशेष। जं० प्र० ५३४। ठाणा० ७८।

इंगालकड्डिणि ईषद्वक्रामा लोहमयदण्ड। भग० ६०३।

इंगालकम्म - अङ्गारकर्म, अङ्गारकरणविक्रयक्रिया। आव० ८२९।

इंगालदाहओ-अङ्गारदाहक। आव० १५१।

इंगालब्भूया-अङ्गारराशिना भूता। भग० १६६।

इंगालवडेंसए–अङ्गारावतंसकं, ज्योतिषविमानविशेषः। भग० ५०५।

इंगालसोल्लियं-अङ्गारैरिव पक्वम्। भग० ५१९। औप० ९१। निर० २६।

इंगाला-अग्निधणाणि ज्वाला। नि० चू० प्र० ५२ आ।

इंगिअ-इङ्गितम्, अन्यथा प्रवृत्तिलक्षणम्, निष्ठीवनादिलक्षणम्। दश० २५२। नयनादिचेष्टया। जं० प्र० २२३।

इंगिणि-इङ्गिनी, अनशनविशेषः। आव० ६७०।

इंगिणिमरणे-इङ्गिनीमरणम्, प्रतिनियतदेश एव चेष्टयते ऽस्यामनशनक्रियायाम्, सप्तदशमरणे षोडश। सम० ३३। इङ्गिते प्रदेशे मरण इङ्गितमरणम्। आचा० २६२। "इंगियदेसम्मि सयं चउव्विहाहारचायनिप्फन्नं। उव्वत्तणाइजुत्त नऽण्णेण उ इंगिणीमरणं"। ठाणा० ९६। यावत्कथिकानशन द्वितीयभेद। ठाणा० ३६४।

इंगिणी-इङ्गिनीमरणम्, मरणस्य षोडशो भेदः। उत्त० २३०। इङ्गिनी, इङ्ग्यते-प्रतिनियतप्रदेश एव चेष्टते अस्यामनशनक्रियायामिति। उत्त० २३५। सम० ३५। विशे० १०।

इंगितं-सूक्ष्मबुद्धिगम्यचेष्टा। ठाणा० ४। सूक्ष्मचेष्टाविशेषः। बृ० प्र० ४३ अ।

इंगिनीमरणं–उक्तन्यायेन प्रतिपद्य शुद्धस्थण्डिलस्थाता एकाकेव कृतचतुर्विधाहारप्रत्याख्यानस्तत्स्थण्डिलस्यान्तश्छायात उष्णमुष्णाच्च छाया स्वयं सङ्क्रामति। उत्त० ६०२। नियतप्रदेशस्यापि वेऽनशनादित्याग। आव० ५६३।

इंगियं-इङ्गितम्, ज्ञानविशेषः। आव० ७२४। नयनादिचेष्टाविशेषः। निर० ८। ज्ञाता० ४१। निपुणमतिगम्य प्रवृत्तिनिवृत्तिसूचकमीषद्भूशिरः कम्पादि। उत्त० ४४। अगभगादि। उत्त० ६२६।

इंगियपत्थिय-चेष्टितप्रार्थित। (मर०)।

इंगियमरणं-इङ्गितमरणम्, इङ्गिते प्रदेशे मरणम्। दश० ७७।

इंगियागारकुसलो-इङ्गिताकारकुशलः। आव० ५६।

इंगियागारसंपन्ने-इङ्गिताकारसम्पन्नः, इङ्गित-निपुणमतिगम्य प्रवृत्तिनिवृत्तिसूचकं, आकार-स्थूलधीसंवेद्य प्रस्थानादि भावाभिव्यञ्जको दिगवलोकनादि, द्वन्द्वे इंगिताकारौ, तौ अर्थाद्गुरुगतौ सम्यक् प्रकर्षेण जानातीति। उत्त० ४४।

इंगिताकारसम्पन्न–इङ्गिताकाराभ्यां गुरुगतभावपरिज्ञानं योगः तेन सम्पन्न-युक्त। उत्त० ४४।

इंग्यते-प्रतिनियतदेश एव चेष्यते। सम० ३५।

इंत-आयान्तम्। उत्त० ३२५, ११९।

इंती-एति-आगच्छन्ति। ओघ० ७८।

इंतो-आयान्, आगच्छन्। दश० ३७। आव० ८८१। बृ० तृ० १७९ अ।

इंदं-एकोनविंशतिसागरोपमस्थितिकं विमानम्। सम० ३७।

इंद-इन्द्र, सप्तमदिनस्य सैद्धान्तिकं नाम। सूर्य० १४७। ऐन्द्री-पूर्वदिक्सैद्धान्तिकनाम। ठाणा० १३३।

इंदकाइया-त्रीन्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२। त्रीन्द्रियजन्तु विशेषः। जीवा० ३२।

इंदकील-इन्द्रकील, गोपुरे कीलविशेषः। जीवा० ३५९, २०४। गोपुरकपाटयुगसन्धिनिवेशस्थानम्। जं० प्र० ४८। गोपुरावयवविशेषः। औप० ३। गोपुरकपाटयुगसन्धिनिवेशस्थानम्। भग० १७५। पुरमध्यमर्थम्। नंदी, १५०।

इंदकुंभ-कुम्भानामिन्द्र विजयदेवाभिषेककलशः। जं० प्र० ५०।

इंदकुंभसमाणो–इन्द्रकुम्भसमान, महाकुम्भप्रमाणकुम्भ सदृश। जीवा० ३६०।

इंदकुमारिया-इन्द्रकुमारिका। आव० ४३४।

इंदकेऊ-इन्द्रकेतु, लोकमहनीयो ध्वजविशेषः। उत्त० ३०२।

इंदकेतू-इन्द्रकेतु, रश्मिनियन्त्रिते चेन्द्रयष्टि। प्रश्न० १२४।

इंदखीलो-इन्द्रकील। आव० ८१७।

इंदगाइ-त्रीन्द्रियजीवविशेषः। उत्त० ६९५।

इंदगाह-इन्द्रग्रह, उन्मत्तताहेतुः। भग० १९८।

इंदगोवए-इन्द्रगोपक, प्रावृट्प्रथमसमयभावी कीटविशेषः। प्रज्ञा० ३६९।

इंदगोवया-इन्द्रगोपक, त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२। त्रीन्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२।

इंदगोवसमाइय-त्रीन्द्रियजीवभेदः। उत्त० ६९५।

इंदगोवेइ-इन्द्रगोपक, प्रावृट्कालभावी कीटविशेषः। जै० प्र० ३४। आचा० ३७६।

इंदग्गहो-इन्द्रग्रह। जीवा० २८।

इंदग्गी-इन्द्राग्नि, ग्रहविशेष। ठाणा० ७९। जं० प्र० ४३५।

इंदजसा-इन्द्रयशा, ब्रह्मराजराज्ञी। उत्त० ३७७।

इंदियनिग्गहो – इन्द्रियनिग्रहः, इन्द्रियाणां – श्रोतादीनां निग्रहः–इष्टेतरेषु शब्दादिषु रागद्वेषाकरणं, पर्यतेऽनगारगुणाः। आव० ६६०। .

इंदियपच्चक्खे – इन्द्रियं–श्रोत्रादि तन्निमित्तं–सहकारिकारणं यस्योत्पित्सोस्तदलिङ्गिकं शब्दरूपरसगन्धस्पर्शविषयज्ञानमिन्द्रियप्रत्यक्षम्। अनु० २११।

इंदियपज्जत्ति–इन्द्रियपर्याप्तिः–यया धातुरूपतया परिणमितादाहारादिन्द्रियप्रायोग्यद्रव्याण्युपादायैकद्वित्र्यादीन्द्रियरूपतया परिणमय्य स्पर्शादिविषयपरिज्ञानसमर्थो भवति सा। बृ० प्र० १८४ आ।

इंदियपडिपुण्णो–नोविगलिंदियो। नि० चू० प्र० २६६ आ।

इंदियबलं–इन्द्रियबलम्, चक्षुरादीन्द्रियाणां बलं–स्वस्वविषयग्रहणपाटवम्। जीवा० २६८।

इंदियमुंडा–न जितेन्द्रियाः। नि० चू० द्वि० ३७ अ।

इंदियलद्धी–इन्द्रियलब्धिः, पर्येन्द्रियशक्तिः। उत्त० १४५। इन्द्रियाणाम्–स्पर्शादीनां मतिज्ञानावरणक्षयोपशमसम्भूताना-मेकेन्द्रियादिजातिनामकर्मोदयनियमितक्रमाणां पर्याप्तकनाम-कर्मादिसामर्थ्यसिद्धानां द्रव्यभावरूपाणां लब्धिरात्मनतीन्द्रियलब्धिः। भग० ३५०।

इंदियलाघवं – इंद्रियलाघवं, इंद्रियाणि तस्य वशे वर्त्तते। व्य० द्वि० १०२ आ।

इंदियाई–इन्द्रियाणि–नयननासिकादीनि। उत्त० ४२५।

इंदियाईणं–इन्द्रियादीनाम्, पृथ्व्याद्येकेन्द्रियाणाम्। विशे० २६०।

इंदियाणि–इन्द्रियाणि–नयननाशावंशादीनि। सम० १६।

इंदीवर–इन्दीवरविशेषः। प्रज्ञा० ३३।

इंदुत्तरवडिंसगं–एकोनविंशतिसागरोपमस्थितिक विमानम्। सम० ३७।

इंदुवसु–इन्दुवसुः, ब्रह्मराजराज्ञी। उत्त० ३७७।

इंदे–इन्द्रः। ठाणा० २९२। मल्लिनाथप्रथमशिष्यः। सम० १५२।

इंदो–इन्द्रः, अधिपतिः। प्रज्ञा० १०५। इन्दनाद्–इन्द – आत्मा। प्रज्ञा० २८५। जीवा० १६। इन्दनात्–इन्द्रः, सर्वोपलब्धिभोगपरमैश्वर्यसम्बन्धाज्जीवः। आव० ३९८। जीव –सर्वविषयोपलब्धिभोगलक्षणपरमैश्वर्ययोगात्। ठाणा० ३३४। परमैश्वर्ययोगात्प्रभुर्महान्। ठाणा० १९८। भवनपालयाधिपाः। तत्त्वा० ४–४।

इंदोकंतं–एकोनविंशतिसागरोपमस्थितिकं विमानम्। सम० ३७।

इंधणपलिआमं – जहा कोद्दवपलालेणं अंबगादि फलाणि वेढेत्ता पाविज्जंति आदिग्गहणेणं सालिपलालेण वितत्थ जे ण पत्ता कला ते इंधणपलियामं भण्णति। नि० चू० द्वि० १५२ आ।

इंधणपलियामं–इंधनपर्यायामं–कोद्रवपलालादिना वेष्टयित्वा पाच्यानि फलानि। बृ० प्र० १४२ आ।

इंधणसाला–जत्थ तणाकरिसभारा अच्छंति। नि० चू० तृ० २१ आ। तृणकरीषकचवरस्थानम्। बृ० द्वि० १०५ अ।

इइकट्टु–इतिकृत्वा, निश्चित्य। जं० प्र० ३८६। इतिकृत्वा–यस्मात् कारणात्। अनु० १६।

इइकम्मं–इतिकर्म्म, इति–सांसारिकं दुःखं कर्म–अष्टप्रकारकर्मकृतम्। आचा० १४५।

इइहास–इतिहासः–पुराणम्। औप० ९३। भग० ११२। निर० २३।

इक्क–देशीवचनम्। विशे० १३१४।

इक्कडं–कठिनं तृणविशेषः। बृ० तृ० ५२ आ। इंढणसरिसं तृणविशेषम्। प्रश्न० १२८। तृणविशेषः। भग० ८०१।

इक्कडदासो–इक्कडदासः। उत्त० २८६।

इक्कडा–लाडदेसे वणस्सतिभेओ। नि० चू० प्र० १२४ आ। वनस्पतिविशेषाः। सूत्र० ३०७।

इक्कमिक्क–एकैकम्–परस्परम्। उत्त० ३८२।

इक्काई–राष्ट्रकूटविशेष.। विपा० ३९।

इक्कारसालंकारं – एकादशालङ्काराः, स्वरप्राभृतकथितालङ्काराः। जं० प्र० ३९।

इक्खाग–इक्ष्वाकु, कुलविशेषः। आव० १०९।

इक्खागकुलो–इक्ष्वाकुकुलः, कुलविशेष। नि० चू० प्र० २९० अ। आव० १०९।

इक्खागभूमि–इक्ष्वाकुभूमिः, ऋषभजन्मभूमिः। आव० १६०।

इक्खागा–इक्ष्वाकवः, नाभेयवंशजाः। भग० ४८१। औप० ५८। कुलार्यभेदविशेषः। प्रज्ञा० ५६। प्रथमप्रजापतिवंशजाः। ठाणा० ३५८। ऋषभस्वामिवंशिकाः। आचा० ३२७।

इङ्गुर-गन्त्रीदयनरम्। भग० ३१३। गन्त्र्या सम्बन्धि। आघ० १६६, १६७।

इङ्गुरग-इङ्गुल-महत् पिञ्जरम्। राय० १४१।

इङ्गुरिकादि-पर्युषितस्लमीकृता अम्लरसा भवन्ति, आर नालस्थिनाप्रतलादिर्वा। ठाणा० २२०।

इड्ढि-ऋद्धि-आमर्षौषध्यादि। दश० १०३। भवनपरिवारादिका। ज० प्र० ६२। उत्त० ३५०। आव० १५८। ठाणा० १३२।

इड्ढिपत्ता-ऋद्धिप्राप्ता आर्या। प्रज्ञा० ५५। ऋद्धिप्राप्ता-आर्यप्रथमभेद, अर्हदादय। सम० १३५।

इड्ढिम-इस्सरो। नि० चू० द्वि० १६६ आ।

इड्ढिमत-ऋद्धिमत-विस्मयनीयवर्णादिसम्पत्तिमत। उत्त० ४७३।

इड्ढिसिय-ऋद्धिगम्या। भग० ४८१।

इड्ढी-ऋद्धि। प्रज्ञा० ४२४। इस्सरियं। नि० चू० प्र० १३ आ। आत्मशक्तिरूपा। प्रज्ञा० ४६७। भवनपरिवारादिका। जीवा० २१७। विभवैश्वर्यं। जीवा० २८०। विमानपरिवारादिका। सूर्य० २५८। ठाणा० ११६। औषधिविशेष। उत्त० ४८०। कनकादिसमुदाय। उत्त० २८४। आमर्षौषध्यादि। आचा० १७८। विमानवस्त्रभूषणादि। उपा० २६। दीनानाथदानादिका विभूति। उत्त० ४६५। श्रावकोपकरणादिसम्पदामर्षौषध्यादिरूपा। उत्त० ६६८।

इड्ढीगारव - ऋद्धिगौरवम्, ऋद्ध्या-नरेन्द्रादिपूज्याचार्याभिलाषलक्षणया गौरव - ऋद्धिप्राप्त्यभिमानाशाशिसम्प्रार्थनाद्वारेणा मनोऽशुभभावगौरवम्। आव० ५७९। ऋद्ध्या-नरेन्द्रादिपूजालक्षणया आचार्यत्वादिलक्षणया वा अभिमानादिद्वारेण गौरवम् ऋद्धिप्राप्त्यभिमानाप्राप्तप्रार्थनाद्वारेणात्मनोऽशुभभावो भावगौरवम्। ठाणा० १५३।

इण-अयम्, अनन्तरोक्तत्वेन प्रत्यक्ष। भग० ३८।

इणमो-इद, वक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षासन्नम्। प्रश्न० २। नम। प्र० ६-६३।

इणामेव एवमेव। प्रज्ञा० ६००।

इणिंह-इदानीम्। आव० २७३।

इत -स्थित। २६९।

इतर - मामान्यसाधुभ्यो विशिष्टतर। आचा० २४३। शय्यातर। व्य० द्वि० २७६ अ। अन्तप्रान्त कुल। आचा० २४३।

इता-ज्ञाता। आचा० २८६।

इति-इति-प्रवृत्ति। ठाणा० ३४३। उपदर्शने। सूर्य० २८६। प्रज्ञा० २५५। परिसमाप्तौ एवमर्थे वा। उत्त० ६७। उपप्रदर्शनार्थे। विशे० १५३। एवप्रकारार्थ। ठाणा० ५०३। पूर्वप्रक्रान्तपरामर्शक। आचा० १४१। इतिसद्दो वा अर्थे। नि० चू० द्वि० १३७ आ। आमतणे परिसमत्तीए उवप्पदरिसणे वा। दश० चू० ६३। हेतौ। आचा। १००। उपप्रदर्शने। उत्त० ५७०। दश० ७६। आधर्थ। उत्त० ५६१। प्रत्येक पर्यागस्वरूपनिर्देशार्थं। उत्त० ८। आद्यर्थे। आव० २८। प्रख्यातगुणानुवादनार्थं। भग० ६७। एवप्रकारा। ठाणा० ३५४।

इतिकत्तव्व-इतिकर्त्तव्य। आव० २१३। इतिकर्त्तव्यता-आदर्शनिक्षेपे सपूर्णकर्त्तव्यतार्थं। आचा० ५।

इत्तर-इत्वरम्-अल्पकालीनम्। विशे० २४। स्वल्प। नि० चू० प्र० १८९ अ। परिमितकालम्। दश० २६। चतुर्थादिषण्मासान्तमिद तीर्थमाश्रित्य। ठाणा० ३६४। पादपोपगमनापेक्षया नियतदेशप्रचाराभ्युपगमादिङ्गितमरणम्। आचा० २८५।

इत्तरक-इत्वरकम्, स्वल्पकाल, नियतकालावधिक। उत्त० ६००।

इत्तरकालिकं-प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थेष्वनारोपितव्रतस्य इत्वरकालिकम्। ठाणा० ३२३। अल्पकालिकम्। भग० ९०९।

इत्तरा-इत्वरा, ये कल्पसमाप्त्यनन्तर तमेव कल्प गच्छ वा समुपयास्यन्ति ते इत्वरा। प्रज्ञा० ६८। स्वल्पकालभावनी। अनु० १३। प्रस्तुतकल्पपरिसमाप्तौ ये भूय स्थविरकल्प प्रतिपद्यन्ते ते। बृ० प्र० २२७ आ।

इत्तरिए - अल्पकालीन। भग० ९२१। नि० चू० प्र० २३९ अ।

इत्तरिय इत्वरम्-स्वल्पकालभावीनि आव० ८३८। उत्तरगुणप्रत्याख्यानम्। आव० ८०४। अल्पकालिक दैवसिकादि प्रतिक्रमणमेव। आव० ५६३।

इत्तरिय दिसं-इत्वरं दिशम् आचार्यरक्षणाम्। व्य० द्वि० ९०० अ।

इत्तरिय – इत्वरं, भरतैरावतेषु प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थेष्वनारोपितमहाव्रतस्य शैक्षकस्य विशेषम्। प्रज्ञा० ६३। अयनशीलम्–स्वल्पकालभावी। उत्त० ३३५। इत्वराः–प्रस्तुतकल्पपरिसमाप्तौ ये भूयः स्थविरकल्पं प्रतिपद्यन्ते ते। बृ० प्र० २२७ आ।

इत्तरियतवो – इत्वरतपः स्वल्पकालं अनशनरूपं तपः। उत्त० ६००।

इत्तरियपरिग्गहियागमणे–तत्रेत्वरकालपरिगृहीता कालशब्दलोपादित् इत्वरपरिगृहीतागमनम्, भाटीप्रदानेन कियन्तमपि काल दिवसमासादिक स्ववशीकृताया गमनं–मैथुनासेवनम्। आव० ८२५।

इत्तिरिउग्गहो – एक्कातिहेट्ठठिताण वीसमणट्ठा इत्तरिओ उग्गहो भवति। नि० चू० प्र० २३९ आ।

इत्तिरियं–इत्वरं, स्वल्पकालिकं दैवसिकरात्रिकादि। ठाणा० ३६०। नि० चू० प्र० ३५४ आ।

इत्थंथं – इत्थं तिष्ठतीति इत्थंस्थं। प्रज्ञा० १०९। नारकादिव्यपदेशश्रीजे वर्णसंस्थानादि तत्। दश० २५८।

इत्थत्तं–अनेन प्रकारेणेत्थं तद्भाव इत्थत्वं, मनुष्यादित्वम्। भग० ११९।

इत्थत्थं–इत्थर्थम्, एनमर्थम्–अनेकशास्त्रिर्यङ्नरनाम्निनारकगतिगमनलक्षणम्। भग० ११३।

इत्थिकहा–स्त्रीकथा–स्त्रीणां स्त्रीषु वा कथा, विकथायाश्चतुर्थभेदः। ठाणा० २०९। दश० ११४।

इत्थिपोसए–स्त्रीयं पोषयतीति स्त्रीपोषकः, अनुष्ठानविशेषः। सूत्र० १११।

इत्थिरयणे– स्त्रीरत्नम्, चक्रवर्तेः पञ्चमं पञ्चेन्द्रियरत्नम्। ठाणा० ३९८।

इत्थिलिंगं – स्त्रीलिङ्गम्, स्त्रीत्वस्योपलक्षणमित्यर्थः। प्रज्ञा० २०।

इत्थिवऊ – स्त्रीवाक्, स्त्रीलिङ्गप्रतिपादिका भाषा। प्रज्ञा० २४९।

इत्थिवेए – स्त्रीवेदः, स्त्रियाः पुमांसं प्रत्यभिलाषः। प्रज्ञा० ४६८।

इत्थिवेदो – अंतो अणुसमय डाहो अणुवसंतो वि घट्टिज्जमाण दिप्पंतो फुंफुअग्गिसमाणो इत्थिवेदो। नि० चू० द्वि० ३१ अ।

इत्थिवेय–स्त्रीवेदः, स्त्रियाः पुंस्यभिलाषः। जीवा० १८।

इत्थिसंसग्गी–अवलोइगउल्लावादि। दश० चू० १२७।

इत्थिसंसत्तो–स्त्रीसंसक्त–स्त्रीसम्बन्धः। प्रश्न० ११८।

इत्थिसागारिए–स्त्रीजनः। नि० चू० तृ० १० अ।

इत्थिसागारियं। नि० चू० द्वि० ३४ अ।

इत्थी–स्त्री, पुरुषोत्तमवासुदेवनिदानकारणम्। आव० १६३।

इत्थीउ–स्त्रियः, अष्टमः परीषहः। आव० ६५६।

इत्थीणपुंसियर – इत्थिवेदे वि से नपुंसकवेदमपि वेदेति। नि० चू० द्वि० २५ आ।

इत्थीनामगोत्तं–स्त्रीनामगोत्रम्। आव० १२०।

इत्थीपण्हाइ–स्त्री उपलक्षणमेतत् पुरुषो वा प्रस्तौति प्रस्यंदते मिथुनकर्म समारभते इत्यर्थः। व्य० द्वि० १९५ आ।

इत्थीपरिण्णा–स्त्रीपरीज्ञाध्ययनम्, सूत्रकृताङ्गे प्रथमश्रुतस्कन्धे चतुर्थमध्ययनम्। सम० ३१।

इत्थीपसुविवज्जिअं–स्त्रीपशुविवर्जितमित्येकग्रहणे तज्जातीयग्रहणात् स्त्रीपशुपण्डकविवर्जित तथायालोकनादिरहितम्। दश० २३७।

इत्थीरूवं – अणाभरणा इत्थीरूवं भण्णति। नि० चू० प्र० ७७ अ।

इत्थीविग्गह–स्त्रीविग्रहः, स्त्रीशरीरम्। दश० २३७।

इत्थीविपरियासो–स्त्रिया विपर्यास स्त्रीविपर्यासः–अब्रह्मासेवनम्। आव० ५७५।

इत्थीवेदे–स्त्रीवेदः, स्त्रियं यथावस्थितस्वभावतस्तत्संबन्धविपाकतश्च वेदयति–ज्ञापयतीति, वैशिकादिक स्त्रीस्वभावाविर्भावकं शास्त्रमिति। सूत्र० ११२।

इदुर–मस्तकादिवहनकाले तदिदुरम्। अनु० १५१।

इद्धं–दित्तं। नि० चू० प्र० ३६ अ।

इन्द्रकूपः–उत्तम कूपविशेष। आव० ८२७।

इन्द्रजालम्–इन्द्रकम्। दश० २५४।

इन्द्रनीलः – रत्नविशेषः। जीवा० २३। आव० १८१, २५९। प्रज्ञा० ९१।

इन्द्रियगोचरा–विषयाः। आव० ५८४।

इन्द्रियदुष्प्रणिहितकायिका–आद्येन्द्रियैः–श्रोत्रादिभिर्दुष्प्रणिहितस्य इष्टानिष्टविषयप्राप्तौ मनाक्संवेगनिर्वेदद्वारेणापवर्गमार्गं प्रति दुर्व्यवस्थितस्य क्रिया। आव० ६११।

इन्द्रियार्थावग्रहः-स्पर्शनादीन्द्रियाणां ये स्पर्शादयो अर्थाः तेषां अवग्रहः-सामान्यमात्रज्ञानं । नंदी १७४ ।

इन्धनं-गोमयादि भण्यते। ओघ० १२९ ।

इब्भ-इभमर्हतीति इभ्यः । बृ० प्र० १९९ अ । यद्द्रव्यनिचयान्तरितो हस्त्यपि न दृश्यते । इभो-हस्ती तत्प्रमाणं द्रव्यमर्हतीति निरुक्तादिभ्यः । जं० प्र० १२२ । हस्तिप्रमाणद्रविणराशिपतिः । औप० २७ । अर्थवान् । ठाणा० ४६३ । यद्द्रव्यनिचयान्तरितो महेभो न दृश्यते। औप० ५८। इभमर्हन्तीतीभ्याः – यद्द्रव्यस्तूपान्तरित उच्छ्रितकदलिकादण्डो हस्ती न दृश्यते ते। ठाणा० ३५८। महाधनाः। भग० ४६३। धनवान्। प्रज्ञा० ३३०। इभो-हस्ती तत्प्रमाणं द्रव्यमर्हतीतीभ्यः। यत्सत्कपुञ्जीकृतहिरण्यरत्नादिद्रव्येणान्तरितो हस्त्यपि न दृश्यते सोऽधिकतरद्रव्यो वा इभ्य इत्यर्थः। जीवा० २८०। अनु० २३। यावतो द्रव्यस्योत्करेणान्तरितो हस्ती न दृश्यते तावद् द्रव्यपतयः। प्रश्न० ९६ ।

इब्भजाति – मातिपक्षविशुद्धा इब्भजाइ । नि० चू० प्र० २९० अ । विशिष्टा जातयः। ठाणा० ३५८।

इमंपि–इदमपि, इतिपूर्वकोऽपिशब्दः ।'आचा० ६५।

इमेसु–इमेषु । आचा० ३२६।

इय–इतः, आर्षत्वात अस्य । प्रज्ञा० ११२ । आगतः। (मर०)।

इयणिंह–इत इदानीम् । ठाणा० १४३ ।

इयपट्ठा–इतिप्रष्ठाः-प्रधानाः, वाग्मिनः । उपा० ४६ ।

इयरं–इतरं, रजोहरणनिषद्या औपग्रहिकं कार्पासिकं औणिकं वा चीरं, सौत्रो वा। ओघ० २३। इतरशब्देन रजोहरणनिषद्योच्यते। ओघ० २३।

इयरेयर–इतरेतरः, इतरेतरसंयोगः। उत्त० २३।

इरिआवहं-ईरणमीर्या, पथि ईर्या ईर्यापथं-गमनागमनम्। ओघ० ३७।

इरिआवहिए – ऐर्यापथिकः, केवलयोगप्रत्ययः कर्मबन्धः, क्रियास्थाने त्रयोदशं क्रियास्थानम्। सम० २५।

इरियासमिती-जीवगरक्खणजुगमेत्तंतरदिट्ठिस्स अप्पमादिणो गंत्रमाण्रस्सपुण्णपावगमणमित्ति जा गमणकिरिया सा। नि० चू० प्र० १६ अ।

इरिमंदिर-लक्ष्मीमन्दिरम्, लक्ष्म्यालयं, प्रभूतलक्ष्मीकम्। दश० ५८।

इरिया-ईरणमीर्या-गतिपरिणामः। उत्त० ५१४। वर्तनी। उप० मा० गा० ३६०। ईर्या-आचारप्रकल्पस्य द्वादशो भेदः। आव० ६६०। ईर्या-गमनम्। भग० ३२३। ईरणमीर्या-गमनमित्यर्थः। आचा० ३७४। ईर्या-आचारप्रकल्पस्य द्वितियश्रुतस्कन्धस्य तृतीयमध्ययनम्। प्रश्न० १४६। ईर्या-गमनं, ईर्याकार्यं कर्म। आव० २६५। ईर्या-गमनम्। भग० १०६।

इरियाइ-ईर्यादि, संयमविषया विराधना। ओघ० ८०।

इरियामि-ईरे-गच्छामि गोचरचर्यादिविति। उत्त० ४४५।

इरियावह – ईर्या-गमनं, तत्प्रधानः पन्था ईर्यापथ.। आव० ५७६।

इरियावहकिरिया – ईर्यापथक्रिया, या उपशान्तमोहादारभ्य सयोगिकेवलिनं यावदिति। सूत्र० ३०४।

इरियावहियं-ऐर्यापथिकी, ईर्या-गमनं तद्विषयः पन्था-मार्गस्तत्र भवा, केवलकाययोगप्रत्ययः कर्मबन्धः इत्यर्थ.। भग० १०६। ईरणमीर्या-गतिस्तस्याः पन्था यदाश्रिता सा भवति तस्मिन् भवमध्यात्मादित्वाट्ठकि ऐर्यापथिक, पथिस्थरित्यचचैर्यापथिकम्। उत्त० ५९९।

इरियावहिया – ईर्यापथक्रिया, क्रियायास्त्रयोदशो भेदः। आव० ६४८। ईर्यापथिकी – विंशतिक्रियामध्ये विंशतितमा। आव० ६१२। ऐर्यापथिकी-गमनप्रधानः पन्थाः ईर्यापथस्तत्र भवा। आव० ५७३। ईर्यापथिकी-चंक्रमणक्रिया। बृ० तृ० २७ अ।

इरियासमिइ – ईर्यासमितिः – निरवद्यप्रवृत्तिरूपा। प्रश्न० १४३। ईर्यासमितिः-आवश्यकायैव संयमार्थं सर्वतो युगमात्रनिरीक्षणायुक्तस्य शनैर्न्यस्तपदा गतिः। तत्त्वा० ९-५।

इरियासमिय-ईरणं-गमनमीर्या तस्यां समितो-दत्तावधान. पुरतो युगमात्रभूभागन्यस्तदृष्टिगामीत्यर्थः। आचा० ४२८।

इला-हिमवत्ते चतुर्थकूटं। ठाणा० ७१। धरणेन्द्रस्य महिषीनाम। भग० ५०४।

इलाइपुत्त-नर्तकः। (मर०)।

इलादेवया – इलादेवता, इलावर्द्धननगरदेवता। आव० ३९९।

इलादेवी-पश्चिमरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। आव० १२२। पुण्डरीकायाः प्रथममध्ययनम्। निर० ३५। पश्चात्त्यरुचकवास्तव्या दिक्कुमारीमहत्तरिका। जं० प्र० ३९१।

इहलोगासंसप्पओगे – इहलोकाससाप्रयोग , इहलोक – मनुष्यलोकस्तस्मिन्नाशसा–अभिलापप्रयोग । आव० ८३९ ।
इहलोगो–इहलोक , मनुष्यलोक । आव० ८४० ।
इहलोयभयं – इहलोकभय–मनुष्यादिसजातीयादन्यस्मान्मनुष्यादेरेव भयम् । आव० ६४५ ।
इहलोयसंवेयणी–इहलोकसंवेजनी, संवेजनीकथायास्तृतीयो भेद । दश० ११० ।
इहेहे–विप्साभिधान सम्भ्रमख्यापनार्थं, यदि वा इहेति लोके इहेलस्मिन् भृत्यौ । उत्त० ४०९ ।

ई

ईइ–ईति , गड्डरिकादिरूपा । जीवा० १८८ । ज० प्र० २९ ।
ईति – दुरितविशेष । भग० ८ । धान्याद्युपद्रवकारिशलभमूषकादि । ज० प्र० ६६ ।
ईती–ईति –धान्याद्युपद्रवकारी प्रचुरमूषकादिप्राणिगण । सम० ६० ।
ईप्सितप्रतीप्सित–व्यवहारविशेष । विशे० ६२४ ।
ईरियट्ठा–ईर्याविशुद्धयर्थम् । ठाणा० ३६० ।
ईरिया–गमन । ठाणा० ३४३ । ईरणमीर्या–गतिपरिणाम । उत्त० ५२४ ।
ईरियावहिया–ऐर्यापथिकीक्रिया, योगमात्रज कर्मबन्ध । आव० ६१२ । ईर्या–गमन तत्प्रधान पन्था–मार्ग ईर्यापथस्तत्र भवमैर्यापथिकं–केवलयोगप्रत्यय कर्म्म । भग० ३८५ । आव० ६४८, ६४९ ।
ईरियावहियाकिरिया – ईर्यापथिकक्रिया–यदुपशान्तमोहादेरेकविधकर्म्मबन्धनमिति । ठाणा० ३१६ ।
ईरियासमिइ– ईर्यासमिति , ईर्याया समिति , ईर्याविषये एकीभावेन चेष्टनम् । आव० ६१५ । रथशकटयानवाहनाक्रान्तेषु मार्गेषु सूर्यरश्मिप्रतापितेषु प्रासुकविविक्तेषु पथिषु युगमात्रदृष्टिना भूत्वा गमनागमन कर्त्तव्यम् । आव० ६१५ ।
ईर्याप्रत्यय–ईरणमीर्या–गमनं तेन जनितम् । सूत्र० १२ ।
ईर्यापथप्राप्ता:–योगस्थयमप्राप्ता । तत्त्वा० ९–४८ ।
ईर्याविशुद्धि–ईर्या–गमन तस्या विशुद्धिर्युगमात्रनिहितदृष्टित्वम् । ठाणा० ३६० ।
ईल्किागतिः–गतिविशेष । प्रज्ञा० १५१ । –टी० १५३ ।
ईली–करवालविशेष । प्रश्न । ८८ ।

ईश्वरकारणिकः–क्रियावादिद्वितीयविकल्प । सम० ११० ।
ईश्वरकारणिनः–क्रियावादिद्वितीयविकल्प । ठाणा० २६८ ।
ईश्वरपुत्रः–इभ्याना पुत्र ईश्वरपुत्र । नदी २५८ ।
ईश्वरवादिनः । आव० ८१६ ।
ईषत्कुटिला–कुण्डलीभूता । ज० प्र० ११३ ।
ईषा–मानविशेष । जं० प्र० ५५ । राज० १३ ।
ईसक्खो–ईशाख्य , ईशनमैश्वर्यमात्मन ख्याति अन्तर्भूतण्यर्थतया ख्यापयति–प्रथयति य स । जीवा० २१७ ।
ईसत्थ–इषुशास्त्रम् , धनुर्वेद । आव० १२९ । प्रश्न० ९७ । धणुवेआदि–धनुर्वेदादि । नि० चू० तृ० ७० आ ।
ईसत्थसत्थरहचरियाकुसलो – इष्वस्त्रशास्त्ररथचर्याकुशल । उत्त० २१४ ।
ईसर – ईश्वर , भोगिकादि अणिमाद्यष्टविधैश्वर्ययुक्तो वा । ज० प्र० १२२ । लवणे उत्तरपातालकलश । ठाणा० ४८०, २२६ । प्रभुरमात्यादि । अन्त० १६ । स्थानिमात्र । जीवा० ३६५ । युवराजादि भोगिको वा । प्रश्न० ९६ । भोगिकादि , अणिमाद्यष्टविधैश्वर्ययुक्तो वा । जीवा० २८० । बृ० तृ० २५५ आ । युवराज, अणिमाद्यैश्वर्ययुक्त । औप० ५८ । प्रज्ञा० ३३०, ३२७ । महेश्वर । प्रश्न० ३३ । प्रधान , प्रभु , स्वामी । आव० ५०३ । भूतवादिव्यन्तरेन्द्र । प्रज्ञा० ९८ । 'ईस ऐश्वर्ये' ऐश्वर्येण युक्त ईश्वर , सो य गामभोतियादि । नि० चू० प्र० २७० आ । गृहस्वामी । आचा० ४०३, ३७० । द्रव्यपति । उत्त० ३५३ । युवराजो माण्डलिकोऽमात्यो वा, अणिमाद्यष्टविधैश्वर्ययुक्त ईश्वर । ठाणा० ४६३ । युवराज सामान्यमण्डलिकोऽमात्यश्च । अनु० २३ । युवराज । भग० ३१८ । युवराजादय । भग० ४६३ । औप० १४ । युवराजा । राज० १२१ ।
ईसरस्स–पातालकलश । सम० ८७ ।
ईसरा–ईश्वरा , युवराजा , अणिमाद्यैश्वर्ययुक्ता । ज० प्र० १९० ।
ईसरिए ऐश्वर्य, मदस्य षष्ठ स्थानम् । आव० ६४६ ।
ईसरी–ईश्वरी, सोपारके श्राविकाविशेष । आव० ३०४ ।
ईसा – ईशा, पिशाचकुमारेन्द्रस्याभ्यन्तरिका पर्षद् । जीवा० १७१ । ईश्वरी लोकपालाग्रमहिषीणां आद्या पर्षद् । ठाणा०

१२७। ईर्ष्या–प्रतिपक्षाभ्युदयोपलम्भजनितो मत्सरविशेष। आव० ६११।

ईसाण–ईशान –ईशानावतंसकाभिधविमानोपलक्षित द्वितीयकल्प। अनु० ९२।

ईसाणवडिंसए–ईशानावतंसक, ईशानकल्पमध्येऽवतंसक। जीवा० ३९१।

ईसाणवडेंसए–ईशानकल्पेन्द्रविमान। भग० २०३।

ईसाणा–ईशानदेवलोकनिवासिन ईशाना, द्वितीयो देवलोक। प्रज्ञा० ६९। पूर्वोत्तरदिक्कोणनाम। ठाणा० १३३।

ईसाणी–पूर्वोत्तरदिक्कोणनाम। भग० ४९३। ऐशानी ईशानस्येयं, पूर्वोत्तरमध्यवर्तिदिक्। आव० २१५।

ईसाणे–द्वितीयकल्पेन्द्र। ठाणा० ८५। अहोरात्रस्यैकादश मुहूर्तनाम। सूर्य० १४६। एकादशमुहूर्तनाम। जं० प्र० ४९१। देवलोकविशेष। आव० ११५।

ईसिं–ईषत्, मनाक्। जीवा० १८१।

ईसिं ओट्ठवलंबिणी–ईषदोष्ठावलम्बिनी, ईषत्–मनाक् तत परम्परमास्वादतया झटित्येवाग्रतो गच्छति ओष्ठेऽवलम्बते–ल्पतीत्येवंशीला। प्रज्ञा० ३६४।

ईसिं ओणयकाओ–ईषदवनतकाय। आव० २१६।

ईसिं तंबच्छिकरणी–ईषत्ताम्राक्षिकरणी, ईषत्–मनाक् ताम्रे अक्षिणी क्रियेते अनयेति। प्रज्ञा० ३६४।

ईसिंपब्भारगओ – ईषत्प्राग्भारगत – ईषदवनतकाय। आव० २१६।

ईसिं वोच्छेदकडुई – ईषद्व्युच्छेदकटुका, ईषत्–मनाक् पानव्य-छेद सति तन ऊर्ध्वं कटुका एलादिद्रव्यसम्पर्कत उपलक्ष्यमाणतिक्तवीर्येति। प्रज्ञा० ३६४। जीवा ३५१।

ईसि–ईषत्, मनाक्। प्रज्ञा० ९१। आव० ८५७। ईषत्प्राग्भारानाम। प्रज्ञा० १०७। सिद्धशिलानाम। रत्नप्रभाद्यपेक्षया ह्रस्वत्वाद् ईषत्। ठाणा० ४४०। सम० २२।

ईसिणि–सरससल्ली–त्वक्। नि० चू० तृ० ६३ आ।

ईसिपंचह्रस्सक्खरुच्चारणद्धा–अयोगिकालमान। उत्त० ५७७। ईषदिति–स्वल्प प्रयत्नापेक्षया पञ्चानां ह्रस्वाक्षराणां अइउऋलृइत्येवंरूपाणामुच्चरणमुच्चारो भण्यते तस्याद्धा–कालो यावता त उच्चार्यन्त। उत्त० ५९६।

ईसिपब्भारा–ईषत्प्राग्भारा, ईषद्भाराक्रान्तपुरुषवन्नता अन्ते स्थिति। अनु० ९२। सिद्धशिलानाम, प्राग्भारस्य ह्रस्वत्वादीषत्प्राग्भारा। ठाणा० ४४०। सम० २२। सिद्धशिला। आव० ६००।

ईसी ओट्ठावलंबिणी–ईषदोष्ठावलम्बिनी, ईषद् ओष्ठमवलम्बते–तत परमतिप्रकृष्टास्वादगुणयोगेनरसा झगिति परत प्रयाति। जीवा० ३५१।

ईसी तंबच्छिकरणी–ईषत्ताम्राक्षिकरणी, किञ्चिताम्राक्षिकरणी। जीवा० ३५१।

ईसीपब्भारगए–ईषत्प्राग्भारगत। आव० ६४८।

ईसीपब्भारा–ईषत्प्राग्भारा, सिद्धभूमि। आव० ४४२। अष्टमभूमि, अन्त्याभूमि। आव० ६००। पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षायामविष्कम्भप्रमाणा शुद्धस्फटिकसंकाशा सिद्धशिला। प्रज्ञा० २२८। ईषद् अल्पो रत्नप्रभाद्यपेक्षया प्राग्भार –उच्चत्वादिलक्षणो यस्या सा। ठाणा० २५१। सिद्धशिला। प्रज्ञा० १०७। ईषत्–अल्पो योजनाष्टकबाहल्यपञ्चचत्वारिंशल्लक्षविष्कम्भात् प्राग्भार पुद्गलनिचयो यस्या सा। ठाणा० १२५।

ईसेणिआ ईसिनिका। जं० प्र० १९१।

ईहइ–ईहते–पर्यालोचयति। आव० २६।

ईहते–पूर्वापराविरोधेन पर्यालोचयति। नंदी २५०।

ईहा – अन्वयधर्मघटनप्रवृत्तव्यापाराभिमुख एव बोध। विशे० १७०। सदर्थपर्यालोचने। भग० ३४४। सदर्थाभिमुखा ज्ञानचेष्टा। भग० ६३३। 'ईहनमीहायाम्' ईहनमीहा सतामन्वयिना व्यतिरेकिणां चाऽर्थानां पर्यालोचना। विशे० २०६। वितर्क। सम० ११५। अवग्रहादुत्तरकालमवायात्पूर्वं सद्भूतार्थविशेषोपादानाभिमुखोऽसद्भूतार्थविशेषपरित्यागाभिमुख –प्रायोऽत्र मधुरत्वादय शङ्खादिशब्दधर्मा दृश्यन्ते न खरकर्कशनिष्ठुरतादय शार्ङ्गादिशब्दधर्मा इत्येवंरूपो मतिविशेष। नंदी १६८। ईहनमीहा–सदर्थपर्यालोचनम्। नंदी १८६। ईहनमीहा–सतामर्थानामन्वयिनां व्यतिरेकिणां च पर्यालोचना। आव० १८। तदर्थगतार्थविशेषालोचनम्। आव० ९। ईहनमीहा–सद्भूतार्थपर्यालोचनरूपा चेष्टा। प्रज्ञा० ३१०। नंदी १६८। किमिदमित्यमुतान्यथेत्येवं सदर्थालोचनाभिमुखा मति चेष्टा। जं० प्र० ९९। सदर्थपर्यालोचनात्मिका। दश० १२६। अवगृहीतार्थैकदेशाच्छेषानुगमनं। निश्चयविशेषजिज्ञासा। तत्त्वा०

१ – १५। अवग्रहार्थगतासद्भूतसद्भूतविशेषालोचनम्। राज० १३०।

ईहामिग–ईहामृग -वृक। भग० ४७८। ज० प्र० ४३। जीवा० १९९। नाट्यविधिविशेष। जीवा० २४६। ज० प्र० ४१५। आटव्य पशु। आचा० ४२३।

ईहामिय–ईहामृगा-वृका। राज० २८।

उ

उंछं–उञ्छ-भक्त। ओघ० १५४। अन्यान्यवेश्मत स्वरूप स्वल्पमामीलनात्। उत्त० ६६७। जुगुप्सनीय, गर्ह्यम्। सूत्र० १०८। भैक्ष्यम्। सूत्र० ७४। अल्पाल्पम्। प्रश्न० १११। छादनायुत्तरगुणदोषरहित। आचा० ३६८। अज्ञात पिण्डोञ्छसूचकत्वादिति साधोरुपमानम्। दश० १८। एषणीय। आचा० ३७६। उञ्छयते-अल्पाल्पतया गृह्यत इति, भक्तपानादि। ठाणा० २१३।

उंछवित्ती–उञ्छवृत्ती-कणयाचनवृत्ति। आव० ७०५। व्य० द्वि० ३५९ अ।

उंछविही–कणयाचनवृत्ति। आव० ७०५।

उंजणं–अवम(स)तुअण। दश० चू० ६९।

उंजण–उञ्जनम्। उत्सेचनम्। दश० २२८, १५४।

उजायणा–वासिष्ठगोत्रस्य नामविशेष। ठाणा० ३९०।

उंजेज्जा–उत्सिञ्चेत्। दश० १५४।

उंडअ–उण्डक, पिण्डक। ओघ० ९१।

उडगं–उन्दकम्, स्थण्डिलम्। दश० १५६।

उंडत्तं–उद्वेष। ठाणा० ५२५।

उंडया–प्रत्यय। नि० चू० प्र० २४५ आ।

उंडि–मुद्राम्। व्य० द्वि० १६७ आ।

उंडिका–मुद्रा। बृ० प्र० ३३ अ।

उंदुअ–उन्दुकम्-स्थानम्। दश० १७०। बृ० प्र० २०२ अ।

उडेरगा। नि० चू० द्वि० १२५ आ।

उडेरय–घटका। आव० ६८०।

उंदर उन्दुर.। प्रश्न० ८।

उंदु–उन्दु-मुखम्। अनु० २९।

उंदुर – उन्दुर -मूषक। ओघ० १२६। आव० ६४१। उत्त० १०९। नि० चू० द्वि० २२ अ।

उदुरुयर्ण–मुखेन वृषभादिशब्दकरणम्। अनु० २९।

उंदोइयाय–भरोलिया, यवकृतनिर्वृत्ता। बृ० प्र० ११३ अ।

उंबर–उदुम्बर, बहुबिजकवृक्षविशेष। प्रज्ञा० ३२। भग० ८०३। चतुर्थभवनवासिदेवस्य वृक्ष। ठाणा० ४८७। उम्बर। व्य० द्वि० ३६२ अ। गिहेलुको। नि० चू० द्वि० ८३ आ।

उंबरदत्त–उदुम्बरदत्त, दुःखविपाके सप्तममध्ययनम्। विपा० ७८। पाटलखण्डनगरे सागरदत्तसार्थवाहसुत। विपा० ७४। जक्षविशेष। विपा० ७४।

उंवरमंथुं–चूर्णविशेष। आचा० ३४८।

उंवरवच्च–उंबरस्स फला जत्थ गिरिउडे उच्चविज्जंति त उंवरवच्च भणति। नि० चू० प्र० १९२ आ।

उंवरिय–वृक्षविशेष। भग० ८०३।

उंबरो–उदुम्बरदत्त, सार्थवाहसुत, दुःखविपाकाना सप्तममध्ययनम्। विपा० ३५।

उ–उपयोगकरणे। आव० ४४९।

उअत्तं–उत्तीर्णम्। नि० चू० प्र० ३४१ आ।

उअरदंते–उदरदान्त -येन वा तेन वा वृत्तिशील। दश० २३३।

उआहणित्ता–उपाहृत्य, समीपमानीय। दश० ५९।

उइंति–उदयन्ति उदय यान्ति। उत्त० ४८६।

उइओदए उदितोदय, सिद्धो कायोत्सर्गफलमिति दृष्टान्ते राजा। आव० ८००।

उइज्जंति–उदीर्यन्ते, उद्देशाऽवस्थां नीयन्ते। आव० ५६८।

उइण्णा–अवतीर्णा। उत्त० ३००।

उइन्न–उदीर्ण -विपाकापन्न। आचा० १५१।

उईरय–उदीरकं-प्रवर्त्तकम्। प्रश्न० ८६।

उईरयइ–उदीरयति-अन्यान् वातान् जलमपि चोद-प्राबल्येन प्रेरयति। जीवा० ३०७।

उउ–उत। नि० चू० प्र० ३४८ अ। ऋतु। भग० ५४३। ऋतु-रक्तहर, शास्त्रप्रसिद्धो वा। रक्तदर्शनलक्षण। ठाणा० ३१३।

उउबद्ध–ऋतुबद्ध उच्यते शीतकाल उष्णकालश्च। ओघ० ११८। ऋतुबद्ध। आव० १८९। शीतोष्णकालयो। ओघ० २०५। शीतोष्णकालो मिलिओ चेव भण्णते। ओघ० १३१।

उउबद्धपीढफलग – य ऋतुबद्धेऽन्तरे पीठफलकादीन् यत्नानि मुद्रा प्रयुञ्जानो न करोति या वा निरा

वस्तृतसस्तारक सोऽबद्धपीठफलक तम्। व्य० प्र० १६४ अ। जो य पक्खस्स पीढफलिगादियाण बधे मोत्तु पडिलेहण ण करेति सो सत्तओ उउबद्धपीढफलगो अथवा णिच्चणिय सथारगा णिच्चुत्थरियसथारगो य उउबद्धपीढफलगो भण्णति। नि० चू० द्वि० ९१ अ।

उउबद्धोग्गहो-ऋतुबद्धावग्रह । नि० चू० प्र० २३९ अ।

उउपरियट्ट-ऋतुपरिवर्त -ऋत्वन्तरम्। आचा० ३२७।

उउय-ऋतुज -कालोचित । प्रश्न० १६७।

उउसंधी-ऋतुसन्धि -ऋतो पर्यवसानम्। आचा० ३२७।

उऊ-ऋतु, मासद्वयमान । भग० २११। ऋतु । आचा० ३२७।

उऊसंवच्छरे-ऋतवो-लोकप्रसिद्धा वसन्तादय तद्व्यव हारहेतु सवत्सर ऋतुसंवत्सर, तृतीयप्रमाणसंवत्सर । ज० प्र० ४८७।

उपट्टे-शिल्पे चतुर्थभेद । अनु० १४९।

उक्कट्ठणं-गाढतरम्। नि० चू० प्र० ११५ अ।

उक्कंचण - ऊर्ध्वं कचनमुत्कचन-हीनगुणस्य गुणोत्कर्षप्रति पादनम्। उत्कोचा। राज० ११५।

उक्कंचणदीव-ऊर्ध्वदण्डदीप । भग० ५४८।

उक्कंचणया-उत्कञ्चनता-मुग्धवञ्चनप्रवृत्तस्य समीपवर्तिविद ग्धचित्तरक्षार्थं क्षणमव्यापारतयाऽवस्थानम्। औप० ८१। मुग्धवञ्चनप्रवृत्तस्य समीपवर्तिविदग्धचित्तरक्षणार्थं क्षणमव्या पारतया अवस्थानम्। राज० २९।

उक्कंतो-उत्क्रान्त, आयु क्षयेण मृत । उत्त० ४२०। उत्कृत - स्वगपनयनेन छिन्न । उत्त० ४१०।

उक्कंपिओ-नैशादिकम्बाभिरवबद्ध । आचा० ३६१।

उक्क-उल्का। व्य० द्वि० २४१ अ। गगनाग्नि । दश० १५४।

उक्कइयकरण सिव्वण, तुण्णण। नि० चू० प्र० १२४ अ।

उक्कच्छिय-आर्यिकाणा त्रयोदशभेदेष्वधौ एकादशी। ओघ० २०९।

उक्कच्छिया-कक्षाए समीव उवकच्छ, त छादयतीति। नि० चू० प्र० १८० अ।

उक्कज्जिय-उड्डायत। नि० चू० तृ० ८९ अ।

उक्कड-उत्कट-उपेतम्। ज० प्र० २७९। दुष्करम्। आव० ७८२। प्रचुर । आव० ७७४।

उक्कडुअ - उत्कटुकानि, यथास्थानमनिविष्टानि। जं० प्र० १७०।

उक्कडुआसणिए-उत्कटुकासन-पीठादौ पुतालगनेनोपवेशन-रूपमभिप्रहतो यस्यास्ति स। ठाणा० २९८।

उक्कड्डग-अपकर्षक, यो गेहाद्ग्रहण निष्काशयति, चौराद् वा आकार्य परगृहाणि मोषयति, चौरपृष्ठग्राहो वा। प्रश्न० ४७।

उक्कड्डियं-उत्कर्षितम्-उत्पाटितम्। पिण्ड० ११६।

उक्कत्थणं-उत्कत्थनं-स्वचोऽपनयनम्। प्रश्न० २४।

उक्कम-उत्क्रम, पश्चानुपूर्वीभवनम्। विशे० १६। उत्क्रम। विशे० १७४।

उक्कमणअणाभोगकिरिया-उत्क्रमणानाभोगक्रिया, उद्द नप्लवनधावनासमीक्ष्यगमनागमनादिक्रिया। आव० ६१४।

उक्करं - उत्कर-क्षेत्रगवादि प्रति अविद्यमानराजदेयद्रव्यम्। विपा० ६३।

उक्करियाभेदे-उत्करिकाभेद -द्रव्यस्य पञ्चमभेद.। प्रज्ञा० २६७।

उक्करिसियखग्गो-आकृष्टखड्ग । आव० ५५४।

उक्कलंबिज्जिउं-उल्लम्बयितुम्। आव० २२०।

उक्कलंबेइ - अवलम्बयति। आव० ४२६। उद्बध्नाति। नि० चू० द्वि० ५२ आ।

उक्कलंबेति- उल्लम्बेति। नि० चू० प्र० ११८ अ।

उक्कल-उत्कल -ऊर्ध्वं धर्मकलाया यस्य। प्रश्न० २७। उत्कल - प्रदेशविशेष, नैमित्तिकविशेष। आचा० ३५९। नैमित्तिक। आचा० ३५९। श्रीन्द्रियजीवभेद। उत्त० ६९७।

उक्कलति-उत्कलति उच्छलति। उत्त० १२४।

उक्कला-उत्कट, उत्कला वा। ठाणा० ३४३।

उक्कलिया-उत्कलिका-लघुतर समुदाय। औप० ५७। भग० ४६३। त्रीन्द्रियजन्तुविशेष। जीवा० ३२। उन्माद। सूर्य० २९६। लघुतर समुदाय। भग० ११५।

उक्कलियाभड-उत्कलिकाभङ्ग। दश० चू० १२१।

उक्कलियावाउ - उत्कलिकावात, बादरवायुकायभेद। आचा० ७८।

उक्कलियावाए-उत्कलिकाभि प्रचुरतराभि सम्मिश्रो यो वात उत्कलिकावात। प्रज्ञा० ३०। जीवा० २९।

उक्कलियावाया–उत्कलिकावातः, उत्कलिकाभिर्यो वाति सः। भग० १९६। ये स्थित्वा स्थित्वा पुनर्वान्ति। उत्त० ६९४।

उक्कस–उत्कर्षः–औद्धत्यम्। दश० १८९।

उक्कसणं–उदर्गतेण प्रेरणं। नि० चू० तृ० ६३ आ।

उक्कसाई–उत्कषायी–प्रबलकषायी। उत्त० ४२०।

उक्कसाहिज्जा। आचा० ३७८।

उक्कसिस्सामि–लघु सदपरशकलत्वगनत उत्कर्षयिष्यामि। आचा० २४४।

उक्कसे–उत्कर्षेत्–उत्नामयेत्। आचा० २९३।

उक्कस्स–उत्कर्षन्तीत्युत्कर्षाः–उत्कर्षवन्तः, उत्कृष्टसङ्ख्याः, परमानन्ताः। ठाणा० ३५।

उक्का–उल्का–चुडुली। जीवा० २९। ये मूलाग्निनो विद्युत्व विद्युत्याग्निकणाः प्रवर्पन्ति ते। जीवा० १२४। महद्देखा, प्रकाशकारिणी, रेखारहितो विस्फुलिङ्गः प्रभाकरो वा। आव० ७५२। दीपिका। नंदी ८४। चुडुली। आव० ५६६। निपतन् रेखायुक्तो ज्योतिष्पिण्डः। ओघ० २०५। सदेहवर्णा रेखां कुर्वन्ती या पतति सा रेखाविरहिता वा उद्योतं कुर्वन्ती पतति सा। आव० ७३५। गगनाग्निज्वाला। जं० प्र० ५२। चुडुली। प्रज्ञा० २९। पगासविरहितो य, महंतरेहा पहा। नि० चू० तृ० ७५ आ। सदेहवण्णं रेहं करेंती जा पडइ सा उक्का, रेहविरहिता वा उज्जोतं करेंती पडती सा वि उक्का। नि० चू० तृ० ७० अ। अग्निपिण्डाः। ठाणा० ४२०। आकाशजा। ठाणा० ४७६।

उक्कापडणं–उल्कापातनम्, उल्कापातः। आव० ७३५।

उक्कापाए–उल्कापातः–व्योम्नि संमूर्च्छितज्वलननिपतनरूपः। जीवा० २८३।

उक्कापाय–उल्कापातः, सरेखः सोद्‌द्योतो वा तारकस्येव पातः। भग० १९६।

उक्कामयंति–उत्कामयन्ति–अपनयति। दश० ८६।

उक्कामुहदीवे–अन्तरद्वीपनाम। ठाणा० २२६।

उक्कामुहा–उल्कामुखनामैकविंशतितमोऽन्तरद्वीपः। प्रज्ञा० ५०। अन्तरद्वीपविशेषः। जीवा० १४४।

उक्कारियभेय–उत्कारिकाभेदः, एरण्डबीजानामिव यो भेदः। भग० २२४।

उक्कालिए–उत्कालिकं–कालवेलावर्जं पठ्यते तदूर्ध्वं कालिकादित्युत्कालिकं–दशकालिकादि। ठाणा० ५२। कालवेलावर्जं पठ्यते तत्। नंदी २०४।

उक्कावाते–उल्का–आकाशजा तस्याः पातः उल्कापातः। ठाणा० ४७६। व्योमसम्मूर्च्छितज्वलनपतनरूपः प्रसिद्ध एव। अनु० १२१।

उक्कासे–उत्कर्षणं, उत्काशनं वा। भग० ५७२।

उक्किट्टणा–सूत्रार्थकथनम्। बृ० तृ० २५ अ। उत्कीर्तना–संशब्दना। आव० ५६।

उक्किट्ठ–उत्कृष्ट–उत्कृष्टिनादः, आनन्दमहाध्वनिः। प्रश्न० ४९। प्रधानां कर्षणनिषेधाद्वा। भग० ५४४। उत्कृष्टिः–आनन्दध्वनिः। जं० प्र० २००। उत्कृष्टिः–आनन्दमहाध्वनिः। भग० ११५। उत्कृष्टः–उत्कर्षवती। भग० १६७। उत्कृष्टम्–कालिङ्गालाबुत्रपुषफलादीनां शस्त्रकृतानि खण्डानि चिर्भिणिकादिपत्रसमुदायो वा उदूखलकण्डितः। दश० १७०। दोद्वियकालिंगादीणि उक्खले छुब्भंति। दश० चू० १७९।

उक्किट्ठकलयलो–उत्कृष्टकलकलः। आव० १७३।

उक्किट्ठरस–उत्कृष्टरसः–प्रचुररसोपेत। पिण्ड० १४९।

उक्किट्ठि–उत्कृष्टिः–आनन्दमहाध्वनिः। औप० ५९। राज० १२२।

उक्किट्ठिसीहनादो–उत्कृष्टिसिंहनादः। आव० ३४९।

उक्किट्ठी–उत्कृष्टिः। आव० ४३३। उत्कर्षवत्। सूर्य० २८९।

उक्किण्णं–उत्कीर्णं–भुषमुत्कीर्य पालीरूपम्। सम० १३७।

उक्किण्णंतरा–उत्कीर्णान्तराः, उत्कीर्णमन्तरं यासां सातपरिसाना ताः। जीवा० १५९।

उक्किण्णा–उत्कीर्णं –गुण्ठितः। प्रश्न० ५९। उत्कीर्णमिवोत्कीर्णं, अतीवव्यक्तम्। जं० प्र० ७६। आकीर्णं। प्रश्न० २५। प्रज्ञा० ५६१। औप० ५४।

उक्कित्तणं–उत्कीर्तनम्, नामान्येन संशब्दनम्। आव० ६७४। संशब्दनम्। विशे० ४४२।

उक्कित्तणा–उत्कीर्तना, आख्येत–परया भाषया संशब्दना। आव० ४९२।

उक्कित्तिया–उत्कीर्तिता–कथिता। सूर्य० २९६।

उक्किरंत–अभीक्ष्णम्। दश० ८५।

उक्खिकंतर-उत्कीर्णमन्तरं यासां तासां तासामुत्कीर्णान्तरा। प्रज्ञा० ८५।

उक्खिकत्र-उत्कीर्ण-शिलादिषु नामकादि। दश० ८६।

उक्खिकरणगाइं-फलमायकपर्दकादिविकिरणानि। बृ० द्वि० १५५ अ।

उक्खिकरिज्जमाण-क्षुरिकादिभिः कोष्ठादिपुटानां कोष्ठादिद्रव्याणां वा उत्कीर्यमाण.। जीवा० १९२। उत्कीर्यमाण-क्षुरिकादिभिः कोष्ठादिपुटानां कोष्ठादिद्रव्याणां वा उत्कीर्यमान। जं० प्र० ३६।

उक्खिकलंतो-उत्कलन्। आव० २०७।

उक्कीरमाण-उत्किरन्-वेधनकेन मध्यादिकिरन्। अनु० २२३।

उक्कुंचणं-उत्कुचनं, ऊर्ध्वं शलाकारोपणार्थं कुञ्चनम्। सूत्र० ३१९।

उक्कुज्जिय-ऊर्ध्वंकायमुन्नम्य। आचा० ३४४।

उक्कुट्टं। आचा० ३४२।

उक्कुट्ठहत्थो – उक्कुट्ठ-सचित्तवणस्सतिपत्तंकुरफलाणि वा उक्खले छुब्भति, तेहिं हत्थो लित्तो एव। नि० चू० प्र० ३८ अ।

उक्कुट्ठि-उत्कृष्टि -हर्षविशेषप्रेरित। आव० २३१।

उक्कुट्ठिकलयलो-उत्कृष्टिकलकल। आव० १७५।

उक्कुट्ठिसीहणायं-उत्कृष्टिसिंहनादः, हर्षविशेषप्रेरितो ध्वनिविशेष। आव० २३१।

उक्कुट्ठी-पुत्कारकरणे। नि० चू० तृ० ६१ आ।

उक्कुट्ठो-सचित्तवणस्सतिपत्तंकुरफलाणि वा उक्खले छुब्भति। नि० चू० प्र० ३८ अ।

उक्कुड-उत्कुटुकासन। आव० ६४८। ठाणा० २९९।

उक्कुडुअ-उत्कुटुकम्, यथास्थानमनिविष्टम्। भग० ३०८। ओघ० १०७। मुक्तासन। उत्त० ५५। आधारे पुतालगनरूपम्। भग० १२५। आचा० ४२६।

उक्कुडुगासण-उत्कुटुकासनम्, कायक्लेशभेदः। दश० २८।

उक्कुडुती – उत्कुटुका-आसनालग्नपुतः पादाभ्यामवस्थित उत्कुटुकस्तस्य या सा। ठाणा० ३०२।

उक्कुडुयभाणवत्थे-उत्कुटुक सन् भाजनवस्त्रादि-गोच्छकादीन प्रत्युपेक्षयेत्, यतो वस्त्रप्रत्युपेक्षणं उत्कुटुकेनैव कर्तव्या। ओघ० ११७।

उक्कुडुयासणिए – कायक्लेशभेदः। भग० ९२१। कायक्लेशद्वितीयभेद.। ठाणा० ३९७।

उक्कुद्दइ-उत्कूर्दति-ऊर्ध्वं गच्छति। उत्त० ५५१।

उक्कुरुडिका-तृणभस्मगोमयाङ्गारादिमीलक। उत्त० ३५०।

उक्कुरुडिया-उत्कुरुटा। आव० १९४।

उक्कूइय-उत्कूजित-कुत्ताव्यक्तमहाध्वनि। प्रश्न० २०।

उक्कूजियं – उत्कूजितं – अव्यक्तमहाध्वनिकरणम्। प्रश्न० १६०।

उक्कूलं-उत्कूलयति-सन्मार्गादुत्तारयति कूलादुत्-त्याग-सरित्प्रवाहतटादूर्ध्वं यत्, उत्कूलम्। द्वितीयाधर्मद्वारस्य पञ्चदशं नाम। प्रश्न० २६।

उक्केरो-उत्करः-समूहः। ओघ० ११७, ११६, २११। शिलादिविधनस्य उत्कोच-उद्वर्तना। विशे० १००६।

उक्कोचा-उत्कोचा-उत्कोचा, लञ्चा। औप० २।

उक्कोड लञ्चा। नि० चू० द्वि० ४५ अ।

उक्कोडा-उत्कोचा-उत्कोचा-लञ्चा। विपा० ३९। उत्कोचा, लञ्चा। औप० २।

उक्कोडालंच-उत्कोचलंचयो –द्रव्यस्य बहुलोपगादिभिर्भेदैः प्रतीतभेदयो। प्रश्न० ५६।

उक्कोडिय – उत्कोचा-लञ्चा तया चरन्ति उत्कोचिका। राज० २।

उक्कोस-उत्कृष्ट -अतिशयेन। ओघ० २२७। उत्कर्षाति उत्कर्ष, उत्कृष्ट। सूर्य० १३। ज्ञानादिभिर्महात्मानं पुरुषं कृति पुरुषमुत्कर्षयतीति उत्कर्ष –मानः। सूत्र० ६०। उत्कोश –कुरर। प्रश्न० ८। उत्कृष्टम्-कमनीयम्। दश० २११।

उक्कोसए-उत्कर्ष एव उत्कर्षक उत्कृष्ट। सूर्य० ११। उत्कर्षिका उत्कृष्टा। सूर्य० १४।

उक्कोसए कुंभे-उत्कृष्ट कुम्भ –अशीत्याढकादिप्रमाण। अनु० १५१।

उक्कोसफसिणं-सतपदस्सनर्घं। नि० चू० प्र० ११९ आ।

उक्कोसगमयपत्तो-उत्कर्षेण मदं प्राप्तः दर्पवशात्प्राप्त। जीवा० ३५१।

उक्कोसतिसामासा-जेट्ठे आसाढे य। नि० चू० प्र० १२३ अ।

उक्कोसतिसामासे-उत्कृष्टतृण्मासः-उत्कृष्टा तृड्मासयोः-ज्येष्ठाषाढयोर्यस्मिन् काले सः। ओघ० २१०।

उक्कोससंथरणं-उत्कृष्टं संस्तरणं-भिक्षार्थमवतीर्णास्ततः पर्याप्त हिंडिला यावत् तृतीयपौरुष्या आदौ स्वाध्याय-प्रस्थापनवेला तावत् सन्निवर्तते एतद्, अथवा तृतीयपौरुष्या आदौ स्वाध्यायप्रस्थापनवेलावान सन्निवर्त्तते एतद्। व्य० द्वि० १६३ आ।

उक्कोसा-उत्कर्ष-प्रकर्ष· तद्योगादुत्कर्षा उत्कर्षतीति वा उत्कर्षा-उत्कृष्टा। ठाणा० १३९।

उक्कोसेणं। अनु० १६१।

उक्खं-उक्ष-सम्बन्धो-विषयविषयीभावलक्षणः। नदी ७१। सम्बन्धन-अन्यजनकभावलक्षणम्। ठाणा० ५०।

उक्खंदं-उत्कन्दम्। आव० १७५। अवस्कन्दः। आव० ३००।

उक्खंधो-अवस्कन्दः, छलेन परबलमर्दनम्। प्रश्न० ३८।

उक्खंपिर-उत्कण्ठित। (सं०)।

उक्खड्डमड्डा-देशीपदं, पुनःपुनःशब्दार्थे। व्य० प्र० ६५ आ।

उक्खणिहिति-उत्खनीः। आव० २२६।

उक्खलं-स्थानविशेषः। नि० चू० द्वि० ८३ आ।

उक्खलि-उखा-स्थाली। पिण्ड० ८४।

उक्खिअो-सेवितः। मर०।

उक्खित्त-उत्क्षिप्तं, गेयविशेषः। जं० प्र० ४१२। उत्पाटितम्। विपा० ४७। भाजनगतम्। ओघ० ८८।

उक्खित्तचरय-उत्क्षिप्त-स्वप्रयोजनाय पाकभाजनादुद्धृतं तदर्थमभिग्रहविशेषाच्चरति-तद्गवेषणाय गच्छतीति उत्क्षिप्तचरकः। ठाणा० २९८।

उक्खित्तचरगा-पिण्डैषणाभेदविशेषः। नि० चू० तृ० १२ अ।

उक्खित्तचरगो-उत्क्षिप्तचरक.-उत्क्षिप्तं-पाकपिठरादुद्धृतमेव चरति-गवेषयति यः सः। प्रश्न० १०६।

उक्खित्तणा-ज्ञातायां प्रथममध्ययनम्। आव० ६५३। पशाङ्के प्रथमं ज्ञातम्। उत्त० ६१४।

उक्खित्तणाए-पशाङ्के प्रथमज्ञातः। सम० ३६। ज्ञातायां प्रथममध्ययनम्। आव० ६५३।

उक्खित्तणिक्खित्तचरगा-पिण्डैषणाभेदविशेषः। नि० चू० तृ० १२ अ।

उक्खित्तपुव्वा-उत्क्षिप्तपूर्वा-तेषामादौ दर्शिता यथाऽस्यां वसत यूयमिति। आचा० ३६९।

उक्खित्तय-उत्क्षिप्तं-प्रथमतः समारभ्यमाणम्। जीवा० २४७।

उक्खित्तविवेगो-उत्क्षिप्तविवेक·। आव० ८५४।

उक्खित्ता-उत्क्षिता.-भिक्षाः। जं० प्र० २२१।

उक्खित्तायं-उक्षिप्तकं-प्रथमतः समारभ्यमाणम्। जीवा० १९४।

उक्खित्तो-उत्क्षिप्तः-कृतः स्थापित·। आव० ४३३।

उक्खिविया-उत्क्षिप्ता। आव० ३७०।

उक्खु-वनस्पतिविशेषः। भग० ८०२।

उक्खुलनियत्था-उखुलनिवसिना, विपर्यस्तवस्त्रा। बृ० द्वि० २५५ अ।

उक्खेव-उत्क्षेपः-हस्तोत्पाटनम्। व्य० प्र० २३२ आ।

उक्खेवओ-उत्क्षेपः-प्रारम्भवाक्यम्। निरय० २३।

उक्खेवग-उत्क्षेपक.-वंशदलादिमयो मुष्टिग्राह्यदण्डमध्यभाग। भग० ४६८। शिष्याणामुत्क्षेपकः। व्य० प्र० २३२ आ।

उक्खेवण-उत्क्षेपकः-वंशदलादिमयो मुष्टिग्राह्यो दण्डमध्यभागः। ज्ञाता० ४८।

उक्खेवो-उत्क्षेप.-प्रस्तावना। विपा० ५५। क्षेपणम्। ओघ० ११०।

उक्खो-परिधानवस्त्रैकदेशः। बृ० प्र० १०७ अ। परिधाणं, वत्यस्स अब्भिंतरचूलाए उवरि कण्णो णाभिहिज उक्खो भण्णति। नि० चू० द्वि० १५४ अ।

उखंडचोरभयणं। नि० चू० प्र० २६० अ।

उखल-उद्गाला। प्रश्न० ८।

उखलियं-पुडियाकारं। नि० चू० द्वि० १ आ।

उखली-उद्गली। आव० ८५५।

उखा-स्थाली। भग० ३२६।

उखुत्तो-णिमग्गो। नि० चू० प्र० ७७ अ।

उगद्दणंतगो-योनिद्वारस्थगनार्थे वस्त्रम्। ओघ० २०९।

उग्गं-उग्रम्-अप्रधृष्यम्। सूर्य० ४। भग० १२। ज्ञाता० ९।

उग्ग-उग्रः-क्षत्रियपुरुषेण यत्क्रिया आग·। आचा० ८। आदिदेवावस्थापिताऽऽरक्षवंशजाताः। भग० ११५। आरक्षा·। आव० १२८। आदिदेवेन च आरक्षकत्वेन नियुक्तस्तद्वंशजाश्च। औप० २६। शुभाध्यवसायवत्त।

आव० ८०२। आरक्षिकाः। आचा० ३२७। आदिराजेनाऽऽरक्षकत्वेन ये व्यवस्थापितास्तद्वंश्य। ठाणा० ३५८। भगवतो नाभेयस्य राज्यकाले ये आरक्षका आसन्। ठाणा० ११४। आरक्षकादय। उत्त० ४१८। आदिदेवेनारक्षकत्वे नियुक्तास्तद्वंश्या। भग० ४८१।

उग्गकुलं-उग्रकुलम्। आव० १७९।

उग्गच्छ-उद्गत्य-क्रमेण तत्रोद्गमनं कृत्वा। भग० ७०७।

उग्गतवा-उग्रतपा -अप्रधृष्यानशनादिवान्। सूर्य० ४। अष्टमादि। ठाणा० २३३। उग्र-उत्कटं दारुणं वा कर्मेशं प्रति तप -अनशनादि। उत्त० ३६५।

उग्गतवित्ती – उग्गते आदिच्चे वित्ती जस्स सो, आदिच्च मुत्तीए जस्स वित्ती सो उग्गतवित्ती। नि० चू० प्र० ३०८ आ।

उग्गतेय-उग्रतेजा -तीव्रप्रभाव, तीव्रविष। प्रश्न० १०७।

उग्गपुत्तो-उग्रपुत्र, क्षत्रियविशेषजातीय। सूत्र० २३६।

उग्गम-उद्गम षोडशविध आधाकर्मादिदोष। प्रश्न० १५५। आधाकर्मादिदोषविशेष। आव० ५७६। उद्गमनमुद्गम - पिण्डादे प्रभव.। ठाणा० १५९।

उग्गमइ-आगच्छति। आव० ४२२।

उग्गमकोडी – उद्गमकोटि – उद्गमगवेषणा। पिण्ड० १९७।

उग्गमितं-उद्गमितम्। आव० ८०९।

उग्गमोवघाते – उद्गमोपघात -उद्गमगवेषणाधाकर्मादिभि षोडशप्रकारैर्भक्तपानोपकरणालयानामशुद्धता। ठाणा० ३२०।

उग्गय- उद्गत -निष्काशित। औप० ८८। ऊर्ध्वं गता उद्गता -व्यवस्थिता। ज्ञाता० १४। व्यूना। ज्ञाता० २३। उद्गता-संस्थिता। ज० प्र० ७१। निर्गत। भग० ४७८। उपरिवर्तिनी। ज० प्र० २९२।

उग्गयमुत्ती – सूर्योद्गमात् परं प्रतिश्रयावग्रहाद् बहि प्रचारवच्छरीरत्वात्। बृ० तृ० १७९ अ। मूर्ति -शरीरं त जस्स प्रतिश्रयावग्रहात् उदिते आदित्ये प्रतिनिमित्तं प्रचारं करोति सो। नि० चू० प्र० ३०८ आ।

उग्गयवित्ती – उग्गय इति वा उदओत्ति, वर्तनं वृत्ति, उग्गयए सूरिए जस्स वित्ती सो। नि० चू० प्र० ३०९ आ।

उग्गवई-उग्रवती, रात्रितिथिनाम। ज० प्र० ४९१।

उग्गवती-उग्रवती, रात्रितिथिनाम। सूर्य० १४८।

उग्गविसं-दुर्जरविषम्। भग० ६७२।

उग्गविसा – उग्रं विषं येषां ते उग्रविषा। प्रज्ञा० ४६। दर परिसर्पविशेष। जीवा० ३९।

उग्गसेण-उग्रसेन, द्वारिकाया राजा। आव० ९४। नृपविशेष। बृ० प्र० ३० अ। मथुरानगरपति, कंसपिता। उत्त० ४९०। राजमुख्य। अन्त० २।

उग्गहं-योनिद्वारं तद्रक्षमति। बृ० द्वि० २७१ आ।

उग्गह-अवग्रह। ओघ० १५२। धर्मोपग्रहभाजनम्। दश० १६७। अव-ईषत् सामान्य गृह्यतेऽनेनेति। विशे० १६०। आश्रय। विपा० ३३। ओणिदुवारस्स सामइगी संज्ञा उग्गह इति। नि० चू० प्र० १७९ आ। उपग्रहम्-अवष्टम्भम्। ओघ० १५४। पतद्ग्रहम्। ओघ० १७१। प्रथमपरिच्छेदन अशेषविशेषनिरपेक्षानिर्देश्यग्रहणम्। ठाणा० ५१। अवगृह्यते-स्वामिना स्वीक्रियते य सोऽवग्रह। भग० ७००। सामान्यार्थस्य-अशेषविशेषनिरपेक्षस्यानिर्देश्यस्य रूपादे अव इति प्रथमतो ग्रहणं-परिच्छेदनमवग्रह। भग० ३४४। अवग्रह -अभ्यन्तरपरिच्छेद। प्रज्ञा० ३११। अवधारणम्। मुन्दरा वा पादयधारणम्। उत्त० १४५। अवग्रह -परिग्रह। सूत्र० १७९। अविवक्षितविशेषस्य सामान्यरूपस्यानिर्देश्यस्य रूपादेरवग्रहणमवग्रह। राज० १३०। पडिग्गहो। नि० चू० द्वि० ११६ अ। अवग्रह -आभवनव्यवहार। व्य० द्वि० ९३ अ। अवग्रहणमवग्रह -अनिर्देश्यसामान्यमात्ररूपार्थग्रहणम्। नंदी १६८। आवाग्र। निरय० २। अवग्रहणमनन्तरमानस्य शब्दादिरूपस्यार्थस्याव्यक्तरूप परिच्छेद। नंदी १६८।

उग्गहजायणे – अवग्रहयाचा-वसतिस्वाम्यनुज्ञा। आव० ६५८।

उग्गहणंतय-योनिद्वारस्यार्थकं वस्त्रम्। बृ० द्वि० २५१ आ।

उग्गहणमेधावी-अवग्रहमेधावी, सूत्रार्थग्रहणपटुप्रज्ञावान्। बृ० प्र० १०५ आ।

उग्गहपडिमा – अवग्रहस्य इत्यवग्रहो-वसतिस्तत्प्रतिमा – अभिग्रहा अवग्रहप्रतिमा। ठाणा० ३८७। आचाराङ्गस्य षोडशमध्ययनम्। उत्त० ६१७। आचा० ४०२। सम० ४४। आचारप्रकल्पे द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य सप्तममध्ययनम्। प्रश्न० १४५। आचारप्रकल्पस्य षोडशो भेद। आव० ६५०।

उग्गहिआ-अवगृहीता-पञ्चमी पिण्डैषणा। आव० ०९०।

उग्गहिए-अवगृहीत-परिवेषणार्थमुत्पाटित। ठाणा० ४६५। **उग्गहियं** - अवगृहीतम्। आव० २८८। बद्ध। भग० ४५९। अवगृह्णाति-आदत्ते हस्तेन दायस्तद्। ठाणा० १४८। अवगृहीता-भोजनकाले शरावादिपूपहृतमेव भोजनजात अथवतो गृहत। ठाणा० ३८६। यद् अवगृह्णाति यच्च सहरति यच्च आस्यके प्रक्षिपति। व्य० द्वि० ३५४ अ। परिवेषणार्थमुत्पाटितम्। औप० ३७। अवग्रहोऽस्यास्तीति अवग्रहिकं-वसतिपीठफलकादिक। औपग्रहिक-दण्डकादिकमुपधिजातम्। औप० ३७।

उग्गहियए-अवगृहीतक-बद्ध। राज० ८४।

उग्गहिया-ज परिवेसगेण परिवेसणाए परस्स कडुच्छुतादिणा उग्गहिय आणियति वुत्त भवति, तेण य त पडिसिद्ध त तदुक्खित्त चेव साधुस्स देति एसा उवग्गहिया। नि० चू० तृ० १२ अ।

उग्गा-आरक्षिका। बृ० द्वि० १५१ आ। कुलार्यप्रथमभेद। प्रज्ञा० ५६। खाद्यविशेष। ज० प्र० ११८। आदिदेवा वस्थापिता। राज० १२१। प्रभुणा आरक्षकत्वेन नियुक्तास्ते उग्रा। ज० प्र० १४१।

उग्गाढो-प्रगुण। बृ० प्र० २९७ अ।

उग्गारो-उद्गिरण उग्गालो। नि० चू० प्र० ३१५ अ।

उग्गालिदासो-दासविशेष। नि० चू० द्वि० ४० अ।

उग्गाले-उद्गालयेत्-श्लेष्मनिष्ठीवन कुर्यात। ओघ० १८६।

उग्गालो-उद्गिरण उग्गालो। नि० चू० प्र० ३१५ अ।

उग्गाहिऊणं-उद्ग्राह्य। आव० ३९९।

उग्गाहियण-उद्ग्राहितेन-पात्रबन्धबद्धेन पात्रकेण। ओघ० १३२।

उग्गाहितं-उद्ग्राहितम्-गृहीतम्। आव० ६१८। उत्क्षिप्त, उपकरणम्। ओघ० ७२।

उग्गाहिमं-अवगाहिम पक्वान्नं खण्डखाद्यादि। प्रश्न० १६३।

उग्गाहिय-उद्ग्राहित-गृहीत पात्रकम्। ओघ० १४९।

उग्गाहे-उद्ग्राहयति-मद्ग्राहितेनास्ते। ओघ० १८४।

उग्गाहेउ-उद्ग्राह्य-सयन्त्रयित्वा। ओघ० ७४।

उग्गाहेऊण-उद्ग्राह्य। उत्त० १००।

उग्गिरिऊण-उद्गीर्य। आव० ७०८।

उग्गुंइया-उद्गुंजितम्। भग० ३०८।

उग्गोवणा-उद्गोपनम्-विवक्षितस्य पदार्थस्य जनप्रकाशचिकीर्षा। पिण्ड० ९६।

उग्गोवेति-उप्पाएति। नि० चू० प्र० २३४ अ।

उग्घडयं-अनुवर्तनम्, अनुसरणम्। आव० ५११।

उग्घाइए-उद्घाइए-उद्घातित, विनाशितं विनाशयिष्यमाणत्वेनोपचारात्। ठाणा० ५०२।

उग्घाइम-उद्घातिमम्-उद्घातो-भागपातस्तेन निर्वृत्तम्, लघु। ठाणा० १६३।

उग्घाड-उद्घा-अदत्तार्गलमीषत्स्थगित वा। आव० ५७१।

उग्घाडकवाडउग्घाडणा-उद्घाटकपाटोद्घाटना, उद्घाटम्-अदत्तार्गलमीषत्स्थगित वा कपाट तस्योद्घाटन-पुनरप्रेरणम् तदेव। श्वानवत्सदारकसघट्टना। आव० ५७१।

उग्घाडणकवाड-उद्घाटकपाट-अनर्गलितकपाट। आव० १६६।

उग्घाडाए पोरिसिए-उद्घाटपौरुष्याम्। आव० ८२८।

उग्घाडित्तो-उद्घाटित। आव० ३१७, ३१८।

उग्घाडिया-उद्घाटिता। आव० २९२।

उग्घात - उद्घात भागपात। ठाणा० १६३, ३२५। लघुकरणलक्षण। ठाणा० ३११।

उग्घातिते-उद्घात -भागपातो यत्रास्ति तदुद्घातिम, लघु। ठाणा० ३२५।

उग्घाय - आचाराङ्गस्य षड्विंशतितममध्ययनम्। उत्त० ६१७। आचारप्रकल्पस्य षड्विंशतितमो भेद। आव० ६६०।

उग्घायइ-लघूनि। बृ० प्र० १४५ अ।

उग्घोसणाढ्ढाणीया-उद्घोषणाय्यानीया। आव० ३८५।

उग्गतेजा-आधाकर्मेण एव अभोज्यतया पतति। पिण्ड० ७१।

उग्गसेन -भागराजा, राजीमत्या पिता। दश० ९५।

उग्गसेनतनय-नभ सेनकुमार। विशे० ६१०।

उघरिमा। नि० चू० प्र० १०१ आ।

उघोसेहि। नि० चू० प्र० ३४४ आ।

उचित -जित अभ्यस्ता वा। आव० ५९४।

उचूल्यालग-अध शिरस उपरि पादस्य पुरस्तात् पारुणम्। विपा० ७०।

उच्च-उच्च -पूज्य। भग० ९६४।

उच्चंतय-उच्चन्तक-दन्तरागः । प्रज्ञा० ३६० । उच्चंतगो-दन्तराग । ज० प्र० ३३ ।

उच्चंते-उच्चंतगो-दन्तराग. । राज० ३२ ।

उच्चंपिय-समाचितं । (तं०) ।

उच्चछंदो-उच्चच्छन्द-उच्चो-महानात्मोत्कर्षणप्रवणश्छन्द-अभिप्रायो यस्य सः । प्रश्न० ३१ ।

उच्चता-उच्चतया-निर्देजत्वेन । अप्रातिहारिकतया । बृ० द्वि० २११ आ ।

उच्चतायभयगो-तुमे ममं एच्चिरं कालं कम्मं कायव्वं जं जं अहं भणामि, एत्तियं तेग धणं दाहामित्ति । नि० चू० द्वि० ४४ ।

उच्चत्तं-उच्चत्वं । जं० प्र० २० । अनु० १७१ । उच्चत्वं-उत्सेध । ज० प्र० ३२१ । उच्छ्रयः । ठाणा० ६९ । ऊर्ध्वं-स्थितस्यैकमपरं तिर्यक्स्थितस्यान्यत् गुणोत्सनिरूपम् । ठाणा० ३६ ।

उच्चत्तछाया-उच्चत्वछाया, छायाया षष्ठो भेद । सूर्य० ९५ ।

उच्चत्तभयते - उच्चताभृतक-मूल्यकालनियमं कृत्वा यो नियत यथावसरं कर्म कार्यते स । ठाणा० २०३ ।

उच्चत्तविसाणो - उच्चविषाण उच्चशृङ्गः । उत्त० ३०३ । उत्तमविषाण । आव० ७१९ ।

उच्चत्ता-मुधिकता । पिण्ड० १०० ।

उच्चयबंधे-उच्चयः-ऊर्ध्वं चयनं-राशीकरण तद्रूपो बन्ध उच्चयबन्ध । भग० ३९५ ।

उच्चरेति । नि० चू० प्र० २०७ आ ।

उच्चलिओ-उच्चलित. । आव० ३८५ । आव० ३१७ ।

उच्चा-ऊर्ध्वं चिता, उपरिस्थितत्वेन वा । उत्त० ११० ।

उच्चाओ-उच्चातो-श्रान्त । ओघ० १७७ । नि० चू० प्र० १८८ अ ।

उच्चागोए-उच्चैर्गोत्रं-यदुदयवशादुत्तमजातिकुलबलतपोरूपै-श्वर्यश्रुतसत्काराभ्युत्थानासनप्रदानाञ्जलिप्रग्रहादिसम्भवस्तत् । प्रज्ञा० ४७४ । मानमःकारार्हं । आचा० ११६ ।

उच्चागोत्ते -उच्चैर्गोत्र -उच्चं-लक्ष्म्यादिश्रयेऽपि पूज्यतया गोत्रं-कुलमस्येति । उत्त० १८८ ।

उच्चारे - उच्चार-विष्ठा । भग० ८७ । मला । बृ० प्र० ३०६ अ । मल्ला । नि० चू० प्र० १८३ आ । पुरीष । आव० ५६४, ६१६, ७८१ । उत्त० ५१७ । सम० ११ । ज० प्र० १४८ । ठाणा० ३४३ । शरीराद्-प्राबल्येन च्यवते-अपयाति चरतीति वा उच्चारः-विष्ठा । आचा० ४०० । पुरीषपरिष्ठापनम् । दश० ३५७ । गृहस्थ. यत्र पुरीषामु त्सर्गं कुर्वन्ति, श्लेष्मणः परिष्ठापनस्थले कुर्वन्ति वा । ओघ० ५६ ।

उच्चारभूमी – उच्चारभूमि -पुरीषभूमि. । आव० ७८८ । उच्चारप्रश्रवणविधिमप्यैकत्र., सप्तसप्ततिकायां तृतीयस्य भेद । ठाणा० ३८७ ।

उच्चालइय-ऊर्ध्वमुत्क्षिप्य भूमौ । आचा० ३११ । उच्चा-लयितारम्-अपनेतारम् । आचा० १६९ ।

उच्चालियंमि-उच्चालिते-उत्पाटिते । ओघ० २२० ।

उच्चायइत्ता-उच्चैः कृत्वा । उत्पाट्य । प्रज्ञा० ३५३ ।

उच्चायय-उच्चावच-उत्तमाधमः । ओघ० ३७४ ।

उच्चावतं-उच्चावचम्-असमञ्जसं । ठाणा० २४७ ।

उच्चावयं-उच्चावचं-उच्चं नाम मेरं कुर्वन्तु, अवचं नाम कुर्वन्तु । आचा० ३६३ । शोभनाशोभनम् । जीवा० १६६ । उच्चावचम् । दश० १६६ । अनुकूलप्रतिकूलम्, असमञ्जस वा । भग० १०१ ।

उच्चावया-अनुकूलप्रतिकूला, असमञ्जसा । अन्त० १८ । उच्चावचा -गुरुलघवो नानारूपा वा । सूत्र० २०३ । ऊर्ध्वं चिता उच्चा, शीतातपनिवारकत्वादिगुणैः प्रधानतया परिस्थितत्वेन वा उच्चा , तद्विपरीतास्त्ववचा , असमाञ्जस्ये उच्चावचा , नानाप्रकारा वा । उत्त० ११० । शोभनाशो-भनभेदेन नानाप्रकारा । दश० १८४ । असमञ्जसा । भग० ६८३ । ज्ञाता० २०० ।

उच्चावयाइं-उच्चावचानि-विरूपाणि विरूपतयां नानाविधानि उच्चनतानि वा शोभनाशोभनया महान्तानि । उत्त० ३६३ ।

उच्चिग-उच्चितं, उच्चिताकरणं, पादस्योत्पाटनम् । ज० प्र० २६५ ।

उच्चिक्खित्तं-उच्चोत्क्षिप्तम् । पिण्ड० ११० ।

उच्चिट्ठ-कामातिभिशर्णोच्छिष्टं । बृ० प्र० २१० अ ।

उच्चिट्ठप-उच्छिष्टम्-भ्रष्टम् । दश० १०४ ।

उच्चिणिउं-उच्चेतुं-ग्रहीतुम् । आव० ८१० ।

उच्चियपडमं-उच्चितपद्म । आव० १७० ।

उच्चुणगेउं-अवचूर्ण, शुद्धयित्वा । ओघ० १४३ ।

उच्चूलं-अवचूल-गजकंठस्थोमुखाकृति । ओघ० ६३ ।

उच्चेंती-उच्चिन्वती-अवचयं कुर्वती। दशा० ४१।
उच्चैःश्रवा-सुरवरेन्द्रवाहनं हयः। जं० प्र० २३५।
उच्चोदए-उच्चोदयः, ब्रह्मदत्तस्य प्रधानं प्रथमः प्रासादः। उत्त० ३८५।
उच्चोलपहिं-उच्चुलुकैः, छंग्रभिः चुलुकैः। आव० ६७८।
उच्छंग - उत्सङ्गः-पृष्ठदेशः। जं० प्र० २६५। पृष्ठदेशः। औप० ७१। भग० ४८०।
उच्छण्णं-उच्छिन्नम्, क्षीणम्। आव० ६७०, ६७१।
उच्छदयति-चोल करोति। ओघ० १५३।
उच्छन्नं-अपशब्दं-विरूपं छन्नं-स्वदोषाणां परगुणानां चाऽऽवरणमपच्छन्नं। उत्थलं, न्यूनत्वं वा, द्वितीयाधर्मद्वारस्य चतुर्दशं नाम। प्रश्न० २६।
उच्छन्ननाणी - उच्छन्नज्ञानी-यावत्शक्तिग्रन्थादिनज्ञानी। प्रज्ञा० ४६१।
उच्छयं-उच्छ्रयं-व्य.प्तम्। आव० १८४।
उच्छलंत-उच्छलन्तः-उद्वलन्तः। प्रश्न० ६२।
उच्छ(त्थ)ल-उत्-उन्नतानि स्थलानि-धूल्युच्छ्रयरूपाण्युच्छ(त्थ)लानि। भग० ३०७।
उच्छलिओ-उच्छलितः-निर्गतः। आव० ४०२।
उच्छवो-उत्सवः-शर्करसवादिः। प्रश्न० १२५। इन्द्रोत्सवादिः। प्रश्न० १४०।
उच्छहया-उत्सहन्-अर्थोद्यमवान्। दशा० २५३।
उच्छा-तुच्छा, रिक्ता। (गणि०)।
उच्छाइओ-उत्पादितः। आव० ३९८।
उच्छाएइ-आच्छादयति। आव० ६२४।
उच्छाडणं। नि० चू० प्र० १२१ अ।
उच्छायणयाए-उच्छादनतायै, सर्वतमायितनतृणपत्तै नुत्पादनाय। भग० ६८४।
उच्छाह-उत्साहः-वीर्यं। भग० ११८।
उच्छिंगवा-अर्थाशमवर-चौरविशेषः। प्रश्न० ४७।
उच्छिंपणं - उत्क्षेपणं-उत्तमभाण्डाभारमादीनामाकर्षणम्। प्रश्न० २२।
उच्छिण्णं। नि० चू० द्वि० १०४ अ।
उच्छिण्णगोमागारं-उच्छिन्नगोत्रागारम्, उच्छिन्नगोत्रागारं-समस्तवित्तोपनष्टं यस्य तत्। भग० २००।
उच्छिन्नसामिय-उच्छिन्नस्वामिकम्, नि सत्ताकीभूतस्वामिकम्। भग० २००।
उच्छिन्नसेउय-उच्छिन्नसेतुकम् लब्धमर्यादम्। भग० २००।
उच्छिण्णा-विनिष्टसत्ताका। ठाणा० २९४।
उच्छु-इक्षुः। दशा० २२६। आव० ८५४।
उच्छुकिओ-जुगुप्सितः। बृ० द्वि० २५५आ।
उच्छुखण्ड-इक्षुखण्डः। दश० ११६।
उच्छुगंडिय-इक्षुगण्डिय-सपर्वेक्षुशकलम्। आचा० ३५४।
उच्छुघर-इक्षुगृहम्। व्य० द्वि० ३१९ अ। आव० ३०१। नि० चू० द्वि० १०९ अ। विशे० १००२।
उच्छुजंतं-इक्षुयन्त्रम्। आव० ८२९।
उच्छुड्डो-उन्मत्तः। विशे० ५१५।
उच्छुद्धं-विक्षिप्तम्। ओघ० १५०। परित्यक्तं। बृ० द्वि० १३३ आ। रोमाञ्चितं। बृ० तृ० २३ आ।
उच्छुभ-आधिक्येन क्षिप, प्रवेशयेत्यर्थ। प्रश्न० २०।
उच्छुभइ-विक्षिपेत्यर्थ। भग० ६८५।
उच्छुभेरगं-अपनीतत्वगिक्षुगण्डिका। आचा० ३४८।
उच्छुहइ-अवष्टभ्नाति, विष्यतीत्यर्थः। ज्ञाता० ६८।
उच्छूढं-उज्झितं सत्कारपरित्यागात्। सूर्य० ५। उज्झितम्। भग० १२। राज० ५७। विपा० ३४। औप० ८४। जं० प्र० १६।
उच्छूढ-निःसृतः। सूर्य० ९२। अवक्षिप्त-अर्गलाभ्यानाक्षिप्तानितः। जीवा० २०६। रम्भानावक्षिप्तो-निष्कासितः। जं० प्र० १११। प्रश्न० ८१।
उच्छूढसरीरे-उच्छूढशरीरः-उज्झितमिवोज्झितं शरीरं सत्कारत्यागात् शरीरं येन स.। भग० १२।
उच्छूढाई-छर्दितानि। बृ० प्र० ५० आ।
उच्छूनं। औप० ११६।
उच्छूनायस्था-रिक्तप्रायस्था। जीवा० १०७।
उच्छूरं-अकालम्। ओघ० १४८।
उच्छूरिया-मत्तकुला। बृ० द्वि० ३५६ आ।
उच्छेया-उच्छेदा नाम यत्र पर्यनुगतस्य तत्रावस्थांवा डिंसंगोपनम्। व्य० द्वि० ७ अ।
उच्छोइह-उच्छोभति। आव० ३६१।
उच्छोभवंदणयं-उच्छोभं समागमनो वंदित्वं त्र वनिवान्

निसीहियाए तिविहेणं एयं उच्छोभवंदणयं । नि० चू० द्वि० ९३ अ ।

उच्छोभो-आलः, कलङ्क । आव० ४०१ ।

उच्छोलणं – एक्कसिं धोवण उच्छोलण । नि० चू० द्वि० ११८ आ । तेलादिणा फासुगअफासुएण देसे उच्छोलणं । नि० चू० द्वि० ८९ अ । उच्छोलनं-अयतनया शीतोदकादिना हस्तपादादिप्रक्षालनम् । सूत्र० १८१ ।

उच्छोलणा-उच्छोलना-पुरीषमुत्सृज्य प्रभुतेन पयसा क्षालनम् । ओघ० ५५ । ओघ० १०० । एक्कसि उच्छोलणा । नि० चू० प्र० १८८ अ ।

उच्छोलणापहोअ- उत्सोलनया – उदकायतनया प्रकर्षेण धावति-पादादिशुद्धिं करोति य स उत्सोलनाप्रधावी । दश० १६० ।

उच्छोलिंति-प्रक्षालयन्ति । गणि० ।

उच्छोलेइ-अमतो मुखा चपेटां ददाति । भग० १७५ ।

उच्छोलेज्ज-ईषद् उच्छोलनं विदध्यात् । आचा० ३६३ । सकृदुदकेन प्रक्षालनं कुर्यात् । आचा० ३४२ ।

उच्छोलेति-सकृदुदकेन प्रक्षालनम् । नि० चू० प्र० ११६ आ ।

उजु-ऋजु –मायारहित संयमवान वा । दश० २६२ ।

उजुगं-दृष्टिवादे सूत्रभेद । सम० १२८ ।

उजुमइ-ऋजुमति, ऋज्वी-प्रायो घटादिमात्रग्राहिणी मति । विशे० ३८० ।

उजुवालिआ-ऋजुवालिका, वीरस्य केवलोत्पत्तिस्थानम् । आव० १३९ ।

उज्ज-आर्जवादुद्द्योतगतीति उद्द्योत । उत्त० ३८ ।

उज्जमंतो-मूलुत्तरगुणेसु विसुद्धो विचित्तो । नि० चू० द्वि० ७५ अ ।

उज्जम-उद्यम –यथाशक्ति अनुष्ठानम् । आचा० १५० । अनालस्यम् । औप० ४८ ।

उज्जममाणो-उद्यच्छन्-उद्यम कुर्वन् । आव० २३४ ।

उज्जयनी-नगरीविशेष । नंदी १४५ ।

उज्जयन्त-पर्वतविशेष । जं० प्र० १६८ । क्रीडापर्वतविशेष । भग० ३०६ । रैवतकम् । उत्त० ४९२ । अट्टनमल्लवास्तव्यनगरम् । व्य० द्वि० ३५७ अ ।

उज्जयिनी-चण्डप्रद्योतराजधानी । प्रश्न० ९० । नगरीविशेष । आचा० २४८ । सू० चू० २१८ आ । विशे० ४१६ । पुष्पलक्ष्म पितृदत्ता नगरी । विशे० ४०९ ।

उज्जयिनीराजपुत्र-उज्जयिन्या राजपुत्र । आचा० २४८ ।

उज्जरा-प्रवाहा । आव० ६२० ।

उज्जल-उज्ज्वल –विपक्षलेशेनाप्यकलङ्कित । भग० ४८८, २३१ । निर्मल । जीवा० २२७ । ज्ञाता० २२१ । बहिःश्वेतवर्ण । जं० प्र० ५२८ । उज्ज्वलम्-मलरहितम् । प्रश्न० १५६ । शुद्धम् । जीवा० १८८ ।

उज्जला-उज्ज्वला । आव० १९२ । विपक्षलेशेनाप्यकलङ्किता । प्रश्न० १७ । उत्-प्राबल्येन मलिनशरीर अलब्धसुखास्वादाश्च । सू० द्वि० ४० अ ।

उज्जा-ऊर्जा-बलम् । व्य० प्र० १४४ आ ।

उज्जाण-जत्थ लोगो उज्जाणियाए वचति । जे या ईसि णगरस्स उवकंठ ठिय तं । नि० चू० प्र० २६९ अ । पुष्पादिमद्वृक्षसङ्कुलानि उत्सवादौ बहुजनभोग्यम् । प्रश्न० १२७ । ऊर्ध्वं यानमस्मिन्निति उद्यानम्-उद्यम् । आव० ७९७ । पुष्पादिमद्वृक्षसङ्कुलमुत्सवादौ बहुजनोपभोग्यम् । जीवा० २५८ । आव० १९७ । ऊर्ध्वं यानमुद्यानं-मार्गस्योन्नतो भाग, उद्दण्डलार्थे । सूत्र० ८८ । पुष्पादिमद्वृक्षसङ्कुलबहुजनभोग्यवनविशेष । प्रश्न० ७३ । पुष्पादिमद्वृक्षसङ्कुलमुत्सवादौ बहुजनभोग्यम् । प्रश्न० १२७ । औप० ३ । क्रीडार्थागतजनानां प्रयोजनाभावेनोर्ध्वविलम्बितयानवाहनाश्रयभूतं तरुषण्डम् । जं० प्र० ३८८ । पुष्पफलोपेतादिमद्वृक्षसमुदायरूपम् । औप० ४१ । जनक्रीडास्थानम् । दश० २१८ । पुष्पादिमद्वृक्षसङ्कुल, उत्सवादौ बहुजनभोग्यम् । भग० २३८ । पुष्पादिमद्वृक्षसङ्कुलमुत्सवादौ बहुजनोपभोग्यम् । राज० ११२ । ऊर्ध्वं विलम्बितानि प्रयोजनाभावात् यानानि यत्र तदुद्यान-नगरप्रत्यासन्नवर्ती यानवाहनक्रीडागृहाश्रयतरुखण्ड । राज० २३ । चम्पकवनादुपशोभितमिति । ठाण० ३१० । औद्यानिकया निर्गतो जनो यत्र भुंक्ते । व्य० द्वि० ३६२ अ । पत्राभरणादिसमलङ्कृतविग्रहा सन्निहिताशनाद्याहारमदनोत्सवादिषु क्रीडार्थं लोका उद्यान्ति यत्र तच्चम्पकादितरुखण्डमण्डितम् । अनु० २४ । पत्रपुष्पफलच्छायोपगतादिशोभित, विविधवेषोन्नतमानश्च बहुजनो यत्र भोजनार्थं यातीति । सम० ११७ । पुष्पफलादिमद्वृक्षानेकत्रसङ्कुलानि उत्सवादौ बहु-

जनपरिभोग्यानि। अनु० १५९। पुष्पादिमद्वृक्षयुक्तम्। भग० ४८३। आरामः-क्रीडावनं वा। उत्त० ४५१।

उज्जाणगिहाणि-उद्यानगृहाणि। ठाणा० ८६।

उज्जाणानि-उद्यानानि-पत्रपुष्पफलच्छायोपगादिवृक्षोपशोभितानि बहुजनस्य विविधवेषस्योन्नतमानस्य भोजनार्थं यानं-गमनं येषु। ठाणा० ८६।

उज्जाणियलेणाइ-उद्यानगतजनानामुपकारिकगृहाणि नगरप्रदेशगृहाणि वा। भग० ६१७।

उज्जाणिया-उद्यानिका। आव० ६७९।

उज्जाणियागओ-उद्यानिकागतः। आव० ४०२।

उज्जाणियागमणं-उद्यानिकागमनं। आव० ४५३।

उज्जाणेत्ति-प्रतिलोमगामिनीत्यर्थः। नि० चू० प्र० ४४ आ।

उज्जालंतं-उज्ज्वालनम्-व्यजनादिभिर्वृद्धिपापादनम्। दश० १५४।

उज्जालओ-प्रज्वालकः। नि० चू० प्र० ५० अ।

उज्जालेह-उज्ज्वालयत, दीपयत। जं० प्र० १६२।

उज्जिलगिरि-उज्जयन्तगिरिः, पर्वतविशेषः। आचा० ४३८। नंदी ६०।

उज्जिओ-बलवान्। वृ० द्वि० १९५ अ।

उज्जितं-ऊर्जितम्। आव० ३०४।

उज्जीवावियां-उज्जीविता। आव० ५५९।

उज्जीवितेयाशीर्वाद। नंदी १६०।

उज्जु-समं सजगो वा। दश० चू० ५२। ऋजोः-ज्ञानदर्शनचारित्राख्यस्य मोक्षमार्गस्यानुष्ठानादकुटिलः, यथावस्थितपदार्थस्वरूपपरिच्छेदाद्वा, सर्वोपाधिशुद्धोऽवक्रः। आचा० १५४। ऋजुः-अकुटिलः। आचा० ४१। अवक्रः, अविपरीतस्वभावः। ठाणा० १८३। अवक्रः। उत्त० ५९०। प्रह्वाभिमुखः। ओघ० १५६। वर्तमानमतीतानागतवक्रपरित्यागाद् वस्त्वभिन्नं, यद्वाविपर्ययादभिमुखं वा। आव० २८४। अतीतानागतपरकीयपरिहरणमात्रं वस्तु। अनु० १८।

उज्जुअ-ऋजुकम्-मायारहितः। पिण्ड० १४७। अभिमुखः। दश० १८४।

उज्जुआयता - ऋजुश्चासावायता चेति ऋज्वायता यया जीवादय ऊर्ध्वलोकादेरधोलोकादौ ऋजुतया यान्ति। भग० ८६६। ऋजी-सरला सा चासावायता च-दीर्घा ऋज्वायता। ठाणा० ४०७।

उज्जुकडे-ऋजुकृतः-ऋजुः-संयमस्तत्प्रधानं ऋजु वा-मायात्यागतः कृतम्-अनुष्ठानं यस्य सः। उत्त० ४१४।

उज्जुग-ऋजुम्। आव० ३८४। दक्षिणहस्तः। ओघ० १७५।

उज्जुजड्ड-ऋजवश्च प्राञ्जलतया जडाश्च तत एव दुष्प्रतिपाद्यतया ऋजुजडाः। उत्त० ५०२।

उज्जुतमिसं-यत् चिर्भटादिकं विदार्य ऊर्ध्वफालिरूपाः पेशयः कृतं तद् ऋजुकमिसम्। वृ० प्र० १७५ अ।

उज्जुते - ऋजुकः-अवक्रः, उद्यतो वा-अनलसः। प्रश्न० १५७।

उज्जुत्तो-उद्युक्तः। ओघ० १६०।

उज्जुदंसी - ऋजुदर्शी-ऋजुर्मोक्षं प्रति ऋजुत्वात्संयमस्तं पश्यत्युपादेयतयेति ऋजुदर्शी-संयमप्रतिबद्धः। दश० ११८।

उज्जुपन्न-ऋजुप्रज्ञ। ठाणा० २०२।

उज्जुभूयं-ऋजुभूतं-प्रगुणीभूतम्। उत्त० १८५।

उज्जुमइ-ऋजुमतिः-मार्गप्रवृत्तबुद्धिः। दश० १६०।

उज्जुमई - ऋज्वी-सामान्यग्राहिणी मतिरस्य सः। नंदी १०९, १०८। ऋज्वी-सामान्यतो मनोमात्रग्राहिणी मतिः-मनःपर्यायज्ञानं येषां ते। औप० २८।

उज्जुया-ऋजुका-न वक्रा। जीवा० २७१।

उज्जुवालिया-ऋजुवालिका, वीरस्य केवलोत्पत्तिस्थानम्। आव० २२७।

उज्जुसंधिसंखेडयं-उज्जुसंधिसंखेडयाओ वा गमनागमनं पर्वेदेति। नि० चू० द्वि० ८६ अ।

उज्जुसुअ-ऋजु-अतीतानागतपरिहारेण परकीयपरिहारेण वाऽकुटिलं वस्तु सूत्रयतीति ऋजुसूत्रः। विशे० ३१। ऋजुसूत्र - ऋजु - वर्तमानमतीतानागतवक्रपरित्यागाद् वस्त्वभिन्नं तत्सूत्रयति-गमयतीति। ऋजुश्रुत-ऋजु-यथाविपर्ययादभिमुखं श्रुतं-ज्ञानमस्येति। आव० २८४। ऋजु-अवक्रं श्रुतमस्य सोऽयमृजुश्रुतः, ऋजु-अवक्रं वस्तु सूत्रयतीति ऋजुसूत्रः। विशे० ९०७। ठाणा० ११२।

उज्जुसुते - ऋजु-यथाविपर्ययादभिमुखं श्रुतं-ज्ञानं यस्यासौ ऋजुश्रुतः, ऋजु वा-वर्तमानमतीतानागतवक्रपरित्यागाद्वस्तु सूत्रयति-गमयति इति ऋजुसूत्रः। ठाणा० १९०। ऋजु-यथाविपर्ययादभिमुखं श्रुतं-ज्ञानं यस्य सः। ठाणा० १०२। ऋजु-अवक्रमभिमुखं श्रुतं-श्रुतज्ञानं यस्येति। ठाणा० १५२।

ऋजु – अवक्रं श्रुतमस्येति। अनु० २६५। स्वकीयं संप्रति न यत्तु नान्यदित्यभ्युपगमपरः, ऋजु वा – अतीतानागतवक्रपरित्यागाद्वर्त्तमानं वस्तु सूत्रयति – गमयतीति ऋजुसूत्रः। ठाणा० १५२।

उज्जुसुयं – ऋजुसूत्रं – नयनो भेद.। प्रज्ञा० ३२७। ऋजु – अतीतानागतपरिहारेण प्राञ्जलं वस्तु सूत्रयति – अभ्युपगच्छतीति ऋजुसूत्रः। अनु० १८।

उज्जुसेढीपत्ते – ऋजुश्रेणिप्राप्तः – ऋजु – अवक्रा श्रेणि – आकाशप्रदेशपंक्तिस्ता प्राप्त.। अनुश्रेणिगतः। उत्त० ५९७।

उज्जुहित्ता – प्रेर्य। उत्त० ५५१।

उज्जू – ऋजु – यति, यतिरेव परमार्थतः ऋजुः। आचा० १५६।

उज्जूहिगा – गावीओ उज्जूहिताओ अडविहुत्तीओ उज्जुहिज्जंति अहवा गोसगाडि उज्जूहिगा। नि० चू० द्वि० ७१ अ।

उज्जेंत – रैवतक। बृ० द्वि० १०६अ। उज्जयन्त – पर्वतविशेष। आव० ८२७। परदारगमने पर्वतविशेष। आव० ८२३।

उज्जेणय – उज्जयिनीक। आव० ६३६।

उज्जेणा – उपयोजना – संघट्टना। बृ० द्वि० १४६ अ।

उज्जेणि – उज्जयिनी, गुरुनिग्रहविषये पुरी। आव० ८१३। सर्वकामविरक्ततावितये नगरी। आव० ७१८। अज्ञानोदाहरणे प्रद्योतराजधानी। आव० ६९९। मालवदेशे नगरी। दश० ५७। शिल्पसिद्धदृष्टान्ते पुरी। आव० ४१०। कायदण्डोदाहरणे नगरीविशेष। आव० ५७७। भद्रगुप्तस्थविरनिर्यामणास्थानम्। आव० ३०२।

उज्जेणिगाओ – औज्जयिन्य। आव० ६४।

उज्जेणिया – उज्जयिनी। आव० २१०।

उज्जेणी – उज्जयिनी, लवास्वोदाहरणे नगरी। आव० ७२१। गुणविषये पुरी। आव० ८१९। विनयदृष्टान्ते पुरी। आव० ७०८। शिल्पकर्मविषये नगरी। आव० ४०९। स्थिरीकरणोदाहरणे नगरी। दश० १०३। योगसंग्रहेऽनिश्रितोपधानदृष्टान्ते नगरी। आव० ६२८। नितशत्रुराजधानी। उत्त० २१३, १९२। औत्पत्तिकीदृष्टान्ते नगरी। आव० ४१५। भद्रगुप्ताचार्यस्थानम्। आव० २९२। नगरीविशेष। बृ० प्र० १९१ अ, १९० आ। योगसंग्रहे शिक्षादृष्टान्ते नगरी। आव० ६७२। प्रथमे आलोचनायोगे नगरी। आव० ६६४। योगसंग्रहे आपत्सु दृढधर्मतादृष्टान्ते नगरीविशेष। आव० ६६०। हस्तिमित्रगाथापतिस्थानम्। उत्त० ८५। देवदत्तागणिकास्थाननगरी। उत्त० २१८। उज्जयिनी – नगरीविशेष.। उत्त० ९९, २५४, १२०, ८०। प्रद्योतनराजधानी। उत्त० ९६। गर्द्दभिल्लनृपस्थानम्। बृ० प्र० १०१ आ। बृ० प्र० ३९ अ। नगरीविशेष। नि० चू० प्र० २८३ अ। नि० चू० द्वि० ७० आ। बृ० प्र० १९१ अ। बृ० द्वि० २६५ अ। चाणक्याचार्यविहारभूमि। नि० चू० प्र० १३९ आ। बृ० प्र० ४७ अ। बृ० तृ० १४९ अ।

उज्जेणीनयरी – अवन्तीजनपदे नगरी। उत्त० ४९।

उज्जेणीसावगसुतो – उज्जयनीश्रावकपुत्र – उज्जयिन्यां श्रावकसुत। उत्त० १९४।

उज्जोअ – उद्द्योत – प्रभासमूह। जीवा० २६७। अनुष्णप्रकाश.। जं० प्र० ४३३। दीप्यमानता। जीवा० ३९९। उद्योतं – चान्द्रप्रकाशम्। जं० प्र० २२९।

उज्जोइंति – उद्द्योतयन्ति। भग० ३२७।

उज्जोएइ – उद्द्योतयति – भृश प्रकाशयति। भग० ३८।

उज्जोएमाण – उद्योतयन्। औप० ५०।

उज्जोओ – उद्योत – रत्नादिप्रकाश। उत्त० ५६१।

उज्जोयगरे – उद्योतकर – केवलालोकेन तत्पूर्वकप्रवचनदीपेन वा सर्वलोकप्रकाशकरणशील। आव० ४९४।

उज्जोयणामे – यदुदयाज्जन्तुशरीराण्यनुष्णप्रकाशरूपमुद्योतं कुर्वन्ति यथा यतिदेवोत्तरवैक्रियचन्द्रनक्षत्रतारविमानरत्नौषधयस्तदुद्योतनाम। प्रज्ञा० ४७४।

उज्जोवणं – गाविण पसरणं। नि० चू० प्र० १०७ अ।

उज्जोवेंति – उद्योतयन्ति। सूर्य० ६३। उद्द्योतयन्त – प्रकाशयन्त। जं० प्र० ४६१।

उज्जोवेमाणा – उद्योतयमान दशदिक्समृह्रीसशोभन। ठाणा० ४२१।

उज्झतगं – उज्झितक, त्याज्यम्। आव० ६६८।

उज्झंता – क्षपयन्त। अनु० १३१।

उज्झंसिओ – निरुक्त। आव० २०४।

उज्झक्खणिया – पवनप्रेरिता उदकक्षणिका। बृ० द्वि० २९ आ।

उज्झखणी-दगवातो सीतभरो सा य उज्झखणी भण्णति। नि० चू० प्र० २३२ आ।

उज्झणं-बहिर्नयन। विशे० १०२९।

उज्झनं-परिष्ठापः। आव० ५७६।

उज्झमज्झी-उद्घाटनम्। आव० ६६५।

उज्झयारेमि-उपकरोमि। बृ० प्र० ४६ आ।

उज्झर-अवझरः-पर्वततटादुदकस्याधःपतनम्। भग० २३८। प्रवाहः। (तं०)। उज्झरः-प्रवाहः। नंदी ४७। गिरितटादुदकस्याधःपतनानि। जं० प्र० ६६। गिरिप्रस्रवणमांप्रश्रवाः। प्रज्ञा० ७२। निर्झरः। ज्ञाता० २६।

उज्झररवो-निर्झरशब्दः। ज्ञाता० १६१।

उज्झा-उज्झा-उपयोगपुरस्सरं ध्यानकर्तारः। विशे० १२२९। अयोध्या, मगरराजधानी। आव० १६१। अजितनाथजन्मभूमि.। आव० १६०। उ इत्येनदक्षरं उपयोगकरणे वर्तते, ज्झ इति चेदं ध्यानस्य भवति निर्देशो, ततश्च प्राकृतशैल्या उज्झा, उपयोगपुरस्सरं ध्यानकर्तारं इत्यर्थः। आव० ४४९। अनन्तनाथजन्मभूमिः। आव० १६०।

उज्झाइओ-विरूपः। बृ० द्वि० २४१ अ।

उज्झाइणी-जुगुप्सा। बृ० द्वि० २२९ आ।

उज्झाइलं-विरूपं। बृ० द्वि० २२९ आ।

उज्झातो-उपाध्यायः। उत्त० १४९।

उज्झाहि-उज्झाः। आव० २१७।

उज्झिआ-उज्झिता-सार्थवाहकन्या। [illegible]० ९२।

उज्झिणिका-[illegible]। बृ० तृ० १२३अ। बृ० द्वि० २४२ आ।

उज्झिनं-छर्दितं, त्यागम्। पिण्ड० ११९।

उज्झितक-विजयसार्थवाहपुत्र। ठाणा० ५०७। दुःखविपाकानां द्वितीयमध्ययनम्। ठाणा० ५०७।

उज्झिसय-उज्झितुं-सर्वथा [illegible]। आचा० ११८।

उज्झिय-उज्झित.-उज्झितधर्मा, सप्तमी पिण्डैषणा। आव० ५७२। उज्झितधर्मा। आव० ५६८।

उज्झियए-उज्झितक-[illegible]। [illegible] विपा० ४६। सार्थवाहपुत्र, [illegible] द्वितीयमध्ययनम्। विपा० ३५।

उज्झियगो-उज्झित-[illegible]। [illegible] ८२।

उज्झियधम्मा-चतुर्थी पानैषणा। आचा० २७७। यत्परित्यागार्हं भोजनजातमन्ये च द्विपदादयो नावकाङ्क्षन्ति तदर्द्धत्यक्तं वा गृह्णत इति, सप्तमी पिण्डैषणा। ठाणा० ३८७। आव० ५६८, ५७२।

उज्झियधम्मिय-उज्झितधर्मिकं-उज्झितं-परित्याग.मएव धर्मः-पर्यायो यस्यास्ति तत्। अन्त० ३। उज्झितधर्मिका-सप्तमी पिण्डैषणा। आचा० ३५७। जं भत्तणादिणं गिही उज्झिउकामो साहू य उवट्ठितो तं तस्स देति ण य तं और अण्णो दुपदादि अभिलसति एसा उज्झियधम्मिया। नि० चू० तृ० १२ अ। नि० चू० द्वि० १६३ आ।

उज्झियधम्मे-उज्झनमेव धर्मः-स्वभावो यस्य तद् उज्झितधर्म-परित्यागार्हम्। बृ० प्र० ९७आ।

उट्ट-उष्ट्रः। प्रश्न० २५२। उष्ट्रः-द्विखुरचतुष्पदविशेष.। प्रज्ञा० ४५। जीवा० ३८। म्लेच्छविशेषः। प्रज्ञा० ५५।

उट्टण-आवर्तनम्-भक्तीभवनम्। बृ० प्र० २०३ आ।

उट्टवामा-उष्ट्री। आव० ४१८।

उट्टिए-उष्ट्राणामिदम् औष्ट्रिकम्। अनु० ३५। उष्ट्रिका-बृहन्मृन्मयभाण्डम्। उपा० ४।

उट्टिसे-उष्ट्रलोममयम्। ठाणा० ३३८।

उट्टितो-उव्वगिओ। नि० चू० प्र० १७८ आ।

उट्टियं-उष्ट्ररोमेसु उट्टियं। नि० चू० प्र० १२६ अ।

उट्टिया - उष्ट्रिका-महामृन्मयो भाजनविशेष.। औप० १०६। मृन्मयो महाभाजनविशेषः। उपा० २१। मृत्शिलादिभाजनविशेषः। उपा० ४०। [illegible]। नि० चू० तृ० ५५ अ, ६६ अ।

उट्टियासमणा - उष्ट्रिका-महामृन्मयो भाजनविशेषस्तत्र प्रविश्य ये श्रमणाः-तपस्यन्तीति उष्ट्रिकाश्रमणाः। औप० १०६।

उट्ठं-ओष्ठ-[illegible]। औप० ३११।

उट्ठंभिया-अवष्टभ्य-आश्रय। आचा० ३१२।

उट्ठण-[illegible]। बृ० द्वि० ५० अ।

उट्ठवेमि-[illegible]। [illegible] ६०।

उट्ठा-उत्था-[illegible]। औप० ८३। ऊर्ध्वं [illegible]। [illegible] ६। भग० १४। [illegible]। दश० १९२।

उट्ठा(ट्ठा)-[illegible]। [illegible] ३१०।

उट्ठाए-उत्थाय-उग्रविहारं प्रतिपद्य सर्वालङ्कारं परित्यज्य पञ्चमुष्टिकं लोचं विधायैकेन देवदुष्येणेन्द्रक्षिप्तेन युक्त कृत सामायिकप्रतिज्ञ आविर्भूतमनःपर्यायज्ञानोऽष्टप्रकारकर्मक्षयार्थं तीर्थप्रवर्त्तनार्थं चोत्थाय। आचा० ३०१। उत्थान उत्था-ऊर्ध्वं वर्त्तन। राज० ५८।

उट्ठाण-उत्थानम्-उद्वसनम्। नंदी २०७। प्रथममुद्गमनम्। उत्त० ३५१। जन्म। भग० ६६१। चेष्टाविशेष। ठाणा०। २३। उत्थानम्। पिण्ड० ७१। ऊर्ध्वीभवनम्। भग० ३११। सूर्य० २८६। श्रवणाय गुरुं प्रत्यभिमुखगमनम्। सूर्य० २९६। देहचेष्टाविशेष। प्रज्ञा० ४६३। ऊर्ध्वं भवनम्। ज० प्र० १३०। उत्पत्ति। ज्ञाता० १८९।

उट्ठाणपरियाणियं-परियान-विविधव्यतिकरपरिगमनं तदेव पारियानिकं-चरितं उत्थानात्-जन्मन आरभ्य पारियानिकं उत्थानपारियानिकम्। भग० ६६०।

उट्ठाणपरियावणियं-उत्थानपर्यापनिकम्। आव० ६५।

उट्ठाणसुए-उत्थानश्रुतं-उद्वसन तद्धेतु श्रुतमुत्थानश्रुतम्। नंदी २०७। -

उट्ठाय-उत्थाय-अभ्युपगम्य। आचा० ३८। सर्वं सावद्यं कर्म न मया कर्तव्यमित्येवं प्रतिज्ञामन्दरमारुह्य। आदाय-गृहीत्वा। आचा० १४०।

उट्ठावणा-उत्थेव ठावणा उत-प्राबल्येन वा ट्ठावणा उट्ठावणा। नि० चू० द्वि० ४७ अ।

उट्ठावणागहणं – उपस्थापनायां हस्तिदन्तोन्नताकारहस्ताभ्यां यद् रजोहरणादिग्रहणं। बृ० द्वि० २८६ अ।

उट्ठिअ-उद्युक्त। ओघ० २२०। उत्थित-उद्गसित। ओघ० ७९। उद्यत। ओघ० २२०।

उट्ठिए-उत्थित-ज्ञानदर्शनचारित्रोद्योगवान्। आचा० १७६। उत्-प्राबल्येन स्थित उत्थित। आचा० २४८।

उट्ठिय-उत्थित-संयमोद्योगवान्। आचा० २३४। रूअ। नि० चू० प्र० २०८ आ। ईश्वरीभूतम्। पिण्ड० १२३।

उट्ठी-अणा। आव० ६२४।

उट्ठुभइ-अवष्ठीव्यत-निष्ठीवति। भग० ९८०।

उट्ठेइ-उत्थाय-विबुद्धय। भग० १००।

उट्ठेमि-आयामि-आगच्छामि। आव० ९८१।

उड्डवग्गिसी-ऋषिविशेष। बृ० प्र० ०८६ आ।

उडए-उटज-तापसाश्रमगृहम्। निरय० २६।

उडओ-ओटज-तापसाश्रम। उत्त० ११४।

उडव-उटज-तापसाश्रम। जीवा० १०५। कोद्दिजो। नि० चू० द्वि० ७७ आ। पर्णकुटी। आव० १८९।

उडवसंठिया-उटजसंस्थिता-तापसाश्रमसंस्थिता। आवलिकाबाह्यस्य दशमं संस्थानम्। जीवा० १०४।

उडुंकरिसि-ऋषिविशेष। नि० चू० द्वि० ६८ आ।

उडुंडुग-उड्डक-जनहास्य। नि० चू० तृ० ५० अ।

उडु-ऋतु। नि० चू० प्र० २३९ अ। उडुग-तरणकाय-तुम्बकादि। पिण्ड० १०२।

उडुकः-तत्र। विशे० ३५३।

उडुकल्लाणिआ-ऋतुकल्याणिका, ऋतुषु सर्वष्वपि कल्याणिका – ऋतुविपरीतस्पर्शत्वेन सुखस्पर्शा अथवाऽमृतकन्यात्वेन सदा कल्याणकारिण्य। जं० प्र० २६३।

उडुपं-नौ। आचा० ४१।

उडुबद्धियं-ऋतुबद्धम्-शीतोष्णकालयोर्मासकल्पम्। आचा० ३६५।

उडुवई-उडुपति-उडूना-नक्षत्राणां पति-प्रभुः स। उत्त० ३५१।

उडुविमान-सौधर्मे प्रथम प्रस्तट। ठाणा० २५१।

उडू – कालविशेष। भग० ८८८। ऋतव-द्विमासमाना। ठाणा० ८६। नक्षत्र। उत्त० ३५१।

उडूसंवच्छरे-ऋतुसंवत्सर, कर्मसंवत्सर, सवनसंवत्सरश्च। सूर्य० १८८। यस्मिन् संवत्सरे त्रीणि शतानि षष्ट्यधिकानि परिपूर्णान्यहोरात्राणां भवति एष ऋतुसंवत्सर, ऋतवो लोकप्रसिद्धा वसन्ताद्य तत्प्रधानसंवत्सर ऋतुसंवत्सर। सूर्य० १६९।

उड्डुं-कुड्य। बृ० द्वि० ६१ आ।

उड्डुंचकादि-उद्धृष्टकादि। ओघ० ८९।

उड्डुचगा-उदसका-याचका। बृ० प्र० ८६ आ।

उड्डुचंय – उप्पका-उद्घेष्कारतान् कुर्वन्ति, आलापकान् वर्णाघाटेन पठित्वा तथैवोच्चरन्ति इत्यर्थ। बृ० द्वि० ६० आ।

उड्डुचये-कुट्टियाआ। नि० चू० प्र० १३१ भ।

उड्डुडग-ऊर्ध्वीकृतदण्ड। औप० ९०।

उड्डुति-व्यवस्थापयन्ति। आव० ५१२।

उड्डयालग.– कोट्टपालकः। आव० २०४। आरक्षकः। आव० २०४।

उड्डग-पलालं। नि० चू० द्वि० ६१ अ।

उड्डच्छे-उद्घोषिते। नि० चू० द्वि० १३२ अ।

उड्डणकं-प्रपंचः। नि० चू० तृ० २६ आ।

उड्ड(ड्डे)ति। नि० चू० प्र० २३२ आ।

उड्डमरं-उत्पाणं। नि० चू० प्र० १९४ आ।

उड्डमादी-खितिखाणतो उड्डमादी। नि० चू० द्वि० ४४ आ।

उड्डहणं-व्यङ्गनयोर्द्वयोरनवस्थाप्यः। बृ० प्र० ३०८ अ।

उड्डाह – उपघातः। ओघ० ८९। प्रवचनहीला। ओघ० ४८। खिमा। पिण्ड० १०९। अपवादः। आव० ८००। उपघातः। ओघ० १४९। आव० १९५।

उड्डाहितो-निर्भर्त्सितः। उत्त० १३९।

उड्डिओ-अवतारितः। आव० ३९६।

उड्डियाओ-अवतारिता। दश० ५७।

उड्डुयं-उद्गारितम्। आव० ७७९।

उड्डुयरो-यः समुद्दिशन् सञ्ज्ञां वा व्युत्सृजन् चपलतया हस्तादीन्यपि लेपयति। बृ० प्र० २७२ अ।

उड्डुयालेउं-मथितुम्-मन्थनं कर्तुम्। दश० ६०।

उड्डुति-छोति। नि० चू० प्र० २९० अ।

उड्डेह-धरथ। नि० चू० प्र० २३७ अ।

उड्ड-वमनं। नि० चू० प्र० ३१५ आ। नि० चू० ५८ अ। बृ० प्र० ७५ अ। णदीए समुद्दे वा वेलापाणियस्स प्रतिकूल उड्डं। नि० चू० तृ० ६३ आ।

उड्डंउंचत्त-ऊर्ध्वस्थितस्यैकमपरं, तिर्यक्स्थितस्यान्यत्, गुणोन्नतिरूपं, तन्नेनरापोहेनोर्ध्वस्थितस्य यदुच्चत्वं तदूर्ध्वोच्चत्वम्। ठाणा० ३९।

उड्डंकप्पेसु-ऊर्ध्वं कल्पेषु-ऊर्ध्वं कल्पोपरिवर्तिषु ग्रैवेयकादिविमानेषु कल्पेषु-सौधर्मादिषु, ऊर्ध्वं वा उपरिकल्पान्ते विशिष्टपुण्यभाजामवस्थितिविषयतयेति सौधर्मादयो ग्रैवेयकादयश्च सर्वेऽपि कल्पा एव तेषु। उत्त० १८६।

उड्डंजाणू-शुद्धपृथिव्यासनवर्जनात् औपग्रहिकनिषद्याभावाच्च उत्कटुकासनः सन्नुपदिश्यते ऊर्ध्वं जानुनी यस्य स ऊर्ध्वजानुः। ज्ञाता० ९।

उड्ड-ऊर्ध्व-कर्णक। ओघ० १६८। सर्वोपरिस्थितम। उत्त० २६८। अनाच्छादितममालगृहम्। ठाणा० १५७। ऊर्ध्वं। नंदी १५४।

उड्डकवाडे-ऊर्ध्वमपि लोकान्तं स्पृष्टे ते अधोऽपि च लोकान्तं स्पृष्टे ते ऊर्ध्वकपाटे। प्रज्ञा० ७५।

उड्डकाएहिं-ऊर्ध्वकायैः-द्रोणैः कावेर्वैक्रियैः। सूत्र० १३७।

उड्डगो। ठाणा० १५८।

उड्डघट्टणा-ऊर्ध्वघट्टना-मुसलीद्वितीयभेदः। ऊर्ध्वं कुड्किादिपटलानि घट्टयति। ओघ० १०९।

उड्डचरा-ऊर्ध्वचरा-गृध्रादयः। आचा० २९१।

उड्डठाण – ऊर्ध्वस्थानम्-कायोत्सर्गादि। उत्त० ६९९। कायोत्सर्ग., ऊर्ध्वतया स्थानम्-अवस्थानं पुरुषस्य ऊर्ध्वस्थानम्। ठाणा० ३।

उड्डत्ता-मुख्यता। भग० २५४। ऊर्ध्वता-लघुपरिणामता। प्रज्ञा० ५०४। भग० २३।

उड्डमंतो – उद्गमन्-अधस्तनमध्यमत्रिभागगतवातसङ्क्षोभवशाज्जलमूर्ध्वमुत्क्षिपन्। जीवा० ३०८।

उड्डरेणु – ऊर्ध्वरेणु.-ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्चलनधर्मोपलभ्यो रेणुः। भग० २७७।

उड्डरेणू-ऊर्ध्वरेणुः-स्वतः परतो वा ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्चलनधर्मा रेणुः। अनु० १६३।

उड्डलोए-तिर्यग्लोकस्योपरिष्टादूर्ध्वलोकः। प्रज्ञा० १४४।

उड्डलोयतिरियलोए-ऊर्ध्वलोकस्य यदधस्तनमाकाशप्रदेशप्रतरं यच्च तिर्यग्लोकस्य सर्वोपरितनमाकाशप्रदेशप्रतरमेव ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकः। प्रज्ञा० १४४।

उड्डलोयपयरं-ऊर्ध्वलोकप्रतरं-तिर्यग्लोकस्य चोपरि यदेकप्रादेशिकमाकाशप्रतरं तत्। प्रज्ञा० १४४।

उड्डवाए – ऊर्ध्वमुद्गच्छन् यो वाति वातः स ऊर्ध्ववातः। जीवा० २९। ऊर्ध्वमुद्गच्छन् यो वाति वातः स ऊर्ध्ववातः। प्रज्ञा० ३०।

उड्डवियडं-मालरहितं छायरहितं परं पार्श्वतः कुड्यकुड्यं तदूर्ध्वविवृतं भवति। बृ० द्वि० १८९ अ।

उड्डवेइया-ऊर्ध्ववेदिका, यत्र जान्वोरुपरि हस्तौ कृत्वा प्रतिलिख्यते सा। ओघ० ११०।

उड्डस्सासो-ऊर्ध्वश्वास। आव० ६२९।

उड्डा-ऊर्ध्व-वमनम्। बृ० प्र० ७५ अ।

उड्डाई-ऊर्ध्वादि-मर्दनाविशेष। ओघ० ११६।

उड्ढिया–ऊर्ध्वीकृता। आव० २२३।

उड्ढोववन्नगा–ऊर्ध्वलोकस्तत्रोपपन्नकाः–उत्पन्ना ऊर्ध्वोपपन्नकाः। ठाणा० ५७। सौधर्मादिभ्यो द्वादशभ्यः कल्पेभ्य ऊर्ध्वमुपपन्नाः ऊर्ध्वोपपन्नाः। जीवा० १४६।

उणादि–उणप्रभृतिप्रत्ययान्तं पदम्। प्रश्न० ११७।

उणुयत्ता–स्थिता। आव० २७२।

उण्डी–पिण्डी। ज्ञाता० ९१।

उण्णए–उच्छिन्नं नतं–पूर्वप्रवृत्तं नमनमभिमानादुन्नतम्, उच्छिन्नो वा नयो–नीतिरभिमानादेवोन्नयो नयाभाव इत्यर्थः। भग० ५७२।

उण्णणं। नि० चू० प्र० १२४ अ।

उण्णमणी–उन्नामिनी–विद्याविशेषः। दश० ४१।

उण्णय–उन्नतः–प्रधानजातिकः। आव० २४०।

उण्णयविसालकुलवंसा–उन्नताः प्रधानजातित्वात् विशालाः–पितामहपितृव्याद्यनेकसमाकुलाः कुलान्येव वंशाः–अन्वया येषां ते उन्नतविशालकुलवंशाः। आव० २४०।

उण्णया–उन्नतानि–गुणवन्ति, उच्चानि। औप० ३।

उण्णयासणं–उन्नतासनं–उच्चासनम्। जीवा० २००।

उण्णागं–उर्णाकं, ग्रामविशेषः। आव० २११।

उण्णिए–अविलोममयम्। ठाणा० ३३८। ऊर्णाया इदम् और्णिकम्। अनु० ३५।

उण्णियं–ऊरणो रोमेसु उण्णियं। नि० चू० प्र० १२६ अ।

उण्णेज्जं–उपनेयम्। दश० ८६।

उण्हं–उष्णं, उष्णरूपः। सूर्य० १७२। उपति–दहति जन्तुमिति उष्णम्। उत्त० ३८। चतुर्थः परीषहः। आव० ६५६। उष्णः–घर्मः। ठाणा० ३४५।

उण्हकालो–उष्णकालः–ग्रीष्मः। ओघ० २१२।

उण्हयं–उष्णम्। आव० ८५८।

उण्हवणं–उष्णापनम्–उष्णीकरणम्। पिण्ड० ८२।

उण्हा–उष्णा। आव० ३८९।

उण्होदए–उष्णोदकं–स्वभावत एव क्वचिन्निर्झरादावुष्णपरिणामम्। जीवा० २५।

उण्होदय–उष्णोदकः। आव० ८५५।

उण्होला–पूतलिका। आव० २१५।

उत्–प्राबल्येन, अपुनर्भवरूपतया वा। प्रज्ञा० ११२। प्राबल्ये। प्रज्ञा० ५५९।

उत्कम्पनदीपाः–ऊर्ध्वदण्डवन्तः। ज्ञाता० ४४।

उत्करिकाभेदः–समुत्कीर्यमाणप्रस्थकस्येवेति। ठाणा० ४७५।

उत्कर्षण। ठाणा० २१२। आचा० २७७।

उत्कुट्टित–चिंचनकादिः। व्य० प्र० २८ अ।

उत्कुरुटिकादि–आसनविशेषः। ओघ० ४१। तृणराद्यादि। ओघ० ४१।

उत्क्षिप्तचरका–उत्क्षिप्तं–पाकपिठरात् पूर्वमेव दायकेनोद्धृतं तदेव चरन्ति–गवेषयन्ति ते। सू० प्र० २५७ आ।

उत्क्षिप्यते। ओघ० २१५।

उत्तइया–उत्तेजिता–अधिकं दीपिता। दश० ११५।

उत्तणं–उत्तृणम्–उद्गततृणम्। प्रश्न० १४।

उत्तणा–दीर्घत्रि(तृ)णा। नि० चू० प्र० ३३६ अ।

उत्तणाणि–उत्तृणानि–ऊर्ध्वीभूतानि तृणानि दीर्घाणीतियावत् तानि यत्र मार्गे भवन्ति। बृ० द्वि० ७९ आ।

उत्तत्तकणगवन्ना–उत्तप्तकनकवर्णाः–ईषद्रक्तवर्णाः। प्रज्ञा० ९५।

उत्तम–उत्तमो गिरिषु सर्वतोऽप्यधिकमुन्नतत्वात्, मेरोश्चतुर्दशं नाम। जं० प्र० ३७५। गिरीणामुत्तम इति उत्तमः। मन्दरस्य चतुर्दश नाम। सूर्य० ७८। मिथ्यात्वमोहनीयज्ञानावरणचारित्रमोहाद्रित्रिविधतमसः उन्मुक्ता इति उत्तमाः। आव० ५०८। उपरिवर्ति। देवलोकाद्यपेक्षया प्रधानम्। उत्त० ३१९। ऊर्ध्वं तमसः–अज्ञानाद्यत्तथा, अज्ञानरहित इत्यर्थ.। ज्ञाता० ७६।

उत्तमकट्ठ–उत्तमकाष्ठा–प्रकृष्टावस्था। जं० प्र० ९८। उत्तमकाष्ठा–परमकाष्ठा, उत्तमावस्था परमकष्टो वा। भग० ३०५।

उत्तमकट्ठपत्त–उत्तमकाष्ठाप्राप्तः–परमप्रकर्षप्राप्तः। सूर्य० ११।

उत्तमकट्ठपत्ता–परमकाष्ठाप्राप्ता, उत्तमावस्थायां गता, परमकष्टप्राप्ता वा। भग० ३०५।

उत्तमट्ठ–अनशनाय। (आउ०)। उत्तमार्थ–अनशनम्। ओघ० १४। उत्तमः–प्रधानोऽर्थः–प्रयोजनं स उत्तमार्थः–मोक्षः। उत्त० ३५३। पर्यन्तसमयाराधनारूपः। उत्त० ४७८। मोक्षः। उत्त० ५२३।

उत्तमट्ठकालंमि–उत्तमार्थकाले–अनशनकाले। ओघ० २२७

उत्तमट्ठगवेसए–उत्तमार्थगवेषकः–उत्तमः–प्रधानोऽर्थ.–प्रयो-

जन उत्तमार्थ, स च मोक्ष एव तं गवेषयति-अन्वेष यतीति। उत्त० ३५३।

उत्तमट्ठपत्ता - उत्तमार्थप्राप्ता, उत्तमान् तात्कालापेक्षयो त्कृष्टानर्थान्-आयुष्यकादीन् प्राप्ता उत्तमार्थप्राप्ता, उत्तम काष्ठां प्राप्ता वा-प्रकृष्टावस्थां गता। भग० २७७।

उत्तमसाहवेहिं-उत्तमसाधुभि। पउ० १-१०।

उत्तमा-उत्तमा-प्रधाना, ऊर्ध्वं वा तमस इति उत्तमस। आव० ५०७। पूर्णभद्रस्य तृतीयाग्रमहिषी। भग० ५०४। ठाणा० २०४। प्रथमरात्रिनाम। सूर्य० १४७। जं० प्र० ४९१।

उत्तमार्घम्-परार्घं, महार्घं वा। दश० २२१।

उत्तमुत्तम-उत्तमोत्तम्-अतिशयप्रधानम्। उत्त० ३१९।

उत्तमेणं-ऊर्ध्वं तमस-अज्ञानाद्यत्तत् तथा तेन ज्ञानयुक्तेन। उत्तमपुरुषासेवितत्वाद्वोत्तमेन। भग० १२०।

उत्तयंते-उत्तप्यमान-ऊर्ध्वं व्यथ्यमानम्। विपा० ७४।

उत्तर-वासकप्पकवली। नि० चू० प्र० ३५३ आ।

उत्तरग-उत्तराङ्ग। जीवा० ३५९। उत्तराङ्ग-द्वारस्योपरि ति र्यग्व्यवस्थित काष्ठम्। जीवा० २०४। जं० प्र० ४८।

उत्तर-उत्तरत-उत्तरदिग्वर्त्ती सर्वेभ्या भरतादिवर्षेभ्य इति, मेरुनाम। जं० प्र० ३७६। ऐरावते द्वाविंशतितमतीर्थकर। सम० १५४। अप्रवर्त्ती। विग्रादिशक्त्यभावेऽनुल्लङ्घनीय। जं० प्र० ४६२। भवधारणीयशरीरापेक्षया कार्योत्पात्त कालापेक्षया चोत्तरकालभावि। जं० प्र० ४०२। कार्यम्। सूत्र० २८५।

उत्तरभतरदीवा - उत्तरस्यां दिशि यऽन्तरद्वीपा। भग० ४९२।

उत्तरउत्तरा-उत्तरोत्तरविमानवासिन, उत्तरो वा उपरितन स्थानवर्त्ती, उत्तर-प्रधाना येषु ते उत्तरोत्तरा। उत्त० १८७।

उत्तरकचुइज्ज-उत्तरकञ्चुक-तनुत्राणविशेष। विपा० ४१।

उत्तरकंचुइय उत्तरकञ्चुक-तनुत्राणविशेष। विपा० ४१।

उत्तरकरण - मूलत स्वहेतुभ्य उत्पन्नस्य पुनरुत्तरकाल विशेषाधानात्मकं करणम्। उत्त० १९४। औदारिकवै क्रियाहारेषु तैजसकार्मणयोस्तत्सम्भवात्ताङ्गोपाङ्गनामैतात्पत्त्वनामाणि। उत्त० १९७।

उत्तरकिरियं-उत्तरक्रियम्-उत्तरा-उत्तरशरीराश्रया क्रिया-गतिलक्षणा यत्र गमने तदुत्तरक्रियम्। भग० ३१०।

उत्तरकुरा-उत्तरपूर्वरतिकरपर्वतस्य पश्चिमायामीशानदेवेन्द्र स्य रामाराख्या राजधानी। जीवा० ३६५। ठाणा० २३१। नेमनाथशिबिकानाम। सम० १५१। उत्तरकुरु। आव० ११६। मेरोर्जम्बूद्वीपगत उत्तरत उत्तरकुरुनामा विदेह। जं० प्र० ३१०।

उत्तरकुरु-कुरुविशेष। जीवा० २६६। वापीनाम। जं० प्र० ३७०। नेमनाथस्य शिबिका। उत्त० ४९२। साकेत-नगरे उद्यानम्। विपा० ९५। आव० ११५। क्षेत्रवि शेष। ठाणा० ६८। अकर्मभूमिविशेष। प्रज्ञा० ५०।

उत्तरकुरुकूडे-उत्तरकुरुदेवकूट। जं० प्र० ३३७।

उत्तरकुरुदहे-उत्तरकुरौ महाद्रह। ठाणा० ३२६। उत्तर कुरुह्रद द्रहविशेष। जं० प्र० ३३०।

उत्तरकुरुवत्तव्वया उत्तरकुरुवक्तव्यता। भग० २७६।

उत्तरकुरुवाए-उत्तरकुरुषु। पउ० ३१-८।

उत्तरकुरुकूड - उत्तरकुरुकूट-गन्धमादनपर्वते चतुर्थकूट। जं० प्र० ३१३।

उत्तरकूलग-गङ्गाया उत्तरकूले ये वास्तव्यम्। भग० ५१९। औप० ९०।

उत्तरकूला-उत्तरकूलगा-गङ्गोत्तरकूलवास्तव्यास्तापसा। निरय० २५।

उत्तरखत्तियकुंडपुर-नगरविशेष। आचा० ४२१।

उत्तरगंधारा-उत्तरगान्धारा-गान्धारस्वरस्य पञ्चमीमूर्छना। जीवा० १९३। गान्धारग्रामस्य पञ्चमी मूर्छना। ठाणा० ३९३।

उत्तरगब्भो-उत्तरगर्भ-वातविशेष। आव० ३८७।

उत्तरगुण-उत्तरगुण, पौरुष्यपुरिमार्धेकाशनकोपवासादितपो रूप। विशे० १०१६।

उत्तरगुणनिर्मित - पुण्यप्रयोग्याकारवन्ति द्रव्याणि। आव० ५०३।

उत्तरगुणनिर्वर्तित - यस्तु त्राणनेत्रकर्मादिष्वाभिनिर्मित। बृ० प्र० १४३ अ।

उत्तरगुणपच्चक्खाण - उत्तरगुणप्रत्याख्यानम्। आव० ४७९।

उत्तरगुणलद्धि – उत्तरगुणाः-पिण्डविशुद्ध्यादयस्तेषु चेह प्रक्रमात्तपो गृह्यते तमाश्च उत्तरगुणलब्धि-तपोलब्धिम्। भग० ७९५।

उत्तरगुणा-दशविधप्रत्याख्यानरूपाः। भग० ८९४। नि० चू० द्वि० १६६ अ। मूलगुणापेक्षया स्वाध्यायादीन। उत्त० ५३६।

उत्तरगुणे-उत्तरगुणविषयं-क्रीतकृताटि। आव० ३२५।

उत्तरचूलियं-उत्तरचूडम्, यद् वन्दनं कृत्वा पश्चान्महता शब्देन मस्तकेन वन्द इति भणति, कृतिकर्मणि एकोनविंशत्तमो गुणः। आव० ५४४।

उत्तरज्झ-उत्तराध्यः-उत्तराध्ययनम्। तृतीया निर्युक्तिः। आव० ६१।

उत्तरज्झयणा-उत्तराध्ययनानि। आव० ७५९।

उत्तरज्झयणाइं – उत्तराध्ययनानि-सर्वाण्यपि चाध्ययनानि प्रधानान्येव तथाऽप्यमून्येव रूढ्योत्तराध्ययनशब्दवाच्यत्वेन प्रसिद्धानि। नंदी २०६।

उत्तरज्झाए-उत्तराध्यायाः-उत्तराः-प्रधाना अधीयन्त इत्यध्यायाः-अध्ययनानि तत उत्तराश्च ते अध्यायाश्च। उत्त० ७१२।

उत्तरड्ढभरहकूड – उत्तरार्धभरतनाम्नो देवस्य निवासभूतं कूटं उत्तरार्धभरतकूटम्। जं० प्र० ७१।

उत्तरणं-निस्तरं। नि० चू० द्वि० ७७ अ। एक्काए चेव अण्णो य गच्छा मे उत्तरणं। नि० चू० द्वि० ७७ आ। तुंबोडुपादिभिर्नौवर्जितैर्यद् उत्तीर्यते तद् उत्तरणम्। बृ० तृ० १६१ अ। जत्थ तरंतो जले संघट्टेति तं सव्वं उत्तरणं भवति। नि० चू० द्वि० ७८ आ।

उत्तरद्दारिता-उत्तरद्वारिका। ठाणा० ४२८।

उत्तरद्धे-उत्तरार्द्धे-उत्तरभागे। जं० प्र० ४८२।

उत्तरपओगकरणे-उत्तरप्रयोगकरणं, जीवप्रयोगकरणद्वितीयभेदः। आव० ४०८।

उत्तरपट्टो-उत्तरपट्टकः। ओघ० २१७। उत्तरपट्ट। ओघ० ८३।

उत्तरपदव्याहतं-सत्यामलिलक्षणे द्वितीयो भेदः। आव० २८१।

उत्तरपरिकम्मविज्जते-उत्तरघियते। आव० ७९५।

उत्तरपासो-उत्तरपार्श्वः। जीवा० २०४, ३५०।

उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ-उत्तरपूर्वेण, उत्तरपूर्वस्यां दिशि। जीवा० १४४।

उत्तरपुरच्छिमे-औत्तरपौरस्त्यः, उत्तरपूर्वायां दिग्विभागः-ईशानकोणः। सूर्य० २।

उत्तरपुरत्थिमेणं-उत्तरपूर्वं, ईशाने कोणे इत्यर्थ। सूर्य० २१।

उत्तरपुव्वा-ईशानकोणः। आव० ६३०।

उत्तरफग्गुणी-उत्तरफाल्गुनी, ह्स्तोत्तरा। आव० २५५।

उत्तरबलिस्सहगणे-गणविशेष.। ठाणा। ४५१।

उत्तरभद्दपदाः-प्रोष्ठपादाः। सूर्य० ११४।

उत्तरमंदा –उत्तरमन्दाभिधा गान्धारस्वरान्तर्गता सप्तमी मूर्च्छना। जं० प्र० १८। मध्यमग्रामस्य प्रथमा मूर्च्छना। ठाणा० ३९३। गान्धारस्वरस्य सप्तमी मूर्च्छना। जीवा० १९३।

उत्तरमेहुर-वणिग्विशेष। नि० चू० प्र० ११० अ।

उत्तरवाए-उत्तरवातः-उत्तरवात। आचा० ३४३।

उत्तरवेउव्विते-उत्तरवैक्रियम्। प्रज्ञा० २१८।

उत्तरवेउव्वियं-उत्तरवैक्रियम्, उत्तरगुणप्रत्ययमभिनवमभिनवभावविकल्पितं, वैकुर्विकं विकुर्वणं तेन निर्वृत्तं वैकुर्विकम्। विशिष्टस्य विशिष्टाभरणभूषितमनोऽभिरामगात्रनीतस्य सुक्ष्मापुद्गलेन जनितमतिमनोहारिरमणीयकम्। ज्य० प्र० १९५ आ। उत्तरवैक्रियम्-पूर्वक्रियाद्यैश्चपोत्तरकालभावि वैक्रियम्। भग० ७२।

उत्तरवेउव्विया-उत्तरवैक्रिया, तदुत्तरकालं कार्यमाश्रित्य या क्रियते सा। अनु० १६३।

उत्तरसत्तासुमो-उत्तरसत्त्वामुकः, उत्तरपौरस्त्यवातभेदः। आव० ३८६।

उत्तरसाढा – उत्तराषाढा,-अकम्पितजन्मनक्षत्रम्। आव० २५५।

उत्तरसाला – अपनिर्गमादिर्महतो इयगाश्च या शाला उत्तरशाला। नि० चू० प्र० २६० अ।

उत्तरा-उत्तरमथुरा। आव० ६८८। उत्तरवाचाला। आव० १९५। उत्तराभाद्रपदा-उत्तराफाल्गुनी "उत्तराषाढा"। सूर्य० १३०। उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तरभद्रपदा। जं० प्र० ५०२। उत्तरमथुरा। आव० ३५६। कौण्डिन्य-

भूतेर्भगिनी। आव० ३२४। शिवभूतेर्भगिनी। विशे० १०२२। मध्यमग्रामस्य तृतीया मूर्छना। ठाणा० ३९३।
उत्तराधर्यम्] भग० २६८।
उत्तरापथे-देशविशेषः। नि० चू० तृ० ४४ अ।
उत्तरावक्कमणे-उत्तरस्यां दिश्यपक्रमणं-अवतरणं यस्मात्तदुत्तरापक्रमणम्-उत्तराभिमुखं पूर्वं तु पूर्वाभिमुखमासीदिति। भग० ४७७। उत्तरस्यां दिश्यपक्रमण-अवतरणं यस्मात्तदुत्तरापक्रमणं-उत्तराभिमुखम्। ज्ञाता० ५६।
उत्तरावह-उत्तरापथः, उत्तरदिग्विभागः। आव० ९९। नि० चू० प्र० ९६ आ। उत्तरदिग्गता देशाः। विशे० ६२४। उत्तरदिक्सम्बन्धी देशः। आव० ८३०, २९५। बृ० द्वि० २२७ अ। नि० चू० प्र० १६ अ।
उत्तरासंग-उत्तरासङ्गः, वक्षसि तिर्यग्दित्तारितवस्त्रविशेषः। जं० प्र० १८७। उत्तरीयस्य देहे न्यासविशेषः। भग० १३८।
उत्तासणगं-उत्त्रासनकं-भयङ्करम्। ज्ञाता० १३३।
उत्तरासमा-मध्यमग्रामस्य चतुर्थी मूर्छना। ठाणा० ३९३।
उत्तरासाढा-उत्तराषाढानां-उत्तराषाढापर्यन्तानां नक्षत्राणाम्। सूर्य ११४।
उत्तरासाढाणक्खत्ते-उत्तराषाढानक्षत्रम्। सूर्य० १२०।
उत्तरित्तए-उत्तरीतुं-लङ्घयितुम्। ठाणा० ३०९।
उत्तरिज्ज-उत्तरीयम्-उत्तरासङ्गः। जं० प्र० १८९। भग० ३१९। वसनविशेषः। भग० ४६८। उपरिकायाच्छादनम्। ज्ञाता० २७।
उत्तरिज्जयं-उत्तरीयकं-उपरितनवसनम्। उपा० ५०।
उत्तरीकरणं-उपरकरण पुनः संस्कारद्वारेणोपरिकरणमुच्यते, उत्तरं च तत् करणं च इत्युत्तरकरणं, अनुत्तरमुत्तरं क्रियत इत्युत्तरीकरणम्। आव० ७७९।
उत्तरीयं-प्रावरणं प्रच्छदपटीसर्थं। उत्तरीयं पुनर्यत् तदुपरि प्रस्तीर्यते। बृ० प्र० ९८ अ।
उत्तरोट्टरोमा-दाढियाओ। नि० चू० प्र० १९७ अ।
उत्तरो-उत्तरग्रहणात् सजतसम्मर्दिद्विगदर्णं। नि० चू० प्र० ६३ अ।
उत्ताणग-उत्तानः। आव० ६४८। उत्तानकाः-ऊर्ध्वमुखशायिनः। जं० प्र० २३९।
उत्ताणतो-उत्तानकः। उत्त० २४४।
उत्ताणयं-उत्तानकं-उत्तानीकृतम्। प्रज्ञा० १०७। उत्तानकम्-ऊर्ध्वमुखम्। उत्त० ६८५। भग० १२५।
उत्ताणसेज्जए। निरय० ३४।
उत्ताणा-उत्ताना। ठाणा० २९९।
उत्तानं-स्पष्टम्। प्रज्ञा० ५९९। प्रतलम्। ठाणा० २७८। स्वच्छतयोपलभ्यमध्यस्वरूपत्वम्। ठाणा० २७८।
उत्तानीकतं। सूर्य० ३६।
उत्तारंती-अवतारयन्ती। आव० ६७६।
उत्तारो-उत्तारः-अधस्तादवतरणम्। जीवा० २६९। जलमध्याद्बहिर्विनिर्गमनम्। जीवा० १९७।
उत्ताले-उत्-प्राबल्यार्थे इत्यतितालमस्थानतालं वा। ठाणा० ३९६। अनु० १३२। उत्-प्राबल्येन अतितालं अस्थानतालं वा। जं० प्र० ४०। जीवा० १९४।
उत्तालिज्जंताणं-आलपनम्। राज० ४६।
उत्तासणओ-उद्वेगजनकः। ठाणा० ४६१।
उत्तासणयं-उत्त्रासनिका-स्मरणेऽप्युद्वेगजनिका। भग० १७५।
उत्तासिया-उत्त्रासिता-आस्फालिता। भग० १५४।
उत्तिंग-उत्तिङ्गः-पिपीलिकासन्तानकः। आचा० २८५। तृणाग्रः। आचा० ३२२। रन्ध्रम्। आचा० ३७९। उद्गं हस्थारिणा पिहेति। नि० चू० तृ० ६३ आ। किटिकानगरम्। दश० १७५। सर्पच्छत्रादिः। दश० २२९। गर्दभाकृतिजीवविशेषः, कीटिकानगरं वा। आव० ५७३। कीलियावासो। नि० चू० प्र० २५५ आ। कीडयणगरगो उत्तिंगो, फडगद्दभो वा। नि० चू० द्वि० ८३ अ। कीटिकानगरम्। बृ० तृ० १६६आ। छिद्रं। नि० चू० तृ० ६३ आ। कीडियानगरयं। दश० चू० ८०।
उत्तिंगसुहुम-उत्तिङ्गसूक्ष्मं-कीटिकानगरम्। दश० २३०।
उत्तिण्णो-उत्तीर्ण -अवतीर्णः। ओघ० २०।
उत्तिन्न-अवतीर्णः। दश० १९५।
उत्तिमं-उत्तमम्-श्रेष्ठम्। आव० ४८७।
उत्तिमट्ठो-उत्तमार्थं -अनशनम्। बृ० द्वि० १०० अ। उत्तमार्थ-कालधर्म.। आव० ६१६। भक्तप्रत्याख्यानम्। आव० ५६३।
उत्ती-उक्तिः, शब्दकरणम्। आव० ४६४।
उत्तुअणा-उत्तेजना। बृ० द्वि० ७२ आ।

उत्तुडउ-(देशी०) गर्व्वे। व्य० प्र० २१० आ।
उत्तुइया-उत्तेजिता। बृ० तृ० २७ आ।
उत्तुडियाइ-राज्यादि। आव० ५५५।
उत्तुपियं-उत्तुपितं-स्नेहितम्। प्रश्न०। ५९।
उत्तेड-बिन्दुः।।पिण्ड० १०।
उत्तेत्ता-अपवर्त्य। आव० ६२४।
उत्थरंत-आस्तृण्वन्-आच्छादयन्। प्रश्न० ४७।
उत्थरमाणो-अभिभवन्। आव० ५६७।
उत्थल - उन्नतानि-स्थलानि धूल्युच्छ्रयरूपाणि। जं० प्र० १६८।
उत्थल्लं। ओघ० १९२।
उत्था-उत्थानं-मूलोत्पत्तिम्। उत्त० ४७५।
उत्थाण-अतिसारः। व्य० द्वि० २७४ अ।
उत्थिय-यूथं-सङ्घान्तरं, तीर्थान्तरमित्यर्थः। उपा० १३।
उत्थितवादः-उत्थितस्तद्वादः। आचा० २०३।
उत्थिय-उत्थियः-यूथिकः। भग० ३२४।
उत्थुभण-अवस्तोभनम्, अनिष्टोपशान्तये निष्ठीवनेन थुथुक्करणम्। बृ० प्र० २१५ अ।
उत्पला-हस्तिनागपुरे भीमस्य भार्या। ठाणा० ५०७।
उत्पलिनीकन्द-पद्मनीकन्दः। प्रज्ञा० ३७।
उत्पातनिपातप्रसक्तसंकुचितप्रसारितरेकरचितभ्रान्तसम्भ्रान्तः-एकर्विंशततमो नाट्यविधिः। जीवा० २४७।
उत्पादपूर्वं-प्रथमपूर्वनाम। उत्त० ३८२।
उत्पादसभा-उत्पादभवनविमानभाविनी सभा। प्रश्न० १३५।
उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलं-स्वविषये श्रोतॄणां जनितमविच्छिन्नं कौतुकं येन तत्तथा। षड्विंशतितमो वचनातिशयः। सम० ६३।
उत्प्रासनं। उत्त० ४३४।
उत्प्रासयेत्-आचा० १२९।
उत्प्रासवचनं। नि० चू० प्र० १०८ आ।
उत्प्रास्यमान-उन्नतमाना-गर्वाध्माता महता चारित्रमोहेन मुखानि संसारमोहेन बोधत इति। आचा० २१६।
उत्प्लुत-भीतः। ज्ञाता० १६१।
उत्प्लुत्य-बुद्ध्या गत्वा। सूर्य० ४७।
उत्सफलय-अनुजानीहि। ओघ० ९८।

उत्सर्गसमितिः-स्थण्डिले स्थावरजङ्गमजन्तुवर्जिते निरीक्ष्य प्रमृज्य च मूत्रपुरीषादीनामुत्सर्गः। तत्त्वा० ९-५।
उत्सर्गसूत्रं। बृ० प्र० ५१ आ।
उत्सर्गापवादसूत्रं। बृ० प्र० ५१ आ।
उत्सर्पण-क्रियाविशेषः। आचा० ३६४।
उत्सादितं। उत्त० ६५।
उत्साहः-सूत्रार्थपरावर्तनायामभियोगः। बृ० प्र० ११३ आ।
उत्सिक्तं-काञ्जिकस्य सौवीरिणीतो यद् निष्काशनं तत्। बृ० प्र० २७५ अ।
उत्सिक्ता। उत्त० ३१९।
उत्सूर वेलातिक्रमः। पिण्ड० ७१। विशे० ६३७।
उत्सृजति-मुञ्चति, निसृजति। विशे० २०९।
उत्सृ(च्छ्र)तम्-प्रासादादि। आव० ८२६।
उत्सृष्टम्-उत्सर्जनम्-त्यागः। आचा० ३६२।
उत्सेधबहुलं-उत्सेधाख्यो नाभेरधस्तनो देहभागो गृह्यते, ततः सह आदिना-नाभेरधस्तनभागेन यथोक्तप्रमाणलक्षणेन वर्तते इति सादि, उत्सेधबहुलमिति भावः। जीवा० ४२।
उदंक-उदङ्को-येनोदकमुदच्यते। जं० प्र० १०१। जीवा० २६६।
उदंचनम्-अरघट्टघटीनिवहादिभिरुत्सेचनम्। उत्त० ५९१। पिण्ड० १५३।
उदंत-सरीरवट्टमाणी, वत्ता। नि० चू० तृ० १३३ अ। उदन्तः-वृत्तान्तः। आव० ६९२।
उदंतवाहगो-उदन्तवाहकः, वृत्तान्तवाहकः। आव० ५३६।
उदंतवाहतो-उदन्तवाहकः-दूतः। उत्त० १०८।
उदइए-उदयः-कर्मणां विपाकः स एवौदयिकः-क्रियामात्रं, उदयेन निष्पन्नः औदयिकः। भग० ६४९, ७२२। औदयिकः-ज्ञानावरणादीनामष्टानां प्रकृतीनामात्मीयात्मीयस्वरूपेण विपाकतोऽनुभवनमुदयः स एव, यथोक्तेन वोदयेन निष्पन्नः। अनु० ११४।
उदई-उदयः-अनुक्रमोदितस्यैवेति। भग० ५१२। अनुक्रमगतानामुदयः। भग० ९७३।
उदउल्ल-उदकार्द्रं, यद् बिन्दुसहितं भाजनादि गलद्बिन्दुरिति। ओघ० १७०। स्पष्टोपलभ्यमानजलसंसर्गं, अप्ध-

यत्प्रक्षितं चतुर्थभेद । पिण्ड० १४१ । उदकेनार्द्र । अनु० १६०। गजदम्बिन्दु । आचा० ३४६, ३७९।

उदउल्लादि-उदकार्द्रादि । आव० ५२ ।

उदए-पर्वगवनस्पतिविशेष । प्रज्ञा० ३३ । उदय । ओघ० ११३ । उदक -अन्ययूथिक । भग० ३२३ । पेढालपुत्रो निर्ग्रन्थ । सूत्र० ४०९ । षष्ठ आजीविकोपासक । भग० ३६९ । जलरुहवनस्पतिविशेष । प्रज्ञा० ३१, ३३ । जम्बूद्वीपभरते आगामिसप्तमतीर्थंकर । सम० १५३ । तृतीयतीर्थकृत्पूर्वभवनाम । सम० १५४ । उदय -जीवगतो लेश्यादिपरिणाम, फलप्रदानाभिमुख्यलक्षणं कर्म । उत्त० ३५ । उदय -विपाकवेदनानुभवरूप । पिण्ड० ४१ । उदक । प्रश्न० २७ । निर्ग्रन्थविशेष । सूत्र० ४०७ ।

उदचरा-उदकचरा -उदक चरन्तीति उदकचरा -पूतरक च्छदनकल्लोडुणकनसा मत्स्यकच्छपादय । आचा० २३८ ।

उदकं-नरुहविशेष । जावा० १६ । जलरुहभेद । आचा० ५७ ।

उदकगृहम्-उदकभवनम् । आचा० ३४१, २३८ ।

उदकप्रतिष्ठापनमात्रक-उपकरणधावनोदकप्रक्षेपस्थानम् । आचा० ३४१ ।

उदकरज -उदकरेणुसमूह । औप० ४७ । जावा० १९१ ।

उदकार्द्र-बिन्दुसहित । बृ० प्र० २८२ आ ।

उदग-उदक । सूत्र० ३०७ । अणन्तवणप्फइ । दश० चू० १२७ । नि० चू० द्वि० ७९ अ । उदकम्-अनन्तवनस्पति विशेष । दश० २२९ । नगरपरिखाजलम् । ज्ञाता० १० । जलाश्रयमानम् । भग० ९२ । जनपदसलवे पय उद कादिपर्याय । दश० २०८ । पूतुदकोपमानत खल्वक्षण नमुपभोक्तव्यम् । माधोरपमानम् । दश० १९ । शिरापा नीयम् । दश० १५३ ।

उदगगब्भे-उदकगर्भ -कालान्तरेण जलप्रवर्षणहेत । भग० १३३ ।

उदगजोणिया-उदकस्य योनय -परिणामकारणभूता उद कयोनय त एवोदकयोनिका-उदकजननस्वभावा । ठाणा० १४२ ।

उदगणाए-षष्ठाङ्ग द्वादशं ज्ञातम् । उत्त० ६१४ । उदक- नगरपरिखाजल तदेव नात-उदाहरण उदकज्ञातम् । ज्ञाता० १० । सम० ३६ । ज्ञाताया द्वादशमध्ययनम् । आव० ६५३ ।

उदगतीर-उदगागाराता जत्थ णिज्जति उदगं त उदगतीरं दूरंपि णज्जति उदगं तम्हा ण होइ त उदगतीरं, तो जत्तिय णदीपूरेण अक्कमति त उदगतीरं अहवा जहिं ठिएहिं जल दीसति अहवा णदीए नदीए उदगतीर अहवा जहि ठितो जलहिएण सिंचति सिंधुगंगादिणा तं जलतीरं, अहवा जावतिय विचिओ फुसंति अहवा जावतित जलेण फुस त उदगतीरं । नि० चू० तृ० १६ आ ।

उदगत्ताभा-गौतमगोत्रान्तरभेद । ठाणा० ३९० ।

उदगदोणी-उदगदोणी वा अरहट्टस्स भवति जीए उवरि घडीओ पाणियं पाडेंति । अहवा घरंगणए कट्ठमया अप्पोदएस देसेसु कीरइ तत्थ मणुस्सा ण्हायात । दश० चू० ११० । जलभाजनं यत्र तप्तं लोहं शीतलीकरणाय क्षिप्यते । भग० ६९७ । उदकद्रोणि -अरहट्टजलधारिका । दश० २१८ आ ।

उदगपउरो-उदकप्रचुर -देशविशेष सिन्धुविषयवत् । बृ० तृ० १३८ आ ।

उदगपडण-उदकपतनम् । आव० ९७३ ।

उदगबिंदु उदकबिन्दु । अनु० १६१ ।

उदगभाविया-जा उदके छूढपुव्वा सा । नि० चू० प्र० ४६ अ ।

उदगभासो - उदकभास -गावरभुजगेन्द्रस्यावासपर्वत । जावा० ३११ ।

उदगमच्छ-उदकमत्स्य -इन्द्रधनु खण्डम् । भग० १९६ । इन्द्रधनुष खण्डम् । जीवा० २८३ । इन्द्रधनु खण्डानि । अनु० १२१ ।

उदगमाला - उदकमाला -समपानीयोपरिभूता माला । जीवा० ३२४ । उदकशिखा वेलेत्यर्थ । ठाणा० ४८० ।

उदगवलणी । नि० चू० प्र० २४ अ ।

उदगवारगसमाण-उदकवारकसमान-लघुपानीयघटसमा नम् । जीवा० १२२ ।

उदगावत्त-उदकावर्तादयविलोम य अवगाढ निर्घाटित्यर्थ । अनु० १६१ ।

उदग्ग-उदग्र -उन्नतपयवगात्रेण उत्तरोत्तरं वृद्धिमान् । भग० १२१ । उर्ध्वं मसुत्रिनदिर इत्यर्थ प्रधान बहि । जीवा०

३४३। उदग्रः-उग्रः। ज्ञाता० ६६। उदग्रः-तीव्रः। ज्ञाता० ७६।
उदद्दहे-रत्नप्रभायां अपक्रान्तमहानरकः। ठाणा० ३६५।
उदतण-उदयणं-उदयगामि, प्रवर्द्धमानं। ठाणा० ३४२।
उदत्त-तुदनम् भूमिस्फोटनशस्त्रविशेषः। आव० ८२९। उदात्तः-उन्नतभाववान्। भग० १२५।
उदधि-जलनिचयः। ठाणा० १७७।
उदधिघनं। जीवा० १९१।
उदपानं-कूप.। बृ० प्र० १८३ अ।
उदप्पील - उदकोत्पीलः-तडागादिषु जलसमूहः। भग० १९९।
उदब्भेया-उदकोद्भेदः-गिरितटादिभ्यो जलोद्भवः। भग० १९९।
उदय-उदीरणावलिकागततत्पुद्गलोद्भूतसामर्थ्यता। आव० ७७। आयामः। भग० १८७। पताका। भग० १८७। पेढालपुत्र। पार्श्वजिनशिष्यः। ठाणा० ४५७। भाविया। नि० चू० प्र० २६४ आ।
उदयट्ठी-उदयार्थी, लाभार्थी। सूत्र० ३६४।
उदयण-उदयनः-वीणावत्सराजः। उत्त० १४२।
उदयणकुमारं-उदयनकुमारं, मृगावतीपुत्रं। आव० ६७।
उदयणमाया- उदयनमाता, भावप्रतिक्रमणदृष्टान्ते मृगावती आर्या। आव० ४८५।
उदयनिप्फन्ने-औदयिकभावस्य द्वितीयभेदः। भग० ७२२।
उदयपहो-उदकपथः, लोकानां जलानयनमार्गः। आव० ६४०।
उदयभासे-वेलन्धरनागराजस्यावासः। ठाणा० २२६।
उदयवद्दलं-उदकवर्द्दलं भाविरेणुसन्तापोपशान्तये। आव० ३३०।
उदयवत्तित्वं-समुदयः, समुदायो वा। प्रश्न० ६३।
उदयास्ताम्तरं-तापक्षेत्रम्। जं० प्र० ४४२। प्रकाशक्षेत्रं, तापक्षेत्रम्। जं० प्र० ४५५।
उदरं। आचा० ३८।
उदरपोप्पयं-उदरामर्शनम्। आव० ६६।
उदरवलिमंसं - उदरवलिमांसं, उदरोपरि या वलयाकारा मांसरेखा तस्या मांसं। आव० ६७८।
उदरि-वा-पित्तादिसमुत्थमष्टधोदरं तदस्यास्तीत्युदरी। आचा० २३५। उदरी-जलोदरी। प्रश्न० १६१।
उदवाहा-उदकवाहाः-अपकृष्टान्यल्पान्युदकवहनानि। भग० १९९।
उदसि-उदश्वित्। नि० चू० प्र० ६ अ।
उदहिकुमारा- उदधिकुमाराः-वरुणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्तिनो देवाः। भग० १९९। भुवनपतिदेवविशेषः। प्रज्ञा० ६९।
उदहिकुमारीओ - उदधिकुमार्यः - वरुणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्तिन्यो देव्यः। भग० १९९।
उदहिनामाणं - उदधिनाम्नाम्-आर्षमसमुद्राणाम्। आचा० २६२।
उदहीसरिसनामाणं - उदधिः-समुद्रस्तेन सदृक्-सदृशं नाम-अभिधानमेषामुदधिसदृग्नामानि-सागरोपमाणि उत्त० ६४७।
उदाइ-उदायी-कूणिकराज्ञो हस्ती। भग० ३१७। नृपविशेषः। आव० ६८७। भग० ६७३, ६७५।
उदाइज्ञा। भग० १८३।
उदाइमारक-साधुवेषधारक.। नि० चू० प्र० २९३ आ।
उदाइमारय - श्रमणवेषधारको विनयरत्नमुनिः। नि० चू० तृ० २३ आ।
उदाइयाए-असिवं उदाइयाए अभिद्रुतं। नि० चू० प्र० ९७ अ।
उदात्तं-उदात्तत्वं-उच्चैर्वृत्तिता। द्वितीयो वचनातिशयः। सम० ६३।
उदायण - वीतभयराजा। भग० ६१८। नि० चू० द्वि० १४५ अ। शतानीकराजपुत्रः। विपा० ६८। भग० ५५६। अन्तिमराजर्षि। ठाणा० ४३०। उदायनः-विगतिद्वारे वीतभयनगराधिपतिः। आव० ५३७। आव० २९८। सौवीरराजवृषभो राजा। उत्त० ४४८। प्रद्योतराज्ये गान्धर्वैवियाप्रधानः। आव० ६७३। सिन्धुकनगराधिपतिः। प्रश्न० ८९। अन्तिमराजर्षिः। बृ० प्र० १६६ अ।
उदायितकुमारो - उदायिकुमारः-पद्मावतीपुत्रः। आव० ६८३।
उदायिनृपः - यः कृत्रिमसाधुभिर्मारितः। सूत्र० २५०। आव० ५२९। सूत्र० ३६५। आचा० ९।

उदायिनृपमारक – श्रमणवेषधारको मुनिः । बृ० प्र० २०४ अ । विशे० १२५५ । ठाणा० १८५ ।

उदायिमारगो – उदायिमारकः – श्रमणवेषधारको मुनिः । नि० चू० द्वि० ३९ अ, ४१ अ ।

उदायी–कूणिकराजस्य हस्तिराजः । भग० ७२० । कोणिकपुत्रः । ठाणा० ४५६ ।

उदार–उदारं–उद्भटम् । जं० प्र० २०३ । उदारत्वं–अभिधेयार्थस्यातुच्छत्वं गुम्फगुणविशेषो वा । द्वाविंशतितमो वचनातिशयः । सम० ६३ । शोभनं । ठाणा० २३३ । प्रधानम् । प्रज्ञा० २६९ । ठाणा० २९५ । तीर्थकरगणधरशरीरापेक्षया शेषशरीरेभ्यः प्रधानं, सातिरेकयोजनसहस्रमानत्वाच्छेषशरीरेभ्यो महाप्रमाणं वा । अनु० १९६ । औदार्यवान् । भग० १२५ ।

उदाला–उदाराः–महान्तः । उत्त० ४१९ ।

उदाहड–भणिया । नि० चू० तृ० ४९ आ ।

उदाहरण–चरितकल्पितभेदम् । आव० ५९७ । कथनम् । उत्त० ३२२ । उदाहरणम्–साध्यसाधनान्वयव्यतिरेकप्रदर्शनमुदाहरणं, दृष्टान्तः । दश० ३३ ।

उदाहरे–उदाहरेत्–उदाहृतवान् । उत्त० २४१ ।

उदाहु – उताहो निपातो विकल्पार्थः । भग० १७ । भग० २३७ । उक्तवान् । आचा० १२८ । आहोश्वित् । उपा० ३८ ।

उदिए–उदितः–उदयं प्राप्तः, स्थित इत्यर्थः । जं० प्र० ५२८ ।

उदिओदए–उदितोदयः, कायोत्सर्गदृष्टान्ते राजा । आव० ७९९ । पारिणामिकीबुद्धौ पुरिमतालपुरे राजा । आव० ४३० । उदितोदितः–पुरिमतालनगराधिपतिः । विपा० ५८ । श्रीकान्तापतिः । नंदी १६६ ।

उदिक्खवंते–प्रतीक्ष्यमाणः । बृ० तृ० ११६ आ ।

उदिण्णं–उदीर्णम्–पीडितम् । आव० ८६३ । विपाकोदयमागतम् । प्रज्ञा० ४०३ ।

उदिन्न–उदीर्णम्–स्वत उदीरणाकरणेन वोदितम् । भग० ९० ।

उदिन्नमोह–उदीर्णमोहः–उत्कटवेदमोहनीयः । भग० २२३ ।

उदीणपाइणं–उदगेव उदीचीनं प्रागेव प्राचीनं उदीचीनं च तदुदीच्या आसन्नत्वात् प्राचीनं च तत्प्राच्याः प्रत्यासन्नत्वाद् उदीचीनप्राचीनम्–दिगन्तरं क्षेत्रदिगपेक्षया पूर्वोत्तरदिगित्यर्थ । भग० २०७ । उदीचीनं च तदुदीच्या आसन्नत्वात् प्राचीनं च प्राच्याः प्रत्यासन्नत्वादिति । जं० प्र० ४८० ।

उदीणवाए–यः उदीच्या दिशः समागच्छति वातः स उदीचीनवातः । जीवा० २९ । यः उदीच्या दिशः समागच्छति वातः, स उदीचीनवातः । प्रज्ञा० ३० ।

उदीर–उदीरिंसु–उदयप्राप्ते दलिके अनुदितांस्तान् आकृष्य करणेन वेदितवन्तः । ठाणा० २८९ । उदीरितवन्तः–अध्यवसायवशेनानुदीर्णोदयप्रवेशनतः । ठाणा० १७९ ।

उदीरइ–उदीरयति–प्राबल्येन प्रेरयति, पदार्थान्तरं प्रतिपादयति वा । भग० १८३ ।

उदीरण – अनुदयप्राप्तस्य करणेनाकृष्योदये प्रक्षेपणमिति । ठाणा० १०१, १९५ । उदीरणम्–अनुदितस्य करणविशेषादुदयप्रवेशनम् । भग० ५३ । उदीरणाकरणवशतः कर्मपुद्गलानामनुदयप्राप्तानामुदयावलिकायां प्रवेशनम् । प्रज्ञा० २९२ । करणेनाकृष्य दलिकस्योदये दानम् । ठाणा० ४१७ ।

उदीरणा–अप्राप्तसमये उदयप्रापणं सैव उदीरणा । जं० प्र० १६८ । अप्राप्तकालफलानां कर्मणामुदये प्रवेशनम् । ठाणा० २२१ ।

उदीरणाभविय–उदीरणाभविकम्–तत्र भविष्यतीति भवा सैव भविका, उदीरणा भविका यस्येति, उदीरणायां वा भव्यं–योग्यमुदीरणाभव्यमिति । भग० ५८ ।

उदीरिए–उदीरणम्–स्थिरस्य सतः प्रेरणम् । भग० १८ । उदीरणा–उदीरणा नाम अनुदयप्राप्तं चिरेणाऽऽगामिना कालेन यद्वेदयितव्यं कर्मदलिकं तस्य विशिष्टाध्यवसायलक्षणेन करणेनाकृष्योदये प्रक्षेपणं । भग० १५ ।

उदीरिय–उत्–प्राबल्येनेरितं–प्रेरितं उदीरितं । जीवा० १९३ ।

उदीरिया – उदीरिता–स्वभावतोऽनुदितान् पुद्गलानुदयप्राप्ते कर्मदलिके करणविशेषेण प्रक्षिप्य यान् वेदयते । भग० २४ । उदीरिता–उदयमुपनीता, वेदिता । भग० १८५ ।

उदीरेंतं–उदीरयन्तं–वस्त्वन्तरं प्रेरयन्तम् । ठाणा० १८५ ।

उदीरेइ–उदीरयति–भणति, प्रवर्तयति । ठाणा० १९७ ।

उदुम्बर–द्वितीयं महाग्रहम् । प्रश्न० १५१ । महाग्रहविशेष । आचा० २३५ । कर्मविपाकस्याष्टममध्ययनम् । ठाणा० ५०८ । न्यग्रोधविशेषः । आव० ८२८ ।

उदुम्बरदत्त–सागरदत्तसार्थवाहसुतः । ठाणा० ५०८ ।

उदुरुसेज्ञा-स्प्येत् । नि० चू० द्वि० ४९ आ।

उदुसुह-ऋतुसुख, ऋतुशुभं वा-कालोचितम् । प्रश्न० १४१।

उदू,उडू-द्विमासप्रमाणकालविशेष ऋतु । ठाणा० ३६९।

उदूखल-काष्ठनिर्मित खण्डनोपयोगि शस्त्रम् । भग० २१३। आचा० ३४४।

उदूरूढो-पाडनियत्तो । नि० चू० प्र० १८४ अ।

उद्दो-उद्र -म्लेच्छविशेष । चिलातदेशनिवासी। प्रश्न० १४।

उद्गमनप्रविभक्ति-चन्द्रसूर्ययोरुद्गमन-उदयन तत्प्रविभक्ती-रचना तदभिनयगर्भ यथा उदये सूर्यचन्द्रयोर्मण्डलमर्णं प्राच्या चारुण प्रकाशस्तथा यत्राभिनीयते तदुद्गमनप्रविभक्ति । षष्ठो नाट्यविधि । ज० प्र० ४१६।

उद्गीर्ण वान्तम् । उत्त० ३३९।

उद्ग्राहित-मेलितम् । •दी १५९।

उद्घाटित -प्रकाशित , प्रकटित । ठाणा० ४१२।

उद्घाटितज्ञ -प्रथमो विनेय । प्रज्ञा० ४२५।

उद्देहका-उद्देहका । बृ० द्वि० ६० आ।

उद्दडगा-ऊर्ध्वीकृतदण्डा ये सञ्चरन्ति । भग० ५१९।

उद्दडपुर-नगरनाम । भग० ६७५।

उद्दडा ऊर्ध्वीकृतदण्डा ये सचरन्ति । निरय० २५।

उद्दडुको-जनोपहास । बृ० द्वि० २४२ अ।

उद्दस-त्रीन्द्रियजीवभेद । उत्त० ६९५।

उद्दसगा-त्रीन्द्रियविशेष । प्रज्ञा० ४२।

उद्दसे-उद्दश । आव० २१७।

उदप मारणतिए-उदये मारणान्तिके वेदनोदये मारणान्तिकेऽपि न क्षोभ' कार्यं । योगसमहे एकोनत्रिंशत्तमो योग । आव० ६६४।

उद्दद्दर-सुभिक्खं । नि० चू० प्र० ८९ अ। सुभिक्ष। नि० चू० प्र० ३१५ अ। ऊर्ध्वंदरं ते दरा ऊर्ध्वं यत्र पूर्यन्ते तदूर्ध्वदरम् । बृ० द्वि० १०० अ। दुविधा दरा-धण्णदरा य पोट्टदरा य, ते उद्ध पूरेंति जत्थ त ऽद्दरं-सुभिक्ख। नि० चू० प्र० २२६ अ।

उद्दवण-उत्थान-नाश । बृ० द्वि० ७९ अ।

उद्दवण - अपद्रावणम्-अतिपातविवर्जिता पीडा । पिण्ड० ३७ ।

उद्दवणकर - मारणान्तिकवेदनाकारि धनहरणाद्युपद्रवकारि वा। औप० ४२।

उद्दवणया-कुम्पादाधारणता । भग० ९३ । त्रिजाए सप्पो अन्यत्र नीयते । नि० चू० प्र० ३३५ अ।

उद्दवणा-उपद्रवणमपद्रवण वा । प्राणवधस्य नवम पर्याय । प्रश्न० ५।

उद्दयातितगणे-गणविशेष । ठाणा० ४५१।

उद्दविया-अपद्राविता - उत्त्रासिता । आव० ५७४। मारिता । भग० ,७६६ ।

उद्दवेंति -अपद्रावयन्ति-जीविताद् व्यपरोपयन्ति । प्रज्ञा० ५९३।

उद्दवेउ-अपद्राव्य । उत्त० २०७।

उद्दवेह-विनाशयत । उपा० ४९।

उद्दवेहिइ - अपद्रावयिष्यति-उपद्रवान् करिष्यति । भग० ६९१।

उद्दाइता-शोभमाना । ज्ञाता० २७।

उद्दाइ उद्दाति-रचयति । भग० ९२ । उद्याति-जलस्योपरि वर्तते। भग० १८४। अपद्रवति-म्रियते । भग० १११।

उद्दाइआ-उपद्राविका, उपद्रवकारिणी । ओघ० १७। उपद्रोत्री । ओघ० १५।

उद्दाइत्ता-अपद्रुत्य-मृत्वा । भग० १११। अपद्राय-मृत्वा। ठाणा० ४७१। अपद्राय-मृत्वा । जीवा० २६२। जं० प्र० ४२५।

उद्दाण-उद्दाण, वैधर्म्यम् । आव० ४३७।

उद्दाणग-मृतकम् । आव० ७००।

उद्दाणभत्ताया-अपद्राणभक्ता, भक्तारेण परिठविता। नि० चू० प्र० १०९ आ।

उद्दाणि - उद्रा -सिन्धुविषये मत्स्यास्त सूक्ष्मचर्मनिष्पन्नानि उद्राणि। आचा० ३९४।

उद्दाम - उद्दाम -चरणनिपातदीर्घोपमर्दनिरपेक्षत्वाद् द्रुतचारी। अनु० २६।

उद्दामिया-उद्दामिता-अपनीतबन्धना, प्रलम्बिता । विपा० ४५ ।

उद्दायंति-अपद्रान्ति-प्राणैर्विमुच्यन्ते । आचा० ११७।

उद्दायण वीतभयणगरे राया। नि० चू० प्र० ३४६ आ।

उद्दाल - अवदाल , विदलनं, पादादिन्यासे अधोगमनम्। विदलनम् । जीवा० २३२। राज० ९३।

उद्दालक-एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेष । जीवा० १४५।

उद्दाला-उद्दालाः, द्रुमविशेषः। जं० प्र० ९८।
उद्दालिओ-उद्दालितः-बलाद्गृहीतः। आव० ७१७। अपहृतः। उत्त० ३०१।
उद्दावणया-उत्त्रासनम्। भग० १८४।
उद्दावो-उद्रावः-स्थानान्तरेष्वयाप्यसङ्क्रामिलः। जीवा० ३५५।
उद्दाह-प्रकृष्टो दाहः। ठाणा० ५०८।
उद्दिक्खाहि-प्रतीक्षस्व। नि० चू० प्र० ३२२ अ।
उद्दिट्ठ-यावदर्थिकाः पाखण्डिनः श्रमणान्-साधून् उद्दिश्य दुर्भिक्षापगमादौ यद्भिक्षावितरणं तदौद्देशिकमुद्दिष्टम्। प्रश्न० १५३। उद्दिष्टम्-स्वार्थमेव निष्पन्नमशनादिकं भिक्षाचराणां दानाय यत् पृथक्कल्पितं तत्। पिण्ड० ७७। उद्दिट्ठ उद्देसेण ओभासंति। नि० चू० द्वि० १६३ अ। भासति। नि० चू० द्वि० १६३ आ। वस्त्रैषणायाः प्रथमो भेदः। आचा० ३७७। उद्दिष्टा-अमावास्या। भग० १३५।
उद्दिट्ठआदेसं-समणा निग्गंथ सक्क तावसा गेरुय आजीव एतेसु उद्दिट्ठआदेसं भणाति। नि० चू० प्र० २३० आ।
उद्दिट्ठभत्तं-उद्दिष्टभक्तं-दानाय परिकल्पितं यद्भक्तमशनादिकं तत्। सूत्र० ३९९।
उद्दिट्ठभत्तपरिण्णाए-उद्दिष्टं-तमेव श्रावकमुद्दिश्य कृतं भक्तं-ओदनादि उद्दिष्टभक्तं तत्परिज्ञातं येनासावुद्दिष्टभक्तपरिज्ञातः, श्रमणोपासकस्य दशमी प्रतिमा। सम० १९।
उद्दिट्ठवज्जए-उद्दिष्टवर्जकः, श्रावकस्य दशमी प्रतिज्ञा। आव० ६४६।
उद्दिट्ठसमादेसं-णिग्गंथा-साहू। नि० चू० प्र० २३० आ।
उद्दिट्ठा-उद्दिष्टा-यस्याः स्थापनायाः उत्कृष्टा आरोपणा ज्ञातुमिष्टा सा ईप्सिता। व्य० प्र० ७५ आ। अमावास्या। जीवा० ३०५। ठाणा० २३७। राज० १२३। उपदिष्टा। औप० १००। विपा० ९३। कथिताः। उत्त० २२९।
उद्दिट्ठाओ-उद्दिष्टा-सामान्यतोऽभिहिताः। ठाणा० ३०८।
उद्दिट्ठो-उद्दिष्टः-प्रतिपादितः। सूत्र० १७६।
उद्दित्ता-प्रज्वालितः। बृ० द्वि० ६१ आ।
उद्दिट्ठं। बृ० प्र० ८३ अ।
उद्दिसति-उवसंपज्जते इत्यर्थः। नि० चू० प्र० २९१ आ।
उद्दिसियपत्थं-गुरुसमक्षं उद्दिष्टं-प्रतिज्ञातं यत्र उद्दिष्टपत्रम्। बृ० प्र० ९७ आ।
उद्दिस्स-उद्दिश्य, उद्दिशति। आचा० ३२५।
उद्दिस्सपविभत्तगती-उद्दिश्यप्रविभक्तगतिः-प्रविभक्तं प्रतिनियतमाचार्यादिकमुद्दिश्य यत्तत्पार्श्वे गच्छति सा। विहायोगतेस्त्रयोदशो भेदः। प्रज्ञा० ३२७।
उद्दिस्सामि-वाचयामि। विशे० १३५५।
उद्दुढं-शुषितम्, (देशी०)। बृ० द्वि० १०५ अ। नि० चू० प्र० २२७ अ।
उद्दढसेस-जं लुंपगेहिं अप्पणट्ठा वाहिं णिणीतं तं मोत्तुं सेसं छड्डियं। नि० चू० द्वि० २० आ।
उद्देस-उद्देशः-अध्ययनैकदेशभूतम्। दश० ७। उद्देशनं उद्देशः-वस्तुनः सामान्याभिधानं। विशे० ६३९। वाचनासूत्रप्रदानम्। व्य० प्र० २६ अ। उद्दिश्यते इति उपदेशः, मद्भक्तकर्तव्यादेशः। नारकादिव्यपदेशः उच्चावचगोत्रादिव्यपदेशो वा। आचा० १२४। गुरुवचनविशेष.। अनु० ४। यावदर्थिकादिप्रणिधानम्। पिण्ड० ३५। उद्देशनमुद्देशः-सामान्याभिधानरूपः। अनु० २५७। उद्देशकः-द्वीपसमुद्रोद्देशकावयवविशेषः। भग० ७६९। अध्ययनार्थदेशाभिधायी अध्ययनविभागः। भग० ५। सामान्याभिधानमध्ययनम्। आव० १०४। गुरोः सामान्याभिधायि वचनम्। उत्त० ७३। उद्देसो अभिनवस्स। नि० चू० प्र० २२३आ। वाचयामीति गुरुप्रतिज्ञारूपः उद्देशः। विशे० १३९६। अविसेसिओ उद्देसो। नि० चू० द्वि० १०८ अ। क्षेत्रकालविभागः। बृ० द्वि० २६९ अ।
उद्देसग-उद्देशकः-त्रीन्द्रियजन्तुविशेष.। जीवा० ३२।
उद्देसणंतेवासी-उद्देशनान्तेवासी। ठाणा० २४०।
उद्देसणकाला-उद्देशनकाला.-उद्देशावसराः श्रुतोपचाररूपाः। सम० ४६।
उद्देसणायरिय-उद्देशनाचार्य., आचार्यविशेष.। दश० ३१।
उद्देसणायरिए-उद्देशनम्-अङ्गादेः पठनेऽधिकारित्वकरणं तत्र तेन वाऽऽचार्यः-गुरु.उद्देशनाचार्य.। ठाणा० २४०।
उद्देसिअ-उद्दिश्य कृतम् औद्देशिकम्-उद्दिष्टकृतकर्मादिभेदम्। दश० १७४।
उद्देसिअचरिमतिग-उद्देशचरमत्रितयम्, औद्देशिकस्य पाखण्डश्रमणनिर्ग्रन्थविषयम्। दश० १६२।

उद्धाइया-उद्धाविताः। उत्त० १००। वेगेन प्रसृताः। उत्त० ३६४।

उद्धाईया-उद्धाविताः सम्मुखगताः। उत्त० १७९।

उद्धायमाणो-उत्तिष्ठन्। प्रश्न० ६२। उद्धावमानः-प्रवर्द्धमानः। ज्ञाता० ७०।

उद्धारपलिओवमे-तत्र वक्ष्यमाणस्वरूपवालाग्राणां तत्खण्डानां वा तदुद्धारेण द्वीपसमुद्राणां वा प्रतिसमयमुद्धरणं-अपोद्धरणमपहरणमुद्धारः तद्विषयं तत्प्रधानं वा पल्योपममुद्धारपल्योपमम्। अनु० १८०।

उद्धारणं-कार्यस्य निष्पादनम्। व्य० प्र० १७२ अ।

उद्धिअ-उद्धृतः-देशान्निर्वासितः। जं० प्र० २७७।

उद्धिय-उद्धृता-निष्काशनम्। ठाणा० ४६३।

उद्धी-उद्धिः। जं० प्र० ४५४। 'मेलितु पण्हियाओ चलणे विन्धारिऊण वाहिरओ। ठाउस्सग्गं एसो वाहिरउद्धी मुणेयव्वो॥ अंगुट्ठे मेलविउं वित्थारिय पण्हियाओ बाहिं तु। ठाउस्सग्गं एसो भणिओ अब्भितरद्धित्ति॥' आव० ७९८।

उद्धीमुहकलंबुआपुप्फसंठिता-ऊर्ध्वमुखकलम्बुकपुष्पसंस्थिता-ऊर्ध्वमुखस्य कलम्बुकापुष्पस्येव-नालिकापुष्पस्येव संस्थितं-संस्थानं यस्याः सा। सूर्य० ६७।

उद्धुअ-इतस्ततो विप्रसृत.। जं० प्र० ५१। जीवा० १६०, २०६।

उद्धुताए-उद्धतया-दर्पातिशयेन। भग० ५२७।

उद्धुम्ममाणं-उत्पाद्यमानम्। औप० ४७।

उद्धुय-उद्धुतः-उद्धूतः। औप० ५। इतस्ततो विप्रसृतः। सूर्य० २९३। उद्धूतः। भग० ५४०। उद्धूता-वायुना। ज्ञाता० ८०।

उद्धुयाए-उद्धृतया-वस्त्रादीनामुद्धृतत्वेन, उद्धतया वा तद्दर्पया। भग० १६७।

उद्धुव्वमाणं-उत्पाद्यमानम्। औप० ४७।

उद्धुसियं-रोमाञ्चितम्। उद्धुषितम्। नि० चू० प्र० २१५ आ।

उद्धूय-उद्धृतः। आव० ५२०।

उद्धूलिता-मलत्वा। नि० चू० प्र० ३२४ आ।

उद्धिज्जत्थं-सम्मूर्च्छजत्वम्। ठाणा० ११४।

उद्धामक-उन्नतविहारी। व्य० प्र० १६८ अ।

उद्धामकभिक्षाचर्या-यस्मिन्ग्रामेषु भिक्षार्थं पर्यटनम्। बृ० प्र० २०६ आ।

उन्नतकं-उच्छ्रितम्। प्रश्न० १५४। पामिच्चं, भिक्षादोषः। आ० चा० ३२९।

उन्नतविहारेण मासकल्पादिना। उत्त० ५८७।

उन्नानि-प्रतिश्रोतोगामिनी सा। व्य० प्र० २५ आ।

उद्युक्तः-परायणः। आव० ५८७।

उद्राः-सिन्धुविषये मत्स्यास्तत्सूक्ष्मचर्मनिष्पन्नानि। आचा० ३९४।

उद्राणि-सिन्धुविषये मत्स्यास्तत्सूक्ष्मचर्मनिष्पन्नानि। आचा० ३९४।

उद्वर्त्तनं-निष्क्रमणम्। आचा० ६९। स्थित्याद्येर्वृद्धिकरणस्वरूपम्। भग० ७५।

उद्वर्त्तनकरणं-करणविशेष.। भग० २४, १०।

उद्वर्त्य-निष्क्रम्य। आव० १७७।

उद्वसं-शून्यम्। उत्त० १०९।

उद्वसितगृहं-शून्यागारम्। उत्त० ६३५।

उद्वालयन्-आलोडयन्। दश० १८।

उन्न-और्णिकः। ठाणा० ३३८।

उन्नए-उन्नतः। सम० ७१।

उन्नतमणे-उन्नतमनाः-प्रकृत्या औदार्यादियुक्तमनाः। ठाणा० १८३।

उन्नतरूवे-सम्पानावयवाभिसौन्दर्याद् उन्नतरूपः। ठाणा० १८३।

उन्नतावत्ते-उन्नतः-उच्छ्रितः स चासावावर्तश्चेति उन्नतावर्त्त.। ठाणा० २८८।

उन्नय-उन्नतं-अङ्गुलिपर्वाणि। औप० १०१। गुणवन्ति, उच्चानि च। ज्ञाता० ३।

उन्नयनं-भृङ्गारविशेष.। जं० प्र० ११३।

उन्नयमाणे-उन्नतमानः, उन्नतो मानोऽस्येत्युन्नतमानः, उन्नतं वाऽऽत्मानं मन्यत इति। आचा० २१५।

उन्नाईओ। नि० चू० प्र० ११२ अ।

उन्नात-महाविदेहे नगरविशेष.। निरय० ४०।

उन्नामओ-ऊर्णामयः। आव० ४१८।

उन्नामिज्जंते-उन्नाम्यते ऊर्ध्वमुत्क्षिप्यते। जीवा० ३०७।

उप्पामिज्जाइ(प)-उप्पामिज-उत्क्षिप्त॰, प्रसिद्धि गत इति यावत्। अनु॰ १४३।

उप्पिङ्गीङ्गतं-पीडितम्। जीवा॰ २७१।

उप्पिय-और्णिकम्। ठाणा॰ ३३०।

उन्मग्नजला-नदीविशेष.। ठाणा॰ ७१।

उन्माथितः। आव॰ १५६।

उपकारिका - राजधानीस्वामिसत्कप्रासादावतंसकादीनां पीठिका। जीवा॰ २२२।

उपकार्योपकारिका - राजसुप्रसादोपकारिका। च॰ प्र॰ ३२१। जीवा॰ २२२।

उपगतश्लाघं - उपगतश्लाघत्वं-उक्तगुणयोगात्प्राप्तश्लाघता। चतुर्विंशतितमो वचनातिशय.। सम॰ ६३।

उपगूहनं-परिष्वजनम्। नि॰ चू॰ प्र॰ २५६ आ।

उपघसरं-निर्गमनम्। ओघ॰ १२२।

उपचयद्रव्यमन्दः-य परिस्थूरतरशरीरतया गमनादि व्यापारं कर्तुं न शक्नोति। बृ॰ प्र॰ ११२ अ।

उपचयभावमन्दः-यो बुद्धेरपचयेन यतस्ततः कार्यं कर्तुं नोत्सहते। बृ॰ प्र॰ ११३ अ।

उपचारोपेतं-उपचारोपेतत्वं-अग्राम्यता। तृतीयो वचनातिशय। सम॰ ६३।

उपचियमंसो-बलिष्ठशरीरो। नि॰ चू॰ प्र॰ २६६ आ।

उपदर्शना - जम्बूद्वीपनीलवर्षधरपर्वते नवमकूट। ठाणा॰ ७२।

उपदिष्टा - महाकल्याणकसम्बन्धितया पुण्यतिथित्वेन प्रख्याता, तथा पौर्णमासीषु च तिसृष्वपि चतुर्मासकतिथिष्वित्यर्थ। सूत्र॰ ४०८।

उपदेशः-श्रुतस्य पर्याय। विशे॰ ४१६।

उपधानकं-उच्छीर्षकम्। आव॰ ६६८। बिब्बोयणा। बिब्बोयणा, तपनीयमय्यो गण्डोपधानका। जीवा॰ २३१।

उपनीतरागं-उपनीतरागत्वं-मालकोशादिग्रामरागयुक्तता। सप्तमो वचनातिशय। सम॰ ६२।

उपपत्ति। भग॰ १७।

उपबृंहयन्-अनुमोदयन्। ज्ञाता॰ १४।

उपभोगपरिभोगः - अशनादिवाहनान्तानां बहुसावद्यानां वर्जनमल्पसावद्यानामपि परिमाणम्। तत्त्वा॰ ७-१६।

उपमानं - दृष्टान्त। ओघ॰ १७। श्रुतादिविज्ञानस्य समानार्थोपलम्भने सदृशमित्यन्यमानमुपमानम्। ठाणा॰ २६२।

उपयुक्तद्रव्यसत्यक - उपयुक्त-अव्यक्तं द्रव्यमन - समाधानाय प्रज्ञापि तत्। आचा॰ १०६।

उपरतकायिकी - अप्रमत्तसंयतस्योपरतस्य सावद्यानिवृत्तस्य क्रिया। कायिकीक्रियायास्तृतीयो भेद। आव॰ ६११।

उपरितनक्षुल्लकप्रतराः-तत्र तिर्यग्लोकमध्यवर्तिनः सर्वलघुरज्जुप्रमाणात् क्षुल्लकप्रतरादारभ्य यावदूर्ध्वं नव योजनशतानि तावत्सा रत्नप्रभायां पृथिव्यां ये प्रतरा ये उपरितनक्षुल्लकप्रतरा। नंदी ११०।

उपरिमाण-उपरितना। आव॰ ६४०।

उपर्यविभ्रम्भः। आचा॰ १०६।

उपलिंपंति - पद्मकुसुमस्य तन्दिकाद्यस्य न गोमयादिना रन्ध्रं भज्यन्ति। ज्ञाता॰ ११०।

उपयस्तुं-उपयाचितुं कर्तुम्। पिण्ड॰ १६०।

उपयंतो-उपागच्छन्, आगच्छन्। आव॰ ४३४।

उपशमनिष्पन्नः-उपशान्तक्रोध इत्यादि उदयाभावलक्षण आत्मपरिणाम इति भावना। ठाणा॰ ३७८।

उपशान्ता-प्रदेशतोऽप्यवेद्यमाना कषाया। ठाणा॰ ७०।

उपधा-द्वेष। व्य॰ प्र॰ ३ अ।

उपसंपद्-उपगमनम्-उपसम्पत्ति-प्राप्ति। भग॰ ९०४।

उपसंपदालोचना-आलोचनाया द्वितीयो भेद। व्य॰ प्र॰ ४८ आ।

उपसङ्ख्यात-अनिष्टरूपस्तपसङ्ख्यात। नंदी १२१।

उपसृष्टं-उपसर्गितम्। व्य॰ द्वि॰ १२७ आ।

उपस्थापनं-पुनर्दीक्षणं पुनश्चरणं पुनर्व्रतारोपणम्। तत्त्वा॰ ९-२२।

उपस्थापयितुं-उपस्थापनाकरणेन। व्य॰ द्वि॰ २१० अ।

उपस्पृशाति-वस्त्राणि प्रक्षालयति। आव॰ ४३४।

उपहितं-भोजनस्थाने ढौकितं भक्तमिति भाव। ठाणा॰ १४८।

उपादानकारणं-मृदादि। ठाणा॰ ८०।

उपाधिः-उपाधानमुपाधि -उपधिः। भग॰ ८।

उपाया-व्यायामादीनि। आचा॰ ८२।

उपायोपेयभावलक्षणः-वचनरूपापन्नं प्रकरणमुपायः तत्परिज्ञानं चोपेयम् । प्रज्ञा० २१

उपार्द्धभाग-पोपचतुर्थभागः । आचा० ३२६ ।

उपालंभ – उपालम्भः शिनेयस्याविहितविधायिनः । ज्ञाता० ७७ ।

उपालक-निर्व्यूहः, गवाक्षः । व्य० प्र० ११३ अ ।

उपेति-करोति । आचा० २१७ ।

उपोद्घातनिर्युक्तिः-निर्युक्तिभेदः । ठाणा० ६ ।

उप्पइयं-उत्पतितं-उद्भूतम् । उत्त० ११९ ।

उप्पज्जंते – उत्पद्यन्ते, एतत्प्रभावात् स्फातिमद्भवन्ति । जं० प्र० २५८ ।

उप्पज्जमाणकालं – उत्पद्यमानकालं – आद्यसमयादारभ्योत्परयन्तसमय यावदुत्पद्यमानत्वस्येष्टत्वाद् वर्तमानभविष्यत्कालविषयं द्रव्यम् । भग० १८ ।

उप्पडा-त्रीन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

उप्पण-उत्पन्न-विधिना प्राप्तम् । दश० १८१ ।

उप्पणमिस्सिया-उत्पन्नमिश्रिता-उत्पन्ना मिश्रिता अनुत्पन्नैः सह सङ्ख्या पूरणार्थं यत्र सा । सत्यामृषाभाषाया प्रथमो भेदः । प्रज्ञा० २५६ ।

उप्पत्ति-उत्पत्ति -निदानम् । व्य० प्र० ११ आ ।

उप्पत्तिअं-पर्वतिथिमन्तरेणाकस्मिकं भोज्यम् । बृ० द्वि० १९२ अ ।

उप्पत्तिआ – उत्पत्तिरेव न शास्त्राभ्यासकर्मपरिशीलनादिकं प्रयोजनं-कारणं यस्याः सा औत्पत्तिकी । नंदी १४४ ।

उप्पत्तिकसाय-द्रव्यादिर्बाह्यात् कषायप्रभवः तदेव कषायनिमित्तत्वात् उत्पत्तिकषायः । आव० २९० । शरीरोपधिक्षेत्रवास्तुस्थाण्वादयो यदाश्रित्य तेषामुत्पत्तिः । आचा० ९१ ।

उप्पत्तिया-औत्पत्तिकी- उत्पत्तिरेव प्रयोजनं यस्याः सा, बुद्धिविशेषः । आव० ४१४ । उत्पत्तिकी-अदृष्टाश्रुताननुभूतविषयाकस्माद्भवनशीला । राज० ११६ ।

उप्पत्ती-उत्पत्तिकरः स्वकल्पनाशिल्पनिर्मितः शतरूपकादि । आव० ४९९ । आरम्भमानम् । ठाणा० २८५ सामान्यतो या च विशेषत । ठाणा० ४४९ ।

उप्पन्न-उत्पन्नविषया-सत्यामृषाभाषाभेदः । दश० २०९ ।

उप्पन्नमीसते – उत्पन्नविषयं मिश्रं-सत्यामृषा उत्पन्नमिश्रं तदेवोत्पन्नमिश्रकम् । ठाणा० ४८९ ।

उप्पयंते-भूतलादुत्पततः । ज्ञाता० ४६ ।

उप्पयनिवयं-उत्पातः-आकाशे उच्छलनं निपात-तस्मादवपतनं उत्पातपूर्वो निपातो यस्मिन् तदुत्पातनिपातम् । दिव्यनाट्यविधिः । जं० प्र० ४१३ ।

उप्पराउ-उपरितः-उपरिष्टात् । दश० ३८ ।

उप्परामुहो-उपरिमुखः । आव० १८१ ।

उप्पराहुत्तो-उपरिभूत. । आव० ५०२ ।

उप्पलं-उत्पल-नीलोत्पलादि । आचा० ३४८ । चतुरशीतिरुत्पलाङ्गशतसहस्राणि । जीवा० ३४५ । गर्दभकम् । राज० ८ । जीवा० १७७ । उत्पलकुष्ठं, नीलोत्पलं वा । जीवा० १७७ । उत्पलं । प्रज्ञा० ३७ । जलरुहविशेष । प्रज्ञा० २३ । कालविशेषः । भग० २७५ । उत्पलं-चतुरशीत्या लक्षैरुत्पलाङ्गैः । अनु० १०० । उत्पलार्थः एकादशशते प्रथम उद्देशकः । भग० ५११ । कालविशेषः । भग० ८८८ । भग० २१० । कालविशेषः । सूर्य० ९१ । नीलोत्पलमुत्पलकुष्ठं वा । सम० ६१ । औप० १६ । आरणकल्पे विमानविशेषः । सम० ३८ । उत्पलकुष्ठं-गन्धद्रव्यविशेषः । ज्ञाता० १२९ । उत्पलं-नीलोत्पलादि । दश० १८५ । उत्पलं-कुष्ठम् । जं० प्र० ११५ ।

उप्पलंग-उत्पलाङ्गं – चतुरशीतिर्हूहुकशतसहस्राणि । जीवा० ३४५ । कालविशेषः । ठाणा० ८६ । उत्पलाङ्ग , कालविशेषः । सूर्य० ९१ । भग० ८८८ । उत्पलाङ्गं चतुरशीत्या लक्षैर्हूहुकैः । अनु० १०० ।

उप्पलगुम्मा-उत्पलगुल्मा, पुष्करिणीनाम । जं० प्र० ३३५, ३६० ।

उप्पलनालं-उत्पलनाल-उत्पलं-नीलोत्पलादि नालं-तस्यैवाधारः । आचा० ३४८ ।

उप्पलपउमोपसोभिता – उत्पलपद्मोपशोभिता । आव० ८१९ ।

उप्पलबेंटियां – उत्पलवृन्तानि नियमविशेषात् प्राधान्यतया भैक्ष्यत्वेन-येषां सन्ति ते उत्पलवृन्तिकाः । औप० १०९ ।

उप्पलयं-उत्पलकं-गर्दभकम् । जीवा० १८२ ।

उप्पलहत्थगा – उत्पलाख्यजलजकुसुमसमूहविशेषाः । जं० प्र० ४४ । उत्पलाख्यजलजकुसुमसङ्घातविशेषाः । राज० ८ ।

उप्पलहत्थय-उत्पलहस्तकः – उत्पलाख्यजलजकुसुमसमूहविशेषः । जीवा० १९९ ।

उप्पला-पिशाचेन्द्रकालस्य तृतीयाग्रमहिषी । ठाणा० २०४। पुष्करिणीविशेषः । जं० प्र० ३६० ।
उप्पलाई-गर्दभकानि ईषत्पीलानि वा । जं० प्र० २६ ।
उप्पलावए-उत्प्लावयति । दश० २०५ ।
उप्पलुज्जला-उत्पलोज्ज्वला, पुष्करिणीनाम । जं० प्र० ३३५, ३६० ।
उप्पलुद्देसए – उत्पलोद्देशकः–एकादशशते प्रथमः । भग० ५६६ ।
उप्पह-उत्पथ –उन्मार्ग । उत्त० ५४८ । परसमयः । ठाणा० २४१ ।
उप्पा-उत्पाद । ठाणा० १९ ।
उप्पाइओ-उत्पातः । आव० २९८ ।
उप्पाइत्ता-उत्पादयितुं–सम्पादनाय, अथवाऽनुत्पन्नानां भोगानामुत्पादयिता–उत्पादकः । ठाणा० २६४ । सम्पादनशीलः । ठाणा० ३८६ ।
उप्पाइया – उत्पाता –अनिष्टसूचका रुधिरवृष्ट्यादयस्तद्धेतुका येऽनर्थास्ते औत्पातिकाः । सम० ६२ ।
उप्पाए – उत्पातं–सहजरुधिरवृष्ट्यादिलक्षणोत्पातफलनिरूपकनिमित्तशास्त्रम् । सम० ४९ । उत्पादः । आव० ६६२ ।
उप्पाएति – उत्–प्राबल्येन पावयति । नि० चू० प्र० २५२ आ ।
उप्पाएमाणे-स्युत्पादयन् । उत्त० १५७ ।
उप्पाओ – उत्पाद –उत्पत्तिहेतुभूतः क्रियालक्षण । विशे० २४१ ।
उप्पाते-उत्पाद –सहजरुधिरवृष्ट्यादिः । ठाणा० ४२७ ।
उप्पाय-उत्पातपूर्वं–प्रथमपूर्वनाम । ठाणा० ४८४ । उत्पात – प्रकृतिविकारो रक्तवृष्ट्यादि । प्रश्न० १०९ । उत्कापातदिग्दाहादिकम् । अनु० २१६ । उत्पादः–यतो नानुत्पन्नं वस्तु लक्ष्यते अतोऽयमपि वस्तुलक्षणम् । आव० २८२ । उत्पातं–सहजरुधिरवृष्ट्यादिकम् । आव० ६६० । उत्पातं–वपिहसितादि । सूत्र० ३१८ । प्रथमपूर्वम् । नन्दी ५२ । ठाणा० ११९ ।
उप्पायग-उत्पादक –ये भूमिं भित्त्वा समुत्तिष्ठन्ति ते । व्य० द्वि० २८८ आ ।
उप्पायण – उत्पादना – सम्पादनं, गृहस्थात्पिण्डादेरुपार्जनमित्यर्थः । ठाणा० १५९ ।
उप्पायणा-उत्पादना–धात्र्यादिका षोडशविधा । प्रश्न० १५५ । धात्र्यादिलक्षणदोषविशेषः । आव० ५७६ ।
उप्पायणोवघाते– उत्पादनया–उत्पादनादोषैः, उपघातः–अशुद्धता उत्पादनोपघातः । ठाणा० ३२० ।
उप्पायपव्वए-उत्पातपर्वतः । सम० ३३ । तिर्यग्लोकगमनाय यत्रागत्योत्पतति सः । भग० १४४ ।
उप्पायपव्वयगा-उत्पातपर्वताः–यत्रागत्य बहवः सूर्याभविमानवासिनो वैमानिका देवा देव्यश्च विचित्रक्रीडानिमित्तं वैक्रियशरीरमारचयन्ति । राज० ७९ ।
उप्पायपव्वया-यत्रागत्य बहवो व्यन्तरदेवा देव्यश्च विचित्रक्रीडानिमित्तं वैक्रियशरीरमारचयन्ति । जं० प्र० ४४ । जीवा० १९९ ।
उप्पायपुव्वं-उत्पादपूर्वम्, तत्र सव्वदव्वाणं पज्जवाण य उप्पायमगीकाउं पण्णवणा कया । नंदी २४१ । यत्रोत्पादमाश्रित्य द्रव्यपर्यायाणां प्ररूपणा कृता तद् । सम० २६ ।
उप्पाया-त्रीन्द्रियविशेष । प्रज्ञा० ४२ ।
उप्पाल-प्रहरणकोशविशेष । जीवा० २३२ । प्रहरणकोश –प्रहरणस्थानम् । राज० ९३ । मत्तवारणम् । जीवा० २०९ ।
उप्पालसंठिओ-उत्पालसंस्थित –मत्तवारणसंस्थित । जीवा० २०९ ।
उप्पासितो-उत्त्रासित –अर्मुपितः । आव० १०१ ।
उप्पासिया-हसिता । नि० चू० प्र० ६९ अ ।
उप्पि-उपरि । भग० ८२ । ठाणा० ४३२ ।
उप्पिजल-उप्पिञ्जल–आकुलकम् । राज० ५२ ।
उप्पिकच्छ-श्वाससयुक्तम् । जं० प्र० ४० । श्वासयुक्तं, त्वरितम् । ठाणा० ३९६ । अनु० १३२ । आकुल गोरमूर्त बोध्यते । श्वासयुक्तं वा । जीवा० १९४ । भीतौ । जाला० १६१ ।
उप्पिट्टणयं-उत्पिट्टनकं–कुट्टनोत्पिट्टना । उत्त० ८ ।
उप्पिट्टणा-उत्–प्राबल्येन पिट्टना उत्पिट्टना । उत्त० ८ ।
उप्पित्थं-श्वासयुक्तम् ।
उप्पियंत-उत्पिबन्तः–आमादयन्त । प्रश्न० ६३ ।
उप्पियंतं-मुहुर्मुहुः श्वसन्तम् । व्य० द्वि० ५३ आ ।
उप्पियणं-मुहु श्वसनम् । व्य० द्वि० ५३ अ ।
उप्पिलणा-उत्पीडनं–प्राणादीनां प्लावनम् । व्य० द्वि० १० अ ।

उप्पील-उत्पील.-समूहः । प्रश्न० ५० ।

उप्पीलइ-उत्पीडयति-प्राबल्येन बाधते । जीवा० ३२६ ।

उप्पीलिय-उत्पीडिता प्रत्यञ्चारोपणेन,-बाढं बद्धा । भग०,१९३। गाढीकृता । राज० ११८ । भग० ३१७ । ज्ञाता० २२१ । जीवा० २५९ । उत्पीडितः-गाढं बद्धः । प्रश्न० ४७ । उत्पीडिता-गुणसारणेन कृतावपीडा, बाढं बद्धा वा । भग० ३१८ । कृतप्रत्यञ्चारोपणा । विपा० ४७ । आरोपितप्रत्यञ्चा । औप० ७१ । आक्रान्ता गुणेन । ज्ञाता० ८५ ।

उप्पीलेज्जा । भग० ७६६ ।

उप्पुया-उत्प्लुता--उत्सुका । प्रश्न० ५२ ।

उप्पूर - उत्पूरं-प्राचुर्यम् । प्रश्न० ४३ । जलप्लवः । प्रश्न० ७६ ।

उप्पेक्खेज्ज-उपेक्ष्यते । आव० ६४० ।

उप्फंदति-उत्स्पन्दते-प्रविशति । उत्त० ३५५ ।

उप्फंसणं । ओघ० १९५ ।

उप्फणिसु-साध्वर्थं वाताय दत्तवन्तः । आचा० ३४३ ।

उप्फासणा - अप्कायस्पर्शनं यत्सदाचरितं लवणोत्तारणम् । बृ० द्वि० ६१ आ ।

उप्फालगा-उत्प्रासकम् । उत्त० ६५६ ।

उप्फिडइ-मण्डूकवत्प्लवते । उत्त० ५५१ ।

उप्फुल्लं-त्रिगत्रिएहिं इत्थीसरीरं रयणादि वा ण निज्झाइयव्वं । दश० चू० ७७ । उत्फुल्लं-विकसितलोचनम् । दश० १६८ । निष्पुष्पः । नि० चू० प्र० २०१ अ ।

उप्फेणओफेणीयं-सक्रोधोष्मवचनं यथा भवति । विपा० ८३ ।

उप्फेस - मुकुटम् । औप० २५ । शिरोवेष्टनम् । आचा० ३८० । प्रश्न० ८७ ।

उप्फेसि-शिरोवेष्टनं, शेखरक इत्यर्थ । ठाणा० ३०४ ।

उप्फोसं-उत्पाटन छेदनम् । बृ० प्र० २८५ अ ।

उप्फोसणं-क्रियाविशेषः । नि० चू० द्वि० १६६ अ ।

उप्फोसणा-जलप्लवा । नि० चू० द्वि० १२ अ ।

उप्फोसेज्ज-प्रक्षेत् । नि० चू० प्र० १८६ आ ।

उफुल्लो-निष्पुष्पः । ओघ० ९७ ।

उबद्धो-अबद्ध । आव० २९९ ।

उब्बद्धो-उद्बद्धः । आव० ४९३ ।

उप्पुडा-उत्ताना । आव० ६०७ ।

उब्बुड्ड-अन्तःप्रवेशितम् । अनुत्त० ७ ।

उब्बुड्डनिबुड्डयं-उन्मग्ननिमग्नत्वम् । प्रश्न० ६३ ।

उब्भं-तव । उत्त० १४७ ।

उब्भंडो-असंवृतपरिधानादि । बृ० तृ० २२५ अ ।

उब्भज्जिय-उद्भिद्य । उत्त० १९२ ।

उब्भड्ड-अभ्यर्थितम् । पिण्ड० ९० ।

उब्भड-उद्भटं-विकरालम् । जं० प्र० १५० । अनुत्त० ७ । भग० ३०८ । स्पष्टम् । भग० ३०८ ।

उब्भमा-उत्-प्राबल्येन भ्रमयन्ति उद्भ्रमाः-भिक्षाचराः । व्य० प्र० १५३ आ ।

उब्भमे-उद्भ्रमेत्-यायात् । आचा० २९१ ।

उब्भव-उद्भवः-सम्भवः । ज्ञाता० ५० । सम्भूति. । भग० ४७० ।

उब्भवणं-निष्पावणं । नि० चू० प्र० ५२ आ ।

उब्भवेति-उद्भवयति । आव० ३४२ ।

उब्भातो-निगण्णो । नि० चू० प्र० ३५ आ ।

उब्भाम-भिक्षाचरग्रामः । व्य० प्र० २५० अ ।

उब्भामइला-उद्भ्रामिला-स्वैरिणी । व्य० द्वि० ११आ ।

उब्भामओ-उद्भ्रामकः, जारः । पिण्ड० १२३ । पारदारिक. । ओघ० ९२ । बृ० तृ० ४८ अ ।

उब्भामगं-भिक्खायरिया । नि० चू० प्र० ७७आ । नि० चू० प्र० ३६ आ । पारदारिकाः । ओघ० ७५ । बृ० द्वि० २६ अ । पारदारिगो । नि० चू० प्र० १०७ अ । सगाढगो । नि० चू० द्वि० ९४ आ ।

उब्भामनितोय - उद्भ्रामकनियोगः-ग्रामः । व्य० प्र० १५३ आ ।

उब्भामिगा-उद्भ्रामिका कुलटा । व्य० द्वि० १५० आ । उद्भ्रामिता-मनोगुप्तिदृष्टान्ते धेष्ठिसुतधावकजिनदासभार्या । आव० ५७८ । असती । दश० ५७ ।

उब्भामिज्जंति-आभ्राम्यन्ते । बृ० तृ० ११७आ ।

उब्भामिया - पुंश्चली । बृ० द्वि० २६४ आ । उद्भ्रामिता-स्वैरिणी । आव० ४२१ ।

उब्भामे-भिक्षाचरियै गच्छति । नि० चू० प्र० ११२ अ । भिक्षाभ्रमणम् । ठाणा० २६६ ।

उब्भायण-उद्भावनं - महर्द्धिकतालाकरणं प्रभावना । बृ० तृ० ९३ अ । परिभवः । ओघ० १८८ ।

उब्भावणा-उद्भावना-उत्प्रेक्षणा। भग० ४८९। उत्क्षेपणानि। ज्ञाता० १७७। उद्भावना। दश० ४४। प्रकाशनम्। नंदी० ५२। अपभ्राजना। उत्त० १६९।

उब्भिगा-उद्भिदो-भूमिभेदाज्जाता उद्भिज्जाः-खञ्जनकादयः। ठाणा० ३८६।

उब्भिज्ज। नि० चू० प्र० १३५ आ।

उब्भिज्ज - उद्भेद्या - वस्तुलप्रभृतिशाकभर्जिका। पिण्ड० १६८। उद्भिद्य भुवं जाता उद्भिज्जा खञ्जनकादिः। प्रश्न० ९०।

उब्भिज्जमाण-उद्भिद्यमानं-उद्घाट्यमानम्। जीवा० १९१।

उब्भिन्न-उद्भेदनं उद्भिन्नं साधुभ्यो घृतादिदाननिमित्तं कुतुपादेर्मुखस्य गोमयादिस्थगितस्योद्घाटनं तद्योगादेयमपि घृतादि उद्भिन्नम्। द्वादश उद्गमदोषः। पिण्ड० ३८।

उब्भिय-उद्भेदनमुद्भित् उद्भिज्जन्म येषां ते उद्भिज्जाः-पतङ्गखञ्जरीटपारिप्लवादयः। दश० १४१। उद्भिज्जं-लवणाकरादुत्पन्नम्। आचा० ३५५।

उब्भुतिया-आभ्युदयिकी, देवतापरिगृहीता गोशीर्षचन्दनमयी भेरी। आव० ९७।

उब्भूयावेउ। दश० चू० ८०।

उब्भेंति-उन्नमन्ति। आव० ३४२। ऊर्ध्वंगन्ति। उत्त० १८७।

उब्भेइम-उद्भेद्यं-सामुद्रादि। अप्रासुकम्। दश० १९८।

उभओ - उभयतः-उभौ-शिरोऽन्तपादान्तावाश्रित्य। ज्ञाता० १५।

उभयं - उभयं-संयमासंयमस्वरूपं क्षायोपशमिकं। दश० १५८। संघातसाडण, संघातशातनकरण, यस्य शब्दोदाहरणम्। आव० ४६२।

उभयंभागा - उभयभागा-चन्द्रेणोपगताः - उभयभागाभ्यां पूर्वतः पश्चाच्चेत्यर्थो भज्यन्ते-भुज्यन्ते यानि तानि उभयभागानि, चन्द्रस्य पूर्वतः पृष्ठतश्च भोगमुपगच्छन्तीत्यर्थः। ठाणा० ३६८। उभयभागानि - उभयं-दिवसरात्री तस्य दिवसस्य रात्रेश्चेत्यर्थ, चन्द्रयोगस्यादिमधिकृत्य भागो येषां तानि। सूर्य०। १०४।

उभयओ-उभयतः, उभयोः-पार्श्वयोः। सूर्य० २९२।

उभयकप्पिय - उभयकल्पिक -यो द्वावपि सूत्रार्थौ युगपद् ग्रहीतुं समर्थः। बृ० प्र० ६३ अ।

उभयकाला-दिवा रात्रौ च। नि० चू० तृ० ७१आ।

उभयकिड्डकम्मं-उभयक्रियकर्म-वन्दनम्। ओघ० ११।

उभयजं-गुणनिष्पन्नं, सामयप्रतिद्वन्द्व। पिण्ड० ४।

उभयतरो-सं च तवं करेंतो आयरियादीणवेयावच्चंपि करेति तत्त्वदित्तयओ एस उभयतरो। नि० चू० तृ० १२३ अ।

उभयनिसेहो-उभयनिषेध, महाशालगिनानशब्दे, यस्य शब्दोदाहरणम्। आव० ४६२।

उभयपंता-उभयप्रान्ता-अमर्यादा, भवाभवेन्द्रयं। ओघ० १५।

उभयपइट्ठिते - उभयप्रतिष्ठितः-आत्मपरविषयः। ठाणा० १९३।

उभयपदव्याहतं-नवागतिलक्षणे भेदः। आव० २८३।

उभयपद्व्याहतं-गतागतिलक्षणे भेदः। आव० २८१।

उभयभवियं - उभयभविकं-इहपरलोकयोर्भवयोः यदनुगामितया वर्तते तदुभयभविकम्। भग० ३१।

उभयाभया- यथाविधाचार्यपरिज्ञानकरणोपनयुद्धेद्दिष्टत्यागकरणलक्षणया गुरुप्रदानीकद्रव्यलिङ्गधार्यैकप्रमगया शास्त्रीभयैर्विरायेत्यर्थः। सम० १११।

उभयास्तिकः। सम० ४२।

उमंथण-अन्तर्मथमधोमुखम्। व्य० द्वि० ३२३ आ।

उमज्जायणसगोत्ते-पुष्यनक्षत्रस्य गोत्रम्। सूर्य० १५०।

उमा-प्रद्योतराजधान्यामुज्जयिन्यां गणिका। आव० ९८६। द्विपृष्ठवासुदेवमाता। आव० १६२। सम० १५२।

उमाय-भगमितः परिच्छिन्नो वा। सूर्य० ९५।

उमाणं-प्रमाणं स्वपक्षपरपक्षयोर्येषु तानि तथा। आचा० ३३६।

उमाव्यतिकर। आचा० १४६।

उम्मग्गं-नितरं उन्मज्यतेऽनेनेति वोन्मज्जनम्, ऊर्ध्वं वा मार्गमुन्मार्गं, मयैव अन्तर्भमस्यर्थ। आचा० २३४। अकार्याचरणम्। आचा० २०३। उन्मार्गः। आव० ७१८। मार्गादूर्ध्वं, क्षायोपशमिकभावत्यागेनौदयिकभावसङ्क्रमः। आव० ५७१।

उम्मग्गगो-अकनिशदैव गच्छति अहवा अरीरं चैव। नि० चू० प्र० ३११।

उम्मग्गजला-उन्मग्नं जलं यस्यां सा उन्मग्नजला। जं० प्र० २३०।

उम्मग्गदेसणाए–उन्मार्गदेशनया–सम्यग्दर्शनादिरूपभावमार्गातिक्रान्तधर्मप्रथनेन । ठाणा० २७५ ।

उम्मग्गनिम्मग्गो – उन्मग्ननिमग्नं–ऊर्ध्वाधोजलगमनम् । प्रश्न० ६३ ।

उम्मज्जगा – उन्मज्जनमात्रेण ये स्नान्ति । तापसविशेषाः । निरय० २५ । भग० ५१९ ।

उम्मज्जगो–उन्मज्जकः–उन्मज्जनमात्रेण यः स्नाति । औप० ९० ।

उम्मज्जणिमज्जिय–उन्मग्ननिमग्निका–उत्पतनिपता । ठाणा० १६१ ।

उम्मज्जति–स्पृशति । नि० चू० प्र० ११५ अ ।

उम्मज्जा – उन्मज्जनमुन्मज्जा–नरकतिर्यग्गतिनिर्गमनात्मिका । उत्त० २८० ।

उम्मत्तजला–रम्यक्विजये महानदी । जं० प्र० ३५२ । नदीविशेषः । ठाणा० ८० ।

उम्मत्ता–मन्मथोन्मादयुक्ताः, विटाः । बृ० द्वि० १३८ आ ।

उम्मत्तिगा–उन्मत्ताः । आव० ४०० ।

उम्मत्तो–उत्–प्राबल्येन मत्ते उन्मत्ते, दरमत्तो वा उन्मत्तो । नि० चू० प्र० २७६ आ ।

उम्मरीय–उम्बरीयः–प्रयुदुम्बरं रूपको ज्ञातव्य इत्येवं लक्षणः । बृ० तृ० ५१ अ ।

उम्माओ–उन्मादः–क्षिप्तचित्तादिकः । आव० ७५९ ।

उम्माणे–उन्माने–तुलारोपितस्यार्द्धभारप्रमाणता । प्रश्न० ७४ । जं० प्र० २५२ । ठाणा० ४६१ । खण्डगुडादि धरिमम् । ठाणा० ४४९ । तुलाकर्षादि तद्विषयम् । ठाणा० ४४९ । नाराचादिः । आचा० ४१३ । तुलाकर्षादि । ठाणा० १९८ । तुलारूपम् । भग० ५४४ । कर्षपलादि खण्डगुडादिद्रव्यमानहेतुः । जं० प्र० २२७ । अर्द्धभारमानता । भग० ११९ । अर्द्धभारप्रमाणता । ज्ञाता० ११ ।

उम्माणजुत्तो–जइ तुलाए आरोविओ अद्धभारं तुलति तो उम्माणजुत्तो । नि० चू० तृ० ६१ अ । पुरिसो तुलारोवितो अद्धभारं तुल्लेमाणो उम्माणजुत्तो । नि० चू० द्वि० ८५ आ ।

उम्माणा–उन्मानानि–तुलायाः कर्षादीनि । ठाणा० ८६ ।

उम्माद–चतुर्दशशते द्वितीय उद्देशः । उन्मादार्थाभिधायकत्वादुन्मादो द्वितीयः । भग० ६३० ।

उम्माय – उन्मादः–नष्टचित्ततया आलजालभाषणम् । असंप्राप्तकामभेदः । दश० ११४ । चित्तविभ्रमः । ठाणा० १५० । *महामिथ्यात्वलक्षणः तीर्थंकरादीनामवर्णं वदतो भवत्येव* तीर्थंकरायवर्णवदनकुपितप्रवचनदेवतातो वा यत् । ठाणा० ३६० । सग्रहत्वम् । ठाणा० ३६० । ग्रहो बुद्धिविप्लवः । ठाणा० ४७ ।

उम्मिमालिणीओ–नदीविशेषः । ठाणा० ८० ।

उम्मिल्लिज्जंते–उन्मील्यमाने । आव० ६३ ।

उम्मी – ऊर्मयः–महाकल्लोलाः । भग० ७११ । ऊर्मिः–*संबाधः । औप० ५७ । विचिः, तरङ्गः । आव० ६०१ । ऊर्मिः–संबाधः । भग० ४६३ । कल्लोलः । ठाणा० ५०२ ।* सम्बाधः, तरङ्गः, कल्लोलाकारो वा जनसमुदायः । भग० ११५ ।

उम्मीलिआ–उन्मिषितलोचनाः । जं० प्र० ५४, २९८ । बहिष्कृता । जं० प्र० २९७, ५४ ।

उम्मीलिय–उन्मीलितं–बहिष्कृतम् । सूर्य० २६४ । प्रज्ञा० ९९ । जीवा० २०५ ।

उम्मीसं–उन्मिश्रं–शबलीभूतम् । आचा० ३२१ । आगामुककणरवसंवलितं सक्तुकादि । आचा० ३२२ । एकीकृत्य । औप० १६९ । पुष्पादिसम्मिश्रम्, सप्तम एषणादोषः । पिण्ड० १४७ ।

उम्मुक्को–*उन्मुक्तः–प्राबल्येन मुक्तः, पृथग्भूतः । आव० ५०८ ।*

उम्मुग्गा–उन्मग्ना–नदीविशेषः । आव० १५० ।

उम्मुय–औत्सुक्यः । प्रश्न० ७३ ।

उम्मूलणा सरीराओ–उन्मूलना शरीरात्, निष्काशनं जीवस्य देहादिति । प्राणवधस्य द्वितीयः पर्यायः । प्रश्न० ५ ।

उम्ह–उष्मा–परितापः । बृ० द्वि० १९४ अ ।

उयट्टी–कटी, जङ्घा । उत्त० ११८ ।

उयत्ति–तेयत्तरणो । नि० चू० प्र० ३०१ आ ।

उयत्तिया–अपवृत्य । आचा० ३४६ ।

उयरं–जलोयरं । नि० चू० प्र० ५८ आ ।

उयल्ला–मृता । आव० २७२ ।

उयविय–विशिष्टं परिकर्मितम् । राज० ९३ ।

उयवेति–एतद्ग्रहे तत्र समुद्देशाप्यते इत्यर्थ । बृ० द्वि० ४५२ अ ।

उयारं–उच्चारः । (महाप्र०) ।

ईना चण्डश्चारभट्टस्याभयणत । उत्त० ४३५ । तथाविध निमित्त कर्म्भमिकानुक्रमणे गर्ताद्यतिक्रमणे वा । उत्त० ५१९ ।

उल्लंछेइ-विगतलाञ्छन करोति । ज्ञाता० ८८ ।

उल्लंठ-उच्छृङ्खल । आव० ३८८ ।

उल्लंडगा-मृद्गोलका । नि० चू० प्र० ३०६ आ ।

उल्लंडणा-उत्पघणा । दश० चू० ७७ ।

उल्लडा-मृद्गोलका । बृ० द्वि० २७१ आ ।

उल्लंबण-उल्लम्बन-वृक्षशाखादावुद्बन्धनम् । सम० १२६ ।

उल्लंबियगा - अवलम्बितका - रज्ज्वा बद्धा गर्त्तादावक्ता रिता । औप० ८७ ।

उल्ल-आर्द्र । ओघ० १८८ । उत्त० ५३० । भग० ०२२ । आर्द्रा दिवमितसकलचीवरेतियावत् । उत्त० ४९३ ।

उल्लग-आर्द्र । आव० ६०१ ।

उल्लगजाति-वीरगसउणा । नि० चू० प्र० ०८ आ ।

उल्लच्छणा-अपवर्त्तना, अपप्रेरणा । प्रश्न० ५६ ।

उल्लण-येनौदनमार्द्रीकृत्योपयुज्यते उल्लणम् । पिण्ड० १६८ । ओघ० १४६ ।

उल्लणिया-स्नानजलार्द्रशरीरस्य जलरूक्षणवस्त्रम् । उपा० ४ ।

उल्लदेत्ता-अवलाद-उत्तार्य । आव० ७९१ ।

उल्लपडसाडओ-आर्द्रपटशाटक । आव० २११ ।

उल्लपडसाडगो-आर्द्रशाटिकापट । आव० ६८७ ।

उल्लपडसाडया-स्नानेनार्द्रे पटशाटिके-उत्तरीयपरिधानवस्त्रे । ज्ञाता० ८४ ।

उल्ललिया-चलिता । बृ० द्वि० १४९ आ ।

उल्लवइ-उत्-प्राबल्येनासम्बद्धभाषितादिरूपेण लपति-वक्ति उल्लपति । उत्त० ३४४ ।

उल्लवित्तं-उल्लप्तम् । आव० ३४३ ।

उल्लविय-उल्लपितम्-मन्मनभाषितादि । उत्त० ४२८ ।

उल्लवेत-उल्लापयन् । आव० ६९२ ।

उल्लवेंति-आलापयन्ति । (गणि०) ।

उल्लवेइ-उल्लपति । आव० ७९६ ।

उल्लवेयव्वो-विध्यापयितव्य । आव० ३८४ ।

उल्लहिज्जति-उल्लिख्यमाना । आव० २७० ।

उल्ला-तिता । नि० चू० प्र० ४६ अ । आर्द्र । आव० ६२२ ।

उल्लाहा-प्रत्यावर्त्त । व्य० प्र० १६७ आ ।

उल्लालेमाणे-उल्लालयन्-ताडयन । जं० प्र० ३०७ ।

उल्लाव - उल्लाप -वचनम् । उत्त० ३३४ । काक्वावर्णनम् । ठाणा० ४०७ । साक्वावर्णनम् । ज्ञाता० ५७ । भग० ४७८ । प्रतिवचनम् । ओघ० ५१ । उल्लापम् । आव० २०३ । साक्वावर्णनम् । औप० ५७ ।

उल्लाविंतो-उल्लापयन् । उत्त० ८५ ।

उल्लिंचइ-उल्लिश्चति-आकर्षति । पिण्ड० ११८ ।

उल्लिंचण-उदकनिष्काशनम् । नि० चू० प्र० २०७ आ ।

उल्लिंचाविज्जिहिति । ओघ० ११ ।

उल्लिंड-उल्लिखित । उत्त० ४,० ।

उल्लिय-आर्द्र । आव० ६२१ ।

उल्लिहावेइ-चुम्बयति-आस्वादयति । आव० ६८० ।

उल्ली - पनक । ठाणा० ४३० । पणगो । नि० चू० प्र० ०५५ आ । पणओ । दश० चू० ८० ।

उल्लीण-अवहाय । (मर०) ।

उल्लीना-उपलीना-प्रच्छन्ना । आचा० ३७१ ।

उल्लाराइ । ओघ० ११७ ।

उल्लुका-जनपदा नदीविशेषश्च । विश० ९९७ । नदीवि शेष । विशे० ९२७ ।

उल्लुकातीर-उल्लुकानद्या समीपे नगरविशेष । भूमिभा गारान्तरत्वात् खेडमुच्यते । विशे० ९२७ ।

उल्लुगं-अवरुग्णम्-भग्नम् । प्रश्न० २२ ।

उल्लुगतीर - उल्लुकतीर-उल्लुकानद्यास्तीरे नगरविशेष । उत्त० १६५ ।

उल्लुगा - उल्लुका-नदीविशेष । उत्त० १६५ । आव० ३१७ ।

उल्लुगातीरं - उल्लुकातीरम् । पञ्चमनिह्नवोत्पत्तिस्थानम् । विशे० ९३४ । आव० ३१२, ३१७ ।

उल्लुगंगी-स्थानाङ्गी । आव० ३९४ ।

उल्लुपिंह-शिम्बी । नि० चू० द्वि० १४४ आ ।

उल्लुयतीरे - उल्लुकतीरे-उल्लुकानद्यास्तीरे नगरविशेष । भग० ७०५ ।

उल्लुह । ओघ० १०८ ।

उल्लेति-आर्द्रयति । आव० १०१ ।

उल्लोअ-उल्लोक -उपरिभाग । जं० प्र० ३९१ ।

उल्लोइआ-उल्लोइयमिव उल्लोइअ च सेटिकादिना कुड्यादिषु धवलनम् । ज० प्र० ७६ ।

उल्लोइयं-सेटिकादिना कुड्याना धवलनम् । भग० ५८० । कुड्याना मालस्य च सेटिकादिभि समृष्टीकरणम् । जीवा० १६० । राज० ३६ । सम० १३८ । कुड्यमालाना सेटिकादिभि समृष्टीकरणम् । औप० ५ । कुड्याना मालस्य च सेटिकादिभि समृष्टीकरणम् । जीवा० २०७ । प्रज्ञा० ८६ ।

उल्लोए-उल्लोक, उल्लोच । भग० ६४० । उपरिभाग । ज० प्र० ८९, ४०० । जीवा० २०५ । उल्लोच -चन्द्रोदय । सूर्य० २९३ । उल्लोक -उपरितनभाग । जीवा० २०९, ३६० ।

उल्लोय - उल्लोक -उपरिभाग । भग० ५४० । उद्देश । भग० ६२९ । लेखाद्देश । बृ० प्र० २५७ आ ।

उल्लोयगं-उल्लोचम् । आव० १०४ ।

उल्लोलिया-मलगुटिका । गुल्फिका । आव० ६८० ।

उल्लोलेइ-उल्लोडयन् । आचा० ४२३ ।

उल्हविज्झंतो-विध्यापित । आव० ३८४ ।

उवंगा - उपाङ्गानि - शिक्षादिषडङ्गार्थप्रपञ्चनपरा प्रबन्धा । भग० ११४ । शिक्षादिषडङ्गव्याख्यानरूपाणि । अनु० ३९ ।

उवंगाइ-उपाङ्गानि-अङ्गावयवभूतान्यङ्गुल्यादीनि । प्रज्ञा० ४६९ ।

उव - उप-सामीप्यार्थ । प्रज्ञा० ४ । दश० १४५ । भग० २७ । उपमेतिरस्मान्स्थेऽपि दृश्यते । उत्त० २३५ । सकृदर्थे, अनन्तवैचन । आव० ८७८ । अत्यधिक पुन पुन । उत्त० ६४४ ।

उवइअ-उपचितौ, उन्नतौ, औपचयिकौ, उचितौ, अवपतितौ, क्रमेण हीयमानोपचयौ । ज० प्र० ११२ ।

उवइग-उद्देहिका । नि० चू० प्र० ७७ आ ।

उवइज्जा-अवपतेत, आगच्छेत् । आचा० ३६५ ।

उवइस्सइ-उपदिश्यते-श्रोतृभावापेक्षया सामीप्येन कथ्यते । दश० ११० ।

उवइस्सहुकरो-क्रियापरो । नि० चू० प्र० २६६ अ ।

उवउत्त-उपयुक्त -अनन्यचित्त । दश० १०६ । अवहित । भग० ८९ । णमोक्कारपरायणो । नि० चू० प्र० ४७अ । उपयुक्त -अभिलप्यमान । भग० १५५ । व्यापृत, निरा गत । विशे० १७४ । अभ्याहतम् । आचा० १७६ ।

उवएस-उपदेश -आदेश । व्य० प्र० १० आ । गुरुणाऽनुज्ञात । ओघ० १५१ । हिताहितप्राप्तिनिवृत्त्युपदेशनादुपदेश । अनु० ३८ । अन्यतरक्रियाया प्रवर्तनेच्छोत्पादनं उपदेश । वचनविभक्तेर्द्वितीयो भेद । अनु० १३४ । यथा आत्मा न बध्यत इत्यादिविषय । दश० १२० । उपदेश -गुर्वादिना वस्तुतत्त्वकथनम् । प्रज्ञा० ५८ । श्रुतस्य पर्याय । विशे० ४२३ । कथनम् । आव० ६०४, २६५ ।

उवएसदव्वमूलं-उपदेशद्रव्यमूल-यच्चिकित्सको रोगप्रतिघातसमर्थं मूलमुपदिशत्यानुरायेति । आचा० ८८ ।

उवएसरुई-उपदेशो-गुर्वादिना वस्तुतत्त्वकथनं तेन रुचि -जिनप्रणीततत्त्वाभिलाषरूपा यस्य स उपदेशरुचि । प्रज्ञा० ५८ ।

उवएसिया-उप-सामीप्येन देशिना उपदेशिना । आव० ६२ ।

उवओग-उपयोग -स्वस्वविषये लब्ध्यनुसारेणात्मन परिच्छेदव्यापार । जीवा० १६ । उपयोजनमुपयोग -विवक्षितकर्मणि मनसोऽभिनिवेश । नदी १६४ । ज्ञान, संदर्शन, प्रत्यय । विशे० ३६ । साकारानाकारभेद चैतन्यम् । ठाणा० ३३४ । जीवस्य चोरूपो व्यापार । अनु० १६ । अवहितत्वम् । उत्त० ५६१ । भावेन्द्रियस्य द्वितीयो भेद । भग० ८७ । मति । ओघ० ११६ । उपयोग -लब्धिनिमित्त आत्मनो मनस्माच्चिद्याद् अर्थग्रहण प्रति व्यापार । आचा० १०४ । उपयोग -आन्तर श्रुतपरिणाम । विशे० २९७ । चेतनाविशेष । भग० १४९ । चैतन्य साकारानाकारभेदम् । भग० १४८ । उपयोजनमुपयोग -विवक्षिते कर्मणि मनसोऽभिनिवेश । आव० ४२६ । विपाकानुभवनम् । दश० ८६ । धातुस्तदभिमुखता । आव० ३४१ । सावधानता । औप० ४८ । स्वाध्यायाद्युपयुक्तता । उत्त० १४५ । स्वस्वविषये लब्ध्यनुसारेणात्मनो व्यापार प्रणिधानम् । प्रज्ञा० २९४ । प्रज्ञापनाया एकोनत्रिंशत्तम पदम् । प्रज्ञा० ६ । उपयोजन उपयोग भावे घञ्, यद्वा उपयुज्यते-वस्तुपरिच्छेद प्रति व्यापार्यते जीवोऽनेनेत्युपयोग, 'पुंनाम्नि घ' इति करणे घञ्प्रत्ययो बोधरूपो जीवस्य तत्त्वभूतो व्यापार । प्रज्ञा० ५२६ । दश० १०८ ।

उवकप्पिया-उपकल्पिता । उत्त० २८७ ।

उवकरण–उपकरण–अङ्गादानाख्य । बृ० तृ० ९८अ । उपकरण–ग्लानाद्यवस्थायामन्येनोपकारकरणम् । प्रश्न० १२९ । उपधि । परिग्रहस्य पञ्चदश नाम । प्रश्न० ९२ । अङ्गम् । भग० ७२४ ।

उवकरणपणिधाणे–उपकरणस्य लौकिकलोकोत्तररूपस्य वस्त्रपात्रादे संयमासंयमोपकाराय प्रणिधान–प्रयोग उपकरणप्रणिधानम् । ठाणा० १९६ ।

उवकरणसंवरे–उपकरणसंवर –अप्रतिनियताकल्पनीयवस्त्राद्यग्रहणरूपोऽथवा विप्रकीर्णस्य वस्त्राद्युपकरणस्य संवरणम् । ठाणा० ४७३ ।

उवकरिंसु–अवकीर्णवन्त । आचा० ३११ ।

उवकरिज्ज–उपकुर्यात्–ढौकयेत् । आचा० ३५१ ।

उवकरेउ–उपकरोतु । उपा० १५ ।

उवकरणे–उपकरणे । बृ० द्वि० २८१ अ ।

उवकुलं–कुलस्य समीप उपकुलम् । ज० प्र० ५०६ ।

उवकुला–उपकुलानि । सूर्य० १११ ।

उवकोसा–कोशाया लघ्वी भगिनी उपकोशा । आव० ६९५ । आव० ४२५ ।

उवक्कम–उपक्रमण–आयु पुद्गलाना संवर्त्तन समुपस्थितम् । आचा० २९१ । उपक्रमणमुपक्रम , उपक्रम्यतेऽनेनास्मादस्मिन्निति वोपक्रम –व्याचिख्यासितशास्त्रस्य समीपानयनम् । आचा० ३ । उपक्रमण उपक्रम –दीर्घकालभाविन्यो स्थिते स्वल्पकालताऽऽपादनम् । उत्त० ३२१ । उपेति–सामीप्येन क्रमण उपक्रम –दूरस्थस्य समीपापादनम् । ओघ० १ । उपायेन परिज्ञानम् । ठाणा० १५१ । उपायपूर्वक आरम्भ । ठाणा० १५८ । प्रकृत्यादित्वेन पुद्गलानां परिणमनसमर्थं जीववीर्यम् । ठाणा० २७१ । अभिप्रेतार्थसामीप्यानयनलक्षण । आव० २५७ । कालगमनम् । बृ० द्वि० २३० अ । नाश । (आउ०) । उप–सामीप्य 'क्रमुपादविक्षेपे' उपक्रमण दूरस्थस्य शास्त्रादिवस्तुनस्तैस्तै प्रतिपादनप्रकारै समीपीकरण न्यासदेशानयन निक्षेपयोग्यताकरणमित्युपक्रम । विशे० ४३० । कर्मवेदनोपाय । भग० ६५ । स्वयमेव समीपे भवनमुदीरणाकरणेन वा समीपानयनम् । प्रज्ञा० ५५७ । उपक्रम –दूरस्थस्य वस्तुनस्तैस्तै प्रतिपादनप्रकारै समीपमानीय निक्षेपयोग्यताकरण, उपक्रम्यते–निक्षेपयोग्य क्रियतेऽनेन गुरुवाग्योगेनेति, उपक्रम्यतेऽस्मिन् शिष्यश्रवणभावे सतीति, उपक्रम्यतेऽस्माद्विनीतविनेयविनयादिति वा । अनु० ४५ । विशे० ४३० । उपक्रमणमुपक्रम इति भावसाधन व्याचिख्यासितशास्त्रस्य समीपानयनेन निक्षेपावसरप्रापण, उपक्रम्यते वाऽनेन गुरुवाग्योगेनेत्युपक्रम इति करणसाधन , उपक्रम्यतेऽस्मिन्निति वा शिष्यश्रवणभावे सतीत्युपक्रम इत्यधिकरणसाधन , उपक्रम्यतेऽस्मादिति वा विनेयविनयादित्युपक्रम इत्यपादानसाधन इति । ज० प्र० ५ । उपक्रम्यते–क्रियतेऽनेनेत्युपक्रम –कर्मणो बद्धस्योदीरितस्य वा परिणमनहेतुर्जीवस्य शक्तिविशेषो योऽन्यत्र करणमिति रूढ , बन्धनादीनामारम्भ । ठाणा० ०२१ । वस्तुपरिकर्मकरण । ठाणा० २०१ । अप्राप्तकालस्य निर्जरणम् । भग० ७१० । आनुपूर्व्यादि । सम० ११५ । निक्षिप्तस्तु उपक्रमण उपक्रम इति भावसाधन , शास्त्रस्य न्यासदेशसमीपीकरणलक्षण , उपक्रम्यते वाऽनेन गुरुवाग्योगेनेत्युपक्रम इति करणसाधन , उपक्रम्यतेऽस्मिन्निति वा शिष्यश्रवणभावे सतीत्युपक्रम इत्यधिकरणसाधन , उपक्रम्यतेऽस्मादिति वा विनीतविनेयादित्युपक्रम इत्यपादान इति । ठाणा० ४ । कर्मोदीरणकारणम् । ठाणा० ०९ ।

उवक्कमकाल – उपक्रमकाल – अभिप्रेतार्थसामीप्यानयन लक्षण । विशे० ८३७ । अभिप्रेतार्थसामीप्यानयनलक्षण सामाचार्यायुष्कभेदभिन्न । दश० ९ ।

उवक्कमिओ–औपक्रमिक –दण्डकशशस्त्रादिनाऽसातवेदनीयस्यापादक । सूत्र० ७८ ।

उवक्कमिया–उपक्रमणमुपक्रम –स्वयमेव समीपे भवनमुदीरणाकरणेन वा समीपानयन तेन निर्वृत्ता औपक्रमिकी । प्रज्ञा० ५५७ । औपक्रमिकी । सम० १४६ । प्रज्ञा० ५५४ । उपक्रमेण–कर्मोदीरणकारणेन निर्वृत्ता तत्र वा भवा औपक्रमिकी–ज्वरातीसारादिजन्या । ठाणा० ८९ । कर्मवेदनोपायस्तत्र भवा औपक्रमिकी स्वयमुदीर्णस्योदीरणाकरणेन चोदयमुपनीतस्य कर्मणोऽनुभव । भग० ६५ । स्वयमुदीर्णस्योदीरणाकरणेन चोदयमुपनीतस्य वेद्यस्यानुभवात् औपक्रमिकी । भग० ४९७ ।

उवक्कम्म–उपक्रम्य–आगत्य । सूत्र० ३१६ ।

उवक्कयं–उपस्कृत–निष्पक्वम् । जीवा० २६८ ।

उवक्केस – उपक्लेश –कृषिपाशुपाल्यवाणिज्याद्यनुष्ठानानुगता पण्डितजनगर्हिता शीतोष्णश्रमादया घृतलवणचिन्ताद

गध। दश० २७३। उपक्लेश-श्यामत्वशोषादिः। भग० ५२५।

उवक्खड-उपस्कृतं-उपस्कर्तुमारब्धम्। पिण्ड० ९५। उपस्करणमुपस्कृतं-पाकः। ठाणा० २२०। लवणेनगरादिसंस्कृतम्। उत्त० ३६०।

उवक्खडणसाला-महाणसो। नि० चू० प्र० २७२ आ।

उवक्खडाम-जहा चणगादीण उवक्खडियाण जेण निज्जति ते वत्थ्या न उवक्खडियाम भण्णति। नि० चू० द्वि० १२५ अ।

उवक्खडियं। ओघ १६०।

उवक्खडेंति-उपस्कुर्वन्ति। आव० २९१।

उवक्खडे-उपस्कृतानि-निष्पन्नानि। जं० प्र० १०५।

उवक्खडेउ-उपस्करोतु-राध्यतु। उपा० १५।

उवक्खडेज्जा-तक्कनादि पचेत। आचा० ३५१।

उवक्खरो-सर्पादिक। नि० चू० प्र० ३५६ अ। उपकरणम्। (मर०)। उपक्रियतेऽनेनेति उपस्कर-हिङ्ग्वादि। ठाणा० १२०।

उवग-गर्ता। बृ० द्वि० ३१ अ।

उवगओ-उपगतः। आव० ४००। सामीप्येन कर्मविगम लक्षणेन प्राप्त। आव० ३८६।

उवगच्छया-वक्रया। नि० चू० प्र० २५५ अ।

उवगत-उपगतः। आव० ३०८। उपगत-आश्रित। उत्त० १७८।

उवगमं-उपगच्छति-सादृश्येन प्राप्नोति। उत्त० २३५।

उवगमण-उपगमनं-अवस्थानम्। सम० ३५। अस्पन्दतयाऽवस्थानम्। भग० १२०।

उवगयं-उपगत-सामीप्येनात्मनि शब्दादिज्ञानं परिणतम्। नंदी १८०। मूलम्। पिण्ड० १३४। उपगतं-ज्ञानम्। आव० ८१२।

उवगरण-चोलपट्टकं रजोहरण नेपथ्यादयोपेतं मुखवस्त्रिका उपलक्षणत्वादौर्णिकसौत्रिकौ च कल्पौ। बृ० प्र० २९२ अ। दंडकं रजोहरणं च। बृ० प्र० ७१ आ। उपकरण-औपग्रहिकम्। प्रश्न० १५६। उपकरणं-उपधिरेव। आव० ५६८। आवरणप्रहरणादिकम्। भग० ९४। लौकिकडुण्डुकादि। भग० २३८। वस्त्रादिकम्। भग० ३२२। व्यजनकटककवलसार्गलादि। आचा० ६०। उपकरोतीति उपकरणम्। ओघ० २०७। वस्त्रादि। भग० ७२०। धर्मशरीरोपष्टम्भहेतुः। उत्त० ३५८। अनेकविधं वर्षाकल्पादिकम्। अनु० १५९। रजोहरणदण्डकादि। ओघ० १२५। द्रव्येन्द्रियस्य द्वितीयो भेदः। भग० ८७। प्रज्ञा० ९३। खड्गधारास्थानीया बाह्यनिर्वृत्तेर्या खड्गधारास्थानीया स्वच्छतरपुद्गलसमूहात्मिका अभ्यन्तरनिर्वृत्तिस्तस्याः शक्तिविशेषः। जीवा० १६। हस्त्यश्वपदातमलादि। आचा० १००। औपग्रहिकम्। उत्त० ३५८।

उवगरणपडिया-उपकरणप्रतिज्ञा-उपकरणार्थिनः समागच्छेत्। आचा० ३८८।

उवगरणसंजमे-उपकरणसंयम-महामूल्यवस्त्रादिपरिहारः, पुस्तकवस्त्रतृणचर्मपञ्चकपरिहारो वा। ठाणा० ३१३।

उवगरयं(घरयं)-अपवरकम्। आव० ६६६।

उवगसित्ताणं-उपसंश्लिष्य, समीपमागत्य। सूत्र० १०७।

उवगहिओ-उपगृहीत-उपष्टब्धः। आव० ७६८। उपगृहीतः। आव० ७९३।

उवगा-उपगाः-प्राप्ताः। प्रश्न० ७०। उपगच्छन्ति-तदेकचित्ततया तामुपगच्छन्तो वर्तन्ते। जीवा० २६०।

उवगारगा-उपकारक-यत्पूर्वोक्तस्य विस्तरतोऽनुक्तस्य च प्रतिपादनादुपकारे वर्तते तद्। आचा० ३१८।

उवगारियलेणाइ-औपकारिकलयनानि-प्रासादादिपीठकल्पानि। भग० ६१३।

उवगारिया-राजधानीस्वामिसत्कप्रासादावतंसकादीन उपकरोति-उपष्टम्नातीति उपकारिका-राजधानीस्वामिसत्कप्रासादावतंसकादीनां पीठिका। जीवा० २३२। पीठिका। राज० ८१।

उवगिण्हद्द-उपगृह्णीत उपष्टम्भं कुरुत। भग० ३१९।

उवगुहिअ-उपगूहितं-परिरम्भम्। सङ्ग्रहस्थानस्य षष्ठो भेदः। दश० १०४।

उवगो-अभ्यवहार्योऽय साधु। बृ० तृ० २१० अ। कुक्कुमागो वा। नि० चू० प्र० ८८ अ।

उवग्गं-उपाग्रं-समीपभूतम्। आव० ४०३।

उवग्गछाया-छायाभेदः। सूर्य० ९५।

उवग्गह-उपग्रह-शिष्याणामेव अन्नादिषु संग्रहोपष्टम्भकरणम्। व्य० प्र० १३२ अ। उपष्टम्भः। पिण्ड० २४। उपगृह्णातीति उपग्रहः। ओघ० २०३। शिष्याणां अन्न-

उवचिए-उपशोभित-भृत। जं० प्र० २९२। उपचित-समृद्ध। ज्ञाता० ९८।

उवचिओ - उपचित -निवेशित। प्रज्ञा० ८६। जीवा० २२७, १६०।

उवचिणंति-निषेकरचनतः निकाचनतो वा उपचीयन्ते। भग० २५३।

उवचिट्ठइज्जा-उपतिष्ठेत्-विनयेन सेवेत। दश० २४०।

उवचिण - उपचितवन्त -परिपोषगत। ठाणा० १७९। उपचयनं-चितस्याबाधाकाल मुक्त्वा ज्ञानावरणीयादितया निषेक। *ठाणा० ११५। परिपोषणम्। ठाणा० ४१७।*

उवचिणाइ - प्रदेशबन्धापेक्षया निकाचनापेक्षया वेति। भग० १०२।

उवचिणिंसु-उपचितवन्त। ठाणा० २८९।

उवचिय-उपचित-तेजितम्। प्रज्ञा० ९१। उपचित-परिकर्मितम्। राज० ३७। जीवा० २३०। युक्तम्। जीवा० २०४। *मांसलम्। जीवा० २७१। समानजातीयप्रकृत्यन्तरदलिकसङ्क्रमेणोपचयं नीत।* प्रज्ञा० ४५९। भृत। जं० प्र० ८२। परिकर्मितम्। भग० ५४०। विशिष्ट परिकर्मितम्। राज० ९३। उपचय -पीन पुष्ट्येन प्रदेशानुभागादेर्वर्धनम्। *भग० ५३। औपचयिक -उपचयनिर्वृत्त* औपयिको वा-उचित। प्रश्न० ८१। निवेशित। औप० ५। बहुशः प्रदेशसामीप्येन शरीरे चिता एतीति। भग० २४। युक्त। जं० प्र० ४८।

उवचीयइ - उपचीयते-उपचयमायाति। जीवा० २२२, ३०६। उपचयमुपगच्छति। जीवा० ४००।

उवच्छगो-रक्षको। नि० चू० प्र० २११ अ।

उवच्छुभे। आव० १८०।

उवजाइय-उपयाचिते देवताराधने भव औपयाचितक। ठाणा० ५१६।

उवजीवइ-उपजीवति-अनुभवति। भग० ११२।

उवजीवति - उपजीवति-जीवनार्थमाश्रयते। व्य० प्र० १६३ आ।

उवजीविओ-उपजीवित। ठाणा० ३७२।

उवजेमणा-रसवती। नि० चू० प्र० ३४९ आ।

उवजोइया-ज्योतिष समीपे ये त उपज्योतिषस्त एवो पज्योतिष्का -अग्निसमीपवर्तिनो महानसिका कल्पिकां वा। उत्त० ३६८।

उवज्झाए-उपाध्याय। प्रज्ञा० ३२७। अध्यापक। आव० २८३।

उवज्झाओ - उपयोगपूर्वक पापपरिवर्जनतो ध्यानारोहणेन कर्माण्यपनयतीति उपाध्याय। आव० ४४९।

उवज्झाय-उपाध्याय -उप-समीपमागत्य अधीयते-पठ्यते *यस्य स, उप अधि-आधिक्येन गम्यते स., उप अधि-* आधिक्येन स्मर्यते सूत्रतो जिनप्रवचनं यस्मात् स., उपाधि - *सन्निधिस्तेन तस्य वा आय -लाभ श्रुतस्य यस्य, उपाधीनां-विशेषणानां आयो-लाभ यस्मात् स, उपाधिरेव-सन्निधिरेव आयं-इष्टफलं दैवजनितत्वेन आयानां-इष्टफलानां समूहस्तदेकहेतुत्वात् यस्य,* आधीनां-मन पीडानां आयो-लाभ आध्याय, अधिया-कुबुद्धीनां आयोऽध्याय, दुर्ध्यान वाऽध्याय, उपहत आध्यायो वा अध्यायो *येन स। भग० ३। सूत्रदाता। ठाणा० २१९।* आचारगोचरविनय स्वाध्याय वा आचार्यादनु तस्मात्पा ठीयते सङ्ग्रहोपग्रहानुग्रहार्थं वा। तत्त्वा० ९-२४। उपगम्योपेत्य यतो येभ्योऽधीयते पठन्ति शिष्यास्त उपाध्याया, *यद्व यस्मादुप-समीपे सत-प्राप्ते शिष्यमध्यापयन्ति तत* उपाध्याया, यस्माच्च स्वपरहितमर्थोपायमध्यापयन्ता उपायनिस्तकास्ततस्त उपाध्याया। विशे० १२३७।, सूत्रापनद्धयविद् ज्ञानदर्शनचारित्रयुक्ता-उपयुक्तास्तथा शिष्याणां सूत्रवाचनाप्रदानादिनिष्पादका एतादृशा भवन्ति। व्य० प्र० १७१ आ।

उवट्टगा। नि० चू० प्र० २३० आ।

उवट्टणं-गद्गद् उवट्टण। नि० चू० प्र० १९० आ।

उवट्टित्ता-उद्वृत्य-तस्मात्स्थानेनान्यत्र गत्वा। उत्त० २१६।

उवट्ठिय-उपस्थापित। आव० २८८।

उवट्ठवेति-उपस्थापयति, उपढौकयति, प्रगुणीकरोति। जं० प्र० २४४।

उवट्ठाइ-उत्तिष्ठते। आव० ३१८।

उवट्ठाएज्जा-उपतिष्ठेत्, उपस्थानम्-परलोकक्रियास्वभ्युपगम कुर्यादित्यर्थ। भग० ६४।

उवट्ठाणं-*गोमादिठाण*। नि० चू० द्वि० ५० अ। उपस्थानेन-धर्मचरणाभ्यासोद्यमेन वर्तते इति उपस्थान। आचा० २२७।

उवट्ठाणगिह – उपस्थानगृहं – आस्थानमण्डपः । ठाणा० २९८ । भग० ३०० ।

उवट्ठाणसाला–उपस्थानशाला–आस्थानसभा । औप० २३ । आस्थानशाला । आव० ३०० । उपवेशनमण्डपः । निरय० ८ । आस्थानमण्डपः । निरय० १० । जं० प्र० १८७ ।

उवट्ठाणा – मासद्वयं चतुर्मासद्वयं चावर्जयित्वा पुनस्तत्रैव वसनामुपस्थानेति । ठाणा० ३२१ ।

उवट्ठावणा–उपस्थापना–महाव्रतारोपणरूपा । उत्त० ५६८ । उप–सामीप्येन सर्वेशावस्थानलक्षणेन तिष्ठन्त्यस्यामिति उपस्थापना–शय्या । व्य० द्वि० १०४ अ ।

उवट्ठावणाए गहणं–तत्रोपस्थापनायां विधीयमानायां दरिद्रन्तोऽक्षतास्तरहस्तादिभिर्यद् रजोहरणादि गृह्यते तद् उपस्थापनाग्रहणम् । बृ० द्वि० २५६ अ ।

उवट्ठावणायरिते–उत्थापनयाचार्यः । ठाणा० ३३९ ।

उवट्ठाविए गहणं – उपस्थापितस्य – छेदोपस्थापनीयचारित्रे प्रापितस्य यद् उपधेर्धारणं परिभोगो वा तद् उपस्थापितग्रहणम् । बृ० द्वि० २८६ अ ।

उवट्ठावित्तए – उत्थापयितुं – महाव्रतेषु व्यवस्थापयितुम् । ठाणा० ५७ ।

उवट्ठिअ–उपस्थितं–उद्यतम् । औप० १०६ ।

उवट्ठिए–उपस्थितं–प्रत्युपनम् । आव० ५४१ । दीक्षितः । बृ० द्वि० २६४ अ । अभ्यन्तरसम्यगिव । भग० १०० ।

उवट्ठिता–दृष्टिता । नि० चू० द्वि० ९४ आ ।

उवट्ठिताओ–गीलोपमगतिः । नि० चू० द्वि० ४० आ ।

उवट्ठिय–उपस्थितः । आव० ५५९ । उपस्थितः–उद्यतः । उत्त० ६१७ । प्रत्यासन्नीभूतम् । उत्त० ६६८ ।

उवणयं–उपनयनं–कलाग्रहणार्थं नयनं धर्मश्रवणनिमित्तं वा साधुसकाशे नयनम् । आव० १२९ ।

उवणयणं–कलाग्रहणम् । भग० ५४५ । उपनयनं–भावानां नयग्रहणम् । प्रश्न० ३९ ।

उवणिक्खिवियं–उपनिक्षिप्य । आव० ५५५ ।

उवणिवाय–उपनिपातः–अकस्मात् । ठाणा० ४९ ।

उवणिविट्ठं–उपविष्टं–सामीप्येन स्थितम् । जीवा० १९९ ।

उवणिहि – उप–सामीप्येन निधिः उपनिधिः–पूर्वानुपूर्व्यादिविन्यासविशेषः उपनिधिः, तत्र प्रयोजनमस्या इत्यानुपूर्व्युपनिधिकी अर्थः । अनु० ७१ ।

उवणीअ–उपनीतः–नियोजितः । ठाणा० २५९ । उपसंहारोपनययुक्तमुपनीतम् । अनु० १३३ । उपनयोपसंहृतमुपनीतम् । अनु० २६२ । उपसंहारयुक्तम् । ठाणा० ३९७ । प्रापितम् । ठाणा० ४५४ । निगमितं, योजितम् । ठाणा० २५९ ।

उवणीए–उपनीतं–योजितम् । जं० प्र० १०५ ।

उवणीते–उपनीतं–प्रापितं, दशमो विशेषः । ठाणा० ४९२ ।

उवणीय–उपनीतं–योजितम् । जीवा० २६८ । उपनयोपसंहृतम् । आव० ३०३ । विनीतं, ढौकितं, ग्रासेन धर्षितगुणं वा । औप० ३९ । प्रापितः । आचा० ७८ ।

उवणीयअवणीयवयणं – उपनीतापनीतवचनं–यथा रूपवती गुणः प्रशस्यः कश्चिदियः । आचा० ३८७ ।

उवणीयवयणं – उपनीतवचनं–प्रशंसावचनम् । आचा० ३८७ । प्रज्ञा० २६७ । गुणोपनयनरूपम् । प्रज्ञा० १९८ ।

उवणीयावणीयवयणं – उपनीतापनीतवचनं – यत्प्रशस्य निन्दति । प्रज्ञा० २६७ । यत्रैकं गुणमुपनीय गुणान्तरमपनीयते तत् । प्रज्ञा० १९८ ।

उवणेइ–उपनयति, प्राभृतीकरोति । जं० प्र० १०४ ।

उवण्णं–प्रोक्तिनं । नि० चू० प्र० २७४ आ ।

उवण्णत्थ–उपन्यस्तं–उपढौकितम् । दश० १३१ ।

उवण्हाणयं–मापपूर्णादिनिपातणं । नि० चू० प्र० ११६ आ ।

उवतत्तो–उपतप्तः–आपद्गतः । प्रश्न० ११ ।

उवतेमणो–उपदिश्यत इति उपदेशनं–उपदेशक्रियाया व्यापृत्मुपस्थापयतस्य क्रियाया यद् व्यापृतं तद् कर्मेत्यर्थः । द्वितीया वचनविभक्तिः । ठाणा० ४२८ ।

उवत्तेसणइ–उपदेशः–पुण्ड्रिका वचनं तेन सदिग्धतेन्द्रिय हेतवादिः । ठाणा० ५०३ । उत्त० ५६३ ।

उवत्तायणिय–परमार्थनिगः । सूत्र० ३८७ ।

उवत्तिया–भावलिंगा । प्रश्न० ४८ ।

उवत्थड–उपस्तीर्ण–उपस्तारित । भग० ३०, १५७ ।

उवत्थर्म–भग० । नि० चू० प्र० ६० अ ।

उवत्थाण–उपस्थानं–उपार्जितस्थानम् । निरय० ३३ ।

उवत्थाणिर्य–उपस्थानं–उपार्जितस्थानं यत्र दिवसपर्यायं यत्र विपर्णं । निरय० ३३ ।

उवत्थाणीअं – उपस्थानीयं–उपढौकितम् । जं० प्र० २०३, २०३ ।

उवत्थिए-अभ्युपगत । ज्ञाता० २२० ।
उवत्थिया-उपस्थिता-उपनता । सम० १८ ।
उवदंसं-उपदर्शनम् । आव० ७२६ ।
उवदंसणकूड-उपदर्शनकूट, उपदर्शननामकं कूटम् । जं० प्र० ३७७ ।
उवदंसिज्जंति - उपदर्श्यन्ते-निगमनेन शिष्यबुद्धौ नि शङ्कं व्यवस्थाप्यन्ते । नंदी २१२ । उपदर्श्यन्ते उपनयनिगमनाभ्यां सकलनयाभिप्रायतो वा । सम० १०९ ।
उवदंसिया-उप-सामीप्येन यथा श्रोतॄणां झटिति यथाव स्थितवस्तुतत्त्वावबोधो भवति तथा स्फुटवचनैरित्यर्थ, दर्शिता -श्रवणगोचरं नीता उपदिष्टा । प्रज्ञा० ४ ।
उवदंसेइ-सकलनययुक्तिभि उपदर्शयति । भग० ७११ । ठाणा० ५०३ । उपदर्शयति-प्रकाशयति । भग० १४९ ।
उवदिट्ठाभावमूलं-उपदेष्टभावमूलं - उपदेष्टा-यै कर्मभि प्राणिनो मूलदैन्येनोत्पद्यन्ते । आचा० ८८ ।
उवद्दवा-उपद्रवा राजचौर्यादिकृता । भग० ४६९ ।
उवद्दवेइ-उपद्रवयति-उपद्रवं करोति । ठाणा० ३०५ ।
उवद्दवेह-उपद्रवयथ-मारयथ । भग० ३१८ ।
उवधाणं-उपदधातीत्युपधानं-तप । दश० १०४ ।
उवधायपडगो-पडगस्स बीयो भेओ । नि० चू० द्वि० ३१ अ ।
उवधारणया-धार्यतेऽनेनेति धारण, उप-सामीप्येन धारण उपधारण-व्यञ्जनावग्रहेऽपि द्वितीयादिसमयेषु प्रतिसमयपूर्वापूर्वशब्दादिपुद्गलादानपुरस्सर प्राक्तनप्राक्तनसमयगृहीतशब्दादिपुद्गलधारणपरिणाम तद्भाव उपधारणता । नंदी १७४ । उपधारणता - अविच्युतिस्मृतिवासनाविषय करणम् । ठाणा० ४४१ ।
उवधारियं-उपधारितं-अवधारितम् । भग० १०१ ।
उवनंद-उपनन्द । आव० २०१ ।
उवनगरगामं-उपनगरग्राम । आव० ३०१ ।
उवनिक्खित्ते-उपनिक्षिप्त.-व्यवस्थापित ।आचा० ३४४ ।
उवनिग्गय-उपविनिर्गत -किञ्चिदन्तरविनिर्गत । राज० ६ ।
उवनिहिते-उपनिधीयत इति उपनिधि -प्रत्यासन्न यथा-स्थमिदानीतं तेन चरति तद्ग्रहणायेत्यर्थ इत्यौपनिधिक, उपनिहितमेव वा यस्य ग्रहणविषयतयाऽस्ति स प्रज्ञादेरा-कृतिगणत्वेन मत्वर्थीयाण्प्रत्यये औपनिहित इति । ठाणा० २९८ ।
उवनिहिय-उपनिधिना - प्रत्यासत्त्या चरति-प्रत्यासन्नमेव गृह्णाति य· स औपनिधिक: । प्रश्न० १०६ ।
उवनिही-उपनिधि -प्रत्यासत्ति । प्रश्न० १०६ ।
उवन्नास-उपन्यसनं उपन्यास । दश० ३५ ।
उवन्नासोवणए-वादिना अभिमतार्थसाधनाय कृते वस्तूपन्यासे तद्विघटनाय यः प्रतिवादिना विरुद्धार्थोपनयः क्रियते पर्यनुयोगोपन्यासे वा य उत्तरोपनय. स उपन्यासोपनय । ठाणा० २५४ ।
उवप्पयाण-उपप्रदानं-अभिमतार्थदानम् । विपा० ६५ । उपप्रदानम् । दश० १०९ ।
उवब्बूहियं - उपबृंहितं-समर्थितं, अनुमतं वा । आव० ७३९ ।
उवभोग-उपभुज्यत इति उपभोग -सकृद्भोगोऽशनपानादि, अन्तर्भोग, आहारादि वा । आव० ८२८ । सकृद्भोग· । भग० २९७ । आव० ८३० । पुन पुनर्भुज्यत इति उपभोग -वस्त्रालङ्कारादि । प्रज्ञा० ४७५ । ण्हाणवत्थाभरणगंधमल्लाणुलेवणधूवणवासतंबोलादि । नि० चू० तृ० १ आ । धारणमुपभोग । आव० ३२५ । उपभोग -पौन पुन्येन चोपभोजनमुपभोग । भग० ३५० ।
उवभोगंतराए - उपभोगान्तरायः - यदुदयवशात् सत्यपि विशिष्टवस्त्रालङ्कारादिसम्भवेऽसति च प्रत्याख्यानपरिणामे वैराग्ये वा केवलकार्पण्यान्नोत्सहते भोक्तुं तत् । प्रज्ञा० ४७५ ।
उवम-उपमीयतेऽनेन दार्ष्टान्तिकोऽर्थ इत्युपमानम् । दश० ३४ ।
उवमा उपमा-सादृश्यम् । उत्त० २७९ । दृष्टान्ता । बृ० प्र० १६८ आ । सादृश्योपदर्शनरूपा । उत्त० २७२ । उपमादोष -हीनाधिकोपमानाभिधानं, अष्टाविंशतितम. सूत्रदोष· । आव० ३७४ । उपमा । प्रज्ञा० ३६४ । सामर्थ्यविशेष । जीवा० २७८ । उपेत्युपयोगपूर्वकं मेति ज्ञानं, उपमा-सम्प्रधारणा । उत्त० २२४ ।
उवमाणं-उपमानं-दृष्टान्त. । ओघ० १७ ।
उवमादोसो-उपमादोष -यत्र हीनोपमा क्रियते । सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषेऽष्टाविंशतितमो दोष । अनु० २६२ ।
उवयंति-अवपतन्ति-अवतरन्ति । आचा० १६६ ।

उवलिंपिज्ज-उपलिम्पनम् । आचा० १३५ ।

उवलित्ता-जातिजुंगिलाभेओ । नि० चू० द्वि० ८३अ ।

उवलेद्दा-सतुष्ठा । उत्त० १९२ ।

उवलेवण-उपलेपनं छगणादिना । अनु० २६ । छगल-मट्टियाए लिंपण । नि० चू० प्र० २३१अ ।

उवलेवणकओवयारो-कृतोपलेपनोपचार । आव० ४१६।

उवल्लियंती-उपलीयन्ते-आश्रयन्ति । व्य० द्वि० २७८आ ।

उवल्लिसामि-उपालयिष्ये-वक्ष्यामि । आचा० ४०६ ।

उववज्जति-उत्पद्यते । जीवा० ११० ।

उववज्जिऊण-उपयुज्य-उपयोग दत्त्वा । ओघ० ११६ ।

उववज्झा-उपवाह्या -राजादिवल्लभा । औपवाह्या -राजादि वल्लभाना कर्मकरा इति । दश० २४८ ।

उववण्णो-उपपन्न । जीवा० ९७ ।

उववत्तारो-वचनव्यत्ययादुपपत्ता भवति इति । ठाण० ४२० ।

उववन्नो-उपपन्न -आश्रित । सूर्य० २८१ ।

उववाइए-उपपात -प्रादुर्भावो जन्मान्तरसंक्रान्ति-, उपपाते भव औपपातिक । आचा०. १२ । उपपादुक -भवान्तरसङ्क्रान्तिभाक् । आचा० २० ।

उववाइय-उपपातेन निर्वृत्त औपपातिक -भवाद्भवान्तर गामीति । सूत्र० २० । उपयाच्यते-मृग्यते स्म यत्तद् उपयाचित-ईप्सित वस्तु । ज्ञाता० ८८ ।

उववाइया-उपपाताज्जाता उपपातजा' अथवा उपपाते भवा औपपातिका -देवा नारकाश्च । दश० १४१ ।

उववाए – उपपात – उपपाताभिमुख्येनापान्तरालगतिरूपे स्वर्थ । भग० ९६३ । देवजन्म । ठाण० ४१९ । नारकानुपपातार्थ, द्वादशशते षष्ठोद्देशक । भग० ५९६ । उपपात – प्रादुर्भाव । प्रज्ञा० ३२८ ।

उववायणं-उपपतनमुपपात, बादरपृथ्वीकायिकाना पर्याप्तानां यदनन्तरमुक्तं स्थान तत्प्राप्त्याभिमुख्यमिति भाव तेनोपपातेन, उपपातमङ्गीकृत्य । प्रज्ञा० ७३ ।

उववात-उपपातं-नारकदेवानां जन्म । ठाण० ४६२ । उपपात -गमनमात्रम् । ठाण० ३५६ ।

उववातसभा-उपपातसभा-यस्यामुत्पद्यते सा । ठाण० ३९२ ।

उववालो-ध्यमपक्षण । नि० चू० प्र० २४१अ ।

उववायं-उपपातं-जन्म । आचा० १६३ । भवनपतिरस्थानप्राप्त्यभिमुख्यम् । भग० १४३ । उपपातेन निर्वृत्त औपपातिकम् । आव० ७३१ । उप-समीपे पतन-स्थानं उपपात देवशयनीयसंज्ञकस्थानं । उत्त० ४४ । उपपात -सेवा । भग० १९८ ।

उववायगई-उपपाताय-उत्पादाय गमनं सा उपपातगति । भग० ३८१ ।

उववायगती-उपपात एव गति उपपातगति । गति-प्रपातस्य चतुर्थो भेद । प्रज्ञा० ३२६ ।

उववायसभा-सिद्धायतनस्योत्तरपूर्वस्यां सभा उपपातसभा। जीवा० २३६ ।

उववास-उपवास, अभक्तार्थकरणम् । ठाण० १२६ ।

उववूह-उपबृंहणं-समानधार्मिकाणां सद्गुणप्रशंसनेन तद्-वृद्धिकरणम् । दश० १०२ । उपबृंहणमुपबृंहा-दर्शनादि गुणान्विताना सुलब्धजन्मानो यूयं युष्म च भवादृशामिदमित्यादिवचोभिस्तद्गुणपरिवर्द्धनं सा । उत्त० ७६७ । समानधार्मिकाणां सद्गुणप्रशंसनेन तद्वृद्धिकरणम् । प्रज्ञा० ५६ ।

उववूहए-उपबृंहते-समर्थयति । दश० ४४ ।

उववेओ – उपपेत इति व्यञ्जनव्यञ्जनगुणोपपेत । ठाण० ४२१ ।

उववेय – उपपेत -युक्त । जीवा० २७४ । भग० ११९ । उप अप इत इति शब्दत्रयस्य स्थाने शकन्ध्वादिदर्शनादुपपेत -युक्त । ज्ञाता० ११ ।

उवसंकमित्ता-उपसङ्क्रम्य । सूर्य० ११ ।

उवसंकमित्तु-उपसङ्क्रम्य आसन्नीभूय । आचा० ३३१। उपसङ्क्रम्य-उपेत्य । आचा० २७१ ।

उवसंखा-उपसङ्ख्या-सम्यग्यथावस्थितार्थपरिज्ञानम् । सूत्र० २१४ ।

उवसंत-उपशान्त-अनाकुलम् । ओघ० १५६ । यद् क्षयं गतायामनुदयगतं वर्तते तत् । विष्कम्भितोदयमुपशान्तमिथ्यास्वभावं च । विशे० २८६ । किञ्चिन्मिथ्यात्वस्योपशामपनीय सम्यक्त्वस्वरूपतया परिणत किञ्चिन्मिथ्यात्वस्वरूपमेव । कृ० प्र० २१आ । रागद्वेषाभावोपशमात् उपशान्त । आचा० १०० । स्वपालोकानागतिस्मरणगत । अनु० १४० । अन्तर्वृत्त्या उपशान्त । भग० ४९० । विष्कम्भितो

दयमपनीतमिथ्यात्वभावं च । विष्कम्भितोदयमित्यर्थः । ठाणा० ४८ । उपशान्त-न सर्वथाऽभावमापन्नं, निकाचितादयवस्थोद्रेकरहितं वा । प्रज्ञा० ४०३ । औप० ३५ । जं० प्र० १४६ । जं० प्र० ३८९ । जम्बूद्वीपैरवते तीर्थकरनाम । सम० १५३ । प्रव्रज्यापरिणत । नि० चू० द्वि० २८अ । उपशान्त-उपरत । दश० २०६ । सूत्र० ४१७ । अपगतसन्देह सवृत्त इति । सूत्र० ४०९ । अनुदयावस्थ । प्रज्ञा० २९१ ।

उवसंतकसातो उपशान्तकषाय । उत्त० २५७ ।

उवसंतजीवी-अन्तवृत्त्यपेक्षया उपशान्तजीवी । प्रश्न० १०६ ।

उवसंतमोह-उपशान्तमोह -अनुत्कटवेदमोहनीय । भग० २२३ । श्रेणिपरिसमाप्तावन्तर्मुहूर्तं यावदुपशांतवीतराग । भूतग्रामस्यैकादश गुणस्थानम् । आव० ६१० ।

उवसंतमोहणिज्जो-उपशान्तमोहनीय - उपशान्त-अनुदय प्राप्त मोहनीय दर्शनमोहनीय यस्यासौ । उत्त० ३०६ ।

उवसंपज्जहण-उवसंपदन उपसम्पद्-अन्यरूपप्रतिपत्ति, सा च हान च स्वरूपपरित्याग उपसम्पद्धानम् । उत्त० ४७० ।

उवसंपज्जइ-उपसम्पद्यते । आव० ८२५ ।

उवसंपज्जणा-उपसम्पद् । दश० १०५ ।

उवसंपज्जमाणगति-उपसपद्यमानगति -यदन्यमुपसम्पद्य-आश्रित्य तदवष्टम्भेन गमनम् । विहायोगतेस्तृतीयो भेद । प्रज्ञा० ३२७ ।

उवसंपज्जसेणियपरिकम्मे-पञ्चम परिकर्म । सम० १२८ ।

उवसंपज्जित्ता-उपसम्पद्य-सामीप्येनाङ्गीकृत्य । दश० १५० ।

उवसंपन्न-उपसम्पन्न-निश्रयार्थमाश्रितम् । सूत्र० ४१० ।

उवसंपया-उपसपत्-सामीप्येनाङ्गीकरण यदेतदुत्प्रव्रजनम् । दश० २७३ । सामाचार्या दशमो भेद । उपसम्पत्-इतो भवदीयोऽहमित्यभ्युपगम । ठाणा ४९९ । उपसम्पत् । आव० २५९ । सामाचार्या दशमो भेद । उपसम्पत्-ज्ञानादिनिमित्तमाचार्यान्तराश्रयणम् । भग० ९२० । उपसम्पत्-ज्ञानाद्यर्थं भवदीयोऽहमित्यभ्युपगम । ठाणा० १४० । त्वदीयोऽहमित्येव श्रुतार्थमन्यदीयमत्ताभ्युपगम । अनु० १०३ । उवसंपदन उपसम्पत्-अन्यरूपप्रतिपत्ति । उत्त० ४१० ।

उवसंहार-उपसहार-उपनय । दश० ५२ । सू० वृ० १३६आ ।

उवसग्ग-उपसृज्यते-धातुसमीपे नियुज्यते इति उपसर्ग । प्रश्न० ११७ । बाधाविशेष । ठाणा० २८७ । रागादिजनित । औप० १९० । उप-सामीप्येन सर्जनम्, उपसृज्यतेऽनेनेति वा करणसाधन, उपसृज्यतेऽसाविति वा कर्मसाधन । आव० ४०४ । प्रव्रज्याग्रहणे निवारणम् । पिण्ड० १३९ । देवादिकृतोपद्रवा । ठाणा० ५२३ । राजस्वजनादिकृतो देवमनुष्यतिर्यक्कृतो वा । पिण्ड० १७० । उप-सामीप्येन सृज्यते तिर्यग्मनुष्यामरै कर्मवशगेनात्मना क्रियत इति उपसर्ग । उत्त० १०९ । उपसर्ग-उपसर्जन, धर्मप्रच्यावनम् । दिव्याद्य । भग० १०१ ।

उवसग्गपरिण्णा-उपसर्गपरिज्ञा, सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे तृतीयमध्ययनम् । आव० ६५१ । उत्त० ६१४ ।

उवसग्गपरिन्ना-सूत्रकृताङ्गे तृतीयमध्ययनम् । सम० ३१ ।

उवसग्गसहो-उपसर्गसह । आव० ६४८ ।

उवसत्तो-उपसक्त-गाढमासक्त । उत्त० ६३२ ।

उवसमंति-उपशाम्यन्ति-सवर्त्तकवायुविकुर्वणान्निवर्त्तन्ते, सवर्त्तकवातविकुर्वणमुपसहरन्तीति भाव । राज० २३ ।

उवसम-उपशममिति औपशमिकम् । विपाकोदयावष्कम्भणलक्षण । दश० ४३ । उपशम विपाकोदयावष्कम्भणलक्षण । नदी ७७ । क्रोधाद्युदयाभावे भवति । आचा० १५० । शान्तिरूप । दश० २३४ । पञ्चदशदिवसनाम । जं० प्र० ४९० । सूर्य० १४७ । क्षायोपशमिक । सूत्र० ६ । विंशतितमो मुहूर्तनाम । जं० प्र० ४९१ । मध्यस्थपरिणाम । आव० ४४९ । उदीर्णस्य क्षय अनुदीर्णस्य च प्रदेशत प्रदेशतश्चाननुभवनम् । सर्वथैव विष्कम्भितोदयत्वमित्यर्थ । भग० ५९ । समा । दश० चू० १२४ । उदयनिरोधोदय प्राप्तापफलीकरणम् । दश० २३४ ।

उवसमणा-उपशमना-उदयोदीरणानिधत्तनिकाचनाकरणनामयोग्यत्वेन कर्मणोऽवस्थापनम् । ठाणा० ६२१ ।

उवसमविवेयसंवर-उपशमविवेकसवरम्, चिलातस्य प्रदेश । आव० ३७१ ।

उवसमिए उपशम-उदीर्णस्य कर्मण क्षयोऽनुदीर्णस्य विष्कम्भितोदयत्वं स एवं पशमिक क्रियामात्र उपशमेन वा

निर्वृत्त औपशमिक –सम्यग्दर्शनादि। भग० ६४९। औप शमिक – उपशमनमुपशम –कर्मणोऽनुदयाक्षीणावस्था भस्मपटलावच्छन्नाग्निवत्, स एव, तेन वा निर्वृत्त । अनु० ११४।

उवसामिअ– उपशमित – भस्मछन्नाग्निकल्पता प्रापितम्। आव० ५९।

उवसामेमाण–क्षुद्रव्यन्तराधिष्ठित समयप्रसिद्धविधिनोपशमयन्त इति । ठाणा० ३५३

उवसाहिज्जउत्ति–पश्यताम् । नि० चू० प्र० ३४९आ।

उवसित–उपाश्रित –अङ्गीकृत । वैयावृत्त्यकरत्वादिना प्रत्यासन्नतर । द्वेष । शिष्यप्रतीच्छककुलाद्यपेक्षा। भग० ३८५।

उवस्सए–उपाश्रय । प्रश्न० १२७।

उवस्सओ–उपाश्रय –वसति । प्रश्न० १२७।

उवस्सग–उपाश्रय –वसति । आव० ७०३।

उवस्सगा–उपाश्रया । बृ० द्वि० १८३अ।

उवस्सते–उपाश्रय –निलय । प्रश्न० १२८।

उवस्सय– उपाश्रय वसति । ओघ० ६५, १७३। दश० २१८। जं० प्र० १२१। उपाश्रय –गृहपतिगृहादिकम्। ठाणा० ३१९। वसतेर्वृत्तिपरिक्षिप्त, परिणामना लोकवत इत्यर्थ । ज्ञाता० २०५। उपाश्रया –उपाश्रीयन्ते–भज्यन्ते शीतादित्राणार्थं ये ते उपाश्रया –वसतय । ठाणा० १५७। पडिस्सयो । सव्वस्स वा आसण। दश० चू० १११।

उवस्सयसंकिलेसे–द्वितीय सक्लेश । उपाश्रयो–वसतिस्तद्विषय सङ्क्लेश –असमाधि उपाश्रयसङ्क्लेश । ठाणा० ४८९।

उवस्सित–उपाश्रित –द्वेष । शिष्यकुलाद्यपेक्षा । ठाणा० ४४१। द्वेष, शिष्यप्रतीच्छककुलाद्यपेक्षा। ठाणा० ३१९।

उवहडे - उपहृत – भोजनस्थाने ढौकितं भक्तमिति भाव । ठाणा० १४८।

उवहतो–अविसुद्धा । नि० चू० द्वि० ११६अ।

उवहय–उपहति । उत्त० १४५। मगोम। नि० चू० तृ० ८१आ।

उवहयपरिणामो–उपहतपरिणाम । आव० ५१२।

उवहरइ–उपहरति–विनाशयति । ज्ञाता० १९२।

उवहाणं–उपधान–तप । सूत्र० ६१, ६९, ७९। तपश्चरणम्। सूत्र० २५१। अनशनादिक तप । सूत्र० ५८। आगमोपचाररूपमाचाम्लादि । उत्त० १२८। गुणोपष्टम्भकारि। प्रश्न० १५७। उच्छीर्षकम्। बृ० द्वि० २२०अ। उपधान–करणम्। व्य० प्र० ५०आ। स्थगनम्। व्य० द्वि० १आ। प्रायश्चित्तम्। व्य० द्वि० १९५अ। विहितशास्त्रोपचार । उत्त० ६५६। तप । ठाणा० ४४०। उपधान–तप । सम० ५७। ठाणा० ६५, १९५। उपधीयते–उपष्टभ्यते श्रुतमनेनेति उपधान–श्रुतविषयस्तपउपचार । ठाणा० १८१। विधानम्। सम० १२७। उपदधातीत्युपधान–उपकरोतीत्यर्थ । ओघ० १११। अङ्गानङ्गाध्ययनादौ यथायोगमाचाम्लादितपोविशेष । उत्त० ३४७।

उवहाणग – पयान्निपुन्न सिगवहाण । नि० चू० द्वि० ६१अ। उपधानम्। ठाणा० ४३४। उपधानक–अप्रतिलेखितदूष्यपञ्चके द्वितीया भेद । आव० ६५२।

उवहाणपडिमा–उपधान–तपस्तत्प्रतिमोपधानप्रतिमा, द्वादश भिक्षुप्रतिमा एकादशोपासकप्रतिमाश्चेत्येवरूपा। ठाणा० ६५। सम ५६।

उवहाणवीरिए–उपधान–तपस्तत्र वीर्यं यस्य स उपधानवीर्य –तपस्यनिगूहितबलवीर्य । सूत्र० ६५।

उवहाणसुय – उपधानश्रुतं – आचाराङ्गस्याष्टममध्ययनम्। उत्त० ६१६। सम० ४४। उपधानश्रुतं, आचारप्रकल्पे प्रथमश्रुतस्कन्धस्याष्टममध्ययनम्। आव० ६६०। प्रश्न० १४१।

उवहार–उपहार । आव० ११०। बलि । आव० ६९८।

उवहारा–बलिमादया। नि० चू० प्र० २६९अ।

उवहारियं–अवधारित–निर्णीतम्। आव० ६३५।

उवहि–उपदधातीति उपधि –उप – सामीप्येन सयम धारयति पोषयति चेत्यर्थ । स च पात्रादिरूप। ओघ० १२। उपकरणम्। उत्त० ५८८। वर्षाकल्पादि । उत्त० ३५८। उपकरणमाभरणादिर्व्यसनो, भावनस्तु छद्मादि यनात्मा नरक उपधीयते। उत्त० ४६३। उपधि –मुस्तारकादि। आव० ८०। रजोहरणादि । ठाणा० ३१७। उपधीयते–सङ्गृह्यत इति उपधि । आचा० १८०। आगमोक्त वस्त्रादि । दश० ११९। पात्रनियोगादि । व्य० प्र० २३७अ। उपधि –वस्त्रादि । प्रश्न० १२४। उपधीयते–ढौक्यते दुर्गति प्रत्यात्मा येनासावुपधि –माया, अष्ट

प्रकार वा कर्म । सूत्र० ६८ । उपकरणम् । आव० ५६८ । प्रश्ना० २९१ । प्रश्न० ३९ । उपदधातीति उपधि । ओघ० २०७ । माया । प्रश्न० ७८ । औपधि । प्रश्न० १५६ । माया । सूत्र० १०३ । उपदधातीति उपधि –उप–सामी प्येन सयम धारयति पोषयति चेति पात्रादिरूप । ओघ० १२ । आव० ६६१ । उपधीयते येनासावुपधि – वचनीयसमीप गमनहेतुर्भाव । भग० ५७२ । उपधि –उपकरणम् । पिण्ड० १२ । कषाय । दश० ७६ । उवकरण । नि० चू० प्र० ६४ आ।

उवहिअसुद्धं–उपधिना–मायया अशुद्धं–सावद्य उपध्यशुद्ध, अपमद्वारस्यैकोनविंशत्तम नाम । प्रश्न० २६ ।

उवहिए–उपधिक –मायित्वेन प्रच्छन्नचारी । ज्ञाता० ८१ । उपहित –प्रक्षिप्त –प्राप्त । भग० १०० । उपहितानि–गुरो राहाराद्यर्थं ढौकितानि । विशे० ४४० ।

उवहिओ–अधिकज्ञानाद्यर्थवं सन् गुरुषु बहुमानपर । व्य० प्र० २३६अ ।

उवहिय–उपहित –क्षिप्त । विशे० ९४३ । औपधिक – मायाचारी । प्रश्न० ३० ।

उवहिसंकिलेसे–प्रथमसंक्लेश । उपधीयते – उपष्टभ्यते सयम सयमशरीर वा येन स उपधि –वस्त्रादिस्तद्विषय सङ्क्लेश –असमाधि । ठाणा० ४८९ ।

उवहिसंभाग–उपधे सभोग उपधिसभोग । व्य० द्वि० ११९ आ ।

उवही–उपधि –परवचनाभिप्राय । बृ० तृ० ४६ आ । नि० चू० प्र० २८९ आ ।

उवाइ–उत्पातकप्रधाना विद्या । विशे० ९८२ ।

उवाइक्कम्म–उपातिक्रम्य–सम्यक परिहृत्य । आचा० ३८६ ।

उवाइणावित्तए – उपानाययितु सप्रापयितुम् । बृ० तृ० ११४ आ । उपादापयितु प्राहयितुमित्यर्थ । ज्ञाता० १७७ ।

उवाइणावित्ता–उपादापय्य–प्रापय्य । भग० २९२ ।

उवाइणित्ता–उपनीय–अतिवाह्य । आचा० ३६५ ।

उवाइति–उपयाचते । आव० ४०४ ।

उवाईय–उपादित–उपभुक्तम् । आचा० १०८ ।

उवाईयसेसेण–उपादित–उपभुक्तम्, तस्य शेषमुपभुक्तशेषम् । आचा० १०८ ।

उवाए–उपाय –अप्रतिहतलाभकारणम् । ज्ञाता० ३४ ।

उवाओ–अवपात । गर्त्त । आचा० ३३८ । उपाय । आव० ४१४ ।

उवागच्छति–पविशति । नि० चू० प्र० २३० अ ।

उवागच्छिज्जा–उपागच्छेयु –अतिथयो ऽभ्येयु । आचा० ४०३ ।

उवागमण–उपागमन–स्थानम् । आचा० ३७५ ।

उवात–अवपात । सेवा । ठाणा० १२९, ५१६ । ज्ञाता० ४ ।

उवातिणा–नमति । नि० चू० द्वि० २२ आ ।

उवातिय । नि० चू० द्वि० १४४ अ ।

उवातिया–उपयाचितम् । नि० चू० प्र० ३५१ आ ।

उवाते–उपाय –उपेय प्रति पुरुषव्यापारादिका साधनसामग्री स यत्र द्रव्यादावुपेये अस्तीत्यभिधीयते यथैतेषु द्रव्यादि विशेषेषु साधनीयेष्वस्त्युपाय, उपादेयता वाऽस्य यत्राभि धीयते तदाहरणमुपाय । आहरणस्य द्वितीयो भेद । ठाणा० २५३ ।

उवातो–आणानिद्देसो । दश० चू० १२९ ।

उवादान–उपादान–आय, हेतु । विशे० ५४३ ।

उवादिणावेत्ता–उपादाय–गृहीत्वा, आक्रम्य । सूत्र० २३४ ।

उवादीयमाणा–उपादीयन्ते–क्रमशा बध्यन्ते । आचा० ७८ ।

उवाय–खड्डा । दश० चू० ७८ । उपाय –उदाहरणस्य द्वितीयो भेद । ३५ । एकान्तमृदुभणनादिलक्षण । दश० २४७ । उप सामीप्येन (आय) विवक्षितवस्तुनोऽविरललाभ हेतुत्वाद्वस्तुनो लाभ एवोपाय –अभिलषितवस्त्ववाप्तये व्यापा रावशेष । दश० ४० । उपार्जनहेतु । उत्त० ६३१ ।

उवायकारी–उपायकारी–सूत्रोपदेशप्रवर्त्तक । सूत्र० २३४ ।

उवायकिरिया–उपायक्रिया–यद्द्रव्य येनोपायेन क्रियते सा । सूत्र० ३०४ ।

उवायणं–अवपातयतो प्रशातोऽकुर्वत । व्य० प्र० २९अ ।

उवायवं–अवपातवान्–वन्दनशील, निर्देशवर्ती वा । दश० २५३ ।

उवारियालेणे – चमरचचाबलीचञ्चाभिधानराजधान्योर्मध्य भागे तद्भवनयोर्मध्योल्लताऽवतरतपार्श्वपीठरूपे अवतारिकल यने । सम० ३१ ।

उवालंभ–उपालम्भन उपालम्भो–भङ्ग्य–तरणानुशासनमेव स यत्राभिधीयते स । आहरणतद्देश द्वितीयो भेद । ठाणा० २५३ । उपालम्भ –इयमेवानौचित्यप्रवृत्तिप्रतिपादनगर्भा । ठाणा० १५५ । सपिपासमभिधायुप उपालम्भ । बृ० प्र० १५०आ । मातुलयोपदेशप्रस्थानम् । व्य० प्र० ११७ अ ।

उपालम्भ। उपालम्भ -अंगैव विचित्र भाजनम्। दश० ४६।

उवालियइ-उपलीयते। आचा० ३६५।

उवासंतर-अवकाशान्तर-आकाशविशेष, अवकाशरूपान्तराल वा। भग० ७७।

उवासंतराति। ठाणा० ८६।

उवासतरे-द्वयोरन्तरमवकाशान्तरम्। भग० ७७२। ठाणा० ४३२।

उवासग-उपासक -श्रावक। आव० ६४६। नि० चू० द्वि० २७अ। सम० ११९। साधू चेइए वा पोसह उवासतो उवासगो भवति। नि० चू० द्वि० १२१आ। उपासते-सेवन्ते यतीनित्युपासका -श्रावका। उत्त० ६९३।

उवासगदसा-उपासकाना-श्रमणोपासकाना सम्बन्धिनोऽनुष्ठानस्य प्रतिपादिका दशा -दशाध्ययनरूपा उपासकदशा। उपा० १। दश० ४७।

उवासणा-उपासना-नापितकर्म। आव० १२९।

उवासमाणा-रात्रिजागरणात्तदुपासना विदधाना। ठाणा० ३५२।

उवासय-उपासक। दश० ४७।

उवाहण-उपानत्। आव० ३०५, ३४१।

उवाही-उपाधीयते-व्यपदिश्यते येनेत्युपाधि -विशेषणं स उपाधि। आचा० १५६।

उविद्ध-उपेल स्वप्रकृत्या। उत्त० ३९१।

उविद्धो-अवबद्ध। आव० ३५१।

उविय परिकर्मितम्। ज्ञाता० ७३।

उवीलगो-आलोयग गहत जो महुरादिवयणपओगेहिं तहा भणइ जहा सम्म आलाएति सो उवीलगो। नि० चू० द्वि० १२८आ।

उवीलण-निश्चयम्। नि० चू० प्र० १४२अ। अवपीडना, बन्धनविशेष। ज्ञाता० २३२।

उवीलेमाणे-अवपीडयन्-बाधयन। विपा० ३९।

उवेक्खेज्जा-उपेक्षेत-अवधीरयेत्। उत्त० ११२।

उवेक्खेयव्वो-उपेक्षितव्य। आव० ६४१।

उवेह-उपेल, आदृद्दिकया। बृ० द्वि० १३९आ।

उवेहमाण-उपेक्षमाण -अनुर्वन्। आचा० १५६। परीषहोपसर्गान् सहमान इष्टानिष्टविषयेषु वोपेक्षमाणो माध्यस्थ्यमवलम्बमान। आचा० ४३०। उपेक्षमाण -अवगच्छन्। आचा० २१२। पर्यालोचयन्। आचा० २२४।

उवेहा-उपेक्षा-उप-सामीप्येनेक्षा, अवधीरणायां वर्तते। ओघ० ११४।

उवेहे-उपेक्षेत-औदासीन्येन पश्येत्। उत्त० ९१।

उवट्टंतो-अवपतन्। आव० २०३।

उव्वट्टइ-उद्वर्तयति-म्रक्षिततैलापनयन करोति। जं० प्र० ३९४।

उव्वट्टण-उद्वर्तन-तत्प्रथमतया वामपार्श्वेन सुप्तस्य दक्षिणपार्श्वेन वर्तनम्। आव० ५७४। अपवर्तना। विशे० १००६। उद्वर्तना-नारकतिर्यगेकेन्द्रियेभ्यो निर्गम। आव० ५१३। उद्वर्तन-लोठनम्। पिण्ड० १६४। पङ्कापनयनलक्षणम्। दश० ११७।

उव्वट्टणट्ठ-उद्वर्तनार्थं-उद्वर्तननिमित्तम्। दश० २०६।

उवट्टयं-उद्वर्तक-चूर्णपिण्डम्। जं० प्र० ३९४।

उव्वट्टा-उद्वृत्ता। प्रज्ञा० ३९७।

उव्वट्टिताणि-उद्वर्तितानि। आव० ९८।

उव्वट्टिया-उद्वर्त्तिता-च्याविता। पिण्ड० १२३।

उव्वट्टति-एक्कसिं उव्वट्टति। नि० चू० प्र० ११६आ।

उव्वट्टो-उद्वृत्त। आव० १७३।

उव्वणवेसो-उल्बणवेष। ओघ० १४६।

उव्वण्णो उत्कठित। व्य० द्वि० २०३आ।

उव्वत्तलो-उद्वतयन। आव० ३१३। ओघ० ८४।

उव्वत्तणं-उद्वर्तनम्-मार्गपरावर्तन। बृ० तृ० १२९आ। उत्ताण्यस्य पार्श्विकरण। नि० चू० प्र० २११अ। उद्वर्तते-यतो व्रजस्ततो याति। ओघ० ४७।

उव्वत्तणा-परावत्तणागुंचणपसारणा कायस्वा। नि० चू० प्र० ६०अ।

उव्वत्तमाणे-अपवर्तयन्। आचा० ३४३।

उव्वत्ता-ज पाडिहारियणिहिज्ज तं। नि० चू० प्र० २२५आ।

उव्वत्तिया-तेणेव अगणिनिक्खित्त ओयत्तेऊण एगपासेण देति। दश० चू० ८०।

उव्वत्तेहि-उद्वर्तय। आव० ३५८।

उव्वर-अतिप्रशस्तम्। व्य० द्वि० ४२१आ।

उव्वरए। बृ० द्वि० ६२अ।

उव्वरग-अपवरकम्। आव० ६२२। नि०चू०प्र० १७४अ।

उव्वरति-उद्धरति। आव० ८५९।
उव्वरयं-अपवरकम्। आव० ५६१।
उव्वरिअ-उदवरितं। गर्दधिक जातम्। ओघ० १८८। अतिरिक्तम्। ओघ० १८६।
उव्वरियं-उद्धरितम्। पिण्ड ७९। अगनादे शेषभाग। आव० ८५९।
उव्वरो-उद्वर -घर्मोपताप। बृ० द्वि० २९३अ।
उव्वलणं-उद्वलनं, अभ्यङ्गनम्। बृ० द्वि० २१९अ।
उव्वलणेहि-उद्वेलनानि-देहोपलेपनविशेषा। ज्ञाता० १८३।
उव्वसिए-उद्वसित -उत्थित। ओघ० ४९।
उव्वसिय-उद्वस (उदुष्य)। आव० ७१।
उव्वाओ-श्रान्त। नि० चू० प्र० १६०अ।
उव्वाण-उद्वानं-किञ्चिदसस्निग्ध। ओघ० १७१।
उव्वाता-परिश्रान्त। बृ०द्वि० ८०आ। व्य०द्वि० १५७अ।
उव्वाया-उद्वाता -अतीवपरिश्रान्ता। बृ०प्र० २४३आ। परिश्रान्ताः। व्य० द्वि० २०२आ।
उव्वालना-उद्वालना, निष्कासना। बृ० द्वि० २५०अ।
उव्वासिअ-उदवासित -शोषित। ओघ० १७४।
उव्वासेइ-उपहसति। आव० ६६९।
उव्विग्ग-उद्विग्न-खिन्नम्। भग० १६६। सजातभय। विपा० ४३। उद्विग्ना -अथ पुनर्नानेन सार्द्धं युद्धयामहे इत्यपुन करणाशयवन्त। जं०प्र० २३९। उद्वेगवान्। प्रश्न० ५२।
उव्विद्ध-उद्विद्धं-ऊर्ध्वम्। औप० ३। उद्विद्ध-उण्डम्। ज्ञाता० २। ऊर्ध्वगत। जं० प्र० १६४। उच्चा। आव० १८४। उन्मिता, उच्चैस्त्वेन वा। अनु० १५८। उद्विद्ध -अत्यर्थमुच्च। औप० ९। उच्च। राज० ५।
उव्विहंताई-उत्पतन्ति। ज्ञाता० २३२।
उव्विहइ-ऊर्ध्वं विजहाति, ऊर्ध्वं क्षिपति। भग० २३०। उद्वि जहाति-ऊर्ध्वं क्षिपति। ज्ञाता० १६८।
उव्विहति-उप्पाडेति। नि० चू० प्र० २५६आ।
उव्विहामि-नयामि। ज्ञाता० १३९।
उव्विहिय-उद्वृत्य-उत्प्रेर्य। भग० ६२८।
उव्वीलए-अपव्रीडक -लज्जापनोदको यथा पर मुखमालोच यतीति। ठाणा० ४८६।
उव्वीलणं-अपत्रपणम्। उप० मा० गा० ७७।
उव्वीहामि-उच्चैष्यामि। नि चू० प्र० २०१अ।
उव्वेयग-उद्वेगक -इष्टवियोगादिजन्य उद्वेग, उद्वेजको वा लोकोद्वेगकारी चौरादिर्वा। भग० १९८।
उव्वेयण-उद्वेजन-चलनम्। भग० ४७१।
उव्वेयणओ-उद्वेजनक -चित्तविप्लवकारी, उद्वेगकर। प्रश्न० ५।
उव्वेयणयं-उद्वेगकृत्। महाप्र०।
उव्वेला-उद्वेला। आव० ५१४।
उव्वेलियं-उद्वेलित, उत्सारितम्। बृ० द्वि० २१५आ।
उव्वेलेंति-उद्वेलयन्ति। आव० १८९।
उव्वेलेउं-उद्वेलयितु, उद्वेष्टयितुम्। बृ० द्वि० २५७अ।
उव्वेह-उद्वेध। अनु० १७१। जीवा० ३२२। उण्डत्वम्। ३२५, ३४३, २२७। राज० ९१। जं० प्र० २८४। सम० ९७। ठाणा० ५२५। बाहल्यम्। जं० प्र० ३२७। भुवि प्रवेश। ठाणा० ६९। भूगतत्वम्। जं० प्र० २८३। भूम्यवगाह। ठाणा० ४७९। भूमिप्रवेश। जं० प्र० ७२।
उव्वेहलिया-वनस्पतिविशेष। भग० ८०४।
उष्णः-स्पर्शस्याष्टमो भेद। प्रज्ञा० ४७३।
उष्णरूपा-योनिभेद। आचा० १४।
उस-अवश्याय। विशे० १०२९।
उसक्कण-रंधियपुव्वस्स उसक्कण करेज्ज। नि०चू०प्र० १४२आ।
उसक्काविउ-उत्ष्वष्क्य, अध प्राप्य। आव० ६२१।
उसक्को-उत्कण्ठुल। नि० चू० तृ० ३६अ।
उसगार-मत्स्यविशेष। प्रज्ञा० ४४।
उसडा-उत्सता-उच्चा। जं० प्र० ४४।
उसण-उष्ण -प्रतिकूल। ठाणा० ४४४।
उसणं-लोअगपरिभोग उसण्ण भण्णइ। नि० चू० द्वि० १५९अ।
उसण्हसण्हिआओ-अतिशयेन प्राबल्येन च श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका उश्लक्ष्णश्लक्ष्णिका। अनु० १६३।
उसभ-ऋषभ, पञ्चदश कुलकरनाम। जं० प्र० १३२। भरतचक्रिपिता। आव० १६२। सम० १५२। वृषभ -भूषणविधिविशेष। जीवा० २६९। मरुदेवपत्न्या शिलाया पिता। उत्त० ३७९। समप्रसयममारोद्वहनात् वृषभ। आश्रित। आव० ५०२। सम्पद्यानसम्य द्रविड़वग

जं० प्र० १०७। पट्ट । सम० १४९। परिवेष्टनपट्ट । ठाणा० ३५७ । प्रज्ञा० ४७२ ।

उसभकण्ठो-वृषभकण्ठ -वृषभकण्ठप्रमाणो रत्नविशेष । जीवा० २३४ ।

उसभकूड-ऋषभकूट , जम्बूद्वीपे उत्तरार्द्धभरते पर्वत । जं० प्र० ८७। आव० १५१ ।

उसभज्झया-वृषभध्वजा -वृषभचिह्नोपेता ध्वजा । जीवा० २१५ ।

उसभनाराय-ऋषभनाराच-यत्पुन कीलिकारहित संहनन तत् । प्रज्ञा० ४७२ ।

उसभदत्त-नामविशेष । भग० ६२०, ५३२, ५४९, ५५६, ५५७। आचा० ४२९ । नवमशते त्रयस्त्रिंशत्तमोद्देशकेऽभिहित । भग० ४७५। ऋषभदत्त इषुकारनगरे गाथापति । विपा० ९५ । जम्बूस्वामिन पिता। नि०चू०द्वि० २९अ।

उसभपुरं-ऋषभपुर, द्वितीयनिह्नवोत्पत्तिस्थानम् । विशे० ९३४ । धनावहराजधानी । विपा० ९४ । राजगृहस्या परनाम । आव० ३१५ । नगरविशेष । उत्त० १०४। राजगृहम् । ठाणा० ४१४ । जीवप्रदेशप्ररूपकनिह्नवोत्पत्तिस्थानम्। आव० ३१२ ।

उसभसिरि-श्रीऋषभ । सम० १०६ ।

उसभसेण-मुनिसुव्रतजिनस्य भिक्षादाता । सम० १५१ । ऋषभस्वामिन प्रथमगणधर । सम० १५२ । सू० प्र० २५४अ । ऋषभसेन -भरतपुत्र । आव० १४९ ।

उसभा-ऋषभा-शाश्वतप्रथमप्रतिमानाम । जीवा० २२८ ।

उसवियं-उत्रासित । नि० चू० प्र० २९४अ ।

उसह-ऋषभ , सकलभारोद्वहनाद्वृषभ इव ऋषभ , वृषभो वा इति संस्कार , तत्र वृषभ इव वृषभ इति वा, वृषेण भातीति वा वृषभ । जं० प्र० १३५ ।

उसहकूडप्पभाई-ऋषभकूटप्रभाणि, ऋषभकूटाकाराणि । जं० प्र० ८८ ।

उसहकूडे-ऋषभकूट । जं० प्र० ३४० ।

उसहच्छाया-वृषभच्छाया-छायाया सप्तमो भेद । प्रज्ञा० ३२७ ।

उसहपुरं-ऋषभपुरं-नगरविशेष । उत्त० १०५ ।

उसा-त्रैनै । नि० चू० द्वि० ८३अ ।

उसिण-ताविते तं चेव वक्कयजीव, एवमिं धोवण । नि० चू० द्वि० ११८आ । निदाघादितापात्मकम् । उत्त० ८२ । उष्ण -घर्म । ठाणा० २८७। आहारपाकादिकारणं वह्न्या घनुगत । अनु० ११०।उष्णो मार्द्दवपाकदृत् ।ठाणा० २६। उष्ण -अप्रासुकम् । दश० २०६ ।

उसिणपरितावे-उष्णपरिताप -उष्ण - उष्णस्पर्शवद् भूशिलादि तेन परिताप । उत्त० ८९ ।

उसिणब्भूए-अस्वाभाविकमौष्ण्य प्राप्त । भग० १७५ ।

उसिणोदए-उष्णोदक-स्वभावत एव क्वचिन्निर्झरादावुष्णपरिणामम् । बादरास्कायभेद । प्रज्ञा० २८ ।

उसिणोदग-उष्णोदकं-क्वथितोदकम् । दश० २२८ । उष्णत्रिदण्डम् । पिण्ड० १७ ।

उसिणोदगवियडेण-उष्णोदकविकटेन- उष्णोदकेनाप्रासुकेनात्रिदण्डोद्वृत्तेन पश्चाद्वा सचित्तीभूतेन । आचा० ३४२ ।

उसिय-उत्सृतानि-लम्बमानानि । राज० ६४ ।

उसीर-उशीरं-वीरणीमूलम् ।ज्ञाता० २३२।जीवा० १९१। राज० ३४ । मूलविशेष । जीवा० १३६ ।ओशीरं-वीरणीमूलम् । प्रश्न० १६२ ।

उसीसद्धवणं-सीसस्स समीव उवसीस, सीसस्स वा उवक्कमणं उसीस द्ववण-णिक्खेवो । नि० चू० प्र० २४७अ ।

उसु-इषु -बाण । भग० ९३, २३० । शरवनगरकादिसमुदाय । भग० २३० ।

उसुअ इषुक -इषुकाकारमाभरण, तिलक वा। पिण्ड०१२४।

उसुआर-इषुकार -राजपुत्रविशेष । उत्त० ३९४ ।

उसुआरपुर-इषुकारपुरं-नगरविशेष । उत्त० ३७५ ।

उसुकारिज्जं-इषुकारीय-उत्तराध्ययने चतुर्दशमध्ययनम् । उत्त० ३९३ ।

उसुकाल-उक्खल, उदूखल । नि० चू० द्वि० ८३आ।

उसुगारपव्वय-पर्वतविशेष । ठाणा० ८० ।

उसुत्तियलयं-जेण वा कट्ठादि मचालेति त मविस उस्सित्तयलय । नि० चू० प्र० ११६आ ।

उसुद्धसरीरो-मलपंकियसरीरो उमद्दसरीरो भण्णति । नि० चू० द्वि० ६५अ ।

उसुमट्टिता-वट्टिया पुणो मट्टियाए सह कुट्टिज्जति एस । नि० चू० तृ० ६४अ ।

उसुयार-इषुकार -नगरविशेष , ऋषभदत्तगाथापतिस्थानम्। विपा० ९५ । इषुकारपुरनृपति । उत्त० ३९५ ।

उसुयारपुरं-इषुकारपुरं, कुरुजनपदे नगरं, इषुकारराजधानी। उत्त० ३९५।

उसुयारिज्जं-उत्तराध्ययने चतुर्दशमध्ययनम्। सम० ६४।

उसू-इषुः-शरः। सिद्धिगमने दृष्टान्तः। आव० ४४२। तिलगो। नि० चू० द्वि० ९५अ।

उसूयालं-उदूखलम्। आचा० ३९७।

उसे-ऊषः-पांशुक्षारः। दश० १७०।

उस्सओ-उच्छ्रयः भावोन्नतत्वम्। अहिंसायाः पञ्चचत्वारिंशत्तमं नाम। प्रश्न० ९९।

उस्सकइ-उत्ष्वष्कते-तदाकारभावमात्रधारणतस्तत्प्रतिबिम्बमात्रधारणतो वोत्सर्पतीत्यर्थः, कृष्णलेश्यातो हि नीललेश्या विशुद्धा ततस्तदाकारभावं तत्प्रतिबिम्बमात्रं वा दधाना सती मनाक् विशुद्धा भवतीत्युत्सर्प्पतीति। प्रज्ञा० ३७२।

उस्सकण-उत्ष्वष्कणं-परतः करणम्। पिण्ड० ९१।

उस्सग्गनिवाइयाण-उत्सर्गपातिनामुत्सर्गेण सयममनुपालयतां यासाम्। व्य० द्वि० ४२९अ।

उस्सग्गो-उत्सर्गः-उपयोगः। ओघ० १५५। परिष्ठापनम्। ओघ० १३८। कायोत्सर्गः। आव० ७८२। उवओगं, काउस्सग्गो। नि० चू० द्वि० १६४अ। पइण्णकहा। नि० चू० प्र० २४०अ। कारणनिरपेक्षं सामान्यस्वरूपम्। वृ० तृ० ९७आ।

उस्सण्णं-लोअगपरिभोगं उस्सण्णं भण्णइ। नि० चू० द्वि० १५९अ। उस्सण्णं एकान्तेनैव अलक्षणयुक्ता बोंदि सरीरमित्यर्थः। नि० चू० द्वि० ८५आ। उत्सन्नं-बाहुल्यतः। औप० ८६। उत्सन्नं-अनुपरतम्। आव० ५९०।

उस्सण्णदोस-उत्सन्नदोषः-अनुपरतं बाहुल्येन प्रवर्त्तते इति। आव० ५९०।

उस्सण्णपय-उत्सन्नपदे-प्रभूतपदे। व्य० प्र० ९३अ।

उस्सण्णा-अवसन्नाः-पङ्क इव निमग्नाः। प्रश्न० ९९।

उस्सण्णो-बहुतरगुणावराही। नि० चू० द्वि० ९०आ।

उस्सण्हसण्हिया-उत्तरप्रमाणापेक्षया उत्-प्राबल्येन श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका उच्छ्लक्ष्णश्लक्ष्णिका। जं० प्र० ९४।

उस्सण्हसण्हिया - व्यावहारिकपरमाणुपुद्गलानां समुदायाः-द्व्यादिसमुदायास्तेषां समितयो-मीलनानि तासां समागमः-परिणामवशादेकीभवनं समुदयसमितिसमागमस्तेन या परिणाममात्रेति गम्यते, सा एकाऽनन्तं श्लक्ष्णश्लक्ष्णामेव श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका उत्-प्राबल्येन श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका उत्श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका। भग० २७५।

उस्सन्नं-प्रायशः। आव० ५६८। अविरुद्धं। नि० चू० द्वि० ७०अ।

उस्सन्नकयाहारो-प्रायशोऽकृताहारः। आव० ५६८।

उस्सप्पिअ-उत्सर्पिता वस्त्युत्सर्पणेन। जं० प्र० १०२।

उस्सप्पिणी-सागरोपमाणां दशकोटीकोट्य एव दुष्षमदुष्षमाद्यरकक्रमेणैकोत्सर्पिणी। जीवा० ३४५। उत्सर्पति-वर्धते आरकापेक्षया वर्धयति (वा) क्रमेणायुरादीन् भावानित्युत्सर्पिणी। जं० प्र० ८९। उत्सर्पिणी-दशसागरोपमकोटाकोटिमाना। अनु० १००। ठाणा० ८६। उत्सर्प्पति-वर्द्धतेऽरकापेक्षया उत्सर्प्पयति वा भावानायुष्कादीन् वर्द्धयतीति। ठाणा० २७।

उस्सय-यस्मिंश्च सत्यूर्ध्वं श्रयति जात्यादिना दर्पाध्मातः पुरुष उत्तानीभवति सः उच्छ्रायः-मानः। सूत्र० १८०।

उस्सरति-उत्सर्पति। आव० ३०३।

उस्सवित्ता-उद्धृत्तानि काऊण। दश० चू० ८०।

उस्सविया - सस्थाप्योच्चावचैर्विश्रम्भजननैरालापैर्विश्रम्भे पातयित्वा। सूत्र० १०६।

उस्सा-अवश्याय -स्नेहः। अप्कायभेदः। प्रज्ञा० २८। रजन्यां यत्स्नेहः पतति। आचा० ४०।

उस्साग-यतिविशेषणं क्रियते। उप० मा० गा० ४००।

उस्साबिन्दूथिबुगो-अवश्यायबिन्दुः। आव० ८४५।

उस्सारिता-उत्सारिता-समीपमागता। आव० ८४१।

उस्सासनाम-उच्छ्वासनाम-यदुदयवशादात्मन उच्छ्वासनिःश्वासलब्धिरुपजायते तत्। उच्छ्वासनिःश्वासयोग्यपुद्गलग्रहणमोक्षविषया लब्धिरुपजायते तत्। प्रज्ञा० ४७३।

उस्सासविसा-उच्छ्वासे विषं येषां ते उच्छ्वासविषाः। प्रज्ञा० ४६।

उस्सासा-उच्छ्वासः-मुखादिना वायुग्रहणम्। भग० ४७०।

उस्सासो-उच्छ्वासः। आव० ८४५।

उस्साहे-उत्साहः-श्रवणविषये मनस उत्कलिकाविशेष। सूर्य० २९६।

उस्सिंघइ-उज्जिघ्रति, जिघ्रति। आव० ६७४।

उस्सिंघणा-उद्घ्राणम्। आव० ४२४।

उस्सिंचण-ऊर्ध्वं सेचनं उत्सेचनं-कूपादेः कोशादिनोत्क्षेपणम्। आचा० ४२। हती वातस्य प्राबल्येन पूरणम्। आचा०

७४, ३७९ ।

उस्सिंचणाए-उत्सेचनेन-अरघट्टघटीनिवहादिभिरुद्वहनेन । उत्त० ५९९ ।

उस्सिंचमाणे-उत्सिंचन्-आक्षिपन् । आचा० ३४३ ।

उस्सिंचिया-उत्सिच्य-अतिभृतादुज्झनभयेन ततो वा दानार्थं तीमनादीनि दद्यात् । दश० १७५ ।

उस्सिउस्सिओ-उच्छ्रितोच्छ्रित । आव० ७७९ ।

उस्सिओदए-उच्छ्रितोदक -ऊर्ध्वगतदिगनजल । भग० २८१ ।

उस्सिट्ठा-उत्सृष्टा-प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता । प्रज्ञा० ९९ ।

उस्सित्तं-उत्सिक्तं-अत्यर्थं जलाभिषेचनम् । प्रश्न० १२७ ।

उस्सिप्प-अतिस्वप्नम्-बहुस्युदयोगेनानापादितविकारान्तरम् । दश० १८५ । उत्स्विन्नम्-मुण्डेरकादि । वृ० प्र० २६७ आ ।

उस्सियं-उन्छ्रत-प्रख्यातम् । सूत्र० ४०८ । उच्छ्रित उत्कटम् । सूर्य० २६२ । उत्सृता, उच्छ्रितेवोच्छ्रित-उत्तरोत्तरसयमस्थानावाप्त्या तामुच्छ्रितामिव कृत्वा वा । उत्त० ३४१ । उत्सृत -अपगत । ज्ञाता० १०९ ।

उस्सियनिसण्णओ-उत्सृतनिषण्ण । आव० ७७२ ।

उस्सियपडाग-उच्छ्रितपताकम् । आव० ७०३ ।

उस्सियफलिह-उच्छ्रित स्फटिकमिव स्फटिकं-अन्तःकरण यस्य स । ज्ञाता० १०९ ।

उस्सीवेत्ता-उत्सीव्य । आव० ४२१ ।

उस्सुक्क-उच्छुल्का-अविद्यमानशुल्कग्रहणम् । विपा० ६३ । उच्छुल्का-मुक्तशुल्का । भग० ५४४ । ज्ञाता० ४० ।

उस्सुगो-उत्सुक । आव० ३०१ ।

उस्सुत्तं-सूत्रादपेन । नि० चू० द्वि० २३आ । ऊर्ध्वसूत्रादुत्सूत्र, सूत्रानुक्त । आव० ५७१ । आव० ७७८ ।

उस्सुय-उत्सुक । ज्ञाता० १६१ ।

उस्सूर-अकाल । नि० चू० तृ० १३६आ । ओघ० ९८ ।

उस्सूरलंभो-उत्सूरलाभ । आव० ८४३ ।

उस्सूरीभूतं-उत्सूरीभूतम् । आव० ८५२ ।

उस्सूलय-खातिका परबलपातार्थमुपरि छादितगर्त्ता वा । उत्त० ३११ ।

उस्सेइमं-पिष्टोत्स्वेदनार्थमुदकम् । आचा० ३४६ । मरहट्ठविसए उस्सइमा वीवगा मीओदगे वुज्झति, अह्वा पिट्ठस्स उस्सेज्जमाणस्स हेट्ठा ज पाणिय त । नि० चू० तृ० ६०अ ।

उस्सेतिमामं-जहा पिट्ठं पुढविक्कायमायण आउक्कायस्स भरेता मीमए अहहिज्जति मुहं से वथेण उद्धाडिज्जति, ताहे पिट्ठपयणय सोट्टस्स भरेता ताहे तीमे थालीए जलभरियाए उवरिं ठविज्जति ताहे अहोछिड्डेण ते पि ओसिज्जति हेट्ठाहुत्त या ठविज्जति तत्थ ज आम त उस्सेतिमाम भण्णति । नि० चू० द्वि० १२५ अ ।

उस्सेतिमे-उत्स्वेदेन निर्वृत्तं उत्स्वेदिम-येन मीद्यादिपिष्ट सुरार्थं उत्स्वेद्यते तत् । ठाणा० १४७ ।

उस्सेहंगुल-उच्छ्रयाङ्गुल-अङ्गुलस्य द्वितीयो भेद । प्रज्ञा० २९९ । अनन्तानां सूक्ष्मपरमाणुपुद्गलानामिलादिक्रमेणोच्छ्रयो वृद्धिनयन तस्माज्जात तत् । उत्सेधो-नारकादिशरीराणामुच्चैस्त्वं तत्स्वरूपनिर्णयार्थमङ्गुलमुत्सेधाङ्गुलम् । अनु० १५६, १६० ।

उस्सेह-उत्सेध -उच्चत्वम् । सम० ११४ । उत्सेध -शिखरम् । जीवा० २०४, ३६० । सर्वाग्रम् । जीवा० २७५ । उच्छ्रय -शिखरम् । राज० ६२ ।

उस्सेहपरिवुड्ढी-उत्सेधपरिवृद्धि -सर्वाग्रपरिवृद्धि । जीवा० ३२३ ।

उस्सोढुं-उत्सोढुं-अपोढवा । व्य० प्र० १६८अ ।

उहरिय-पेढियमादिसु आरुभिउं ओआरेति, अथवा कार्य उच्च करेज्जा उद्धरियउट्टायत तद्वद् गृह्णाति, कार्य उड्डु कृत्वा गृह्णाति उण्णमिय इत्यर्थ । नि० चू० तृ० ५९ अ ।

उहसेइ-अपहसति । आव० २१९ ।

(ऊ)

ऊखा-कुम्भी । प्रश्न० १७ ।

ऊणं-ऊनम्-वर्णादिभिर्हीनम् । सूत्रदोषविशेष । आव० ३७४ । यद् व्यञ्जनाभिलापावश्यकैरसम्पूर्णं वन्दते, कृतिकर्मणि अष्टाविंशतितमो दोष । आव० ५४४ ।

ऊणगसयभागो-ऊनशतभाग -शतभागोऽपि न पूर्यत इत्यर्थ । आव० ५२२ ।

ऊणोअरिआ-ऊनोदरस्य भाव ऊनोदरता । दश० २७ ।

ऊणोयरिया-अवमस्य-ऊनस्योदरस्य करणमवमोदरिका । भग० ९२१ ।

ऊनं-अक्षरपदादिभिरेव हीनमूनम् । हेतुदृष्टान्ताभ्यामेव हीनमूनम् । अनु० २६१ ।

ऊयरिणिया । नि० चू० प्र० ६१ आ ।

ऊरणय-ऊरणिका । आव० ६२३ ।

ऊरणिया-ऊर्णिका । आव० ६२३ ।
ऊरणी-अविला । पिण्ड० ७१ ।
ऊरु । आचा० ३८ ।
ऊरुगं-ऊरु । ओघ० १२५ ।
ऊरुघंटा-जङ्घाघण्टा । ज्ञाता० २३९ ।
ऊरुयाल-ऊरुदार -ऊर्व्यो -जङ्घयोर्दारो-दारणं उद्दालो वा उद्दालन य स । प्रश्न० ५७ ।
ऊरुयावल-ऊरुरूयोरावलन ऊरुवावल । प्रश्न० ५७ ।
ऊर्ध्वलोक -शुभलोक । ज० प्र० २४९ ।
ऊर्ध्ववेदिका-यत्र जानुनोरुपरि हस्तौ कृत्वा प्रत्युपेक्षते। वेदिकाया प्रथमभेद । ठाणा० ३६२ ।
ऊर्ध्वस्थितः । आचा० २९४ ।
ऊर्ध्वोपविष्टा । पिण्ड० १०५ ।
ऊल्लेऊण-आर्द्रीकर्तुं, जलेन भेतुम् । विशे० ६२७ ।
ऊस-उषो-यद्वशादूपर क्षेत्रम्। प्रज्ञा० २७। ऊपरादिक्षेत्रोद्भवो लवणिमसम्मिश्रो रजोविशेष । पिण्ड० ८। क्षारमृत्तिका । उत्त० ६८९ । ओष -क्षारमृतिका । आचा० ३४२ । अवश्याय । ओघ० १३० ।
ऊसड-उत्सृत , उच्च । जीवा० २०० ।
ऊसढं-उच्छ्रित वर्णादिगुणोपेत । आचा० ३३९। उत्सृत-ऋद्धिमत्कुलम् । दश० १८६ । वर्णगन्धरसस्पर्शोपपेतम् । आव० ७२६ । उच्छ्रित वर्णगन्धाद्युपेतम्। आचा० ३९०। उत्कृष्टम् । व्य० द्वि० १८९ अ । उच्च । दश० चू० ८७ ।
ऊसत्त-उत्सक्त -उपरिलग्न । ज० प्र० ७६। ऊर्ध्व सक्त उत्सक्त -उल्लोचतले उपरिसंबद्ध । प्रज्ञा० ८६ । जीवा १६०, २२७ ।
ऊसभूमी-मिधुविषये भूमि । नि० चू० प्र० १६१ अ ।
ऊसरणं-उत्सरण-आरोहणम् । विशे० ५३८ ।
ऊसरदेस-ऊषरदेश । आव० ८३९ ।
ऊसविए-उन्मर्प्य- ऊमिक्किऊणेलर्थ , ऊर्ध्वीकृत्य वा । भग० ९३ ।
ऊसविय-उच्छ्रितानि । भग ५४१ । उन्नृतं-ऊर्ध्वीकृतम् । ज्ञाता० १३९ ।
ऊसवेइ-उच्छ्रत करोति । भग० १७५ ।
ऊसवो-जत्थ सामण्णभत्तविसेसो कज्जइ सो उसवो । नि० चू० द्वि० १६२ अ । जत्थ त च उवमाहिज्जति जणो य अलंकिय विभूसितो उज्जाणादिम मित्तादिजणपरिवुडो खज्जपेज्जादिणा उवललति । नि० चू० तृ० १४ आ । उत्सव -शक्रोत्सवादि । आव० १२९ ।
ऊससंति-उच्छ्वसन्ति-उच्छ्वासक्रिया कुर्वन्ति । प्रज्ञा० २१९।
ऊससिअ-उच्छ्वसितं-उत्-ऊर्ध्वं प्रबल वा श्वसितम् । आव० ७७९ ।
ऊससिय-उच्छ्वसनमुच्छ्वसितम् । अनक्षरश्रुतभेद । विशे० २७४ । उच्छ्वसिता-उद्भिन्ना । उत्त० ४८१ ।
ऊससियरोमकूवो-उच्छ्वसितरोमकूप -उच्छ्वसिता उच्छ्वसिता -उद्भिन्ना रोमकूपा-रोमरन्ध्राणि यस्यासौ । उत्त० ४८१ ।
ऊसासनीसासे-उच्छ्वासेन युक्तो नि श्वास उच्छ्वासनिश्वास -प्राण । जं० प्र० ९० ।
ऊसासपए-उच्छ्वासपद, प्रज्ञापनाया सप्तमं पदम् । भग० १९ ।
ऊसासा-यावद्भि समयै पादो वृत्तस्य नीयते तावत्स मया उच्छ्वासा । ठाणा० ३९३ । उच्छ्वासा । प्रज्ञा० २४६ । सङ्ख्येया आवलिका उच्छ्वास । जीवा० ३४४ । प्रज्ञापनाया सप्तम पदम् । प्रज्ञा० ६ । सङ्ख्येया आवलिका उच्छ्वास -अन्तर्मुख पवन । जं० प्र० ९० ।
ऊसासेहि-उच्छ्वासय-मारय । आव० ८१९
ऊसिअ-उच्छ्रितानि-लम्बमानानि । ज० प्र० ५० । प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता उत्सृता । ज०प्र०५३ । जीवा० १७५ । उच्छ्रितं-उत्कटम् । ज० प्र० ५२२ ।
ऊसिए-उच्छ्रितं-लम्बमानम् । जीवा० ३६१ ।
ऊसिओदयं-उच्छ्रत-ऊर्ध्व उदय-आयामो यत्र गमने तदुच्छ्रितोदयं, ऊर्ध्वतारमित्यर्थ । भग० १८७ ।
ऊसिता-उत्सृता-प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता । जीवा० ३७९ । सूर्य० २६३ ।
ऊसितोदग-उच्छ्रितोदक -उच्छ्रितमुदक यस्मिन् स । जीवा० ३२१ ।
ऊसित्तो-उपसिक्त ,अपत्योत्पादनसामर्थ्यविकल , निर्बीज । बृ० तृ० ९७आ । णो जस्स अवच्चं उप्पज्जति निब्बीओ सो । नि० चू० द्वि० ३१३ ।

ऊसिय–उच्छ्रितं–ऊर्ध्वीकृतम् । भग० ५४१ । उच्छ्रितः–ऊर्ध्वीकृतः, उत्सृतो वा-अपगतः । राज० १२३ । उच्छ्रितं-ऊर्ध्वनीतम् । ज्ञाता० १९ । उत्सृता-प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता । सम० १३९ । उत्सृतः–ऊर्ध्वीकृतः । जीवा० २४६ उत्सृतः । आव० ७७२ । उत्सृतं–लम्बमानम् । जीवा० २०५ । उच्छ्रितम्–उन्नतम् । ऊर्ध्वीकृतं, अपगतः, अपनीतः । भग० ११५ । नंदी ४६ । उच्छ्रितं–ऊर्ध्वम् । भग० १८७ ।

ऊसियपडागं–उच्छ्रितपताकम् । आव० ३०० ।

ऊसियफलिह–उच्छ्रितस्फटिकाः–उच्छ्रितमुन्नतं स्फटिकमिव स्फटिकं चित्तं येषां ते । मौनीन्द्रप्रवचनावाप्त्या परितुष्टमानसा इत्यर्थः । उच्छ्रितः–अर्गलास्थानादपनीयोर्ध्वीकृतो न तिरश्चीनः कपाटपश्चाद्भागादपनीत इत्यर्थः परिघः–अर्गला येषां ते उच्छ्रितपरिघाः, उच्छ्रितः–गृहद्वारादपगतः परिघो येषां ते उच्छ्रितपरिघाः । भग० १३५ । उच्छ्रितं स्फाटिकमिव स्फाटिकं-अन्तःकरणं यस्य सः । राज० १२३ ।

ऊसिरं–शीवाश्रयस्थानमित्यर्थः । नि० चू० द्वि० ६० आ ।

ऊसीसयं–उच्छीर्षकम् । आव० १२४ ।

ऊसूरं–वेलातिक्रमः । ओघ० १४२ ।

ऊसूरओ–उत्सूरः । आव० १०३ ।

ऊह – सम्भवत्पदार्थविशेषाभिमुखोऽव्यवसाय ऊहस्तर्कः–एवमेतं चैतत्स्यात् । आचा० २३७ ।

ऊहा–बुद्धिः । दश० १२९ । औपमाख्यसंज्ञा । विशे० २८१ । स्वतर्कबुद्धिः । आव० ३२६ । स्ववितर्कात्मिका । उत्त० १८१ ।

ऊहिय–ऊहितं–ज्ञातः । आव० ७२१ ।

ऋ

ऋक्षाः–अच्छाः । जीवा० ३८ ।

ऋजुप्रज्ञत्वं–मध्यमजिनयतीनां विशेषणम् । आव० ५९ ।

ऋजुवक्रजडत्वं । आव० ७९ ।

ऋजुश्रेणिप्रतिपन्नः–यो भवोपग्राहिकर्मजालं क्षपयित्वाऽत्र सद्गत्या सिद्ध्यतीति । आव० ४४३ ।

ऋजुसूत्रः – साम्प्रतार्थानामभिधानपरिज्ञानम् । तत्त्वा० १-३५ ।

ऋज्वी–यस्यामेकां दिशमभिमुखोपाश्रयाद् निर्गतः प्राञ्जलेनैव पथा समश्रेणिव्यवस्थितगृहपङ्क्तौ भिक्षां परिभ्रमन् तावद् याति यावत्पङ्क्तौ चरमगृहं, ततो भिक्षामगृहीत्वैव व्यावर्तनेऽपि प्राञ्जलयैव गत्या प्रतिनिवर्तते सा ऋज्वी । बृ० प्र० २५१ अ ।

ऋणं–पापम् । प्रश्न० ७ ।

ऋणग्रा–ऋणं–कर्म तद्ग्रा । आव० ५९५ ।

ऋतं–दुःखं, पीडितम् । ठाणा० १८८ । दुःखम् । आव० ५८४ । पीडितः । भग० ५६० । दुःखसम्पर्कवाची । उत्त० ६०९ ।

ऋतुबद्धावग्रहः–अवग्रहस्य द्वितीयो भेदः । गच्छ० ३१ ।

ऋतुमासः – कर्ममासः, स त्रिंशद्दिनप्रमाणः । बृ० प्र० १८६ आ ।

ऋतुसंवत्सरः–सावनसंवत्सरः । ठाणा० ३४५ ।

ऋद्धा–भवनादिभिर्वृद्धिमुपगता । ज्ञाता० १ ।

ऋषभः–प्रथमतीर्थंकरः । ज्ञाता० १३९ ।

ऋषभमण्डलप्रविभक्तिः–एकादशो नाट्यविधिः । जीवा० २४६ ।

ऋषभदत्तः–कोडालसगोत्रब्राह्मणविशेषः । आव० १०८ ।

ऋषभस्वामी–प्रथमतीर्थंकरः । व्य० द्वि० २ आ ।

ऋषितः–गोपशमं नीतः । व्य० द्वि० २३४ आ ।

ऋषिपालिकाः–गन्धर्वभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

ए

एंती–आगच्छन्ती । बृ० द्वि० ११७ आ ।

एंतो आगच्छन् । आव० ८२७ ।

एंतओ–आगच्छन् । आव० १८६ ।

ए–वाक्यालंकारे । अनु० १३६ । अलङ्कारे । भग० ७०५ । वाक्यालङ्कारे । भग० ८२ । आमन्त्रणार्थः, अलङ्कारार्थोऽयं । भग० ३३ ।

एईसु–आतवन्तोऽनुभूतवन्तः । भग० ७२६ ।

एइणा–अनेन । बृ० द्वि० ११० अ ।

एई–इयमी । आव० ५१३ ।

एककाः–अध्ययनविशेषः । ठाणा० ३८७ ।

एकखुर–अश्वगोहस्तिसिंहादयः । सम० १३५ ।

एकतश्चक्रवालं–एकस्यां दिशि नटानां मण्डलाकारेण नर्तनम् । जै० प्र० ४१५ ।

एकतोवक्रद्विधातोवक्रएकतश्चक्रवालद्विधातश्चक्रवाल-चक्रार्द्धचक्रवालाभिनयात्मक –चतुर्थो नाट्यविधि । जीवा० २४६ । जं० प्र० ४१५ ।

एकतोचक्र–एकतोवक्र नाम नटानां एकस्यां दिशि धनुराकारश्रेण्या नर्त्तनम् । जं० प्र० ४१५ ।

एकतोवेदिका एक जानु बाह्वोरन्तरे करोति । ठाणा० ३६२ ।

एकत्तवियक्कं–एकत्ववितर्कम् । आव० ३२७ ।

एकत्ववितर्कमविचारं – शुक्लध्यानद्वितीयभेद । आव० ६०३ ।

एकधारं–शस्त्रविशेष । दश० २०१ ।

एकभविक–तत्र एकस्मिन् भवे तस्मिन्नेवातिक्रान्ते भावी । एकभविक –योऽनन्तर एव भवे इन्द्रतयोत्पस्यत इति । ठाणा० १०३ ।

एकभावं–एकत्वम् । उत्त० ५८० ।

एकमुखं । ओघ० ९९ ।

एकल्लओ–एकाकी । आव० ३०६ ।

एकलशाटक–एकवस्त्रक । ओघ० ४३ ।

एकविहारप्रतिमा–पञ्चमी प्रतिमा । सम० ९६ ।

एकस्थीकृतं–न एकस्थमनेकस्य अनेकस्थमेकस्थमिव कृत मेकस्थीकृतम् । आचा० ६३ ।

एका –एका –श्रेष्ठा सञ्ज्ञाशब्दत्वात सर्वादित्वम् । जं० प्र० १३१ ।

एकाए–एक । व्य० द्वि० ४१७ अ ।

एका त–एक एवाहमित्यन्तो–निश्चय । उत्त० ३०७ ।

एकान्तरः–अनन्तरसमय । आव० १४ ।

एकान्तवित् एकान्तेन विदितप्रकारस्वभावतया मौनीन्द्र मेव शासन तथ्य नान्यदित्येवं वेत्तीति । सूत्र० २६५ ।

एकायतन – एक–अद्वितीय आयतन–ज्ञानादित्रयम् । आचा० २०७ ।

एकावलि–भूषणविधिविशेष । जीवा० २६८ ।

एकावली–विचित्रमणिकरचना एकसरिका । जं० प्र० १०५ । विचित्रमणिका । ज्ञाता० ४३ । कनकावल्यभिप्रायेत्यर्थ । औप० ३० ।

एकाशीतिपदवास्तुन्यास । जं० प्र० २०८ ।

एकिका–प्रश्रवणम् । आचा० ४०९ ।

एकई–एकीकृत्य–यौगपद्येन । ओघ० १११ ।

एकगमा–एकगमा –तुल्याभिलापा । ठाणा० ५८ ।

एकगमे–एकगम –पङ्क्तिभ्योऽन्त्येऽङ्क एव पाठ । अन्त० ४ ।

एकट्ठे–पर्वगविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

एकमुहा–जेसिं एकओ चलणा मुहा ते एकतोमुहा । नि० चू० प्र० १६१ अ ।

एकल्लओ–एकाकी । आव० १६३ ।

एकवारिआ । ओघ० ९७ ।

एकसंकलितबद्धा–एकशृङ्खलाबद्धा । आव० ६३ ।

एकसरा–सद्य । आव० ३६७ ।

एकसिं–एकदा । आव० ८९३ ।

एकसेल–एकशैल –वक्षस्कारपर्वत । जं० प्र० ३४७ ।

एकाणिया–एकाकिनी । आव० ५६० ।

एकारसी–एकादशी तिथि । ज्ञाता० १५३ ।

एकाहिआ–व्यन्तरीविशेषा । नि० चू० प्र० ३०४ आ ।

एगगिओ सघातिमासघातिमो एगगिओ भवति । नि० चू० द्वि० ७९ अ ।

एगंगियं– एकाङ्गिकं तज्जातदशिकं सदसिकाकम्बलीखण्ड निष्पादितम् । ओघ० २१४ । य एकेन फलकादिना कृत । बृ० तृ० १६२ अ । एकाङ्गिक–तज्जातदशिके न वा द्वयादि खण्डनिष्पन्नम् । बृ० द्वि० २२९ अ ।

एगंत–एकान्त–विजनम् । ज्ञाता० ८८ । नियम । उत्त० २४१ । एक –अद्वितीय , कर्मणामन्तो यस्मिन्निति, मोक्ष । उत्त० ३०७ । एकनिश्चय । भग० २९० । एकान्त–अनुपघातक स्थानम् । दश० १५६ । निश्चय । उत्त० ५८७ । इतरव्यासङ्गपरिहारात्मकम् । उत्त० ६२२ । मोक्ष । दश० १६५ । विजनम् । भग० ३२३ । योजनमण्डला दन्यत्र । जं० प्र० ३८८ ।

एगतचरिया–एकान्तचर्या–द्रव्यक्षेत्रकालभावेष्वसंबद्धता । दश० ११ ।

एगंतदिट्ठी–एकान्तदृष्टि –एकोऽन्तो–निश्चयो यस्या सा तथा, सा चासौ दृष्टि , अनन्याक्षिप्ता । उत्त० ४५७ । एकान्तदृष्टि –एकान्तेन तत्त्वेषु–जीवादिषु पदार्थेषु दृष्टिर्यस्यासौ । सूत्र० २३४ । एकोऽन्तो–निश्चयो यस्या सा एकान्ता सा दृष्टि –बुद्धिर्यस्मिन् एकान्तदृष्टिः । ज्ञाता० ५१ । एकान्ता–मा

ह्यमेवेदं मयेत्येवमेव निश्चया दृष्टिर्यस्य सः। ज्ञाता० ८०। एकान्तेन निश्चला जीवादितत्त्वेषु दृष्टिः-सम्यग्दर्शनं यस्य स एकान्तदृष्टिः-निष्प्रकम्पसम्यक्त्वः। सूत्र० १४१।

एगंतदिट्ठीए-एकोऽन्तो-निश्चयो यस्याः सा एकान्ता सा दृष्टिः-बुद्धिर्यस्मिन्निर्ग्रन्थे प्रवचने-चारित्रपालनं प्रति तदेकान्तदृष्टिकम्। एकान्ता-एकनिश्चया दृष्टिः-दृक् यस्य स एकान्तदृष्टिकः। ज्ञाता० ५१।

एगंतधारा-एकत्रान्ते-वस्तुभागेऽपहर्तव्यलक्षणे धारा-परोपतापप्रधानवृत्तिलक्षणा यस्य स एकधारः। ज्ञाता० ८०। एकान्तधारा-तीक्ष्णधारा। उत्त० ३२७। एकान्ता-एकविभागाश्रया धारा यस्य सा एकान्तधारा। ज्ञाता० ५१।

एगंतपंडिए-एकान्तपण्डितः-साधुः। भग० ९१।

एगंतबाले-एकान्तबालः-मिथ्यादृष्टिः अविरतो वा। भग० ९०।

एगंतमंतं-एक इत्येवमन्तो-निश्चयः यत्रागावेकान्त एक इत्यर्थः अतस्तमन्तं शुभागम्। भग० २९०।

एगंतमोणेण-एकान्तमौनेन-संयमेन करणभूतेन। सूत्र० २३९।

एगंतरं-एकान्तरोऽनन्तरसमयः। विशे० २०९। एकान्तरे-एकेन चतुर्थलक्षणेन तपसाऽन्तरं-व्यवधानं यस्मिंस्तत्। उत्त० ७०६।

एग-एकः-असहायो रागद्वेषादिसहभावविरहितो गौतमादिरित्यर्थः। उत्त० २४१। तथाविधतीर्थकरनामकर्मोदयादनुत्तराप्तविभूतिरद्वितीयः, तीर्थकरः। घातिकर्मसाहित्यरहितः। उत्त० २४१। एकत्र। ओघ० ३३। असहायः। ठाणा० ३५। तत्र प्रदेशार्थतया असंख्यातप्रदेशोऽपि जीवो द्रव्यार्थतया एकः, अथवा प्रतिक्षणं पूर्वस्वभावक्षयापरस्वरूपोत्पादयोगेनानन्तभेदोऽपि कालत्रयानुगामिचैतन्यमात्रापेक्षया एकः, अथवा प्रतिसन्तानं चैतन्यभेदेनानन्तत्वेऽप्यात्मनां संग्रहनयाश्रितसामान्यरूपापेक्षयैकत्वम् इति। सम० ५। मोक्षोऽशेषमलकलङ्करहितत्वात् संयमो वा रागद्वेषरहितत्वात्। आचा० २१२। पूर्वपूर्वेभ्यः उत्तरोत्तररूपः, आद्यः, पर्यवमानो वा। प्रज्ञा० २६५। धर्मसहायविप्रमुक्तः अल्पागारिकस्थितो वा। दर्श० १८८। उद्रेकावस्थावर्तिनैकेन गुणेन स्पर्शाख्येनोपलक्षितः इति एकः-वायुः। आचा० ७५। एकाकी, असहायः। ठाणा० १९०। आन्तरव्यक्तरागादिसहायवियोगात् अद्वितीयः तथाविधपदात्यादिसहायविरहात्।

ज्ञाता० ३४। सहतः। ज्ञाता० ५७। एकः-रागद्वेषरहिततया ओजाः, यदि वाऽस्मिन् संसारचक्रवाले पर्यटन्नसुमान् स्वकृतसुखदुःखफलभाक्त्वेनैकस्यैव परलोकगमनतया सदैकक एव भवति। सूत्र० २६५। समानः। राज० ४९। मोक्षः संयमो वा। सूत्र० २३५।

एगइओ-एकदा कदाचिद् एकचरो वा। आचा० ३३०।

एगइया-एककाः, एके केचनेत्यर्थः। भग० ३९।

एगइयाणं-एकेषां, न तु सर्वेषाम्। भग० १२९।

एगईओ-एकः कश्चिदेशकी वा। आचा० ३३७।

एगउ-एकस्मिन् देशे। ज्ञाता०। ९३।

एगओ-एकतः। ज्ञाता० ७०। एकः स एव एककः, एको वा प्रतिमाप्रतिपत्त्यादौ गच्छतीत्येकगः। एकं वा कर्मसाहित्यविगमतो मोक्षं गच्छति-तत्प्राप्तियोगानुष्ठानप्रवृत्तेर्यातीत्येकगः। उत्त० १०८।

एगओखहा-एकस्यां दिश्यङ्कुशाकारा। ठाणा० ४०७। यया जीवः पुद्गलो वा नाड्या वामपार्श्वादेस्तां प्रविष्टस्तयैव गत्वा पुनस्तद्वामपार्श्वादावुत्पद्यते सा एकतःखा, एकस्यां दिशि वामादिपार्श्वलक्षणायां खस्य-आकाशस्य लोकनाडीव्यतिरिक्तलक्षणस्य भावादिति। भग० ८६६।

एगओजण्णोवइयकिच्चगए। भग० १९०।

एगओवंका-एकतः-एकस्यां दिशि वङ्का-वक्रा एकतोवक्रा। भग० ८६६।

एगओवत्ता-द्वीन्द्रियजीवविशेषाः। प्रज्ञा० ४१।

एगखम्भ-एकस्तम्भ-एकः स्तम्भो यस्मिन् सः प्रासादः। दश० ४१।

एगखुर-प्रतिपदमेकः खुरो येषां ते एकखुराः-अश्वादयः। जीवा० ३८। प्रतिपदमेकः खुरः-शफो येषां ते एकखुराः-अश्वादयः। प्रज्ञा० ४१। एकः खुरः-चरणे येषामधोवर्त्यस्थिविशेषो येषां ते एकखुरा-हयादय। उत्त० ६९९।

एगगयं-एकाग्रिकं-तत्त्वम्। व्य० द्वि० ८१ आ।

एगगुण-एकगुणः एकेन गुणो-गुणनं-ताडनं यस्य स एकगुणः। ठाणा० ३५।

एगगुणकालए-एक-सर्वजघन्यो गुणः-अंशस्तेन कालकः परमाण्वादिरेकगुणकालकः-सर्वजघन्यकृष्णः। अनु० १११।

एगग्ग-एकाग्रस्य-एकालम्बनस्यायोपेतस्रो भावः एकाग्र्यं-ध्यानम्। उत्त० ६३१।

एगग्गचित्त-एकाग्रचित्त-एकालंबनः। दश० ५७।
एगग्गमणो-एकाग्रमनाः-अवहितचित्तः। उत्त० ५९९।
एगग्गहण-एकग्रहणेन-एकशब्देन। भग० १४५।
एगग्गहणगहिया-एकग्रहणगृहीता-एकग्रहणेन-एकशब्देन-धर्मास्तिकाय इत्येवंलक्षणेन गृहीता ये ते तथा, एकशब्दाभिधेया इत्यर्थः। भग० १४९।
एगचरा-एकचरा-एकाकिनः। आचा० ३०८।
एगचक्खू-अतिशयवद् श्रुतज्ञानादिवर्जितो विवक्षित इति एकचक्षुः, चक्षुरिन्द्रियापेक्षया। एकं चक्षुरस्येति। ठाणा० १७१।
एगचक्खू विणिहय-एकचक्षुर्विनिहत-एकं चक्षुर्विनिहतं यस्य सः। प्रश्न० २५।
एगचरिया-एकचर्या-एकाकिविहारप्रतिमाऽभ्युपगम। आचा० २४३।
एगचोरो-एकचौरः-य एकाकी सन् हरति सः। प्रश्न० ४६।
एगच्चा-एकार्च्चा-अद्वितीयपूज्या. संयमानुष्ठाने वा अमदशी अर्चा-शरीरं येषां ते एकार्चा.। उपा० २९।
एगच्छत्त-एकच्छत्रा एकं छत्रं-नृपतिचिह्नमस्यामिति, अविद्यमानद्वितीयनृपतिः। उत्त० ४४८।
एगजंबूए-उल्लुकतीरे चैत्यविशेष.। भग० ७०५।
एगजडी-एकजटी-एकाशीतितमो ग्रहः। जं० प्र० ५३५। व्यशीतितमो ग्रहः। ठाणा० ७९।
एगज्झं-एकध्यम्-एकवाक्यतया सम्प्रधार्य। आचा० २३०।
एगट्ठ-एकस्थ.-एकत्र। आव० ७१०। एकार्थ-अनन्यविषयं एकप्रयोजनं वा। भग० १७।
एगट्ठभागमुहुत्तेहिं-मुहूर्तैकषष्टिभागाभ्याम्। सूर्य० १२।
एगट्ठाणं-एकस्थानकं-यथा अङ्गोपाङ्गस्थापितं तेन तथावस्थितेनैव समुद्देष्टव्यम्। आव० ८५३।
एगट्ठि-एगवीगं। नि० चू० प्र० ५६ आ।
एगट्ठिआणुओगे-एकार्थास्तावदर्थ-अभिधेयो जीवादि स येषामस्ति त एकार्थिका-शब्दास्तैरनुयोगस्तत्कथनमित्यर्थ। ठाणा० ४८१।
एगट्ठिए-एकार्थास्तावदर्थ-अभिधेयः एकार्थं स यस्यास्ति स एकार्थिक., एकार्थवाचक इत्यर्थ। ठाणा० ४९२।
एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं-मुहूर्तैकषष्टिभागाभ्याम्। सूर्य० १२।
एगट्ठिभागे-एकषष्टिभागान्। सूर्य० २५।
एगट्ठिया-एकमस्थिकं फलमध्ये येषां ते। भग० ८०४। एकमस्थिक-फलमध्ये बीजं येषां ते एकास्थिकाः। भग० ३६४। एकास्थिका-नौः। विपा० ८०। ज्ञाता० १२७। फलं फलं प्रति एकमस्थि येषां ते एकास्थिकाः। प्रज्ञा० ३१।
एगठाणं-एकस्थानम्। आव० ८५२। एकः सङ्घाटकः। ओघ० ९९।
एगणासा-एकनाशा पश्चिमरुचकवास्तव्या पञ्चमी दिक्कुमारीमहत्तरिका। जं० प्र० ३९१।
एगणिसेज्जाए-एकेनासनपरिग्रहेण। सम० ७२।
एगतियाओ-एकका-काश्चन। जीवा० १९८।
एगतो-एकतः-एकस्मिन् स्थाने। व्य० प्र० १७४ अ।
एगतोनिसहसंठिया-एकतो-रथस्य एकस्मिन् पार्श्वे यो नितरां सहते स्कन्धपृष्ठे वा समारोपितं भारमिति निषधो-बलीवर्दस्तस्येव संस्थितं-संस्थानं यस्याः सा एकतोनिषधसंस्थिता। सूर्य० ७१।
एगतोवंका-एकओवंका एकस्यां दिशि वक्रा। ठाणा० ४०७।
एगतोवत्ता-एकतोवर्ता-द्वीन्द्रियजीवविशेषः। जीवा० ३१।
एगतोवेति-एगखीला। नि० चू० प्र० १२७ अ।
एगत्त-एकता, यैकता-निरालम्बनत्वम्। भग० १२४। एकत्वं-अभेद। ठाणा० १९१।
एगत्तवियक्के-एकत्वेन-अभेदेनोत्पादादिपर्यायाणामन्यतमैकपर्यायालम्बनतयेत्यर्थो वितर्क.-पूर्वगतश्रुताश्रयो व्यञ्जनरूपोऽर्थरूपो वा यस्य तदेकत्ववितर्कम्। ठाणा० १९१।
एगत्तीकरण-एकत्वकरणं-एकाग्रत्वविधानम्। ज्ञाता० ८६।
एगत्था-एकार्था-एके च ते अर्थाश्चेति एकार्थाः, एकैकशब्दविषयीत्यर्थः। एकदेशिन् न सर्वथा निखिलानां वक्तुमशक्यत्वादर्था-जीवादय। सम० ११२।
एगदिसि-एकया दिशा पूर्वोत्तरलक्षणया। ज्ञाता० ४५।
एगदुवारा-एकद्वारा-एकप्रवेशनिर्गममार्गा। ज्ञाता० १२८।
एगदिट्ठी-एकदृष्टि-बद्धलक्ष। प्रश्न० १५८।
एगन्तुच्छेय-सर्वथा उत्-प्राबल्येन छेदो-विनाश एकान्तोच्छेद-निरन्वयो नाश इत्यर्थ। दश० ४०।
एगपक्खं-एकपक्ष, एक पक्षो ब्राह्मणलक्षणो यस्य तत्। उत्त० ३६०।

एगपक्खी-एकपक्षिक -एकवाचन, एककुलवर्ती। व्य० प्र० २१२ अ। एकपक्षिक अल्पश्रुत । व्य० प्र० २१३ अ। गुरुभ्राता भ्राता गुरुगुरुर्गुरुस्तस्य समानकुलश्च समानश्रुतो वा। बृ० तृ० १३६ आ।

एगपत्ती-एकपत्नी। आव० ९०।

एगपयेसोगाढं-एकप्रदेशावगाढम्-जीवापेक्षया कर्मद्रव्यापेक्षया च ये एके प्रदेशास्तेष्ववगाढम्। भग० ३३।

एगभविय-एकभविक -नोआगमत द्रव्यद्रुमस्य प्रथम प्रकार, य एकेन भवेनानन्तरं द्रुमेषूत्पत्स्यते। दश० १७।

एगभायणो-समपंक्ति । नि० चू० तृ० ६७ अ।

एगभाव-एको भाव -सांसारिकभावविपर्ययात् स्वाभाविक गुणरूपो यस्यासावेकभाव । भग० ६४०। सम्यग्ज्ञाना। आचा० ११३।

एगभूए-एकभूत एक एव-आत्मोपम । ठाणा० २१। एकत्व प्राप्त । भग० ६४७।

एगमडवे-एकमडम्ब नाम यस्य निवेशस्य सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च नास्ति कोऽप्यन्यो ग्रामो नगरं वा तस्मिन्नेकमडम्बे। व्य० द्वि० २१६ अ।

एगमणा-एक दर्शनान्तराकृतजीवाजीवविभक्तनास्वगतत्वेन मन चित्त येषां ते एकमनस -श्रद्धानवन्त । उत्त० ६७१।

एगमणो-एकमना एकाग्रचित्त । आव० ७४०।

एगमना एकम् एकत्र प्रस्तुते वस्तुन्यभिनिविष्टं येन मनो यस्यासौ एकमना । दश० ५१९।

एगमेग-एकैकम्। सूय० ३३।

एगयओ-एकत एकत्वेनयया। भग० १०४। एकत एकाश्रय, सहजैवेत्यर्थ । भग० ७७४। एकत । ठाणा० ३१४।

एगयर – एकतर, अन्यतमत्। आव० १३। एकतर अनुकूल । आचा० २४२।

एगराइंदियाए-द्वादशी एकरात्रमानेति। ज्ञाता० ७३।

एगराइया-एकरात्रिक -अपान्तराले वसतौ तत्र मातुलानी प्रमुखासम्बन्धिलाभेऽपि प्रतिबन्धमकुर्वता कारणमन्तरेण भवैक रात्रमेव वस्तव्य नाधिकमि यत्रूपेणाभिग्रहण। व्य० प्र० १३ आ। एकरात्रिकी। उत्त० ५३१। आव० २१८।

एगराइयाभिक्खुपडिमा – रात्रिमाना द्वादशी भिक्षुप्रतिमा। सम० २१।

एगराई-एकरात्रिकी। आव० ६४८।

एगराय एका रात्रिर्यत्र तत एकरात्र। एका रात्रि यावत तत। उत्त० ११०।

एगलंभिए य एक प्रधान शिष्यमात्मना लभते गृह्णाति शेषाश्चाचार्यस्य समर्पयति, स एकलाभेन चरतीति एकलाभिक । व्य० प्र० २३२ आ।

एगल्ल-एकाकिन । ठाणा० ४१०।

एगल्लविहार-एकाकिविहार । आचा० ३६०।

एगवद्द-एकवद्द एकाकी। व्य० प्र० २०१ अ।

एगविऊ-एकमेवात्मानं परत्रानुगामिन वेत्तीति एकवित्, स मे कश्चिद् दुःखपरित्राणकारी सहायोऽस्ति येनैकविन्। एकान्तविद् वा एकान्तेन विनिश्चितसंसारस्वभावतया मौनीन्द्रमेव शासन न य नाम्यत्र येन वर्त्तितमेकान्तवित्, एक मोक्ष संयमो वा त वेत्तीति। सूत्र० २६०।

एगविह एकारम्भ । विशे० ३०६।

एगविहिविहाणा एकेन विधिना प्रकारेण चक्रवालत्वेन विधानं स्वरूपस्य करण यथा त एकविधिविधाना । भग० २८२।

एगसरा एकविशति एकसरा एक सरा। नि० चू० प्र० २५४ आ। यत्र सत्रिणी पदान्यणी वर्गाश्रेणी एकैकस्य वा विद्यते। नि० चू० प्र० १ अ।

एगसाडियउत्तरासगकरणं एका शाटिका यस्मिंस्तत्तथा, तच्च तदुत्तरासङ्गकरण च उत्तरीयस्य न्यासविशेष । ज्ञाता० ४।

एगसालय एकशालकम्। नाता० २६९।

एगसित्थ एकसिक्थम् यत्रैकमेव सिक्थ भुज्यते तत। उत्त० ६४।

एगसेलकूडे एकशैलकूट एकशैलवक्षस्कारकूटनाम। ज० प्र० ३४७।

एगसेलग। ज्ञाता० २४२।

एगसेले। एकशैलो पातकाख्यपश्चिमार्द्धस्थमन्दरपर्वतस्थ स्वनामख्यात वक्षस्कारपर्वते। ठाणा० ८०। एकशैलो जम्बूद्वीपस्थमन्दरपर्वतसमीपस्थ स्वनामख्यातो वक्षस्कारपर्वतो। ठाणा० ३२६।

एगा एगा-अद्वितीया। अनु० ६९।

एगागारो-एकाकारः एकस्वरूपः । जीवा० १४३ ।
एगागिसमुद्दिसगा-ये न मण्डल्युपजीविनः। औप० ८७।
एगागिओ-एकाकी । आव० ५५८ ।
एगाणुप्पेहा-एकस्य-एकाकिनो असहायस्यानुप्रेक्षा-भावना एकानुप्रेक्षा । ठाणा० १९० ।
एगाभिमुहा-एकं भगवन्तं अभिमुखं येषां ते एकाभिमुखाः । ज्ञाता० ४५ ।
एगाभोगो-एगा योगो भण्णति । नि० चू० प्र० ४७ अ ।
एगामोसा- त्रिभिरंगुलीभिर्वा यद्गृहीतव्यं तदेकावे गृह्णाति सा, मध्ये गृहीत्वा हस्ताभ्यां वस्त्रं घृषन् त्रिभागावशेषं यावन्नयति द्वाभ्यां वा पार्श्वाभ्यां यावद् ग्रहणा। ओघ० ११० । एकामर्शनं एकामर्शा । उत्त० ५४१ ।
एगाय-एकाकिनः । सूत्र० १८० ।
एगालंभी-एकलाभी-यः प्रधानः शिष्यः तमेकं यो न ददाति भवशेषांस्तु सर्वानपि प्रव्रजितान् गुरूणां प्रयच्छति। येषामेक एव लाभो-यथा यदि भक्तं लभन्ते ततो वस्त्रादीनि न, यथा वस्त्रादीनि लभन्ते तर्हि न भक्तमपि, एकमेव लभन्ते इत्येवंशीला एकलाभिनः । व्य० प्र० २३२ आ ।
एगावलि-तपविशेषः। आचा० ४२३। एकावली-नानामणिकमयी माला । औप० ५५ । विचित्रमणिका । ज्ञाता० ४३ । विचित्रमणिकमयी । भग० ४७७ ।
एगावलिसंठिते-एकावलिसुस्थितः-अनुराधानक्षत्रसंस्थानम्। सूर्य० १३० ।
एगावली-एकावलिका-जघन्ययुक्तासङ्ख्यातकसमयानां समुदायः। जीवा० ३४४ । विचित्रमणिकमयी । भग० ४५९ ।
एगावाती-एकवादी-तमेक एवाम्मादिरर्थं इत्येवं वदतीति। ठाणा० ४२५ ।
एगासणं-एकाशनं नाम सकृदुपविष्टपुताचालनेन भोजनम्। आव० ८५३ ।
एगाहं-एगाहं एकमहर्यावत् । जीवा० १०९ । दिने दिने गत्वा नोदयति, एकान्तरितं वा । बृ० तृ० १४२ आ। एगाहं-अभक्तार्थम् । व्य० द्वि० ३८६ अ ।
एगाहच्चं-एका हत्या-हननं-प्रहारो यत्र जीवितव्यपरोपणे तदेकाहत्यम् । भग० ३२१ । एका एव आहत्या-आहननं प्रहारो यत्र भस्मीकरणे तदेकाहत्यम् । भग० ६७० । एकं घातं, एकेन घातेनेति भावः । राज० १३४ ।
एगाहजातगा-एकाहर्जाता एकदिवसोत्पन्नाः। आव० ११६।
एगाहिगारिगा-एकस्मिन् शय्यातरे पिण्डादावधिकृतदोषेऽनालोचिते एव यानि शेषदोषसमुत्थितानि प्रायश्चित्तानि तानि एकाधिकारिकाणि, एकाधिकारे भवानि एकाधिकारिकाणि । व्य० प्र० ३० अ ।
एगाहिय-ज्वरविशेषः । भग० ११७ ।
एगुरुया-एगोरुकः-अन्तरद्वीपविशेषः । जीवा० १४४ ।
एगूरुला । ठाणा० २२५ ।
एगूरुयदीवे-अन्तरद्वीपे प्रथमः । ठाणा० २२५ ।
एगेभवं-एको भवान् । ज्ञाता० ११० ।
एगोदगं-एकोदकं, सर्वात्मनोदकप्लावितम् । जीवा० ३२६ ।
एगोरुया-अन्तरद्वीपविशेषः । प्रज्ञा० ५० ।
एच्चिरेण-इयता । ओघ० ६५ ।
एज एजतीति एजः -वायुः कम्पनशीलत्वात् । आचा० ७५ ।
एज्जंत-आयान्तमागच्छन्तम् । उत्त० ३५८ । आयान्तम् । आव० २८७ ।
एज्ज-एयातां-समागच्छताम् । बृ० तृ० १४१ अ ।
एज्जमाणं-इयत्, आगच्छत् । जं० प्र० २३३ । प्रत्यागच्छत् । ज्ञाता० १३९ । एज्यमानं-कम्प्यमानम् । जीवा० १८१ ।
एज्जा-आगच्छेत् । बृ० द्वि० १८७ अ ।
एडगारूढो-एडकारूढः । आव० ४१७ ।
एडेंति-एडयन्ति-अपनयन्ति । जं० प्र० ३८८ ।
एडेइ-छर्दयति, तीरे प्रक्षिपति । जं० प्र० २३० ।
एडेति-अपनयति । भग० ६६५ ।
एडेसि-छर्दयसि । ज्ञाता० ६९ ।
एणी स्नायुः । प्रश्न० ८० । हरिणी । जं० प्र० ११० । जीवा० २७० । एण्य:-स्नायवः । जं० प्र० ११० ।
एणीयारा-एणी-हरिणी मृगग्रहणार्थं चारयन्ति-पोषयन्ति ये ते । प्रश्न० १४ ।
एणेज्जग-गोपालकसंबन्धिस्थानम् । भग० ६७४ ।
एतं-एनम्-एवम् । प्रश्न० १९ ।
एतमट्ठं-एतं-पुद्गलानामपरापरपरिणामलक्षणमर्थम्। ज्ञाता० १७० ।

पतेवं-एतदेवमित्यर्थं । भग० ४५५ ।

पत्ताहे-अधुना । आव० ३२९ ।

पत्तिओ-एतावत् । आव० ४२० ।

पत्तिल्लयं-एतावत् । आव० ५१५ ।

पत्तियपरिक्खओ-ईयत्परीक्षक । आव० ८२६ ।

पत्तो-एतु । उत्त० १४२ । इत -अहिक्कडेवरादिगन्धात् प्रकाशात् । ज्ञाता० १३० ।

पत्थ-अत्र, इह । दश० ९९ ।

पत्थ - अशोकवरपादपस्य यदधोऽत्रैत्येव सम्बन्धनीय । ज्ञाता० ६ ।

पत्थोवरए-अस्मिन् संयमे भगवद्वच सि वा उप-सामीप्येन रत व्यवस्थित । आचा० १६२ ।

पद्दहो-एतावान् । आव० ३४१ ।

पमेए एव अनेन प्रकारेण एते-येऽधिकृता प्रत्यक्षेण वा परिभ्रमन्तो दृश्यन्ते । दश० ६८ ।

पयं-एतत्, एतावत्प्रमाणम् । सूर्य० ११३ ।

पयतं-एजमान, कम्पमानम् । ठाणा० ३८१ ।

पयतग-आगच्छत् । आव० २९१ ।

पयइ एजते कम्पते । भग० १८३ ।

पयकम्मे-एतद्व्यापार एतदेव वा काम्य-कमनीय यस्य स । विपा० ४० ।

पयग्गो-एकाग्र -एकचित्त । आव० ७७३ ।

पयणुद्देसए - एजनोद्देशक -भगवतीसूत्रस्य पञ्चमशतकस्य सप्तमोद्देश । भग० २४६ ।

पयविज्जे-एषैव विद्या-विज्ञान यस्य स एतद्विद्य । विपा० ४० ।

पयसामायारो - एतत्समाचार -एतज्जीतकल्प । विपा० ४० ।

पयारूव-एतद्रूप-वक्ष्यमाणरूपम् । भग० ३०२ । एतद्रूप एतदेव रूप-स्वरूप यस्य स । ज० प्र० २२ ।

पयावति एतावन्त । आचा० २३ ।

परंड-हडवित । पृ० द्वि० २१९ अ । तृणविशेष । प्रज्ञा० ३३ । एरण्ड । आचा० १९७ ।

परडइए हडइयित । बृ० द्वि० १०६ आ ।

परडकट्ठसगडिया - एरण्डकाष्ठिका-एरण्डकाष्ठमया । ज्ञाता० ७६ ।

परडखीयाण-उत्कण्ठिकाभेद । प्रज्ञा० २६६ ।

परडमिंजिया-एरण्डमज्जिका-एरण्डफलम् । भग० २१० ।

परगा-एरका-गुन्द्रा मद्रमुस्तक इत्यर्थं । बृ० प्र० २०२ अ ।

परवए-ऐरवत -क्षेत्रविशेष । ठाणा० ६८ । ऐरावत । सूर्य० २२ । ऐरवत -कर्मभूमिविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।

परवतीणदी-नदीविशेष । नि० चू० द्वि० ५९ अ ।

परावण-ऐरावण -शक्रगज । प्रश्न० १३५ । इन्द्रहस्ती । ठाणा० ३०२ । आव० ३५९ । गुन्द्राविशेष । प्रज्ञा० ३१ ।

परावणद्दहे-द्रहविशेष । ठाणा० ३२६ ।

परावती-नदीविशेष । ठाणा० ४७७ । कुणालानगर्या समीपे नदी । बृ० तृ० १६१ आ ।

परावय - ऐरावत-उत्तरपार्श्ववर्तिभरतक्षेत्रप्रतिरूपक्षेत्रविशेष । जं० प्र० ३३० ।

परिंड-जम्बविशेष । भग० ८०२ ।

पलए एलक -उरभ्र । प्रश्न० ३७ ।

पलक-ऊरणक । अनु० १२९ ।

पलकच्छं-एडकाक्ष - योगसंग्रहेऽनिश्रितोपधानदृष्टान्ते पुर, यत्पूर्वं दशार्णपुरं नाम नगरमासीत्, यत्र गजाग्रपदाभिध पर्वतस्तत् । आव० ६६८ ।

पलगच्छा एडकाक्ष -कायोत्सर्ग दृष्टान्त । आव० ८०० । एडकाक्ष -ग्रामविशेष । उत्त० ८७ ।

पलगमूओ - भाषमाण एडक इव बुबुयते एडकमूक । आव० ६२८ ।

पलगा-एडका द्विखुरचतुष्पदविशेषा । जीवा० ३८ ।

पलते एडक -और्णक । प्रज्ञा० २१२ ।

पलमूभय-एलमूकता-अव्यक्तभाषानुकारित्वम् । दश० १९० ।

पलमूओ-एलमूगो भासइ एलगो जहा बुडबुडति एवं एल मूगो भासति । नि० चू० द्वि० ३६ आ ।

पलय-एलक ऊरणकम् । उत्त० ०७२ ।

पलवालु-त्रिभङ्गविशेषरूपम् । प्रज्ञा० ३७ ।

पला - फलविशेष । ज० प्र० ३५ । जीवा० १३६, १९१ ।

पलापाडल-एलापाटला-पाटलाविशेष । ज्ञाता० २३१ ।

पलापुडाण-गन्धद्रव्यविशेष । ज्ञाता० २३० ।

पलारस-एलारस -सुगन्धिफलविशेषरस । प्रश्न० १६१ ।

पलालुवी-वल्लीविशेष । आचा० ७७ ।

एलावच्चसगोत्तं-इलापतेरपत्यं एलापत्यं, एलापत्येन सह गोत्रेण वर्त्तते य स एलापत्यसगोत्र । नंदी ४९ ।

एलावच्चा-गोत्रविशेष । ठाणा० ३९० । एलापत्या-रात्रेः तृतीयं नाम । सूर्य० १४७ ।

एलावालुंकी-वल्लीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

एलासमुग्गयं-एलासमुद्गकम् । जीवा० २३४ ।

एलिका-तृणपत्रनिश्रितो जीवविशेष । आचा० ५५ ।

एलिक्खं-ईदृशोऽभिहितार्थाभिज्ञ । उत्त० २८२ ।

एलिया-एडका । आव० ८५४ ।

एलिसय-ईदृश एतादृशम् । बृ० द्वि० २८७ अ ।

एलुय-एलुक-देहली । व्य० प्र० ४८ ।

एलुकारालुइक -तिरश्चम् । दश० १८० ।

एलुक -उम्बर, देहली । बृ० प्र० २७७ आ ।

एलुग-देहली । आचा० ३२२ ।

एलुगा-एलुका -देहल्य । राज० ६१ । जीवा० २०८ ३०१ ।

एव-एवं प्रकारवचनशब्दः । दश० १३६ । प्रकारवाचक । आव० ५ । उपमार्थे । उत्त० ३२४ । प्रकाराथ । प्रज्ञा० २०० । इत्थंकरणाय । ज्ञाता० ११३ ।

एव आया एवमात्मा-एवंरूप । नंदी २१२ ।

एवं चतुर्दु - पूर्वोक्तविशेषदेवकुरूत्तरकुरुरूपेषु क्षेत्रविशेषेषु । चतुर्विधस्य पदाय । जं० प्र० ३१२ ।

एव भागा - एवंभागानि-वक्ष्यमाणप्रकारभागानि । सूर्य० १०४ ।

एवंभूओ-एवंभूत, यथाभूतो नय विशेषयति । आव० २८४ । य शब्देनोच्यते चेष्टाक्रियादिक प्रकारस्तमेव भूतम् [illegible] शब्देनाभिधत्ते नान्यथा [illegible] एवंभूतम् । अनु० २६६ ।

एवंभूत-एवमिति यथाभूत शब्दो घटादिर्यथा नान्यथे [illegible] एवंभूतो नय । ठाणा० १०१ । अष्टम नयस्य तृतीया भेद । उत्त० ३३ । य शब्देनाभिधत्ते घटादि यादिक [illegible] । अनु० २६६ । [illegible] एवंभूत । ठाणा० ३९० ।

एवंभूय [illegible] । सम० १३८ । [illegible] । प्रश्न० १३० ।

एवंमहालियं-इतिमहतीम् । ज्ञाता० ६१ ।

एवंमहालिया-एतावन्ति महान्ति । जीवा० ३९९ ।

एव - एवकार -क्रमप्रदर्शनार्थ । आव० १० । समुच्चये । ठाणा० ५०४ । एव -अवधारणे भिन्नक्रमश्च । उत्त० १९४ । इति गाथालङ्कारमात्रे । विशे० १२८७ । पूरणार्थे । आव० ११० । एवम्-अनन्तरोक्तप्रकारेण । उत्त० २८० । क्रमनियमप्रतिपादनार्थं । ओघ० २ । एवकार -परिमाणे । प्रज्ञा० १९९ । एवशब्द -अपिशब्दार्थ । व्य० प्र० २१३ आ ।

एवड्डे-एतावान् । आव० ४३० ।

एवमेयं - एवमेतत्, वस्तुवद्वि प्रतिपादितं तत्तथैवेत्यर्थ । ज्ञाता० ४३ ।

एवमेतं-विनयेरुलाभणितत्वादेवमेव । उत्त० ४०९ ।

एवमेव-उपनयवचनमिति । ज्ञाता० ९६ ।

एव एव -एवम्मेवो-गवेषणम् । उत्त० ५१४ ।

एवणायामसमतिरे-विंशतिसमसमाभिधानम् । प्रश्न० १४४ ।

एवणासमिति -धर्मसाधनानामाश्रयस्य दोषगमोत्पादने एषणीयत्वक्षम् । तत्त्वा० ९-५ ।

एवणीय-प्रासुकम् । भग० १११ ।

एवयति-प्रेरयति, प्रयापयति । विश० ४१८ ।

एसणा एषणा-अभिलाष । पिण्ड० २ । एषणमेषो-गवेषणं तं करोतीति [illegible] युद्धि एषणा । उत्त० ०१४ । [illegible] । ठाणा० १०९ । शङ्कितादिलक्षणा । आव० ०३६ । गवेषणा । प्रश्न० १०८ । अनुत्त० ३ । पिण्डशुद्धि । भग० ३०४ ।

एसणासमिए- एषणा-गवेषणादिभेदा शङ्कादिलक्षणा वा तस्यां समिति एषणासमिति, गोचरगतेन मुनिना सम्यग्गुरुक्तनवकोटिशुद्ध ग्राह्यम् । आव० ६१६ ।

एसणाऽसमिए-एषणाऽसमित, बाह्येषणां न परिहरति । [illegible] । आव० ६५१ ।

एसणासमिति - [illegible] । नि० चू० प्र० १३ अ ।

एसणाऽसमिते-[illegible] । सम० ३० ।

एसणिज्ज एषणीय -[illegible] । ठाणा० १०८, ३१३ । [illegible] । भग० ३३६ ।

पसणोवघाते-ण्षणया तद्दोषदर्शनेन शङ्कितादिभि तस्यो पघात -अन्नाद्यशुद्धता। ठाणा० ३२० ।

पसिं-एषणीय-शुद्धम् । पिण्ड० १४८ ।

पसिआ गोष्ठा । आचा० ३२७।

पसिज्जा-एषयेत्-पर्यवसितत्रया कुर्यात् । उत्त० ४६ ।

पसियं-एषणीय-आधाकर्मादिदोषरहितम् । आचा० ३३१ ।

एषणीय-गवेषणाविशुद्धया गवेषितम् । भग० ९९१ ।

पसिया-एषितु शीलमेषामिति एषिका-मृगलुब्धका हरित तापसाश्च मांसहेतोर्मृगान् हस्तिनश्च एषन्ति, ये चान्ये पाख ण्डिका नानाविधैरुपायैर्मैक्ष्यमेषन्त्यन्यानि वा विषयसाध नानि ते। सूत्र० १७७।

पसु-एष्याम । ओघ० ७० ।

पसुहुम-एतावत्सूक्ष्म । प्रज्ञा० ६०१। जीवा० ३७५ ।

पसे-एष्यति-आगमिष्यति । पिण्ड० १६७ ।

पस्सा-एष्या -भविष्यन्त । आव० ६८७ ।

पस्सुहुमो-एतत्सूक्ष्म । औप० १०९ ।

पहता-एधयन्त -अनुभवन्त । दश० २४६।

पहति-एधते-प्राप्नोति । उत्त० ३१४ ।

पहा-एधा -समिधो यकाभिरग्नि प्रज्वाल्यते। उत्त० ३७२ ।

एधा -समिध , काष्ठानि । आचा० ३०९ ।

पहामो-एष्याम । ओघ० ६५ ।

पहिं-अर्वाकालिक । इदानीम् । नि० चू० द्वि० १०९ अ ।

पहिअगुणा-ऐहिकगुणा -इहलोकगुणा भक्तपानादय । ओघ० १९ ।

पहिइ-एष्यति । उपा० ४० ।

ऐ

ऐर्यापथिक-केवलयोगप्रत्यय कर्मबन्ध । प्रश्न० १४३ ।

ऐरावणापदम् । ठाणा० ४६९ ।

ऐरावती-शिखरिणि वर्षधरे दशम कूट । ठाणा० ७२ ।

ऐरावतीया-ऋषिगोत्र । जीवा० ६० ।

ओ

ओअ-ओज मानसाऽवष्टम्भ । औप० ३३ ।

ओअसी-ओजस्वी-आन्तरा वीर्याधिक । ज० प्र० २१९ ।

ओअट्टण-उद्वर्तनम् । गाढतरमुद्वर्तयति । बृ० तृ० ७१ अ ।

ओअविअ-परिकर्मितम् । ज० प्र० ५५ ।

ओअविआ-आरोपितानि । ज० प्र० २६२

ओअवेहि-साधय असमदाज्ञाप्रवर्तनेनास्मद्वशान् कुरु । ज० प्र० २१८ ।

ओआलितं-द्रावितम् । आव० ३५० ।

ओइयइ-उत्तारयति । पउ० १४-१५ ।

ओइण्णेसु-उत्तिण्णेषु-अवतीर्णेषु नियतवृत्त्या गृहिषु मध्ये स्थित प्रयाति । ओघ० १२ ।

ओए-ओज -तेजसम् । सूत्र० १४१ । एक -असहाय ।सूत्र० १०८। विषम , प्रथमतृतीयपञ्चमसप्तमा । पिण्ड० १६९ । एको रागादिविरहात् । आचा० २५६ । एकोऽशेषमलकलङ्का- ङ्करहित । आचा० २११ ।

ओओ-ओज -आरोहादिकयुक्तता । बृ० प्र० ३०९ आ ।

ओकच्छिया । ओघ० २०९ ।

ओकसणं-पकपनको परिहरणम् । बृ० तृ० २२९ अ ।

ओकुरुडो-उत्कुरुट -कुणालानगर्या दोषान्तिर उपाध्याय विशेष । आव० ४६५ ।

ओगसण-नाशनम् । महाप्र० ।

ओगाढ-अवतीर्णा अवगाढा वा प्रकर्षप्राप्ताम् । ठाण० ३९९ । आत्मप्रदेशैन सह एकक्षेत्रावस्थायि अवगाढम् ।प्रज्ञा० ५०२ । भग०२१ । सेलभाव गत । भग०८३ । अर्द्धभूत । नि० चू० प्र० ३२७ आ । साधुप्रत्यासन्नीभूत । ठाणा० १९० ।

ओगाढरुइ-अवगाहनमवगाढ-द्वादशाङ्गावगाहो विस्तार श्रिगमस्तेन रुचि , अथवा ओगाढ-साधुप्रत्यासन्नीभूतस्तस्य साधूपदेशाद रुचिरवगाढरुचि । भग० ९२६ ।

ओगाढरुती-अवगाहनमवगाढ-द्वादशाङ्गावगाहो विस्त- राधिगम इति सम्भाव्यते तेन रुचि , अथवा ओगाढत्ति- साधुप्रत्यासन्नीभूतस्तस्य साधूपदेशाद् रुचि । ठाण० १९० ।

ओगाढा-प्रविष्टा । ज्ञाता० ११७ ।

ओगालीफलगं-आर्यक(प्रायक)प्रभृतीनामायव्यया समागत चपकपट्टादिकरूप । व्य० द्वि० १०७ आ ।

ओगास-पडिस्सगस्सेगदेसो । नि० चू० प्र० ८३ अ । अव काश -स्थानम् । आव० ५१५ । मार्ग । आव० ६५८ ।

ओगाहती-अवगाहन्ती-आगच्छन्ती । आव० ३१२ ।

ओगाहणगा-यद्यस्य द्रव्यस्याधस्तादवगाढ तत्त्वगाहनाग्रम् । आचा० ३१८ ।

ओगाहणनामनिहत्ताउप- अवगाहनानामनिधत्तायु - अवगाहते यस्या जीव साऽवगाहना-शरीरमौदारिकादि तस्य-नाम औदारिकशरीरनामकर्म तेन सह निधत्तमायु । प्रज्ञा० २१७ ।

ओगाहणवग्गणाओ-अवगाहना एकैकस्य भावद्रव्यस्या धारभूता असङ्ख्येयप्रदेशात्मकक्षेत्रविभागरूपास्तासामवगाहनाना वर्गणा -समुदाया अवगाहनावर्गणा । प्रज्ञा० २६४ ।

ओगाहणसंठाण-प्रज्ञापनायामेकविंशतितम पदम् । भग० ३९६ ४९५, ८४२ । अवगाहनास्थानम् । प्रज्ञापनाया एकविंशतितम पदम् । प्रज्ञा० ६ ।

ओगाहणसेणियापरिकम्मे परिकम चतुर्थभेद । सम० १२८ ।

ओगाहणा-अवगाहना-तनु , तदाधारभूतं वा क्षेत्रम् । भग० ७१ । नियतपरिमाणक्षेत्रावगाहित्वम् । भग० २३६ । षड्जीवनिकायाना पादसङ्घट्टनम् । पिण्ड० १६१ । अवगाहन्तेऽस्यामवस्थायामिति अवगाहना-स्वावस्थैव । आव० ४४४ । प्रज्ञा० १०८ । अवग्रहण-परिच्छेद । प्रज्ञा० ३०९ अवगाहन्ते क्षेत्र यस्या स्थिता जन्तव साऽवगाहना-तनुरित्यर्थ । नदी ९१ । अवगाहते यस्या जीव सा अवगाहना शरीर औदारिकादि । प्रज्ञा० २१८ । ज्ञाता० २५० ।

ओगाहिमं-आग्मि जे तिण्णि घाणा पयतिते चलचलेत्ति, सेस ते चलचल ओगाहिम भण्णति । नि० चू० प्र० १९७ अ ।

ओगाहिमगं-पक्वान्नम् । बृ० प्र० ३११ आ । अवगाहिमम् । आव० ८५४ ।

ओगाहिमत्तो-अवगाहक । उत्त० १९८ ।

ओगाहिमाइ-अवगाहिमादि-पक्वान्नमण्डकप्रभृति । पिण्ड० १५२ ।

ओगाहे-आगच्छति । आघ० १०८ । अवगाह -शरीरोच्छ्रय । प्रज्ञा० १८१ ।

ओगाहेज्ज-अवगाहेत-आश्रयेत । भग० २३३ ।

ओगाहेत्ता-प्रविश्य । सम० ८८ ।

ओगाहो-पतद्ग्रह । बृ० द्वि० २५० आ ।

ओगिज्झिय-अवगृह्य-आश्रित्य । आचा० ४०३ ।

ओगिण्हणयाते-अवग्रहणतायैमनोविषयाकरणाय । ठाणा० ४४१ ।

ओगुट्टि-निमा, निन्दाम् । पउ० ५६-१५ ।

ओगुडिया-मठदिधदेहा । बृ० प्र० २५८ आ ।

ओगेण्हणया-अवगृह्यतेऽनेनति अवग्रहण, करणेऽनट्, प्रथम समयप्रविष्टशब्दादिपुद्गलादानपरिणाम , तद्भावोऽवग्रहणता । नदी १७४ ।

ओग्गह-अवधारण अवग्रह । आव० ३४१ ।

ओघ-औधिक , अशुभकर्मप्रकृतिजनितो भावोपसर्ग । सूत्र० ७८ ओघ -सामान्यम् । आव० २५८, ४५८, ४८० । विशे० ८४२ ४५० ।

ओघजीवितं नारकादिविशेषितायुर्द्रव्यमात्र सामान्य जीवितम् ठाणा० ७ ।

ओघनिप्फन्न-ओघ -सामान्यमध्ययनादिकं श्रुताभिधान तेन निष्पन्न । अनु० २११ । सामान्यशास्त्रनिष्पन्न । आव० ५८ ।

ओघनिप्फन्ननिक्षेप । ठाणा० ६ ।

ओघरूपा-सामाचारीविशेष । उत्त० ५४७ ।

ओघसामाचारी-सामाचार्या प्रथमभेद । व्य० प्र० १९ आ । ओघनिर्युक्ति । आघ० १ ।

ओघसामाचार्युपक्रमकाल-सामाचार्युपक्रमकालस्य प्रथमो भेद । आघ० १ ।

ओघस्सरा । ज० प्र० ४०७ ।

ओघा-सन्मुखा निरीक्षमाणा । व्य० प्र० १३० अ ।

ओघाडिज्जइ-उद्घाट्यते-बाध्य नियते । आव० ६९७ ।

ओघादेसेण-सामान्यत । भग० ८९३ ।

ओघायतण-आघायतनानि यानि प्रवाहत एव पूज्य स्थानानि तडागजलप्रवेशाधमागा वा । आवा० ४११ ।

ओचार-अपचारि-दीर्घतरधान्यकोष्ठाकारविशेष । अनु० १५१

ओचिया-आरोपिता । जीवा० १९९ ।

ओचूल-अवचूला -प्रलम्बगुच्छा । ज० प्र० २६५ । प्रलम्बमानगुच्छ । औप० ७० । भग० ४८० । ज० प्र० ५३० ।

ओचूलग- अवचूलक-अधोमुखाञ्चल, मुत्कलाञ्चलम् । जं० प्र० २४७ ।

ओच्छगं--वस्त्र, आलिङ्गनम् । आव० ६८२ ।

ओच्छन्नपरिच्छन्न-अवच्छन्नपरिच्छन्न - अत्यन्तमाच्छादित । जीवा० १८८ ।

ओच्छविय-अवच्छादितम् । ज्ञाता० २८ ।

ओच्छाइय-आच्छादित -निरुद्ध । प्रश्न० १३४ । अवच्छादित । ज्ञाता० २८ ।

ओच्छाहिओ-उत्साहित -उत्कम्पित । पिण्ड० १३४ ।

ओज-ओज -रसम् । प्रश्न० ११६ । आहारादि । भग० २० ।

ओवद्धपिंडितो-अवबद्धपिण्डकः । उत्त० २१५ ।

ओयारं-अवद्वारम् । आव० ३४९ ।

ओवोलेउं-उद्बुडयितुम् । आव० १९७ ।

ओभावणा-उव्हावणा-परिभवः । ओघ० १३१ । अप-भावना-लाघवम् । बृ० प्र० २७९ अ ।

ओभासंति-अवभासयन्ति-सप्रकाशा भवन्ति । भग०१२७ । अवभासयन्ति । सूर्य० ६३ ।

ओभासंतो-अवभासयन् । ईषदुद्योतयन । जं०प्र० ४६१ ।

ओभास-अवभासः-प्रभा । ज्ञाता० ४ । अवभासः, प्रभा-विनिर्गमः । प्रज्ञा० ८० । प्रतिभाविनिर्गमः । जीवा० १०७ । पञ्चषष्ठितमो ग्रहः । जं० प्र० ५३५ । सप्तषष्ठितमो महाग्रह-विशेषः । ठाणा० ७९ ।

ओभासइ-अवभासते । आविर्भवति, प्राप्यते इति । सूत्र० २१४ । अवभासयति-प्रकाशयति । सूर्य० ६ ।

ओभासणता । नि० चू० प्र० २४७ अ ।

ओभासिज्ज-अवभाषेत-दातारं याचेत् । आचा० ३४० ।

ओभासिज्जा-अवभाषेत-याचेत । आचा० ३५२ ।

ओभासितं-अवभाषितं-याचितं याचनं वा । बृ०द्वि० १४२अ ।

ओभासी-अवभासते-प्रतिभाति, अवभाषते-याचत इत्येवं-शीलोऽवभामी । ठाणा० २०७ ।

ओभासेई-अवभासयति-ईषत्प्रकाशयति । भग० ७८ ।

ओभुग्ग-अवभुग्नं-वक्रम् । ज्ञाता० ११८ ।

ओमंघ-पात्रमवाङ्मुखम् । बृ० प्र० १०७ आ ।

ओमंथियं-अधोमुखीकृतम् । विपा० ४९ । निरय० ६ । ज्ञाता० ६२ । अधोमुखम् । बृ० तृ० ११८ आ । ठाणा० २९३ ।

ओम-बालः । ओघ० १५१ । लघुपर्यायः । ओघ० १८५ । अवं-दुर्भिक्षम् । ओघ० ११, १८, ६३ । पिण्ड० ३७ । आव० ५३६ । न्यूनम् । आव० १३० । दुर्भिक्षम् । नि० चू० प्र० १८३ आ । नि० चू० प्र० ५४ आ । अवमानि-असाराणि । उत्त० ३५९ । अवमरात्निक । बृ० द्वि० १९ अ । दुर्भिक्षम् । व्य० प्र० १९८ आ । अवमं-हीनम् । आचा० १६४ । ऊर्णं । दश० चू० १६२ । ऊनम् । उत्त० ६०४ । अवमा-न्यूना । उत्त० ५३७ । पर्यायलघुः । ओघ० १५० । अवमम् । न्यूनम् । दश० २७२ ।

ओमचरओ-ओमत्ति-अवममुपलक्षणत्वादवमौदार्यं चरति-आसेवते अवमचरकः-न्यूनत्वासेवकः । उत्त० ६०६ ।

ओमचेलिए-अवमचेलिकः, असारवस्त्रधारी । आचा० १९७

ओमच्छगरयहरणं-उन्मस्तकरजोहरणम् । आव० ६३८ ।

ओमज्जायणं-अवमज्जायनं, पुष्यगोत्रविशेषः । जं०प्र०५०० ।

ओमत्तं-अवमत्वं-ऊनता । भग० ७४२ । अवमता-हीन-त्वम् । प्रज्ञा० ३०३ ।

ओमत्थिअ-उद्घाटमस्तकः, प्रच्छन्न इति । ओघ० १५ ।

ओमत्थिय-ओमत्थितः, अधोमुखीकृतः । ओघ० १४६ ।

ओमद्दिया-उन्मर्दिका-बहुमर्दनकारिका । भग० ५४८ ।

ओमया-पराजयः, पश्चाद्भवनम् । बृ० द्वि० ७१ अ ।

ओमरत्तं-अहोरात्रम् । ओघ० ११६ । अवमा-हीना रात्रिरवमरात्रो-दिनक्षयः । ठाणा० ३६९ ।

ओमराइणिओ-अवमरात्निकः । ओघ० १५० ।

ओमराइणिय-अवमरात्निकः । आव० ७९३ ।

ओमरायणिको-अवमरात्निकः । ओघ० १५२ ।

ओमाणं-प्रवेशः । उत्त० ५५२ । अपमानम् । बृ०तृ० १२०अ । समवतिय । नि० चू० प्र० २०५ आ । अवमानानि-क्षेत्रादीनां प्रमाणानि हस्तादीनि । ठाणा० ८६ । अवमानं-स्वपक्षपरपक्ष-प्राभृत्यजं लोकाबहुमानादि । दश० २८० ।

ओमानं-अवमानं-अवमम् । बृ० प्र० २९० आ ।

ओमुयं-उन्मुकम् । ओघ० ११२ ।

ओमोअं-अवमोचकः, आभरणम् । जं० प्र० १८८ । अव-मुच्यते-परिधीयते यस्मोऽवमोचकः-आभरणम् । जं०प्र०१८८ ।

ओमोअर- *अवमं-न्यूनमुदरं-जठरमस्यासाववमोदरस्तद्भावः* अवमौदर्यं-न्यूनोदरता । उत्त० ६०४ । अल्पाहारत्वम् । उत्त० ६०४ ।

ओमोदरिता-दुर्भिक्षवर्गं । नि० चू० प्र० ७५ अ ।

ओमोदरिए-अवमोदरिका, धर्मधर्मिणोरभेदाद् वा अवमोदरिकः-साधुः । भग० २९२ ।

ओमोयं-अवमुच्यते-परिधीयते यः सोऽवमोच -आभरणम् । भग० ५४३ ।

ओमोयरण-अवमं च तदुदरं चावमोदरं तस्मात्करोत्यर्थे णिचि ल्युटि चावमोदरणं, अवमोदरकरणम् । उत्त० ६०४ ।

ओमोयरिय-अवमौदर्य-दुर्भिक्षम् । आव० ६२६ । अवम-न्यूनमुदरं-जठरमन्यायावमोदरस्तद्भाव अवमौदर्य-न्यूनोदरता । उत्त० ६०४ ।

ओमोयरिया-अवम ऊनमुदरं-जठरं अवमोदरं तस्य करण मवमोदरिका । ठाणा० ३६४ । अवम-ऊनमुदरं-जठरं यस्य स, अवम चोदरं अवमोदर तद्भावोऽवमोदरता, अव मोदरस्य वा करणमवमोदरिका । ठाणा० १४८ ।

ओम्मिमालिणी-ऊर्मिमालिनी-नदीविशेष ।जं०प्र०३५७।

ओय-रसम् । (त०)

ओयंसी-ओजस्विन -मानसावष्टम्भयुक्ता । भग० ११६ । ओज -मानसोऽवष्टम्भस्तद्वान् ओजस्वी । राज० ११८ । निरय० २ । ज्ञाता० ७ । ओजस्विन -मानसबलोपेतत्वात् । सम० ११६ ।

ओय-ओज.-आहारग्रहणे प्रथमो भेद । ठाणा०९२ । ओज -आर्तवम् । ठाणा० १४५ । ओज -प्रकाश । सूर्य० ७१ विषम । सूर्य० १५६ । उत्पत्तिदेशे आहारयोग्यपुद्गलसमूहः प्रज्ञा० ५१० ।

ओयइ-परगलि । विश० ३७४ ।

ओयणं-ओदन । सूर्य० २९३ । कूर । प्रश्न० १५३ । कूरादि । ओघ० १२३ । ओदन-चाद्रौदनादि । आचा० ३१२ ।

ओयत्तण-व्याघात । पिण्ड० १६२ ।

ओयत्तति-परावर्त्तते । दश० १०८ ।

ओयणे-ज्ञाताया सप्तदशमध्ययनम् । आव० ६५१ ।

ओयपएस-विषमसंख्यप्रदेश । भग० ८६१ ।

ओयरह-अवतरत । आव० ३५२ ।

ओयरिआ-औदरिकानाम-यत्र गता तत्र रूपकाणि क प्रक्षिप्य समुद्दिशन्ति, समुद्देशानानन्तरं भूयोऽप्यग्रतो गच्छन्ति । बृ० द्वि० १२५अ ।

ओयरिया-औदरिका-उदरभरणैकचिन्ता । ओघ० ७१ ।

ओयवण साधनम् । जं० प्र० ०४८ ।

ओयविअं-अल्पसागारिक--श्रावक, खेदज्ञम् । ओघ० ५१ ।

ओयविए-प्रसाधिते । व्य० द्वि० १७६आ ।

ओयविय-सुपरिकर्मितम् । सूर्य० २९२ । तेजितम् । जीवा० १६४ । विशिष्ट परिकर्मितम् । जीवा० २३२ । परिकर्मितम् । जीवा०२७२ । परिकर्मितम् । प्रश्न० ८१ ।

ओयविया-उज्ज्वला । बृ० तृ० ५८अ ।

ओयवेइ-उपैति । आव० १५० ।

ओयसंठिती-ओजस -प्रकाशस्य संस्थिति -अवस्थानम् । सूर्य० ७१ ।

ओया-ओज -प्रकाश । सूर्य० ७१ ।

ओयाए-उपायात -उपागत । भग० ३११ । सम्प्राप्त । निरय० ६ । उपायात -उपागत । ज्ञाता० १६७ । ओजसा-शाट्यानयनादिस्वकायबलवत्तया । ज्ञाता० १७० ।

ओयाणेत्ति-अनुश्रोतोगामिनी, पानीयानुगामिनी । नि० चू० प्र० ४४ आ ।

ओयारिया-अवतारिता । आव० ६८० । अवतारिका । आव० ३४० ।

ओयारो-अवतार -जलमध्यप्रवेशनम् । जीवा० १८७ ।

ओयाहारे-ओज -उत्पत्तिदेशे आहारयोग्यपुद्गलसमूह, ओज आहारो येषां त ओजआहारा । प्रज्ञा० ५१० । तैजसेन कार्मणेन च शरीरेणौदारिकादिशरीरानिष्पत्तेर्यावत् स च आहार स सर्वोऽपि ओजाहार, औदारिकादिशरीर पर्याप्त्या पर्याप्तको यावदपीन्द्रियानपानभाषामन पर्याप्तिभि पर्याप्त शरीरेणाहारयन ओजाहार । सूत्र० १४१ ।

ओयो-सप्तमी । नि० चू० प्र० ११७अ ।

ओरब्भ-औरभ्र-उत्तराध्ययनेषु सप्तममध्ययनम् । उत्त० ९।

ओरस-आन्तर । भग० ६३१ ।

ओरस्स-उरसि भवं-औरस्य-शरीरबलम् । सूत्र० १६६ ।

ओरस्सबली-महापराक्रमा । बृ० तृ० १७८ आ ।

ओरालं- निरन्तरत्र, समयपरिभाषया सामायिकमात्मावाय वदम् । प्रज्ञा० २६६ । मानारिक्तस्वाध्यायवद्धम् । ठाणा० २९५ । उदारं-अत्यद्भुतम् । सूर्य० २९४ । उदार -प्रधान । भीम । औप० ८४ । आराल-आगमारहितया प्रधानम् । भग० १२५ । उदार:-प्रधान । भग० १२ । भीम -भयानक । ज्ञाता० ७ । स्फारांकार । राज० ११९ । भीष्म, दर्शन विशेषगविशिष्टप करणत पार्श्वस्थानामल्पसत्त्वाना भयानक । जं० प्र० १६ । भग० १२ । सूर्य०५। उदार । जीवा० २३३। एकेन्द्रियापेक्षया प्राय स्थूल द्वीन्द्रियाण्यपि इति । उत्त० ६०३।

ओरालतसा-त्रसत्वं तेजोवायुष्वपि प्रसिद्धं अतस्तद्व्यवच्छेदेन द्वीन्द्रियादिप्रतिपत्त्यर्थमोरालग्रहणम् ।ठाणा०३३५।

ओराला तसा-औदारिकत्रसाः-स्थूलत्रसाः ।जीवा० २८ ।

ओरालवण्णकित्तिसद्दा-उदारवर्णकीर्तिशब्दाः । आव० २९३ ।

ओरालसरीरे-उदारशरीर. । उत्त० ३२५ ।

ओरालाइं-मनोहराणि ।ठाणा० २९४ ।उदाराणि-आशंसादोषरहितत्वयोदारचित्तयुक्तानि । ठाणा० २४७ ।

ओरालिए-उदार-प्रधानं, विस्तरवत्, उरल-विरलप्रदेशं न तु घन, ओरालं-समयपरिभाषया मांसास्थिस्नाय्वाद्यवबद्धं *तदेव शरीरं, उदारमेव औदारिकम् । प्रज्ञा० २६८ ।*

ओरालिय-औदारिकम् । प्रज्ञा०४६९ । उदारमेव-प्रधानमेव बृहदेव वा औदारिकम् । जीवा० १४ । उदार-प्रधानं उदारमेव औदारिकम् । ठाणा० २९५ ।

ओरालियसरीरणाम-यदुदयादौदारिकशरीरप्रायोग्यान् पुद्गलानादाय औदारिकशरीररूपतया परिणमयति परिणमय्य च जीवप्रदेशैः सह परस्परानुगमरूपतया सम्बन्धयति तदौदारिकशरीरनाम । प्रज्ञा० ४६९ ।

ओरालियशरीरा-औदारिकशरीरा. । आव० ७९९ ।

ओरुहइ-अवतरति । आव० १८६ ।

ओरोहं-अवरोधं, अन्तःपुरम् । उत्त० ३०७ । अंतेपुरं । नि० चू० प्र० ८०अ ।विपा० ८२ ।अवरोध -प्रतोलिद्वारेष्ववान्तरप्राकार. । औप० ३ । प्रतोलीद्वारेष्ववान्तरप्राकार' । राज० ३ । अवरोधः-अन्तःपुरम् । उत्त० ११० । अवरोध. । आव० १५९ । प्रतोलीद्वारेष्ववान्तरप्राकार' । ज्ञाता० २ ।

ओलंडेंति-उल्लङ्घयन्ति । ज्ञाता० ६२ ।

ओलंडेइ-उल्लङ्घयत । दश० ९९ । आव० ३५० ।

ओलंब-अवलम्बं-अवलम्बनस्थानम् । जं० प्र० ५२१ ।

ओलंबणदीय-शृङ्खलाबद्धदीप । भग० ५४७ ।

ओलंबितो-अवलम्बितः । उत्त० ११५ ।

ओलग्गो-अवलगितः । आव० २९७ ।

ओलग्गं-अवलगितं-सेवितम् । उत्त० ११६ ।

ओलग्गइ-उपलगति । आव० २९२ ।

ओलग्गिउं-अवलगितुम् । उत्त० १०० ।

ओलग्गए-अवलगकः । आव० १७६ ।

ओलग्गति-अवलगति-अनुसरति । उत्त० ८७ ।

ओलग्गयमणूसो-अवलगकमनुष्य. । आव० ९२ ।

ओलग्गा-सेवा । परिचर्या । दश० ९७ । जीर्णा । ज्ञाता० २८ ।

ओलग्गाए-अवलगनया । आव० ९० ।

ओलग्गिउं-अवलगितुम् । आव० ७१६ ।

ओलग्गिऊं-अवलगितुम् । दश० ९७ ।

ओलग्गिज्जामि-अवलगामि । आव० ३५६ ।

ओलग्गिता-सेवितुमारब्धा । आव० ८१८ ।

ओलग्गिय-अवलगित । आव० ४०१ ।

ओलिंति-अवलीयन्ते-प्रत्यागच्छन्ति । विशे० ८५२ ।

ओलिकापातः । ओघ० २०७ ।

ओलित्त-अवलिप्तः । भग० २७४ । आव० ५५९ ।

ओलित्ता-द्वारदेशे पिधानेन सह गोमयादिना अवलिप्ताः *। ठाणा० १२४ ।*

ओलिहति । नि० चू० प्र० ११०अ

ओलुग्गसरीरा-भग्नदेहा. । विपा० ४९ । निरय० ९ । अवरुग्णमिव-जीर्णमिव शरीरं यस्या. सा, अवरुग्णा वा चेतना अवरुग्णशरीरा । ज्ञाता० ३८ ।

ओलुग्गा-अवरुग्णा-गमनमनोवृत्ति । विपा० ४९ । निरय०९। क्षीणा । आव० ७१६ । जीर्णा । ज्ञाता० ३३ ।

ओलुहति-अवरोहति । आव० १८६ ।

ओलेंति-परिभ्रमन्ति । आव० २७४ ।

ओलेत्ता-आर्द्रयित्वा । आव० २०९ ।

ओलोयणं-अवलोकनम् । आव० २२४, ३७८ ।

ओलोयणगए-अवलोकनगतम् । उत्त० ९१ ।

ओलोयणट्ठिओ-अवलोकनस्थितः । आव० १४५ ।

ओलोयणे । नि० चू० प्र० ११०अ ।

ओवयां-पतनं वा आगन्तुकतनुद्रव्यस्ये कांस एव ओप्याम् । ठाणा० ३२८ ।

ओवहं-पार्श्व । नि० चू० प्र० १०आ ।

ओवहि । नि० चू० प्र० १२१अ ।

ओवइया-औपयिकपरिवर्धित । ठाणा० ४१ ।

ओवक्कमिय-उपक्रम्यतेऽनेनायुरित्युपक्रमो ज्वरातीसारादिस्तत्र भवा या सा औपक्रमिकी। ठाणा० २७।

ओवक्खडित-उपस्कृतम्। आव० ३५३।

ओवग्गहिओ औपग्रहिक। उपग्गहित-गच्छमाहारणो। ओघ० ९२।

ओवज्झण-प्रवाहे वहन। बृ० तृ० २२९अ।

ओवट्टणा-चालना पश्चादानयनम्। बृ० द्वि० ८५आ।

ओवणिहिए-उपनिहितं यथा कथञ्चित् प्रत्यासन्नीभूतं तेन चरति य स औपनिहितिक, उपनिधिना वा चरतीति स औपनिधिक। औप० ३९।

ओवतिउं-अवपतितु-जेतुम्। दश० ५०।

ओवत्तिया अपवर्त्य-अग्निनिक्षिप्तेन भाजनेनान्येन वा दद्यात्। दश० १७५।

ओवमिए-उपमया निर्वृत्तमौपमिक, उपमामन्तरेण यत्काल प्रमाणमनतिशायिना ग्रहीतु न शक्यते तदौपमिकम्। जं० प्र० ९२। उपमया निर्वृत्तमौपमिक, उपमानमन्तरेण यत्कालप्रमाणमनतिशायिना ग्रहीतु न शक्यते तदौपमिकम्। अनु० १८१।

ओवमिय-उपमया निर्वृत्त औपमिकम्, उपमाम तरेण यत् कालप्रमाणमनतिशयिना ग्रहीतु न शक्यते तदौपमिकम्। भग० २७६।

ओवम्म-औपम्य-उपमा। उत्त० ३२१। उपमानमुपमा सैवौपम्य-सदृश। ठाणा० २६२।

ओवमसच्चा-औपम्यसत्या-पर्याप्तिकसत्याभाषाया दशमो भेद। प्रज्ञा० २५६। उपमैवौपम्य तेन सत्य औपम्यसत्यम्। सत्याभाषाया दशमो भेद। ठाणा० ४८९। औपम्यसत्य नाम समुद्रवत्तडाग। सत्याभाषाया दशमो भेद। दश० २०९। उपमीयते-सदृशतया गृह्यते यस्स्वनयेत्युपमा सैव औपम्यम्। भग० २२२। उपमानमुपमा सैवौपम्य अनन गवयेन सदृशोऽसौ गौरिति सादृश्यप्रतिपत्तिरूपम्। ठाणा० २५४।

ओवयइ-उत्पतति-ऊर्ध्वं गच्छति। भग० १३९।

ओवयण-अवपदन-प्रोङ्खनकम्। ज्ञाता० ४१।

ओवयमाण-अवपतन्तो-व्योमाङ्गणादवतरत। ज्ञाता० ४६। अवपतन्। ज्ञाता० १६६।

ओवयारिअविणय। औपचारिकविनय-विनयस्य द्वितीयो भेद। दश० ३१।

ओवरणं-अपवरकम्। आव० ५६०।

ओवरिऊण-अवतीर्य। उत्त० ११९।

ओवसमिए कर्मोपशमेन निर्वृत्त औपशमिक कर्मानुदयलक्षण। सूत्र० २३०।

ओवहिए-औपधिक-उपधिना-छद्मना चरतीत्यौपधिक। उत्त० ६५६।

ओवहिया-औपधिका-मायाप्रयोजना-कषायप्रत्यया, उपकरणप्रयोजना वा। औप० १०७।

ओवाइणिसए-उपादातु-ग्रहीतु, प्रवेष्टुम्। ठाणा० १५७।

ओवाइय-उपयाचितम्। विपा० ७७। याचितस्य-प्रार्थितस्य प्राप्तेरुपरि देवेभ्यो देयम्। उत्त० १३८। उपयाचितम्। आव० ७०९।

ओवाई-ओलावयप्रधाना विद्या। आव० ३१९।

ओवाय-उपाये-मृदुपरुषभाषणादौ भव औपाय, उपपतनमुपपात-समीपभवन तत्र भव औपपात-गुरुसंस्तारास्तरण विश्रामणादिकृत्यम्। उत्त० ५८। विघ्नम् (मर०) अवपात-निर्देश। सूत्र० २४२। अवपात-प्रपातस्थान, यत्र चलन् जन सप्रकाशेऽपि पतति। जं० प्र० १२४। अवपात-गर्त्तादिरूपम्। दश० १६४। अवपात-गर्त्ताविशेष। प्रश्न० २२।

ओवायकारी-उपपातकारी-आचार्यनिर्देशकारी, यथोपदेश क्रियासु प्रवृत्त सूत्रोपदेशप्रवर्तक। सूत्र० २३४। अवपाती-निर्देशस्तत्कार्यवपातकारी-वचननिर्देशकारी सदा आज्ञा विधायी। सूत्र० २४२।

ओवासो-अवकाश। दश० ५८।

ओवाही विशेषेण उपाधीयत इति वोपाधि। आचा० १७४।

ओविअ-आपित-परिकर्मितम्। भग० ४७८। ओपित-उज्ज्वालित। जं० प्र० २००, ४६।

ओविय-परिकर्मितम्। औप० २४, ६६। राज० ४८। उज्ज्वलित। ज्ञाता० २२२। ओपित-परिकर्मितम्। प्रश्न० ७६। ज्ञाता० १९।

ओविया-आरोपिता। जं० प्र० ४३।

ओवील-अवपीड-शखर, उपपीडा वा वेदना। विपा० ७२।

ओवीलए-अपव्रीडयति विलज्जीकरोति यो लज्जया सम्यगनालोचयन्त सर्वं यथा सम्यगालोचयति तथा करोतीत्यपव्रीडकः । ठाणा० ४१४ ।

ओव्वत्तिऊण-अपवर्त्य । ओघ० २१ ।

ओव्विग्गमणो-उद्विग्नमनाः । आव० २२० ।

ओष्ठः-दन्तच्छदः । आचा० ३० ।

ओस-अवश्यायः, शरत्कालभावी श्लक्ष्णवर्षः । उत्त० ३३४ । क्षपाजलम् । ठाणा० २८७ । अवश्यायः-त्रेहः । दश० १५४ । अवश्यायः-शरदादिषु प्रभातिकसूक्ष्मवर्षः । उत्त० ६९१ ।

ओसक्कइत्ता-उत्ष्वष्क्य-उत्सृत्य लब्धावसरतयोत्सुकीभूय । अवष्वष्क्य-अपमत्यावसरलाभाय कालहरणं कृत्वा यो विपीयते स तथा । ठाणा० ३१५ । अवसर्प्य, प्राप्य वा । आव० १९ ।

ओसक्कणं-रन्धनवेला । ओघ० १४८ । अवष्वष्कणम्, विवक्षितविध्वंसनादिकालस्य ह्रासकरणम्, अर्वाक्करणम् । बृ० प्र० २६१आ । अवष्वष्कणं-स्वयोगप्रवृत्तनियतकालावधेरर्वाक्करणम् । पिण्ड० ९१ ।

ओसक्किय-प्रज्वाल्य । आचा० ३४५ ।

ओसक्किया-अवसर्प्य, अतिदाहभयादुल्मुकान्युत्सार्येत्यर्थः । दश० १७५ ।

ओसढ-उत्सृत.-उपयतेभ्यो निर्गतः । दश० २१९ । एगंगितं । नि० चू० द्वि० १८आ ।

ओसण्ण-चिरायणं अपरिभोगट्ठाणं । नि० चू० प्र० १९३अ । ओसन्नं-बाहुल्यम् । प्रज्ञा० ५०३ । बाहुल्येन । भग० ३०८ । अवसन्ना-श्रान्ता । भग० ५०२ । ओ यो वा संजमो तम्मि मग्गो ओसण्णो । नि० चू० प्र० २१७अ ।

ओसण्णद्धो-अपसन्नद्धः । उत्सन्नद्धः । आव० ७१२ ।

ओसत्तमल्लदामा । आचा० ४२३ ।

ओसत्तो-उत्सक्तः-उपरिसंबद्धः । औप० ५ । ज्ञाता० ४ ।

ओसधी-वण्णाइफला अंबादिया । नि० चू० द्वि० १५७अ ।

ओसधीओ । ठाणा० ८० ।

ओसन्न-उत्सन्न-प्रायेण । विशे० ९२६ । अवसन्नः-विवक्षितानुष्ठानालसः, आवश्यकस्वाध्यायप्रत्युपेक्षणाध्यानादीनामसम्यक्कारीत्यर्थः । ज्ञाता० ११३ । बाहुल्यलक्षणम् । भग० २१ । प्रायः । भग० ३०९ । प्रायेः प्राचुर्यं बाहुल्य, बाहुल्येनानुपरतत्वेन । ठाणा० १८९ । प्रायसः । आव० २८५ । उत्सन्नं-प्राचुर्येण । प्रश्न० २२ । अवसन्नः-सामाचार्यासेवनेऽवसन्नवत् अवसन्नः । आव० ५७ । एकान्तः । बृ० प्र० ११आ ।

ओसन्नकारणं-बाहुल्यं, बाह्यकारणम् । प्रज्ञा० २२३ । बाहुल्यकारणम् । प्रज्ञा० ५०३ ।

ओसन्नदोसे-बाहुल्येनानुपरतत्वेन दोषो हिंसादीनां चतुर्णामन्यतर ओसन्नदोषः । ठाणा० १८९ ।

ओसन्नया-प्रायभवः । उप० मा० गा० ३१० ।

ओसन्नविहारी-अवसन्नानां विहारो बहूनि दिनानि यावत्तथा वर्त्तने अस्यास्तीति अवसन्नविहारी । ज्ञाता० १११ ।

ओसप्पिणि-अवसर्पति हीयमानारकतयाऽवसर्पयति वा-क्रमेणायु शरीरादिभावान् हापयतीत्यवसर्पिणी । जं० प्र० ८९ । दशकोटीकोट्यः सागरोपमाणां सुषमसुषमाद्यरकक्रमेण अवसर्पिणी । जीवा० ३८५ ।

ओसप्पिणी-अवसर्पन्ति-प्रतिसमयं कालप्रमाणं जन्तूनां वा शरीरायुःप्रमाणादिकमपेक्ष्य ह्रासमनुभवन्त्यवश्यमिति अवसर्पिण्यः, दश सागरोपमकोटिकोटीपरिमाणाः । उत्त० ६५७ । अवसर्पिणी-अवसर्प्पति हीयमानारकतया अवसर्प्पयति वाऽऽयुष्कशरीरादिभावान् हापयतीति, सागरोपमकोटीकोटीदशकप्रमाणः कालविशेषः । ठाणा० ३७ । अवसर्पिणी-दशसागरोपमकोटाकोटिमाना । अनु० ९९ । कालविशेषः । आव० १२०, भग० ८८८ । दशसागरोपमकोटीकोट्यः प्रमाणाः । ठाणा० ८६ ।

ओसमणं-व्यवशमनम् । बृ० द्वि० ७७आ ।

ओसरइ-अपसर्पति । उत्त० ५३ । अपसरति । उत्त० ३०२ । आव० ६४०, ३५९ ।

ओसरणं-बहूनां साधूनामेकत्रमीलनम् । बृ० तृ० २१८आ । समवसरणम् । बृ० प्र० २७०आ । चउ० । व्याख्यानश्रवणादि । बृ० द्वि० २५२आ । अवसरणं-साधुसमुदायः । पिण्ड० ९२ ।

ओसरणा-आर्यिकाणामुपकरणविशेष. । ओघ० २०९ ।

ओसरिऊण-अपसृत्य । आव० २९९ ।

ओसरिओ-अपसृतः । आव० ४०५ ।

ओसरित्ता-अपसृत्य । आव० ९१३ । व्युत्सृज्य । आउ० ।

ओसरे-अवसर्पन्ति । आव० ६१८ ।

ओसवणं-प्रशमनम् । नि० चू० प्र० २०७ अ ।

ओसह-औषधः । अन्तरुपयुज्यते । ओघ०१३४ । एकाङ्गम् । प्रश्न०१५३ । महातिक्तकघृतादि । भग०३२६ । केवलहरीतक्यादि, अन्तरुपयोगि वा । पिण्ड०१९ । एकद्रव्यरूपम् । विपा० ४१ । ज्ञाता० १८१ । त्रिकटुकादि । ज्ञाता० १३६ । आव० ११५ । उत्त०१४२ । हरितक्यादि । ओघ०६८ । एलाद्यचूर्णादि । नि० चू० प्र० ७६अ । बहुद्रव्यसमुदायः । नि०चू०प्र०१४४आ । एकद्रव्याश्रयं, त्रिफलादि । औप०१०० ।

ओसहङ्गं-औषधाङ्गम् । ओषधकारणम् । उत्त० १४२ ।

ओसहजुत्ती-ओषधयुक्ति -ओषधादीनां-अगुरुतुरुष्कादीनां सज्जिकाराजिकादीनां च युक्ति.-योजनं समविषमविभागनीतिर्वा । उत्त० ३० ।

ओसहाइ-औषधादि-अगुरुतुरुष्कादि सज्जिकाराजिकादि च । उत्त० ३० ।

ओसहि-औषधयः, फलपाकान्ताः, ते च शाल्यादय. । प्रज्ञा० ३० । औषधि'-शाल्यादि. । भग० ३०६ । आचा० ३० ।

ओसहिपत्ता-सर्वरोगापहारित्वात्तपश्चरणप्रभवो लब्धिविशेष. । प्रश्न० १०५ ।

ओसही-औषधि.-जयाविजयर्द्धिवृद्ध्यादय. । उत्त० ४९० । फलपाकान्ता' । उत्त० ६९२ । औषधी राजधानीनाम । जं० प्र० ३४७ । औषधि -फलपाकान्ता., शाल्यादि । जीवा० २६ ।

ओसहीओ-औषधय', शाल्यादिका. । जं० प्र० १६८ । सालिमातियाओ । नि० चू० प्र० १९५आ ।

ओसही तिणा-औषधितृणानि-शाल्यादीनि । उत्त० ६९२ ।

ओसा-अवश्याय -जलविशेष । आव०५७३ । स्नेह. । जीवा० २५ । स्थानविशेषः । उत्त० ३०९ । रात्रिजलम् । भग० ६९४ ।

ओसारिय-अवसारितं-अवलम्बितम् । भग०३१८ । ज्ञाता० २२१ । प्रलम्बीकृता । ज्ञाता० २३९ ।

ओसारेज्जा-अपसारयेत्-पाठयेत् । अनु० १७६ ।

ओसावणि । नि० चू० प्र० ७६अ ।

ओसावणि । नि० चू० प्र० १४२अ ।

ओसारेयव्वो-परित्यागः । नि० चू० प्र० १४२अ ।

ओसासिअ-आवश्यकी । बृ० द्वि० २१७आ ।

ओसित्तं-अवसिक्तं, आर्द्रीकृतम् । आचा० ३२१ ।

ओसीरं-ओशीरं-वीरणीमूलम् । प्रश्न० १६३ । चन्दनम् । उत्त० १४२ । उशीरं-वीरणं मूलम् । जं० प्र० ३९ । वीरणीमूलम् । ज्ञाता० २३२ ।

ओसीरपुड-पुष्पजातिविशेषः । ज्ञाता० २३२ ।

ओसीसं-उच्छीर्षम् । आव० ४५१ ।

ओसीसओ-उच्छीर्षकः । आव० ३५४ ।

ओसीसा-सीमस्स मसीसं उवसीसं । नि०चू०प्र०२४७अ ।

ओसूरो-उत्सर्गः । आव० ४१६ ।

ओसोवणि-अवस्वापिनीम् । आव० ३७१ ।

ओस्सट्टो-उत्साहः । नि० चू० प्र० २८४आ ।

ओस्सण्णं-बाहुल्येन-अनुपरतत्वेन । भग० ९२६ ।

ओस्सारेह-उत्सारयंत-पारयत । उत्त० १७८ ।

ओहंजलिया-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३२ । प्रज्ञा० ४२ ।

ओह-ओघोपधि -उपधेः प्रथमो भेद यो नित्यमेव गृह्यते । ओघ० २०८ । संक्षेप' । नि० चू० प्र० १७९अ । ओघ -प्रवाह । जीवा० २०७ । सामान्यं, स्वपरपृथग्विभागरहित० । भावरूप । पिण्ड०७७ । प्रवाह । उत्त० २४१ । जं०प्र० ५३, ११७ । ओघ -सामान्यं श्रुताभिधानम् । दश०१५ । संक्षेप, संसार', अष्टप्रकारं कर्म वा । सूत्र० २९ । अविच्छेद, अविच्छिन्नत्वम् । प्रश्न० ८२ । संसारसमुद्र । सूत्र० १४५ । प्रवाहेणाविच्छिन्नम् । प्रश्न० ७४ । सामान्यम् । पिण्ड० १४७ । सामान्य । आव० ३३६ । प्रवाही । जीवा० २०७ । सामान्यम् । जं० प्र० ७ । उस्सग्गो-तत्थ सव्वं कालियसुत्तं आयरंति त सव्वं ओहो भण्णति । वेदिया निसीहवेदिया । नि० चू० प्र० ९७आ । सुत्ते सुत्ते ज उस्सग्गववादम्मि तं ओहो, जो पुण अविसिट्ठो आवसी सो ओहो । नि०चू०प्र०१४५आ । ओघ -द्रव्यभाव-सामान्यमध्ययनादि नाम । ठाणा० ५ । ओघ -संसारलक्ष्यमानं संसारसमुद्र । दश० २५ । संक्षेपः । ओघ० ८८ ।

ओहजीव-ओघजीव, भवजीवस्य प्रथमो भेद. । दश०१२ ।

ओहट्ठं-प्रार्थितम् । ओघ० ६७ । यात्रित । नि० चू० प्र० १६५अ ।

ओहनिप्फण्ण-ओघनिष्पन्नः । निक्षेपभेदः । दश०१५ । अङ्गाध्ययनादिसामान्याभिधानन्यासः । आचा० ३ ।

ओहबले-ओघबल. । अपरिमितबल' । औप० ५८ ।

ओहय–उपहतः–विनाशितः। जं०प्र०२७७। राज्यापहाराद्युपहताः। ठाणा० ४६३। विनाशनेनोपहता। ज्ञाता० ५११

ओहयमणसंकप्प–उपहतः–ध्वस्तो मनसः संकल्पो दर्पहर्षादिप्रभवो विकल्पो यस्य सः। भग० १८०। ज्ञाता० २९। उपहतमनःसङ्कल्प.। आव ६८२।

ओहयहय–*उपहतहतः। आव० ६५०।*

ओहरति–उपहरति–विनाशयति। ज्ञाता० १९२।

ओहरिए–विनाशयति। ज्ञाता० १९०।

ओहरितभारो–उत्तारितभारः। ओघ० २२७।

ओहरिय–अग्निकायोपरि व्यवस्थित पिठरकादिकमाहारभाजनमपहृत्य। *आचा० ३४५। तिरश्चीनो भूत्वा।* आचा० ३४४। पार्श्वतो मुक्तः। उप०मा०गा० ४९९।

ओहसंभोग–ओघसंभोग, उपध्यादिद्वादशप्रकारः। व्य० द्वि० ११९आ।

ओहसण्णा–मतिज्ञानावरणक्षयोपशमाच्छब्दाद्यर्थगोचरा सामान्यावबोधक्रियैव सञ्ज्ञायतेऽनयेत्योघसंज्ञा। *ठाणा० ५०५।*

ओहसन्ना–ओघसञ्ज्ञा-मतिज्ञानावरणकर्मक्षयोपशमनाच्छब्दाद्यर्थगोचरा सामान्यावबोधक्रिया, दर्शनोपयोग इति, सामान्यप्रवृत्तिर्यथा वल्ल्या वृक्षारोहणं वा। प्रज्ञा० २२२। मतिज्ञानावरणक्षयोपशमाच्छब्दाद्यर्थगोचरा सामान्यावबोधक्रियैव सञ्ज्ञायते वस्त्वनयेति ओघसञ्ज्ञा। दर्शनोपयोगः। सामान्यप्रवृत्तिरोघसञ्ज्ञा। भग० ३१४।

ओहसामायारी–ओघसामाचारी–सामान्येन संक्षेपतः साधुसमाचाराभिधानरूपा। विशे० ८४२।

ओहसियं-अवघर्षणमवघर्षितं भूत्यादिना निमज्जनम्। जीवा० २११।

ओहस्सरा–ओघस्वरा–चमरेन्द्रस्य घण्टा। जं० प्र० ४०७। ओघेन–प्रवाहेण स्वरो यासां ता ओघस्वरा। जीवा० १०५।

ओहा–*अपभ्राजना। बृ० प्र० ९९आ।*

ओहाइया–उद्धाविताः। आव० ९६।

ओहाडणी–अवघाटिनी–आच्छादनहेतुस्तम्भोपरिस्थाप्यमानमहाप्रमाणकिलिञ्चस्थानीया। जीवा०१८०। जं०प्र० २१।

ओहाडिअ–अवघाटित–आच्छादित। जं० प्र० ७३।

ओहाडिओ–आपाटी। आव०२०५। निष्काशित। आव० ३५८।

ओहाडियं–स्थगितम्। आव० ८८८। स्फेटितम्। आव०२०५।

ओहाडिया–*उद्घाटिता। आव० ५१४। अपस्फेटिता।* आव० ३६८।

ओहाडेइ–आच्छादयति। आव० ३७०।

ओहाडेति। दश० चू० ८८।

ओहाण–उवयोगो। नि० चू०द्वि०५८आ। विहारो, धावणेण *लिंगो भावणेण वा। नि० चू० तृ० ३५ अ। अवधानम्–अप*सरणम्। दश० २७१। अवधावमानाः। ओघ० ६१। अवधावनम्। ठाणा० २११।

ओहाणपेही–धिइं अलभमाणो रातो समाहिपरिठ्ठवणलक्खेण *ओहाविज्जा। नि० चू० प्र० ११४अ।*

ओहाणुप्पेही–*अवधावनानुप्रेक्षी। दश० ९४।*

ओहाविज्जा–उपहन्यात्। ठाणा० ३२८।

ओहामिए–अपभ्राजितः। आव० ६६५।

ओहामिओ–अपभ्राजित, हीलितः। आव० ६९४। अपभ्राजित, तिरस्कृतः। ओघ० ५३।

ओहामिज्जइ–*अवधाव्यते। आव० २११।*

ओहार–अधो जले नावो नेता मत्स्यविशेष। बृ०तृ०१६१आ। *जलजन्तुविशेष। प्रश्न० ५१। कच्छपः। पिण्ड० १०२।* मच्छो। नि० चू० द्वि० ७८आ।

ओहारयित्ता–अवधारयिता-शङ्कितस्याप्यर्थस्य नि शङ्कितस्यैवमेवायमित्येवं वक्ता, अवहारयिता-परगुणानामपहारकारी। सम० ३८।

ओहारसंखड। नि० चू० द्वि० १०७ अ १

ओहारिणी–अवधारणी–*अवधारणात्मिका। उत्त० ५६।* अवधार्यते–अवगम्यतेऽर्थोऽनयेति अवधारणी–अवबोधबीजभूता। *प्रज्ञा० २४६–२४७। शंकिता। दश० चू० १४०।* अवधारणी–अवबोधबीजभूता। भग० १४२।

ओहारित्तं–अवहृतं–गृहीतम्। आव० ८५९।

ओहारेमाणीओ–*वीजयन्त्यः। जीवा० २१३।*

ओहावंत–अवधावन्ते, अवसर्पन्ति। ओघ० ६२।

ओहावइ–अवधावति। उत्त० १३३।

ओहावणं–अपभ्राजनं, अपमानं, निन्दा वा। पिण्ड० १४०। अवधावन–पार्श्वस्थादिविहाराश्रयणम्। बृ० द्वि० १६३आ। लिङ्गविवेकबुद्ध्या गमनम्। व्य०प्र०२४९अ। अपभ्राजना–लाञ्छना। आव० ५१७। अपभ्राजना। आव०२११,६६५।

मलना । ओघ० ९३ । गृहस्थीभवनम् । सूत्रकृ०१४४अ । क्षपभ्राजना । उत्त०१९२ । परिभव । ओघ०१४८ । हीलना । ओघ० ७४ ।

ओहाविअ-अवधावित -अवसृत । दश० २४७ ।

ओहाविउकामो अवधावितुकाम । उन्निष्क्रमितुकाम । उत्त० १३३ ।

ओहावेज्जा-अवधावेत् । व्य० प्र० १६६आ ।

ओहासणं-समयपरिभाषया विशिष्टद्रव्ययाचनम् । आव० ५७६ ।

ओहासणभिक्खा-ओहासणभिक्षा-विशिष्टद्रव्ययाचनं स मयपरिभाषया ओहासणं तत्प्रधाना या भिक्षा । आव०५७६ ।

ओहासिअ-ओभासिअ-याचित । ओघ०७०। सूत्र० ३८६ ।

ओहिंजलिया-चतुरिन्द्रियजीवभेद । उत्त० ६९६ ।

ओहि-अवधि -अवधीयतेऽनेनास्मादस्मिन्वेति।ठाणा०३४७। रूपिमर्यादा, करणनिरपेक्षो बोधरूप । ठाणा० ४४८ । अवधीयतेऽनेनेति, अवधीयत इति, अधोऽधोविस्तृत परिच्छिद्यते मर्यादया वेति, अवधीयतेऽस्माद् अस्मिन् वा, अवधान वा विषयपरिच्छेदनम् । आव०८ । मध्ये । ओघ०२०८ । अधोऽधो विस्तृतविषयवेदकम् । पारच्छद । मर्यादा । उत्त० ५५७ । अव-अधोऽधो विस्तृत वस्तु धीयते-परिच्छिद्यतेऽनेनेत्यवधि , अथवा अवधिर्मर्यादा रूपिष्वेव द्रव्येषु परिच्छेद कतया प्रवृत्तिरूपा तदुपलक्षित ज्ञानमप्यवधि , यद्वा अवधान -आत्मनोऽर्थसाक्षात्करणव्यापारोऽवधि । नंदी६५। अवधि - अवशब्दोऽध शब्दार्थ , ततश्चाध इत्यधस्ताद्धावति अधोऽधो विस्तृतविषयवेदकतयेत्यवधि , औणादिको डि, यद्वा 'अवे' धाञ् एव धानं धातूनामनेकार्थत्वात् परिच्छेदोऽवधि , 'उपसर्गे घो कि'रिति (पा ३-३-९२) कि, अथवाऽवधि - मर्यादा रूपिष्वेव द्रव्येषु परिच्छेदकतया प्रवृत्तिरित्येवरूपा तदुपलक्षितं ज्ञानमप्यवधि । तृतीयं ज्ञानम् । उत्त०५५७। औधिक -विशेषणरहित । प्रज्ञा० ३४२ ।

ओहिदंसणं-अवधिदर्शन अवधिरेव दर्शनं रूपिसामान्यग्रहणम् । जीवा० १८ ।

ओहिमरणं-अवधिमरण सप्तदशमरणभेदे द्वितीय । उत्त०२३०। पञ्चविधमरणे द्वितीय । भग० ६१४ । अवधि -मर्यादा तेन मरण अवधिमरणं, यानि हि नारकादिभवनिबन्धनतयाऽऽयुःकर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते यदि पुनस्तान्येवानुभूय मरिष्यति तदा तत् । सम० ३३ ।

ओहियं-औधिकम् । ओघ० २१७, ३११ । औधिकम्-निर्विशेषण नरकम् । भग० ४१ ।

ओहियमत्तगं-प्रश्रवणमात्रकम् । नि०चू०तृ० १२०आ ।

ओहिया-औघिकी-तिर्यक्स्त्री । जीवा० ५९ ।

ओही-अवधि -प्रज्ञापनायास्त्रयस्त्रिंशत्तम पदम् । प्रज्ञा०६ । अव-अधो विस्तृत वस्तु धीयते परिच्छिद्यतेऽनेनेति अवधि मर्यादा वा रूपिष्वेव द्रव्येषु परिच्छेदकतया प्रवृत्तिरूपा तदुपलक्षितं ज्ञानमप्यवधि । प्रज्ञा० ५३७ ।

ओहीपदं-प्रज्ञापनाया अयस्त्रिंशत्तमं पदम् । भग० ७१९ ।

ओहीरमाणी-प्रचलायमाना । भग० ५४० । वारंवार ईषन्निद्रां गच्छन्तीत्यर्थं । ज्ञाता० १५ ।

ओहुए-अवधुत उत्कंपित । सू० द्वि० ६१ अ ।

ओहे-ओघमरण सामान्यत सर्वप्राणिनां प्राणपरित्यागात्मकम् । उत्त० ३३० ।

ओहेणं-ओघेन-सङ्क्षेपेण । ओघ० ८८ ।

ओहोवधी-ओह -सङ्क्षेपः, स्तोकः, लिङ्गकारक , भवदर्यप्राय० । उपधेर्भेदः । नि० चू० प्र० १७९ अ ।

ओहोवही-ओघोपधि.-उपधेर्भेद । उत्त० ५३७ । ओघोपधि नित्यमेव यो गृह्यते ओघोपधि । ओघ० २०८ ।

औदारिक-चक्रिकम् । ओघ० ९० । उपादानात्प्रभृति अनुसमयमुद्गच्छति वर्धते जीर्यते शीर्यते । तत्वा० २-४९ ।

औदारिकबन्धनं-यदुदयवशाद् औदारिकपुद्गलानां गृहीतानां गृह्यमाणानां च परस्परं तैजसादिपुद्गलैश्च सह सम्बन्ध उपजायते तत् । प्रज्ञा० ४७० ।

औदारिकसङ्घातनाम-यदुदयवशादौदारिकशरीररचनाऽनुकारिसङ्घातरूपा जायते तत् । प्रज्ञा० ४७० ।

औदारिकाङ्गोपाङ्गनाम-यदुदयवशादौदारिकशरीरत्वेन परिणतानां पुद्गलानामङ्गोपाङ्गविभागपरिणतिरुपजायते तत् । प्रज्ञा० ४७० ।

औदार्यं दाक्षिण्यम् । ज० प्र० १८४ ।

औद्देशिक-कालस्य षष्ठो भेद । प्रश्न० १४४ । आधाकर्म । सूत्र० १९१ ।

औद्भूतिकी-द्वितीयभेरीनाम । विशे० ६१९ ।

औपसर्गिक-पदस्य तृतीयो भेद । आव०३७९ । परीति औपसर्गिकम् । अनु० ११३ ।

औत्कर्ष्यं-मतविशेष । उत्त० ३३७

इति प्रथमो विभागः समाप्तः ।

आगमवाचनादातृ - बहुश्रुत-युगप्रधानसदृश - देवसूरतपागच्छसामाचारी-
संरक्षणकटिबद्ध-श्रेष्ठिदेवचन्द्रलालभाईजैनपुस्तकोद्धार-
श्रीजैनानन्दपुस्तकालयाद्यनेकसंस्थासंस्थापक
अनेकग्रन्थप्रणेतृ - श्रीवर्धमानजैनागममंदिर-
(सिद्धक्षेत्र)श्रीवर्धमानजैनताम्रपत्रागममंदिर
(सूर्यपुर)संस्थापक-आगमोद्धारक-ध्यानस्थस्वर्गत-

आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरीश्वरसङ्कलितः

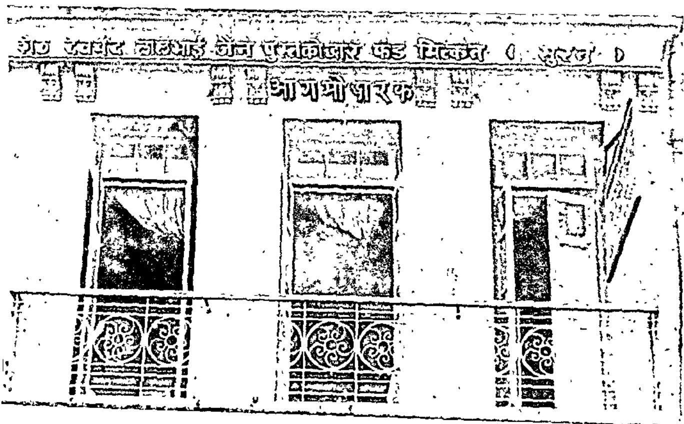
श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषः

(समस्तस्वरस्वरूपः प्रथमो विभागः

श्रेष्ठि देवचन्द्रलालभाई-जैनपुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्कः १०१ ॥

आ मकान

शेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंडनी कायमी रकमथी खरीदवामां आवेलुं छे.
रु-१,१०,०००. एक लाख दश हजार.



कालवादेवी नं १६६ आ मकान छे. तेमां भोंयतळीए शयाजी विजय प्रेस ठे. पहेले माळे- एल. काशिनाथ चेकर बीजे माळे- जादवजी प्रेमजी गांधी ना बोर्डो छे.

શેઠ દેવચંદ લાલભાઇ જૈન પુસ્તકોદ્ધાર ફંડના

હાલમાં મળતા નવીન ગ્રંથો.

ગ્રંથાંક નં.		
૧૦૧	અલ્પ પરિચિત સિદ્ધાન્તિકશબ્દકોષ (વિભાગ પહેલો સંપૂર્ણ સ્વર) પ્રેરક-આચાર્ય આણંદસાગરસૂરિજી	૬-૦-૦
૧૦૨	શ્રાવક ધર્મ પંચાશકચૂર્ણી	૨-૦-૦
૧૦૩	દશવૈકાલિક લઘુવૃત્તિ સુમતિસાધુસૂરિ	૩-૦-૦
૮૫	આવસ્યકસૂત્ર મલયગિરિ ત્રીજો ભાગ	૨-૮-૦
૮૬	લોકપ્રકાશ મૂલ ચોથો વિભાગ પ્રત	૧-૦-૦
૮૭	ભરતેશ્વર બાહુબલિ વૃત્તિ દ્વિતીય વિભાગ સંપૂર્ણ	૨-૦-૦
૮૮	પ્રશમરતિપ્રકરણ બૃહદ્‌ગચ્છીય શ્રી હરીભદ્રસૂરિ-કૃત વિવરણ સમેત	૧-૪-૦
૮૯	અધ્યાત્મકલ્પદ્રુમે રત્નચંદ્રગણિ વર્ધનવિજયગણિ કૃત ટીકા યુક્ત	૩-૦-૦
૯૦	ગૌતમીય કાવ્ય રૂપચંદ્રગણિકૃત	૧-૮-૦
૯૧	સટીક વૈરાગ્યશતકાદિ ગ્રંથપંચકમ	૧-૦-૦
૯૨	અભિધાનચિંતામણી કોશ	૪-૦-૦

ગ્રંથાંક નં.		
૯૩	જૈન કુમારસંભવ	૨-૮-૦
૯૪	સિદ્ધહેમશબ્દાનુશાસન બૃહદ્‌વૃત્યચૂર્ણી નવપાદ અવચૂર્ણિકાર શ્રીમદ્ અમરચંદ્ર	૫-૦-૦
૯૫	વીતરાગસ્તોત્ર અવચૂર્ણી વિવરણ અને ભાષાંતર સમેત	૧-૮-૦
૯૮	પંચપ્રતિક્રમણ વિધિ સહિત	૧-૪-૦
૯૯	શ્રમણસૂત્રાદિ અવચૂરિ	૧-૦-૦
૧૦૦	વંદન પ્રતિક્રમણ અવચૂરિ	૧-૮-૦
૧૦૪	ઉત્તરાધ્યયન અવચૂરિ	પ્રેસમાં
૧૦૫	પિંડનિર્યુક્તિ અવચૂરી	,,
૧૦૬	શ્રાદ્ધવિધિ	,,
૧૦૭	નંદિ અવચૂરી	,,
૧૦૯	સૂયગડાંગ દીપીકા	,,
૧૧૦	જંબુદ્વિપ ચૂર્ણી	,,
૧૧૧	ચંદ્રપ્રજ્ઞપ્તી	,,

આગમોદય સમિતિ પ્રકાશિત

ગ્રંથાંક નં.		
૪૫	ભક્તામર સ્તોત્ર પાદપૂર્તિરૂપ કાવ્ય પ્રથમવિભાગ ટીકા ભાષાંતર	૩-૦-૦
૪૭	પંચસંગ્રહ ટીકા સહ	૨-૮-૦
૫૦	જીવસમાસ પ્રકરણશતક	૧-૮-૦
૫૧	સ્તુતિ ચતુર્વિંશતિકા સચિત્ર શોભનમુનિકૃત સંસ્કૃત	૮-૦-૦
૫૨	સ્તુતિ ચતુર્વિંશતિકા સચિત્ર કવિ ધનપાલકૃત ઐંદ્રસ્તુતિ	૬-૦-૦
૫૩	સ્તુતિચતુર્વિંશતિકા સચિત્ર બપ્પભટ્ટસૂરિકૃત ભાષાંતર યુક્ત	૬-૦-૦
૫૪	ભક્તામર સ્તોત્ર પાદપૂર્તિરૂપ કાવ્ય બીજો વિભાગ ટીકા ભાષાંતર	૩-૮-૦

ગ્રંથાંક નં.		
૫૫	નંદ્યાદિ ગાથાવંકારાદિ સુતો (સપ્તસૂત્ર) વિષયાનુક્રમ	૨-૦-૦
૫૬	આવશ્યક મલયગિરિકૃત ટીકા યુક્ત પૂર્વભાગ	૪-૦-૦
૫૭	લોકપ્રકાશ પ્રથમવિભાગ, દ્રવ્યલોક ૧ થી ૧૧ ભાષાંતર	૩-૮-૦
૫૯	ચતુર્વિંશતિકા જિનાનંદ સ્તુતિ મેરુવિજયકૃત ભાષાંતર સમેત	૬-૦-૦
૬૦	આવશ્યક મલયગિરિકૃત ટીકા યુક્ત બીજો ભાગ	૨-૮-૦
૬૧	લોકપ્રકાશ દ્વિતીય વિભાગ ક્ષેત્રલોક સર્ગ ૧૨ થી ૨૦	૩-૮-૦